# শিশু-ভারতী

# [ ছেলেদের বিশ্বকোষ ]

# সম্পাদক—শ্রীযোগেন্দ্রনাথ গুপ্ত

--:0:---

# বিষয়-বিভাগ

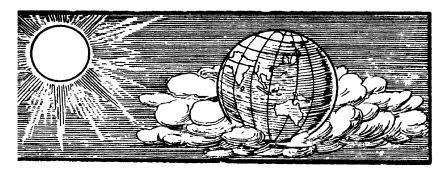
অমর জীবন আকাশের কথা আদি মানব আমাদের দেশ —ভারতবর্ম

আলো
আলোক চিত্ৰ
ইতিহাস
উদ্ভিদ্ জীবন
কবিতা চয়ন
কল-কারখানা
কি ও কেন!
খাত্য-শস্ত
গল্প ও কাহিনী
জাতীয় সঞ্জীত
জীব-জগৎ

দৰ্শন দেশ-নিদেশে**র** কথা শ্রাথা-ভেঁস্থালি

নার্রী-জগৎ বাঙ্গনার ইতিহাস বায়ু বিশ্ব-সাহিত্য রহতর ভারত ব্যায়াম-বিধি যন্ত বিজ্ঞান রসায়ন-বিজ্ঞান শক্ক শিল্প-কথা সঙ্গীত ও শিল্প সাহিত্য

দ্বিতীয় খণ্ড, ৬ হইতে১০ সংখ্যা, পৃষ্ঠা ৪০১ হইতে ৮০০



এথানে সংক্ষিপ্তৰূপে ছিতীয় গভেব বিবয় বিজ্ঞান ও হুচীপত্র দেওয়। ংইলি সম্পূদ্য বাও সম্পূদ্য হাইলে সমস্থ্র বিজ্ঞারিত স্চীপত্র ( Index ) দেওয়। হাইবে।

## দ্বিতীয় খণ্ডের স্ফুটীপত্র

| বিষয়                         |  | পৃষ্ঠ | 1            |
|-------------------------------|--|-------|--------------|
| অমর জীবন                      |  |       |              |
| যীশুখুষ্ট                     | মিদেদ্লবেইন বার্বার এম, বি, বি, এস               |       | 805          |
| नम्रनटक्रव                    | •••  | ••    | ৬১০          |
| হজরত মূহশাদ                   | মোলবী আসরফ্ আলি বি, এ                            |       | 9>>          |
| চৈত্রভাদেব                    | বায় বাহাছ্ব শীলীনেশচন্দ্ৰ সেন ডি লিট্           |       | 462          |
| অজ্ঞাতের সন্ধানে              |  |       |              |
| ভ্ৰমণ ও আবিঙ্গার মাৰ্কোপোলো   | শ্ৰীপ্ৰতিভা দেবী বি, এ                           |       |              |
| আকাশের কথা                    |  |       |              |
| <b>БТ</b> Ф                   | জীঅমিয়চংণ বন্দ্যোপাদ্যায় এম, এ (কণাস্কি)       |       | a . b        |
| মৃত্তপথ্য                     | "  |       | . ·58 :      |
| আদি মানব                      |  | •     |              |
| চীনের অর্দ্ধনানব              | জ্ঞীপঞ্চানন মিত্র এম, এ; পি, আরু এস; পি, এইচ, ডি |       | ¢ 9 9        |
| আ্মাদের দেশ                   | ,  |       |              |
| ভারতবর্ষ-পোরাণিক রাজ্বগণ      | শ্ৰীঅমলানন্দ খোষ এম, এ                           |       | <u> ১৬</u> ৭ |
| ভারতবর্ধ—মগধের অভ্যুদ্ধ · · · | 7)   |       | ¢85          |
| ভারতবর্ষ—আলেকৃসান্দেরের জয়যা | a1 ,,  |       | <b>6</b> 04  |
| ভারতবর্ষ—চল্রগুপ্ত মৌর্ব্য    | ,,   |       | ৬৮৮          |
| আলো                           |  |       |              |
| আলো                           | জীসুবেশচ <del>ু</del> ল দেব ডি, ভ্স-সি           |       | લ ૭ ૧        |
| আলোক-চিত্ৰ                    | ,  |       |              |
| _                             | . শ্রীশিধিভূবণ দত্ত ডি, এস-সি                    |       | 830          |
|                               | -  |       |              |

| বিষয়   |       | পৃষ্ঠা                   |
|---|-------|--------------------------|
| ইতিহাস  |       | 4-                       |
| পৃথিবীর ইতিহাস—মিশর শ্রীরমাপ্রসা <b>ছ দাশগুপ্ত এম, এ</b><br>পৃথিবীর ইতিহাস অ্যাসিরিয়া ,,<br>পৃথিবীর ইতিহাস—ব্যাবিলনিয়া ,, |       | , e - ;<br>, <b>ue</b> - |
| ्रायपात्र स्वितास्य न्यापासम्बद्धाः ।<br>উদ্ভिদ-জीवन  | •••   | 903                      |
|   |       |                          |
|   | •••   | 923                      |
| <b>ক</b> বিতাচয়ন   |       |                          |
| ছেলে-ভূলানো ছড়া  | •••   | 883                      |
| পাধীর ছড়া এীঅসিতকুমার হালদার   |       | 966                      |
| কল-কারখানা  |       |                          |
| ছাপাখানার কথা ভীশালিগ্রাম বর্মা এম, এ; বি, এস-সি  | •     | 942                      |
| কি ও কেন ?  |       |                          |
| আকাশে কন্ত নক্ষত্ৰ আছে ? শ্ৰীসুৱেশচন্দ্ৰ দেব ডি, এস-সি  |       | 899                      |
| কোণেখা নীলাজ কেন সম্ভ   | •••   | 896                      |
| পৃথিবীর প্রথম জীবের কি আহার ছিল ? "   | ••    | 8 96-                    |
| মেঘের পাড রূপালি কেন হয় ? ",   |       | 892                      |
| ফুঁদিলে প্রদীপের শিখা নিভে যায় কেন ? "   |       | 850                      |
| আগুন উত্তপ্ত হবার কারণ কি ? ,,  | •••   | ಅಂಕ                      |
| ফলে আঁটি হয় কেন ? "  | •     | 600                      |
| পুল পাতার আকার গোল কেন ? "  |       | <b>98°</b>               |
| গ্ৰীমকালে খাম হয় কেন ? "   |       | 936                      |
| <b>क्छ-का</b> रनाश्चारत्रता हिन्छा कत्रराष्ठ शास्त्र कि ? "   | •••   | 179                      |
| চুল পাকে কেন "  | • • • | 150                      |
| পুরানো বাড়ীবা প্রাচীন মন্দিরের পাধরের দেওয়াল জীর্ণ হয়ে যায় কেন ?  | •••   | <b>የ</b> ৮ ዓ             |
| নদী একে বেঁকে চলে কেন ? "   | •••   | 966                      |
| পাথরে পাথরে ঠোকাঠুকি হ'লে আগুন দেশা যায় কেন ?  | •••   | 4,64                     |
| নদীর উপর অনেক দূর পর্যন্ত শব্দ শুনা যায় কেমন করে ?   | •••   | <b>ዓ</b> ৮৯              |
| দিনের বেলায় নক্ষত্র কোথায় যায় ?  | •••   | 963                      |
| খাত-শশ্ত  |       |                          |
| মাটী বায় সাহেব জ্রীমেবেক্সমাথ মিত্র এল, এ, স্বি  | •••   | 802                      |
| উদ্ভিদের খাল ও উহার গ্রহণ-প্রণালী "   | •••   | 600                      |
| উ/ज्ञिट्ट दिन्द । एक्ट- गर्रम ।   | •••   | 663                      |
| গল্প ও কাহিনী   |       |                          |
| ইতরা শ্রীনম্মনচন্দ্র মুখোপাণ্যায়   |       | 804                      |
| রান্ধার মেয়ের ভালবাদা \cdots ঐচিক্রশেধর গুপ্ত এম, এ  | •••   | 8 OF                     |
| কাফ্রি দেশের উপকথা ··· "  | •••   | 88.                      |
| বাণিজ্যের পুজি \cdots জীচারুচক্র বন্দ্যোপাধ্যায় এম, এ  | •••   | 885                      |

# ( গ )

| বিষয়                              |       |  | ?                     | वि           |
|------------------------------------|-------|--|-----------------------|--------------|
| তুই সওদাগর                         |       | ঞীবিভা দেবী এম, এ                            |                       | <b>e</b> २ • |
| চিল্নী-মা                          |       | শ্রীকার্তিকচন্দ্র দাশগুপ্ত বি, এ             |                       | e > e        |
| চাঁদ সুধাের দেশে                   |       | শ্রীবিভা দেবী এম, এ                          |                       | ৫৩২          |
| দ্ধীচির আত্মত্যাগ                  |       | <u> ভ্রিজ্ঞানেশ্র</u> নাথ ঘটক                |                       | હરત          |
| অক্তজ পুত্র                        |       | শ্রীবিভা দেবী এম, এ                          |                       | <i>1</i> 9≥  |
| মালী ও বানর                        | •••   | ,1   |                       | ৬৭৭          |
| নেকড়ে বাথ ও গাধা                  |       | ন্ডীজ্যোভিঃ গুপ্ত বি, এ                      | •••                   | 640          |
| শি-রিঙ্গ ও চাম্বা                  |       | ঐβি <b>ন্দ্ৰেপর ৩</b> ৪৪ এম, এ               | •                     | ৬৮১          |
| জীম্ভ বাহন                         |       | <b>ঞানয়নচন্দ্র মূথোপাধ্যায়</b>             |                       | 909          |
| জাতীয় সঙ্গীত                      |       |  |                       |              |
| ভারতবর্ষ– সুনীল জলধি হইতে          |       | স্বৰ্গীয় বিজ্ঞেলাল বায়                     | •••                   | 988          |
| গ্রীস্                             |       | শ্রীকালিদাস রায় বি, এ কবিশেশব               | •••                   | 186          |
| জাপান                              | ٠.    | 19   | •••                   | 989          |
| জাৰ্মেনী                           |       | **   |                       | 986          |
| পর্ভ <b>গ</b> াল                   |       | 11   |                       | 98>          |
| ইটালি                              |       | <b>&gt;</b> •                                | •••                   | 76.          |
| স।বিয়া                            |       | <b>ঞীপ্রেম্বদা দেবী বি, এ</b>                | •••                   | 965          |
| মন্টিনেগ্রো                        |       | স্বৰ্গীয় সত্যে <u>ক্ৰ</u> মা <b>থ দ</b> ত্ত | •••                   | 963          |
| জীব- <b>ভ</b> গৎ                   |       |  |                       |              |
| সেকালের মাছ                        |       | 🔊 সাতকড়ি 🕶 ওম, এস-সি                        | .,                    | ৬৬৪          |
| <u> শেকালের সরীস্থপ</u>            |       | 1,   | •••                   | 969          |
| দৰ্শন                              |       |  |                       |              |
| দশনের কথা                          | •••   | ঞিহুমায়ুন কবির এম, এ ( অক্সন )              |                       | <b>૭</b> ૦૧  |
| দেশ-বিদেশের কথা                    |       |  |                       |              |
| তিকত                               |       | ,,   | <b>e</b> e <b>ર</b> , | ৬১৬          |
| আরব                                |       | 15   | •••                   | ৬৬৮          |
| আফগানিস্থান                        |       | >1   |                       | 965          |
| ধাঁধা-হেঁয়ালী                     |       |  |                       |              |
| ধ াধা-হেঁয়ালী                     |       | <u> </u>                                     | •••                   | * * 7        |
| অঙ্কের যাত্ত্র চোকি                |       | 1)   | • • •                 | **           |
| লুকানো নাম                         | • • • | <b>)</b> 1                                   | • • • •               | ccr          |
| অংশ-হারা ছবি                       | •••   | ,1   | •••                   | <b>t</b> t>  |
| শ্ৰ-ছ্ৰু                           | •••   | ,,,  | •••                   | <i>(</i> % • |
| শ্य-वस्य                           | ••    | *,   | •••                   | ¢ 50 0       |
| নারী-জগৎ                           |       |  |                       |              |
| क्यात्म ७ क्ष्यं <del>- गागी</del> |       | শ্ৰীশান্তিস্থা খোষ এম, এ                     | •••                   | 893          |
| সং <b>খ্যিত্তা</b>                 | • • • | v  | •••                   | 890          |
| উভয় ভারতী                         | •••   | 11   | •••                   | 896          |

| विवय                            |         |  | পৃষ্ঠ | 1          |
|---------------------------------|---------|--|-------|------------|
| মহা-ব্ৰাপতি গোত্মী              |         | শ্ৰীশান্তিস্থা বোষ এম, এ                           |       | ٥٠٥        |
| বিশাখা                          |         | 1)   | •••   | 9 . 8      |
| বাজালার ইতিহাস                  |         |  |       |            |
| वाक्रमा ७ वाकाली                |         | বায় শ্রীরমাপ্রসাল চন্দ বাহাত্র বি, এ              |       | 8•         |
| বায়                            |         |  |       |            |
| न प्                            |         | শ্রীক্ষেত্রপত্ন চটোপাধ্যায় এম, এদ-দি ৬২৫,         | ¢>>,  | ৬৮ ৭       |
| বিশ্বস¦হিত্য                    |         |  |       |            |
| বেদের কথা                       |         | অধ্যাপক শ্রীক্ষেত্রেশচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় এম, এ    |       | <b>%88</b> |
| বৃহত্ত <b>র</b> ভারত            |         |  |       |            |
| ভারতের বাহিরে ভারতীয় স         | ভাত     | ার বিভার—ঊাত্মনীতিকুমার চটোপাধাায় এম, এ, ডি, লিট্ | 830   | ,862       |
| ব্যায়াম-বিধি                   |         |  |       |            |
| <b>সাস্থ্যের মূল কথা</b>        |         | <b>শ্রীশচীন্দ্রনাথ মজুম্ছার</b>                    |       | 884        |
| ব্যায়াম ও খেলা                 | •••     | `,   | •••   | 185        |
| যপ্ত বিজ্ঞান                    |         |  |       |            |
| উচ্চতামাপক যন্ত্ৰ               |         | ডাঃ মেখনাল শাহা এফ, আর এস                          |       | 129        |
| র <b>সা</b> য়ন-বি <b>জ্ঞান</b> |         |  |       |            |
| আচার্যা প্রফুলচক্র রায় ও হি    | म् द्रा | ণায়ন — উ⊪শীলা ধর এম, এস সি                        |       | ৫৩৯        |
| ফুলের ফ্যুল                     |         | শ্রীনিত্যগোপাল চটোপাধায় ডি, এস-সি                 |       | (P)        |
| *(35                            |         |  |       |            |
| যুদ্ধে শব্দ বিজ্ঞানের ব্যবহার   |         | <u>জীৱা<b>জে</b>ন্দ্ৰ</u> নাথ খোষ ডি, এস-সি        |       | <b>%≩8</b> |
| শিল্প-কথা                       |         |  |       |            |
| ভারতের স্থাপত্য                 |         | শ্রীঅসিতকুমার হালদার                               |       | १२३        |
| সঙ্গীত ও শিল্প                  |         |  |       |            |
| গান                             |         | শ্রীদক্ষিণারঞ্জন মিত্র মজুমদার                     |       | 865        |
| <b>শ্ব</b> রলিপি                |         | শ্রীইন্দিরা দেবী চৌধুরাণী                          | •••   | 802        |
| গান                             |         | স্বৰ্গীয় স্বিজ্জেলাল রায় এম, এ                   |       | ७ऽ७        |
| <b>স্ব</b> রলিপি                |         | শ্রীইন্দিরা দেবী চৌধুরাণী                          |       | 6) 8       |
| গান                             | ٠.      | <u> </u>   | •••   | 92.        |
| <b>স্ব</b> রলিপি                | •••     | <u> </u>   |       | 92.        |
| সাহিত্য                         |         |  |       |            |
| বাঙ্গলা ন্সিপির উৎপত্তি         |         | ত্রীগোরীশঙ্কর চট্টোপাধ্যায় এম, এ                  | •••   | 867        |
| ইংরান্ধী ভাষার উৎপত্তি          |         | শ্রীলভিকা বস্থ বি, লিট্, (অক্সন)                   |       | 906        |





## বাঙ্গলা ও বাঙ্গালী

িবাঙ্গলাদেশের ইতিহাস ভারতবর্ষের ইতিহাসের একটি কুদ অংশ মাত্র। ভারতবর্ষের ইতিহাসের সহিত বাঙ্গলার ইতিহাসের যে যোগস্ত্র আছে তাহা বুঝিতে হইলে সকলের আগে এইটুকু বোঝা দরকার ভারতের অভ্যান্ত প্রদেশের আচার-বিচার রীতি-নীতি ও শিক্ষা সভাতার সহিত ইহার স্বাতন্ত্র কোথায় ? এবং একাই বা কোথায় ? এথানে তাহার সংক্ষিপ্ত আভাস দেওয়া হইয়াছে। ক্রমণাং সেই অতি প্রাচীন অজানা যুগের (তমসাচ্ছন্ন মৃগ) ইতিহাসে হইতে আরম্ভ করিয়া প্রথমান নৃতন আবিভারের আলোকে আলোকিত বাঙ্গলার নানা সুগের ইতিহাসের কথা বলা যাইবে। এই প্রবন্ধ তাহার স্কানা মাত্র।

উত্তরে হিমালয়, দক্ষিণে বিন্ধা পর্বতমালা, পশ্চিমে পশ্চিম সমুদ্র,পূর্বনদিকে পূর্বব সমুদ্র, এই চতু:সীমার মধ্যবতী ভূভাগ আর্যাবত নামে পরিচিত। হিমালয়ের পাদদেশ হইতে সমুজু প্রায় বিস্তৃত বাঙ্গলা দেশ আহ্যাবত্তেরই অন্তর্গত। ভূসংস্থানে যেমন বাঙ্গলা আর্যাবন্তের অন্তর্গত, রাষ্ট্রদংস্থানেও বাঙ্কলা মগধের (পাটনা গয়া প্রভৃতি জেলার) এবং অঙ্গের (ভাগলপুর এবং মুক্তের জেলার) সহিত বহুকাল, অন্তভঃ খুষ্টীয় পঞ্চম শতাকী হইতে ১৯১১ খুফাক পর্যান্ত অল্লাধিক পরিমাণে, প্রায় অবিচ্ছিন্ন ভাবে সম্বন্ধ ছিল। এইরূপ ভৌগোলিক এবং রাষ্ট্রীয় সম্বন্ধ সম্বেও আর্যাবর্তের অহ্যাহ্য ভাগের সহিত বাঙ্গলার আচার-বিচারে অনেক ভফাৎ। সমুদয় ভারতবর্ধেই বৈঞ্ব-্ধর্ম্ম প্রচলিত আছে। আর্য্যাবর্তের অধি-কাংশ ভাগের বৈঞ্বগণের ইষ্টদেবভা রাম-সীভা এবং দক্ষিণাপথের অধিকাংশ বৈষ্ণব-

গণের ইউদেবতা লক্ষ্মীনারায়ণ; কিন্তু:
বাঙ্গলার প্রায় সমস্ত বৈষ্ণবগণের আরাধা,
রাধাকৃষ্ণ। উড়িয়ায়, গুজরাতে এবং রাজপুতনায়ও রাধাকৃষ্ণের উপাসনা প্রবল।
জোন চবঠের অক্যান্ম ভাগের অধিবাসীদিগের
মধ্যে যাহারা বৈষ্ণব নহেন, তাঁহারা শৈব বা
শিবোপাসক। বাঙ্গলায় শৈবগণের স্থানে
দেখা যায় শাক্ত। তুর্গা, কালী, ভারা
প্রভৃতি দেবী শাক্তগণের ইউদেবী। বাঙ্গলার
বাহিরে অনেক শাক্ত আছে—মিথিলায়।

অনেক সভ্যজাতির মধ্যে অতি প্রাচীন কালে ঈশ্বরকে দেবীরূপে আরাধনার প্রচলন দেখা যায়। ঈশ্বরকে দেবী বা শক্তিরূপে ধারণা বাঙ্গালীর মধ্যেও সম্ভবতঃ খুব প্রাচীন। THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH

বাঙ্গালীর দ্বিতীয় বিশেষৰ,উত্তরাধিকারি-গণের মধ্যে মৃত ব্যক্তির সম্পত্তি বা দায়ভাগের নিয়ম। সারা ভারতবর্ধে, এমন কি, মিথিলায়, মৃত ব্যক্তির সম্পত্তি

উত্তরাধিকারিগণের মধ্যে বিভক্ত হয় এক নির্দে, মিতাকরা নামক যাঞ্চবঙা-স্থৃতি টীকার্মণ নিবন্ধ অনুসারে। একমাত্র বাঙ্গলায় মৃতব্যক্তির সম্পত্তি বিভক্ত হয় জীমত-বাহনের দায়ভাগ নামক নিবন্ধ অনুসারে।

ভারতবর্ষের অন্যাক্ত প্রদেশে প্রচলিত "মিডাক্ষরা" নামক নিবন্ধ অনুসারে পৈড়ক সম্পত্তি কোন একজনের নহে, পিতা, পুত্র. পৌত্র প্রভৃতি একযোগে পূর্বপুরুষের সম্পত্তির ভাগ পায়। কিন্তু বাঙ্গলায় ইহা সম্ভব হয় না। তাহা ছাড়া, পিতার মৃত্যুর পর আভাবের মধ্যে সম্পত্তির কে কতটা পাইবে "মিতাক্ষরা" তাহা নিৰ্দিষ্ট कतिया (एय ना. मकत्मत अकत्यात्म अधिकात থাকে, কিন্তু, "দারভাগ" অনুসারে প্রাতাদের মধ্যে ভাগের বাঁধাবাঁথি নিয়ম আছে। অনা বিষয়েও ভেদ আছে। বাঙ্গলার বাহিরে অন্যতা যদি একালবর্তী পরিবারের মধ্যে এক ভাতার মৃত্যু হয় এবং তাঁহার কোন পুত্র না থাকে, তাহা হইলে তাঁহার বিধ্বা

পত্নী সম্পত্তির কোন অংশ পান না, মুত স্বামীর ভাঙাদের নিকট হইতে কেবল ভরণ-পোষণ পাইয়া থাকেন। বাঙ্গলা দেশে কিন্তু মূত ভ্রাতার বিধবা পত্নীও সেই ভাতার ভাগ পূর্ণমাত্রায় ামতাক্ষরা নামক স্মৃতি গ্রন্থে মু গ্রাক্তির সম্প-ত্তির বিভাগের যে ব্যবস্থা আছে ভাহা শাস্ত্র-বচনের সহজ অনুগত। "দায়ভাগে" জীমুভবাহন শাস্ত্রবচনের অক্সরপ

পান।

বাাখা

জীমৃত-



তুৰ্গা-মহিষমৰ্দিনী

দাক্ষিণাত্য প্রদেশের মামলপুরম নামক স্থানের গুচা-গাত্তে খোদিত। আফুমানিক সপ্তম শভাদীর প্রথমভাগে নির্ণিত

প্রচলিত "দায়ভাগ" অনুসারে পিডাই পূর্বা-পুরুষের সম্পত্তির একমাত্র অধিকারী এবং তিনি যতদিন জীবিত থাকেন ততদিন পুত্রের ঐ সম্পত্তিতে কোন অধিকার জন্মায় না, তাঁহার মৃত্যুর পর তাঁহার পুতেরা সম্পত্তি পায়। বাঙ্গলা দেশে পিতা ইচ্ছা করিলে পুত্রদের সম্পত্তি হইতে বঞ্চিত করিতে পারেন, কিন্তু ভারতবর্ষের অন্যত্র

বাহনের স্বভন্ত ব্যাখ্যার ফলে যে বাঙ্গলার দায়ভাগ রীতি একেবারে বদলাইয়া গিয়াছে. এরপ মনে করা যায় না: বরং মনে করা উচিত যে, মৃতব্যক্তির সম্পত্তি-বিভাগ-রীতি वतावतरे वाक्रमात्र এरेक्नभ अञ्चरे हिम, এবং জীমুতবাহন শাস্ত্র ব্যাখ্যা দারা তাহার সমর্থন করিয়াছেন মাত্র।

করিয়াছেন।

বাঙ্গালীর ধর্ম্মের, দায়ভাগের এবং আরও

## ·+제약해 영제약(하)·++++

অনেক চোট ছোট বিষয়ের সহিত আর্থ্যান্থরের অন্যান্য প্রদেশের লোকের ধর্ম্মের দায়ভাগের এবং , অন্যান্য বিষয়ের ভেদ আছে। তাহা বিচার করিলে মনে হয়, বাঙ্গালীর সভ্যতা আর্থ্যাবর্ডের অক্যান্থ দেশের সভ্যতা অপেক্ষা স্বতন্ত্র মূল হইতে উৎপন্ন অর্থাৎ গোড়ায় বাঙ্গালীর সভ্যতা আর্থ্যাবর্ডের সাধারণ সভ্যতা হইতে বিভিন্ন থাকিয়া স্বাধীনভাবে বাড়িয়া উঠিয়াছিল। প্রাচীন সাহিত্য আলোচনা করিলে এই কথার সাক্ষ্য পাওয়া যায়।

**তিনটি** প্রাচীন লইয়া জনপদ বাঙ্গলাদেশ গঠিত। সুকা বা রাচ ভাগীরথীর (গঙ্গার) পশ্চিম দিকে তাব-শ্বিত: মহাননা নদীর পূর্বতীর হইতে করতোয়ার তীর পর্যান্ত বিস্তত পুঞ্দেশ (বরেজ্র) ভাগীরথীর পূর্ব্যদিক হইতে পূৰ্বে সীমান্ত বিস্তত বঙ্গদেশ। এক সময় করভোয়া থুব বড় ननी किन, এवः कत-ভোয়ার পূর্ব্বদিকের

ভূভাগ কামরপ নামে পরিচিত ছিল। এখন করতোয়া শুকপ্রায়, এবং করতোয়ার পূর্ব-দিকের রঙ্গপুর, জলপাইগুড়ি জেলা এবং কোচবিহার রাজ্য বাঙ্গলার অন্তর্গত, এবং কামরূপের উত্তর ভাগ আসাম নামে পরিচিত।

ভারতীয় সাহিত্যের মধ্যে বৈদিক সাহিত্য সর্ববাপেকা প্রাচীন। ঋক্, যজুং, সাম, অথর্ব এই চার বেদের প্রত্যেক বেদের ছুইটি প্রধান ভাগ, মন্ত্র এবং ব্রাহ্মণ।
বেদের মন্ত্র ভাগ সংহিতা নামে কথিত হয়
খথেদ সংহিতার একটি মন্ত্রে বোধ হয়
মগধের উল্লেখ আছে; অথর্ব বেদের একটি
মন্ত্রে মগধের এবং অঙ্গদেশের উল্লেখ আছে।
এই সকল মন্ত্রেই মগধ এবং অঙ্গবাসীদিগের
নিন্দা করা হইয়াছে। খথেদের অস্ত্রুগণকে
শবর এবং পুলিন্দগণের সঙ্গে দহুঃ জাতির
মধ্যে গণনা করা হইয়াছে। সংস্কৃত সাহিত্যে



জূগা মহিধমদিনী বৈতাল দেউপপুৱী – আতুমানিক ১০০০ গুৱাক

বিদ্যাপর্বতবাসী বর্বর জাতিনিচয়কে
শবর, পুলিন্দ প্রভৃতি নাম দেওয়া হইয়াছে।
বর্তমান কালে এই সকল জাতি সাঁওতাল,
কোল, ভীল নামে পরিচিত। শবর এবং
পুলিন্দগণের সহিত একত্র দহ্যের সামিল
বলিয়া গণনা করা হইয়াছে বলিয়াই যে পুণ্ডুগণ অর্থাৎ বরেক্সদেশের প্রাচীন অধিবাসিগণ
শবর পুলিন্দের মত বর্বর ছিলেন এরপ মনে

B+++++++

করা যায় না। বেদের প্রাক্ষণ থণ্ডের শেষ ভাগের নাম আরণ্যক। উপনিধং এই আরণ্যক ভাগেরই অন্তর্গত। ঐভরেয় আরণ্যকে বঙ্গগণের অর্থাৎ বঙ্গদেশের অধিবাসীদিগের নিন্দা দেখা যায়।

ছুৰ্গা-মহিষমৰ্দ্দিনী—-বাঙ্গলাদেশ শ্ৰীযুক্ত নলিনীকান্ত ভট্টশালী এম, এ মহাপন্নের সৌজ্ঞে

বয়স হিসাবে বেদের ব্রাহ্মণথণ্ডর পরে সংস্কৃত এত্থের মধ্যে বেদান্তের অন্তর্গত কল্পসূত্র। বৌধায়নের কল্পসূত্রের অন্তর্গত ধর্মপুত্রে বাবস্থ। আছে, যদি কেছ পুঞু, বন্ধ এবং কলিলগণের দেশে গমন করে, ভবে ভাহাকে দেশে ফিরিয়া প্রায়ন্তিত্ত করিয়া শুদ্ধ হইতে হইবে। উড়িয়ার অন্তর্গত পুরী কোলা এবং পুরীর দক্ষিণে অবস্থিত গাঞ্চাম

> (항라) প্রাচীনকালে কলিঙ্গনামে পরিচিত ছিল। পুঞ্-বঙ্গ-যাত্রীর জন্ম বৌধায়নের এই প্রায়শ্চিত, বিধি অন্যান্য ধর্মশাস্ত্রেও মুভরাং ঋ্চতির বেদের এবং স্মৃতির বা ধর্মশালের বচন বিচার করিলে দেখা যায়. প্রাচীন কালে এক আর্যাবর্তের সময় সন্বানা ভাগের লোকেরা বাঙ্গলার অধিবাসিগণকে ধর্ববর ক বিভ মনে এবং বাঙ্গলায যাওয়া-আসং পাপজনক মনে করিত। শ্ৰুতি-স্মৃতি আগ্ৰাণ मण्यामा ( य त শাস্ত্র। অব্ৰাহ্মণ সম্প্রদায়ের (অর্থাৎ যাহারা ধর্ম-বিষয়ে শ্রুতি-শ্মতির অনুসরণ করে ভাহাদের) শারেও দেখা যায়. প্রাচীন-কালে একদিকে বিহার (মিথিলা, মগধ, অঞ্চ)

এবং আর এক দিকে বাঙ্গলা (পুঞ্, ফুলা, বঙ্গ) এই ছুই দেশের লোকের মধ্যেও বিশেষ পরিচয় বা আসা-বাওয়া ছিল না। अञ्जाकां मंद्रानारात्र मरश आहीन कारन भू व<sup>्</sup>ंकाकायमानीः हिलाः ः स्वीकत्तन्। स्वीक সম্প্রদায়ের প্রতিষ্ঠাতা গৌতম বুদ্ধ আন্ত্-मानिक ৫৯० चुके शृंकीटम अञ्चल्छ । कतिया-ছিলেন এবং আহুমানিক ৪৮০ খুক্ট-পূর্বাঞ্চ দেহত্যাগ করিয়াছিলেন। বৌদ্ধগণ গৌছম বন্ধের উক্তিগুলিকে শান্ত বলিয়া স্বীকার করে। পরিভাষায় এবং সংস্কৃত ভাষায় গৌতম বৃদ্ধের উক্তিপূর্ণ অনেক পুস্তক পাওয়া যায়। বিভিন্ন গ্রন্থে সংগৃহীত বুন্ধের উক্তির মধ্যে মতের অনেক বিভিন্নতা দেখা আধুনিক কালের ইউরোপীয় পণ্ডিতের৷ অনেক বিচার করিয়া স্থির করিয়াছেন, দীর্ঘনিকায় (দীর্ঘ আগম.) মক্সিমনিকায় (মধ্যম আগম), নিকায় ( একোত্তর আগম, ) সংযুত্ত নিকায় বিনয়পিটক প্রভৃতি (সংযুত আগম), পালিভাষায় লিখিত বুদ্ধের বচন সংগ্রহ সর্বাপেকা প্রাচীন এবং এই সকল পুস্তকে বুদ্ধের সমসময়ের, অর্থাৎ খুষ্ট-পূর্বব ষষ্ঠ ও পঞ্চম শতাকার আর্যাবর্তের লোকের আচার-বিচারের কতক্টা **আভাষ পাওয়া** যাইতে পারে।

মগধের অন্তর্গত গয়ার নিকটবন্তী উক্বেলা গ্রামে গৌতম বৃদ্ধত বা সিদ্ধি লাভ করিয়া-ছিলেন; এবং তারপর তিনি অনেক সময় মিথিলার প্রধান নগরী বৈশালীতে, মগধের রাজধানী রাজগৃহে এবং অঙ্গদেশের রাজধানী (ভাগলপুরের নিকটবর্তী) চম্পা নগরীতে থাকিয়া ধর্মপ্রচার করিতেন। মন্ধ্রিম নিকায়ের একটি সূত্রে (১৫২ নং) আছে গৌতমবৃদ্ধ একবার কজঙ্গলা নগরের অন্তর্গত ম্থেলু উভানে উপদেশ দিয়াছিলেন। কজঙ্গল নগর বোধ হয় সাঁওতাল পরগণার অন্তর্গত গঙ্গার পশ্চিম তীরন্থিত রাজমহলের নিকটে কোথাও ছিল। বর্ত্তমান কাকজোল পর-গণা অপদ্রংশ আকারে কজঙ্গলের নাম

বহন করিভেছে। কঞ্চল হইতে গলা পার হইয়া পূর্বাদিক গেলেই পুণ্ডুদেশ এবং গলার পশ্চিম কুল ধরিয়া থানিক দূর অপ্রসর হইলে সুকা বারাচ্দেশ। গৌভম বুদ্ধ পুণ্ডের বা রাঢ়ের বা অঙ্গের কোন নগরে কখনও পদার্পণ করিয়াছিলেন, প্রাচীন পালি গ্রন্থে এরূপ প্রমাণ পাওয়া যায় না। পালি নিকায় গ্রন্থে বা আগমে এবং বিনয়-পিটকে পুঞ্-বঙ্গের নাম আছে কি না সন্দেহ: কিন্তু উৎকল (উৰুল), কলিঙ্গ এবং গোদাবরী পর্যান্ত বিল্ণুত অসসক ( অশ্মক ) (मर्भात नाम बार्ष्ट। शामि विनय्शिष्टरकत একস্থানে বলা হইয়াছে, মঞ্জিমদেশের পূর্ব-সীমা কজকল নামক নিগম বা নগর, ভারপর মহাশাল: ভারপর প্রভান্ত বা সীমাস্ত দেশ। স্থভরাং দেখা যাইভেচে, গোতম বুজের বা বুজধর্মের উৎপত্তির সম-नमरत পूशु-बार वक वा वाकना मधा अरमरणब বহিভূতি প্ৰত্যস্ত ৰাহ্য দেশ বলিয়া গণ্য হইত। এইরূপ গণ্য হইবার কারণ বোধ হয়, সেকালের বা পুর্বেকে কানত কালে মিথিলা, মগধ, অঙ্গের (বিহারের) সহিত বাঞ্চলার রাষ্ট্রীয় বা রাজকীয় সম্বন্ধ ছিল না, এবং আর্য্যাবর্ত্তের অক্যাক্স ভাগের সভ্যতার বা আচার-ব্যবহারের এত তফাৎ ছিল যে ঐ সকল দেশের লোক বাঙ্গলায় যাভায়াত করিত না। আগেই স্বতন্ত্রভাবে বাঙ্গলার সভ্যতার উৎপত্তি এবং পরিণতি হইয়াছিল বলিয়াই এখনও বাঙ্গলার এবং আর্য্যাবর্তের অস্থান্ত ভাগের লোকের मरभा ব্যবহারের এভ ভফাং: বাঙ্গলার বিহারের মধ্যে রাষ্ট্রীয় সম্বন্ধ বোধ হয় প্রথম স্থাপিত হইয়াছিল খুষ্টপূর্ব্ব তৃতীয় শতাবে মোর্যাক্রগণের আমলে। তদবধি বাঙ্গলায় এবং হিন্দুস্থানে অবাধে লোক সমাগম চলিতেছে, কিন্তু বাঙ্গালীর সভ্যভার বিশেষ লক্ষণগুলি কখনও লোপ পায় নাই।



# यी ७ शृष्टे

শিশুদিগকে আমার নিকটে আসিতে দেও—তাহারাই পূদিনীতে স্বর্গের রাজা রচনা করিয়াছে। একণাটি কি মধুর!

এমন করিয়া শিশুদিগকে

থিনি ভালবাসিতেন 
শিশুদিগকে নিকটে

আহ্বান করিতেন ও

আশার্কাদ করিতেন,

আমরা খৃষ্টধশ্বের জন্মণাতা

সেই মহাপুরুষ গীশুখুষ্টের
জীবনকণা এখানে ভোমা

দিগকৈ ব্যিতেছি ।

আজকাল পৃথিবীর অনেক দেশেই শ্বষ্ট-ধৰ্ম্ম প্রচলিত। এই ধন্মের যিনি প্রবর্ত্তক, তাঁহার নাম গীভ। গীভ শদের অর্থ ত্রাণক গ্রা। গ্রেডম. বৌদ্ধধ্যেব প্রবর্তন করেন। 'ব্দান' দিবাজ্ঞান লাভ করিবার পর ২ইতে তিনি বৃদ্ধ নামে পরিচিত। গীভও তেমনি তাঁহার অসামাঞ ভাগে ও ধণ্ডের জন্ম অভিবিক্ত প্রভ বা গষ্ট নামে আখাত। গোত্ৰ





শিশুদিগকে সামার নিকট আসিতে দেও

বুদ্ধের নাম ক্রিলেই আমাদের কাছে বুদ্ধগার A.D. অর্থাৎ Anno Dominiঅর্থাৎ তাঁহার জন্মের

কণা মনে পড়ে, মহাপুরুষ হজরং মুহম্মদের নামের সহিত মকার কপা মনে জাগে, তেমনি বীভগুটের নামের সহিত

প্যা লে ষ্টা ই ন্ ও
নাজারেণের ও তাঁকার
জন্মস্তান নেপ্লেকেমের
কথা মনে হয় ৷ আবার
নাজারেপ্নগরে থাকিতেন
বলিয়া লোকে তাই
তাঁহাকে নাজারেণের
বীক্ত কহে ৷

১৯৪৮ বৎসর আগে প্যালেষ্টাইনের অন্তর্গত বেপ্লফেম নগরে যীঞ্ খুষ্টের জন্ম হইয়াছিল। ণীশুর সেই জন্ম বংসর **২ ই তে ই** আজকাল পূথিবীর অনেক দেশে বংসর গণনা হয়। এজন্য আমরা খুইজন্মের পুর্কের কোনও সন তারিখের কণা বলিতে হইলে বলি খুষ্টপূৰ্ব্ব, ইংরা**জীতে** B. C. অর্থাৎ কিনা Before Christ আর ভাঁহার মুড়ার পরের সময়কে আমরা ব্লি

## হীও স্থ

বংসর। আনেকের মতে এই যে, যীক্তপৃষ্টের জান্মের দিন হইতে খৃষ্টাব্দ গণনা করা হয় তাহা ঠিক নহে। যীশুর জন্মের চারি বংসর পূর্ব্ব হইতে খুষ্টাব্দের আরম্ভ, আনেক পণ্ডিত আজকাল এইরূপ বলেন।

বীতর জন্মকালে তাঁহার সম্বন্ধে কেচ কোন উচ্চ ধারণা করে নাই। ঈশর ভক্ত এক দরিদ পরিবাবে তাঁহার জন্ম হইরাছিল। বীতর জন্ম সম্বন্ধে কতক গুলি অলোকিক ঘটনার কথা বাইবেলে খাছে। গল আছে বে, বীতর জন্ম হইলে পর প্রক্ষেশ অলাক পোরত ও ভারতবর্ষ হইতে কয়েকজন জানী লোক নানা প্রকার উপহার লইয়া তাঁহাকে দেগতে আসিয়াছিলেন। তাঁহারা ছিলেন জ্যোণ্ডিকিল্, কাজেই আকাশের তারা দেখিয়া বুনিতে পারিয়াছিলেন বে, বেণ্লেহেম গ্রামে এক মহাপুক্ষের আবিভাব হইয়াছে। সেই মহাপুক্ষকে দেখিবার জন্মই তাঁহারা পথক্রেশ সঞ্চ করিয়া এতদ্র আসিয়াছিলেন।



#### পিতামাতা যীভকে লইয়া মিশরে চলিলেন

কথাটা দে দেশের রাজা চেরডের কাণে গেল। তিনি ইহা শুনিয়া শিশু নীশুর প্রতি বিদেষভাবাপথ হইলেন, তথন নিরূপায় পিতামাতা তাহার জীবন রক্ষার জন্ম তাঁহাকে লইয়া মিশরে চলিয়া গেলেন। রাজা হেরডের মৃত্যু হইলে পর', তাহার পিতামাতা বীশুকে লইয়া আবার প্যানেস্টাইনে ফিরিয়া আদিলেন এবং নাজাবেণ সহরে বাদ করিতে লাগিলেন।

প্যালেষ্টাইনের গোকেরা বেশীর ভাগই ছিলেন য়ীছদী (Jew)। গীশুর বাবা মাও ছিলেন য়ীহুদী। তাঁহার বাবার নাম ছিল যোদেক আর মাতার নাম ছিল মেরী। দেকালে য়ীন্তদীরা ধন্মপ্রাণ জাতি ছিল। তাহাদের মধ্যে ধন্মতাবের ও ধন্ম শিক্ষার প্রব প্রচলন ছিল। গরীবের গরের এই ভোট ছেলেটি আতি শৈশবেই পাঠশালায় যাইয়া লিপিতে পড়িতে শিপিয়াছিলেন। য়ীন্তদীদের ধন্মগত হইতে স্কলর স্কলর খোক আহার করিছে পারিতেন। য়ীন্তদীরা ইপর সম্বন্ধে এবং পন্ম সপ্রক আমরা বাইবেলের প্রথম ভাগ Old Testament বা প্রাতন নিয়ম নামক পুস্তক পাইয়াছি। বালক যীন্ত, সেই অভি



যীভর বাবা ছুতারের কাজ করিতেন

জীবন বাইবেলের শিক্ষাদীক্ষা ও রীতির অন্থসরণ করিতেন। বাইবেল ছিল ওাঁহার জীবনে অতি প্রিয় এখ। গীশুর বাবা যোশেফ ছুতারের কান্ধ করিয়া জীবিকা অর্জ্জন করিতেন।

যীশুর যথন একটু বয়স ছইয়াছে তথন তাছার পিতাব মৃত্যু হইল। বিশবা মা ও ছোট ছোট ভাই বোন্দের পালনপালনের ভার তাঁছার উপর পডিল। যীশু তাঁছার পিতার কাছে ছুতারের কাজ শিবিয়াছিলেন, এখন স্ত্রধ্রের কাজ করিয়া পরিবার প্রতিপালন করিতে লাগিলেন। নাজারেথ সহরের লোকেরা ঠাফাকে যীভস্তেধর (Jesus the Carpenter) বলিয়াই জানিত।

্রসময়ে দেশে ভীষণ অশানি দেখা দিল। য়ীতদীরা স্বাধীন ছিলেন। তাঁহাদের রাজাও য়ীছদীই চিলেন কিন্তু হঠাৎ ঝড়ের মত রোমানরা আসিয়া পালেষ্টাইন অধিকার করিল-কাজেই য়ীস্থদীদের দেশ রোম সামাজ্যভুক্ত হইল। স্বাধীন গ্রীত্দী জাতির কাছে প্রাধীনতা ভাল লাগিতেছিল না, তাহারা দেশের স্বাধীনতা ফিরিয়া পাইবার জন্ম বাকিল ২টয়া পডিয়াছিলেন আবার কবে ভাষাদের স্বাধীন দেশে ভাষাদেরই রাজা সিংহাসন আলো কবিয়া বসিবেন ছহাই ছিল ঠাহাদের চিস্থা। খীতদীর। বিশ্বাস করিতেন উচ্চাদের দেশে এমন এক জন নেতার আণিভাব হইবে যিনি এই পরাধীন দেশকে স্বাধীন কবিতে পাবিবেন। এইরূপ নেতার আবিস্থানকে যীত্দীরা বলিলেন মেশিয়া Messiah বা প্রেরিত প্রথ। যীজনীদের মধ্যে অনেকেই আপনাকে 'মেশিয়া' বলিয়া পরিচয় দিয়া রোমকদের বিকদ্ধে যদ্ধ করেন কিন্তু কেইই জয়লাভ করিতে পারেন নাই।

একদিন ঘীভদীদের দেশে একজন ভবিষাংদর্শী মহাপ্রসের আবিভার হট্ড ভিনি যীজ্গীদিগতে ব্লিলেন-- তামবা তোমাদের কত পাপের জন্ম ড়ভোগ ভুগিতেছ, কিন্তু ভয় নাহ, শীঘুই ভোমাদের মধ্যে প্রেরিভ মহাপুরুষ আসিতেছেন, তিনি ভোমাদের কাছে স্বর্গাজার ধার যুক্ত করিয়া দিবেন। দলে দলে লোক এই মহাপ্ৰথয়ের কাছে আসিতেলাগিল কত পাপী নিজ নিজ জীবন পুণাময় ও প্রিত্র করিবার জন্য ব্যাকুল হইল কভজনের অনুতাপের অশ্বারায় ভূমি সিক্ত হইল। সকলের শেষে আসিলেন গীভ, তিনি সেই মহা পুক্ষের উপদেশ শুনিলেন, শুনিতে শুনিতে মনে হুট্র যেন ঈশ্বর গ্রাহাকেট প্রিনীর বকে স্বর্গের রাজ্য সৃষ্টি করিবার জন্ম ডাকিতেছেন। যীশুর প্রাণে সেই বাণী নতন জীবনের সৃষ্টি করিল। ঘর বাড়ী বাবদা দৰ প্ডিয়া রহিল, দ্ব ত্যাগ করিয়া যীও পথে বাহির হইলেন। পালেষ্টাইনের গ্রামে গ্রামে প্রান্তরে প্রান্তরে সকতে প্রচার করিতে লাগিলেন ঈশ্বরের মধুময় বাণী। লোককে বঝাইতে লাগিলেন - শিক্ষা দিতে লাগিলেন ঈশ্বর কি. ধশাকি গ

লোকে বীশুর স্থন্দর আকৃতি, মধুর প্রকৃতি এবং স্থমিষ্ট উপদেশ শুনিয়া মুদ্ধ হইতে লাগিল, তাঁহার সদর বাবহারে সকলে তাঁহাকে শ্রদ্ধা ও ভক্তি করিতে লাগিল। যীশু ভাবে গদগদ চিন্তে সকলকে বলিতে লাগিলেন—আমরা ঈশ্বরের সম্ভান, শোন তোমরা সকলে— ঈশ্বরই আমাদের পিতা। আমাদের সকলের প্রতি তাঁহার সমান প্লেহ, তিনি সকলকেই সমানভাবে ভালবাদেন। ছোট বড় বলিয়া কোন প্রভেদ নাই। জগতের নরনারী সকলে আমরা ভাই বোন। আচার অফুলান, বত্তার্মণ এসব কিছু নয়, দেহ পবিত্র এবং মন নিশ্বল হইলেই ঈশ্বরের ভালবাদা পাওয়া শায়।



যীও ছোট ছোট শিশুদিগকে প্ৰাণ দিয়া ভালনাসিতেন

কতজনের রোগ আরোগ। করিয়া, কতজনের গদ্য ও মন পবিত্র করিয়া এবং কত পাপীকে যে তিনি মুক্তির পথে টানিয়া আনিয়া জগতের উপকার করিতে লাগিলেন তাহার সংখা নাই। বীশু যখন যে পথে চলিতেন, দলে দলে লোক তাহার অন্ত্সরণ করিত। ছোট ছোট শিশুদিগকে তিনি প্রাণ দিয়া তালবাসিতেন, তাহাদিগকে আদর করিতেন আর তাহারাও তাহার সঙ্গে সঙ্গে দল বাধিয়া পথে চলিত।

সকলের মন সমান নয়। একদল লোক থেমন তাঁহাকে ভালবাদিত, তেমনি আর এক দল হইল তাঁহার বিদ্রোহী। কোথায় ? থীশু ত মেশিয়া নহেন। রোমকদের বৃদ্ধ করিয়া তাড়াইয়া দিবার কোথায় তাঁহার রণ-সজ্জা? এই বিদ্রোহীদলের লোকদিগকে থীশু বলিলেন— ঈশরের রাজ্য, রণ-কোলাহল ও বিলোহের রাজ্য নয়। ফর্গ ও সামাজ্য লইয় যে হন্দ, ঈশরের সামাজ্যে ভাহার ঠাই নাই। তাঁহার রাজ্য মালুবের মনোভূমিতে—দেরাজ্য মেহের ও প্রেমের—দে ভালবাদার শান্তিমদ্ম সামাজ্য। মালুবমাত্রই যে ঈশরকে ভালবাদে, ভক্তি করে, দে ঈশরের শান্তিমদ্ম রাজ্যে তাল পায়। বিশ্বপ্রেমিক যীশুর কাছে তাহার দেশের লোকেরাও যেমন বাবহার পাইত, বিদেশী রোমীয় দৈপ্তেরাও তেমনি মিই বাবহার পাইত। যীজ্ঞদীদের দলপপতি আদিয়া যথন গীশুকে জ্ঞাসা করিল—আমরা কি রোম স্মাট্কে রাজ্যে দিব স্



মন্দ্রের দৃষ্টিশক্তি লাভ

মীক হাসিয়া বলিলেন—সীজারের (রোম সরাট্)
প্রাপ্য তাঁহাকে দেও, আর যাহা ঈশ্বরের প্রাপ্য
ভাহা ঈশ্বকে দেও। একণা গুনিয়া দলপতি
রাগিয়া আগুন হইল—কেমন করিয়া খীগুর প্রাণনাশ
করিতে পারিবে, একমনে দে ঠাহারই চিন্তা করিয়া
উপায় অথেষণে ব্যস্ত হইয়া উঠিল।

এদিকে দেশের থাহারা ধন্মের নেতা, তাঁহারাও থাঁতর প্রতি চাট্মা গেলেন। এ লোকটা দে ধন্দাহাঁ নীচ ও পতিত জাতির লোকের সঙ্গে একসাথে বিদয়া খায়! যীভ এই সকল ধন্মান্ধ নেতা
দিগকে বলিতেন—ঈশ্ব মান্থ্যকে ভালবাসেন,
মান্থ্যের ক্লাান চাহেন, মান্থ্যের গড়। ধন্মের
প্রচলিত রীতি নীতি ভাহার কাছে কিছুই নম্ম!
ঈশ্ব ভাহাকে পাপীদের আণক্তাকপে এই
প্রিনীতে প্রেরণ করিয়াছেন।

আর একদল যীশুর অলোকিক প্রভাবের জয় তাহার উপর ভয়ানক রাগিয়া গেলেন। গীশুর



কুঠ রোগীর রোগ আরোগ্য

স্কোমণ করম্পর্শে রোগী রোগমুক্ত হয়, বিধবার মৃতপুল জীবন লাভ করে, সনুদ্রের ঝড় থামিয়া যায়, পাচপানা কটিতে পীচ হাজার লোক থায়, মৃত বাক্তি কবর হইতে উঠিয়া আনে,—এই মহামানবের কাছে সাধারণ পুরোহিতের প্রভাব যে আর কিছুতেই টিকে না। দলে দলে লোক তাঁহারই

অহুসরণ করিতেছে। জনগণ যে আর তাঁহাদিগকে মানিবে না, তাঁহাদের প্রতিপত্তি যে লোপ পায়।

এই শ্রেণীর লোকেরা সকলে মিলিয়া যীশুর প্রাণনাশ করিবার জন্ম চেষ্টা করিতে লাগিল। নির্ভীক গীশু-—ঈশ্বরভক্ত গীশু, এ সকল জানিয়াও শুনিতেন না—দেখিয়াও দেখিতেন না। তিনি আপনার মনে তাঁহার বাণী প্রচার করিতে লাগিলেন। এ সময়ে তিনি যে সকল গল্প বলিয়া সকলকে উপদেশ দিতেন, যে সব অলোকিক কাজ করিতেন, তাহার বিশ্বত পরিচয় তোমরা বাইবেল পড়িলে জানিতে পারিবে।



শেষ ভোজ

একদিন রাতিকালে ভাঁহার এক প্রধান শিষ্য জডাদের বিশ্বাস্থাতকতায় যীঞ্পক্রদের হাতে ধরা পডিলেন। একস্থানে প্রথম ভোজের পর যীত প্রার্থনা করিতেছেন, এমন সময় জুডাদ অস্থ শস্ত্র-সমেত একদল লোক লইয়া আসিয়া গীগুকে ধরাইয়া দিল। তোমরা শুনিয়া আশ্চর্যা হইবে যে, মাত্র ত্রিশটি টাকা পাইয়া দে এমন বিশাদ-ঘাতকতার কাজ করিয়াছিল। শক্রণল তাঁহাকে ধরিয়া লইয়া যীতদীদের ধর্মসম্পর্কিত বিচরালয়ে উপন্থিত করিল। বিচারে যীশুর প্রতি প্রাণদণ্ডের আদেশ হটল। পরের দিন ভোরের বেলা তাহারা যীশুকে রোমীয় শাসনকর্ত্তা পিলেটের নিকট উপস্থিত কবিল। রোমের প্রতিনিধি শাসনকর্তার আদেশ-ব্যতীত ঘীশুর শত্রুপক্ষীয় পুরোহিতদের কাহারও প্রাণদক্ষাজ্ঞা দিবার অধিকার ছিল না। রোমের শাসনকর্ত্তা বীশুকে জানিতেন। জানিতেন যীশু ধাৰ্মিক মহাপুক্ষ। এমন ধাৰ্মিক মহাপুক্ষকে

কেমন করিয়া সাজা দিবেন। সে কি বিচার

ইইবে ? কিন্তু উত্তেজিত বিদ্রোহীদল বলিল, তুমি

যদি এই ধর্মদ্রোহীকে প্রণদণ্ডে দণ্ডিত না কর,

তাহা হইলে আমরা সমাট সিজারের নিকট তোমার

বিরুদ্ধে অভিযোগ করিব। কাজেই প্রসন্ধ মনে

—নিজের ইচ্ছার বিরুদ্ধে রোমীয় শাসনকর্তা পিলেট্

গীগুর প্রাণদণ্ডের আদেশ দিলেন। ধন্মান্ধ হতভাগাগণ মহাপ্রাণ বীগুর প্রতি এ সময়ে যে



মত ব্যক্তির জীবন দান

অতাচার করিল সে-কথা স্মরণ করিলে চোথে জল আসে। তাহারা ঠাহার মাথায় পরাহল কাঁটার মুকুট, গায়ে পরাইয়। দিল কয়েদীর পোষাক আর চাবুক মারিতে মারিতে তাহার সারাদেহ রক্তে রাঙ্গা করিয়া দিল আর বিদ্যুপ করিয়া বলিতে লাগিল --এই যে য়ীভদীদের রাজা যাইতেছেন।

নির্ভূর ধশাদ্ধণণ এই ভাবে তাঁচাকে এক পাহাড়ের উপর লইয়া গেল এবং দেখানে ক্রশকাঠে বিদ্ধ করিয়া বধ করিল। মহাত্মা শীশু নিদারণ যম্ভ্রণায় বাথিত হইয়াও মৃত্যুকালে ঐ সব হতভাগাদিগকে সম্বোধন করিয়া বলিয়াছিলেন—ঈশ্বর, ইহারা জানে না কি অপরাধ করিল! প্রভূ! তুমি ইহাদিগকে ক্ষমা করিও। বল দেখি, এমন মহত্ক কয়জন দেখাইতে পারে ?

যীশুর প্রিয় ভক্তসম্প্রদায় তাঁহার প্রতি এই অন্তায় অবিচারে একাস্ত হৃঃখিত হইয়া পড়িয়াছিল। তাহারা রোমীয় শাসনকর্ত্তার নিকট তাঁহার মৃতদেহ

## হী অখ্য

সমাধি দেওয়ার জন্ত অন্থমতি চাহিল। শাসনকর্ত্তা অন্থমতি দিলে তাঁহার প্রিয় সঙ্গিল সেই পবিত্রদেহ এক উন্থানমধ্যে সমাধিস্থ করিয়া, কবরের মুখে পাথর চাপা দিল। তারপর তাহারা সকলে কাদিতে কাদিতে হরে ফিরিল। পুরোহিতদের কথায় পিলেট সেখানে পাহারা বসাইয়াছিলেন।

তিন দিন পরে এক অলৌকিক ঘটনা ঘটিল। দেদিন প্রভাতে যীশু কবর হইতে পুনরুণান করিলেন। তথন ভয়ানক ভূমিকম্প হইাছিল।



ক্রশবিদ্ধ যীশু

সন্ধার সময় যীশুর প্রধান ভক্তগণ ও শিখ্যগণ জেকজেলেমের একটি গৃহে বসিয়াছিলেন। ধর্মাদ্দ মীন্তদীদের ভয়ে তাঁহারা সকলে দরজা বন্ধ করিয়া দিয়াছিলেন। এমন সময় দিবা জ্যোভিঃতে চারিদিক আলোকিত বরিয়া দেহধারী যীশু সেথানে উপস্থিত হুইলেন এবং তাঁহাদিগকে সদ্বোধন করিয়া বলিলেন — ভোমাদের শাস্তি হুউক, ভয় করিও না, আমি আবার ফিরিয়া আসিয়াছি।

ভক্তবৃন্ধ আনন্দে উচ্ছেদিত হইয়া উঠিলেন। গীণ্ড তাহাদিগতে বলিলেন—আমার পিতা, আমার ঈশ্বর তোমাদের কাছে যে বাণী দিয়া প্রেরণ করিয়াছেন, আমি তাহা বলিতে আসিয়াছি। শিশ্বেরা নিভরে যীশুর সে সমুদয় উপদেশ শুনিয়া পরে তাহাদের মৃতি হইতে তাহা লিখিয়া লইয়াছিল।

যীশুর এই আবিভাবকে খুষ্টানরা পুনকথান বলেন। ভারপর দলে দলে লোক দেশে দেশে যীশুর দেই পুণা বাণী প্রচার করিতে লাগিল।



পুনরুপান

অভাচার, অবিচার, লাঞ্চনা, গঞ্জনা ও মৃত্যুকে তাহাদের পলে পলে বরণ করিতে ইইয়াছিল, তবু তাহারা সভাপথ ইইতে বিচলিত হয় নাই। পৃষ্টধর্মের ইতিহাসে এমন শত শত তাাগের মহৎ দৃষ্টান্ত রহিয়া গিয়াছে, যাহারা ধর্মের জন্ম প্রাণানতে এতটুকু বিচলিত হয় নাই। এইরপ অত্যাচার ও নির্দাাভনের ভিতর দিয়া দেশে দেশে এই প্রেমের ধর্ম প্রচারিত হইয়াছিল। যীশু পৃথিবীতে এক নবম্গ রচনা করিয়া গিয়াছেন। প্রত্যেক পৃষ্টান একথা বিশ্বাস করেন। যীশু প্রত্যেকটি কার্ম্যে, প্রত্যেকটি আচরণে তাঁহাদের অন্তরে থাকিয়া সৎপথে পরিচালনা করিয়া আসিতেছেন।

#### াজ-ভাৰতী

মুক্তা সময়ে জাঁহার বয়স হুইয়াছিল মাত্র তেরিশ বৎসর। খীশু গলচ্ছলে উপদেশ দিতেন।

মহাজা ঘীশুর বাণী

শিশ্দিগকে সামার নিকট আসিতে দেও, বারণ করিও না, কেন না, ঈররের রাজ্য শিহুদের কাছেই আছে। যে বাক্তি শিশুর ভায় সরলও কোমণ নাহয়, সে কোনকপেই ঈশবের রাজ্যে প্রবেশ করিতে পারে না।

চরি করা, মিথাা কথা বলা, প্রেবঞ্চনা করার চেয়ে বছ পাপ আর নাই।

পি গ্রমাতাকে ভক্তি করিবে।

প্রাণন দিলে প্রেম মিলেনা। তোমার সমস্ত মন, সমন্ত প্রাণ, সমন্ত শক্তি দিয়া ঈশ্বরকে ভালবাসিবে।

ভোমার প্রতিবেশীকে অপনার নিজের মত ভালবাসিতে শিক্ষা কর।

শোকের ভিডরেই সারনা আছে।

যাহাদের প্রাণে ধ্রুলাভের জন্ম ব্যাকুলভা আছে. তাহারা নিশ্চই ধন্মলাভে পরিতপ্ত হইবে।

মে ব্যক্তি দান্নাল, দয়া তাহার গুঙ্হে বাদ করে।

গ্রের প্রতিরোধ কবিওনা, বরং কেই যদি তোমার দক্ষিণ গালে চত মারে, তাতাকে লাম গাল ফিরাইয়া দিও।

মিগা দিবা করিও ন।। এক গাছি চল সাদা কি কাল করিয়া দিবার ক্ষমতা যাখাব নাই, সে মিথ্যা দিবা করিতে যায় কোন সাহসে ?

প্রার্থী জনের প্রার্থনা পূর্ণ করিও। যে তোমার নিকট বিপদে পড়িয়। ধার চায়, তাহা হইতে তাহাকে বিমুখ করিও না।

আমরা এগানে তাঁহার কয়েকটা উপদেশ উদ্ধৃত করিতেছি।

তোমরা শক্র, মিত্র সকলকেই ভালবাসিবে। মনে রাখিও, তোমরা স্বর্গন্ত পিতার সন্তান: তিনি ভাল মন্দ লোকদের উপরেও আপনার স্গাকে কিরণ দিতে বাধা দেন না, ধাত্মিক ও অধাত্মিক সকলের উপরই তাহার মেঘ. শীতল ধারা চালিয়া দেয়।

লোককে দেখাইবাব জন্ম ধন্ম কথা করিও না। ত্যি যথন দান কব, তথন তোমার সন্মথে বঁরী বাজাহও না। ভূমি ব্যন দান কর, তথন ভোমার দক্ষিণ হস্ত কি করিতেছে তাহা তোমার বাম হস্তকে জানিছে দিও না। থিনি গোপনে দেখেন, তিনি এইরূপ দানেবট গল দেন

লোকের অপরাধ ক্ষমা কর। তোমাদের অগরাধন্ত ঈশ্বর ক্ষমা করিকে।।

চক্ষ শরীবের প্রদীপ। তোমার চক্ষ যদি সর্জ হয়, তবে তোমার সমস্ত শরীর দীপ্রিময় হইবে। কিন্ত তোমার চক্ষু ধদি মনদ হয়, ভবে তোমার সমস্ত শরীর অন্ধণার হুইবে।

তুই জনের দাস্য করাও যায় না, তুইজনকে ল্লাসাও থায় না। কেননা, সে হয়ত এক জনকে ভালবাদিবে এবং এক জনকে দ্বেষ করিবে নয়ত এক জনের প্রতি অধুরক্ত হইবে, আর এক জনকে ভচ্চ করিবে।

তোমরা ঈশ্বর এবং ধন উভয়ের দাসত্ব করিতে পার না।

বিখাদ ধথের মূল। কলাকার নিমিত্ত ভাবিত না। কেননা, কলা আপনার কথা আপনি ভাবিবে।

প্রতিদিন ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করিও.— আতার কল্যাণ চ্টাবে।



# ভারতের বাহিরে ভারতীয় সভ্যতার বিস্তার

আমাদেব দেশ এই ভারতবর্দ, আমাদের পিতৃভূমি, আমাদেব মাতৃত্বকপিণী। এই দেশে আমাদের পিতৃপুক্ষপণ জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, এই দেশেই তাঁহারা জীবন্যাগ্রা নিবনাহ কবিয়া গিলাছেন, তাঁহাবা সব বড বড কাজ এই দেশে করিয়া গিয়াছেন। তাঁহাদের চিন্তা ও উদ্ভাবনী শক্তিতে আমাদের এই বিরাট্ ভারতীয় সন্তা গড়িয়া উঠিয়াছে, ভাবতীয় ধর্ম, দর্শন, সাহিতা বিজ্ঞান এ স্মন্তের স্প্তি



সেকালের জাহাজ

ছইয়াছে। তাঁহারা যে গৌরব অর্জন করিয়া গিয়াছেন, তাঁহাদের বংশধর বলিয়া আমরাও দেই গৌরবের অংশীদার।

থালি ভারতব্যের মধেটি ভারাদের কর্মক্ষেত্র সীমাবদ্ধ ছিল না। অতি প্রাচীন কাল হুইতেই ভারতসমের বাহিবেও ভাঁহাবা যাইতেন এবং ভারতের বাহিবের নানা দেশেও ভাঁচাদের কীতি-কলাপ আমবা এখনও দেখিতে পাই। তাঁগাবা প্রথমতঃ কেবল বাবসা-বাণিজ্যের উদ্দেশ্যেই এই সকল দেশে যাইতেন। তাহার পবে এদেশের ঋষিকা, এদেশের যোগীকা এদেশের ব্রাহ্মণ ও আচার্যোরা, এদেশের বুদ্ধদেব, মানুষের কলাণের জ্ঞানে সন অমূলা উপদেশ দিয়া-ছিলেন সেই সব উপদেশও ইহারা ভারতের বাহিরের নানা দেখে প্রচার কবিতে লাগিলেন। বাহিরের দেখের লোকেরা ভাঁগাদের কথা শুনিল। তাহারা আদরের সঙ্গে আমাদের ঋষিদের ও ব্রাক্ষণদের ধর্ম ও উপদেশ এবং বুদ্ধদেবের উপদেশ এ১৭ কবিল। আমাদেব দেশের ধর্ম ও চিন্তার সঙ্গে সঙ্গে আমাদের পুরাণকথা ও কাহিনী. আমাদের আচার, অনুষ্ঠান, আমাদের মন্দির-গঠন-প্রণালী, আমাদের শিল্প, আমাদের সঙ্গীত ও নৃত্যু এ সমস্তও গ্রহণ করিল: এবং এগুলিকে নিজেদের দেশের ও রুচির অমুরূপ করিয়া একট - সাধট সদল-বদল

#### -++ শিশু-ভারতী

-\*

করিয়া, নিজেদেরও অনেক জিনিষ মিশাইয়া একবারে নিজস্ব করিয়া লাইল। এইরূপে আমাদের দেশের লোকদের সঙ্গে মিলিয়া, ভারতবর্ষের বাহিরের বহু দেশ নিজ নিজ জাতীয় সভাতাকে গড়িয়া তুলিল, অথবা ভারতের সভাতা, ধর্ম্ম-রীতি-নীতি দার।

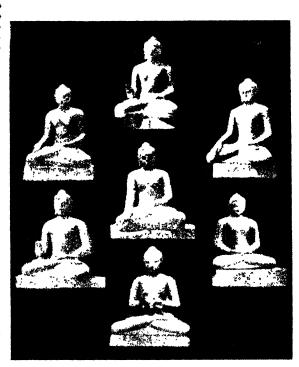
ভাবতবর্ধের বাচিরে নানাদেশে এইরূপে বে সকল নৃত্র ভারতবর্ধ গড়িয়া উঠিয়াছিল, আমরা সেগুলিকে এক সঙ্গে "বৃহত্তর ভারত" বলি।

তুই হাজার বছরের আগে থেকেই এই "বৃহত্তব ভারত্ত"—গড়িতে আরম্ভ করে।

কোন্কোন্ দেশে এই
"বৃহত্তর ভারত" গড়িয়া
উঠিয়াছিল, পর পৃষ্ঠার
মানচিত্রখানি দেখিলে
বঝা ঘাইবে।

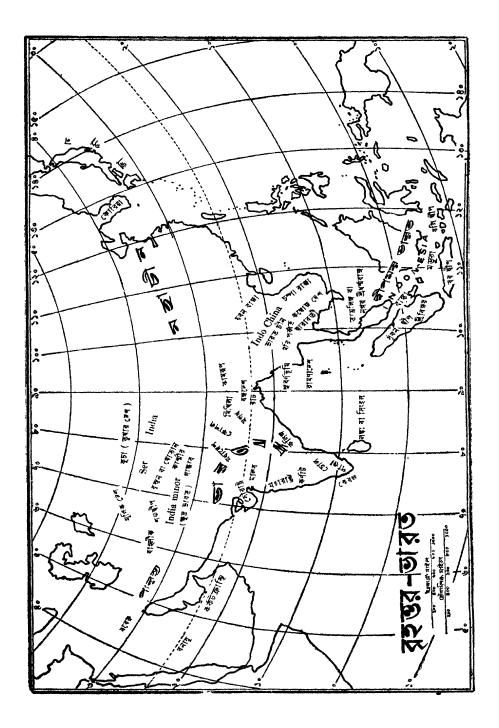
আমাদের দেশেব চার্বি-দিকে প্রত্যালা ও সমুদ্র আছে। দেখিয়ামনে হয়. ভগবান বুঝি আমাদেব দেশকে অত্য দেশ হইতে আলাদা করিয়াই করিয়াছেলেন। আগো পণ্ডিভেরা মনে করিভেন. বঝি ভারতব্যের লোকেরা ভাডিযা বাহিরে যাইতই না। ভারতবর্ষে আগে অনুৰস্থের <u>অভাব</u> তেমন ছিল না লোকে বাহিরে শাইবে কেন গ মাঝে মাঝে বাহির হইতে শক্তিশালী বিদেশী জাতি জয়ের জন্ম বা লুঠের জন্ম ভারতবর্ষ আক্রেমণ করিত

এবং ভাষারা আসিয়া এদেশের কোন কোন কান কান কানে বাজা হইয়া বসিত। ভারতবাদীরা ভাষাদের ততটা প্রাহ্য করিত না। ভার পরে ভাষারাও ক্রমে ভারতবাদীদের সঙ্গে মিলিয়া ভারতবাদীই ইইয়া যাইত। এই সব বিদেশী জাতি বাহির হইতে নূতন নূতন মনোভাব ও চিন্তাপ্রধালী এবং নানা নূতন



বরবছরে প্রাথ সাতটি বিভিন্ন বন্ধমন্তি

নিজেদের প্রেকি।র সভাতাকে আরও
সমুদ্ধ কবিয়া তুলিল। এই সকল দেশের
কতকগুলি আবার ভারতংশের সভাতা,
ধর্ম, পুরাণ-কথা, শিল্প প্রভৃতিকে এভটা
আপনার করিয়া লইল যে, নিজেদের দেশকে
ভারতংশ্বর যেন একটা অঙ্গ বা অংশ স্বরূপ
করিয়া ফেলিল।



#### শিশু-ভারতী

জিনিষ, নানা নৃতন জ্ঞান-বিজ্ঞানও ভারতবর্ষে আনিত এবং ভারতবাসীরো এই ভাবে নৃতন ভাব ও কথা এবং নৃতন বস্তুর সঙ্গে পরিচয় লাভ করিত। বিদেশী জাতির লোকেরা আবার ভারতবর্ষের জ্ঞান-বিজ্ঞান, শিল্প প্রভিত্তি কিছু কিছুনিজেরা শিথিয়া লইয়া নিজেনের দেশেও ভাগর প্রচার করিত।

প্রাচীন কীর্ত্তি, আধুনিক সভ্যতা ও জীবনযাত্রার পদ্ধতি—এ সমস্ত ইইতেই আমরা
বেশ ভাল করিয়া বুঝিতে পারিতেছি যে,
প্রাচীনকালে ভারত তাহার জ্ঞান ও শিল্প,
তাহার আধ্যাত্মিক দর্শন, ধর্ম ও পার্থিব
সভ্যতা এই তুইটি জিনিয লইয়া নিজের
ভৌগোলিক গণ্ডীর বাহিরে নিজেকে
ছডাইয়া দিয়াছিল। ভারতের লোকেরা



বৌদ্ধ দেবীমুর্তি—ভার।

এই ভাবেই যা অল্পন্ন ভারতের সঙ্গে বহির্জগতের দেওয়া-নেওয়া ঘটিত।

কিন্ত প্রাচীন ভারতের সঙ্গে ভারতের বাহিরের নানা দেশের যোগের সম্বন্ধে দক্ষেতি আমরা দে সব খবর পাইতেছি, ভাহাতে স্পষ্টই বুঝা যাইতেছে যে, আমাদের দেশের সম্বন্ধে যে ধারণা বা মতের উল্লেখ উপরে করা হইরাছে, ভাহা একেবারে ভুল। ভারতের বাহিরে "বৃহত্তর ভারত"-এর দেশগুলি, সেই সব দেশের ইতিহাস,



অবলোকিতেশ্ব- শবদীপ

বেশ সচেতনভাবে এবং একটা স্থাপ্ট উদ্দেশ্যের সহিত নিজেদের আদর্শকে লইয়া বাহিরের দেশের মান্ত্রের সামনে উপস্থিত ইইয়াইছিল।

এশিয়া মহাদেশের প্রধানতঃ তিনটি স্থানে "বৃহত্তর ভারত" গড়িয়া উঠিয়াছিল— সেই তিনটি স্থানের নামকরণ হইয়াছে [১] Indonesia 'ইন্দোনেসিয়া' বা Insulindia 'ইন্স্লিন্দিয়া' অর্থাৎ 'ধী শুমুম ভারত,' [২] Indo-China 'ইন্দোচীন'

#### রুহত্তর ভারত

অথবা 'ভারত চীন' এবং [৩] Serindia 'সেরিন্দিয়া' অথবা 'চীন ভারত'। এত দ্বিম্ন India Minor বা আধুনিক আফগানিস্থান ও তিব্বতকেও বৃহস্তব ভারতের মধ্যে ধরিতে হয় এবং সিংহলদ্বীপকে বৃহস্তব ভারতের অংশ অপেক। মূল ভারতবর্ষেরই প্রাদেশ বলিয়া ধবা উচিত।

চীন, কোবিয়া ও জাপানকে এবং কতকটা টংকিং ও যানামকে বৃহত্তব ভারতেব অংশ নামের মধ্যে প্রথমটি ও তৃতীয়টি আজকালকার এশিয়া মহাদেশের কোনও
মানছিত্রে মিলিবে না, কেবল ইন্দোচীন
মিলিবে এই নামগুলি ইউরোপীয়
পণ্ডিতেদের দেওয়া। এই তিন স্থানের
সভ্যতায় ও প্রাচীন অথবা আধুনিক অধিবাসীদের জীবনে ভারতবর্ষেব প্রভাব
লক্ষ্য করিয়া ভারতের নাম India বা এই
নামের সংক্ষিপ্তরূপ Indo এই সকল স্থানের



গ্ৰেং।রভচ্- মন্দিবেৰ গাংগে ংথাদিত রাজকুমাৰীগণেৰ মৃতি

বলা যায় না। কাবন এই দেশগুলি বিশেষতঃ চীন, অতি প্রাচীন কাল হইতেই স্থাসতঃ দেশ বলিয়া প্রিগণিত—পাণিব সভাতায় চীন ভাবতেব সমকক্ষ: ভগিনী স্থানীয়: কিন্তু বৃহত্তর ভারতেব দেশগুলিকে ভারতব্যের কন্তান্ত;নীয় বলিতে পাব। যায়। কোবিয়া, জাপান এবং টংকিং ও আনাম চীনেবই মানস-কন্তা।

'ইন্দোনেসিয়া' গথবা 'ইন্সুলিন্দিয়া', 'ইন্দোচীন' ও 'সেরিন্দিয়া'—এই তিনটি নামে নাথিয়। তাহাদেব নৃতন নামকরণ করা হইয়াছে। 'ইন্দোনেসিয়া' শব্দটি ভারত সাথে Indo ও গ্রীক nesos শব্দ যাহার অর্থ 'দ্বীপ', এই ছুইটি শব্দ মিলাইয়া তৈয়ারী; 'ইন্পুলিন্দিয়া' তদ্রপ দ্বীপ-অর্থে লাটিন Insula শব্দের সঙ্গে India যোগ করিয়া সৃষ্ট। মালয় উপদ্বীপ এবং ভারত-মহাসাগরের ঈশান-কোণে বা উত্তর-পূর্ব্ব-ভাগে, এশিয়া নহাদেশের অগ্নি-কোণে বা দক্ষিণ-পূর্ব্বভাগে যে <u>দ্বীপ</u>পঞ্জ আছে.

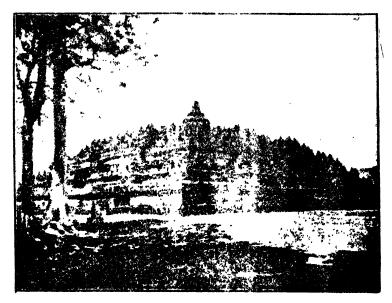
839

F. 3 () তাগ স্থান্থ

3093

(मश्कामित महिशा १३ 'हर्न्या किसा' द 'দীপময়-ভাৰত'। এই সক্ষ ভালের মধ্যে। भाज भावत छेल्यान हैन्द्रस्य व वर्तार-चात बीभक्षात आह भन्ता है रक्षात অধীনে। যথা ওমাতা, যবভাষ, ব্রিদ্ধীল, **लश्च,** स्रश्नी क्या, इक्स्ट्रिंग, रिस्मीर, क्या स्टार बीপ। ११६वि एप्यासिकालन भर भन-१५०

Trutel, line Indies বা ভচের অধিকত পুৰু নাৰ্থী দেশসমূহ; Netherlands trained ১৯০৪ৰ অধিকৃত ভাৰতথ্ও। ্লদের ভাষায় দেশের নাম tweet 15 derlandsche Indie 31 'Es ভ 🚈 - এই সমস্ত দ্বীপে ও নাল্য-উল্ভান একটি জাতির নানা শাখাব পশ্চিম ১ইছে পুৰুদ্ধি প্ৰিয় ছে। লোৱন ৰুম কৰে: এই ভাতিটিৰ নাম



54355.3

ইহাদের উত্তর মলক্ষাস এপ্রস্থা, সেলেনেম ख रवाणिक। रवाणिकव अवक्रेशनि हे एक দের অধীনে ) এবং এই তিন দ্বীপপ্তের উত্তরে ফিলিপীন দ্বাপপঞ্জ। এইটি খানে विकात युक्तवारश्चन अधीरन। मान्हिर्व আজকাল এই দ্বীপপঞ্জের মামা ইবেড়ী নাম দেখা যাত--The East Indies অর্থাৎ 'প্রসা-ভাবতীয় দেশসহ' Indian Archinelago অর্থাৎ ভারতীয় দীপপঞ্চ।

২০: ১৫৯ Malay মালয় জাতি। ইহাদেব মাগ্রেই প্রায় শিক্ষায় যাঁহার। শিক্ষিত. তাং লে। বলেতে পাৰিয়াছেন যে, সমগ্ৰ দীপ-প্রের হবিবাদী ভাঁচারা এক জাভিরই ্লাক. দেশেবত একটি জাতীয় নাম হওয়া উচিত ভাই উতোৱা আজকাল ইউবোপীয় প্রভিত্তের দেওয়া এই Indonesia নামটি গ্রহণ করিয়াছেল এবং সগর্বে নিজেদেব Indonesian বলিয়া পরিচয় দিভেছেন।

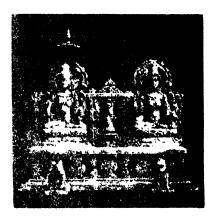
- **\*** 

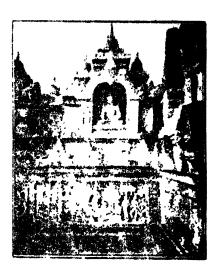
সমগ্র দ্বীপপুঞ্জ ও মাল্য বিথাপ সমগ্র ইন্দোনে সিয়াল এখন সাড়ে পাচ কোটির এশা ইহাদের মধ্যে এখন বেশীল হার কোটি ইইবে মসলমান ধর্ম বর্ধ বাকী লোবে দেন মধ্যে কি দশ লাখ অভনাত এখন ভবন ও



ধ্বদাংশ্ব বিবাদ

ধর্ম লইয়া আছে, কিছু এই
খৃষ্টানদের সংখ্যা ফিলিপিল সেলেনেসেই
বেশী। বাহিবেব জাতিত এ টাবা কিছু
কিছু বাস করিতেছে, এ চাত্রবা সংখ্যায় খুব বেশী, তারপবের্ছ ভাততবাসী
আছে (তামিল, শিখ্, হিন্দ্র ইং এনেব কিছু
খারবও বাস করিতেছে। বের্ণিভ ও ান। এই ছইটি দ্বীপ সৰ চাইতে বড়। দ্ব এই ছইটি দ্বীপে ্লাকসংখা। **খ্**ৰই ১, দ্বীপ গ্ৰুটিৱ বেশাব ভাগ জন্মল ঢাকা। কৌপে ব্লিদ্বীপ, লম্বক—এই গুলিডেই



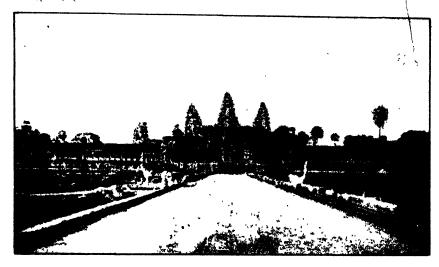


ব্ৰস্থ্যের প্রশাসন্থ লোকের বসতি পুব অধিক। প্রাচীনকালে স্তান্ত্র, ধ্বদীলে এবং বলিদ্বাপ এই **তিন্টি** স্তান্ত্রিক তিন্দু-সভাত্বিকেলে। এ **সম্ভো** 

পরে আলোচনা করিব। এক যবদ্বীপেই চার-কোটা লোকের বাস। ইহাদের পূর্ব্বপুরুষগণ আমাদের ভারতীয় হিন্দুদের মত হিন্দু ছিল। প্রায় চারিশত বংসব হইতে একটু একটু করিয়া ইহারা মুসলমান ধর্ম গ্রহণ করিতে আরম্ভ কবিয়াছে। এখন তাহারা নামে মুসলমান ধর্ম গ্রহণ করিলেও, নিজেদের প্রাচীন হিন্দু সভ্যতা ও মনোভাব ত্যাগ করে নাই; এখনও ভাহারা তাহাদের

হিন্দু পিতৃপুরুষগণের কীর্ত্তির কথা লইয়া

থাকে। ফরাসীদের অধিকৃত ইন্দোচীনে এই কয়টি দেশ আছে—টংকিং, আনাম, কোচিন-চীন, কাম্বোভিয়া বা কম্বোজ এবং লাওস্। এই দেশ কয়টিব মধ্যে টংকিং ও আনামের লোকেরা একটু পৃথক্—ইহারা চীনেরই অংশ, যেন ইহাদের লইয়া একটি 'বৃহত্তর চীন' ইহাদের মধ্যে ভারতীয় সভ্যতা ততটা কার্য্যকর হয় নাই, যেটুকু হইয়াছে সেটুকু চীন হইয়া ঘুরিয়া। কোচিন-চীনের প্রাচীন নাম ছিল চম্পা: এই চম্পা বাজ্য



অক্টেরভট্-এব সাধ বণ দৃশ্য--কথেজ

গর্ব করে, সারারাত্রি রামায়ণ মহাভারতের নাটক ও পুতৃলনাচ করে এবং সংস্কৃত ভাষাব নাম ব্যবহার করে। সাগে দেশের লোকেরা ও রাজারা আমাদের মতন হিন্দু নাম লইত, রাজাবা সংস্কৃত ভাষায় অমুশাসন প্রচার করিতেন।

. 'ইন্লোচীন' শব্দ দানা আজকাল মুখ্যতঃ ফরাসীদের অধীন French Indo China-কেই বৃঝায়, কিন্তু ব্যাপকভাবে এই নাম দ্বারা অধিকন্ত বৃথ্যা ও শ্যামকে বৃথাইয়া ও কম্বোজ রাজা বৃহত্তব ভারতের তৃইটি বিশিষ্ট অংশ। শ্রাম ও বর্মা—এই তৃই দেশে ভাবতীয় হিন্দু-সভ্যতাই প্রবল এবং ব্রাহ্মণ্য ধর্মা ও বৌদ্ধধর্মা এ দেশের প্রাচীন ও আধুনিক ধর্মা।

বর্দ্মা, শ্যাম ও কম্বোজের লোকেরা এখনও ধর্ম্মে বৌদ্ধ, এবং তাহাদেব শাস্ত্রগ্রন্থ পালি ভাষায় লেখা, পালির ও কিছু কিছু সংস্কৃতের চর্চ্চা এখনও সে দেশে আছে। বর্মা ইংরেজদের অধীন ও আমাদের

#### রুত্তর ভারত





<u> ক্রেপিবি বিষুদেবতা— যবদ্বীপ</u>



যবদাপের একটি প্রাচীন মন্দিরের তোরণ-পর্ণ



বরবৃত্বের একটি ভোরণের গাছে খোদিত মকরম্র্ডি চণ্ডী অর্জন—মধ্য ববছীপের একটি প্রাচীন মন্দির



ভারতবংষ্বই একটি প্রদেশ বলিয়া পরি-গণিত। একমাত্র শামদেশ স্বাধীন দেশ। এই দেশের ভাষায় প্রচুর সংস্কৃত শব্দ আছে, দেশের বহু স্থানের নাম, মানুষের নাম সর্ব্বত্রই সংস্কৃতের ছড়াছড়ি। তবে ইহাদের উচ্চারণে সংস্কৃত শব্দগুলি অন্ত



ধরণের শুনায়। ভাষের রাজার নাম 'প্ৰজাধিপক, সপ্তম রাম. রাজবংশের নাম 'মহা-চক্ৰী' বংশ; ইহার পুর্বেব এই রাজার मामा ছিলেন রাজা: তাঁহার নাম ছিল 'বজুলায়ুধ, ষ্টুরাম: তাঁহার পুর্বে ছিলেন রাজা—ইহাদের পিতা, 'চডালক্ষরণ' পঞ্মরাম। রাজ্যের নগরের নাম---'অযোধ্যা' (উচ্চারণে 'আইউথিয়া' নগর। সুধর্মরাজ (উচ্চার্ণে 'নাখন স্থর্মরাং'), 'রাজপুরী' (রাংব্বী)

'বজপুরী' ('পেচাব্রী'), 'স্বর্গ লোক'
('সাওয়াঙ্ধ লোক'), 'অরণ্য প্রদেশ'
('আরান্ পাথেং') ইত্যাদি। শ্রামের ভাষায়
টেলিফোনকে বলে 'দ্র-শব্দ' (উচ্চারশে
'থোরো সাপ', কিন্তু বানানে লেখে ঠিক),
উড়ো জাহাজকে বলে 'আকায়-যান'
(উচ্চারণে 'আগাং ছান্')।" বর্মী ও
কম্বোজের ভাষায়ও জক্রপ সংস্কৃত শব্দ অনেক আছে। কম্বোজের লোকেদের বলে
Khmer ক্ষের; দক্ষিণ বর্ষায় Mon মোন বা Talaing তালৈঙ বলিয়া একট জাতি



ধ্যুদ্ধারী রামচন্দ্র, পশ্চাতে লক্ষণ-প্রস্থানান



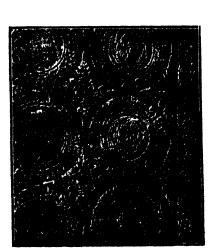


লয়াদহন—প্রম্বান্ আছে, ইহারা ও ক্সেরেরা নিকটসম্ভক্ত। এই

ক্ষের এবং মোন-জাতির লোকেরা, এবং চম্পার চাম্জাতীয় লোকেরা প্রথমে হিন্দু-সভ্যতা গ্রহণ করে এবং তাহাদের হাত দিয়া ক্ষার ক্ষারা ও খ্যামের খ্যাম-জাতি এই সভাত। পায়। যবদ্বীপের বলিদ্বীপের মতন প্রভাব পড়ে নাই বলিলেই চলে। শ্যাম, কম্বোন্ড, চম্পা, যবদ্বীপ, বলিদ্বীপ—প্রাচীন-কালে এগুলি যেন মহাবাই, বঙ্গদেশ, দ্রাবিড়



ম্ব্রের শুশুগারের ক্রিক্যা

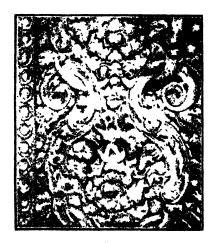


অক্ষোর ভট্ মন্দির-গাতের কাককার্য দেশ প্রভৃতির মত ভারতবর্গেরট অংশ পর্মপ হট্যা গিয়াছিল।



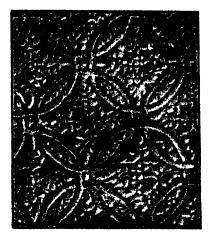
চঙীপ্লাঞ্সানের বোধিদক মৃতি
এ দেশেও আমাদের রামায়ণ মহাভারতের
ও পুরাণের প্রচলন খুব বেশী, বিশেষ করিয়া
রামায়ণের।

ইন্দোনেসিয়া ও ইন্দোচীন—এই ছুই স্থানে ভারতীয় প্রভাব খুব বেশী করিয়া হইয়াছিল, —এই ছুই স্থানের লোকেদের উপর প্রাচীন-কালে ভারতবর্ষ ছাড়া আর কোনও দেশের কিন্তু 'দেবিন্দিরা'য় ভারতীয় প্রভাব ছাড়া, চীন, পারস্থাও গ্রীদেব প্রভাবও থুব পডিয়াছিল। Serindia নামটি আধুনিক এশিয়ার মানচিত্রে নাই। দেশের প্রাচীন সভাতাব কথা মনে কবিয়াযে দেশকে আমরা এখন সেবিন্দিরা বলিতেছি, সেই দেশ এখন মুখাডা ক্লয়-চুকীস্থান ও চীনা ভুকীস্থান এই ডুইটি খণ্ডে বিভক্ত। Serindia নামটি গ্রীক Seres ও India এই ছুইটি নৈপ্লভি-কোণে বা দক্ষিণ-পশ্চিম দিকে 'খোতান' নামে আর একটি শহর। দেড় হাজাব বংসর পূর্বে দেশের চেহারাই অন্ত রূপ ছিল। দেশে জলসেচনের ভাল বাবস্থা থাকায় গাছপালা উব্বব ভূমি অনেকটা ছিল, এখন সে সব বাবস্থা নই হইয়া যাওয়ায় মরুভূমি আরও ছড়াইয়া পড়িয়াছে, লোকের বসতি অনেক গ্রাম ও নগরকে বালিতে ঢাকিয়া দিয়াছে।



অংখাবভট মনিবের কারুকায়া

শক মিলাইসা সমিত। Seres গ্রীক ভাষায় চীনা ছাতিব নাম। চীন ও ভারত, উভয় দেশের প্রভাব থাসিয়া এই দেশে মিশিয়াছিল বলিয়া এই নাম। এখন এই দেশে তুর্নী ভাষা বলে ও ধর্মে মুসলমান, এমন একটি জালি বাস করে। দেশটির অনেক শংশ মকজ্মির পুন। বিধেষত চীনা তুর্কীভানে মাঝে একটি বিরাট মকজ্মি, ভার উত্তরে আন দক্ষিণে খানিকটা কবিয়া উর্ব্বর ভূমি—মকজ্মির উত্তর ভারিম নামে এক নদী, এই নদীর ধারে কুটা ও কারা-শহর বলিয়া ছুইটি বিখ্যাত শহর ও মক্ত্মির



গ্ৰেবেভট মন্দিব গাতেৰ কাফকাথা

মার এদেশে তথন তুর্কীভাষী লোক থুব কমই ছিল, ছিল আর্যাঞ্জাতীয় লোক; (১) স্থালিক বা সগড়ীয় লোক এবং (২) খোতানীয় বা শক জাতীয় লোক, ইচাবা ইরাণীয় আর্যা ভাষা বলিত; আর ছিল কুচা ও কাবা শহরে তুথার জাতীয় লোক, ইচারা পৃথক্ একটি আর্যা ভাষা বলিত। এই স্থালিক, শক ও তুথার জাতীয় লোকেরা বৌদ্ধ ধর্মা, ভারতীয় বর্ণমালা ও সভ্যতা প্রচণ করিষা মধা এশিরায় উপনিবিষ্ট ভারতীয়দের সঙ্গে মিলিয়া একটি ছোটখাট বৃহত্তর ভারতেব সৃষ্টি করিয়াছিল।



## বায়ু

পিচকারী দিরা ধবন আমর।
জল টানিরা তুলি, তাহাও
এই বাযুর চাপের জভ হন।
পিচকারীর ভাঁটি উপরে উঠিতে থাকিলে,
ভিতরে বাতাসন্ত স্থান করিতে থাকে
কাজেই, বাহিরের জলের উপর
বাযুর চাপ বিশ্বমান থাকার, অথচ

সেই জলের যে অংশ পিচকারীর মুখের নীচে

পিচকারী দিরা আন উপরে টানা হইতেছে। রহিরাছে, তাহার উপর বাবুর কোন চাপ না থাকার, বাহিরের চাপে আল ভিতরে প্রবেশ করিতে বাধ্য হয়। কৃতি পিচিশ ফুট দীঘ নলে জল
ভরিষা, তাহার অল সৃষ্টি
অঙ্গলি দিয়া বন্ধ করিয়া, নলটি উন্টাইয়া,
াহার সেই অল্ল মৃষ্টি জলের নীচে ধরিয়া,
নলটি দাঁত করাইয়া, জলের নীচে
বাক্ষাপমাপন যক্ত
তাহার মৃষ্টি খুলিয়া দি, তোমরা
দেখিতে পাইবে, ভিতরের জল কিছুমাত্র পড়িয়া
যাইবে না। তাহার কারণ, কুড়ি পচিশ ফুট উচ্চ
জলের চাপ আমাদের সাধারণ বাতাসের চাপ হইতে
কম। চৌত্রিশ ফুট উচ্চ জলের চাপ, বাতাসের
চাপের সমান। তবে, সে জলের উপর বেন বাতাস না
থাকে, বা নলের অল্ল মৃধ্ দিয়া যেন বাতাসের
চাপের করিতে পারে। তাহা হইলে সে বাতাসের
চাপে, জল আর ওরক্স ভাবে শাড়াইতে
পারিবে না।

যদি কোনও একমুখ বন্ধ

বদি নলটির দৈখ্য চৌজিশ ফ্টের বেশী হয়,ভাহা হইলে ভাহা ইইভে উপযুক্ত পরিমাণ জল বাহির হইরা সেই চৌজিশ ফুট মাজ থাজিয়া বাইবে। জবন্ধ, বাছুর চাপের কম বেশী হইতে থাজিলে, সেই দৈর্ঘোরও কম বেশী হইবে। চৌজিশ ফুটের উপর বে শুক্তছান দেখিতে পাইবে, ভাহা কাজে কাজেই সম্পূর্ণ বায়ুশুল্প স্থান। গ্যালিলিওর শিক্ত নিমেলির নামান্থপারে ইহাকে টরিসেলিরেন শুক্তছান বলে।

যদি নলটি পারদপূর্ণ করিয়া উপরি উক্ত ভাবে পারদপূর্ণ পাত্রে দক্তাহমান করাই, তাহা হইলে,

20 DE

P

THE SEC

TROPE

## শিশু-ভারতী

পারদ জল অপেকা প্রার চৌদ গুণ ভারী বলিয়া,
বাহিরের বায়ু ইহার মাত্র ব্রিশ ইঞ্চির ভার ধরিয়া
রাখিতে সমর্থ হয়। এই উচ্চতার পরিবর্গুনে,
বাহিরের বায়ুর চাপের পরিবর্গুন নিন্দিট হইবে।
সাধারণ বায়ুর চাপ মোটামুটি ভাবে ব্রিশ ইঞ্চি
লওয়া হয়। মেন বাতাস হইতে হাজা হওয়ায়,
বায়ুতে মেদের প্রবেশ হইলে স্থানীয় বায়ৢর চাপ
কম হইয়া বায়। কাজেই, এই বজে কম চাপ
নিন্দিট হইলে ব্রষ্টির স্ভাবনা ধরা হয়। এইজপ

এখন যদি ঢাকনীটির উপর যড়ি**র মৃত একটি কাটা** বদাইয়া তাহা কোটার ভিত**রে ক্যুক্ত।** দিয়া









नगि भावनभून कवा श्रेवारह

বাহুচাপ পরিমাপক যা ।

পারদপূর্ণ নলের একমুখ পারদে ভুবাইলে খানিকটা পারদ পড়িছা গিয়াছে

আরও একপ্রকার যত্ত্বে বাছর চাপ মাপা যার। একটি কোটার ঢাকনী অতি পাতলা ধাতৃপত্তে নির্মিত করিয়া ঢাকনীটি কোটার আটারা দেওয়া হয়। ডিডরের বাতাস বাহির করিয়া লইলে, নেই ঢাকনীটির টোল ধাওয়া অবস্থা হইয় পড়ে। বাহিরের বাতালের চাপের ভারতম্য অস্ত্রসারে এই টোল ধাওয়া কম বেশী হইতে থাকে।

यद्वत्र नाम बाद्यानिष्ठात (barometer) वा

এমন ভাবে ঢাকনীটির নছিভ বি, টোল থাওয়ার
ছ্রিতে সমর্থ হয়, ভাহা হইলে, গ বে কোন সময়ে বাছুর কজ
পড়া বাইতে পারে। যুখটি
চাপে কাটা কোন্দ্র ঘরে বাছ,
পরীকার দেশিরা লইয়া
হয়। এই শ্রেণীর ব্যন্তর নাই
ব্যারোমিটার।



ভোমাদের ভিতর অনেকেই চাবী মুখে লইয়া ভাহার ভিতরকার বাতাস চুবিয়া ফেলিয়া, সেই চাপিয়া, উন্টাইয়া নিমুখী করিয়া হাত সরাইয়া লইলেও দেখিতে পাইবে, জল নির্গত হুইয়া বাইবে

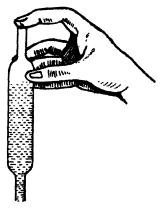


বায়-চাপমাপক ঘড়ি



চাবি গালে ঝুলিয়া মহিয়াছে

মবস্থার তাহাকে টানিতে টানিতে জিহ্বার, ওঠে,
গণ্ডে বা কপালে ঝুলাইরা রাখিরা তেকী দেখাইতেছ
বলিরা গর্ক করিয়া থাক। এরুণ
কেন হর, এখন নিশ্চরই বৃধিতে
পারিতেছ। এবংবিধ আরও অনেক ম্যাজিক
দেখাইতে পারা যায়। একটি নল জলে ড্বাইয়া
ভাহার উপরকার মুখ বন্ধ করিয়া ভূলিয়া লইলে
ভল পড়িয়া বাইবে না। শোরাই বা দক
গেলাল জলপুৰ্ধ করিয়া, হাত বিরা ভাহার মুখ



ৰূপ পড়িয়া যাইডেছে না

না। ইহাও এই বায়্র চাপের জন্ত বৃদ্ধিবে। দাইফনের ক্রিয়াও বায়ুর চাপের জন্ত হয়।

উচ্চ ইইডে উচ্চে
বায়র চাপ কম হইয়া
বায়। সাভ মাইলে মাসের জল পড়িভেছে না
প্রায় সিকি চাপ ও ৩০ মাইল উচ্চে এখানকার
চাপের প্রায় হুই হাজার ভাপের এক ভাগ
কোন প্রমেশের চাপ। ব্যোম্বান কড উত্তে
উঠিয়াছে বা পার্কাতা প্রাদেশগুলির
কোন্ খান কড উচ্চে অবহিত,
বায়-চাপমাপক ব্যে তৎস্থানীয় চাপ অবগত হইয়া,

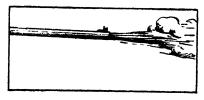


পাহাড়ের উচ্চতা অস্থ্যারে বাছর চাপের ব্রাস বৃদ্ধি হয় সেই উচ্চতা কবিরা বাহির করা হয়। অস ভাশরান মত্রের কোনু অফে ফুটিয়া উঠিবে, ভাহাও বাছর চাপের উপর নির্ভর করে। নিয়াকে কোটে

+\*

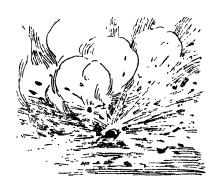
বলিয়া, পাহাড়ের উপর খোলা হাড়িতে মাংস ব। ভাল সিদ্ধ হইভে চাহে না।

বন্দুকের গুলি কেন এত বেগে বাহির হয়, জান ? বন্দুকের ভিতর যে বাক্ষদ ঠাসা হয়, তাহ। জলিয়া বন্দুক উঠিলে, তাহা হইতে রাসায়নিক ক্রিয়ায় সহসা এত অধিক পরিমাণে বাযবীয় পদার্থের সঞ্জী হয় যে, কৃত্র জায়তনের ভিতর



বন্দকের ভিতর হ**ইডে গু**লি বাহির হ**ইয়।** ঘাইডেচে

উৎপন্ন হওয়াতে তাহার চাপ ভীষণ হট্যা উঠে। এমন কি, দেই চাপে অনেক সময়ে নিরুষ্ট বন্দুকের চোল ফাটিয়। যায়। কাজেই চাপণীড়িত বায়বীয়া পদার্থ বন্দুকের নল দিয়া নির্গত হটবার সময়



বিস্ফোটক ফাটিভেছে

ওলিটিকেও সেই বৈগে বাহির করিয়া দেয়। বিক্ষোটকে আওন লাগিলে ঠিক এইরূপই হয়। সমস্ত যেন সম্ভাভনে চরমার হইয়া বায়।

বায়-বন্দুকে স্প্রাধ্যের সাহায়ে ভিতরের বায় চাপিয়া ধরা হয়। ঘোড়া টিপিয়া স্প্রীটে ধালাস করিলে, চাপ-প্রাণীড়িত বায় উপরি উক্ত ভাবে বন্দের নল দিয়া নির্গত হইবার সময় গুলিটিকেও সেই বেগে বাহির করিয়া দেয়।



বায়ু-বন্দুক মুড়িলে ভিতরের স্প্রীং দৃষ্ট হয়

কোন পাত্ৰে পিচকারী দিয়া বায়ু চাপে; চাপে ভরিবার সময়, পিচকারী ও বায়ু চাপে উক্তরে সৃষ্টি সমন্তটা গ্রম হইয়া ওঠে। বাইসিকেলে ৰাভাস ভরিবার সময় ইহ। আমরা



বাইসিকেলের পাম্পে ডাপমান যন্ত্র লাগাইয়া,পাম্পটি চালাইলে, ডাপমান-যন্ত্রে ভাপবৃদ্ধি জানা যায়

প্রভাইই টের পাই। আবার চাপা বাছু বাহির হইবার সময় ঠিক সেই পরিমাণে শীতল হইয়া পড়ে। ইহাও বায়বীয় পদার্থের সাধারণ গুণ। হঠাৎ আয়তন বৃদ্ধিতে থানিকটা থালি স্থান পাওয়ায়, বায়কণাগুলির বেগ খালিত হইয়া পড়ে। তোমাদিগকে পূর্বেই বলা হইয়াছে, গতি মন্দীভূত হওয়া এবং শীতল হইয়া পড়া, একই কথা।

জ্ঞান বাম্পূর্প বায়র আয়তন যদি সহসা বৃদ্ধি করা হয়, দেখিতে পাইবে, শীতল হওয়ায় তাহার জ্ঞান বাম্পুর্কার হয়। জ্ঞানা ও বৃষ্টিকণায় পরিপত হয়। জ্ঞানিতে যদি কোন মুদ্ধ চাপবিশিষ্ট ভবে প্রবেশ করে, তাহার জ্ঞানীয়াংশ উপরি উক্ত

বাবুর চাপ কত না কার্যো নিয়োজিত হইয়াছে! রেলগাড়ীর ভিতরে দরজার উপর ছাদের নীচে, ছোট ছোট শিকল ব্ললিয়া থাকে, ইহা তোমরা নিশ্চমই দেখিবা থাকিবে। এগুলির নীচে "গাড়ী
রেলগাড়ীর রেক খামাইতে হইলে শিকল টান।"
লেপা থাকে। একটি নলের ভিতর
ইইতে এই শিকলটি বাহির হয়। গাড়ীতে গাড়ীতে
যোগ দিবার সময় রবারের নল দিয়া এই নলগুলি
সংযুক্ত করা হয় এবং এইরুণে সবগুলি মিলিয়া
একটি স্থণীর্ঘ নলের মত হইয়া এগুলন খর হইতে
গার্ডের গাড়ী পর্যান্ত যায় + প্রত্যেক গাড়ীর
চাকাগুলির উপর চাকার গতি বন্ধ করিবার যে
থিলের মত যন্ত্রটি আছে—ভাহাকে ব্লেক (brake)
কহে, তাহার ওঠানামা একটি পিচকারীর মত
যন্ত্রের ঘার। সংসাধিত হয়। পিচকারীগুলি উপরি
উক্ত নলের সহিত সংলগ্ন থাকে। এগ্রিনের ঘার।
নলেব ভিতর হইতে বাতাস বাহির করিয়া লইলে



शास्त्र तोका

পিচকারীর ডাঁটি উপরে উঠিয়। যায় এবং ডাঁটিগুলির সহিত থিল বা ত্রেকগুলিও চাকা হইতে দ্রে সরিয়া যায়। প্রতি গাড়ীতে নলের এক একটি ছিপিবদ্ধ মুখ থাকে এবং সেই ছিপিগুলিতে উপরি উক্ত শিকলগুলি জাঁটা থাকে। শিকল টানিলে সেই ঘরের ছিপি খুলিয়া যাওয়ায়, বাতাস নলের ভিতরে প্রবেশ করিয়া পিচকারীর ডাঁটি নীচে নামাইয়া আনে ও সঙ্গে সঙ্গে চাকাগুলির উপর তাহাদের গভিনিবারক থিল বা ত্রেকগুলি আসিয়া পড়ে। ফলে, গাড়ীর গতি বন্ধ হইরা যায়। কি সহক্ষে অমন ভীষণ গাড়ীখানার গতি স্থগিত করা যাইতে পারে ও বৈজ্ঞানিকের। কোন্ তথ্যের সাহায্যে তাহা করিতে সমর্থ হন, তাহা বৃষ্ধিতে পারিলে কি গু

বড় বড় কার্থানায় বাড়াসের চাপে বড় বড় মৃদ্যর ও নানাবিধ যন্ত্রাদি অনবরত চালিত হইতেছে।
নানাবিধ আশুর্গ্য ও ছুরুহ কার্য্য লালে ঘোরা জাতা চাপে অনবরত সম্পাদন করা হইতেছে। পাল টালাইয়া নৌকা চালান হয় ও পুর্বকালে বড় বড় জাহাল চালান ইউত। বড় বড় পালের মত হাতা থাকায় উইওমিল নামক যন্ত্র



ুউইও মিল

বাতাসের প্রভাবে ব্রিতে থাকে। উইগুমিল বা পালে ঘোরা জাঁতা দিয়া গম পেবা হয়।

সকল বাছযমের মূলে বাতাদের কম্পন। ইহা বেন বার্-সমূত্রে বীচিমালা। র্থন আমরা ভাকে লাফ কট ও প্রদার কাটি দি বা কালরৈ যা মারি, ভখন ঢাকের চামড়া বা কাসরের ধাড়ুর পাত থর থর করিয়া কাপিয়া ওঠে। সেই কম্পনে তৎসংলয় বায়ুক্পাসমূহ সেইরপভাবে কাপিয়া ওঠে। ক্পাঙলি সেই স্পন্তরে ভাহাবের চড়ুর্দিকে অবৃহত পরের অরের কণাঞ্চািকে ঠেলা দের এবং ঘড়ির দোলকের মত তৎক্ষণাৎ ফিরিছা ঠিক সেইরপভাবে অঞ্চানিকের বাছ্কণাঞ্চািকে আসিয়া ঠেলা দেয়। বতক্ষণ না তাহাদিগের কম্পান হরিতে হাকে। এইরপ ফ্রান্তবেগ চলাফেরাই ভাহানের কম্পান। ছিতীয় অরের কণাগুলি, ও ভাহা হইতে ভৃতীয় অরের এবং এই রকম ভাবে পরবতী অরের কণাগুলি কালিতে আয়ল করে। এইরপে এই কম্পান চারিপালে বিকৃত হইতে থাকে। এই বিশ্বারটিকে আমরা বীচিমালা বালিয়াছি। তবে এ বীচিমালা অলের তরক্ষের ভার নহে, কণাগুলি উচুনীচু ইইতে থাকে না, কাহারা পালাপাশি ঠেলা দিতে থাকে।

| ক খ        | ห้         | ৰ        | <b>5</b>  | ,<br>E |  |  |
|------------|------------|----------|-----------|--------|--|--|
| <b>本</b> : | <b>4</b> 3 | ÷        | 5         |        |  |  |
| 3          | इ.च. श     | ¥        | 5         | ŧ      |  |  |
|            |            | ଷ୍       | 5         | •      |  |  |
| ¥.         | <b>4</b> 9 | •<br>ঘ   | <u>\$</u> | 5      |  |  |
| 4          | र्भ भ      | <b>e</b> | 5         | 5      |  |  |

ক খ গ ঘ চ ছ— বাষুক্রণার পর-পরবত্তী তার।
শক্ষারী পদার্থের কম্পনে জাহাতে আগেকার তারে
তারে ভির ও সেই কারণে পরের তারে তারে
বিবলত। জমে ও সেই ভিড ও বিরলত। ক্রমশং
মগ্রবর্তী হইতে থাকে। ইহাই শব্দের গতি।
চিত্রে লাইনের পর লাইনে তারগুলির পরিবর্ত্তনশীল
অবস্থা দেখানে। হইরাছে।

বাশীর বা হারমোনিয়মের বিভিন্ন রছের উরোচনে ভাহাদের ভিতরকার বাভাস নির্গত হইবার সময় নিজের ভিতর বিভিন্ন বেগের স্পান্দন-গতি স্ঠেই করে। সেই বিভিন্ন বেগের করেও শব্দের গতি বিভিন্ন বিভিন্ন করি। ভারের বিজে তার ছোট-বড় করিয়া ভাহাতে, ও ভাহা হইতে বাতাসে বিভিন্ন বেগের স্পান্দন-গতি প্র বিভার কর্পন বা স্পান্দন-গতি ও বিভার স্ঠি করি। ক্যান বা স্পান্দন-গতি ও বিভার

বা শব্দের গতির ভিতর পোলমাল বাধাইরা দিও
লা। বার্কণাওলি প্রতি দেকেওে ক্যবার সক্রেও
ও পিছনে যাওরা আন। করে, সেই দংখাকে
কম্পনগতি বলা হয়। সেই ঠেলাঠেলি কার্যাটি
প্রতি দেকেওে ক্ডছুর বিভার লাভ করে, সেই
পরিমাণকে আমরা শব্দের প্রসারণ-গতি বা
শব্দ গতি বলি। বাজন কাঁটা বাজাইয়া ভাহা
হইতে উভিত হরের কম্পন বেপ আনা যায়।
"না" "রে" "না" ইত্যাদি হুতওলি বাজন কাঁটা,
ও ভাহা হইডে বাযুক্ণার, প্রতি দেকেওে ২০৬,
২০৮, ৩২০ বার ক্মপনে ফ্ট হয়। কিন্তু সকল স্থরেরই
সমান বিজার গভি। সাধারণ বাতানে ইহা প্রতি
দেকেওে প্রায় ১১৫০ ফুট। ভারি বাভাস অপেকা
হালা বাতানে শব্দের ক্ষততর বিভার গভি হয়।

গ্রামোফোনে খুর্ণামান রেকর্ডের সুন্দ্র লাইন-গুলির উপর পিন যথন উঠিতে পড়িতে থাকে, সেই গতিতে পিনসংলগ্ন যে প্রায়োকান পাওলা বিলিটি আছে, সেইটি থর্থর করিয়া কাঁপিতে থাকে। কম্পনের বেগ অভসাবে বিভিন্ন স্ববোৎপত্তি হয়। বেকর্ডের প্রস্তুত-करन क्रिक देन्द्रेशकार व्याः भयावत्व विश्वि-কল্পন ও বিল্লি-কল্পনে তৎসংলগ্ন পিনের কল্পনে धर्नामान दक्छ गुन्त नाहेन क्लामिल हम। हेरा कि वहर लाहेन, हर्तका या मध्य दाकर्षशानिय উপর, বাভিব চউত্তে আরম্ভ করিয়া মধ্যক্ষণ পর্যাত একটানা ভাবে চলিয়া বায়। প্রথমে কাঁচা রেক্ট করা হয়, পরে ভারা হইভে পাকা রেকর্ড প্রস্তুত হয়। अक्षात्म महमा वहलतिशाल वाश्वीय लगार्थत উদ্ভব হওয়ায়, বাভাবে ভীষণ मखालम स्रोड हर, अरे बड़ारे বিস্ফোটকের বিস্ফোটনে ভীষণ শব্দের উৎপত্তি क्रवेश श्रांटक ।

সন্ধাড়িত বাৰ্ত্যক বিভাৱিত হইতে হইতে কোথাও কোন উচ্চ দেওৱালে ধাক। খাইয়া, বদি প্ৰভিক্ষনি আমাদের কানে আবার কিরিয়া আদে, সেই ফিরিয়া আসাকে আমরা প্রতিধ্বনি বলি। বাহাকে আমরা মেবের গর্জন বলি, ভাহা অশনি ক্ষোটনের পৌনঃপুনিক প্রতিধ্বনির ক্ষয় হয়।

# খাদ্য-শস্য





#### মাটী

আমাদের খান্ত-ক্রব্যক্তলি আমর। দাক্ষাৎ বা পরোক্ষভাবে উদ্ভিদ হইভেই দংগ্রহ করিয়া থাকি। যে দকল উদ্ভিদ হইভে আমরা দাক্ষাৎভাবে আমাদের আহায় পাই, তাহানিগকে "ধান্ত্রপত্র" নামে অভিহিত করা হয়। দেইক্ষক্ত ধান্ত-শক্তপ্রলির আলোচনা করিবার পূর্বে ভাহাদের ক্রমন্থান মাটীদন্ধকে তোমাদিগকে কিছু বলিভে চাই।

এই মাটী কি কি উপাদান লইয়া গঠিত, ভাছা শ্রনিলে তোমরা হয় ত খুব আশ্চধ্য হইয়া যাইবে। ভোমরা ত প্রান্তর **বণ্ড দেখিয়াছ** - ঐ প্রান্তর বা হইতেই আমাদের এই মাটার জনা। পর্বাতের প্রথার ও শিলাগুলি প্রধানত: জলবায়, ভাপ ও ত্যারের আক্রমণে ক্রমে ক্রমে কর প্রাপ্ত হইরা থুক ছোট ছোট কণায় পরিণত হয়। क्षाक्षनि भाषात थाकिवात नमत्र रायन क्रिन छ দচ্ভাবে পরম্পরের সহিত সংলগ্ন থাকে, পাথর হইতে বিচ্ছিন্ন হট্যা গেলে সেইরূপ কঠিন ও দ্যু-**छारव मध्नश्र थारक ना । किन्छ मध्नश्र ना थाकिरने** छ পরস্পরের সহিত অতি ঘনিষ্ঠভাবে আবঙ্ক থাকে। ক্রমে রাশি রাশি কণা ছড়াইয়া পড়ে ও একটি শুর নির্মাণ করে। এইরূপে ভরের উপর ভর প্রস্তুত হয়। এক একটি শ্বর যথন গড়িয়া উঠে তথন তাহার উপর নানাবিণ জীব-জঙ্ক ও উভিদ্ জন্ম-গ্রহণ করে। পরে যখন উহারা বিনট্ট হয়, তথন জীবাৰশেষগুলি এক একটি স্থারের প্রস্তারকণার সহিত ওতপ্ৰোতভাবে মিশিয়া যায়। এইরপ

প্রত্যেক তবের সহিত জীবাবশেষ ও উদ্ভিদেব ধ্বংসাবশেষ মিশিলা যায়। প্রত্যবহণা, জীবাবশেষ ও উদ্ভিদের ধ্বংসাবশেষগুলির সংমিশ্রণে মাটার উৎপত্তি। তাহা হইলে তোমরা দেখিছেছ যে, মাটার উপাদান (১) প্রস্তার ও শিলাবপ্তের কণাসমন্তি, (২) জীবাবশেষ ও উদ্ভিদের ধ্বংসাবশেষ। প্রথম উপাদানটিকে গনিজ ও বিতীয় উপাদানটিকে জৈবিক পদার্থ বলা হয়। মাটার মধ্যে গুনিক পদার্থের অংশই অধিক। তোমরা মনে রাখিও যে, পাহাড়-পর্কাতের অতি কৃত্র কৃত্র প্রস্তর-কণার সহিতও জৈবিক পদার্থ মিশ্রিত আছে।

ভাহা হইলে পাহাড়-পর্বতেকেই আমাদের মাটার পিভাষাতা বলিতে পারি। কোন কোন হানে পাহাড়-পর্বতে হইতে মাটা উৎপন্ন হবিয়া, সেই পাহাড়-পর্বতের উপরে কিছা ভাহাদের কাছাকাছি ছানেই থাকে। বেষন কোন কোন ছেলে-মেয়ে ভাহাদের বাপ-মানের কাছাকাছি থাকিতে ভাল বাসে, সেইরুপ। আবার কোন কোন ছানের মাটা ভাহাদের ক্ষার্মাতা পাহাড়-পর্বতের কাছাকাছি থাকিতে বেশী পছন্দ করে না। পার্বতা প্রদেশ সমূহের মাটার কপার আকার, রঙ, প্রকৃতি ও গুণ সমতল প্রদেশের মাটা হইতে বিভিন্ন। আমরা সাধারণত: উহাকে পাহাড়ে মাটা বলিয়া থাকি। এই প্রকার মাটার নাম স্থিতিশীল (Indigenous of Sedentary Soil) মাটা।

আবার কোন কোন ছানে মাটা পাহাড়-পর্বত হইতে বিচ্ছিত্র হইরা বাডাস ও কলের সহিত বহ

দূরে চলিয়া যায়। এই প্রকার মাটীকে গভিশীল (মাটী Transported Soil) বলে। এই মাটা ভাহার জন্মশ্বান পাহাড-পর্বাত হইতে জন্মেতের সহিত ভাসিয়া যাইবার সময় কণাগুলি সংঘর্ষণে অধিকত্তর কৃত্র কৃত্র কণায় পরিণত হয় এবং শ্রেতের ভারতম্য অনুসারে জলের নীচে পড়িয়া নানাস্থানে নানা রক্ষের শুরের সৃষ্টি করে। ইচাকে পলিমাটী বলে। এই মাটীই আমাদের চাষ্বাদের পক্ষে সর্কোৎকুই। বজার সময় নদীর জল লখন তুই কুল ছাপাইয়া বহিয়া যায়, তখন জলের সহিত মিশ্রিত পলিমাটা ক্ষেতগুলির উপরে পডিয়া উহাদের উর্বরতা শক্তি অধিক পরিমাণে বাড়াইয়া দেয়। এই জন্মই নদী-তীরবন্ত্রী দেশগুলিতে অধিক পরিমানে এ বি**শ্ব**ভভাবে পলিমাটা দেখিতে পাওয়া যায়। প্রশিমাটীর গভীরতা থব বেশী। কারণ, প্রত্যেক বৎসরই স্তবের উপর আব একটি স্তর পডিভেছে।

বাতাদ ও ঝড়ের ধারাও মৃত্তিকা ও প্রত্যুক্ত।
দুকল নানা স্থানে পভিত হয়। সমৃদ্রের নিকটবতী
দ্বান সমৃহেই এই সকল মাটী সাধারণতঃ দেখা যায়।
এই মাটীতে লৈবিক পদার্থেব অংল খুবই কম থাকে
ইহাতে প্রত্যুক্তণার ভাগই বেশ। অভি কৃত্র কৃত্র প্রত্যুক্তণার নাম বালি। তোমাদের মধ্যে যাহার।
পুরীতে গিরাছ, তাহারা পুরীর সমৃত্রের ধারে এইরূপ
মাটীত প্রত্যুক্ত । চীন দেশের লোয়েস (Loess)
মাটীত এই শ্রেণীর অন্তর্গত।

ভোমাদিগকে বলিয়াছি যে, জন, বায়ু, ভাপ ও লীভের ছারাই মাটা গঠিত হয় এবং ইহাই সাধারণ নিয়ম। কিন্তু কোন কোন কোন কোন কোন কোন কোন কোন কোন প্রকার জীবাণু ছারাও মৃত্তিকার নানা প্রকারের তারের স্টেইয়। বিশেষজ্ঞের। অহমান করেন যে, পাটল ছাটা (Laterite Soil) এইমপ জীবাণু কর্ভুক স্টে প্রবাদ কীট নামক এক প্রকার জনজ কীট আছে, উহাবা সমৃত্রের নীচে জন্মায়। এই জাভীয় কীটের কছালের ছারা পাটল মাটার স্টেইয়। ভারত মহাসাগরের লাকা ও মালছীপপুঞ্জ প্রবালকীট ছারা গঠিত হইয়াছে।

আমরা উপঞ্চের তারে যে মাটা দেপিতে পাই, তাহার আক্বতি-প্রকৃতি ও তাণ আরু নীচের স্থারের মাটা হইতে বিভিন্ন। এই নিমের মাটাকে আমরা "নিরন্তর" মাটা (Sub Soil) বলিব। "নিমন্তর" মাটা সাধারণতঃ উপরের তারের মাটার আট দশ

ইঞ্চি নিম হইতে আরম্ভ হয়। উপরের মাটী নিমত তথ্য, বাতাস ও বৃষ্টির কাণ্যকারিতা শক্তি দ্বারা ক্য প্রাপ্ত হইতেছে। সেই অস্ত উপরের স্তরের মাটীর কণাগুলি নিমন্তরের মাটীর কণাগুলি অপেকা ক্ত ক্তা। আবার অনবরত চাষবাসের অস্তর উপরকার মাটীর কণাগুলি ক্রমশ: স্ক্রতর হইয়া গাইতেছে। উপরের মাটীতে জীবজ্বস্তু ও গাছপালার ধ্বংসাবশেষ মিশিয়া উহার রহুকে নিমন্তরের মাটীর রহুঅপেকা কালো ক্বিয়া দেয়। আমরা মিদি উপরের মাটী উঠাইয়া দিয়া নিমন্তরের মাটী আনার্ত করিয়া রাখি, তাহা হইলে উহা স্থা, বায়্ ও বৃষ্টির সাহায্যে ক্রমশ: উপরের মাটীর প্রকৃতি ও গুণাবলী প্রাপ্ত হইবে।

আমরা সাধারণত: মাটীতে বালি, পলিমাটী, कामा, इन ७ क्षितिक भमार्थ (मिशिट्ड भारे। वानि, পলিমাটা ও জৈবিক পদার্থ কিরূপে মাটীতে মিশিয়াছে, তাহা পর্বেই বলিয়াছি। বাদা ও প্রস্তর-কণার সমষ্টি। ইচা বালির অপেকা কৃষ্ণতর কণাদ্বারা গঠিত। কাদার অতি সন্ম কণাগুলি প্রস্পারের সভিত অপেক্ষাক্রত দটভাবে আবদ্ধ আছে। বালির ভঙ্ক পরিষ্কাব ঝক্ঝকে কণাগুলি প্রস্পারের সভিত আবেছ থাকে না। তোমরা যদি এক মঠ। বালি লইয়া তোমাদের মুঠার মধ্যে চাপিয়া রাথ, উহা ডেলা পাকাইয়া ঘাইবে, কিন্তু মঠ। খুলিয়া দিবার পর মুঠার চাপ চলিয়া গেলেই বানির কণাগুলি পরস্পর হইতে বিছিন্ন হইয়া পদিয়। পুড়িবে ৷ মুঠার ভিতর কিছু কাদা শইয়া এইরূপ করিলে উহার কণাগুলি বালিব মত বিভিন্ন হইয়া ষাউবে না। দেখা গিয়াছে যে, বালিব কণা একটির পর একটি পাশাপাশি সাজাইয়া রাখিলে ৫০০ হইতে ১০০০ কণা সাজাইতে এক ইঞ্চি লখা স্থান লাগে। কিন্তু এই পরিমাণ স্থানে ২৫০০০ হাজার কাদার কণা সাজান যাইতে পারে। ইহা হইতে তোমরা বঝিছে পারিবে যে, বালির কণা হইতে কাদার কণা কত কল্লভর। মনে রাখিও, যদিও বালি, চণ, পলিমাটা ও কাদাকে আমরা চারিটি বিভিন্ন জিনিব বলিয়া ধরিয়া লইতেছি, কিন্তু ইহারা প্রত্যেকেই প্রস্তরকণা বাতীত আর কিছুই নহে। চুণ, মাটীতে অল পরিমাণে বিশ্বমান থাকে। ইহা প্রধানতঃ প্রাণীক ও উদ্ভিক্ত পদার্থকে পচাইয়া দিয়া জৈবিক পদার্থের সৃষ্টি করে। এই পদার্থগুলির মধ্যে জৈবিক পদার্থ ও পলিমাটীে উদ্দির পাল বস্তু প্রচর পরিমাণে থাকে।

মাটীতে জল, বাছ ও তাপ বর্তমার্ম আছে। जे खिल डेडिएमत डेश्पिक अ कीवनशावत्वत कना প্রবোজন। মাটার প্রকৃতি ও বনটেব (Texture) উপর শঙ্গ উৎপাদনের গুণাগুণ অনেক পবিমাণে নিভর করে। এখন সংক্ষেপ্রে সেই বলিতেভি। তোমরা জানিয়াচ সে. মাটা কুদু ক্ষুত্র কণার সমষ্টি। বিভিন্ন প্রকার মাটাছে বিভিন্ন আয়ভনের ছোট-বড় কণা আছে—বেমন, বালিব কণা, কাদার কণা অপেকারহং। মাটার জল শোষণ ও ধারণ করিবার ক্ষমতা এই কণার আয়তনের উপর নির্ভর করে। তোমর: যদি তুইটি পারে একটিতে বালি ও অপবটিতে কালা রাখিয়া ভাহাদের উপর অস ঢালিতে থাক, ভাহা হইলে দেখিবে যে, বালিপণ পাতে জল ঢালিবামার উভা অনায়াসে ও শীছই বালিব মধ্যে নীচে চলিয়া যাইতে, কিন্তু কাদাব পাত্ৰেব জ্বল তত শীঘ্ৰ ও महरक कामात्र मर्था अर्थन कतिरक भातिरव न।। ইহার কারণ, বালির কণাগুলি কাদার কণা অপেক। আযতনে অনেক বড এবং সেই জ্যুট বালিব কণাগুলির প্রস্পারের মধ্যে ফাকও বেশী। কাজে কাছেই জল বালির কণাগুলির মধ্যেব ফাক দিয়া অনামাদে ও অতি অল সময়ে নীচে চলিয়া যায়। কাদার কণাগুলি বালির কণা অপেকা গায়তনে ছোট এবং সেই কাবণে কণাগুলির মধ্যের ফাঁকও কম। সেই জন্ম কাদাব কণাশুলিব মধোব ফাক দিয়া জল তত শীঘ্ৰ ও সহজে নীচে চলিয়া যায় নাৰ তোমর। দেখিয়াছ, বৃষ্টি পডিলে কালা-মাটী অনেককণ প্ৰয়ন্ত ভিজা ও সাাংসেতে থাকে. এমন কি. অনেক সময় তাহার উপর জল দাঁডাইয়। থাকে ও সেই জল অহা স্থানে গড়াইয়া চলিয়া যায়। কিম্বালি মাটী বেশীকণ ভিজাঁত থাকেই না. ভারার উপর জলও দাভার না। ইয়া হইতে আমরা निवारक भावि (य. वालि माणित कल मायन कविवात ক্ষতা অধিক। কিছু বালি মাটী অপেকা কাদা মাটীর ভল ধারণ করিবার শক্তি অনেক অধিক।

সকল প্রকার মাটার কণার মধ্যে যে ফাঁক আছে েই ফাঁকগুলি সর্বাদাই বায়ুতে পূর্ণ থাকে। জল ধধন এই ফাঁকগুলির ভিতর দিয়া মাটার মধ্যে প্রবেশ করে, তথন জলের চাপে বাতাসকে সরিয়। ঘাইতে হয়। জল চলিয়া গেলেই আবার উপবেব বাদ আমিষ। পুনবাম ঐ স্থানগুলি দথল করে। বে মাটিব কণাগুলি যত বড়, সেই মাটীর ভিতর জ্ঞাব ক্যায় বায় প্রবেশের পথও বড। কাবণেই কালা মাটা অপেক্ষা বালি সাটীতে বায চলাচল বেশী হইয়াথাকে। এগন ব্যারে পারিয়াছ যে, বালি মাটা কেন হালকা ও শুকনা, আৰু কাদা মাটা কেন ভাৱী ও ভিন্ধা থাকে। সেই কাৰণে যে মাটাতে বালির পবিমাণ যত বেশী, সেই মাটা ভত শুকনা ও তাহার জ্বল ধারণের শক্তি তত কম। যে সকল উদ্দিদেব জীবনধারণের জন্ম বেশী জলেব প্রয়োজন, ভাগারা বালি মাটাতে ভাগদের প্রয়োজন অহসারে জল পায়না। কাজে কাজেই সেইরপ মাটীতে জলেব অভাবে কাহার। ভালরূপে বাডিতে পাবে ন।।

মাটিতে অবাধে বায় চলাচণের বিশেষ প্রয়েজন সাছে। কারণ মাটীতে অনেক প্রকারের ছোট ছোট জীবাণু থাকে। এ সকল জীবাণু বাভাস ও মাটী হইতে উদ্ভিদের গাছা বস্তু প্রস্তুত করে। ইহাদের জীবনধাবণের জন্ম বাভাসের প্রয়েজন। ইহা ছাডা উদ্ভিদের নিজেব জন্মও বাভাসের প্রয়োজন । ইহা ছাডা উদ্ভিদের নিজেব জন্মও বাভাসের প্রয়োজন আছে।

মাটার মধ্যে নিহিত জল একটি অদ্বৃত আকগণের বারা উদ্ভিদেও শিক্ডের নিকট আসিয়া উপস্থিত হয় এবং উদ্ভিদ্ তাহা নিজের প্রয়োজন অন্থসারে নিজ নিজ শিক্ড বারা গ্রহণ করিয়া জীবননারণ করে। এই আকর্ষণের নাম কৈশিক আকর্ষণ। এই আক্ররণের জ্বান্ত প্রদীপের. স্বিতি। তৈল এবং স্পত্ন জল শোষণ করিতে পারে। মাটার কণার স্ক্রতাব উপব মাটার কৈশিক আক্ররণ শক্তিনিতর করে। যে মাটার কণা যত ছোট, সেই মাটার কৈশিক আক্ররণ শক্তি তত বেশী ও প্রবল। সেই জল্প বালি মাটা অপেক্ষা কাদা মাটার কৈশিক আকর্ষণ শক্তি অধিক। যে মাটাতে জৈবিক পদার্থের ভাগ বেশী আছে, সেই মাটাতেও এই শক্তি থ্ব বেশী।

মাটীর কৈশিক আকর্ষণের কণা উপরে বলিলাম।
এখন আর একটি আকরণ শক্তির কথা বলিতেছি।
ইহার নাম আর্দ্রভা-গ্রাহী ক্ষমতা। তোমরা আন,
মাটীতে যে জল মাছে, তাহা ক্রেয়র তাপে বান্দ্রহার উপরে চলিয়া যার। কিন্তু মাটী তাহার

আর্ত্রভাগী শক্তি ছারা মাটার সংলগ্ন জলীয় বান্দ হইতে কডকটা জলীয় ভাগ টানিয়া লয়। তোমরা জানিয়া রাথ যে, মাটার প্রত্যেকটি ফণার গায়ে, একটি করিয়া পাতলা জনের আবরণ আচে।

এখন মাচীর তাপের কথা তোমাদিগকে বলিভেছি। সকল স্থানের মাটার ভাপের পরিমাণ সমান নছে। মাটার উপরের ভাপ প্রধানত: তিনটি কারণে উৎপন্ন হয়। (১) স্থর্ব্যের ভাপ, (২) ভগতের ভিতরের উত্তাপ ও (৩) রাসায়নিক তাপ। মাটীর মধ্যে যে জৈবিক পদার্থ থাকে. তাহা হইতে অতি ধীরে ধীরে শেষের জাপটি উৎপর হয়। ইহার জীব্রতা অধিক। মাটী দিনের বেলার সূর্যোর ভাপ গ্রহণ করে এবং রাজিভে ভাষা বাহির করিয়া দেয়। এই অস্ত দিবা ও রাত্রিতে মাটার উঞ্চতায় বিশেষ পার্থকা হটবার কথা। কিন্তু ভগতের মধ্যন্তিত উত্তাপ আসিয়া ঐ নষ্ট উদ্ভাপের অভাব আংশিক ভাবে পুরুণ করিয়। দেয়। এই কারণেই বায়র তাপ অপেকা মাটীর ভাপ অধিক। যে মাটীর ভাপ ৰভ কম, সূর্যোর উদ্বাপে সেই মাটা ভক্ত বেশী গ্রম হয়। যে মাটার জল ধারণ করিবার শক্তি অধিক, সেই মাটীর তাপ ধারণ করিবার ক্ষমতাও অধিক।

মাটাকে অনেক রকমে ভাগ করিয়া বিভিন্ন প্রকার মাটার বিভিন্ন নাম দেওর। হটখাছে। প্রচলিত নামগুলি ভোমরা জানিয়া রাখ।

(২) লেভেল আভি—এই মাটাতে শতকরা
১০ ভাগের বেশী কাদা থাকে না। ইছাকে ছাল্কা
মাটাও বলে। কারণ, ইছাতে চাববালের জ্ঞা
রবি-যরাদির দারা কাজ করা সহজ। এই মাটাতে
বালির ভাগ বেশী থাকার জ্ঞা লাটার কণাগুলির
মধ্যে কল বা বাতাস চলাচলের মধ্যেই জারণা জাছে।
এই মাটা কল ধারণ করিতে পারে না। কাজে
কাজেই, শীজই নীরস হইরা পড়ে। ইহার জ্ঞা ইহার
ভিতরকার ভাগও অধিক হর। যদিও এই প্রকারের
মাটা রুবিকাগোর পক্ষে নিরুই, ভগাপি প্রচুর
পরিমাণে সার প্রয়োগ করিরা এই মাটার উর্জরতা
শক্তি বাড়াইতে পারা বার। কারণ, এই প্রকার
হাল্কা মাটাতে জনেক প্রকারের জীবাণু জ্যার এবং
উহারা প্রচুর পরিমাণে উভিদের বাভ উৎপর করিতে

পারে। সাধারণতঃ সমূত্র ও নদীর তীরবর্তী। স্থানেই এইরপ ষাটা দেখিতে পাওবা যায়।

- (২) তেঁতিকা আঁতি—এই মাটাতে কালার অংশ শতকরা ৫০ ভাগেরও অধিক। এই মাটাতে ক্ষি-বন্ধাদি চালাইতে অধিক শক্তির প্রয়োজন হয়। এই মাটার কণাগুলি গুবই কুল্ম এবং পরস্পর লৃচ ভাবে আবদ্ধ আছে বলিয়। ইহাদের পরস্পরের মধা দিয়া জন ও বাতান অতি কটে চলাচন করিতে পারে। এই জ্লুই এই মাটার জন বারবের ক্ষতা অতি অধিক এবং এইরূপ মাটার উপর বর্ধার সময় জন দাড়াইয়া বাকে। এই মাটার উকরতা শক্তি বালি মাটা অপেকা অধিক। এই মাটার উক্তরতা শক্তি বালি মাটা অপেকা অধিক। এই মাটার উক্তরতা শক্তি বালি মাটা অপেকা অধিক। এই মাটার উক্তরতা আয়; ইহাকে ভিন্দা বা ঠাগু। মাটা বলে।
- (৩) দুলা-আঁশ আতী—এই মাটাকে তিন শ্রেনীতে ভাগ করা হইরা থাকে। যে মাটাতে শক্তকরা ৩০ হইতে ৫০ ভাগ কাদা থাকে, তাহাকে দো-আঁশ বলে। যাহাতে শক্তকরা ২০ হইতে ৩০ ভাগ কাদা থাকে, তাহাকে বেলে দো-আঁশ এবং বাহাতে কাদার অংশ শক্তকরা ১০ হইতে ২০ ভাগ, তাহাকে দো-আঁশ বেলে মাটা বলে। দো-আঁশ মাটার উৎপাদিক। শক্তিই স্কাপেক্ষা অধিক। ইহা সহক্ষে কর্বণ করা যায়।
- (৪) **ছেলা আলি**—এই মাটাতে চ্পের পরিষাণ শভকরা ২০ ভাগের অধিক দেখিতে পাওয়া যায়। যাহাতে শভকরা ৫ হইতে ২০ ভাগ চূণ আছে ভাহার নাম Marley soil বা কন্তরময় মাটা। এই মাটাও প্র হাল্লা। এই মাটার রঙ্ কধন ক্ষম শাদা হইয়া থাকে।
- (৫) তিত্তিক্সাত আতি—নান। রক্ষের
  উদ্ভিদ্ পচিরা ঘাটাতে পরিপত হয়। এইরপ
  উদ্ভিদ্যাত ঘাটা সচরাচর দেখিতে পাওয়া যায় না।।
  এইরপ ঘাটাতে শতকরা পাঁচ ভাগের অধিক
  উদ্ভিদ্যাত পরার্থ থাকে।

বাংলার মাটার ওপেই স্থামাদের দেশের ত্রী এত ক্মিন্ত ও ক্মার। ডোমরা বাংলার মাটাকে ভাল-বাসিতে শিশিও। আমাদের বিশ্বকবি গাহিরাছেন—

> वारनात भागे, वारनात जन, बारनात वाबू, वारनात फन, भूना रुष्क भूना रुष्क

হে ভগবান্!



# ইতরা

#### বৈদিক আখ্যান

(5)

ভারতীয় ইতিহাসের যখন উষাকাল, তখন এক মহাপুরুষ জুরাগ্রহণ করিয়াছিলেন। তাঁহার নাম ভিল মহিদাস। মহিদাস তাহার নাম কেন ১ইয়াছিল, ভাহা পরে বলিব। এই মহিদাস ঐতবেষ আহ্মণ ও ঐতবেয় আরণাক নামে ছইখানি গম বচনা করিয়াছিলেন। মহিদাদের গ্রন্থ ইইতে প্রাচীন একমাত্র বেদের কথাই সকলে জানেন কিছ এই বেদ কোনো ব্যক্তিবিশেবের লেখ। নহে—ভাহা একমাত্র ঈশরের বাণী বলিয়া প্রাচীন হিন্দুগণ মনে করেন। সে-কালের ঋষিরা ভুত ভবিশ্বৎ স্বই দেখিতে পাইতেন, একট চিম্বা করিবামাত্র তাঁহাদের মুখ হইতে ৰাণা বাহির হইত। এই ৰাণী ভাঁহারা লিখিয়া রাখিতেন না। ভাহার সমস্ত ভাঁহাদের মনে থাকিত। শিয়ের পর শিষ্ম ক্রমে সেই সব বাণী মুখে মুখে চলিয়া আসিত। এইকল্প বেদের আর এক নাম শ্রুতি।

এই বৈদিক যুগে সরস্বতী ও দূবৰতী নদীর
মধ্যবর্তী ছানে এক ধবি বাস করিতেন। তাঁহার
নাম আমরা জানি না। তবে তাঁহার স্বছে আমরা
জানিতে পারিয়াছি যে, ধবি বলিতে আমরা যেরপ
বুরি, তিনি সেরপ ছিলেন না। তাঁহার জনেকগুলি
জী ছিল এবং তিনি ছিলেন রীতিমত সংসারী।
সংসারের নানারূপ আমোদ-আফ্রাদে কাল
ভাটাইতেন। ঐ মুনির জীগণের মধ্যে একজনের
নাম ছিল ইতরা। আমরা এখানে এই ইতরা
মাজার কথাই তোমাদিগকে বলিব।

স্বামীর প্রকৃতি অন্তর্মণ হইলেও ইতরা সকল রকমে স্বামীর মন জোগাইয়া চলিতেন, কিন্তু তিনি কিছতেই স্বামীর ভালবাসা পান নাই। অক্লান্ত ক্ষবিপত্নীর মত তাঁহার প্রাণ পথিবীর স্থাবে তপ্ত হইত না। তিনি সর্ব্বদাই স্বামীকে ঠিক পথে আনিবার চেষ্টা করিতেন : কত মধর কথায় স্বামীর ভূল বুৰাইয়া দিতেন; কিছু তাহার স্বামীর প্রকৃতি একে উগ্র, তার উপর ভিনি তার পার্থিক স্থাধর ণাধা মনে হওয়ায় তিনি স্বামীর বিষদ্ষ্টিতে পড়িলেন। ক্রমে স্বামী তাঁহাকে ভ্যাণ করিলেন। ছু:থে ইডরার দিন কাটিতে লাগিল। ইতিপূর্বে ইতরার একটি ছেলে হইয়াছিল। ভূমিদেবীর পূকা করিয়া তিনি সেই পুত্ররম্বটি পাইয়াছিলেন, এইজন্ত ইতরা সেই ছেলেটির নাম রাখিয়াছিলেন, মহিদাস। ইতরা পুরুটিকে আশ্রয় করিয়া স্বামীর আশ্রমের নিকটেই, একটি কূটীর নির্মাণ করিয়া বাস করিতে লাগিলেন। সভী ত্রী কোনো অবস্থাতেই স্বামীকে ভাাগ করিতে পারেন না। দিনাম্বেও খামীকে দেখিতে পাইবেন, এই কামনা করিয়াই তিনি স্বামীর তপোবনের নিকটে পুত্রটিকে লইয়া অতিকটে কালযাপন করিতে লাগিলেন। ইতরা খামীর ভতবৃদ্ধির জন্ত ভগবানের নিকট প্রার্থনা করিতেন, দিনাতে একবারের জন্তও স্বামীর চরণ দর্শন করিয়া তবে হবিস্তান্ন গ্রহণ করিতেন এবং **ৰভানের মণ্ডল কাখনা করিয়া ভূমিদেবীর পূজা** করিভেন। এড কটেও ইডরা সম্ভানের ফুলের মত অব্দর মুখখানি দেখিয়া সকল ছঃখ ভূলিয়া

ংইতেন। ছেলেটির মূথে চোবে অপূর্ব্ব প্রতিভা দেখিয়া ইতিবা গেন আকাশের চাদ হাতে পাইলেন।

ক্ষে মহিদাস বড় ইউলেন। তাহার বৃদ্ধি ছাত হ'ল। হা শোনেন কাহা তংকলাৎ শিথিয়া গেলেন। ছখিনীর সন্তান বলিয়া মপবাপ্র ম্নিগণ বিধেন বিদ্ধান করিছে নানাবক শিক্ষা দিনেই মহিদাস প্রেন কিছু শিথিয়া ফেলিলেন। একদিন মহিদাস মাকে জিন্তানা করিলেন, মা, আমাব বাবা কোখায় প্রাথার বাবাকে এগনে দেখিতে পাই



মা, আমার বাবা কোণায় ?

না কেন ? ইভন। কাদিয়া বলিলেন, বাছা।
তোমার পিতা এখানে পাকেন না। তবে তিনি
নিকটেই থাকেন। এই আখানের অপর পার্ষে
ঐ নে একটি মনোহর আখাম দেখিতেছ, ঐ
অ,শ্রিমই তিনি উাহাব অপবাপব স্ত্রী-পুত্র লইয়া
বাস করেন।

মাৰ এই বিধাদ-কাজর কথা মহিদাদেব প্রাণে বাজিলা। তিনি বলিয়া উঠিলেন, মা। আমি আছই বাবার পায়ের ধূলা লইয়া আসিব। মাজা ইতবা কাঁদিয়া বলিলেন, বাবা মহিলাস! তোমার পেথানে গাইয়া কাজ নাই , জুমি তোমার বাবার পবিতাকা প্রীর পুত্র কি জানি, ধলি জিনি অভাগিনীব কগাল দেখে ভোমাকে আদর না কবেন, তবে এই বেদনা যে আমাব প্রাণে শেলের মত বাজিবে! বাবা! আমি এ আঘাত সহ্ কবিতে পারিব না। তাই বলি যাত্ম, ভোমার পিতাকে প্রণাম করিতে যাওয়াস কাজ নাই! মহিলাস কিছু মাব এই কণা শুনিলেন না। জিনি পিতাকে প্রণাম করিবাব জন্তা সেই আশ্রমেব দিকে চলিয়া গেলেন।

মহিদাস সেই আশ্রমে প্রবেশ করিয়াই এক যজ্ঞালা দেখিতে পাইলেন। সেই যজ্ঞালীয় (य मकल श्रीन यक कविट्ट हिट्लन, डाइन्टिन कर्ष **্ট**েক আনুজি মূহ ক্ষমিতে ক্ষমিতে জিমি সেই দিকে লগুসর ২*ইলেন*। যজীয় গুডেব মধুর গঙ্গে তাহার প্রাণ পুল্কিত চইয়া উঠিল। যজভূমি হইতে যে ধুম উঠিতেছে—মহিদাস দেখিলেন, ন্তর্গের দেবভাগণ সেই দমেব পথ ধরিষ। পৃথিবীতে নামিয়া আদিতেছেন। মহিদাস পুলকিতচিত্তে যঞ্জালার দিকে অগ্রসর ইইয়া দেখিতে পাইলেন. মেট যজ্ঞশালার ছাবদেশে এক ঋষি কতক্তলি শিশুপুর লইয়া বাসয়া আছেন। ঐ ছেলেগুলির মধ্যে কেই তাঁহার কোলে বসিয়া আছে. কেই তাঁহার পিঠে হেলান দিয়া দাঁডাইয়া আছে. কেহ বা তাঁহার কাথে উঠিবার চেষ্টা করিভেছে। ইবা দেখিয়া মহিদাদের মনে হটল, ইনিই জাঁহার পিডা ৷ এইকপ মনে হইবামাত মহিদাস তাঁহাকে প্রণাম করিয়া তাঁহার পদধলি লইলেন ও অতান্ত বালকগণের আহু পিতার কোলে বসিবার ইচ্ছা করিলেন। কিন্তু ঋষি সহসা বলিয়া উঠিলেন, এরে পবিত্যক্তার পুত্র। তুই এই বালকদের স্থায় আমার কোলে বসিবার উপযুক্ত নহিস: তুই এধান হইতে দুব হ।

পিতার এইরপ তিবন্ধার ও অনাদর পাইয়া মহিদাস অভান্ত হুংথিত হইলেন এবং বিনয় বচনে বলিলেন, বাবা! আমার বাসনা পূর্ণ হইয়াছে— আমি আপনার পায়ের ধূলা পাইয়া ধল্ল হইয়াছি। আমি আর আপনার কোলে বসিতে চাহি না— আমি মার নিকট চলিলাম। এই বলিয়া মহিদাস মুখখানি শুক করিয়। মাভাব নিকট চলিয়া আগতে লাগিলেন। যক্তপালায় আরো অনেক মুনি উপস্থিত ছিলেন। তাহার। মহিদাসের শুক মুখ দেখিয়। অতিশয় ব্যথিত হইলেন। কিন্তু তাহাদেব মধ্যে তখন ত আর কেহ কোনো কথা বলিতে পারিলেননা। সম্ভানের পিত। যাহারা—তাহারাই সেই সরলপ্রাণ বালকের মার্মবেদনা বৃদ্ধিতে পারিয়া নীরবে চোপের জল কেলিলেন। মহিদাস ক্ষেক



মহিদাস মুখবানি শুষ করিয়া মার নিকট আসিলেন

পদ অগ্ৰসৰ হইষা বাগে তৃ:ধে ঠোট ফুলাইয়া কাঁদিতে কাঁদিতে বলিলেন, বাবা! আপনি মোহে আৰু হইয়া আমাৰ তু:ধিনী মাকে তাগ কৰিয়াছেন—আমাৰ প্ৰাণে বেদনা দিলেন; তাই আমি প্ৰতিজ্ঞা কৰিতেছি, আমি এমন কাজ কৰিব—
ৰাহাতে লোকে আপনাৰ কথা ভূলিয়া যাইবে, কিছ আমাৰ মায়েৰ নাম লোকেৰ মনে চিৰকাল জাগিয়া থাকিবে।

এই বলিয়া মহিলাস দেখান হইতে ধীরে ীরে চলিয়া আসিলেন এবং নার কোলে মুখ লুকাইয়া কত কাদিলেন। মা ইতবা পুত্রকে বৃকে তুলিয়া মুখ চুখন করিয়া বলিলেন

বাবা মহিদাস। তুমি সব তৃংগ-কট ভূলিয়া খাও।
আমি ত পূর্বেই বলিয়াছিলাম, তোমার পিতা
তোমাব সমাদর করিবেন না। স্বতরাং যাহ।
পূর্বেই অনুমান করা হইয়াছিল, তাহাব জন্ম কাদিয়া
ফল কি, বাবা। তোমার পিতা ত মিথা। কণা বলেন
নাই—তুমি ত পরিতাকার পুতই মহি। তবে তুমি
ভাহার জন্ম তুংগিত হইতেছ কেন ?

মান্তব এইদ্ধপ স্থেত্পূৰ্ণ কথা শুনিয়া মহিদাস চোপের জল মৃছিলেন। পরে অভিমানের সহিত মাকে বলিলেন, মা' বাবা যথন আমাকে কোলে বসিতে দিলেন না, তখন আমি গুঁছাকে বলিয়া আসিয়াছি,—বাবা! আপনি অন্যায় করিয়া আমার মাকে পরিলোগ করিয়াছেন, সন্থানের অবজ্ঞপ্রাপা পিতৃজ্ঞোড়, তাহা হইতে আমাকে বঞ্চিত করিলেন, এইজন্ম সামি প্রতিজ্ঞা করিতেছি, আমি প্রমন কান্ধ করিব ন্যাহাতে লোকে শেষে আপনাকে চিনিবে না, কিন্তু যুত্দিন বেদ-বেদান্তের চর্চা থাকিবে, তত্দিন আমার মাতাব কপাকেহ ত্লিবে না।

সৌভাগা-গর্কে মাতার প্রাণ পুলকিত হইয়া
উঠিল। তিনি বলিলেন, সতা মহি! তুই কি
এমন কাজ করিতে পাবিবি দ মহিদাস বলিলেন,
পাবিব না কেন মা! তুমি আশীর্কাদ কর, ছেন
খামি আমার সেই কথা পূর্ণ কবিতে পারি। মা!
এখন বল ত, কি করিলে আমি পৃথিবীর সব বিষয়ে
জ্ঞান লাভ কবিতে পারিব ?

মা বলিলেন, বাবা! ভ্মিদেবীর ববে আমি ভোমাকে পাইয়াছি। তিনি সর্কবিছার সর্ক্ ধনের অধিষ্ঠাত্রী দেবী। তুমি তাঁহার আরাধনা কর। তাঁহাকে সম্ভষ্ট করিতে পারিলে কিছুরই অভাব হইবে না—তুমি তোমার ইচ্ছামত কাক করিতে পাবিবে। এই কথা বলিয়া মাতা ইডরা পুত্রের মাথায় হাত দিয়া আশীর্কাদ করিলেন।

( २ )

নিৰ্জন বনজুমিব এক প্ৰান্তে বসিংগ মহিদাস একমনে ভূমিদেরীর পূজা কবিতেছেন। তাঁহার চোধে পূলক পড়ে না—ডজির অঞ্চ তাঁহার কপোল বাহিয়া করিতেছে—ওঠাধরে ভূমিদেবীব বন্দনা ফুটিয়া উঠিতেছে। মহিদাসের বাঞ্জান

নাই। খিপ্রহরের সৃধ্য মাথার উপর তীক্ত কিরণ বর্ষণ করিতেছে—সেদিকেও মহিদাসের জ্রক্ষেপ নাই। এরপে চল্লিশ দিন কাটিয়া গেল। সুধাত্তের শামাল্য সময় মাত্র বাকী! এমন সময় গোধুলির শোণার আলোয় চারিদিক আলোকিত করিয়া ভূমিদেরী মহিদাসের সম্মুপে আবিভূতা হইলেন। মহিদাস সম্মুৰে চাহিয়া দেখিলেন, চতুভূজা এক দেবী দক্ষিণের ছই হল্তে বরাভয় ও বাম দিকের এই হতে শক্ত গছ লইয়া তাঁহার সন্মুখে দাঁড়াইয়া। দেবীর সর্বাক হইতে যেন স্লেহের ঝরণ। ছটিতেছে: দেহের অপরূপ সৌগদ্ধে সেই স্থান আমোদিত হইয়া রহিয়াছে। অপরূপ স্থর-ওঞ্চনে সেধানকার আকাশ বাতাস যেন মুখরিত হটয়। উঠিতেছে, মাথার সোণার মুকুটে ধেন কোটা সূর্যা ঠিকরিয়া পডিতেছে। মহিদাস চোধ খুলিয়াই জানিতে পারিলেন, ইনিই তাঁহার আরাধা ভূমিদেবী! মহিদাসের সেই বিহবদ ভাব দেখিয়া ভূমিদেবী মধর হাসির আলোকে চারিদিক আলোকিত করিয়া বলিলেন, মহিদাস ৷ তোমার আরাধনায় আমি পরম্ পুলকিত হইয়াছি। তুমি কিবৰ চাও বল গ মহিদাস বিনয়ের সহিত বলিলেন, মা! তুমি ত স্বট জান. আমাৰ মর্মবেদন। ব্রিয়া আমাকে তার মত ব্রুদাও। क्षिर्मिती टामझ रहेशा विनित्नन, वाहा व्यामात बरह তুমি সর্কবিভাব অধিকারী হইবে। বত দিন চন্দ্র সূৰ্যা থাকিবে,-- যত দিন পৃথিবীতে বেদ-ৰেদান্তের চৰ্চ্চা থাকিবে, ভতদিন ভোমাদের নাম অগতের ইতিহাসে সোণার অকরে অলঅল করিবে। এই অগতে সকলের চেয়ে বড় সভ্য আর জান; এই কথাট মনে রাখিয়া তুমি তোমার ভবিষাৎ জীবনের কাজ আরম্ভ করিবে। বাচা. তুমি ৰাক্ষিত্ব হইবে—এখন হইতে তোমার মুখ

দিয়া বাহা বাহির হইবে, তাহাই বেদমম হইবে। এই বলিয়া ভূমিদেবী অন্তর্হিত হইলেন।

गहना महिनारमञ्जू मूथ इकेटल 'अधि ते रिनवानायवयः' --- অর্থাৎ দেবভাদের মধ্যে অগ্নি সর্ব্বাপেকা মিছে (অর্থাৎ ভ্রমিডে) আছেন-এই বাণী বাহির হইল। भहाषा। महिमान এই वाणी लहेशाहे ८० व्यथारा विकल তাহার আছপগ্রন্থ নিবিয়াছিলেন এবং এই গ্রন্থেই নাম ভিনি ঐতব্যে আত্মণ রাখিয়াছিলেন। ইহা ভিন্ন ডিনি ঐতবেদ্ধ আরণাক নামে আর একধানি অমূল্য গ্রন্থ করেয়া গ্রিছেন। উপনিষদ এট ঐতরের আরণ্যকেরই অন্তর্গত। বাস্তবিক্ট থোকে মহিদাসের পিডাকে ভূলিয়াছে. ব্রাহ্মণ, ঐতরেয় ঐ ১রেয ইতবাৰ প্ৰত ও ইতবাৰে খ্যা করিয়া রাথিয়াছে। কোন ওডকণে মর্মপীড়িত সবল বালকের সেই অভিমানপূর্ণ কথা উচ্চারিত হইয়া প্ৰিবীর ইতিহাসে মাতৃত্বের সেই মধুর অবদানকে ধর করিয়াছে--সার্থক করিয়াছে, তাহা বিধাতাই कारमम् ।

মহিলাসের লেখা অমৃল্য গ্রন্থ তুই থানিতে ঐতরের শব্দ লিখিত দেখিয়া মাতা ইতরা একদিন বিশ্বরের সহিত মহিলাসকে বলিয়াভিলেন, বাবা মহিলাস! লাল্রে বলে—পিতা শ্বর্গ; কিন্তু বাবা! তোমার এই গ্রন্থের কোথাও তোমার পিতাব উল্লেখ না করিয়া তাহাতে তোমার এই অভালিনী মাতার নাম সংযোগ করিলে কেন ? মহিলাস হাসিতে হাসিতে সরল শিশুর মত বলিয়াভিলেন, মা! আমি বে 'পরিত্যকা' ইতরামাতার পুত্র। এই সৌভাগ্য লইয়াই আমি বাচিতে চাই। মা, সত্য বটে শাল্প বলিয়াছেন, পিতা শ্বর্গ, কিন্তু মা শাল্প আৰার বলিয়াছেন—জননী বে "বর্গাদণী গরীহনী।"

#### রাজার মেয়ের ভালবাসা

( পঞ্চাব দেশের রূপকথা )

ে এক বে ছিল রাজা, তাঁর ছিল চার মেরে। রাজা একদিন তাঁর বড় গেরেকে জিজ্ঞাসা কর্লেন—তুমি আমার কেমন ভালবাস মা ? বড় মেরে বলেন বাবা, আমি তোমার ভালবাসি মিটি বেমন চিনি। সেক মেরে বরেন, বাবা, আমি ভোমার ভালবাসি মধ্র মত মিটা। সেল মেরে বরেন—আমি ভোমার সরবভের মত ভালবাসি, বাবা। আর সকলের ছোট্ট যেরেটি ছুঃ হাসি হেসে বরেন—স্ভিয়

**-** 

কথা বিশ্ছি বাৰা, আমি ভোমায় ছণের মত ভালবাসি।

ছোট মেয়ের কথা খনে রাজা ত চটেমটে বলেন—জাবার ভেবে চিজে বলো, তুমি জামায় কেমন ভালবান! ছোট মেয়ের সেই এক কথা, না বাবা, আমি ভেবে চিজেই বল্ছি—ভোষাকে ঠিক স্থপের মতই ভালবানি।

রাজার হলে। ভয়ানক রাগ! চিনির মত মধুর নর, মধুর মত মিটি নর, সরবতের মত কুখাছু নর, একেবারে চণ! এমন হুটু বেরাণ্য মেহেকে কথ্ধনো রাজপুরীতে রাখতে নেই! রাজা দিলেন ছোট রাজকুমারীকে ভাড়িয়ে একেবারে রাজধানীর বাইরের এক নিবিভ বনে।

ছোট রাজকুমারী এতে একটুকু বিচলিত হলেন না : ভার অন্তরে এই বিশ্বাস ছিল বে, সে ত আর ফিলা প্রবঞ্জা করেনি—অন্তরে যা সত্য বলে মনে ২০০৮, সেকলাই ত বলেছে।

নিবিড বন-পথ দিয়ে নিজীকভাবে ছোট রাজক্ত। যেতে লাগুলেন। তথন সন্ধা হয়-হয়, বেলা পড়ে এসেছে। ঘন বনের আডাল দিয়ে সুবার শেষ



রাজা দেখ্লেন অপারার মত অপুর্ব কুম্বরী এক মেয়ে আলো অতি কীণ রেখার এলে বনের ভিতর পড়েছে! এমন সময় ঘোড়ার পারের শব্দ শোনা বেতে লাগুলো। রাজক্তা তর পেলেন, কি জানি কোন্ দক্ষা-ভাষাতের সাথে দেখা হয়। না জানি হঠাৎ কোন্বিপদ ঘটে। তাই ভরে ভরে একটা বড় গাছের কোটরের ভিতর রাজকঞা প্রিরে রইলেন। আচিল কিন্ত ছুল্তে লাগলো বাইরে।

দহা নয়, ভাকাত নয়, দে পথ দিয়ে তথন শিকার করে ফিরে যাচ্চিদেন দে দেশের তরুণ রাজা। হঠাৎ তার চোথে পড়নো, মন্ত বড় একটা গাছের কোটরের বাইরে সোণা মাণিকে বলমল— একথানি ময়্র-পথী আঁচল! রাজ। ভাবলেন—



বাৰা! আমি ভোমার ছোট থেছে
এই গভীর বনের ভিতরে কার এ আঁচল ছুল্ছে ?
দেখড়ে চল! ঘোড়া থেকে নেবে সেই গাছের
কাছে এলে রাজা দেখলেন অপারার মত অপার্ক
ফুলারী এক মেরে! সারাবন, তার রূপে আলো
হয়ে গেছে! রাজ। রাজক্ভাকে সঙ্গে নিয়ে
রাজধানীতে গেলেন, তার-পর খ্য ধ্মধাম করে
ভাবে বিয়ে ক্লেন।

কতদিন পরে রাজকভার বাবা এলেন, এই রাজার দেশে বেড়াতে। এই দেশের রাজার বাবার দলে ছিল তার বন্ধুড়! তিনি জানতেন নাবে, তাঁরই ছোট যেবে এ বাজাের রাণী।



#### -++++ শিশু-ভারতী

রাজা থেতে বংশাছেন। এ কি আশ্চর্যা ব্যাপার।
সব ব্যঞ্জনই রালা হয়েছে চিনি মিশিয়ে আর মধ্
দিয়ে। রাজা এক একটি ব্যঞ্জনে নুধ দিছেন,
আর মৃধ ফিরিয়ে নিচ্ছেন, থেতে পাচ্ছেন না।
মিষ্টি দিয়ে ব্যঞ্জন রাধে এ কি আজ্বপ্তবি দেশ গো!
মূথে কিছু বল্ডেও পাচ্ছেন না লক্ষায়!—অধচ
তার কিদেয় পেট জনে যাছেছ! কি জানি, যদি
এ বাজ্যের এমন নিয়ম থাকে, ভবে ত ভ্যানক
অপমান হবে। কি যে করবেন ভেবে পাছ্ছেন
না, এমন সময় এল একথাল। ভাত—আর ব্যঞ্জন,
—ব্যঞ্জন স্বই চ্প দিয়ে রালা। রাজ। এইবার
মনের স্থাও পেট ভবে থেলেন। আরামেব নিংশাস
ফেল্লেন।

এইবার রাজকুমারী এদে দেখা দিলেন এবং পরিচয় দিয়ে বৃদ্দেন,—বাবা আমি তোমার ভোট মেয়ে, আমি বলেছিলাম—ডোমায় আমি ভালবাদি
ছণের মত! বাবা! খাঁটি স্নেই ও' ভালবাদার
মধ্যে বাইবের জাঁকজমক বা মিথাার ঠাঁই নেই—
যা সত্য তা সহজ্ব ভাবেই বেঁচে থাকে, মিথাা আসে
অর্থহীন কথা নিয়ে! বাবা, পূর্বেও বেমন বলেছি,
এখন ও তেম্নি বল্ছি—আমি তোমাকে ছণেরই
মত ভালবাদি! চিনির মতও নয়, মধ্র মতও
নয়—সরবতের মতও নয়!

রাজ। তাব ভূগ বৃষ্তে পেরে নির্কাক হয়ে বইলেন। মূপে তার কথা নেই! বছকাল পরে রাজা ও রাজকল্পার এই আশ্চর্যা কৈহমর মিলনে রাজ্বাড়া উৎসব ও আনন্দে মেতে উঠ্লো!—বল দেখি, তোমরা তোমাদের বাবা ও মাকে কেমন ভালবাস ? মশু, চিনি, সরবতের মত, না গুণেব মত গ

## কাফ্রি দেশের রূপকথা

উন্কামার বাড়ী দক্ষিণ আফ্রিকাব ছোট একটি গ্রামে। সে জাতিতে কাফ্রি। কাফ্রি যুবক উন্কামা ছিল ভয়ানক সাহসী, বনে ক্ষলে, পাহাড়ে-পর্বতে সে শিকার করে বেড়াত। ভয় কাকে বলে, সে ভ জান্তো না। কয়েকদিন সে ভোরে উঠে দেপ্তে পেত যে, তার সাজানো ফুল-ফলের বাগানেব গাছ-পালা কোন্ জ্ব-জানোয়াব এসে যেন একেবাবে



উনকামাও সেই গর্তের ভিতর চুক্লো -

তচ্নছ্ করে গেছে। উন্কামার হ'ল ভয়ানক রাগ। দে পণ কর্লো, যেমন করেই হোক ঐ জানোয়ারকে সাজা দিতে হবে। রাত্রি জেগে সে তার বাগান পাহারা দিতে লাগলো। একদিন রাত্রি ভার হয়-হয়। এমন সময় দেশ তেপেল যে একটা অছত আঞ্জিতর জানোয়ার বাগানের ফুল-ফল সব নই কচ্ছে। সে অমনি ছুটলো ভার পিছনে। নদীর পাবে গর্ভের ভিতর মেমন সেই অছত জানোয়ারটা চুকলো, উন্কামাও জ্বমিন সেই গর্ভের প্রিকা প্রতির প্রবেশ করলো। যেতে মেতে সে এলো পাতালপুবীব এক অছত দেশে। অছত সেই জানোয়ারের আর পাতা মিললো না। কোপায় যে সেটা লুকোলো, পাতি পাতি করে খুজেও উন্কামা তার সন্ধান পেলে না।

সেই পাতালপুরীতে ঘুরে বেড়াতে বেড়াতে উন্কামাব সংল দেখা হ'ল একদল বামনের সলে।
সেই সব বেঁটে কেরান জোরান বামন বাবেন। মুকে পডলো উন্কামার উপর। বামনের।
সব হৈ চৈ চাংকার করে উন্কামাকে লক্ষ্য করে
তীর ছুড়তে লাগলো। বেচারা দেখলে মহা
বিপদ। প্রাণ বাঁচাবার ক্ষেত্ত আবার সে কিরে
এলো সেই যে গর্জ, সেই গর্জের পথ দিয়ে ভার
দেশের বাড়ীতে।

উন্কামাকে তার গাঁমের লোক কেউ চিন্তে পারলো না গ্রামের বুড়ো বুড়ো

### পৃথিবীর ছয়টি বড় বাণিজ্য-বন্দর



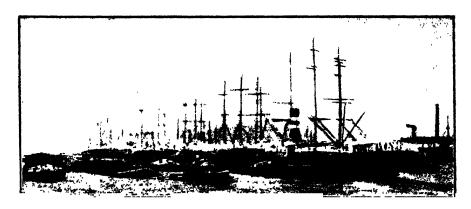
ङ्श्कर । द**न्स**त्र



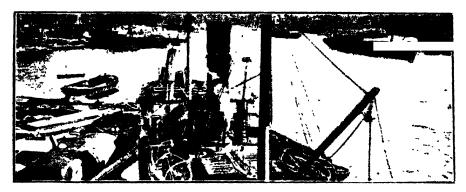
কলিকাতা বন্দর



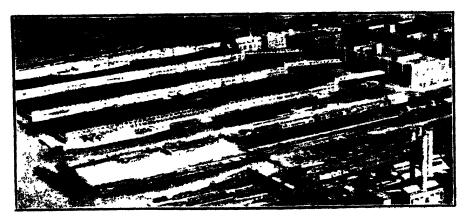
এপোলো বন্দর—বংখ



হ্যামবার্গ বন্দর



শতন বন্দর



নিউইয়র্ক বন্দর

#### - नानिटकान र्नुं कि ++++++

লোকেরা তার নাম ডনে বল্লে—ইয়া, ছেলেবেলা
অমন ধারা একটা নাম ডনেছিল্ম মনে পড়ে বটে।



তুমি যে সেই লোক, তা কেমন করে বল্বো ? তা আমরা ত তাকে কথনো দেখিনি; ভনেছি বে

ননীর ধারের একটা গর্জের ভিডর দিবে সে কোথার চলে গিরেছিল। ভূমি বে নেই লোক, ভা কেমন করে বল্বো ? উন্কামা বল্লে, আমার স্ত্রী কি বেচে আছে ?

গ্রামের লোকেরা বল্লে—হাঁ নে বৃড়ী বেঁচে আছে, ভার বরস একশো বছরের কম হবে না।

উন্কামার সাধে শেবে তার স্ত্রীর দেখা হ'ল। বেচারী হরে গিরেছিল বাছবিকই তরানক প্রথ্রে বৃদ্ধী। জনেক কথার পর বৃদ্ধী তাকে চিন্তে পারলো। ছ'জনে জনেক ছখ-ছঃখের কথা হ'ল। উন্কামার ছোট লিডটি এখন জোরান হয়েছে কিছ উন্কামার কাছে তাকেও মনে হর খেন সেব্ছো হরে গিরেছে। উন্কামা সেই বৌবনে বেমনটি ছিল, ঠিক তেমনি আছে।

# বাণিজ্যের পুঁজি

আনেক দিন আগের কথা। একজন শ্রেটী বণিক ছিল। ধনে মানে কুলে শীলে দে শ্রেট ছিল বলিয়া তাহার পরিচয় ছিল শ্রেটী। সেই শ্রেটীর অকল্মাৎ মৃত্যু হইল। তার ত্রীকে তাড়াইতে পারিলে শ্রেটীর সমন্ত সম্পত্তি তাহার জ্ঞাতিদের হইতে পারে, এই লোভের বশবর্তী ইইয়া উহার জ্ঞাতিরা সেই শ্রেটীর বিধবা ত্রীকে তাহার বামীর গৃহ হইতে ভাড়াইয়া দিল। অবলা নিঃসহায়া ত্রীলোকট ধৃর্ত কুটিল জ্ঞাতিদের বিশ্বদ্ধে কিছুই করিতে পারিল না।

কোথাৰ বাইবে, কি করিবে, ছির করিতে না পারিষা সে চক্ষে জাকার দেখিতে লাগিল। বিপদে পড়িয়া ভয়ে ছঃবে বিহ্নল হইয়ালে পথ চলিতে লাগিল। পথের মধ্যে ভাহার এক পুত্র অক্সিল। পথে জন্ম হইল বলিয়া সেই রমনী ভাহার পুজের নাম রাখিল পছক। লে শিশুপুজকে কোলে লইয়া ভাহার স্থামীর এক বন্ধু কুমারদক্ষেব বাড়ীতে পিছা উপস্থিত হইল, এবং নিজের পরিচয় না দিয়া ভাহার স্থামীর বন্ধর গ্রহে লাগীর কাজ গ্রহণ করিল।

দানীর কাজের কঠিন পরিপ্রাহ করিরা দে আগনার পুত্রকে কালনপালন করিতে লাগিল। প্রক একটু বড় হইলে ভাছার যাতা পুত্রের বিভালিকার ব্যবস্থা করিবার কল্প চিন্তিত হইল। পদ্দ ভবলোকের
সন্ধান। অবস্থার কেরে পড়িরা তাহার রাজাকে
নাসীবৃদ্ধি করিতে হইতেছে বটে, কিছু সে তো
তাহার পুরকে মুর্থ করিয়া রাখিতে পারে না। সে
কটকর দাসীকর্মের সামাল্প উপার্জন হইতে অর্থ-সঞ্চর করিতে লাগিল—পুর বড় হইলে তাহাকে
সেখাপড়া শিথাইতে হইবে।

লেখাপড়া শিথিবার বয়ন হইলে পছকের মাজা এক গুরুমহাশরের কাছে পুত্রকে বিদ্যাশিক। করিতে নিযুক্ত করিন। পথক শ্রেষ্ঠ শ্রেষ্টাক্রলের সন্তান, ভাহার বৃদ্ধি মেধা ভীক্ষ ছিল, সে অল্প-দিনের মধ্যেই লিখিতে পড়িতে ও অভ ক্রিয়া হিসাব রাখিতে শিথিয়া ফেলিন।

একদিন পছকের যা তাহার পুত্রকে বলিল—তুমি বণিকের ছেলে। ব্যবসায়-বাণিজ্ঞা করিতে পারার মকন বিভা তুমি অর্জন করিরাছ। এখন তোষার বাণিজ্যে প্রবৃত্ত হওরা উচিত। এই নগরে বিশাধিল নামে একজন মহাজ্ঞেরী আছেন, তিনি মহাধনশালী এবং দরালু। তিনি সংক্লজাত অথচ দল্লিত বণিক-বিশ্রকে মৃত্যন সাহাব্য করিছা বাণিজ্যে প্রবৃত্ত ইইবার ছবিধা করিছা দেন। তুমি তাহার কাছে

গিলা কিছু মূলধন প্রার্থনা কর, এবং ভাষা লইয়া ব্যবসায় করিতে আরম্ভ কর। কোথাও কাহারও কাছে চাকরী করিও না; চাকর হওয়ার যে কত কট ও কত লাজনা, ভাষা ভো আমাকে দেখিয়াই ব্রিতে গারিভেছ।

পছৰ মাজার আনেশে বিশাধিকের নিকট বাশিখ্যের পুঁজি কিছু টাকা প্রার্থন। করিবার জন্ত যাজা করিল।



এমন সময়ে সে দেখিল, পছক একটা মরা ইত্র হাতে করিয়া সেই পথ দিয়া বাইতেছে

পছক বধন বিশাধিলের বাড়ীতে তাঁহার নিকটে গিয়া উপস্থিত হইল, তথন তানিল বিশাধিল ক্রুছখবে কোনও বণিকৃ যুবককে তৎসনা করিয়া বলিতেছেন—তোমাকে আমি কত বার কত টাকা দিলাম, কির ভূমি এমনই অপদার্থ যে, সেই মূলধন বৃদ্ধি করা দূরে থাকুক বারখার একেবারে নিংল্ছ হইবা আসিরা প্ররায় আমার নাহাবা প্রার্থনা করিতেছ। এত টাকা জলে দিয়া তৃমি আযার ক্ষামার নিকটে অর্থ প্রার্থনা করিতে আসিয়াছ। তোমার মূখ দেখাইতে লক্ষা হয় না। এত টাকা বারখার লইয়াও তুমি কিছু করিতে পারিলে না। কিন্তু বে লোক বৃদ্ধিমান হিসাবী হয় সে এই যে ইচুরটা মরিয়া পড়িয়া রহিয়াছে উহাকেই মূলধন করিয়া মহাধনবান হইবা উঠিতে পারে।

ক্ত্ৰ বিশাধিকের এই কথা গুনিবা মাত্র পছক ডাড়াডাড়ি সেই মরা ইছুরটাকে স্থাতে তৃলিয়া সইয়া বিশাধিককে প্রশাস করিক এবং বিক্লি—আমি আপনার নিকট হইতে বাণিজ্যের মূলধন স্বরূপ এই মরা ইত্রটি ঋণ গ্রহণ করিতেছি। আপনি ইহা আমাকে ঋণ স্বরূপ দান ক্রন।

যুবক প্রকের বাক্য গুনিয়া বিশাধিল হাত্র করিলেন, এবং ভাহার প্রভাবে জেনও আপত্তি না করিয়া ভাহাকে সেই মরা ইছ্রটি ধ্ব দিলেন। প্রক ধ্বের দলিল ভ্যাহক লিখিয়া দিয়া ইছ্রটিকে লইয়া চলিয়া আসিল।

এক দোকানদার ভাহার দোকানে ইত্রের উৎপাতে জালাভন হইয়া এক বিড়াল প্রিয়াছিল। সেই বিড়াল দোকানের সব ইছের বধ করিয়া দোকানটিকে রকা করিয়াছিল। এখন আর দোকানে একটিও ইছের নাই; বিড়াল এখন বার কি পূদোকানদার বিড়ালের খাইবার জন্ত কোথাও একটা ইছুর খুঁজিতেছিল। এমন সময়ে সে দেখিল, পছক একটা মরা ইছের হাতে করিয়া সেই পথ দিয়া যাইতেছে। সে পছককে ডাকিয়া জিজ্ঞাসা করিল—ওহে ছোকরা, ভোমার হাতের মরা ইছ্রটা আমাকে দাও না, আমি ভোমাকে গড়-ছোলা জল খাইতে দিব।

পছক গুড়-ছোলার বদলে দেই মরা ইত্রটা দোকানদারকে দিল।

তাহার পরে পছক সেই গুড়-ছোলা নিজে থাইয়।
ফেলিল না : সে তাহা লইয়া নগরের বাহিবে যে
পথ বনের দিকে গিয়াছে সেই পথেব থারে এক
গাছের ছারায় গিয়া বসিল। সেই পথেব থারে এক
গাছের ছারায় গিয়া বসিল। সেই পথেব আনক
কাঠুরিয়া প্রতাহ বনে কাঠ কাটিতে বায় অনেক
ঘেনেড়া ঘাস কাটিতে থার, অনেক মালী বনে ফুল
ডুলিতে বার। এপছক গুড়-ছোলা আর জল লইয়া
বসিরা আছে দেখিরা প্রান্ত-কান্ত কাঠুরিয়া, ঘেনেড়া
আর মালীরা তাহার কাছে আসিয়া গুড় ছোলা
থাইয়া জলপান করিল, এবং তাহাদের নিজেদের
বোঝা হইতে প্রত্যেক কাঠুরিয়া ছ্থানি করিয়া
কাঠের চেলা, প্রত্যেক ফোঠুরিয়া ছ্থানি করিয়া
কাঠের চেলা, প্রত্যেক ঘেনেড়া এক এক আটি ঘাস
আর প্রত্যেক বালী ক্রডকগুলি করিয়া ফুল পছককে
মুল্যক্ষরণ উপহার দিয়া পেন।

পছক দেই কাঠ, যাদ আর ছুল আনিয়া নগরে বিক্রয় করিল, এবং ভালাতে যে প্রদা পাইল ভালা দিয়া দেই দোকানদারের দোকান হইতে গুড়-ছোলা ক্রয় করিল, এবং ভালার প্রদিনও আবার পূর্বের মতন প্রপার্যে জলসত্ত খুলিয়া বদিল।

একদিন কাঠবিরা, খেসেড়া ও মালীরা অধিক পরিমাণে ওড়-ছোলা থাইতে পাইল বলিয়া পরিভৃথ ও সম্ভই হইয়া প্রকাকে অধিক কাঠ, যাস ও ফুল দিল এবং মালীরা অধিকত্ত করেকটি জ্বন্দর জ্বনর গাছও উপহার দিল।

এই কাঠ, যাস, ছুল আর ছুল-গাছ বেচিয়া সেদিন পছক এক টাকা পুঁকি করিল।

এর পরের দিন নগরে অতান্ত বাড়াই ইইল।
রাজার বাগানে অনেক গাছের গুকুনা ও কাঁচা ডাল
ভাঙিয়া পড়িল। মালী বেচারা কেমন করিছা এত
আবর্জনা একাকী স্বাইবে ইহা চিন্তা করিতে চিল।
পদ্ধক তাহার কাছে গিয়া তাহাকে বলিল—যদি
ভূমি আমাকে এই সমন্ত বিনামূল্যে লইয়া ঘাইতে
দাও, ভাহা ইইলে আমি ভোমার বাগান পরিকার
করিয়া দিতে পারি।

মানী তৎকণাৎ এই প্রস্তাবে সমত হইল।

তথন পছক যেখানে ছেলের। থেলা করিতেছিল সেখানে গেল, এবং ছেলেদের বনিল -ভোমর। এখানে এ কি বাজে পচা থেলা করিতেছ ? আমার সঙ্গে ভোমবা এসো, আজ রাজার বাগান সাফ করার থেলা করা যাক। আর সেই থেলার পরে আমি ভোমাদের গুড-ছোলা দিয়া জল খাওয়াইব।

ছেলেদের কাছে তিনটি প্রলোভন আসিয়া উপস্থিত হইল--নৃতন খেলা। রাজার বাগানে তাহার! কখনো প্রবেশ করিতে পারে না, সেখানে প্রবেশের স্থযোগ; তাহার উপর আবার গুড-ছোলা ধাওয়া। তাহারা মহা-উল্লাসে কলবব করিয়া তথনই পস্থকের অফুসরণ করিল।

অনেক ছেলের সাহায্যে রাজার বাগান সংক্র পরিভার হইয়া গেল, এবং অল খরচে পছকের অনেক কাঠ লাভ হইল।

সেদিন ভো কোনও কাঠুরিয়া বনে যাইতে পারে
নাই। নগরে কাঠের অনটন হইল। এক কুজকার
বোল টাকা আর কয়েকটা হাঁড়ির বিনিমত্বে পছকের
সব কাঠ কিনিয়া লইল।

পদ্ধ প্রত্যাহ গুড়-ছোলা ও জল দইরা নগরের বাহিরে পথিকদের পিপাসা ও ক্থা শান্তি করিতে লাগিল। সকলে তাহার উপর অভ্যন্ত প্রসের হইবা উঠিল। তাহারা পদক্ষের মিট্ট ব্যবহারে তুট হইবা ভাষাকে প্রভাষ বলিতে লাগিল—আপনি আমাদের এত উপসার করিডেছেন, বলুন, আপনাকে কি করিয়া লাহায়া করিতে পারি গ

পছক বলিল—ইংার জন্ত ভোষরা এও ব্যস্ত ইইভেছ কেন। আমি আব ভোষাদের কি উপকার করিভেছি ? ভোষরা ভো মূল্য দিয়া জবা কর্ষ করিভেছ।

কিছ গেনেড়ারা পছককে সাহাব্য করিতে নিতান্ত আগ্রহ প্রকাশ করিতে লাগিল। তখন পছক বলিল—আছা, যদি ডোমর। আমাকে সাহাব্য ক্রিবেই, তবে আমি আবশ্রুক হইলে জানাইব।

এই সময়ে পছকের সহিত তুইজন বণিকের বজুত হইল, তাহাদের একজন স্থলপথে ও অপরজন জলপথে বাশিক্ষা কবিয়া দেশ-বিদেশে শুমণ করে।

একদিন স্থলপথ-বণিক পদ্দকে সংবাদ দিল— ভাই পদ্ধক, কাল একজন অম্ববিক্রেডা পাঁচ শত অম্ম এইনা এই নগরে আসিবে।

এই সংবাদ পাইল পছক সেই ছেসেড়াদের বলিল—ভাই, কাল ভোমনা প্রভাৱেক আমাকে এক এক আঁটি করিয়া থাস উপলার নিবে, আর আমার সেই থাস সব বিক্রয় হইনা না পেলে ভোমরা ভোমাদের থাস বিক্রয় করিবে না।

ঘেসেডারা ভাষাতেই সম্বত হইল;

অধ-বণিক তাহার খোডা দইয়া নগরে আসিল।
সে আর কোথাও ঘাস না পাইয়া অধিক মূলা
দিয়া প্রকের স্ব ঘাস কিমিয়া লইল। ইহাডে
প্রকেব হাজার টাফা লাভ হইল।

ইহার ক্ষেক্লিন পরে পছক তাহার বন্ধু জ্বপথবিপ্রেক্তর কাছে গুনিল হে, বন্ধরে একবানি বন্ধু
জাহাত্র মাল লইরা আনিতেছে। তথন সে একটুও
বিলম্ব না করিরা একবানা গাড়ী ভাড়া করিল
এবং সেই বন্ধরে গিয়া উপদ্বিত্ত হইল। সে
এতদিনে যে পুঁজি জ্মা করিরাছিল, তাহা দিরা সে একটা বড় তাঁরু জার জনেক চাকর ভাড়া
করিল। চাকরদের কন্ধু থুব ভালো ভালো গায়ী
ও ক্ষ্কালো উদ্দি ভাড়া করিয়া আনিরা উহাদের
পরিতে দিল। সেই-স্ব চাকর স্থাক করিয়া লইবা
গিয়া সে জাহাজের ব্যিকের স্থাক সাক্ষাৎ করিল।
সেই ব্যক্তি প্রক্রের ভূতাদের ক্ষ্মালো নামী
পোরাক দেখিয়া জন্মান করিল প্রক্ নিশ্চর
মহাধনী মহাজেরী হইবে। প্রক্ জাহাজের

#### -শিশু-ভারতী

বণিকের সমস্ক পণ্য একা ক্রয় করিবে শুনিরা বণিকের বিখাস আরও দৃঢ় হইল। পছক ভাহার পুঁজির হাজার টাকা বারনা দিয়া সব পণাজ্বের নিক্রের নারাজিত সীল-মোহর করিয়া দিল, যাহাতে অপর কোনও বণিক্ আসিয়া সেই মালের কোনও অংশ ক্রয় করিতে না পারে।

পৃষ্ঠ নিজের শিবিরে কিরিয়া আসিয়া তাহার ভূত্যদের বলিরা রাখিল যে, কোনও লোক ভাহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসিলে, সেই বাজি তার্ব এক এক ঘর পার হইয়া শেবের ঘরে তাহার কাছে বধন আসিবে, তখন এক এক ঘরে এক একজন ভূত্য বেন তাহার সকে সকে আন্ত, এবং একে একে তিন জন আরলালি একজ হইরা তাহাকে সকে করিয়া তাহার কাছে লইবা আসিবে।

বন্দরে বড় জাহাজ আসিয়াছে সংবাদ পাইর।
নগরের যত বণিক বখন পণ্য কিনিবে বলিরা বন্ধরে
আসিল, তখন ভাহার। গুরুল বে, একজন কোন্
মহাজেটী সম্ভ পণ্য বাহনা ক্রিয়া নিজের নামাছিত
করিয়া রাখিয়াটেন।

তাহারা অন্নস্থান করিয়া পছকের শিবিরে ঘটা, আসিরা উপরিত হইক। পছকের শিবিরের ঘটা, সাজ-সজ্জা ঐর্যা এবং আরলালি, চোপদার, ভৃত্য প্রভৃতির ছডাছড়ি দেখিরা ডাহারা মনে করিল এই মহাশ্রেমী নিশ্চমই অতৃল ঐথর্যের অধীধর। ভাহারা একে একে সকলে প্রকের সহিত সাজাৎ করিল এবং পণ্যের এক এক অংশের অন্ত এক এক হাজার টাকা লাভ দিতে বীকার করিল।

এইরণে পদ্ধক সমন্ত পণ্য ঐ-সকল বণিক্কে বিক্রম্ব করিয়া বিনাবারে বা অতি অরবারে ছই লক্ষ্ টাকা লাভ করিল এবং সেই টাকা নগদ লইয়া সে নগরে আপন মাতার নিকটে ফিরিয়া গেল।

প্ৰক ধনবান হইবা এখনেই মাভাকে লাসীছ হইতে মুক্ত করিবা সসন্থানে ও সমাহরে আপন নৃত্যন ভবনে আনয়ন করিল। কিন্তু সে ভাছার শিক্ষা-লাভা ও বাশিজ্যের মৃগধন-লাভা মহাজন বিশাধিলকে ভূগে নাই। সে বাশিজ্য ব্যবসায়ে সকলভা অর্জন করিবা ভাছার কুতজ্ঞভার চিক্ত্রণ একটি সোনার ইছুর গঠন করাইল এবং সেইটিকে হাতে করিবা পুর্বের মহল অভি নীন ও বিনীভভাবে বিশাধিলের বাভীতে গিয়া উপস্থিত হইল। বিশাধিল ভাহার হাতে সোনার ই'ছর দেবিরা আশুর্য হইরা ব্যাপার কি জিঞ্চাসা করিলেন। তথন



নোনার ইছর হাতে করিয়া অভি দীন ও বিনীত ভাবে বিশাখিলের বাড়ীতে গিরা উপস্থিত হইল

পছক ভাহার পূর্ববৃত্তান্ত বলিয়া বিশাধিলুকে তাঁহার উপদেশ ও সাহায্যের কথা শ্বরণ করাইয়া দিল।

বিশাখিল পছকের বাণিজা-কৌশল, বাবসারে পটুড়া ও ভাহার ঋণ-বীঝারের সভডা দেখিয়া আত্যন্ত আশুন্দী ও সন্তই হইলেন। ভিনি পছকের সেই কুবর্ণ ই দুরটি পছকের কুডিডের পরিচারক-চিহ্ন বলিরা সমাদম করিয়া এহণ করিলেন এবং ভাহাকে ঋণমুক্ত করিয়া ভাহার দলিল ভমহক ভাহাকে কেরড দিলেন এবং ভাহার পরে নিজের কল্পার সহিত পছকের বিবাহ দিয়া ভাহাকে পুরস্কৃত্ত করিলেন।

অর্থের দারা সঞ্চলীল ব্যক্তি অর্থলালী ইইয়া থাকে, ভাহাতে কোনও আশ্চর্যা ইইবার কারণ নাই; কিছ অর্থ বিনা, কেবল কৌশল, উছম ও বৃদ্ধির বলে পছক বে ধন অর্জন করিয়াছিল, ইহার লক্ত সে বিশাধিলেন পরম প্রীতিভাজন ইইয়া পরম হুখে জীবন-বাপন করিতে লাগিল। আর সকলের অপেকা হুখী ইইলেন পছকের মাতা পুরকে হুখী দেখিরা।

এই পল্লটি দংকৃত 'কথা-সরিৎসাগন' নামক গ্রন্থে ও পালি 'কাককে' ভিন্ন ভিন্ন ভাবে বর্ণিত আছে।



# सार्वात मून कथा

তোমরা অভিচ্ন বাজিদের মূথে গুনিয় পাক
এবং নিজেরাও বিশাস কর থে, স্বাস্থা ও শক্তি সঞ্চয়
করিবার জন্ত বাায়াম করা উচিত। ডোমাদের মনের
কথা আমি এই জানি যে, সার্কাস বা অন্ত কোন
শক্তির থেলা দেখিলে সেই সব খেলোরাড়ের মন্ত
শক্তিমান্ ইইবার ইচ্ছা ডোমাদেরও হয় এবং
সেজন্ত ভোমরা অনেকেই নানা উপাস অবলমন
করিয়া থাক; সেই সম্বদ্ধে গোটাক্তক মূল কথা
ভোমাদিগকে বলিব।

নিজের শরীর পরীকা করিয়া নেথিলে একটা সোজা কথা এই চোখে পড়িবে বে, দেহ গভির লগু তৈঘারী হইমাছে, অস্থি ও পেশীর চমংকার সমাবেশ গভির কথাটাই ফুশ্লাই করিয়া দিহাছে। জীববিজ্ঞানের দিক দিয়া গভিটা খুব বড় কথা। গভি জীবনের ভিত্তি, গভি না থাকিকে জীবজ্ঞগভের কোন প্রাণীরই দেহে ক্ষমপুর্ণের কাজ চলিছে পারে না। গভির জভাবে দেহ জড় হইয়া যায় , য়ড়ভা ও মৃত্যু একই জিনিষ।

শরীর-বিজ্ঞানের কথা জোমরা ছোটার্টি জান।
বিভিন্ন অন্ধ-প্রত্যান্তের গতিব জন্ত মক্তিকে সাহর
নিরামক কেন্দ্র আছে। এই বিভিন্ন ক্লেগুলি
আমাদের দেহের সকল জিয়া নিয়ন্তিত করে। পর
কেন্দ্রগুলি সঞ্জাগ হয় দেই সম্পূর্ণরূপে পরিশত
হলৈ। আমরা বাহা আলোচনা করিভেছি। তাহা
হইতে বৃশ্বিতে পারিবে, আমরা দেহের জিয়া ও

সংযুক্তের সবজ কি করিয়া জ্বাল: স্থাপন করি। এই জ্বানিকাশ ও পরিণ্ডি কেবল থেলা ও বাজ্যাহার নয়- মানসিক ক্রিয়াঞ্জরিও মূল করা।

জন্ম-মুখ্ণ ইইতে আহে পাচ বংসর বয়স প্রয়ন্ত নৈহিক ক্রিয়ণর সৃষ্টিও ম: থকেব স্নায়কেক্সের স্থন্ত ফার্পন অতি জ্বন্ধ চলিতে **থাকে। এই বয়সের মন্ত** माध्यात चार १४१म गमाइडे डेसारमा मुक्ति এड क्षांत्र থাকে না ৷ শিশুমনের কৌতুহলের অস্ত নাই এবং लिके दर्शेषुश्लार निश्वत नृष्टन नृष्टन छेडावनाइ, नव नव व्यविकादवत्र मृदन व्याद्धः। व्यक्ति देनमद नातीदिक किया वालील कात किशू शारक ना। तह শ্ময়ে পেশীর শুকর্ষ ও অন্থির পুষ্টির স্কন্ত ছাগ্রত মহর্তপ্রসিতে হাত পা কবিরত নাডার দরকার হয়, স্বায়ুকেজ ১খন শুধু উদ্ভেজনাতেই সাড়া দেয়--বেমন শিশুর শস্ত্রবিধা তা অস্থস্ত ধোধ করিলে কাঁদা। শিশু বৰন দাডাইতে বা ইাটিতে শেখে তথন দীড়াইবার বা হাটিবার এপ্ত সাযুক্তে আত্র আলে আগিয়া উঠে। ঐ প্রক্রিয়াগুলিতে যে প্রথম চক্কতা বা **টক্মকে** ভাব খাকে ভার কারণ আর কিছু নয়, স্বায়ুকের ও প্ৰক্ৰিয়ার মধ্যে সম্ভার অভাব। বার বার চেটার বিশিষ্ট স্বাযুকেজটি সম্পূৰ্ণ জাগিয়া উঠে ও গাঁড়ান वा शाही मण्युन आयस इत्या यात्र । এই तक्त कतिया প্ৰভ্যেকটি শারীরিক কিয়া ও শিশুর নৰ নৰ শাবিকার নৃতন নৃতন সামুকে**লকে আগাইয়া ভোলে** এবং ক্রিরাণ্ডলির অভ্যানের সংল ক্রেওলিরও

\*

পূর্ণ পরিণতি ও বিকাশ হয়। 'নৃতন কোন ক্রিয়ার সংখ নৃতন কেন্দ্রের উল্মেষ খতঃসিদ্ধ কথা।

কন্ধানের অস্থিসমূহ প্রথমে অপরিপুট থাকে এবং
শারীবিক নানা ক্রিয়ার দ্বারা দেগুলি ক্রমণ:
কঠিনভা পায়। অস্থি, পেশী ও আয়বিক কেল্লের
পরিণতি ইইতে গ্রীমপ্রধান দেশে সমন্ত্র লাগে
শাচ বংসর ও শী তপ্রধান দেশগুলিতে সাত বংসর।
সেই অক্ত আমাদের দেশে প্রাথমিক শিক্ষা আরম্ভ



याश्रम बाबा नदीरबंद गठन

করিবার বরদ পাঁচ বংসর ধরিয়া লওয়া হইয়াছে।
এক বিখ্যাত মনজন্ববিদ্ বলেন বে, পরীর ও মনের
পরিপতির এই সময়টার, অর্থাৎ তিন চার বংসর
বরদে শিশুর মনে যে দাগ পড়ে সেটা ভবিভাতে
কোন উপারেই মৃছিয়া ফেলা বার না, সেই দাগ বা
বাগগুলিকে ভিত্তি করিয়াই সে গড়িরা উঠে।

এক বিধাত আমেরিকান্ শিশুমনতত্ত্তির (Hetherington) শারীরিক ও মানসিক ক্রিয়ার অভিব্যক্তির চমৎকার একটি ব্যাধান দিয়াছেন। এই ব্যাধানি চক্র সন্থাবে বাধেলে শিশু ও কিশোর-ব্যক্ষ বালকের সহজে শিশুক বা পিতামাতা অনেক্ ভূলের হাত হইতে নিয়তি পান। এই পণ্ডিডটি শিশুর • বয়স হইতে ১৯ বৎসর বয়স প্যাস্ত একটি শারীরিক ও মানসিক ক্রিয়ার চাট ভৈয়ারী করিয়া-

ছেন। ভাহাতে দেখা যায় যে, প্ৰথম ভিন চারি বংসর বয়স প্রান্ত শিশুর স্ব কাজে শারীরিক বৃত্তি পরিক্ট ও প্রধান। মানসিক বৃত্তির গোড়াপত্তন হয় পাচ হইতে সাত ৰংসর বয়সে: বয়স যত ৰাডিতে থাকে শারীরিক বৃদ্ধি অমুপাতে তত কম হইতে থাকে এবং মানসিক বৃত্তি বৃদ্ধি পার। ১৯ বংসর বয়সে মানসিক প্রক্রিয়াই প্রধান হট্মা উঠে এবং দৈহিক বৃত্তি গৌণ হট্মা যায়। সব স্বস্থ শিশু, বালক ও যুবক এই ধারাবাহিকভার ভিতর দিয়া যাইতে বাধা। এটা ভোমাদের বলা দরকার যে, আমরা সাধারণ স্বস্তু মাতুবের কথাই আলোচন। ক্রিডেছি, ভার সম্বন্ধেই এই সব কথা খাটে। কোন কারণে দেহ দীর্ঘকাল অক্স পাকিলে এই সৰ নিয়মের বাডিক্রম হয়। সে ক্ষেত্রে শারীরিক বা মানসিক প্রকর্ষে বাধা পড়াই সম্ব।

এ ত গেল ছেলেদের কথা। থেয়েদের বেলার একটু বাভিক্রম ঘটে। মেরেদের দৈহিক ও মানসিক বৃদ্ধিগুলি ছেলেদের তুলনার অধিকজর ক্রতগতিতে উৎকর্ব লাভ করে। সেই কারণে খেলা বা লেখাপড়ার তারা কডকটা বরল পর্বান্ত ছেলেদের চেবেও আগাইরা চলে। আসুমানিক ১২।১৬ বংশর বরল পর্বান্ত বালকা দৈহিক

বহুস প্রয়প্ত বালক ও বালক। দেহক আকার, সংবার প্রভৃতিতে একেবারেই ভিন্ন থাকে না, ইহার পরে বিভিন্নভাটা প্রথম আসে।

#### ন্যাক্সাম-বিপ্রি

পর্যন্ত মৃত্যুর হারটাও অভ্যন্ত বেশী। ১ বংশর বয়ন পার, হইতে রোগপ্রবণতা কম হইতে থাকে এবং অপরদিকে রোগকে বাধা দিবার শক্তিটাও জমশং বাড়ে। সাধারণ নিয়ম এই বটে কিন্তু নানা আন্থ্যকর উপায়ে, বিশেষ করিয়া চিকিৎসা ও শরীবচর্চার বারা আমরা এই রোগপ্রবণতাকে বথেই বাধা দিতে পারি, কেননা এই বয়নের অধিকাংশ বয়াধি একান্ত নিবার্যা।

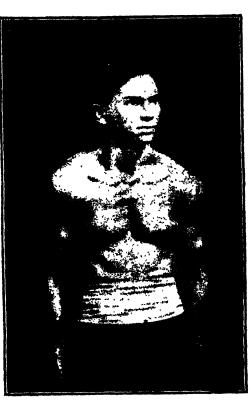
দেহের উৎকর্ষ নানা শ্বিনিষের উপর নির্ভর মূলত: ভূপ্রকৃতি, জ্ববায়ু, দেশের উচ্চতা (Sea-level), পরিবেটন, খাছা প্রকৃতি এবং সামাজিক শুর এই উৎকর্ষের নিয়ামক 🕽 দেহের কথাল মোটা ও দুচ্বা পাত্লা ও ত্রকাল হওয়াব বিশেষ কারণ ভূপ্রকৃতি ও অলবায়। এই কারণে পাঞ্জাবী ও বাঙ্গালীর ক্যাল এক প্রকারের নয়। সামাতিক ন্তরও একটা খুব বড় ক্তিন্তিক যাৰ প্ৰায় বিষয় বিষয় বিষয় বালক-বালিকা খুব তাড়াতাড়ি দৈহিক উংকর্গ লাভ করে, দরিদ্র এবং অশিকিত ঘরের ছেলেমেযেদের উৎকর্ষ যথানিম্বনে না হইয়া বিলক্ষে হয়। প্রকৃতির নিয়ম এই যে, প্রায় তেব বংসর বয়দে এই দ্রুত বা গৌণ উংকর্ষ এক মাপকাঠিতে আসিয়া দাভায়। শরীরচর্চার দানা আমৰা এইগুলি নিয়ন্ত্ৰিত করিতে পারি ৷

তেব বংসর ব্যসের পরও পুরুষদেহ প্রায় পুরানে। নিয়মেই চলে কিন্তু মেয়েদের বেলায় অন্তুত দৈহিক ও মানসিক পরিবর্ত্তন হয়, সে-কথা অঞ্চ প্রবন্ধে বলিব।

আমাদের দেহে অনেকগুলি প্রণালীযুক্ত
ও প্রণালী-বিহীন গ্রন্থি আছে। প্রণালীযুক্ত
গ্রন্থিনি আপনাদের বিশেষ বিশেষ রস
মোক্ষণ করিছা সোজাস্থাজ্ঞ দেহের
রক্তপ্রবাহে ঢালিয়া দেয়, প্রণালীবিহীন গ্রন্থিতিল
আপনার অস্তরে রসমোক্ষণ করে। এই প্রন্থিতিলর
শোষিত রসের উপর দেহের উৎকর্ম অনেকটা নির্ভর
করে।

এখন ডোমরা ব্বিতে পারিয়াছ আমাদের কায়িক বা মানসিক উৎকর্বের পুথ শরীর দিয়া; শরীর হুত্ব থাকিলে প্রক্রিয়াগুলি শুধু অবিকৃত থাকে না, পরিপূর্ণ বেগে চলে। সেই কারণে দেহ সঞ্চালন জীব-বিজ্ঞানের মূল কথা। আমাদের দেশের পণ্ডিতেরা একথা জানিতেন বলিয়াই শরীর-সাধনাকে ধর্ম বলিয়া গিয়াছেন।

উৎকর্ষের আর একটি মূল কথা - আমাদের



শরীর-চর্চার দারা দেহের উন্নতি

দৈহিক উদ্ভৱাধিকার। আমাদের জন্ম-সময়ে পিতা-মাতার মানসিক ও দৈহিক স্বাদ্ধ্য আমাদের ভবিত্তৎ নির্ণয় করে। সেই কারণে এক পিতামাতার ছটি সম্ভান যে একই ভাবে গড়িয়া উঠিবে এমন কোন কথা নাই।

#### শিশু-ছারভী

বিভিন্ন দেশে চিন্ধা ও গবৈষণার ফলে এবং
কডকটা স্থান-কালের প্রযোজন হিসাবে স্বাস্থ্যকগব
নানা পন্ধতি গড়িয়া উটিয়াছে ৷ কোন পন্ধতির বাজকলা, কোন পন্ধতি বা দেহেব আভাহাবিক
বন্ধতার স্বাস্থ্য নিহলিত কবিবাৰ জন্ম, এবা
কোন পন্ধতি বা দেহদিকে সাধাবৰ নিষ্মে প্রস্থ রাখার জন্মই তৈয়ারা হইয়াছে ৷ এই বিভিন্ন লুকোৰ আলোচনা করা আমাদেৰ উদ্যেক্ত নহ, ভালমনের বিচার ভুদু আম্বা বিশ্লেষৰ থাবা কবিতে বারি

উচিত এবং কি কি প্রাক্তিয়ার সমবয় হওরা উচিত, নির্মাণিথিত উপারে আমরা বিশ্লেষণ করিয়া নির্ণয় করিতে পাবি। এই ক্ষেক্টি প্রকরণ বা অংশ-বিভাগের উপর উপায়টি নির্ভর করে।

ু: ক্রান ২। গেনী ৩। রক্ত**াবা**ই

৪ , পচন ৫ : বহিনিকাশ ৬ : খণ্য

সর জিনিষ্ট পরীকা কবিয় লগবে উপায়ের ৭: মায়

প্রচলন আছে। স্বাস্থ্যপ্র মন নীতিতে কি ধ্কা ৮। অভিন আডেওলিব বিনা বাধায় কাছ করা।

#### বাহামের ফল

| দেহের সউনের<br>উপর ্গ <sup>রনীর</sup>                          | श्रीक्रिक्शांस अशस   | <b>য়ানসি</b> ক  |
|--|--|--|
| ১স্থান্থি, পেশী, বক্তপ্রবাহ ৬<br>স্থান্থ প্রকাশবণের উন্নতি করা | ।<br>নিম্লাখিত প্ৰৱণক্লিব ঠিক<br>কাজ ক্লালে।।                            | মন:সংযোগ<br>সহযোগ /                                    |
| ও মেগুলি পূর্ব কাগাক্ষম<br>করা।                                | ি সংস্থি<br>২— প্শী<br>৩_ বঞ্পায়  | চরিত।<br>সাহস<br>আত্মসংখ্য                             |
| ২—টৈছিক লোম সংশোধন<br>করা।                                     | ৪- পচন<br>৫ - ব(৫০মিক)*<br>৬- স্থায়                                     | আত্মনিভয়ত।<br>ক্ষিপ্রভা<br>নিয়মা <b>ল্</b> বর্জিত।   |
| ৩ - অস্থিব জ্বোড়শুলিব উন্ধান<br>করা:                          | ৭প্রায়ু<br>। অভিযাত জোচনেশ বিন্যা বংলায়<br>প্রাঞ্জার বার্              | বিচার<br>শ্বরণশক্তি<br>মানদিক শক্তিসমূহের              |
| 8 – দেহ-ভিক্সিন (Posture)<br>সংশোধন কৰা।                       | ংশ প্রক্রিয়ার ভূপে স্থ<br>কবিবরে শক্তি ও স্থিতি<br>(ngility)রুদ্ধিপায়। | ন্ধন্ন ভাবিতে শেখা<br>(group sense)<br>বিশ্ৰাম ইত্যাদি |

#### স্বাস্থ্য

প্রত্যেক স্ক্রিড থেকা: ও ব্যায়াম প্রতির মধ্যে এই স্ব গুণ থাকা উচ্চিত। এ বিষয়ে অন্ত প্রবন্ধে ভোমাদিপ্রে কিছু বলিব।

882



# কবিতা চয়ন

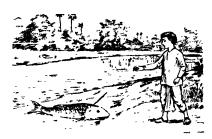
₹

#### হেলে তুলানো ছড়া

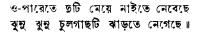
নোটন নোটন পায়বাঞ্লি কোটন বেথেছে। বঙ সাতেবেৰ বিবিগুলি নাইতে এসেছে। কে বেখেছে কে বেখেছে দাদা রেখেছে আজি দাদাব তেলা ফেলা, কাল দাদাব বে। দাদা যাবে কোন খান দে, বকুলতলা দে।



ছু-পাৰে ছুই কাই কাংলা ভেমে উচ্চেছে। দাদাৰ হুহতে কলম ছিল ছু ছে মেৰেছে









বকুল ফুল কুড়তে কুড়তে পেয়ে গেলুম মালা। রামধনুকে বাজি বাজে দীতেনাথের খেলা॥

সীতেনাথ বলে রে ভাই চাল কড়াই থাব। চাল কড়াই খেতে খেতে গলা হল কাঠ। হেণা হোথা, জল পাব চিংপুৰের মাঠ॥ চিংপুরের মাঠেতে বালি চিক্চিক্ করে। সোনা মুখে রোদ নেগে রক্ত ফেটে পড়ে॥

"যাত্ন, এতো বড় বঙ্গ, যাত্ন, এ তো বড় রঙ্গ। চার কালো দেখাদে: পারে। যাব তোমার সঙ্গ।"

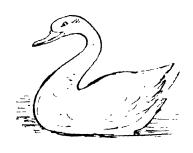


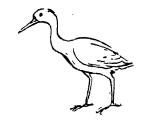


"কাক কালো, কোকিল কালো, কালো ফিক্লের বেশ। ভাহার অধিক কালো; কন্সে, ভোমার মাথার কেশ॥"



"যাছ, এ তো বড় বঙ্গু, যাছ, এ তো বড় রঙ্গ। চাৰ ধলো দেখাড়ে পাৰো যাব ভোমার সঙ্গ॥"







"বক ধলো, বস্ত্র ধলো, ধলো রাজহংস্। তাহার অধিক ধলো, কক্সে, তোমার হাতের শৃষ্ধ ॥"





\*-

"যাহ্ন, এ তো বড় রঙ্গা, যাহ্ন, এ তো বড় বঙ্গ। চার রাঙা দেখাতে পারো যাব তোমার সঙ্গ।"



"ধ্ববা রাঙা, করবী রাঙা রাঙা কুসুম ফুল। তাহার অধিক রাঙা, কজে, তোমার মাথার সিঁহুর॥"

"যাত্ব, এ তো বড় রঙ্গ, যাত্ব, এ তো বড় রঙ্গ। চার তিতো দেখাতে পাবো যাব তোমার সঙ্গ॥"

> নিম তিতো, নিস্তান্দ তিতো, তিতো মাকাল ফল।



তাহার অধিক তিতো, **কল্ফে.** বোন-সতীনের ঘর।"

"যাত্ব, এ তো বড় বঙ্গাত্ব, **এ তো বড় রঙ্গ।** চাব হিম দেখাতে পারো, যাব তোমার সঙ্গ ॥"

> "হিম জল, হিম **স্থল,** হিম শীভলপাটি। তাহার অধিক হিম, ক**ন্তে**, ভোমাব বুকের ছাতি॥"



উলু উলু এদারের ফুল। বর আস্তে কত দুব॥ বর অ'সতে বাগনাপড়ো বড়বৌ পো বালা চড়া॥

ছোট বে লা জলকে যা। জলের মধ্যে স্থাকাজোকা। ফুল ফুটেভে চাকা চাকা॥ ফুলেব ববন কড়ি। নটে শাকের বড়ি॥





মিশ্র ঝিঝিট-দাদ্বা।

দেশ দেশ দেশ—ভাই, আমাদের দেশ।
সকল দেশের আগে সে কোন্ দেশ?
—ভাই আমাদের দেশ।

উত্তরেতে হিমালয়, দক্ষিণে সাগর, পূবে পশ্চিমে, ভাই, পাহাড় মনোহর, —ভাই পাহাড় মনোহর:

তার মধ্যে মায়েব সাঁচল সোনা-ঢালা বেশ, গাছ-গাছালি কীরের নদী, সোনা ধানেব কেত, —ভাই আমাদেব দেশ।

বিকিমিকি সূথ্য উঠে, বাঙে ফোটে ভাবা, চাঁদেব ভ্যোচ্ছনা, ভাই, যেন ফটিক্-ধারা, —ভাই যেন ফটিক্-ধাবা;

এমন্—দেশের জল-মাটি, এমন্ দোনার দেশ, আমরা এমন্ দেশের ছেলে সুখের নাহি শেষ।
—ভাই আমাদের দেশ॥

| স       | -7 1 | ব       | -† I<br>শ্ | রা       | था। | মা      | রা | I | রা      | - মা । | 911     | - 91 | I |
|---------|------|---------|------------|----------|-----|---------|----|---|---------|--------|---------|------|---|
| 41<br>2 | -tı  | o<br>-† | -1 I       | ১´<br>মা | ণা। | o<br>-† | ণা | I | ১<br>পা | -11    | o<br>মা | 91   | I |

```
I s'
                       `د
            0
                                0
                       था - 1 मा--- 1 मा
                                                       - 41 I
   ধা-পা। মা-পা
                                              711
                                                    রা
   শে
            (क)
                 ন
                       ८५ भ
                               ভা ই
                                           €;
                                               ম।
                                                     r, h
                                                          র
I 5
   मा -11 -1 -1 II
   CF
II 5
                       \ `
                                            7
                                                    0
  পা ধা। মা পা I ধা ধা
                                *1 · 1 I
                                               4
                                                         স্ব
                                                              I
                                           4
                                                    91
(১) উ
            (₫
                তে
                      হি
                           21
                                 e)
                                                175
                                            'n
                                    SI,
                                                     24
                                                         71
(২) ঝি কি
            মি
               ক
                                ঠ
                       7
                           या
                                    दंड
                                           31
                                                7
                                                     ফো
                                                         টে
I s'
                       ١,
            0
                                           ``د
                                0
                                                     0
  नर्भाना न्या ना I भा भा।
                                -1 97 I
                                               411
                                                     11
                                                         - (
                                                              I
                                           ধা
(2) 50 0 0
                র
                       위
                           73
                                    Α.
                                           CH.
                                                          Š
                                               Ţχ
                                                     ভা
           বা •
(2) 51000
                       ĎΙ
                           ζŀ
                                 ₹
                                    (10€)
                                               F1 |
                                                     <u>ٿ</u>
                                                          3
I 🗹
                       ١,
                                           \
            0
                                                     0
                মা I মা -!! মা -! I মা
  511 511 511
                                                         স্
                                                              I
                                               211
                                                     মা
(3) পা
      হাড্
                                 3
                                     डे
             Ų
                 त्ना
                        ş
                            ₹
                                           **1
                                                ¥ 16
                                                     7
                                                         নো
                 টক
                                    ġ,
(২) ধে ন
            Ŧ
                       ধা
                          বা
                                13
                                                7
                                                         টিক
                                           (₹
I s
                       ``د
            0
                                \mathbf{o}
                                                     0
  न्त्री-१।-१-१ मिश्री-१। क्ष्रिक् 🛚 🗗 वर्ष
                                                              I
                                               4 . 1
                                                         4
                                                     4
(১) ঽ
                 3
                       16
                           ব্
                                    741
                                           21
                                               33
                                                     8 1
                                                         5:1
(३) ४) •
            41
                          যন
                       Q
                                দে শেব
                                           4
                                                67
                                                     7
I s
            0
                                                     0
                 श I ना -1
 স্
                                -1 -1 I
                                                              I
       ना। भा
                                           X1
                                               21
                                                     e i
                                                         ধা
(১) সো
       না
             51
                       (1
                                                         2
                 লা
                                           116
                                                511
                                                     5
(২) এ
       মন
            শো
                 নাব
                       CF
                                    4
                                           হাম
                                                ব
                                                     4
                                                         યંન
                       5
I s'
            0
                                                     0
       ধা ৷
                PH I H
  91
            পা
                          911 1
                                या
                                    51
                                                              I
                                           71
                                                -1 1
                                                     भ
                                                          --1
(১) কী রেব
                F)
             न
                       গো না
                                 ধা
                                    7.44
                                                          ₹
                                           (4
                                               Ţ
                                                     E1
                                    12
(২) দে শের
            (5
                লে
                       73
                          থেব
                                 লা
                                           (14)
                                                ষ
                                                     ভা
0
                                 Ü
   সা সা। রা-মা I মা ন। ন
                                    -i 11 II
(১) আবা মা
            टम
                 র
                       (4
(२) ज्या मा स्म त
                   ८न
```



# পৃথিবীর ইতিহাস—মিশর

মিশরের সফটকালে অ্যামেন-হোটেপের মৃত্যু হইলে তাঁহার পুত্র চতুর্থ অ্যামেনহোটেপ রাজা

হন। কিছ তিনি এই বিশংসকুল সময়ে রাজ্যের
কর্ণধার হইবার মোটেই উণ্যুক্ত ছিলেন না। এই
সময়ে দুবকার ছিল তৃতীয় ধর্থ মিসের মক্ত অবরুদন্ত
রাজ্যর। আব এই নবীন ফাারাও ছিলেন কবি,
ভাববিলাদী ও ধর্মপ্রবণ। রাজনীতির ধার তিনি
বক্ত একটা ধারিতেন না। তাহার মাতা তিয়ি,

যে, যথন ফ্যারা ওয়েব উচিত ছিল এক বিশাল সৈক্তবাহিনী লইয়া নাহরিণ রক্ষা করা, তিনি তগন

সমৃদ্য রাজকার্য্য ভূলিয়া এক অভ্তপ্র ধর্মবিপ্লবে নিজের সমস্ত শক্তি ও চিছা নিয়োগ করিলেন। এই ধর্মবিপ্লবের বিষয় পরে বিশদরূপে আলোচনা করা যাইবে। এবানে এইটুকু বলিলেই যথেষ্ট ইইবে যে,: মিশরে চতুর্থ আ্যামেনহোটেণই প্রথম একেশ্বরবাদ প্রচলন করিতে চেঠা করিয়া-

ছিলেন। এই ইবরেব নাম ছিল আয়াটন্ (Aton) আর তাঁহার প্রকাশিত রূপ ছিল স্থাগোলক (Solar Disk)। চিত্রে দেখিতে পাওয়া থায় যে, স্থাগোলক হইতে অসংখা আলোকবেখা পৃথিবীর উপর নামিয়া আদিয়াছে। প্রত্যেকটি রেখা শেষ হইয়াছে একটি হাতে—আর দেই হাতে রহিয়াছে জীবনী শক্তি।

আামেনহোটেপ কর্ণাক ও
লাক্ষারেব মধ্যস্থিত উদ্যানে এই
নৃতন দেবভার মন্দির তৈয়ারী
করেন।মিশরের সমস্ত দেবদেবীর
অন্তিও তিনি অস্বীকার করেন
এবং ভাঁহাদের পূজা বন্ধ করিয়া

দেন। যেখানে যেখানে তাঁহাদের নাম ছিল, তিনি তাহা তুলিয়া ফেলেন। আগমনদেবের উপরই তাঁহার



মিসরের কয়েকটি প্রাচীন দেবভা

ন্ত্রী নেক্ষেরতেত ও বন্ধু আই (Eye) ছিলেন তাঁহার প্রধান প্রামর্শাতা। স্বত্রাং ফল হইয়াছিল এই:







2 TEN 50 800 35 3 FR

\*\*

কোধ ছিল সর্বাপেক। বেশী। তাঁহার প্রপ্রকাদের সমাধি ও কাতিজ্ঞ হইতে তাঁহার নাম মুছিয়া ফেলা হইয়াছিল। কিন্তু মুদ্ধিল হইল তাঁহার নিজেব নাম লইয়া। যাহ। ইউক, তাহাতে দমিবাব পার তিনি ছিলেন না। নিজেব পিতৃদত্ত নাম পরিতাাগ করিয়া ন্তন নাম বাধিলেন ইব ভাটন'(Ikhnaton) অর্থাৎ কি না 'আটেনের স্বরূপ'।

থিব্দে ছিল 'আাম ন'দেবেব প্রভাব সর্বাণেকা বেশী। স্থতরাং ইপ্ভাটন্ দেপান হইতে রাজ্ববানী বর্ত্তমান 'ভেল-এল-আমার্ণাতে' (Tel-el-Amarna) তুলিয়া লইয়া পেলেন। এই নৃতন রাজ্বানীর নাম হইল 'আাপেটাটেন' (Akhataton)। এবানে



মিশবের প্রাচীন দেবভা

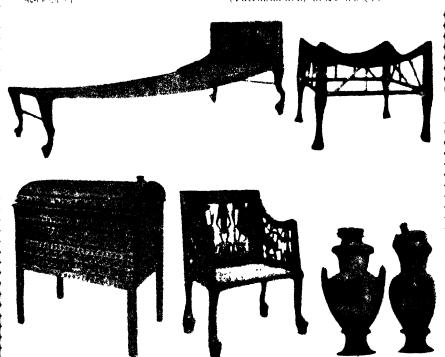
আয়াটন্দেবের তিনটি ফুলব মন্দির নিম্মিত হইল।
রাজপ্রাসাদ ও আমীর ওমবাহদের বাডীও তৈয়ারী
হইল। দিনবাত আটেনেব মহিমাকীর্ত্তনই হইল
এখানকার বিশেষত্ব। যদিও রাজাদের বন্ধুদের
মধ্যে কেহ কেই এই নৃতন ধর্মের উচ্চভাব ধ্থার্থরপে স্থাস্থাক্ম করিতে পারিয়াভিলেন, অধিকাংশ
লোক কিন্তু কিছুই ব্রিতে না; কেবল রাজার
অভুগ্রহ লাভের জন্ম বীধা বলি আওড়াইত।

ইপ্রাটন্যে ওধু ধর্মবিষয়েই প্রচলিত মতের বিহ্নকে গিয়াছিলেন ভাহা নহে, তাহার জীবন-ষাত্রাও পূর্বের বাজাদের অপেকা সম্প্রিপে পৃথক্ চিল। এতদিন প্যাস্ত মিশ্রের রাজারা ছিলেন দেবতা, সকল বিষয়েই তাঁহারা বাধা-ধরা নিয়মাত্র-যায়ী চলিতেন। ইখুলাটন কিন্তু দেবতা হইতে রাজী হইলেন না। তাহার আদর্শ ছিল সভা। তিনি রাজ। হইলেও মাতুষ, রক্তমাংগের মাতুষই তিনি থাকিতে চাহিলেন। কুত্রিমতা তিনি মোটেই পছন্দ করিতেন না। কাজেই তাঁহার সময়েব ছবি-গুলিতে একটি নৃত্ৰ জ্বিষ দেখিতে পাওয়া যায়---এकটা সবল স্বাভাবিক সৌন্দ্ধা। রাজাদের চিত্রের মত কুত্রিমতা কোথাও নাই। ন্ত্রী-পুত্রের প্রতি প্রকাশ্যে ভালবাসা দেখাইতে যেমন তাঁহার কোনই কুঠা ছিল না. চিত্রেও তাঁহাদের সঙ্গে সাধারণ মাজ্যের মত দেখা দিতেও তাহাব কিছুম তা আপত্তি ছিল না। কবিও তিনি খুব বড দরেংই ছিলেন। আটেনেব বিষয়ে তিনি যে সব ভোত্র রচনা করিয়াছিলেন, সভাই ভাহা থবই স্থানর ও জনয়গ্রাহী।

ইখ্যাটন ভ ধশবিপ্লবে সম্পূর্ণরূপে মাভিয়া রহিলেন, এদিকে কিন্তু উত্তর সিবিয়ায় হিটাইট্রা এবং দক্ষিণ প্যালেষ্টাইনে খাবিরি (Khabiri) নামে সেমেটিক জাতীয় লোকেবা বিশ্বাস্থাতক সামস্ত-রাজ্ঞাদের সজে যোগ দিয়া-এশিয়ার মিশব-সামাজাকে লওডও করিতে আরম্ভ কবিল। বন্ধ-রাজারা ইখ কাটনকে সমস্ত থবব জানাইয়া সাহায্য প্রার্থনা করিলেও ফ্যারাও তাহাতে কোনরূপ কর্ণপাত কবিলেন না। ধীবে ধীরে সমস্ত এশিয়াই মিশবের হাত হইতে বাহির হইয়া গেল। সেলিকে কোন জক্ষেপ নাই—ভাবুক রাজা আটেনের মহিমা-কীর্ত্তনেই মর্য় বহিলেন। দেশের সর্বাত্র আটেনেব মন্দিব নিমিত হইতে লাগিল, আর আটেনের ভয়ভয়কার আকাশে বাতাদে ধর্মত চইতে লাগিল। এদিকে সর্বাত্র অশান্তি উপন্থিত হটল। প্রস্থার। আটনকে মানে না-তাবা চায় তাদের পরানো দেবদেবী। আামনেব শক্তিশালী পুরো-হিতেরা তাঁহাদের দেবভার অপমানে ও নিজেদের উপেক্ষায় ক্ৰুদ্ধ হইয়া এই অসম্ভোষের বহিংতে উদ্ধন যোগাইতে লাগিল। রাজ্যের বীর দৈনিকের। সাম্রাজ্ঞা নাশে ক্ষম হইয়া প্রতীকারের স্থােগ থ জিতে লাগিল। এই সময়ে ১৭ বৎসর রাজত্বের পর ইখ্রাটনের মৃত্যু হয়। তাঁহার সঙ্গে সংখ মিশর এক অন্তুদাধারণ সত্যাশ্রমী ও ভাবুক রাজা হারায়। হইতে পারে কবি, ভাবুক ও স্বপ্ন-

#### শিশু-ভারতী

হন। আংমনের শক্তিশালী পুরোহিতেরা তাহাকে আংমটাটেন ছাডিয়া পুনরায় থিবদে রাজধানী প্রানাগরিত করিছে বাধা করেন। তিনি নিজে যদিও আটিন্দেবের পূজা করিতেন তবু পুরানে। দেবদেবীর—বিশেষতঃ আগমনের পূজা আবার পুনরায় প্রচলন করেন এবং তাহার মন্দিরগুলি সংখার করেন। ইহাতেই সর সোল মিটিয়া যায় না। নিজের নাম ছাডিয়া নুতন নাম ট্টেনখামন' (Tutenkhamon) বাধিতে বাধা হন।



থ্য'মনের ২বলে অ।বিষ্কৃত করেকটি মূলাবান্ জিনিষ

ইথ্ আটনেব পুথদন্তান ছিল না। কাজেই তাহাব জামাতা আকেৰে (Sakere) তাহাব পৰ রাজা হন। কিন্তু ছুদ্দিন ৰাজ্য ইইবাব মত বোগাত। তাহার মোটেই ছিল না। অল্পনিন প্রেট হন্ত্যান্নেব আব এক জামাতা 'টুটেনগাটন' (Tutenthaton) বাজা কিছুদিন পূৰ্বে ট্টেন্থ্যামনেৰ কৰর আবিষ্কৃত হইয়াছে। ভাগতে ৰে সমস্ত মহামূল্য জ্বা পাওয়া গিয়াছে স্ভাই ভাহা বিশ্বয়ক্ব।

টুটেন্থ্যামনের মৃত্বে পর ক্ষেকজন অপদার্থ বাজা কিছুকাল নামে রাজহ করেন। তাঁহাদের সময় দেশে ভীষণ অবাজকতা উপস্থিত হয়। এই

#### পুথিনীর ইতিহাস মিশর

অবান্ধকত। দূব কবিয়া দেশে শান্তি থাপন করেন ব্যান্ধনাৰ নিষ্ঠা। তিনি ছিনেন একজন সন্ধান্ত-বংশীয় লোক। নিজ পৃথিবলৈ তিনি ইযুক্তাউনেব পরবর্তী বাজাদের সময় সবিশেষ শক্তি সংগ্রহ করেন। স্ববেশ্যে তিনি হন রাজ্যের প্রধান সেনাপতি ও প্রধান সমাতা। এক কথায়, তিনি ছিলেন বাজ্যের প্রজাত কর্ণধাব। স্থান্থা আ্যামানেব পুবোহিতদের সাহায়ে তিনি রাজ্যা হন (পু: খ্য: ১০৭০)। এবং ইযুক্তাউনের শ্যানিকাকে বিবাং কবিয়ং ভাইনের অধিকার পাক, করেন:

রাজা ইইঘাই গ্রেমজার অ্যামনের প্রভূত্ব পুনংপ্রতিষ্ঠিত করেন গ্রং পুস দেবম্নির ওলিব
দংক্ষার সাধন করেন। আটনের ম্নির গ্রাটন যেখানে
যেখানে আমনের নামগুলি টুনি। ফেলিবাড়িলের
ভাষা থাবার নৃত্ন করিয়া বসান ইইল। আর ইবভাটনের উপর প্রতিশোধ প্রথা ইকল স্পর ভাষার
নাম চাছিয়া দেশিক্যা— গ্রন কি, আন্মেট্টাটনে
ভাষার ব্য করর ছিল, ভাষ্ট্র ভাজিয়া ফেলা
হল।

তাবপর হার্ম্ছাব্ শাসনসংস্থাবে মন দিলেন।

যত বকম পাপ ও অনাচাব বাঞ্ধশ্যচারীদের মধ্যে

শাসন-সংস্থাক চুকিখাছিল ভাষা তিনি কঠোর হতে

দূর করেন। প্রজাদের উপর মত্যাচার

নিবারণ করেন। নৃতন নৃতন আইন প্রপায়ন
করিয়া স্বিচারের বন্দোবন্ত কবিলেন। এইরুপে

তিনি দেশের স্বব্র শান্তি ও শৃঞ্জা পুন: প্রতিষ্ঠা
করিতে সমর্থ হন।

তাঁহাও মৃত্যুব পর প্রথম ব্যাম্সেদ্ (Ramsas I)
রাজা হন। কিন্তু বৃদ্ধ রাম্সেদ্ অর্লিনের মধ্যেই
প্রথম সেটি
প্রথম সেটি
পুর সেটি (Seti I) রাজা হন। সেটি
পুর বিচক্ষণ ও শক্তিশালী বাজা ছিলেন। সৈন্তুসামস্ত লইয়া বার বাব এশিরায় গমন করিয়া
প্যালেষ্টাইনে মিশরের সাক্সাজ্য, পুন:প্রতিষ্ঠিত
করিতে তিনি সমর্থ হন। হিটাইট্নের সক্ষেও
তাঁহার বৃদ্ধ হইয়াছিল, তবে তাহানের সাক্ষ বোধ হন
বিশেষ স্বিধা করিয়া উঠিতে পারেন নাই। কারণ,
ভিনি ভাছানের সঙ্গে সন্ধি করিতে বাধা হন।

দেশে ফিরিয়া তিনি শান্তিকায়ো মন দেন। পুবাতন দেবালয়গুলির সংস্কার করেন। নৃতন নৃতন মন্দির নিশাণ করেন: প্রথম ব্যামদেস কর্ণাকের মনিংরে সন্মথে যে বিশাল হলগর নির্মাণ করিতে আবস্ত করিয়াছিলেন, সেটি তাহা অনেকটা শেষ করেন। ইহার দেওয়ালে নিঞ্চের বিজয় কাহিনীর রিলিফ চিত্র অধিত কবেন। এমন সন্দব চিত্র খুবই কম দেখিতে পাভয়াযায়। ধিব্সের পশ্চিম দিকে তিনি নিজেব স্মাধি-১ নির নিশাণ কবিতে মার্ভ কবেন, কিন্তু শেষ কবিষা যাইতে পারেন নাই। আাব্টেড্সে (Abydos) তিনি একটি অপ্র জনত মন্তিত নিশাল কবিধাছিলেন-প্রধান দেবতা ও ভতপ্র বাজাদের প্রার জন্ম। সারও অনেক প্রন্ত জনৰ মনিৰ ভিনি স্থাপনা কবিয়াভিলেন।

সেটীৰ মৃত্যুৰ পৰ ভাহাৰ পুত্ৰ ছিডীয় ব্যামসেদ্ वाका इस । वाम्यसम् भर छेरमाही ७ कच्छे ছিলেন। বাজা হইয়াই ডিনি ভাঁহার ধিজীয় পিতার মন্দরন্তাল সংস্কার ও সমাপ্ত ब्राइयरमञ् করেন। ভাষার পর তিনি এশিয়ার শাস্ত্রাজ্য পুনরুদ্ধার কবিবার জন্ম দচপ্রতিজ্ঞ হন। প্রথমে তিনি দিলিসিয়ান উপকূলে ঘাটি স্থাপন করেন, ভারপর ভিতরের দিকে অগ্রসর হন। এদিকে হিটাইটদের রাজ। মেটেল্লাও প্রকাণ্ড এক সৈনাবাহিনী সংগ্রহ কবেন। খাদেশের **নিকটে** खुरे भन्नाई शृद्धात अनुस् व्यक्तात्र स्था। পাদেশের বন্ধ মত্তিত আজ্মনে রামেসেসের **অ**ধি-কাংশ সৈয়া প্রায়ন করে অথবা নিহত হয়। জাতার উদ্ধারের আর কোন আশাই গাকে না। র্যামদেস কিন্তু হাল ছাড়িয়া না দিয়া অসীম বিক্রমের সঙ্গে সংখ্যক সৈতা লইয়া বাব माक्रमन कतिएक शास्त्र । अमित्क होत् अक्रमन নুভন সৈক্ত তাহার সাহাগার্থে আমে। হিটাইটুরা দমিয়া যায়। ছই পক্ষেই অনেক হভাহত হয়। অবশেষে রাামসেদ দহট চইতে উদ্ধার লাভ করেন। হিটাইট্লের সলে তাহার সন্ধি হয় এবং তিনি দেশে ফিরিয়া আসেন। র্যামদেস কিন্ত ঠাহার বীরত্বের থুব গর্ম করিতে লাগিলেন, যেন তিনি মন্ত বড় বিশ্বয়ী বীর। দেশের অনেক मिन्दित्र मिश्रात्न थाम्मान गुष्कत हित छिनि অভিত করান।

#### শিশু-ভারতী

ইহার পর আবার তিনি এশিয়া বিজ্ঞার বাহির
হন। এবার তিনি প্রথমে প্যালেটাইন উদ্ধার
এশিলা বিজ্ঞা করেন। তারপর তিনি সিরিয়া
আক্রমণ করেন এবং নাহরিন পর্যন্ত
তাঁহার সাক্রাজ্ঞা বিস্তার করেন। আবার হিটাইট্দের সঙ্গে তাঁহার সদ্ধি হয়। ছুইদেশেব রাজ্ঞা
পরস্পারের সঙ্গে বদ্ধতাপাশে বদ্ধ হন।

এশিয়া বিজয় ও শাসনের স্থবিধার জন্ম রাাম-সেস থিৰুস হইতে রাজধানী তুলিয়া আনিয়া উত্তর মিশরে একটি নৃতন রাজধানী স্থাপন করেন। ভাহা হইলেও তিনি দক্ষিণ মিশরের প্রতি একেবারে উদাসীন চিলেন এমন কি. নিউবিয়াতেও তিনি মন্দির স্থাপন করিয়াছিলেন। হিলিওপলিস্, মেম্ফিস্, থিৰস, আবাইডস প্রভাতি বড় বড় সহরে তিনি অনেক মন্দির নির্মাণ করিয়াছিলেন। তাহা ছাডা তিনি তাঁহার পিতার অসমাপ্ত মন্দিরগুলিও সমাপ্ত করেন। প্রথম রাামদেদ্ কর্ণাকে যে প্রকাণ্ড থামওয়ালা মন্দির নির্মাণ করিতে আরম্ভ করেন ভাহাও ভিনি শেষ করেন। ইহাতেই কিন্তু **ভাঁহার আশ মেটে নাই। তিনি তাঁহাব পূৰ্ব্ব-**পুরুষদের মন্দিরগুলির গায়েও নিজের নাম' খোদাই করিয়াছিলেন, যেন সেওলিও ডিনিই নির্মাণ কবিয়াছেন। আবাব অনেক সময়ে তাঁহাদের মন্দিরগুলি ভাজিয়। সেখান হইতে মাল-মশলা সংগ্রহ করিয়া নিজে মন্দির নির্মাণ করিয়াছেন। এই সময়ে দেশের আর্থিক অবস্থা ভালই ছিল। বাবসা-বাণিজ্যের বিশেষ উন্নতি হইয়াছিল। এমন কি. ফিনিশিয়ান প্রভৃতি বিদেশীরা মিশরে রীতিমত বসবাস করিতে **আরম্ভ** করিয়াছিল। বিদেশী আবার রাজসরকারে বড বড চাকুরী ও বিশেষ প্রতিপত্তি লাভ করিত। সৈক্সদলেও অনেক বিদেশী উচ্চপদ পাইত-ভবে সাধারণ সৈনিক লাইবীয়ান ও নিউবিয়ানদের মধা হইতেই লওয়া হইত।

ৰিভীয় ব্যামসেনের মৃত্যুর সন্দে সন্দেই মিশবের
ক্রন্ত পড়ন আরম্ভ হয়। বৃদ্ধ মার্থেন্টা (Merneptah) রাজা হইঘাই সাথাজ্য রক্ষার জঞ্জ
বিশেষ ব্যাতিব্যস্ত হইঘা পড়েন।
সমগ্র সিরিয়া প্যালেটাইনে বিজ্ঞোহ উপস্থিত হয়।
বৃদ্ধ স্থ্যারাও নিজে বাইয়া সেই বিজ্ঞোহ দমন করেন

এবং বিজোহীদের কঠোর শান্তি দেন। এদিকে
সিসিল, সাভিনিয়া, ইটালী গ্রীক প্রভৃতি বিদেশী
সাম্প্রিক জাতিদের সক্ষে মিলিড হইয়া লাইবীয়ানয়া পশ্চিমদিক হইতে উক্তর মিশর আক্রমণ
করে। মার্পেন্টা ভাহাদেরও বৃদ্ধে পরাজিত করিয়া
ভাড়াইয়া দেন। নিউবিয়াতেও ভিনি বিজ্ঞাহ
করেন। ভারপর ভিনি ভাহার পিভার ক্রায় প্র্ববাজ্ঞাদের মন্দির ভাজিয়া নিজের কাঁয়ি স্থাপনা
করেন।

মাণেপ্টার মৃত্যুর পর করেকজন অপদার্থ
কারাও মিশরের সিংহাসনে বসেন। তাঁহাদের
ভূতীর র্যান্দেন্ সময় দেশের অতীব শোচনীর অবস্থা
হর। অবশেবে ভূতীয় র্যাম্দেন্,রাজা
হইয়া দেশে শান্তি স্থাপনা করেন। আবাব সামৃত্রিক
জাতীয় লোকেরা লাইবীয়ান্দের সজে যোগ দিয়া
উত্তর মিশর আক্রমণ করে। ভূতীয় রাাম্দেন্
তাহাদের সম্পূর্ণরূপে পরাত্ত করেন। আর একদল
সিরিয়ার মধ্য দিয়া অগ্রসর হয়। র্যামন্দ্ে তাহাদিগকেও পরাত্ত করেন। মেশবেশ (Meshwesh)
বলিয়া একদল সোক লাইবীয়া আক্রমণ করিয়া
তাহাদের সঙ্গে যোগ দিয়া মিশর আক্রমণ
করে। র্যামন্দেন্ ভাহাদেরও ভাড়াইয়া দিতে
সমর্থ হন।

মন্দির নির্মাণেও তৃতীয় র্যামদেশের খুবই জাগ্রহ ছিল। থিব্দের অপর পারে তিনি আামন্দেবের একটি মন্দির নির্মাণ করেন। ইহার প্রাচীরে ভাঁহার যুদ্ধের ঘটনাসমূহ অভিত

এখানে একটি জিনিব জানিয়া রাখা দরকার।

আনকদিন ইইতেই মন্দিরের পুরোহিতদের ক্ষরতা
আানন্দেরের

অ্যানন্দেরের

অ্যানন্দেরের

অ্যানন্দেরের

অ্যানন্দেরের

অ্যানন্দেরের

অ্যানন্দেরের

অ্যানন্দেরের

অ্যানন্দেরের

অ্যানন্দ্রি

তাহাদের বিত্তর ছিল। আতে আতে

পুরোহিতের। ক্যারাওর প্রভিজন। ইইলা উঠিতে
ছিলেন। তৃতীর র্যামনেশ্ তাহার ভ কোনই
প্রতীকার করিলেন না, বরং আবও ধ্রারার উপ
ভৌকন দিরা তাহাদের ক্ষরতা আরও বাড়াইরা

দিলেন। সর্বাপেকা শক্তিশালী ছিলেন অ্যামন্
দেবের পুরোহিতেরা। তাহার প্রধান পুরোহিত

এই পদটিকে নিজের বথলে ভারী করিয়াভিলেন।

#### প্রথিবীর ইতিহাস-মিশর

তাহাছাড়। অস্তান্ত মন্দিরের পুরোহিতেরাও তাঁহাকৈ প্রভূ বলিরা বীকার করিতেন। তাঁহাকে সম্ভূট না করিয়া কোন ফ্যারাওট বেশীদিন বাজস্ব করিতে পারিতেন না।

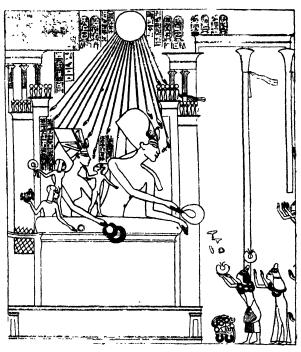
· তৃতীয় র্যামনেদের মৃত্যুর পর র্যামনেস্ নামধারী নয়জন রাজা মিশরের সিংহাসনে বসেন। তাঁহারা দবাই ছিলেন একেবারে অপদার্থ। তাঁহাদের

সময় আমন্দেবের প্রধান
পুরোহিত প্রকৃতপক্ষে স্বাধীন
নরপতির স্তায় তাঁচার
বিশাল ক্ষমিদারী শাসন
কবিতে আরম্ভ করেন।
এমন কি, তাঁচার নিজেব
দৈক্সদামস্থ প্রান্থ চিল।

ব্যামসেসের রাজ্ঞত্বের সময় ট্যানিসের (Tanis) একজন জমিদার সম্প্র উত্তর মিশর জন্ম করিয়া স্বাধীনভাবে রাজত করিতে আরম্ভ করেন। হতভাগা ফাারাও থিব সে পলাইয়া গিয়া আমনের প্রধান পুরোহিত ছহবের (Hiriher) হাতের পতল হন। কিছুদিন পরে তাঁহাকে সরাইয়া পুরোহিত মহাশয় নামেও ফ্যারাও **इहेग्र**ा বসেন। কিছদিন মিশব হুইটি স্বাধীন রাজ্যে বিভক্ত थाकि। व्यवस्थित करत्त्रत्र পৌত্র ট্যানিদের কক্সাকে বিবাহ করিয়া ছুইটি রাজ্যের মিলন করেন।

এদিকে মিশনের সৈঞ্চদলে বিদেশীরা, বিশেষতঃ
লাইবীয়ান্রা, অধিক সংগ্যায় প্রবেশ করিতে আরম্ভ
করে। শেশক (Sheshonk) নামে একজন
লাইবীয়ান্ সৈঞ্চাধাক্ষ (৯৪৫ খৃঃ পৃঃ) ফ্যারাও
সিংহাসন অধিকার করিয়া বসেন। শেশকের সময়
মিশরের সাময়িক শক্তিবৃদ্ধি হয়। উাহার পর কিছু
কাল লাইবীয়ান সৈঞ্চাধাক্ষগণ মিশরে রাজ্য করেন।

খনেকদিন হইতে নিউবিয়া মিশর রাজ্যের অংশ
ছিল। ফ্যাবাণ্ডর একজন প্রতিনিধি ইংগ শাসন
ইথিওপিয়ান
কারণিও
মিশরের ধর্ম ও পড়তা গ্রহণ
ক'রয়াছিল। খ্: প্: অইম শতাকীতে একটি স্বাধীন
নিউবিয়া রাজ্য গড়িয়া উঠে। রাজা নিজেকে



পূৰ্ব্যদোলক হইতে অসংখ্য আলোক রেখা পৃথিবীতে নামিছা আসিতেছে। প্রত্যেক রেখা পেব চইছাচে একটি হাতে--আর সেই হাতে রহিছাচে জীবনী-পক্তি

ক্যারাও বলিতেন। পিয়াখি (Piankhi) নিউবিয়ার রাজা হইয়া মিশরের উপর তাঁহার আধিপত্য বিন্ধার করিতে আরম্ভ করেন। হুবোগ বুলিয়া তিনি দক্ষিণ মিশর জয় করেন। তথন উদ্ভর মিশরের ক্তারাজারাও ফারোও পিয়াখির অধীনতা খীকার করেন। পিয়াখি মিশর পরিত্যাগ করিলেই আবার দেশে অয়াঞ্চর্ভার কৃষ্টি হয়। কৃষ্ট শাসনকর্জারা

\*\*\*\*

স্বাধীনভাবে রাজ্য কবিতে আব্দু কবেন। **এই** সময়ে আদিরিয়াব রাজা সাগন মিশবের এশিয়ার সামাজা অধিকার কবেন। (৭১০ স্বং ০:);

এদ্যিক পিয়াজ্ঞির পরে উচ্চার এজে: শাবক নিউবিযাৰ সিংহাসন অধিকার ক্রেন। অনতিবিলয়ে সমূহ মিশ্ব ম্থিক,ব করেন এবং ক্যার।ওব সিংহাসনে বসেন। আ।সিবিয়াকে বাধা भिवात क्रम रिक्त किल्फि लाएनहेड्डिस्स वाकारमड বিলোহ কবিংও উওজিত কৰেন। সাগ্র অব্দ্র ভাহাদের বলে বাখিতে সমর্থ হন। কিল সার্গনের মৃত্যুৰ পৰ সেলাকেবিব (Sennacherib) হখন রাজা হন তথ্ন ভাষ্টাৰ বিকল্প বিষয়ে হ' উপস্থিত হয় . মিশ্ব হইতে শাবক দৈল্যামন্ত পাঠান ভাহাদের সাহাযোগ জন্ম দেয়াকোরের কিন্তু বিজ্ঞাতীদের পরাজিত ব্রেন্ট্রপ্রিলনে পোল্যোগ উপস্থিত হ এয়াতে তিনি মিশ্ব আক্রমণ কবিতে পাবেন নাই। শাবকের পর আরও ছইজন ইথিওপিয়ন (Ethiopion) স্পাধান হল: যখন শাবকের ভ্রাতু-ষ্পাত্র ভাইক (Taharka) মিশরের বজা, তথন দেনাকেরিবের পুত্র এপাবহাড্ডন(Esarhaddon)মিশর আক্রমণ করিছা ফারোওকে পরাও করেন এবং উত্তর মিশর আধকার কবেন। তাংক নকিণ মিশবে লক্তর করিতে থাকেন। এসারহাজ্জনের পুত্ৰ অস্থ্যবালিপাল (Ashurballipal) আবাৰ ভাহককে মন্ত্রে পরাস্ত করেন, কিন্তু দক্ষিণ মিশবে টাচার প্রভন্ন বিন্তার করিতে সম্প হন নাই।

শাবকের মৃত্যুর পর তাহার আতুপাত ভয়তমন্
(Tanutamon) দক্ষিণমিশরের রাজাইন এবংউতর
মিশরে তাহার অধিকার বিস্তার করেন। মেম্ফিস্
তাহার রাজধানী হয়। অস্ববালিপাল তাহাকে
পরাত করিয়া মিশর ইইতে তাড়াইয়া দেন এবং
থিব্স সহর লুটপাট করেন। তম্বতমন তাপাটায়
বাজক করিতে থাকেন।

ইহার পর উত্তর মিশরে তাম্টিক (Samtik)
নামে একজন সামত রাজা এসিবিধার বিক্রে
বিজ্ঞাহ করিয়া ত্বাধীন ফ্যারাও হন। তিনি গ্রীক্
সৈপ্তদের সাহায্যে সমগ্র মিশরের উপর আধিপতঃ
বিতাব করিতে সমধ হন। ক্রু রাজাদের দমন
কবিধা তিনি মিশবে পুনরায় শান্তি ও শৃত্বালা
ক্রাপন কবেন। তবে ভাহার সৈষ্ঠানত বিশেশী

গ্রাক, সিবিয়া ও লাইবীয়ার অধিবাসীরাই ছিল প্রধান। দেশে সাবাব বাবসা বাণিজ্ঞাব উন্নতি গ্রীক ব্রেসার্যর। মিশরে উপনিবেশ ८५शा राष्ट স্থাপন করে। জ্বাপেক অবস্থাও বেশ মিশবেৰ নৰ সচ্চল হয়। শিল্পেও একটা সঞ্জীব-ষভাষান, স্থামটিক ভাব সারা পাওয়া যায়। মিশরে मार्ग नो व्य আবাব যেন আশার আলোক , দখা দেয়। কিন্ধ এ জ্বাগবন স্বায়ী হয় নাই। পর্কেব সেই অনুমা উৎসাহ ও শক্তি ফিবাইর। আনা সম্ভব इय नाई. छम् वाहित्त्रत अवही श्रीतवस्त्रन (मश যায়: তবে প্রাচীনকালের গৌরবকে ফিরাইয়া আনিবাৰ বুখা চেটায় মিশ্ববাসার। পরিত্যাগ কবিনা মৃত প্রাচীনকৈ আক্রেডাইয়া ধরিতে 5েপ্টা কৰে। ধর্ম সাহিত্যে, সমাজ, শিল্প, সমস্থ ব্যাপারেই প্রাচীনের প্রভাব লক্ষিত হয়।

সাম্টিকের মৃত্যুর পর জাহার পুত্র নেকো(Neco) রাজা হন ইতিমধ্যে আ্যাসিরিয়ার পতন আরম্ভ হইয়াছে। নেকো ফিলিস্টিয়া (Philistia) আক্রমণ করিবার জ্বন্থ মনেকগুলি যুকের জাহাজ তৈয়ারী করেন। নিনা আ্যাসে সমগ্র সিবিয়া ও প্যাকেটাইন জ্বয় করিয়া এশিয়ায় পুনবায় মিশরের সাম্রাজ্য হাপন কলেন। কিন্ধু তাহা বেশীদিন স্থায়া হয় নাই। নবীন ব্যাধিভানিয়ার সম্রাট্ ভ্যাবোপোলাভার পুত্র (Nabopolassar)নেবুটান্তেজ্লারকে(Nebuchadrezzar) নেকোর সঙ্গে ফু কবিতে পাঠান। কার্কেমিসের যুক্তে নেকোর সজ্বে শুজ কবিতে পারাত্ত হন এবং মিশরে গলানে করেন (৬০৫)। এব সাঘাতেই এশিযার সাম্রাজ্য র্থিয়া গড়িল।

নেকে।ব মৃত্যুর পর তাহার পুত্র স্তাম্টিক্ রাজা

হন্ ৷ স্তাম্টিকের পর রাজা হন তাহার পুত্র

শারজয়ানের

মাজির (Apries) ৷ আাপ্রিস্ গ্রাক্

স্ক্রাকের বিশেষ অন্তগ্রহ করিতেন ৷

ইহাতে মিশরীয়দের মধ্যে বিলোহ
উপস্থিত হয় ৷ বিজোহীদের নেতা আামেসিস্
(Amasis) আাপ্রিসকে পরাজিত করিয়া নিজে

শ্যারাও ইন ৷ রাজা ইইয়া আামেসিস্ও কিন্তু
গ্রাক্সৈম্ভদের উপর নির্ভর করেন ৷ তাহার মৃত্যুর
পর তাহার পুত্র ভৃত্যীয় স্তাম্টিক্ রাজা হন ৷

এক বৎসর রাজবের পর পাবশুরাজ কুয়াম্বিসেস
মিশর জয় করেন (খু: পু: ৫২৫) এইখার চির্দিনের
মত মিশরেব স্থীনতা-কুর্যা অন্তর্মিত হইজা ৷

## CERTICORY OF CONTROL O



# বাঙ্গলা লিপির উৎপত্তি

বালল। লিপি ডোমরা সকলেই ব্যবহার কর। ছাপার জকরে বাললা লিপিতে লেখা কড খনামধন্ত প্রাতঃশ্বরণীয় মনবিগণের রচনা পাঠ করিছা আনন্দিত হও। আবার বন্ধু-বান্ধবগণকে পত্র লিখিতে হইলে কিছা প্রবন্ধাদি রচনা করিতে হইলে মুক্তার পাতির মত বান্ধলা জকরে যুঠ করিয়া লিখিয়া খাক। মান্ধা, কখন ভাবিয়া দেখিয়াছ কি, এই বান্ধলা লিপির উৎপত্তি কি করিয়া হইল ৪ মান্ধ্র

অধুনা আমাদের দেশে, ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশে ভিন্ন প্রকার লিপি প্রচলিত আছে। যথা, কাশ্মীব প্রদেশের শারদা লিপি, পঞ্জাবের শুরুমুখী, গুরুরাত প্রদেশের গুরুরাতী লিপি, মহারাট্র দেশের ও মধাপ্রদেশের নাগরী লিপি, আন্ধ্রদেশের তেলেগু লিপি, কেরল দেশের মসরালম লিপি ও জাবিড় দেশের তামিল লিপি। ভারতবর্ষর বর্তমান সমস্ত লিপিগুলি মূলতঃ একটি মাত্র আয়া লিপি হইতে তথেপন্ন। দাক্ষিণাভাপ্রদেশের ভাষাগুলিব লিপি মূল আ্যালিপি হইতেই সংগৃহীত।

এই মূল লিপির নাম ব্রোচনী কিশিপি। ইহা ভারতের প্রাচীন লিপি। এই লিপির প্রভাবেটী মক্ষর একটি মাত্র ধ্বনি বা উচ্চারণের ক্ষম্ম বাবহৃত হয়। কথিত মাছে যে, স্বয়ং একা এই রাক্ষী লিপির স্থাইকর্তা।

প্রাচীন ভারতে স্মারও এক প্রকার লিপি প্রচলিত ছিল ইহার নাম ছিল থবোঞ্চা। এই লিপির প্রচার কেবল পঞ্চাবেই ছিল: এবং ভাহার কভিপয়

বিদেশী রাজার মুদ্রা ও তামালিপিতে পাই। পঞ্চাবেও বেশীর ভাগ গাজার প্রদেশেই (পেশোয়ার ও রাওসপিতী জেলায়) এই লিপির নিদর্শন পাওয়া পিয়াচে। পঞ্চাবের বাহিরে মথ্রা ও আক্লানি-স্থানেও এই লিপির নিদর্শন পাওয়া গিয়াছে।

মাসলে এক্ষা লিপিই ভারতবর্ষের প্রাচীন লিপি।
পাসাণ খণ্ডে, ভায়াদি ধাতু-পাত্রে অথবা অন্তগাত্রে
থোদিত প্রাক্ষা লিপিব শত শত লেখা পাওয়া
গিগাছে। পণ্ডিতেরা বহু গ্রেও বহু কৌশলে
এবং মশেস মধ্যবসায় সহকারে এই সমন্ত লিপির
পাঠোদ্ধাব করিতে সম্প হইয়াছেন। এই সমন্ত
লেখা পডিয়াই পণ্ডিতের। ভারতের লুপাইভিহাস
কত্রু কত্রু উদ্ধাব করিতে সম্প ইইয়াছেন।

রান্ধী লিপির প্রাচীনতম নিদর্শন সৃদ্ধা ট 
সংশাকের সময়ে ও তাহার কিছু পূর্বেই দেখিতে 
পাই। তোমরা সমাট্ অপোকের নাম হয়ত কেন, 
নিশ্চরত ভনিয়াছ। বিগ্যাত ইংরাক্স সাহিত্যিক 
এইচ, জি. ওবেল্স্ (11 (i. Wells) ভাঁহাকে সর্ব্ব 
দেশের ও স্বকালের মহামানবের মধ্যে স্থান 
দিয়াছেন। এই সংখ্যান। মহিম্ময় মহারাক্ষ কতকপ্রলি ধর্মালিপি প্রভরগাত্তে ও গুভগাত্তে খোদিত 
করাইয়াছিলেন। এই সমন্ত লিপিই ব্রান্ধী লিপির 
প্রাচীনতম নিদর্শন বলিয়া পত্তিতেরা পূর্বের্ব মনে 
করিতেন। কিন্তু সম্প্রতি কয়েকটি লিপি আরও 
আবিক্বত হইয়াছে, ধেক্সলি অশোকেরও পূর্ববিত্তী। 
নেপালের তরাই-এ পিপ্রাওয়া নামক স্থানে একটি 
শ্বপের ভিতর হইতে বুকদেবের অন্থি সহিত একটি 
পাত্র পাওয়া গিয়াছে। এই পাত্রের উপর খোদিত

লিপি ইইতে জানা যায় যে, শাক্যজাতির লোকেরা দার্ঘালিত হইয়া বৃদ্ধদেবের অন্ধি ঐ অংপর ভিতর রক্ষা করিয়াছিল। বোধ হয় পুট পূর্ব পঞ্চম শতান্দীর শেবভাগে বৃদ্ধদেবের নির্বাণের পরেই এই সংরক্ষণ কার্য্য সমাধা হইয়াছিল ও ত্মারক লিপিট খোদিত হইয়াছিল।

তোমরা যদি আধুনিক বাজনা লিপির সহিত আশোকের নিপির ভুলনা কর, তবে বিখাস করিতে পারিবে না যে, একটি হইতে আর একটির উৎপত্তি হইয়াছে। কিন্তু আগপনে হইয়াছে তাহাই। হন্তালিকিত নিপির সর্ব্বত্তির উৎপত্তি বিশ্বাম দেখা যার যে, লেখকদের ক্লচি অন্থানে ও কালের প্রভাবে খীরে ধীরে নিরিম দেখা আই পরিবর্ত্তনের ফলে বাজনী নিপি ধীরে ধীরে আমাদের বর্ত্তমান বাজনা প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন প্রাদেশিক নিপিতে পরিশৃত হইয়াছে। পরবর্ত্তী তানিক। হইতে তোমরা ব্বিতে পারিবে, কি ভাবে আমাদের বাজনা বিপি সেই মূল ব্রাক্ষী হইতে উৎপন্ন হইয়াছে।

্ ব্রাম্মী লিপির পরিবর্ত্তনের ধারা অফুসারে ইহাকে কডকগুলি শ্রেণীতে বিভক্ত করা হয় , যথা—

১। খুইপুর্বাং ০০ হইতে খুটীয় ৩০০ (নৃনাধিক)
পর্যান্ত সমস্ত ভারতবর্বের নিশিকে মৃদ্য ভ্রোক্রমী
বলা হয়। ইহার পরবর্তী সময়ে উহার দেশন-রীতির
ফুইটি ধারায় বিভক্ত হইয়া পড়ে। এফটি উত্তর
ভারতীয় ও অপরটি দান্দিশাত্য প্রদেশীয়। উত্তরীয়রীতির প্রচার বিদ্যাগিরির উত্তরে ও দান্দিশাত্য
রীতির প্রচার উক্ত গিরির দন্দিশে ছিল।

বাদলা লিপির উৎপত্তির বিচার করিতে হইলে উত্তরীয় লিপির ক্রমবিকাশের বিষয় আলোচনা করিতে হইবে। দান্দিণাত্য লিপির সহিত আমাদের কোনও সহন্ধ নাই। উত্তরীয় লিপিঙালির এইরূপ নাম দেওরা হইরাছে।

২। প্রভাবিশি—ভপ্তবংশীর রাজানের সময় নিধিল উত্তর ভারতে এই লিপির প্রচার হইরাছিল। এইজন্ত ইহার নাম ওপ্রলিপি। ইহার প্রচার পৃষ্টীয় চতুর্ব ও পঞ্চম শতাব্দীতে হইরাছিল। উত্তর ভারতীয় ওপ্রলিপির মধ্যে আবার হুইটি মুখ্য ডেল পাওয়া যায় একটি প্রাচ্য ও আর একটি পাশ্চান্তা। অর্থাৎ এক প্রকারের লেখা ভারতের পূর্বাংশে প্রচলিত ছিল ও আর এক প্রকারের ছিল

পশ্চিমাংশে। এই ছুই প্রকার নেধার মধ্যে 'ল', 'হ', 'হ' ও 'ম' এই অক্ষরগুলিতে ভেল পাওয়া বায়। পঞ্চম শতাকীর কিছু পূর্ব্বে উত্তর ভারতের সর্ব্বএই পশ্চিমে প্রচলিত লেধাই বিশ্বত হইয়া পড়ে ও ভেল ছুইটি লোপ পাইয়া বায়।

০। কুতিশ লিশি—এই অকর ছলির ও বিশেষতঃ খরের মাত্রার আকৃতি কুটিল হওরার ইহাকে কুটিল লিশি বলা হয়। এই সময় হইতে অকরের উপর মাত্রা দেওরার রীতি প্রচলিত হইল। এই লিপির প্রচার বঠ শতালী হইতে নবম শতালী পর্যান্ত ছিল। এই লিপি হইতেই নাগরী ও শারদা লিশির উৎপত্তি হইরাছে। নাগরী লিশি তাহাকেই বলে বাহাকে তোমরা সাধারণতঃ সংস্কৃত লিশি বলিয়া থাক। বাত্তবিক কিন্তু শৃক্ষকাল পর্যান্ত সংস্কৃত পুঁথি ভিন্ন প্রির প্রদেশের লিশিতেই লেখা হইত। এখনও অনেক স্থলে তাহাই হইরা থাকে। দেব নাগরী অকরে সংস্কৃত পুত্তক লেখা বা ছাপার প্রথা আক্রকালকার ব্যাপার।

সপ্তম শতাৰীর মাঝামারি আসিয়। উত্তর ভারতের পূর্ব্ধ ও পশ্চিম অংশের লেখায় আবার ভেদ দেখা বায়। এই সময় হইতে পূর্ব্ধ বিভাগের লিপির ক্রমবিকাশের একটা বিশিষ্ট ধারা পাওয়া যায় এবং এই ধারার জার বিলোপ হয় নাই। এই পূর্ব্বের লেগাই খারে খারে একাদশ ও বাদশ শতাৰীতে বাদলা লিপিতে রূপান্তরিক হইয়া যায়। অতএব বাদলা লিপি নাগরী লিপি হইতে উত্ত্ত হয় নাই—ইহা ক্তমভাবে বিকাশ পাইয়াছে।

বাললা দেশের পালবংশীয় রাজা নারায়ণ পালের ভাগলপুর ভারশাননে যে লেখা পাই, ভাহার কডকঙালি অক্ষরের আধুনিক বাগলা অক্ষরের দহিত কিঞ্চিৎ সামৃত্ত আছে। এই লিপির অক্ষরগুলিকে মূল বাগলা অক্ষরের বাল বাহাইতে পারে। রাজা নারায়ণ পাল প্রায় ৮৫২ খুটাক্ষ হইতে ৯০৭ খুটাক্ষ পর্বাত্ত রাজ্য করিয়াছিলেন। ভাহার পর একাদশ শভাকীতে দেনবংশীর রাজা বিজয় দেনের দেব-পাড়ার লেখায় আধুনিক বাজলা অক্ষরের প্রথম সাক্ষাৎ পাই। যদিও এই লেখাতে ও অনেকগুলি অক্ষর বাগলা অক্ষর হইতে ভিন্ন, তথাপি 'এ খ ঞ জ ম র ল ব' প্রভৃতি অক্ষর আক্ষকালকার বাগলা অক্ষরের মত। তাহার পর রাজা লক্ষণ লেনের

ভর্শণদীঘির লেখায় ও বৈছুদেবের কলোলি নামক অধ্ব আধুনিক বামলা লেখার দ্বপ প্রাপ্ত হয়। দ্বানে প্রাপ্ত লেখায় (মানশ শতাক্ষা) আরও অনেক এই প্রকার নিধিবার রীভিতে ক্রমশং পরিবর্ত্তন

| তা <b>ে</b> শাৰু | কুৰাপ্ | 98  | र्णक् यूकि | সন্তুম<br>শতাব্দী | দ্ধান<br>হাইতে<br>হাদানু<br>নতাকী | ৰব্ৰমান<br>বাঙ্লা |    |
|------------------|--------|-----|------------|-------------------|-----------------------------------|-------------------|----|
| К                | Я      | H   | ·H         | મ                 | अ                                 | অ                 | ٥  |
| X                | Ж      | У   | 赘          | ኝ                 | या मा                             | অ৷                | ર  |
| ·                | 1-1    | :1  | .?         | محمد              | ß                                 | ē                 |    |
|                  |        |     | و:٠        |                   | 19,]                              | झ                 | 8  |
| L                | ٦      | ι   | \$         | ડ                 | र्थ इ                             | ور                | ¢  |
| 1                |        |     | Š          |                   | \$                                | \$                | خ  |
|                  |        |     | H          |                   | BI                                | 4                 | q  |
|                  |        |     | ં ૧        |                   | 23                                | ۵                 | ь  |
| Δ                | D      | Δ   | Δ          | Ø                 | 2 2                               | વ                 | ۵  |
|                  |        |     | ₹          | Ą                 | 3                                 | લે                | 70 |
| 1                | 2      | 3   | 3          |                   | 33                                | હ                 | ىد |
|                  |        |     | 3          | 3                 | 25                                | <b>ĕ</b>          | 75 |
| +                | ŧ      | Ť   | ¥          | <b>₫</b> ŧ ·      | क के                              | ক                 | ડહ |
| L                | 33     | 9 3 | ra         | 29                | લ પ્ર                             | च                 | 78 |
| ^                | n 9    | 7   | л          |                   | IJ                                | গ                 | 50 |

# ++ শিশু-ভারতী

হইতে বাললা লিপির পর্ণবিকাশ এইবার তোমরা তুলনা-মূলক লিপি-পত্ত হইতে হইরাছিল। প্রত্যেক ক্ষকরের ক্রমবিকাশ বৃথিতে চেটা কর।

| অভেশান্ত | द्रयोग  | গুপ্ত | হ্রি যঞ্জি | সপুম<br>শভাব্দী | দুশ্বম<br>হইতে<br>দ্বাদৃশ্ব<br>শতাব্দী | বর্তুমান<br>বাঙ্গা |            |
|----------|---------|-------|------------|-----------------|--|--------------------|------------|
| lu       | Ш       | Ш     | W.         | ^               | च य                                    | ঘ                  | 216        |
|          |         |       | ۲٠         |                 | 5                                      | E                  | 79         |
| d        | 4 &     | ચ     | 4          |                 | च                                      | Б                  | 56         |
| ф        | ф       | Ø     | હ,         |                 |  | ₽,                 | 77         |
| E        | E {     | E     | 3          | Æ               | <i>इ</i> र                             | জ                  | २०         |
| ۲        | ٢       |       | ť          | IJ              | े म                                    | ঝ                  | રડ         |
| h        |         |       | Ą          | 3               | <b>B</b> 16                            | 9                  | રર         |
| (        | ζ       | ζ     | で          | c               | S<br>S<br>S<br>S<br>S                  | <i>ે</i>           | રહ         |
|          | 0       |       | 0          | 0               | ď                                      | 8                  | <b>48</b>  |
| ۲        | ۷.      | ζ     | 3          | بو              | ८ इ                                    | હ                  | २४         |
| ૮        | D       | Ð     | రు         | Z               | ઢ                                      | ប                  | ٦w         |
| I        | ን<br>አን | ક્    | C4º        | <b>Κ</b>        | 73                                     | ৰ                  | <b>ર</b> ૧ |
| 人        | ጎ       | ሳ ለ   | 4          | ኣ               | カ 3<br>つ                               | ত                  | ২৮         |
| •        | 0       | 00    | ଟ          | 18              | ચ તા                                   | થ                  | 45         |
| >        | ڒ       | l     | ય          | <b>ય</b>        | द द                                    | F                  | 90         |

# \*\*\*\*\*\*\* বাকলা লিপির উৎপত্তি

প্রথম পংক্তিতে অশোকের সময়ের একর দেখিতে সময়ের প্রচলিত বর্ণমালা পাইতেছ। তৃতীয় পাইতেছ। দিতীয় পংক্তিতে কুষাণ বংশীয় রাজাদের শেশীতে বাজা সমুদ্র প্রপ্তেব সময়ের এলাহাবাদ

| <b>अटन्नाम्</b> | ক্ষাল | <b>68-9</b> | হরি শুঞ্জি | সপুম<br>শ হাব্দী | দুশ্র<br>হইতে<br>হাদশু<br>শতাব্দী | বর্ত্তমান<br>বাঙ্গা |            |
|-----------------|-------|-------------|------------|------------------|-----------------------------------|---------------------|------------|
| D               | ٥     | 0 0         | q          | 4                | В                                 | ŧ                   | હ          |
|                 | 7     | み           | त्र        | વ                | ন                                 | न                   | છ          |
| L               | u     | Ц           | ٧          | иц               | ঘ ঘ                               | প                   | ود         |
| b               | وا    | ស           | Ž¢.        |                  | દા                                | 邳                   | ૭૭         |
|                 | а     |             | ð          |                  | য                                 | ব                   | 400        |
| ιή              | ರ     | 4           | ক          | <b>₹</b>         | दैकु ङ                            | <b>5</b>            | de         |
| 8.              | 8 8   | וג          | Ŋ          | 7                | घ भ                               | ম                   | ૭૧         |
| 7               | क दर  | cĽi         | ય          | ¥                | य                                 | য                   | ap.        |
| ١               | )     | Ţ           | ₹          | ₹                | 778                               | র                   | 60         |
| J               | Л     | خ           | त          | ଔ                | ह                                 | न                   | 80         |
| ģ               | Δ     | Y           | đ          | Ŋ                | Б                                 | ব                   | ೭೪         |
| ^               | A     | Ą           | Ą          | क्ष              | ন ম                               | эd                  | <b>8</b> ২ |
| Ł               | 口     | Q           | Ħ          | ¥                | ਬ ਬ                               | स                   | 89         |
| と               | ہ     | ц           | ×          | ZJ.              | মব্দম                             | স                   | 88         |
| し               | 2     | S           | ₹(         | <b>₹</b> ₁       | द्ग क्ष                           | হ                   | 8¢         |

+++ \*

ব্ৰন্ধণাত্ৰে গোলিত লিপি হইতে সংগৃহীত বৰ্মালা দেখিতে পাইতেছ।

চতুর্থ শ্রেণীতে যে বর্ণমান। দেখিতে পাইতেছ ভাহার বিষয়ে একটু বিশেষ পরিচয় তোমাদিগকে দেওয়া দরকাব। জাপানে হবিযুদ্ধি নামক বৌদ্ধ-ভিক্ষ্দের মঠে একটি হাতে-লেগা পুঁথি পাওয়া গিয়াছে। পুঁথিগানি ভালপাভায় লেখা। পুঁথি-গানিতে 'প্রজ্ঞাপাবমিতাফদম্পুণ' ও উফিনবিজ্ঞা- নঠে রক্ষিত আছে। তাহাব পূর্বে পূঁথিথানি চান দেশে ছিল এবং তাহারও পূর্বে লোধির্ম নামে এব ভাবতীন ভিক্ত ৫২০ খুটাকে ইহা ভারতবর্ষ হইতে চীন দেশে লইয়া আসে।

পঞ্চম পংক্তিতে আদিত্যসেন নামক মগধ দেশের বাজাব অফসড় নামক স্থানে প্রাপ্ত লেখা ইইতে সপ্তম শতাকীতে পূর্বভারতে প্রচলিত বর্ণমালা দেওকা হইয়াছে। দেখিতে পাইবে, তাহা



यामवर्श्वक प्रतिविक्तम् स्व त क्षेत्र द्विक्त स्व भाग्य स्व स्व त्र त्र त्र त्र त्र त्र स्व व क्षेत्र क्षेत



स्त्र में ब्रह्मियं में मार्थ एता महिल्या प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त में मार्थ के प्राप्त के प्

ধারিণী নামক ছই থানি বৌদ্ধধ্যের গ্রন্থ লিপিবদ্ধ
আছে। বিণ্যাত জার্মান পণ্ডিত মোক্ষমূলর
(Max Muller) এই পুঁথিধানি আবিদ্ধার কবেন।
এক রকম ধরিতে পেলে এই পুঁথিধানি সংস্কৃত
ভাষায় প্রাচীনতম পুঁথি। যদিও ভূক্জপত্রের উপব
লেখা আবও প্রাচীন পুঁথি মধ্যএশিয়ার থাসগর
নামক প্রদেশে ও অফ্টাত্র পাওয়া গিয়াছে।
হরিমুদ্ধিতে প্রাপ্ত পুঁথিধানি ৬০০ পুঠাক ইইতে

হরিয়ু জর বর্ণমালাবই অন্তর্মণ। ষষ্ট শ্রেণীতে দশম হইতে দ্বাদশ শতাকীব কয়েকটি লেখা হইতে অক্ষর সংগ্রহ কবিয়া আধুনিক বাঞ্চলা লিপির বিকাশ দেখান হইয়াছে।

আশা কবি, ভোমবা বেশ দুঝিতে পারিবে যে, কি কবিয়া অশোকেব সমযকার মূল ব্রান্ধী নিপি ধাবে ধাবে বাঙ্গনা লিপিতে প্রিবৃত্তিত হইয়াছে।



### ভারতবর্ষ

পৌরাণিক রাজগণ

€ 7.4

তে মনা বোধ হয় জান
যে, হিন্দুদের এক শ্রেণি
হ ক্ষেত্রি ক্ষেত্র কাজে ক্ষ্রাল আছে, তাহার নাম
প্রণে আহাদের নাম অগ্নি, ক্ষ্রাল স্বন্ধ ক্ষর কাজের ক্ষ্রাল ক্ষর ক্ষর কাজের ক্ষ্রাল ক্ষর কাজের ক্ষর কাজের ক্ষর কাজের কাজের কাজের কাজের ভারতির কাজির, মার্কণ্ডেয় ও ভবিষ্যা। এই সকল পুরাণে চারতির কালিয়া পৃথিবীর সৃষ্টি হইল, ভারত্রয়ে পড়া কোন সময় কে রাজা ছিলেন, দেব লালের পু

বলা হুইরালে : প্রাণ্ডাল : প্রাচী
হুইলেড প্রের্ডিক লে হুইন্দের মধ্যে
মনেক কথা যোগ করিয়া দেওয়া হুইরাছে ।
এইজন্ম কেনে হুই নির্বিয় কনা বড় শক্ত ।
এখানে পুরাতে যে সকল রাজ-বংশের বর্ণনা আছে, নেহুলিন কথা বলিব ।
সকল পুরাণেই রাজাদের একবকম বর্ণনা
পাওয়া যায় না। সময় সময় হাবার রাজাদের জীবনে এত অস্কৃত অস্কৃত ঘটনা
ব্লিত হুইয়াছে যে, সে সকল বিশ্বাস করে
শক্ত । এই সকল কাবণে মনেক এতিহাসিক
পুরাণের রাজাদের অস্তিত্ব বিশ্বাস করেম

না। অক্স পণ্ডিংদেন মডে পুনাৰেন সকল কথা সতা না চইলেও কোনো কথাই

থ্
য নিশাস্যোগ্য নয়, এরপ ভানিবার
কানে। কাবণ নাই। নিষ্ঠাবান্ হিন্দুগণ
অতি শ্রদ্ধান সহিত পুরাণ পাঠ করিয়া
থাকেন। সংস্কৃতে একটি কথা আছে যে,
চাবটি বেদ পড়িয়া :শ্য করিলেও পুরাণ

পুনংগের মতে ব্রহ্মা পৃথিবীর স্প্তিক্তা,
পৃথিবীর সকল বস্তুই রক্ষা হইতে উদ্ভূত।
প্রন্ধা প্রথমে নিজেন মন হইতে কয়েকজন
নানসপুত্র সৃষ্টি কনিলেন, তাঁচাদের মধ্যে
একজনের নাম দক্ষ। দক্ষের কন্সা ছিলেন
অদিতি, অদিতির পুত্র বিবস্থান্ (স্থা),
নিরস্থানের পুত্র বৈবস্থাত মন্তু।

পড়। না থাকিলে জ্ঞান সম্পূর্ণ হয় না।

এই মনুই পৃথির প্রথম মনুষ্য সমারা সকলেট মনুব বংশধর বলিয়। সামাদের নাম মনুষ্য বা মানব। মনুব অনেক পুত্র-ক্যা: ছিল, তাহাদের মধ্যে ইক্ষাকু ও ইলা প্রধান।

ইস্কাকু বংশ–মন্থ প্রের পুত ছিলেন বলিয়া এই বংশের সন্থানাম প্রা-বংশ। কোসল (বর্তমান অঃউধ) দেশে

### শিশু-ভারতী

ইক্ষাকুর রাজস্ব ছিল এবং বাজধানী ছিল অযোধ্যা। তাঁহার বংশে অনেক বড় বড় রাজা জন্মিয়াছিলেন। ইক্ষাকুব সাত-আট পুরুষ পরে শ্রাবস্ত নামে এক রাজা ছিলেন, ইনি শ্রাবস্তী নামে এক মহানগরী স্থাপিত কবেন। ধীরে ধীরে শ্রেস্তা থুব উন্নতিলাভ করিল, এমন কি, অনেক সময় কোসলেব রাজধানীরপো বাবসত হইত। শ্রাবস্তীব ধ্বংসাধশেষ আছকাল আউধে গৌড়া জেলার সাহেত-মাহেত নামক স্থানে দেখিতে পাত্রা যায়।



কৌশাখাতে প্রাপ্ত বিষ্ণুগৃত্তি

শাবস্থের বছদিন পরে ইক্ষ্বাকুবংশে সগর
নামে এক রাজা জন্মগ্রহণ করেন। কথিত
আছে যে, সগরের পুত্রগণ এক ঋষির শাপে
ভন্ম হইলে ভগারিথ নামে সগরের এক বংশধর ভাঁহাদের উদ্ধারের জন্ম স্থার ইতে
গঙ্গানদীকে পৃথিবীতে আনয়ন করেন।
ভগীরথের কয়েক পুরুষ পরে দিলীপ, রঘ্,
অজ, দশর্থ, রাম ও কুশ-লব ক্রেমে ক্রমে
রাজা হন। রামায়ণে এই সকল রাজার
কথা নিশ্চয়ই প্ডিয়াছ। রামায়ণের

ঘটনার বছদিন পরে মহাভারতের কুরু-পাণ্ডব-যুদ্ধ হয়। এই সময় ইক্ষাকুবংশের রাজা ছিলেন বুহত্ব। তিনি যুদ্ধে সর্জ্ঞানের পুত্র অভিমন্থ্য ভার। নিহত হন।

ভগবান্ বৃদ্ধ যথ্ন ধর্মপ্রচার করিতে-ছিলেন, তথন কোসলেব রাজ। ছিলেন প্রসেনভিৎ। আবস্তীনগর ইহার রাজধানী ছিল। ইচার কথা পরে আরও বলিব।

শৌলালালং শা—পুর্বেই বলিয়াছি,
মনুব এক কলা ছিলেন, ইলা। ত্রন্ধার পৌত্র সে:মের (চন্দ্র) সচিত ইচার বিবাচ

> হয় এবং পুরুরবা নামে এক পুত্র হয়। চন্দ্র এই বংশের পূর্বরপুরুষ বলিয়া ইছার নাম চন্দ্রংশ। পুকরণার বাজধানী ছিল श्राप्तिकानभूत । গঙ্গার গীরে এ**লা**হাবাদের অপর পারে ঝুসি নামক স্থানে প্রতিষ্ঠানের ধ্বংসাবশেষ দেখিতে পাওয়া যায়। श्रीरत शीरत চন্দ্ৰবংশ মতার পরাক্রা<del>ড়</del> হইয়া উঠে এবং ইচার শাখা উত্তর-ভারতেব প্রায় সক্তি ছড়াইয়া পড়ে।

পুররবার পাচ পুতা, তাহার মধ্যে প্রধানছিলেন আয়ু:। আয়ুর পাঁচটি প্রপৌত্র
ছিলেন, যহ, তুর্বস্থ, ক্রন্থা, অন্থ ও
পুরু। এই পাঁচজনই প্রতাপশালী রাজা
ছিলেন এবং পৃথক পৃথক রাজবংশ স্থাপন
করেন। তবে ইহাদের মধ্যে প্রধান ছিলেন
পুরু। পুরুর বংশে বহু রাজা জন্মপ্রহণ
করেন, তাহার মধ্যে একজনের নাম কুরু।
কুরুর বংশধরগণ কৌরব নামে খাতে, ইহাদের রাজধানী ছিল হস্তিনাপুর। এই

#### আমাদের দেশ–ভারতবর্ষ

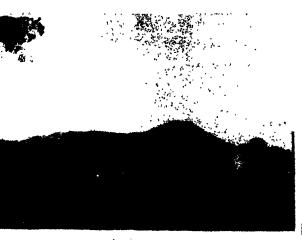
বংশে শাস্তর নামে এক বাজ। চন। ইহাব ছই বানী, গঙ্গা ও সভাবতী গঙ্গার পুত্রেব নাম ভীম, ইনি আজীবন অবিবাহিত ছিলেন। সেইজক্স ইহাব কলিষ্ঠ লাভা সভাবতীব পুত্র বিচিত্রবীয়া সিংহাসন লাভ কবেন। বিচিত্রবীয়োর ছই পুত্র, ধৃতরাষ্ট্র ও পাড়। ধৃতবাষ্ট্রের ছগোধন, ছংশাসন

প্রভুতি একশভ ছি'লেন, ভিনি বলিয়া পাঞ্ রাজা পাইলেন। পাওর পাঁচ পুত্ৰ, যৃধিষ্ঠিব, ভীম, ञक्त्र, नकुल ९ भग्राहत। *ভোটবেল*। उद्देश इंड পুত্রাষ্ট্রের পুত্রগণ পাণ্য পুত্রগণের নধ্যে ঝগড়া হয়। পরে ছই **ज**्लात ম'্ধা বাজা লইয়া ভীষণ বিরো**ধ** উপস্থিত হয়। অবশেষে এমন চইয়। माँ । य (य. যুদ্ধ বাহীত বিবাদের সমাধান অসম্ভব চইয়া

উঠে। পঞ্চাবে কুরুক্ষেত্র নামক স্থানে ঘোৰতৰ যুদ্ধ হয় তাহার ফলে ত্রোধনেৰ দল ধ্বংস হইয়া যায়। মহাভাৰত নামক মহাকাব্যে এই ঘটনাৰ বিস্তৃত বিবরণ পাওয়া যায়।

কুক্দেত্র যুদ্ধের পর যুধিন্তির অর্জ্নের পোত্র পবিক্ষিংকে হস্তিনাপুরের সিংহাসন দিয়া ভাইদের সঙ্গে লইয়া হিমালয়ে প্রস্থান করেন। পুরাণের মতে এই সময় পৃথিবীতে কলিমৃগ আবস্ত হয়। পরিক্ষিতেব চার-পাঁচ পুরুষ পরে নিমিচক্র বা নিচক্র নামে একজন রাজা হন, ইহার সময় রাজধানী হস্তিনাপুর গঙ্গায় ভাসিয়া যায়। সেইজন্য তিনি ও ভাহার বংশধ্রেবা যমুনার তীরে কৌশাস্বী নামক নগরে বাস করিতে আরম্ভ করেন। কৌশাস্বীর বর্তমান নাম কোসাম, ইচা এলাহাবাদ হইতে প্রায় ত্রিশ মাইল দুরে অবস্থিত। ইহার স্পানেক দিন পাবে এই বংশে উদয়ন নামে এক রাজা হন, ইনি বৃদ্ধের সময়কার লোক।

অ**ভাতা রাজবংশ**—মন্তর পুত্র



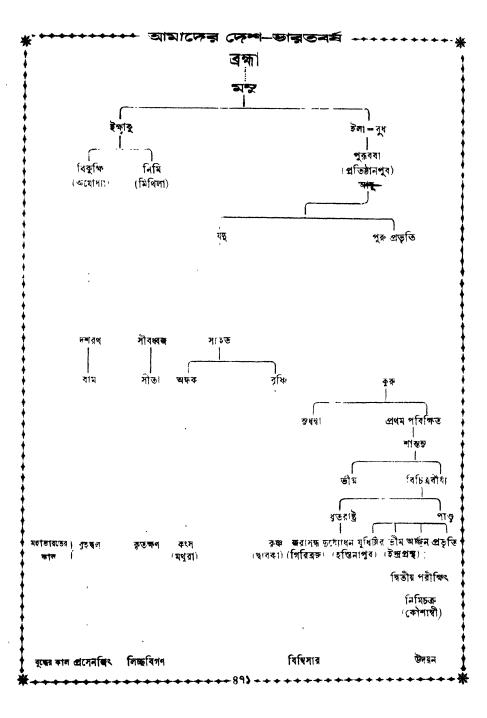
কৌশাখীৰ বৰ্তমান দৃষ্ঠ

সূর্য্যবংশ 🖁 স্থাপিত ইক্ষাকু অযোধ্যায় করেন। তাঁহার নিমি-বিদেহ নামে এক পুত্র হন, ইনি মিথিলার রাজবংশ প্রতিষ্ঠা এই বংশের রাজগণ 'জনক' নামে খ্যাত। ইহারা ধান্মিক ও বিছোৎসাহী বলিয়া প্রসিদ্ধ ছিলেন। রাজ-ধানীতে প্রায়ই বড় বড় সভা হইত। সেখানে নানা দেশ ইইতে বিদ্বান্গণ আসিয়া দৰ্শন-সম্বন্ধে চর্চ্চ। করিছেন। রামায়ণের সময় এই বংশের রাজ। ছিলেন, সীরধ্বজ। তাঁহার ক্যা দীতার সহিত রামেব বিবাহ হয়। যথন মহাভারতের যুদ্ধ হয়, তথন মিথিলায় কৃতি বা কৃতক্ষণ রাজা ছিলেন। ইহার পর লিচ্ছবি নামে এক জাতি মিথিলা জয়

চন্দ্রবংশের অনেকগুলি শাখ। ছিল, তাহার মধ্যে একটি যাদব নামে খাতে। এই বংশের প্রতিষ্ঠাত। ছিলেন পুরুর ভাই য়য়। বহু পুরুষ পরে এই বংশে সাহত নামে এক বাজা হন। সাহতেব কয়েকটি পুত্র ছিল, তাহার মধ্যে প্রধান সম্বক ও অন্ধকের বংশধব ছিলেন কংস, মথুবায় ইিচাৰ বাজধানী ছিল। বুফির জীকু,ফাৰ জন্ম হয়। কংস কুফোৰ পিত। বস্থুদেব ও মাতা দেবকীর সহিত অশেষ শত্রতা কবেন ও কৃষ্ণকে হত্যা করিবার চেষ্টা কৰেন, কিন্তু কিছুতেই কৃতকা্য্য হইতে পাবেন নটি। অবশেষে কুফা, বড হইয়। কংসকে মাবিয়। ফেলেন। গুজুরাতে দারক। ব। কৃশস্থলী কুষ্ণেব রাজধানী ছিল। কুক্ৰেত্ৰ যুদ্ধে কৃষ্ণ পাগুৰদেৰ পক্ষ লইয়া ঠাহাদের সর্বপ্রকার সাহ'্যা করেন। ঠাহারই উপদেশ ও পরামর্শের ফলে পাওবের। যুদ্ধে জয়ী হন। যুদ্ধের কিছুদিন পরে এক ঋষির প্রতি স্বিনয়ের ফলে যাদবগণের ধ্বংস হয়। এই ঘটনার আল্ল-কাল পরেই কৃষ্ণ দেহত্যাগ করেন। কোনো কোনো পুনাণের মতে এই দিন হইতে পৃথিবীতে কলিযুগের আবির্ভাব হয়।

পৌবব বংশের রাজা কুরুর নাম আগেই কবিয়াছি। ইহার বংশের জরাসদ্ধ নামে এক প্রবল পরাক্রান্ত রাজা জন্মগ্রহণ করেন। নগধ্দেশে (বর্তমান বিহার), পাটনা ইউতে যাট মাইল দূরে রাজ্গির নামক স্থানে ইহার রাজধানী ছিল। রাজগিরের প্রাচীন নাম রাজগৃহ বা গিরিব্রছ। ইনি চারিদিকের রাজগণকে পরাজিত কবিয়া বন্দী করিয়া রাখেন। কুরুক্ষেত্র যুদ্ধেব কয়েক বংসব পুর্বের্ক ক্ষের পরামর্শে ভীম কৌশলে ইহাকে নিহত করেন ও বন্দী বাজগণকে মুক্ত কবিয়া দেন। এই ঘটনার বহুশত বংসর পরে বৃদ্ধের জীবিত কালে জবাসন্ধান্দের রাজ। নিহত হন এবং বিশ্বিসার মগ্ধের রাজ। হন। ইনি এবং ইহার পুত্র হাজতশক্র ঘুইজনেই খুব ক্ষমতাশালী রাজা ছিলেন।

পুরাণে আরও অনেক রাজা ও রাজবংশেব বিবৰণ আছে ৷ এই সকল বিবৰণ হইতে সতা ইতিহাস তৈঘানী কৰা সহজ বাপোৰ ন্য। যে সময় উত্ব-ভারতে বন্ধ ও মহাবীৰ ধশ্মপ্রচাব কবিছে ভিলেন, সেই সময় হইতেই ভারতব্যের স্থুসংশ্লিষ্ট ইভিচাস পাওয়া যায়। এই সময় উত্তৰ-ভাৰতে যোলটি জনপদ বা দেশ ছিল, কিন্তু তাহার মধো প্রধান ছিল চারটি—মগধ (বাজধানী গিরিব্রজ বা বাজগৃহ), কে:সল ( বাজধানী আবস্তী ও अत्याधाः), वरम ( वाक्रधानी कोमाश्री), ও অবস্থি (বাজধানী উজ্জায়িনী)। চারটি দেশে চারিজন মহাপর।ক্রাস্ত বাজা ছিলেন। মগধে বিশ্বিসার, কোদলে ইক্ষুকুবংশের প্রদেনজিৎ, বংদে পাশুবদের বংশধর উদয়ন ও অবস্থিতে মহাসেন। মহাসেন সকলেরই বৃদ্ধের জীবনের সহিত সংস্রব ইহাদের প্রস্প্র ছিল। **मश्**क বলিব।





# ধ্যানে ও ধর্মে

গার্গী

্মানৰ স্প্ৰীয় সেই আদি যুগ হইতে আজ পথাই পৃথিবীৰ ইতিহাসের পৃষ্ঠান দেখিতে পাই, প্ৰায় প্ৰত্যেক দেশে প্ৰত্যেক জাতির মধোই নাবী বিভিন্ন ক্ষেত্ৰে পুক্ষেব সমক্ষ ইট্যা কৃতি হ প্ৰদৰ্শন করিয়াছে। এখানে একে একে যুগে যুগে যে সব কুতিমহিলালেব জন্মে জগতের ইতিহাসেব পৃষ্ঠা নানা বিষয়ে উজ্জাল ইইয়া বহিয়াছে তাঁহাদের কথা বলা ইইবে। ব

সে অনেককাল আগেকার কথা। কিন্তু সেই
বল্প পুরাতন দিনেও আম'দেব ভারতবর্ষে এমন
অনেক মহিলা জ্ঞানে, বিজ্ঞানে, দর্শনে ও ধর্মে
এত বড় হইয়া উঠিয়াছিলেন যে, তাহাদের নাম
আজ্ঞ কেহ ভূলিতে পাবে নাই। এইবপ একজন
বিহুণা মহিলার নাম ছিল গাগী।

মিথিলাব বাজা ছিলেন জনক। তিনি একবাব একটি সুহৎ যজেব আয়োজন কবিলেন। কুরুও পাঞাল দেশ হইতে যত বিখ্যাত আন্ধণপণ্ডিত, মূনি-ঋষি দেখানে উপস্থিত। জনকবাজা এক সহত্র গরুব মাথায় সোনার ভার চাপাইযা রাখিয়া ঘোষণা করিলেন, "সভায় উপস্থিত আন্ধণগণের মধ্যে যিনি অন্ধবিজ্ঞায় সর্বাপেকা স্থপ্তিত, এই স্থপভার ও হাজাব গাভী তাঁহাকেই দান করা ইইবে। যিনি নিজেকে শ্রেষ্ঠ অন্ধ্যন্ত বিশাস করেন,

সভার যত জ্ঞানী, গুণা সকলে ইতস্ততঃই করিতে লাগিলেন, নি.জকে জ্ঞানিড্রেষ্ঠ বলিয়া ঘোষণা করিবার মত সাহস কাহারও হইল না। তথন মহযি যাক্ষবদ্ধা অগ্রসর হইয়া বলিলেন, ''এ দান আমিই লইব।''

জন্তা ল পণ্ডিতপণ জপ্রতিত হইয়া প্ডিলেন, যাজবন্ধাকে সর্বংশ্রন্ধ বলিয়া নিবিন্ধি:বে মানিযা লইতে ঝাজি ংইলেন না। ইংহার ২থার্থ যোগাত। আছে কি না, তাহা পরীক্ষা করিতে সকলে উন্ধাত হইলেন। তর্ক ও বিচাব আরম্ভ ংইল।

বচকু মুনির এক কলা ছিলেন, তাব নাম পাগী। জালোক বলিয়া তিনি থাশিকিত, মজানক্ষ ইইয়া দবেব কোণে বসিয়া থাকিতেন না। তথনকার যুগে পুক্ষের যে শ্রেষ্ঠিবিছা মজন কবিবেন, সেই বিছাকে চরমভাবে আছে কবিবাব যত্ত্ব তিনি করিয়াছিলেন। অক্ষন্তানী দাশনিকদেব মত তিনিও ছিলেন অক্ষাদিনী। জনকেব এই যুক্তসভাষ তিনি মাজ মসংখ্য প্রিভ্তমঞ্জীর সঙ্গে সম্ন মধালোহ সমবেত ইইয়াছেন।

গাজবন্ধ। নিজেকে খেষ্ঠ জানী থলিয়া প্রচাব করিলে গার্গী এবার ভর্কগুদ্ধে নামিলেন। তিনি নিজের বিচাবশক্তি দিগা ভাল করিয়া মহযিকে পরীক্ষা করিয়া লইবেন—-ঠাহাব জান কতথানি। গার্গী যাজ্ঞবন্ধাকে একটি প্রশ্ন জিজ্ঞানা করিলেন। যাজ্ঞবন্ধা উত্তর দিলেন। কিন্তু তাহাতে মীমাংসা হইল না; সেই উত্তরটুকু আশ্রম করিয়া আবার

### · + বসং অমিক্রা·

প্রশ্ন করিলেন, আবার বাক্সবন্ধা উত্তর দিলেন। প্রশ্নের পর প্রশ্ন, আর উত্তব্বের পর উত্তব চলিয়াছে। কিন্তু যাক্সবন্ধা গাগীকে সম্ভই করিতে পাবিতেচেন না। অবশেষে বলিলেন, ''গাগী। তুমি অতিরিক্ত প্রশ্ন করিও না।" গাগী থামিলেন।

সভাস্থ মুনিগণ একে একে থাজ্ঞবন্ধাকে ভর্কে আহ্বান করিতে লাগিলেন। যাজ্ঞবন্ধা কিছুতেই হাব মানেন না।

গাগী তথন আবার উঠিলেন। বলিলেন, "যাক্সবদ্ধা বীরপুত্রের। ধছতে শর্মোক্ষনা কবিয়া শক্রুকে নিপাত কবেন, আমি ছুইটি প্রশ্ন বাণে তোমাকে আক্রমণ করিলাম। যদি পার, উত্তব দাও। সভায় সমবেত আন্ধ্রণণ। যদি যাক্তব্যং আমাব এই প্রশ্ন ছুইটিব উপযুক্ত উত্তর আমাকে দিতে পারেন, তবেই আপনাবা জানিবেন, ইংকে কেঃ বিচাবে পরাক্ত করিতে পাবিবেন না।"

যাজ্ঞবন্ধা মহাপণ্ডিত, তিনি উত্তর আবন্ধ করিলেন। সভার সোক স্তর্জ হইয়া শুনিলেন।

নিংসংশয়ভাবে ব্যাখ্যা করিয়া যাজ্ঞবদ্ধা যথন থামিলেন, গার্গী মনে ভাবিলেন, 'যোগ্য বটে।' নিজের অসামায় জ্ঞান ও বিচার-প্রতিভার প্রতি গার্গীর বিশ্বাস এত বেশী ছিল যে, তিনি বুঝিতে পারিলেন, এই বিচারণভিত্র সম্মুথে যিনি পরাস্ত না হইয়া দাড়াইতে পাবিয়াছেন, তিনি বাস্তবিক প্রশংসারই উপযুক্ত। গার্গী এবার সম্ভুট হইলেন। বলিলেন, ''পশ্তিতগণ! ইনি সত্যা সভ্যাই শ্রেষ্ঠ বন্ধজ্ঞ, আপনারা মহযিকে নমকাব করুন।''

#### সংঘমিত্রা

সমাট্ অশোকের জগংজোডা খ্যাতি। খুটেব জন্মেরও প্রায় তিন শত বংসব আগে তিনি জন্মগ্রহণ কবিয়াছিলেন, ধর্মে ও প্রজাপালনে তাহার মত রাজ্য ভারতবর্ষে কমই জ্বিয়াছেন। অশোক যৌবনে উজ্জ্যিনীর শাসনকর্ষা ছিলেন।

অশোক যথন উজ্জানিতে, তথন এক শ্রেষ্টার কন্তার সঙ্গে তাঁহার বিবাহ হইল। তাঁহার নাম দেবী। এই দেবীর গর্ভে উজ্জানিতিত অশোকের একটি পুত্র হইল, নাম রাধিলেন মহেন্দ্র। তারপরে জারিল একটি কন্তা, নাম সংঘ্যিত্রা। মহেক্স ও সংঘমিত্রা ছুই ভাইবোনে বড় ভাব।
দিনে দিনে ভাহাদের স্বভাব যেন স্থন্দর হইয়া
ফটিয়া উঠিতে লাগিল।

বিদ্দৃশারের মৃত্যুব পরে অশোক যথন রাজধানীতে
সমাট্ হইয়া বদিলেন, তাহার কিছুদিন পরেই
হঠাং তাহার জীবনের ধাবার পরিবর্তন আরম্ভ
হইল। তথন বৌদ্ধর্ম ভারতববে প্রবল হইয়া
দেখা দিয়াছে, অপোকের মন সেই দিকে মুকিয়া
পভিল। অবশেষে একদিন বৌদ্ধর্মাচার্যা তাহাকে
বৌদ্ধর্মে দীকা দান করিলেন।

শশোক সৃষ্টে ইইলেও ধর্মকার্য্যের **জন্মই**নিজের সমস্ত অর্থ ও সামর্থ্য নিজাগ করিলেন।
এমন কি, তিনি ইচাও মনে করিতেন যে, তাঁহার
পুত্রকভাদের মধ্যে যদি কেহ বৌদ্ধার্মের জন্ম
নিজেকে উৎসর্গ করে, তবে তাঁহার কুল ধন্ম
হাইবে।

একদিন তিনি জিজাস। করিলেন, "মহেজ্ঞ, সংঘমিত্রা, তোমবা কি ভগবান বৃদ্ধের এই পবিত্র ধর্মকে আশ্রয় করিতে ইচ্ছা কর ?"

তথন সমস্ত উত্তর ভারত বৃদ্ধের "অহিংসা পরমো
ধর্ম:" মন্ত্রে মাতিয়া উঠিয়াছে। মহেন্দ্র ও সংঘমিত্রার
তরুণ প্রাণেও যেন নৃতন প্রেরণা নাচিতেছে।
বাল্যকাল হইতেই ধর্মের পিপাসায় তাঁহাদের প্রাণ
উন্মুথ, ধর্মের জন্ম জীবন উৎসর্গ করিতে পারিলে
তাহারা কভার্থ। ভগবান বৃদ্ধের চরণে শরণ লইবার
কল্প তাঁহাদের ভারত-সম্লাট্ পিতা আজ আজ্বান
করিতেছেন, তাহারা কি অসম্মত হইতে পারেন ?
ইহাব চেয়ে বড় স্থধ, বড় সৌভাগ্য আর কিছুই
নাই।

ত্ই ভাইবোন তৎকণাৎ আগ্রহের সঙ্গে বীকার কবিলেন। মহেক্র হইলেন ভিক্স, সংঘ্যিত্রা ভিক্ষণী।

ভিক্-ভিক্ণীর জীবনপথ বড় কঠোর। সারা-জীবন মৈত্রী, করুণা, মুদিত, অন্তভ ও উপেক্ষার ভাবনায় এবং সমন্ত জীবেব কল্যাপকার্ব্যে নিরন্ত থাকিতে হয়।

মৈত্রীব অর্থ-দেৰতা, মান্ত্র ও পশু, শত্রু ও মিত্র, সকল জীবের কল্যাণ কামনা করা।

कक्रगात व्यर्थ-- इःशीत इःस्थ वाषा शास्त्रा।

\*

মুদিত অর্থ—স্থী জনের স্থাধে নিজে আনন্দিত ২৬য়া।

ষ্ণ ভাষ্ট সৰ্থ-এই পৃথিবী ও মান্থবের জীবনকে তুচ্চ ও ক্ষশস্থায়া বলিয়া মনে করা।

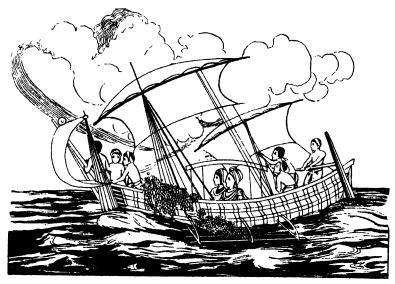
উপেক্ষার অর্থ —সমন্ধ জীবকে ও স্কল অবস্থাকেই সমান জ্ঞান করা।

সংধ্যিতা সম্ভাট্-কতা হইয়াও এক মৃহুর্তে সম্ভ সম্পদ্ দূরে ঠেলিয়। ফেলিয়। এই কঠোর ধর্মসাধ্যার পথ বাছিয়া লইলেন। তাহার বয়স তথন মাত্র আঠারো, মহেক্রেব বিশ।

কয়েক বৎসব পরে মহেক্র বৌদ্ধশব্ম বিস্তারের জন্ম সিংহল দ্বীপে চলিয়া গেলেন। তাঁহার মধে ভিক্ৰীর প্রয়োজন। হতরাং আমি ভারতবর্ষ হইতে উপযুক্ত কোনও ভিক্ৰীকে সিংহলে আসিবার জভা সংবাদ দিতেছি। তিনিই আসিয়া রাণী ও স্বীদের প্রব্রজ্যা দিবেন।"

মহেন্দ্র অশোকের কাছে পত্র লিখিলেন, "সংঘমিত্রাকে সিংহলে প্রেরণ করুন।"

পত্ৰ পাইয়া অশোকের মনে এক সঙ্গে হ'ব ও বিষাদ আসিয়া দেখা দিল। কল্লা ধশ্মকাৰ্য্যে যাইতেছে, ইহা তো স্থাধের কথাই; কিন্তু তাহাকে যে ছাডিয়া থাকিতে হইবে, ইহাতে মনে বড বাথা লাগিল। তিনি সংঘমিত্রাকে ডাকিয়া বলিলেন, "বংদে, তোমাকে না দেখিয়া আমি কেমন কবিধা



মহেন্দ্র ও সংঘমিত্র। বোধিবুক্ষের শাখা লইয়া সিংহলে যাইভেছেন

ন্তন ধর্মের অমৃত্যয়ী বাণী শুনিয়া সিংহলরাজ তিয়া মুগ্ধ চইলেন। বৌদ্ধর্মের নৃতন প্রেরণায় দেশময় সাড়া পড়িয়া গেল। দলে দলে নরনাবী মহেক্রের নিকট ইইতে দীক্ষা ও ধর্মোপদেশ লইতে মাসিল। সিংহলের রাণী অফলাও পাচশত স্থী লইয়। মহেক্রেব নিকট প্রক্রা গ্রহণ করিতে মাসিলেন। মহেক্র রাজাকে বলিলেন, মহিলাদের প্রক্রা। দিবাব অধিকার তো ভিক্কর নাই, সেজ্ফ

থাকিব / মহেন্দ্রকে তো বিদায় দিয়াছি, এখন তোমাকেও বিদায় দিতে হইলে সে ছ:থ আমি কি কারয়া সন্থ করি, বল /"

সংঘমিতা বলিলেন, "মহাবাজ, লাত। মহেক্রেব আজ্ঞা কি আমি অমাত করিতে পাবি ? ধর্মলাভ করিবাব অভ যে, শত শত নাবী আমার জভ্ত প্রতীকা করিয়া আছে। আমাকে তো যাইতেই হইবে!" \*-

সংঘ্যিত্রা প্রস্তুত হইলেন। জগতের বুক্
ধর্মের প্রতিষ্ঠা করিবার জন্ত এবার তাঁহার ভাক
আসিরাছে। এই ব্রতে নিজেকে একেবারে
বিলাইরা দিয়া তাঁহার জীবন ধক্ত হউক। সিংহলবাসীকে নৃতন ধর্ম বিলাইবার জন্ত ত্রিলা বংসরের
রাজকল্যা এগারজন ভিক্ষণী সজে লইয়া বোধিক্রেমের একটি শাখা সঙ্গে করিরা মাঘমাসের
ভক্না প্রতিপদে ভারভবর্ষের সীমা ছাড়িয়া সমূত্রে
ভরী ভাসাইলেন। পিতা, মাতা, পরিবার,
বজন, স্থদেশ, ত্যাগ করিয়া যাইতে তাঁহার বুকে
বাজিল না। ধর্ম প্রচারের জন্ত বিদেশ-বাত্রায় ভারতবর্ষের পক্ষে গুরু কেন, পৃথিবীর পক্ষেণ্ড বোধ হয়
এই প্রথম মহিলা।

সংঘ্যিত্র। সিংহলে পৌছিলে রাজা, রাণী ও সমন্ত সিংহলবাসী তাহাকে প্রজাভরে অভিনন্ধিত করিলেন। রাণী অঞ্লাও স্থীগণ তাহার নিকট চক্ততে প্রস্তুজ্ঞালাভ করিলাধক্ত ইইলেন।

ভিক্ষী সম্প্রদায় গড়িয়। উঠিল। তাঁহাদের
আশ্রম "উপাদিকাবিহারে" সংঘমিতা বাদ করিতে
আরম্ভ করিলেন। তিনি দেখানে বারোটি
মঠগৃহ নির্মাণ করাইলেন। "উপাদিকাবিহারে"
লোক আর ধরে না। তাঁহাকে শ্রহা ভিক্তি
জানাইবার জন্ম অবিশ্রাম নরনারীর যাতায়াত!
সংঘমিতা দেখিলেন, তাঁহার আধ্যাত্মিক সাধনার
পথে ইচা যেন ব্যাঘাত ঘটাইতেছে। একটি
নিরাল। ভজনাশ্রমের প্রয়োজন।

রাজা তাঁহার অভিপ্রায় জানিতে পারিয়া দুরে এক কদম বনের মধ্যে একটি আশ্রম প্রতিষ্ঠা করিয়া দিলেন। তাহার নাম "হথল্হক-বিহার।"

সংঘ্যিত্র। আর দেশে ফিরিলেন না। তাঁহার জীবনের বাকী দিনগুলি ধর্মসাধনা করিয়া ও অক্সকে ধর্মসাধনের পথ দেখাইয়া অতিবাহিত হইল। এইরপে উনবাট বংসর ব্য়নে সিংহলের জ্বাতে হখল্ছক বিহারে তাঁহার প্রাম্ম জীবনখানি নির্বাণ লাভ করিল। অনেকের মতে মহেক্স ও সংঘ্যিত্রা একস্লেই সিংহল গমন করেন।

### উভয়-ভারতী

বৌদধর্ম ভারতবর্ষে উত্তরোত্তর প্রবল হইয়া চলিয়াছে, বেদ ও উপনিষদের মধ্য মাছ্য ভূলিয়া

ষাইতে বদিয়াছে, এমনই সময়ে খুঁহীয় অইম শতালীতে দান্দিণাতো শহ্বনাচার্য্যের আবিভাব হইল। তিনি এক অভুত শক্তি লইয়া জ্বিয়াছিলেন; তরুপবয়সেই তাহার জ্বনাধ পাণ্ডিতা দেখা দিল। প্রচলিত ধর্মমতের উপর তিনি আপনার নৃত্য মতবাদকে এমনভাবে প্রতিষ্ঠা করিতে আরম্ভ করিলেন যে, কেহই তাহাকে বাধা দিতে পারে না। ভারতবর্ষের হেখানে যত মহাপণ্ডিত ছিলেন, সকলকে একে একে পরাজ্বিত করিয়া তিনি অছৈতবাদ প্রচার করিতে লাগিলেন। এই দিয়িজ্বা সন্থালীর কাছে সমস্ভ ভারতের স্থাজ্বন মাধা নোয়াইলেন।

কুমারিল ভট্ট নামে আর এক পণ্ডিত ছিলেন।
মৃত্যুকালে তিনি শহরকে বলিয়া গেলেন, "আপনি
বদি মাহিমতীপুরীর মগুনমিপ্রকে বিচাবে পবাত্ত করিতে পারেন, তাহা হইলেই সমন্ত ভাবতে আপনি অদ্বিতীয় জানী বলিয়া প্রতিষ্ঠালাভ কবিতে পারিবেন, মাপনাব অদ্বৈতমতকে সকলে মানিয়া লইবে।"

দাব্দিণাতো নগদানদী কুলুকুলু বহিন। থাইতেছে—
তাহারই তীরে মাহিগ্নতীনগরী। এখন তাহার
নাম হইরাছে মহেশর। সেইখানে পণ্ডিত গৃহস্থ
মণ্ডনমিশ্র বাস করিতেন। তাহার নামাহুসারে
সেই বাসস্থান আব্দুও মণ্ডলেশ্বর বলিয়। পরিচিত।
শব্বরাচার্য্য সেখানে আসিয়া উপস্থিত—মণ্ডনমিশ্রের
সব্দে দর্শনশাস্তের বিচার করিবেন।

মণ্ডনমিশ্র তাহাকে অভ্যর্থনা করিয়া ঘরে লইয়া গোলেন। কথা হইল, এই বিচারে যিনি পরাত্ত হইবেন তিনি জ্বারি শিয়ার গ্রহণ করিবেন। শক্রাচাধ্য জ্বয়লাভ করিলে মণ্ডনমিশ্র ঠাহার শিয় হইয়া সন্মাণী হইবেন, আর মণ্ডন জ্বী হইলে শহর হইবেন গ্রহী।

কথা ঠিক হইল। কিছ জয়পরাজ্য বিচার করিবেন কে, কাহার এমন ফুর্জ্ম পাণ্ডিডা, হিনি শহরাচার্য ও মওনমিস্রের মন্ত জগ্রিখাতে ফুই মনীবীর তর্কের গুণদোব বিচার করিতে সাহস করেন ধ

মওন্মিশ্রের বে পত্নী, তাঁহার নাম উভয়-ভারতী। গৃহত্তের বধু হইরা সমত সংসারের কাবে ব্যাপ্ত থাকিরাও তিনি অসামান্ত বিত্রী ছিলেন। বেদ, ইভিহাস, দর্শন, পুরাণ, সমস্থ বিষ্ণায় তাঁহার পাণ্ডিন্য এত অধিক যে, লোকের ধারণা ছিল, ডিনি স্বঃং দেবী সরস্বতী। নহিলে এত জ্ঞান কি মাস্থ্যে সম্ভব ? শহর-মণ্ডনমিশ্রের বিচারের সংবাদ প্রচারিত হুইলে পণ্ডিন্ডগণ বলিলেন, "উজর-ভারতীই এই বিচারে মধ্যস্থ হইবাব উপযুক্ত।"

উভয়-ভারতী সভায় উপস্থিত হইলেন। বিচাব আরম্ভ হইল। পণ্ডিতমগুলী সভায় আসীন হইয়া একাক্তমনে গুনিতেচেন।

আনেক দিন ধরিয়া তর্ক চিনিন। তুই পক্ষই স্থান তেজের সাথে বিচার চালাইতেছেন -হাব মানিবাব পাত্র কেইই নন্। কিছু অবশেষে একদিন তর্ক সাথ হইল। উভয়-ভাবতী ব্রিলেন, মগুনমিপ্রেই পরাজ্ম ইইরাছেন। স্থামীর পরাজ্মন্থে ভাবতী মনে মনে ক্ষুল্ল ইইলেন বটে, কিছু তিনি বখন নিরপেক বিচারপতির আগনে ক্ষান লইয়াছেন, তখন গ্রায়েব অমর্যানা করিতে তো পাবেন না। স্পত্রাহ ঘোষণা করিলেন, "তর্কে মগুনমিপ্রেবই পরাজ্ম ইরাছে।" সভাষ্ধ্য শহরাচায়েব জ্মুধ্বনি উঠিন।

উভৰ-ভারতী তথন অগ্রস্ব হইয়া শ্বংকে ৰিলনেন, "আপনি আমার স্বামীকে পরাত্ত করিয়া-হেন সতা। কিন্তু এখনই তিনি আপনার শিক্স র লইয়া সন্মাসী হইতে পারেন না, কাবণ, আমি এখনও এখানে বর্ত্তমান। শাস্ত্রে বলে, স্বামীব আর্ত্তেক তাহার স্ত্রী। স্বত্রাং আমাকে তকে পরাত্ত না করিতে পারিলে তো তাহাকে সম্পূর্ণ পরাত্ত করা হল না।"

শহর এই কথা শুনিয়া আশুণ্য হুইলেন। সমন্ত্রম আপত্তি আনাইরা উত্তর করিলেন "কিন্তু প্রীলোকের করে তর্কবিচার করা যে পণ্ডিতগণের নিয়মের বাহিরে।" উত্তর-ভারতী বলিলেন, "একথা আপনাকে কে বলিল? আপনি যদি দিহিজ্বী পণ্ডিত হুইতে ইচ্ছা করেন, ভবে যে কেহ আপনাকে ভর্কে আন্থান করিবেন, ভিনি পুরুষই হুউন অথবা ব্রীলোকই হুউন, ভাহাকে জন্ম না করিয়া আপনার

উপায় নাই। আপনি জানেন, পুরাকালে মহিষি যাজ্ঞবন্ধ। গার্গীর দহিত বিচারে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন, রাজ্যি জানক জালভার সক্ষে বিচার করিয়াছিলেন। জতবাং সামিও আজ আপনার সহিত তর্ক করিতে ইচ্ছা কবি।"

অগত্যা শহবাচাথ্য সমত হইলেন। সভার সকল লোক অবাক হইয়া চাহিয়া রহিলেন।

সেই যে বিচার আবন্ধ হইল, তাহা তথু সানাহার ও সন্ধ্যানিকেব কালটুকু ব্যতীত দিনে ও রারিতে স্বার থানে না। সতেরো দিন ব্যাপিয়া এই বাদাস্থবাদ সমানভাবে চলিতেছে। উভয়ভাব হাঁ সমস্ত বেদ-বেদাস্থ হইতে প্রশ্ন তুলিয়া শহরকে ব্যতিবান্ত করিবার চেটা করিতেছেন, শহরও সামাস্থ পণ্ডিক নন্, তিনি কোনমতেই কাতর ইতৈছেন না। স্ববশ্বে উভয়-ভারতী চতুরতা কবিয়া তাহাকে গৃহধ্মনীতি সন্ধ্যে কভকগুলি স্বার্থ জিক্সাসা কবিদেন। তিনি ঠিক ব্রিকেন, সন্ধ্যাসী মাহ্য এ প্রশ্নেব কোনও উত্তবই দিতে প্রবিবেন না।

বান্তনিক ভাংট্ হইল। শহুণ হতনুকি হইমা রহিলেন। তিনি তো গৃহস্ত নহেন, সংসাবে আনভিজ্ঞ, ইহার কিছুই আনেন না। উপায় না দেখিয়া শহুণ বলিকেন, "আপনি অফুগ্রহ করিছা আমাকে একমাস সময় দিন্। ভারপর ফিরিছা আসিয়া আপনার প্রশেষ ষ্থায়থ উত্তব দিব।"

ভারতী শ্বীকার করিলেন।

শহণাচাধ্য বিদায় লইখা এক মাসকাল বসিয়া গৃহধ্যনীতি শিক্ষা করিলেন। তারপর জাবার আসিয়া তাহার সমুধে উপস্থিত।

এবাবে উভয়-ভাবতী আর তাঁহাকে নিকন্তর করিয়া রাখিতে পারিলেন না। শঙ্কব প্রত্যেকটি প্রশ্নের মীমাংসা করিয়া দিলেন।

উভত্ব-ভারতী তথন সম্ভুট ২ইয়া স্বীকার করিলেন, "আপনি স্তা-স্ত্যুই জন্মলাভ করিয়াছেন। মণ্ডন-মিশ্র স্বান্ধ ইইতে আপনার শিক্ত ইইলেন।"



#### আকাশে কত নক্ষত্ৰ আছে ?

এই প্রশ্নটা তে।মবা সকলেই নিজেনের মধ্যে ক'রে থাক এবং এন উন্ত: তোমবা যে কোনও একটা বৃহৎ সংখ্যা বলে তে মাদের প্রশ্নকর্তাকে চুপ করিরে দাও। তোমাদের প্রশ্নকর্তা ঐ সংখ্যাটিকে নক্ষত্রের প্রকৃত সংখ্যা বলে খীকার ক'রে নিতে রাজী না হ'লে উত্তর ত তোমাদের মুখে লেগেই আছে—'গুণে লপ্ত'। এব পর কোনও কথা বলবার সাহস কি আর থাকে? প্রশ্ন করা ও তার উত্তর দেওয়া এই তুইটি কাজই যথাযথভাবে নিশ্পর হওয়া সপ্তেও ভোমরা সকলেই জান যে, নক্ষত্রের যে সংখ্যা উত্তরে বলা হয়েতে তা সম্পূর্ণ



নকত্র-ভরা আকাশ

কালনিক। আরু দকে দকে এও তোমরা নিশ্বন্ধপে আন:যে, এরপ প্রশ্নের সত্যকার উত্তর অসম্ভব। অসম্ভব ড এক হিসাবে বটেই! ধর, যদি ১

সেকেতে তোমরা ¢টা নক্ষত্র গুণতে পার, তবে

এক ঘণ্টার : অনবরত চেটার ফলে, আর একটুও ছল না কর্লে তোমর। মাত্র ১৮ হাজার গুণতে পারবে। সারা আকাশময় নক্ষত্র চিক্ কর্ছে, এমন কত ১৮ হাজার যে গুণতে হবে, তার কি আর শেব আছে। কিন্তু এই যে অসম্ভব কাজ, তাও মাহ্যুব সভব ক'রে তুলেছে। তোমরা শুন্লে বোধ হয় আশ্চয় হ'য়ে যাবে যে, এই প্রশ্নটির সত্যকার একটি উত্তর আছে—অথাৎ আকাশে কত নক্ষত্র আছে তার সংখ্যা মাহ্যুবের অক্ষাত নয়। আর এই সংখ্যাটি পাওয়া গিয়াছে এ একটি একটি ক'রে সব নক্ষত্র ভাবেক গুণে। তবে এ গোণা শুধ্-চোখে হয়নি, তা ব্যতেই পার্ছ। দ্ববীণ দিয়ে সমত আকাশের নানান রক্ষের ছবি তুলে তারপর অনেক ভ্রাব-নিকাশ ক'রে এই সংখ্যাটিকে গাওয়া গেছে।

আকাশের দিকে চাইলেই দেখতে পাবে যে, সব
নক্ষ সমান উজ্জাল নয়। কোনোটা খ্ব জলজল
করে, কোনোটা আবার অতি কটে দৃষ্টিগোচর হয়।
নক্ষ্যের উজ্জালতা সহদ্ধে ভবিশ্বতে শিশু-ভারতীতে
অনেক কথা থাকুবে। উজ্জালতা এক পক্ষে যেমন
আলোর নিজ্পন্ন তেজের উপর নির্ভির করে, তেমনি
অপর পক্ষে আমাদের থেকে তার দ্রুষ্থের উপরও
নির্ভির করে। আলোটা যত দুরে সরে যায় ততই
তা ছোট হরে যায়, এমন দেখায়। ফলে দাড়ার
এই যে, যতদুরে যায় আমাদের চোথে তত্ত কম
আলো৷ পৌছায়—আর কাজ্পে লাজেই উজ্জালভাও
কম হ'যে যেতে দেখা যায়। এমন যদি হয় যে,
আমাদের চোধকে কোনও উপায়ে দূরতের

অন্তপাতে বড় কর্তে পারা যায় তবে হতে পারবে না। আমাদের হাস চোথকে বড় করবার উপায় হচ্ছে দূরবীণ ব্যবহার করা। একটা ১ ইঞ্চি লেকাযুক্ত দূরবীণের মৃথ আমাদের চোথের তুলনায় প্রায় ৫ ৩৭ বড় কাজে কাজেই আহতন হিসাবে প্রায় ২৫ গুণ বড় হয়। ২৫ গুণ কেশী আয়তনের বড় হবার ফলে मृत्रवीगि २० **७**ग विनी जाता मः ग्रह क'रत थात्क। অতএব ভুধ-চোধে যে তারাটি সবে মাত্র দৃষ্টিগোচর হয় সেটি যদি কোনও উপায়ে আরও ৫ গুণ দুরে সবে যায় ভবে ১ ইঞ্চি দুৱবীণ দিয়ে ভাকে, ঠিক চোখে-দেখার মত অতি কট্টে দেখতে পাওয়া যাবে। অর্থাৎ দাড়াল এই যে, এ দুরবীণটির দৃষ্টিক্ষেত্র ति। एक कुलनाय के अन रवनी। यनि क्टी मूत्रवीन নিয়ে পরস্পারের দৃষ্টিক্ষেক্ত তুলনা কর। যায়, ভবে তোমরা দেখতে পাবে যে, এই দৃষ্টিক্ষেত্র দুরবীণের মুখের ব্যাদের (diameter) উপব নির্ভব করে। যার মুথ যত বড় তার দৃষ্টিক্ষেত্রও তত প্রসর।

যদি আকাশের মধোনক্ষত্র সব স্থানে সমান ভাবেই পাওয়া যেত অৰ্থাৎ আকাশে নক্ষত্ৰেৰ ঘনত যদি সব স্থানে স্থান হ'ত, তবে যেমন যেমন বড় দূরবীণ দিয়ে আমরা আকাশ নিরীকণ কর্তুম আকাশে নক্ষত্রের সংখ্যাও তেমনি ক্রমিকভাবে বেডেই যেত। আশ্চয্যের কথা এই যে, তা পাওয়া যায় না। ১ ইঞ্ছি দূৰবীণ দিয়ে যত নক্ষত্ৰ দেখতে পাই. ২ ইঞি দিয়ে অবশ্য সে সংখ্যা থেকে বেশী দেখতে পাই, সন্দেহ নাই কিছু আকাশে নক্ত সব স্থানে সমান ঘনঙে ধাক্লে যভট। পাওয়া উচিত, ভাখেকে অনেক কম পাই। শেষ পথান্ত দুরবীণের মুখ যত চওড়া করি না কেন, বেশী ভারা আর পাওয়া যায় না। তবে দে নক্ষঞ্জলি গেল কোখায় ? বৈজ্ঞানিকরা বলেন, ভারা নেই। তাঁরা বলেন যে, স্থয্যের চারিদিকে অনেক নক্ষত্র আছে-তার পর ভাদের সংখ্যা ক্রমে ক্রমে ক্রমে এসেছে। তাঁরা দেশিয়েছেন যে, আকাশের সব দিকে সমান ভাবে নক্ষত্ৰ কমে আগে নি - কোনও কোনও দিকে তাড়া-তাড়ি কমে গিয়েছে—আবার অন্ত দিকে অনেক দুর পধাস্থ নক্ষত্রের ক্ষেত্র বিস্তৃতি লাভ করেছে।

কিন্ত এর সব ত আর চোখে দেখতে পাওরা যায় না। বৈজ্ঞানিকরা নক্ষত্রের উজ্জ্ঞলতাকে নিয়ে তার শ্রেণীবিজ্ঞাপ ক'রে দেখিয়েছেন যে, পৃথিবীতে সব থেকে বড় যে দুরবীণ—মার মুখই শুধু ১০০ ইঞ্চি চপ্রড়া—তাতে ২১ শ্রেণীর নক্ষত্র পর্যান্ত দৃষ্টিগোচর হয়। শুধু-চোধে করেন্দরেই আর বেশ পরিকার আকাশ থাকলে বছা শ্রেণীর নক্ষত্র পর্যান্ত দেখা থেতে পারে। প্রথম থেকে বছা শ্রেণীর নক্ষত্রশুলির সংখ্যা প্রায় ৬০০০; অন্তএব শুধু-চোধে আমরা মাত্র ছয় হাজার নক্ষত্র দেখতে পাই।

### জ্যোৎস্না নীলাভ কেন হয় ?

প্রক্রতপক্ষে চাঁদের আলোতে সব রংই প্রায় সমান-ভাবেই আছে। আমাদের চোথ সব রং সমান-ভাবে দেখতে পায় না। খুব উজ্জ্বল আলোহ 'লে, যেমন মনে কর স্থোর আলো—হলুদ আর সব্দ্র এই চুইটি রংএর মাঝামাঝি একটা রং আমাদের চোধে বেশী দেখতে পাওয়া যায়। আর ফ্রিল আলো যুব 'মুহু' হয়, ভবে সব বংএর চেয়ে নীল রংটাভেই আমাদের চোপ বেশী সাভা দেয়। স্থোর আলো চাঁদে প্রভিফ্লিভ হ'য়ে যখন পৃথিবীতে আদে ভখন ভাকে বলা হয় জ্যোংলা। এত যুরে যখন আলো-কে আসতে হয় ভখন নানান্ কারণে তা অভিশ্য মুহু হ'রে পড়ে। পুর্বেই বলেছি যে, মুহু অবস্থায় নীল রংটাই আমাদের চোথ বেশী দেখতে পায়—ভাই চাদের আলোর মধ্যে নীল বংটারই প্রাধান্ত আম্বায় আম্বার পাই।

### পৃথিবীর প্রথম জীবের কি আহার ছিল ?

পৃথিবীতে সমস্ত জীবের আহারের বিবর আলোচনা করিলে আমরা দেখতে পাই যে, তারা সকলেই নিজেদের আহারের জন্ম অপর জীবের উপর সম্পূর্ণ নির্তর ক'রে থাকে। পৃথিবীর সমস্ত প্রাণীই উদ্ভিদ্, বা উদ্ভিদ্ভোজী অপর প্রাণীদের আহার ক'রে জীবনধারণ ক'রে থাকে। এইজন্ম পৃথিবীর প্রথম প্রাণী যে, কোনও জীব বা জন্ম ছিল না, তাহা নিঃসন্দেহ। অন্ত কোনও গ্রহ থেকে দৈবাৎ যদি কোনও প্রাণী পৃথিবীতে এসেও থাকত, তবে আহারের অভাবে নিশ্চয়ই তার মৃত্যু হয়েছিল। ছিতীয় জীবন্ধ জিনিব উদ্ভিদ্। উদ্ভিদের বিবর আলোচনা করলে আমরা দেখ্তে পাই যে, এদের ব্যবস্থা স্বতম্ব। এরা কোনও জীবন্ধ বন্ধর উপর নির্ভর

### মেঘের পাড় রূপালী কেন হয় ৪

না ক'রেও শুধু বাতাস মার মাটাব সাহায্যে নিজেকে বাঁচিয়ে রাখতে পারে। এ থেকে বলা থেতে পাবে যে, উদ্ভিদের জন্ম পৃথিবীতে প্রাণীদের পূর্বের হয়েছিল। আরু যখন প্রথম প্রাণী ফৃষ্টি হ'ল তখন তা নিক্যুই উদ্দিদ্ধণত প্রাণীই ছিল।

ভোমাদের মনে একটা প্রশ্ন হ'তে পারে যে, উদ্ভিদমণত প্রাণী আবার কি? উল্লিদের সং থেকে বড লক্ষণ এই যে তারা মাটী আবু বাতাস থেকে পাছ্য সংগ্ৰহ কৰাতে পাৱে, আৰু ভাচেৰ সক্রবণ করার কোন ও শক্তি থাকে না। উল্লিছ্যুগ প্রাণী সেই প্রাণী, যারা সঞ্চবণ করতে পাবে, অথচ তাদের আহারের জন্ম বাতাস ও মাটী ছাড়া আব অতা কিছর আবিতাক হয় না। ভাদের জীবন ধাবণ করা সবল হবে বলে তার৷ জ্বলেই জ্বনাত আর গাছের মত জল, বাতাদের অভারভান (carbon dioxide) গ্যাস ও নানান রক্ষেব লবণ নিজেদের শরীব দিয়ে শুবে নিয়ে পরিপাক ক'রে নিত। এই যে প্রথম প্রাণী এদেব আবে একটা কাণ চিল — श छिक्करम्ब भरशा स्तरे। धारम्ब भरशा निरक्करम्ब ফটিয়ে তোলবাৰ প্ৰবন্ধিও স্বপ্নভাবে বৰ্ত্তমান ছিল—তা নইলে মানুদেব মত এমন একটা অভিশয় अपिन कीत रिन्दो इस्या मखन इक ना। यतकात জ্ঞান যে সৰু লবণেৰ উপালান সেই সেই লবণই এই প্রাণীদের বেধে হয় বেশীপ্রিয় থাছা ছিল। যথন মেঘ ক'বে থব বিভাৎ চমকাত আব ভাব ফলে বাতাদের ব্ৰক্ষাবন্ধান (introgen) আর অন্তজ্ঞান (oxvgen) মিলে নতুন লবণ (salt) তৈবী হয়ে বৃষ্টিৰ জলেৰ সহিত পৃথিবীতে আসত, তখন বোধ হয় এদের আনন্দের দিন ছিল। তথন এরা বোধ হয়, নিজেদেব পাড়া প্রতিবেশীদেব নিয়ে মহা ধমধামে ভোকে লেগে বেত। আব দে আমলে ত পথিবী আজকালকাৰ মত শাস্ত ছিল না-তখন পথিবীৰ ব্যুদ ছিল ক্ম-ছোট ছেলেম্যেদের মত ভাব হৈচি ত সব সময়েই লেগেই ছিল।

### মেঘের পাভ রূপালী কেন হয় ?

এক্ষত ভোমাদের মেঘ কি, ত। একট্ট জানাতে হয়। তোমরা খুব ঘন কোয়াসা দেখেছ। মেঘ এই রকম একটা কোয়াসা বই আর কিছু নয়। আকাদেশ যথন আমর। মেঘ দেখি তথন এই কোয়াদার তলাটা মাত্র দেখিতে পাই। বান্তবিক পক্ষে এ তলাটা থেকে আরম্ভ ক'রে মেঘ অনেক উচু পথ্যস্ত উপরে উঠে গিয়েছে। এখন তোমরা বলতে পার যে, মেঘ ত কালো, কোয়াদা ত অত কালো নয়।

ভার উদ্ভর এই। কোনও পুকুর থেকে একটা কাচেব মাদে ক'রে জল লও। দেখবে, ভা কেমন পরিষ্কার—থেন ফটিকের মত ঢল ঢল করছে। কিম্পুকুরেব তলার দিকে চাও,দেখবে অন্ধকারময়। এর কারণ কি দুজল বর্ণহান হলেও একেবারে বর্ণহান নয়। যখন কম বা অল্প পরিমাণে থাকে, তখন বর্ণহান দেখায় আর যখন পরিমাণে



মেঘের রূপালী পাড

বেশী হয় তথন তার নিজেব বর্ণট। প্রকাশ হ'য়ে পড়ে। তাই জলের মধ্যে আলো ঘাবার সময় অলপরিমাণ জ্বল পাকলে ভেদ ক'বে চলে যায় আব ক্লের পরিমাণ বেশী থাকলে কিছু দুব গিয়ে আর যেতে পারে ন', নিজেকে হাবিয়ে ফেলে।

মেঘেব বেলাভেও ভাই। মেঘ যে কোয়াসার মত একটা ছিনিস আবে তারই মত অনেকটা ছান বোপে ছডিয়ে থাকে, তা ভোমাদিগকে বলেছি। এর মধা দিয়ে আলো চলবার সময় জলেব মধা দিয়ে যাবার সময় যেমন ২য়, কিছুদূর গিয়ে আব চলতে পারে না, নিজেকে হারিয়ে ফেলে। ফলে হয় কি, মেঘের নীচের তল—অর্থাৎ যে তল আমর। দেখতে পাই—সে তল পায়ন্ত আলো ভেদ কবে আসতে পাবে না—আর স্বটা অন্ধকারময় অর্থাৎ কালো দেখায়। কিন্তু পাডটাত অত স্থল হয় না। তাই

এইখান খেকে কিছু আলো বেরিয়ে আমাদের কাছে পৌছয়। তাই যে জায়গা দিয়ে আলো বেরিয়ে আমে তা স্বভাবত:ই থুব উজ্জ্বল দেখায়। এই উজ্জ্বলতা একেবারে মেঘের ধার দিয়ে হয় বলে কালো কাপড়ের ঠিক যেন রূপালী পাড়ের মত দেখায়।

ফুঁদিলে প্রদীপের শিখা নিবে যায় কেন ?
দীপশিখা জলে থাকবার তথটি কি, জানলে



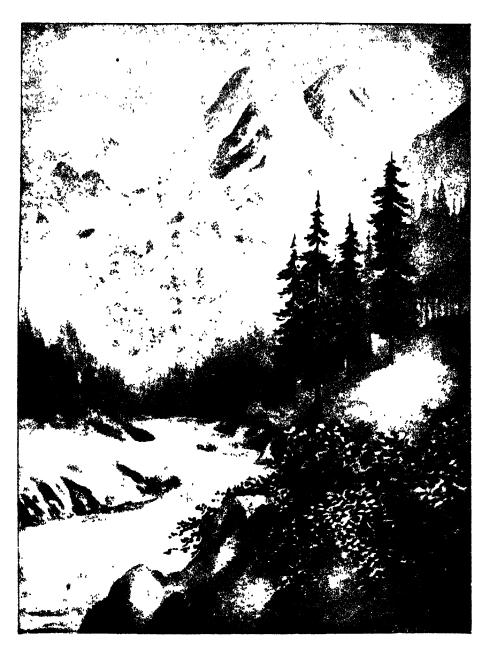
ফু দিলে প্রদীপের শিখা নিবে যায

নিবে যাবার কারণটিও তোমাদেব কাছে স্পষ্ট ২'ষে উঠ্বে। দীপশিপাৰ জ্বন্থে তেলের দরকার হয়, তা তোমরা জান। এই দেন পলিতা সাহায়ে শিখার কাছে পৌচে। তথন একটা জ্বন্য কাঠি এই পলিতার কাছে ধরা যায়, আর পলিতাট। জলে উঠে শিখার আকার ধারণ করে।

তোমাদের মধ্যে যাহারা সহরে থাক, যেখানে
গাানের আলো বা ইলেক্টিকের আলোর ব্যবহার
বেশী তারা হয় ত প্রদীপের শিখা ফুঁ দিয়ে
নেবাবার কথাটা ভাল ক'রে ব্যুতে পারবে
না। কিন্তু যাদের বাড়ী পাড়াগাঁয়ে, তারা
পাশেব ছবিথানি দেখে আমাদেব এই কথাটি
অতি সহজেই বুষতে পারবে।

ব্যাপার এই হয় যে, জ্ঞান্ত কাঠিটার সংস্পর্শে এসে তেলটা গাাস হ'য়ে যায়, আরু বাভাসেব অমুক্তানের সংস্পর্শে এসে তাব সঙ্গে যৌগিক তৈরী হ'তে থাকে। এই **অন্নজানের সঞ্চে** योगिक इ'एउ इल এकी বিশেষ উচ্ উত্তাপের আবশ্রক হয়—তা না হলে যৌগিক তৈরী হ'তে পারে না। যতকণ শিশাটা থাকে, ততক্ষণ এই উত্তাপটা বৰ্ত্তমান থাকে-কমতে পায় না। কিছু ফু দিলে অপেকাক্সত ঠাণ্ডা বাতাস গিয়ে শিখাতে লাগে আৰ তার উত্তাপ কমিয়ে দেয়। এ অবস্থায় তেল অমুজানের যৌগিক হওয়া স্ভব হয় না, তার ফলে দাঁড়ায় যে, শিখাটা অন্তর্জান করে।

ব্যাপারট। সহন্ধ, তোমরা কয়ন্ধনে এর কারণটা আন্তে বল দেখি ? এমনি কত ব্যাপাব আমাদেব চারিদিকে অনবন্ধত ঘট্ছে —আমবা তা দেখেও দেখিনা। আমনা ক্রমে ক্রমে তা তোমাদের কাছে বলবার চেষ্টা করব।



হিমাজি শিথরে



# ভারতের বাহিরে ভারতীয় সভ্যতার বিস্তার

দেরিন্দিয়াব যুগের বিস্তর নগর ও বৌদ্ধ মঠ-মন্দিরাদিব ধ্বংসাবশেষ দেশের মক্ষভূমির বালিব

a chaire and a second residence of the second

নীচে হইতে আবিষ্কত হইয়াছে। চীনারা অভি প্রাচীন কালে এই দেশ কবিয়াছিল, ভাহাদের অধিকাবেব নানা নিদৰ্শন পাওয়া গিয়াছে। ভারতের সভাতাব নিদর্শন হইতেছে বৌদ্ধ ও অন্থ ভারতীয় শাস্ত্রের সংস্কৃত পুথি এবং দেশ-ভাষায় লিখিত পুঁথি, ছবি, মূর্ত্তী প্রভৃতি। দেশটা পূর্বের বেশ উবর্বব ছিল, এখন বহুস্থান জলশুকা হইয়া মরুভূমিতে পরিণত হইয়াছে: মঞ্জুমির বালিতে প্রাচীন সব সহর ক্রমে ক্রমে গ্রাস কবিয়। ফেলিয়াছে। এখন সেই সব বালি খুঁড়িয়া প্রাচীন ভারতীয় ও অক্স সভাতার এবং স্থানীয় শিল্পকলাদির প্রচুর নিদর্শন বাহিব হইয়াছে। আমরা এই সব আবিষ্কারের ফলে এবং হিউএন-সাঙ-প্রমুখ চীনা পরিব্রাজকগণেব লেখা বইএর বিবরণ পড়িয়া এখন বৃঝিতে পারিতেছি যে, ভারতের অধিবাসিগণের কি বিরাট এক সভ্যতা মধ্য এশিয়ার গড়িয়া লোকদের তুলিতে সাহায্য কবিয়াছিল। ক্রমে ইছাবা মধা এশিষাকে ভারতেব একটি অংশ কবিয়া ভলিযাছিল। এখানকাব nas en marity de com moderna de la compania de la

বিশিষ্ট লোকেবা সংস্কৃত নাম লইতেন। কুচ। বাজোৰ এক জন বাজাৰনাম ছিল। 'স্বৰ্দেন'। কাবা-সহবেন এক নাজাব নাম ছিল 'হবিপুষ্প' ও খোতানের রাজাব নাম ছিল 'বিভয়'। ইহাবা আতুমানিক ৬৩০ খুষ্টাব্দের লোক। সেবিন্দিয়াব সব চেয়ে বিখাত বাজিব নাম চইতেছে কুমারজীব। (জীবংকাল সামুমানিক ৩৪৭-५১৩ খুষ্টাব্দ)। ইনি বিখ্যাত নৌদ্ধ পণ্ডিত ছিলেন এবং কচা হইতে চাঁনে গিয়া বিস্তব বৌদ্ধ-গ্ৰন্থ সংস্কৃত ১ইতে চীনাভাষায় অমুবাদ করেন। ইহাব পিতাব নাম ছিল 'কুমার'। পিত। ভারত হইতে কুচায় আগত এক বাজপুত্র ছিলেন এবং ইহাব মাতা 'জাবা' ছিলেন কুচার বাজকুমারী। মাতা ও পিতার নাম মিলিভ কবিয়া ইচাব নাম। এখন এই ভূভাগ আর ভারতের অংশ নছে; কেবল প্রাচীন ভারতেব—আমাদের পূর্বব পুরুষদের স্মৃতি ইহার ভূগর্ভ হইতে প্রাপ্ত। এইরপ বহু নিদর্শন এদেশের

সভ্যতার নিদর্শনের সঙ্গে জড়িত হইয়া আছে।

অজিকাল যে দেশকে আমরা আফগানি-স্থান বলি, সে দেশ দেড হাজার বছর আগে আমাদের ভারতবর্ষেরই অংশ ছিল। এখন আফগানিস্থানের লোকেরা হয় ফারসী, নয় জাতিতে ইহারা ইরাণীয় পশত বলো। আৰ্য্য, ধৰ্মে এখন মুসলমান ; কিন্তু তখন এই দেশের লোকেরা ছিল হিন্দুজাতীয়, ধর্মে ব্রাহ্মণ্য, বৌদ্ধ, জৈন প্রভৃতি হিন্দুধর্ম্মের শাখা মানিত। গ্রীকেবা আফগানিস্থানকে India Meion অর্থাৎ India Minor বা 'ছোট-ভারত' বা 'প্র-ভাবত' বলিত। দেড হাজার বংসর পুর্বেও এই দেশে হিন্দুধর্মের প্রচুর নিদর্শন ছিল। কাবুল শহরের ৩০ মাইল পশ্চিমে 'বামিয়ান' বা 'ব্ৰহ্মযান' নামক স্থানে পাহাড়ের গা কাটিয়া তৈরী কতকগুলি বিরাট্ বুদ্দ মূর্ত্তি বাহির হইয়াছে, খাডাইয়ে এক একটা কলিকাতাব মন্তুমেন্টের চেয়েও উচু। এছাড়া মন্দির, চিত্র, মূর্ত্তি-বৌদ্ধ ও ব্রাহ্মণা ধর্মেব প্রচব নিদর্শন বাহির সইয়াছে। এ দেশও এখন ভাবতের সংশ নহে, ইহ। ভারত হইতে বিচাত হইয়া প্রিয়াছে, প্রত্তাষী পাঠান ও ফার্সী-ভাষী ভাজীক জাতি আসিয়া এই দেশ দথল করে, পরে ইছাব: মুস্লমান হয় ও ধীবে ধারে এই দেশেব প্রাচীন হিন্দুজাতি ইহাদের হাতে নিজেপ্যিত হইয়। বিধ্বস্ত হইয়া যায়। ভারতবর্ষ হইতে ইহাদের রক্ষার বিশেষ কোনও চেষ্টা হয় নাই। সুপ্রাচীন যুগ হইতেই যে দেশ ভারতের অঙ্গস্থরূপ ছিল, তাহা এইরূপে বিচ্ছিন্ন তইয়া গিয়াছে।

ভারতের উত্তরের দেশ তিব্বতকেও এক হিসাবে বৃহত্তর ভারতের শামিল করিয়া লওয়া চলে। তিব্বত এখন নামতঃ চীন সামাক্ষার অংশ—তিব্বতের লোকেদের

একটি বিশিষ্ট সভাতা ও মনোভাব আছে। জাতিতে ইহারা চীনাদের জ্ঞাতি, কিন্তু ধর্মে ও সভ্যতায় ইহারা অনেকটা ভারতেরই। তিব্বতীরা চীনের পশ্চিম অংশে তাহাদের আদি বাসভূমি হইতে যীশুখুষ্টেব জন্মের প্রায় ৫০০ রংসর পূর্বে আধুনিক তিবাতে আসিয়া বসতি করে। বছকাল ধরিয়া তাহার৷ অন্ধ অসভা অবস্থায় ছিল, এবং তাহাদের প্রাচীন ধর্মে নানারূপ যাত-বিভাময় ক্রিয়াকলাপ ও পূজাঅমুষ্টান হইত। ইহাদের প্রাচীন ধর্মকে 'বোঙ' ধর্ম বলে। তাহার পরে, যীশুখুষ্টের জন্মের কয়েক শত বৎসরের পরে, ভারতবর্ষ হইতে বৌদ্ধধ্ম যায়। বৌদ্ধধর্ম দারা ইহাদেব অবস্থার অনেক উন্নতিসাধন হয়। ভারতীয় বর্ণমাল। ইহারা গ্রহণ করে, এবং খৃষ্টীয় ষষ্ঠ শৃতকের মাঝামাঝি থোনমি সম্ভোট নামে একজন তিকাতী পণ্ডিত ভাৰতীয় বৰ্ণমালায় তিকাতী ভাষা প্রথম লিখিতে আরম্ভ কবেন। এতদ্বির ভারতের বহু শিল্প ও রীতিনীতিও ইহার। শিক্ষাকরে। তিকতীরানিজেদের ভাষায় নিজেদেব বলিত 'বোদ' (এখন এই শক ইহারা 'প্যো এইরূপে উচ্চারণ করে) ; এই 'বোদ্' শব্দ আমাদের পূর্ব্ব-পুক্ষগণ ভারত-বর্ষে প্রায় পনের শত বংসব পূর্ত্বে পরিবর্ত্তিত করিয়া 'ভোট' রূপে গ্রহণ করিয়াছেন। ভিক্ততের প্রাচীন ভারতীয় নাম হইতেছে 'ভোট দেশ।' বৌদ্ধধর্ম শিক্ষা দিবার জন্ম ভারতবর্ষ হইতে কভকগুলি প্রাচীনকালে ভোট দেশে গিয়াছিলেন। ইহাদের মধ্যে সর্ব্বাপেক্ষা উল্লেখযোগ্য হইতেছেন একজন বাঙ্গালী পণ্ডিত, 'দীপন্ধর শ্রীজ্ঞান অতীশ।' ইনি ১০৩৮ খুষ্টাব্দে প্রায় সত্তর বংসর বয়সে তিব্বতে যাইয়া সেখানকার বৌদ্ধর্মের মধ্যে এক নৃতন শক্তি দান করেন। তিনি ভোটদেশে গিয়া সেখানকার নানা উন্নতি বিধান করিয়াছিলেন। এখনও তিব্বতীবা অলোকিক পুরুষ বলিয়া তাঁহার পূজা করিয়া থাকে। তিব্বতের লোকেরা চীনাদের সভ্যতার দ্বারা অনেকটা প্রভাবাদিত হয়। তবে মোটের উপব তাহাদেব সভ্যতায় ও জীবনে ভারতবর্ষেবই প্রভাব বেশী। তাহারা এখনও বৌদ্ধ, তবে তাহাদেব মধ্যে ভাবতীয় বৌদ্ধধর্ম তাহাদেব প্রাচীন 'বোঙ' ধর্ম্মে মিশিয়া গিয়া তাহাদের পুবোহিত 'লামা'দেব হাতে একেবাবে নৃতন আকাব পাইয়া বিসিয়াতে।

সিংহল দ্বীপে উত্তব ভাবত হইতে ও দক্ষিণ ভাবত হইতে উপনিবেশিকেবা গিয়া বসবাস করিতে আবস্ত কবে খুষ্ট জন্মেব প্রায় ৫৫০ বংসর পূর্বব হইতে। পূর্বেই বলিয়াছি, সিংহল দ্বীপকে বৃহত্তব ভারতের মধ্যে না ফেলিযা আমাদের ভারতের অংশই বলা উচিত।

Serindia সেবিন্দিয়া বা মধ্য এশিয়া: India Minor কুদ্ৰ ভাৰত, বা আফগানি-স্থান: ভোটদেশ বা ভিব্বত: Indo-China বা বশ্বা (উত্তৰ বশ্বা : দক্ষিণ বশ্বা বা স্থৰণ ভূমি বা হংসাবতী); উত্তর শাম; দক্ষিণ শ্যাম বা দারাবতী ও নগর স্থধ্যরাজ: কমুজ বা কম্বোজদেশ ; চপ্পা উত্তর মালয়দেশ বা কটাগরাজা: এবং Indonesia বা দ্বীপময় ভাবত মোলয় উপদ্বীপ, সুমাত্রা বা শ্রীবিজয় अथन। औदिषय न। सूनर्वश्रीभ, यनश्रीभ, বলিদ্বীপ, লম্বকদ্বীপ, বোণিও ইত্যাদি) এত গুলি স্থান লইয়া বুহত্তর ভাবত। ইহাদের প্রতোক অংশের সম্বন্ধে বড় বড় বই লেখা হ'হয়াছে—ইহাদের ইতিহাস, সমাজ, ধর্ম, রীতিনীতি লইয়া অনেক কথা আছে। কম্বোজ, চম্পা, যবদ্বীপ এই সব দেশের প্রাচীন অর্থাং হিন্দু আমলেব ইতিহাস, মন্দির, শিল্প, সাহিত্য-সবই আমাদের খুব মন দিয়া আলোচনার বস্তা।

যুগেও এই সব দেশেব মাটিব মধ্য চইতে হিন্দুযুগের যে সব প্রাচীন কীর্ত্তি বাহিব হইতেছে, এই সব দেশেব উপরে প্রাচীন মন্দিরাদিও যে সব প্রাচীন কীর্ত্তি এখনও সংগীররে অবস্থিত, এই সব জামগায় লোকেদের জীবনযাত্রাব পদ্দতিতে, রীতিনীভিতে, চালচলনে, ভাব-ভঙ্গীতে যে প্রাচীন ভাবতীয় ভাব বিজ্ঞান আছে, সমস্তই সভাক্ত বিশ্বয়কব।

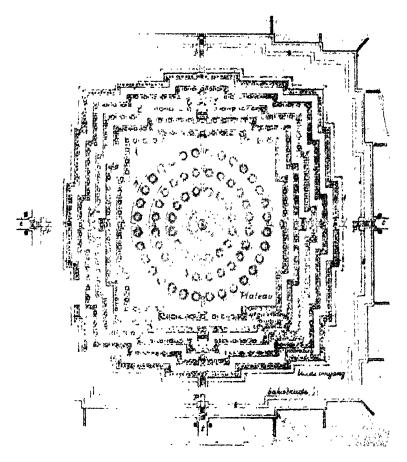
সুহত্তব ভারতে আমাদেব চর্ম্মচক্ষে পবিদৃশ্যমান তিনটি বড় কার্ত্তিব কথা উল্লেখ
কবিয়া এবাবকাব মত বছত্তর ভাবত-কথা
শেষ কবিব। এই কীর্ট্তি ভিনটি ছইতেছে,
তিনটি বিরাট্ মন্দিব। ইছাদের এক্টি
ছইতেছে কংখাজেব বিরাট্ Angkor-Vat
'অস্কোবভট্'-এব মন্দির; দিতীয়টি

াপের (Boro-Boedoer) বনর্ছনের বৌদ্ধস্থপ: এবং তৃতীয়টিও যবদীপের প্রস্থানানের ক্রনা বিষ্ণু, শিবের মন্দির। এগুলি ছাড়া উল্লেখযোগা আবও আনেক কিছু আছে; সে সব কথা কিন্তু এক একটি দেশ ধরিয়। বলিতে হয়। কিন্তু প্রতাক ভারতবাসীর বৃহত্তর ভারতের আর-কিছুর ন। হউক, অংশাবভট্, বরবৃত্তর ও প্রস্থানান এই তিনটির নাম ও ইহাদের একটু পরিচয় জানিয়া রাখা উচিত।

অংশাবভট কথাজ বা কস্বোডিয়া দেশে। কগোডে যীগুগুপের জন্মর পূর্বব চইতেই ভাবতীয় লোকদের গভায়াত জিল। 'কপ্ব' নামে একু ব্রাহ্মণ ভাবতবধ হইতে গিয়া ঐ দেশে বাস করেন, তিনি ঐ দেশে 'মেরা' নামে এক অঞ্চরাকে বিবাহ করেন, কপ্ব ও মেবার সন্তানেরা কপ্ব হইতে জাত বলিয়া 'কপ্বজ' নামে খ্যাত হন, এবং ভাহা হইতে জাতি ও দেশের নাম 'কপ্বজ' বা 'কন্বোজ',ইংবেজীতে Cambodia। কৌণ্ডিম্ম নামে আর এক জন ব্রাহ্মণ আদেন, তিনি

'দোমা' নামে একজন নাগ বা স্থানীয় খনাথা রাজার কন্তাকে বিবাহ কবেন। প্রমেশ্বর নামে একজন রাজা (৮০২-৮৬৯ কৌণ্ডিক্স ও কম্বৰ সম্ভানেৰা ছুইটি রাজ্য খুষ্টাব্দ) একটি বিরাট কম্বোজ সাম্রাজ্য श्वापन करतन-शृष्टे अरुवाद किछू अरुव। श्वापन करतन। तीक्षा घरमावन्त्र। आसूत्रानिक

ইহাদের থবর জানা যায়। দ্বিতীয় জয়বর্মা



ববৰুত্ব চৈতোর ভূমিব নক্শা

খুষ্টীয় ৫৫০ হইতে কম্বোজ বাজ্যেব একটি ১০০ খুষ্টাব্দে (Angkor Thom) আন্তোর মোটামুটি ধাবাবাহিক ইভিহাস পাওয়া থোম নামে একটি রাজধানী স্থাপন করেন। যায়। রাজাদের সংস্কৃত অনুশাসন হইতে

এই অক্ষার থোমের কাছে রাজা দিতীয়

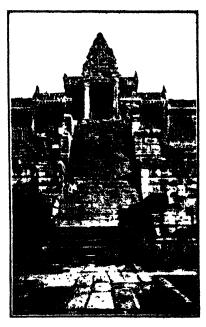
সুধ্যবশ্বা (ইচাব রাজ ফলাল খৃষ্টান্দ ১১১১ হইতে ১১৫২ পর্যান্ত) (Angkor-Vat) অক্ষোরভট-এব স্থুবৃহৎ প্রস্তব-মন্দিব নির্মাণ কবেন। সংস্কৃত 'নগব' শব্দ কলোজেন ভাষায় 'অনগব', 'অঙ্গর'ও 'অক্ষোব' রূপ ধাবণ কবে এব' ভট্ অর্থে মন্দিব। এই মন্দিবে ম্বিত ছিল। ভারতব্যেবই মত কম্বোজ ও চম্পায় শিব, বিষ্ণু, বন্ধা, লক্ষ্যী, উমা, গণেশ, কাতিক প্রভৃতি দেবতা

গণেশ - धरम्ही॰

পুজিত হইতেন। এই অস্কোবভট মন্দিব ভাবত-বর্ষব বাহিৰে হিন্দু শিল্পেব এক আশ্চৰ্যা কীৰ্ত্তি। সমচ তুকোণ মন্দিরটির চাবি-দিকে বিরাট্ একটি পবিখা, পবিখাটিব দৈঘা এক এক দিকে এক এক মাইল কবিযা। পবিখা পাব হইয়া মন্দিবে,পীছিবাব জন্ম তুইটি সাকে৷ একটি আছে। পূর্বের, একটি

পশ্চিমে। প্রিধাব পরে মন্দিবের বাহিবেব প্রাচীন প্রভাক দিকে এক মাইল কবিয়া লম্বা। ইহা হইতেই মন্দিবের বিশালঙ্ক স্থিতে পারা যাইবে। এই বাহিবের দেওয়ালের পরে ভিতরে পর পর ভিন ভালা অভিক্রম কবিয়া মাঝখানে বিমান বা দেবভার মূল মন্দিরে পৌছিতে হয়। মূল বিমান বাভিবেকে, ছোটখাট মন্দির ও বিমান, শিখর ও গৃহ জনেক

আছে; এবং মন্দিরের ভিতরের দেওয়াল অবলম্বন করিয়া অনেকগুলি ছাত্যুক্ত টানা বাবান্দা আছে। এই সব বাবান্দা নানা খোদিত চিত্রে ভূষিত। ইহা রামায়ণ, মহাভারত এবং পুরাণের ঘটনাবলীর চিত্র। সমস্ত খোদিত চিত্র পাশাপাশি করিয়া সাজাইলে সরটা কয়েক মাইল লম্বা হইবে। কম্বোজের শিল্প ভারতের শিল্পেবই রূপান্থর; ভারতীয় উপাখ্যান কি স্কুন্বভাবে সমস্ত খুটিনাটির সহিত চিত্রিত ইইয়াছে, ভাহা দেখিলে বিস্থায়ে নির্কাক হইতে হয়।



অঙ্গেবভট এব প্রধান প্রবেশ-পথ

গঞ্চোবের এই মন্দিরের ও ইহাব ভাসগোৰ কভকগুলি চিত্র দেওয়া গেল। বরস্থ্র স্থান বা চৈত্য মধ্য ঘবদীপে বিজনান। 'বর' হইতেছে 'বিহার' বা মন্দির; 'বুত্র-গ্রামের মন্দির' অংগ 'বর-খৃষ্টীয় সপ্তম শতাব্দীর। - এগুলি (Dieng)



অংশব ভট্ মন্দির গাতে যোদিত অস্বাবোহী গৈনিকদল



অম্বোরভট্ মন্দির-গাত্তে খোদিত পদাতিকদল দিয়েও বলিয়া একটি স্থানে অবস্থিত। এই মন্দিরগুলি প্রাজাণ্য দেবতাদের বলিয়া মনে হয়। ( এই সময়েব বহু পূর্বেব যদ্দাপের ও

বোর্ণিও দীপের সংস্কৃত অনুশাসন আছে-বুছর'। যবদীপের সর প্রাচীন মন্দিরগুলি সেগুলি হইতে বিষ্ণু প্রভৃতি হিন্দু দেবতার পূজাৰ ও ভাৰতৰ্ষ হইতে আগত ব্ৰাহ্মণ



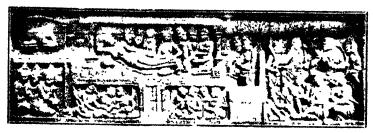
অক্ষোবভাট-এর মন্দিব-গাত্তে খোদিত গুদ্ধেব কর্ত্তক বৈদিক যজ্ঞ নিকবাত কবাৰ কথ



এলোব ভট্-মান্দবেব একটি মৃত্তি জানা যায়।) সুমাত্র। বা সুবর্ণদীপে খষ্টীয় অস্তম ও নবম শতকে শ্রীবিজয় বা শ্রীবিষয় নামে একটি সামাজা ছিল। এই

সামাজ্যের রাজাদিগকে শৈলেন্দ্রবংশীয রাজা বলিত। ই হারা বৌদ্ধ ছিলেন। এই বাজারা যবদ্বীপও জয় কনিয়াছিলেন। ইহাদেব বাজ হকালে খৃষ্টীয় নব্ম শতকে যবদীপে ইহাদেবই চেষ্টায় এই বরবৃত্ব চৈতা গঠিত হয়।

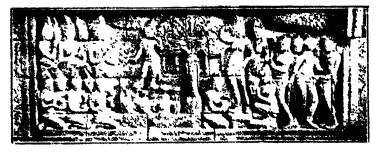
ান, যিনি ১০৩৮ খুষ্টাবেদ তিকাতে গিয়াছিলেন, যৌবনকালে সুমাগ্রায় িগিয়া সেখানে এক বিখ্যাত বৌদ্ধ হাকুর কাছে শিক্ষালাভ কবিয়া মাসিয়াছিলেন।) ববৰ্ত্র ঠিক মন্দিৰ নতে। বদ্ধ বা অকা মহাপুরুষের মৃত্যুর পর, তাহার অঙ্গ-



মায়ালেবীর প্র- ব্যব্তুবের নৃদ্ধি

ভাৰতব্ৰে পাটনা জেলায় নালনা বিশ্ব-বিভালায়ের ধ্বংসংবংশ্য গিয়াছে। ইহা হইতে জান। যায় যে,

্রেমাত্রার সঙ্গে ভাবতবর্ষের ঘনিষ্ঠ যোগ । খণ্ড বা কেশাদি দেতের কোন অংশ মাটিতে ছিল। ৯৮৮ খৃষ্টান্দের একটি হাত্রশাসন সমাহিত করিয়া ভাহার উপরে প্রস্তবস্থপ নিশ্মাণ করা হইত। বিশেষ বিশেষ দিবসে মধ্যে পাওয়া ভক্তগণ মাসিয়া এই স্তপেব বা চৈত্যেব চাবিধানে ঘুনিবার জন্ম প্রস্তুত বিশেষ পথ



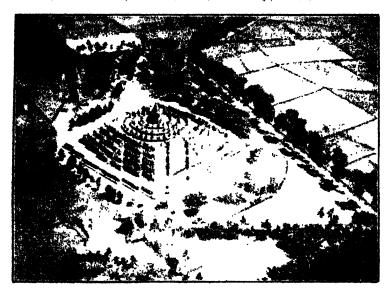
সিদ্ধাথের জন্ম ববন্তুবের মন্দির

বালপুত্রদের নামে क्छन देशदलस्य दःशीय বাজা নালনায় একটি বৃদ্ধ-মন্দিব তৈযাবী কবিয়া দিয়াভিলেন, এবং তাহাতে পূজাদিব বায় নিক্ৰাহেৰ জন্ম ঐ স্থানে কতকগুলি গ্রাম কিনিয়া মন্দিবের জন্ম উৎসর্গ করিয়া দিয়াছিলেন। সামাদের বঙ্গ-গৌরব পণ্ডিত

ধরিয়। ইহাকে প্রদক্ষিণ করিতেন, ফুল, ধুপ-ধনা অংদি লইয়া তৃপনিহিত মহাআর পুজা করিকে। পব পর একাধিক ভলায় এই প্রদক্ষিণ পথ চইত। সকলের উপরে বা মধ্যে প্ৰকিড ধাতুগৰ্ভ বা মূল সমাধি। বরবৃত্বর চৈত্যটি সাততলাব। এক এক ভল। অর্থ এক একটি বারান্দা, চৈতাকে ঘিবিয়া ঘিরিয়া গিয়াছে। এক তলা হইতে আর এক তলায় উঠিবার জন্ম চানিদিকে চারিটি সিঁড়ির শ্রেণী আছে। প্রভাক বারান্দায় চৈতাের গায়ে এবং বাবান্দার আলিসায় পাথরে খোদাই কবা চিত্রেব শ্রেণী। চিত্রগুলি বৃদ্ধদেবের জীবনী ও নানা বৌদ্ধ উপাখ্যান হইতে গৃহীত। এগুলি সুখায় এত বেশী যে, ইহাদিগকে

স্থাপিত। গুসুজ সমেত সাততলার এই সমগ্র স্থৃপতিকে দূর হইতে দেখিয়া মনে হয়, যেন বিরাট্ বৃক্ষশোভিত একটি পাহাড।

বরবৃত্বের ভাস্কগা অপু-ব্রস্থন্দর জিনিষ। মৃঠিগুলিব সুঠাম গঠন এবং ইহাদেব ছাতি লিগ্ধ ছাথচ গঞ্জীব ভাব-ছোতক গতিভঙ্গী ভারতব্ধের শিল্পেও তুর্লিত। বববৃত্বব চৈতোর ও ইহার



বর্বুত্ব চৈভোব দৃষ্ঠ – আকাশ হইতে গৃহীত চিত্র

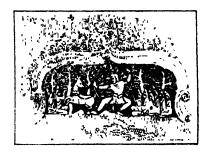
পাশাপাশি সাজাইলে কয়েক মাইল ধরিয়া
ইহাদের সারি হয়। এক এক তলায় কতক
গুলি করিয়া চূড়া আছে, বারান্দাগুলিতে
মাঝে মাঝে কতকগুলি কুলুঙ্গী এবং ঘণ্টার
আকারে কতকগুলি গুপজের মত আছে।
এই কুলুঙ্গী ৩৪ গুপজগুলির ভিতরে নানা
অবস্থায় উপবিষ্ট বিস্তর বুদ্ধমূর্ত্তি আছে।
এই মৃতিগুলি অতিস্কুলর। বরবুত্র
চৈতাটি একটি ঢোট পাহাডের উপরে

কতকগুলি খোদিত চিত্রের প্রতিলিপি দেওয়া গেল।

বরবৃত্বরে মত প্রস্থানান্ও মধ্য
যবদ্বীপে অবস্থিত। এথানে একটি প্রাচীরবেষ্টিত স্থানে আছে তিনটি বিরাট্ স্থুউচ্চ
মন্দির; একটি বিষ্ণুর, একটি শিবেব, একটি
ব্রহ্মার। এই তিন দেবতার মন্দিরের সামনা
সামনি ইহাদের তিন বাহনের জন্ম ছোট
ছোট মন্দির আছে। বিষ্ণুর মন্দিরের সামনে

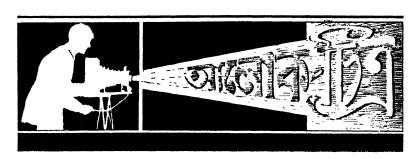
গক্ত ড়েব, শিবের সামনে তাঁহাব বৃষভ নন্দীর, এবং ব্রহ্মার সামনে হংসের। মন্দিরপ্রাঙ্গণের দেষ্টনী প্রাচীবেব বাহিরে ছোট
ছোট বহু দেবমন্দির। এই সমস্ত মন্দির
উচ্চতায় বরবৃহরেব চেয়েও অধিক।
ববরৃহর চৈতাের নির্মাণের কিছু পরে,
ব্রাহ্মণাধর্মাবলফী কোন্ত যবখীপীয় রাজা
শিবেব পুণাক্ষেত্রস্বরপ এই স্থানে এই
মন্দিরগুলি নির্মাণ কবান। বববৃহর
মন্দির ও এই মন্দির উভা্যেই বিশেষ
ভগ্ন দশায় পড়িয়া ছিল; এখন ডচ বাজসবকার এগুলির স্কর্দের মেবামত করিয়া
বাপিয়াছেন।

প্রধানানের ভিন্তি দেবতা মৃত্তি এখনও বিভামান। তিন্দু যাবদীপের মূর্ত্তিশিল্প অনুপ্রম সুন্দর ছিল। একা।, বিষ্ণু, শিব, বৃদ্ধ, প্রজ্ঞা-পাৰ্মিতা প্ৰভৃতি আক্ষ্যা ও বৌদ্ধ দেবতাৰ মুক্তি হইং বেশ বনা যায়। প্রস্থা-नारनव मन्दित अकृषि ध्यथान लक्ष्मीय বিষয়—ভিনটি মন্দিরের বাবান্দায়, মন্দিরের গায়ে ও বাৰান্দাৰ আলিসাৰ পাথৰে ্থাদ। কৃষ্ণ-চবিত্তের ও বামায়ণের ছবি। ভাবতব্ধেও এত স্থল্ব বামায়ণ ও কৃষ্ণ-কথাৰ ছবি চিত্রিত হয় নাই। বিষ্ণুৰ মন্দ্রে সাছে কৃষ্ণ-কথার ছবি: এগুলি বড়ই ভগু অবস্থায় আছে। শিবেৰ ও बकात मन्दित आहा, तामाग्रह्म छवि। ব্ৰহ্মাৰ মন্দিৰ্টিও বিশেষ ভগু অবস্থায়। মোটেব উপর রামায়ণটিব অনেকথানি, এই ছবিতে আমরা পাই। যবদীপে প্রচলিত রামায়ণ আমাদেব সংস্কৃত রামায়ণ হইকে খুটিনাটি ছুই একটি বিষয়ে একটু পৃথক্। তবে আমাদের এই বামায়ণের ছবি দেখিয়া গল্ল বুঝিতে কোনও কট্টহয় না। প্রস্থানানের ভাস্কর্যার ধ্বণ ব্যবহুরের মতন হইলেও একটু আলাদা। আমাদের দেশে যেনন আমব। শ্রীবামচন্দ্রকে সন্মান কবি, যব দ্বীবায়েবা ব্যবহুই তদ্ধপ কবিয়া আসি-



বাসচক্রেব মুগ্যা

রাছে—ইহাব মূর্ত্তিও অতি স্থাদৰ করিয়। আকিয়াছে। প্রস্থানানের শিল্প হিন্দু-শিল্পজগতে প্রথম খেণীব শিল্প। আমরা প্রস্থানানেৰ মন্দিবের ওবামায়ণেৰ কয়েকটি চিত্র এই প্রবাদ দিলাম।



# আধনিক কেমের

প্ৰায় ভোষাদেব কাছে ছিদ্ৰ (कट्यताव विभव विशिष्टि। কড়ক ওলি আন্তয়ঞ্জিক দেখি থাকালে ব ওম'নে উহাব ব্যবহার এক কপ উঠিয়া গিয়াছে। অল সময়েৰ মধ্যে উজ্জল ছবি তলিবাৰ উপয়ক দ্বিনিষ ছিদ্র কেমেবা নহে, কাবণ, উঠাতে প্রভিচ্নবি বছট কাণ থাকে। খব কম সমযেব মধ্যে চট্ৰণত ছবি ভলিতে ইইলে কেমেবাৰ ভিত্তে মথেগ আলোক চটো কা**ভে**ই, লে**ল** না হইলে চলে না । এ সম্ভ কবিণে লেম্ব কেমেবার প্রচলন इक्राएक धवर छेकान धरनक छेब्र । ५ ३ हेगारक ।

আ,জুবাল ভাগ ভাগ কেমেবাভি যে সমস্ত লেকা বাবস্ত ২গ, ভাষানের গঠন অভীব জটিল এবং উহা কৈমাৰ কৰিতে মণি উক্ত শ্ৰেণীৰ মন্ত্ৰপাহিব প্রয়োজন হয়। উচাদের কারাপ্রণালী রাক্তি

লেকোৰ সংখ্ इडेवार्ट्ड । নিয়েৰ ছবিঞ্লি নে থিলেই

न श्रीट्रफ मश्रक (११५८ কেনেবাং এই ছয় প্রক াল্লবিস্তব ব্যবস্ভ ইন্তা থাবে। তবে ইহালেব কেনিটাই একা বাবজ হল না। চাব হইতে আটিখানা লেন্দের সংযোগে যে াগিব (Compound) লেন্দ তৈয়াৰ হয় ভাহাই এখন ভা वावकः ध्रेमा थारक। भवश्रेष्य (२ मः ७ ० मः ছবিগুলি ইইডেই বভ্নানেব ভাল ভাল যৌগিক লেক্ষের গঠনপ্রণালী ব্রিভে পারিবে।

এইকপ জটিল লেন্স ব্যবহার কবিবার প্র কি? একথান! সহজ, সরল, মৌলিক লেন্স ব্যবহার ক্রিলেও ভ চলে। কিছু ভাগু হুইয়া উঠে



युव्यवना







কীৰমধ্য

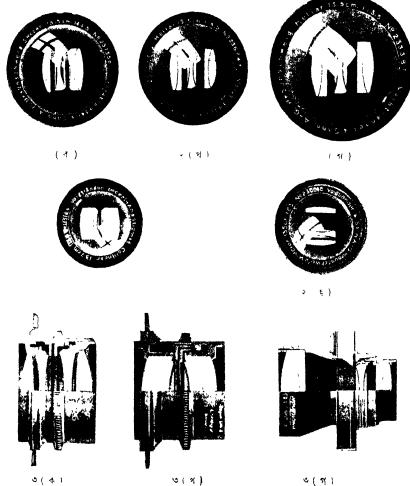


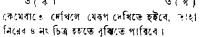
मग्राको :



হইলে লেশ সম্বন্ধে একটা সেটোস্টি বৰংমৰ ধাৰণা ३**८**श्चा मुक्काद । एवम भाषात्रपारः । इञ्चेत्रात ত্রমধা (Convex) এবং পাণ্যবা (Concave) ! সমতল জমিব (plane surface) সহিত এই ছুই

ন। ঐকপ মৌলিক লেন ব্যবহার করিলে প্রতি-চ্ছবিত্তে ন'নাপক।ব দেশে দেখা ব্যা। একথানা কাগ্রেছ ডোট ডোট সম্চতুকোণ আবিয়া উহাব প্রতিচ্ছবি প্রথম তিন প্রকাবের মৌলিক লেন্সসংযুক্ত





প্রতিক্ষবির এই কপ বিক্লভিকে ইংবাজীতে Barrel distortion বামুদক বিক্লভি বলে। ১নং গ

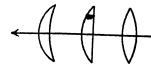




এবং ১নং গ লেন্সকে কেমেরাতে উন্টাইয়া বসাইলে এই বিক্লতি অক্স আকার ধারণ করে। নিম্নের ছবি ংইতেই তাহা বুঝিতে পারিবে।

পরিচয় তোমরা নিশ্চয়ই পাইয়াছ। বড বড বাভিব ঝাড়ের গায়ে ঝুলান যে সমস্ত কাচের কলম (prism) थाटक. जाहारनत मधा निया চाहिरल माधातन





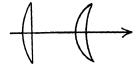


৫ নং

ইংবাদ্ধীতে ইহার নাম "Pin Cushion" distortion, বান্ধালাতে উহাকে সারন্ধ বিক্লতি মৌলিক লেন্ধ কেমেরাতে ব্যবহার করিলে তাহার বলিতে পার।

জিনিষকে যেরূপ বছৰণে রঞ্জিত দেখা যায়, সেইরূপ সাধারণ প্রতিচ্চবিও বছবর্ণে রঞ্জিত হইয়া উহাকে





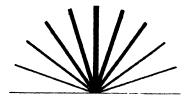


উপরিউক্ত বিক্লতি ভিন্নও আরও তিন প্রকাব বিক্তি এ সমস্ত মৌলিক লেন্স হইতে উৎপন্ন

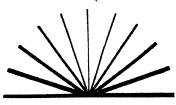
থাবাপ করিয়। ফেলে। প্র্যাম বিক্লতি ব্যাপাবটা আরও জটিল। উহা ব্যাতে হইলে একটি সম-



৭ (ক)—মূল চিত্র



৭ (খ)—ভিযাক বিকৃতি

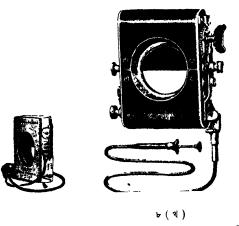


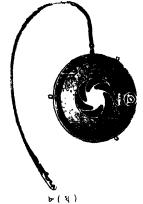
৭ (গ)—ভিৰ্য্যক বিক্লজি इंटेट भारत। इंडालिय इर्जाकी नाम इंटेल Chromatic aberration বা বৰ্ণ বিক্লভি,Coma বা প্র্যায় বিক্লতি এবং astigmatism বা তিয়ক বিক্তি। বর্ণ বিকৃতি কি প্রকারে ২য় তাথার

চতুভূজেৰ ভিতৰ কতকণ্ডলি স্মান কাল বিন্দু আঁকিয়। উহাকে একটি মৌলিক লেন্সবিশিষ্ট কেমেরার ভিতর দিয়া দেখ। দেখিতে পাইবে. অধিত চিত্ৰ ও তাহাব প্ৰতিচ্ছবিতে অনেক প্ৰভেদ রহিয়াছে। প্রতিক্ষবিতে দেখিবে, মাঝের বিন্দগুলি বেশ প্ৰিমার ও উচ্ছল দেখা ঘাইতেছে, কিছ কেমেবাব দিকের বিন্দুগুলি ক্রমেই অস্পষ্ট ২ইয়া গিয়াছে। ৬ নং চিত্র দেখিনেই ব্যাপারটা বেশ পরিষার বঝিতে পারিবে:

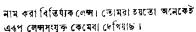
Astigmatism ব্যাপাবটা গুঝান সব চেয়ে কঠিন কাজ। ইহা বুঝিতে ২ইলে অন্ধচন্তের আকার

কতকগুলি মোটা কাল লাইন আঁকিয়। উহ। মৌলিক লেন্স বিশিষ্ট একটা কেমেরার ভিতর দিয়া পেণ। দেখিতে পাইবে যে, খাডা (Vertical) লাইনগুলি এবং লম্বমান (Horizontal) লাইনগুলি কখনও একসকে সমান ও পরিষ্কাব ভাবে দেখা যায় না। যখন খাড়া লাইন পরিষ্কাব দেখিতে পাওয়া যায় তথন লম্বমান লাইনগুলি অস্পষ্ট হইয়া উঠে, এবং লম্বমান লাইনগুলি যখন পবিষ্কার থাকে, খাডা লাইনগুলি তথন আবৃছা ইইয়া যায়। প্রকৃষ্ঠায় ৭ (ক, ৭ (খ), ৭ (গ) ছবি হইতেই ব্যাপাবটা বেশ ব্রিতে পারিবে। আলোকচিত্রের এই বিশ্বন্থিক সংশোধন করা বড়ই কঠিন কাজ। বছকাল পর্যান্ত ইহা একরপ অসাধাই ছিল, কিছু বিজ্ঞানেব উন্নতিব কলে বস্তানেন ইহা সংজ্ঞাপাই হইয়া গিয়াছে। আধুনিক যে সমন্ত লেকে এ দোসকে সংশোধন কবা হইয়াছে ভাহাদিগকৈ Anastigmat বা বিভিয়ক লেকা বলে। সাধাবণ সেকা অপেকা ইহাদের দাম অনেক বেশী। Zeiss কোম্পানিব "T'essar" নামক লেকা, Voigtlander এর "Collinear," Goerz এর 'Dagor," Ross এব "Homocentric," Dallmeyer এর "Pentac" প্রভৃতি খুব





b o computer



লেন্ধতর প্রই কেমেরার সব চেয়ে দবকারী জিনিস হইল Shutter বা বন্ধনা। কেমেরার মুখ সব

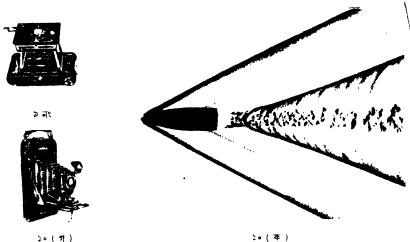


b ( 8 )

नगरप्रहे वस थारक. ७४ यथन जालाकरनत श्रामन হয় তথন একটা নির্দিষ্ট সময়ের জন্ম থুলিয়া আবার বন্ধ হইয়। যায়। বন্ধনী সাধারণত: তিন প্রকার: (১) লেন্সের সামনে বা পিছনে(Thornton-Picard Shutter),প্লেটের সামনে (Pocal plane shutter) এবং (৩) লেন্সের মধ্যে (diaphragm shutter)। প্রথম প্রকাবের বন্ধনী আজকাল বড একটা ব্যবহার হয় না। ইহাতে একটা কাল পদ্ধার মধ্যে বাড়ানো ক্যানো খাইতে পারে এইবপ একটা লম্বছিন্ত (horizontal slit) থাকে। আলোকনের

তবে সেটা কেমেরার পশ্চাৎ ভাগে থাকে এবং প্রায় প্লেটের গা বাহিয়া চলে। এই প্রকার वसनी नवटहरव नामी अवर कार्याकत्री, दवनी नात्मत ুকেমেবাতে ইহাই সাধারণত: লাগান থাকেন ততীয় প্রকার বন্ধনী তৈয়ার করা অপেকারত সহজ এবং আজকালকার কেমেরাতে ইহাই সবচেয়ে বেশী বাবহার হয়। ৮ (ক), ৮ (খ), ৮ (গ), ৮ (ঘ), ৮ (৬) ছবিগুলি ইইতেই বিভিন্ন প্রকার বন্ধনীর আভাষ পাইবে।

চলক্ত জিনিবের ছবি তুলিতে হইলে জ্বতগতি



>0 ( 51 )



১০ (খ)

সময় সেটা লেকের সত্মগ কিখা পিছন দিয়া জভ চলিয়া যায়। २नः वसनीन 'এই প্রকারেরই. বিশিষ্ট বন্ধনীর প্রয়োজন। তাহা না হটলে ছবি আব ছা (flurred) হইয়া যাইবে। সাধারণ রাস্তায় লোকজন চলাফেরা করিতেছে এমন অবস্থায় ছবি তুলিতে হুইলে 🔆 হুইতে 😽 সেকেও আলোকন দরকার, অর্থাৎ এতটুকু সময়ের মধ্যে वसनो भुलाव थूलिय। ज्यावात वस इख्या हाहै। আরও ক্রতগতি বিশিষ্ট জিনিষের জন্ম আরও কম আলোকনের প্রয়োজন, অর্থাৎ কেমেরার প্রতিচ্ছবিতে যে জিনিবের স্থানচ্যুতি (displacement) যত ভাড়াভাড়ি হয় ভাহার স্থির ফটো ভুলিতে তত কম সময়ের দরকার হয়। ছেলেরা मार्ट इटीइटि क्रिएड इंश्र क्या दे रहेल 🚣 সেকেণ্ড, ঘোড়া দৌডাইতেছে ইহাৰ জ্জ

<sub>জনিত</sub> হইতে ডুট্ড দেকেও, মোটর খুব জ্বুভ চলিতেছে ইহার জন্ম চুইত হুইতে হুইত সেকেও প্রয়ম্ভ আলোকনের প্রয়োজন হয়। মোটরের গতি ঘণ্টার ২৫০ মাইলের বেশী আমাজা প্যান্ত হয় নাই। কিন্তু পথিবীতে এমন অনেক জিনিষ আছে যাহাদের গতির তলনায় মোটরের এই ঘণ্টায় ২৫০ মার্টল অতি অতি সামার। পারার (mercury) উপবি-ভাগে যন্ত্রের সাহায়ে যে ঢেউ উৎপন্ন করা যায়, উহা च्यानक मन्नय धन्ताय १०० माहेश भयास हाल। ताहे-কেলের গুলি ঘণ্টায় ১৫০০ মাইল চলে। এই প্রকার ভীবগতিবিশিষ্ট জিনিষের পরিষার ফটে। তলিতে इटेर्ल उक्त केल्वल इटेर्ड इक्त केल्लल सिर्¢ ख আলোকনের প্রয়োজন। এত কম সময় পালোকন সাধারণ বন্ধনীর সাহায়ে হওয়া অস্ভব। তাই বিশেষ প্রকারের যন্ত্র-পাতির প্রয়োজন হয়। ১ নং ও ১০ (ক), ১০ (গ), ১০ (গ) চিহ্নিত ছবিগুলিতে এ সমস্ত ভীত্রগতি বিশিষ্ট জিনিসের কেমন পরিষ্কার ছবি উঠিয়াছে, ভাহা দেখিতে পাইবে। বাইফেলের শুলির পিছনে যে ধ্যার মত জিনিয দেখিতেছ, তাহা বাস্তবিক ধ্যা নহে, উহাচাপ দেওয়া বাভাগের শুর (compressed air col-্যায়া।), ইচা চইভেই পরে শব্দ-ভরকের উৎপত্তি হয়। বেমেরাতে আর একটি দরকারী জিনিষ আছে, যাহা হয়ত তোমরা অনেকেই লক্ষা করিয়াছ। ভাহা হটতেছে diaphragm বা অক। (১১ নং চিত্ৰ) ইহা দাতু-পাত্র নিম্মিত একটি ছিন্ত বিশেষ এবং ইচ্ছা



১১ নং

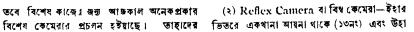
করিলে ভোট-বড় করা যায়। যে সমন্ত আলোক-রশ্মি কেমেরার ভিতর প্রবেশ কবে, তাহাদের স্কলকেই অক্ষেব ভিতর দিয়া যাইতে হয়। প্রত্যেক কেমেরাতেই অক্ষের আফ্রতির একটা পরিমাণ বুকাইবার জন্ত কতপ্রলি অম (figure) লেখা থাকে। যেমন বি'5, f5'5, f6'3 প্রস্থৃতি। অক্ষের আকার বাডাইয়া কমাইয়া কেমেরার ভিতর আলোকের পরিমাণও বাড়ান কমান যাইতে পাবে। তির পর আছটি যত ছোট থাকিবে, অক্ষেব আরুতি তুলনায় তত্ত বড় হইবে। বি-5, কি চ এব প্রায় বিশুল এবং f6'3 র প্রায় চতুগুণ। যে লেকা যত বড় অক্ষেব ভিতর দিয়া পরিছাব ছবি তুলিতে পারিবে, ভাহার তত দাম ও কদর বেলা। অক্ষেব আরুতি ছোট কবিলে প্রভিছ্কিব স্ক্রেই হয় বটে কিন্তু তাহাতে আলোকের অভাব ঘটে, এবং সেজন্ত এইক্স অবস্থায় ফটো তুলিতে অধিকক্ষণ আলোকনের প্রয়েজন। বড় অক্ষবিশিষ্ট লেকোর সাহায়ে খুব ভাড়াভাডি ফটো ভোলা যায়।

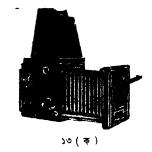
লেন, বন্ধনী, অক প্রভৃতি ছাডাও কেমেরাতে আবও একটি দরকাবী দ্বিনিষ থাকে যাহাকে (Bellows) বা হাপর বলে। ইহা সাধারণত: কাল রং এর চামডা খাবা নিমিত হয় এবং ভাজ করা बाटक। शापटतत माशाया अबु त्मरमत यथा निया যে আলোক আদে তাহাই প্লেটের উপর গিয়া পডে. বাহিরের অন্ত সব আলোকই ইহাবারা প্রতিক্ষ হয়। তাহাতেই পরিদার ছবি উঠে। লেন্সকে আগে পিছে চালাইয়া যখন স্থিতিনিকেশ (focussing) কবা হয়, তথন হাপরও তাহার সঙ্গে বাড়ে-কমে। হাপরের একদিক লেন্সের সঙ্গে এবং অন্ত দিক প্রেটের **আ**ধারের সক্তে আটকান থাকে। হাপর বহু প্রকারের হয়। পর প্রার কেমেরার ছবিওলি হইতেই উহাদের রক্মারীর কত্ত্রটা নমুনা পাইবে। আধুনিক কেমেরা সাধাবণত: চুই প্রকার হটয়া থাকে —। ১) প্লেট কেমেরা ও (২) ফিলা কেমের।। প্রথম প্রকারের কেমেরাতে "প্লেট" অর্থাং আলোকশোনী (light sensitive) মশালা মাখান এক প্রকার পাতলা কাচের পাত (sheet glass) ব্যবহৃত হয়। দিতীয় প্রকারের কেমেরাতে কাচের পরিবর্তে স্বচ্চ সেল্লয়েডের পাতলা চাদর **থাকে।** কাজেই, উহাকে ইচ্ছামতন গুটাইয়ারাখা ঘাইতে পারে। গভ তিন চার বংসর ধরিয়া কেমেরার গঠন-প্রণালীর এত উন্নতি হইয়াছে যে, জাজকাল প্লেট কেমেরাতেও ফিল্ম ব্যবহার করা যায়। এবং ফিল্ম কেমেরাভেও প্রেট লাগান চলে। কান্দেই, পর্বের মত কেমেরাকে আর ছই প্রকার শ্রেণীতে বিভাগকরাচলে না।

# শিশু-ভারতী

বিশেষ কেমেরার প্রচলন হইয়াছে। ভাছাদের ভিতরে একথানা আয়ন। থাকে (১৩নং) এবং উহা মধ্যে নিম্নলিপিত কয়েবটি উল্লেখযোগা:--

(১) Focal Plane Camera—ইহাতে শ্বিতি निक्दिना विकास शास्त्र स्था ना। ( > २ नर )







১২ (ক) ইহাতে খুব বড় অঞ্চবিশিষ্ট লেন্স থাকে এবং



১২ ( খ ) ২নং বন্ধনী থাকে সংবাদ-পত্ৰেব চিত্ৰ সংগ্ৰহের



**১২ (গ)** জ্ঞাই ইয় বিশেষভাবে ব্যবহৃত হয় এবং এজ্ঞ অনেক সময় উহাকে Press কেমেরাও বলে।







## াঞ্জিক কেন্তেন্দ্রা ++-

হইতে প্রভিফ্লিড প্রভিচ্ছবি আলোকনের পূর্ব- কেবেরাই সব চেরে দামী এবং কার্যকরী। যে



28 (金)

মুহূর্ত্ত পর্যান্ত সোজা ভাবে উপর হইতে কিছা পাশ হইতে দেখা বাষ। আলোকনের মুহূর্ত্তে উহা স্তীং-এর সাহাব্যে চট্ করিয়া উপরে কিছা একপাশে



**ኦ**¢ (ኞ)



২৪ (খ)

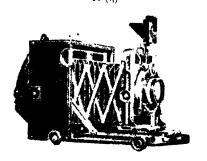
দরিয়া যায় ; কাজেই লেক হইতে আলোক-রশ্বি দোকা আদিয়া প্লেটের উপর পড়ে। একাডীয়



১৫ (গ)



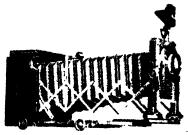
**30** (4)



ንው (ቋ)

- 889 --

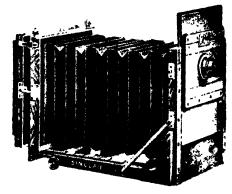
# +++ শিশু-ভারতী +++++

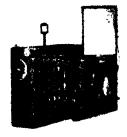


১৬ (ৰ)



২৩ নং—আমেরিকার বৃহত্তম কেমেরা





জন্ম এক প্রকার কেমেরা



১৮ নং



২• (ৠ)



আধুনিক কেমেরা





₹• (₹)

किंग वावका थारक।

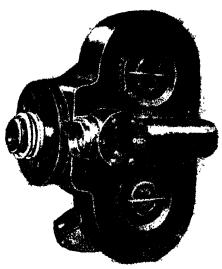
চতুর্দ্ধিক মুরাইবার এবং হেলাইবার নানা প্রকার

(৩) Stereoscopic Camera বা যুগা কেমেরা (১৪ নং)। ছই চোথ দিয়া দেখিলে যেমন ছনিয়ার বাবতীয় জিনিবের আকার এবং অবস্থান বুঝিতে পারা যায়, তেমনি ছই চক্ষের মত দ্বে অবস্থিত যুগা কেমেরার সাহায়ে। জোড়া ফটো তুলিয়া উহানিগকে Stereoscope নামক যন্ত্রের সাহায়ে যুগাণং একসঙ্গে দেখিলে উহার আকার ও অবস্থানের একটা স্কলাই ধারণা মনের মধ্যে আনিরা উহাকে বাস্তব বলিয়া মনে হয়।

কোন সময় চলস্ত জিনিধের ছবি তুলিতে ইহার মতন এমন চমংকার কেমেরা জার নাই।

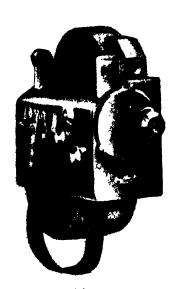
(৬) Studio Camera বা পেশাদার কেমের।
১৭ নং। ফটোগ্রাফ তৃলিয়া যাহাদের জীবিকা-নির্বাহ
করিতে হয় ভাহাদের জক্ত এই কেমেরা ভৈয়ার
হয়নাছে। ইহা সাধারণতঃ খুব বড় জাকারের
হয় এবং খুব মজব্ত ত্রিপদের (Tripod stand)
উপর ব্রুয়াইতে হয়। ইহাতে ছোট বড় বছ
জাকারের ফটো ভোলা বায় এবং ইহাতেও জরীপ
কেমেরায় মতন নানা প্রকার জটিল ব্যবস্থা থাকে।

(1) Detective কেমেরাবা গুরু কেমেরা—



**79 (**4)

- (৪) Miniature Camera বা অণু কেমেরা—
  (১৫ নং)। সর্বাদা পকেটে কেমেরা লইরা চলাকেরা
  করিবার অবিধার জন্ত ইহার কৃষ্টি হইয়াছে। ইহার
  ছবি সাধারণতঃ দৈর্ঘ্য ও প্রাস্থে এক ইঞ্চির বেশী
  হয় না। পরে উহাকে যন্তের সাহায়ে বড় করা
  চলে।
- (t) Field Camera বা জরীপ কেষেরা (১৯ নং)। ইহাতে পুর লয়া হাপর থাকে এবং



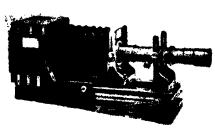
75 (4)

- (২৮ নং)। অঞ্জের অলক্ষ্যে ছবি লইবার ক্ষ্ম ইহা ব্যবহৃত হয়। ইহা দেখিতে কেমেরা হইতে সম্পূর্ণ বিভিন্ন প্রকারের থাকে। কথনও ঘড়ির মড, কথনও দুরবীশের মত ইত্যাদি নানা প্রকারের হয়।
- (৮) Cine Camera বা চলচ্চিত্তের কেমেরা— (১৯ নং)। ইহাতে বান্ধান্ধোপ বা চলচ্চিত্তের ছবি লওয়া হয়। ইহার সহচ্ছে বিশদ ভাবে পরে ভোমাদিগকে স্মারও স্মনেক কথা বলিব।

### শিশু-ভারতী ++++

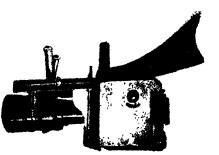
কেমেরা সচরাচর জনসাধারণে (amateur) ব্যবহার करत. छाशानिशत्क Hand Camera वरन। এ नगरकत बावहात थ्व नहक । Hand Camera नीना

এসমন্ত বিশেষ প্রকার কেমের। ছাড়াও যে সব তুলিতে হইলে অণুবীকণ কেমেরাও (২২ নং) কখন क्षेत्र रावश्रुक इश्रा मार्किन गवर्गस्यत्वेत अजीत्मन কাজের জন্ম সম্প্রতি একটা কেমেরা তৈয়ার





२५ (क)





२५ (१)

२५ ( ४ )

প্রকারের হইয়া থাকে (২০ নং)। খুব দ্রের হইয়াছে মাহা উচ্চতায় ৮ ফিট এবং লখায় ১৩ জিনিবের ফটো তুলিতে হইলে দুরবীকণ কেমেরা ফিট। এই অতিকাম কেমেরাটার ছবি তোমরা

(२) नः) এवः चिक कुछ विनियंत्र विक करिं। इन्हे गुर्शेत २० नः हिस्त दिश्य गाहरव।

纖





# পৃথিবীর ইতিহাস—মিশর

মিশরের ধর্ম, সাহিত্য ও ললিতকলা

সব প্রাচীন জাতির মধ্যেই ৪৬০ পূচার পর পৃথিবীর সম্বন্ধে অঙুত ধারণা দেখিতে পাওয়া যায়। স্বভরাং মিশরবাসীদের করনা যে, আমাদের কাছে **ষ্মন্তত ঠেকিবে ভাহাতে আন্চর্যা কি ! কেহ** কেহ ভাবিত, আকাশটা বুৰি একটা মন্ত গৰু, পৃথিবীর পূর্বপ্রান্তে ভাহার পিছনের এক পা ও পশ্চিমপ্রান্তে সামনের এক পা এবং পৃথিধীর মাঝে আর চুই পা রাখিয়া দাড়াইয়া আছে। গরুটার বকে আছে নক্ষত্রগুলি। (क्ट (क्ट আবার মনে করিত, আকাশটা আর কিছুই না, একটি দ্বীলোক। সে পূর্বব্যান্তে পা রাখিয়া পশ্চিমপ্রাস্তে হাতে ভর দিয়া ঝুকিয়া দাভাইয়া আছে। কাহার কাহার আবার ধারণা ছিল আকাশটা একটা সমূত্র—পৃথিবীর চারিপ্রাস্তে চারিটি শুস্ক ভাহাকে পৃথিবীর উপর ভূলিয়া ধরিয়াছে। व्याजिमन श्रांतिय त्नोकाय छित्रा शुक्क इटेएड পশ্চিম্দিকে যান, ভার পর সমুদ্র হইভে পৃথিবীর নীচের একটা নদী বাহিয়া আবার প্রদিন স্কালে পৃথিবীর পূর্বপ্রাম্ভে উপস্থিত হন। স্বাচীর প্রারম্ভে কেবল এই মহাসমুক্তই বর্ত্তমান ছিল। কালক্রমে সেখানে একটি ফুলের আবির্ভাব হইল। এই ফুল इहेट पूर्वात्मरवत अन्त्र हम। पूर्वात्मरवत ठातिष्ठि সম্ভান জ্যো—স্থ (Shu), টেফ্স্ট (Tefnut) কেব্ (Keb) এবং ছট (Nut)। স্থ এবং টেফ্ ছট কেবের বুকের উপর দাড়াইয়া হুটকে তুলিয়া ধরিলেন।

কেব হইলেন পৃথিবী, স্ট আকাশ আর স্থ এবং টেম্ফুট্ বায়ুমগুলী। কেব্ এবং সূট্

অতি প্রাচীনকাল হইতে একটা বিশ্বাস চলিয়া আসিতেছিল যে, পাতালপুরীতে মৃতব্যক্তিদের রাজ। ছিলেন ওসিরিস্। স্থলেবের পর ভিনিই পৃথিবীর রাজা হইয়াছিলেন। তাঁহার ভগিনী আইদিদ্ ছিলেন ভাঁহার রাণী। খুব ভাল রাজা হইলেও ভাই সেটের সঙ্গে তাঁহার ছিল শক্তভা। সেট্ ভাঁহাকে হত্যা করেন। তথন রাণী আইসিস স্বামীর মৃতদেহের অস্ত্যেষ্টিক্রিয়ার জন্ত শুগালদের আছবিদের (Anubis) সাহায্য গ্রহণ করেন। আইদিদ এমন শক্তিশালী মন্ত্রোচ্চারণ করেন যে, ওসিরিস্ পুনজ্জীবন প্রাপ্ত হন এবং স্পরীরে পাডাল-পুরীতে গমন করিয়া সেধানকার রাজা হন। किছूनिन পরে আইসিস্ হোরাস্ (Horus) নামে একটি পুত্র প্রদেব করেন এবং গোপনে ভার্ছাকে লালন-পালন করেন। বয়:প্রাপ্ত হইলে হোরাস সেটের সঙ্গে যুদ্ধ করেন এবং তাঁহাকে পরাস্ত করিয়া পিতৃরাজা লাভ করেন। তথন সেট্ দেবতাদের काष्ट्र चिख्यांत्र करत्रन ८२, ट्यात्रात्र खात्रक, कारचह তাঁহার পিতৃসিংহাসনে কোন অধিকার নাই। বাণীদেব থথের (Thoth) সাহায্যে হোরাস তাঁহার অল্লের পবিজ্ঞতার প্রমাণ দেন। অনেকে আবার মনে করিত ধে, প্রকৃতপক্ষে ওসিরিসেরই বিচার হয় এবং তিনি জয়ী হন।

এই সমস্ত দেবদেবীর মধ্যে কেহ কেহ মিশরের প্রধান দেবভারণে মন্দিরে মন্দিরে পূজা পাইতে লাগিলেন। তাঁহাদের মধ্যে আবার সর্বপ্রধান হইলেন স্ব্যাদেব। কোথাও তাঁহার নাম হইল রি (Re), কোথাও বা হোরাস্। ওলিরিসের পূজারও বহল প্রচলন হইয়াছিল। আর একটি প্রধান দেবতা ছিলেন মেম্ফিল সহবের "টা" (Ptah) দেব। তিনি ছিলেন মিশরের বিশ্বকর্মা। ইহা ছাড়া ভির ভির সহরে ভির ভির ছানীয় দেবতার প্রাধান্ত ছিল। যথনই কোন সহর রাজনৈতিক কারণে প্রাধান্ত লাভ করিত, সঙ্গে সঙ্গে সেথানকার স্থানীয় দেবতার সন্মান ও প্রতিপত্তি বৃদ্ধি পাইত।

এই সমস্ত দেবদেবীর মৃধি খুবই সাধারণ ছিল।
কথন কখন মিশরবাসীরা নানা জীবজন্ততে তাঁহাদের
প্রকাশ দেখিতে পাইত। কাজেই, সেই সমস্ত
জীবজন্তর খুবই শ্রহা ও সমান ছিল। তবে
ভাহাদের পূজা প্রথম প্রথম প্রচলিত হয় নাই—
মিশরের ইভিহাসের শেবভাগেই ইহার প্রচলন
হয়।

পিরামিড রাজাদের সময় সূর্যাদেব 'রি'র বিশেষ প্রতিপতি দেখা যায়। জমিদাবতক্রের সময় তিনি সর্ব্বপ্রধান দেবতা বলিয়া পরিগণিত হন। যে সহরে যে দেবভাই থাকুন না কেন, তাঁহার পুরোহিভেরা তাঁহার সন্মানের অংশ পাইবার জন্ম প্রচার করিতে লাগিলেন যে, তাঁহাদের দেবতাও প্রকৃতপকে সূৰ্বাদেৰ 'রি'ই, যদিও তাঁহারা সেই দেবতাকে ভিন্ন নামে ডাকিতেন। এইভাবে থিব স সহরের স্থানীয় দেবতা আমনের (Amon) পরোহিতেরা তাঁছাকে 'রি'র অবভার বলিয়া প্রচার করিলেন ও 'আামন রি' এই নামে অভিহিত করিতে লাগিলেন। এই সময় 'ওসিরিসে'র প্রাধাক্তও খুব বৃদ্ধি পাইল। তাঁহার আদিম পীঠস্থান আগবাইতস্ (Abydos) সহর মিশরের প্রধান তীর্থে পরিণত হইল। এখন হইতে नवात्रहें चाकाक्का हहेन त्य, मृज्युत शत च्यावाहे छत्न ওসিরিসের মন্দিরের প্রান্ধণে যেন তাঁহার সমাধি নিৰ্দ্মিত হয়। ভাহা সম্ভব না হইলে মৃতদেহ কিছবিনের জন্ম এখানে আনা হইত: ইহাও সম্ভব

না হুইলে অস্বতঃপক্ষে একটা খৃতিফলকও এবানে প্রোধিত হুইড।

যথন থিব্দু সহবের রাজারা বিশাল সামাজ্যের প্রতিষ্ঠা করিলেন, তথন এখানকার দেবতা "আামন" মিশরের প্রধান দেবতা বলিয়া পূজা পাইতে আরম্ভ করিলেন। নগরে নগরে তাঁহার জন্ত ক্ষমর ফ্ষমর মন্দির নির্মিত হইল। এমন কি তাঁহার পুরোহিত-দের ক্ষমতা ও প্রতিপত্তি বিশেষ বৃদ্ধি পাইল। মিশরের বাহিরেও আামনের পূজার প্রচলন হইল।



সিংহাসনে বসিয়া রাজা টুটেন্ধ্যায়ন এবং ওাঁহার সন্ধৃথে দাঁড়াইয়া স্থগদ্ধ তৈল হাতে রাণী অক্সম্পাটন। উপরে স্থাদেবতা আ্যামন্ তাঁহার রশ্মিরূপ অসংখ্য হাত বাড়াইয়া রাজাকে ও রাণীকে জীবনের শ্রেষ্ঠ দান দিতেছেন।

ইথ্ ছাটন্ রাজা হইরা কিছ আামনের ও সক্ষে বছান্ত দেবতার পূজা বছা করিয়া দেব। এমন কি বেখানে বেখানে ওাঁহার নাম ছিল, ডাহাও তুলিয়া কেলেন। এই সমত দেবতাদের প্রিবর্ডে ডিনি "আাটন" নামে স্থাগেলকের পূজা প্রবর্তন করেন। এই স্থাবের "আাটন" সমত প্রবির সমত প্রাচীন জগতের একমাত্র দেবতা বলিয়া

ইপ্রাটন প্রচার করেন। প্রকৃতপকে জগতের ইতিহাসে ইপ্রাটনকে প্রথম একেশরবাদের প্রবর্তক বলা বাইতে পারে।

ইশ্ ছাটনের ধর্মবিশ্বব তাঁহার প্রজারা গ্রহণ করে নাই। তাহাদের মধ্যে গোপনে অ্যামনদেবের পূজা চলিতে থাকে। ইগ্ ছাটনের মৃত্যুর পর তাঁহার জামাতা টুটেন্থ্যামন আবার অ্যামনের প্রজান্ত পূজা প্রচলিত করেন। রাজা ছারম্ছাবের সময় অ্যামনদেবের পূর্ব প্রতিপত্তি সম্পূর্ণরেপ পূন: প্রতিটিত হয়। সঙ্গে সঙ্গে হয়। প্রভাপ্ত হয়।

ষিতীয় র্যামনেদের সময় হইতে অ্যামনদেবের ক্ষমতা ও সমৃদ্ধি অসাধারশঙ্কপে বাড়িতে আরম্ভ করে। এই সময়ে বাল্, হুটেথ প্রভৃতি অনেক বিদেশী দেবদেবীর পূজাও প্রচলিত হয়। এখন কুমীর, ভেড়া, শিয়াল, বাড় (Apis Bull) প্রভৃতির মিশর ইইডেই পূজা আরম্ভ হয়।

এই সমন্ত নানা দেবদেবীর পূজার জন্ত মিশরের রাজরা ক্ষমর ক্ষমর মন্দির নির্মাণ করিতেন। প্রত্যেক সহরেই অসংখ্য মন্দির ছিল আর এই সমন্ত মন্দিরেব ব্যয় নির্বাহের জন্ত রাজারা অনেক বহুমূল্য উপঢৌকন ও জার্মীর দিতেন। মিশরবাসীরা মনে করিত বে, দেবতাবা মন্দিরেই বাস করেন, কাজেই ধনীব বাসগৃহে যে সমন্ত বন্দোবন্ত থাকিত মন্দিরেও সেই সকলেরই ব্যবস্থা করা হইত। যথন যে সহর রাজধানী হইত তথন সেখানকার স্থানীয় দেবতা ও তাঁহার মন্দিরের সমুদ্ধি বিশেষরূপে বৃদ্ধি পাইত।

পূজার পদ্ধতি খুবই সাধারণ ছিল। মাছুবের যাহা দরকার দেবতাদের দেবার তাহাই উৎস্প করা হইত। তাহাদের ভোগের জন্ম প্রচুর পরিমাণে থাছ, পানীয় এবা ও বসন-ভূষণ দেওরা ইইত। তাহাদের চিন্তবিনোদের জন্ম নাচ-গানেরও বন্দোবন্ত করা হইত। মাঝে মাঝে জাঁকজমক করিয়া বিশেষ উৎসবও পালন করা হইত। এইসব দেবতাদের পূজার জন্ম পুরোহিত ছিল। জীলোকেরাও হাখোর, নিট প্রভৃতি দেবীর দেবার নিযুক্ত ইউত। ভাহাদের কাজ ছিল মৃত্যুবীত করা।

সাত্রজ্যের মূগে দেবোত্তর সম্পতির পরিমাণ বাড়িয়। বাওরাতে পুরোহিতদের রাজনৈতিক ক্ষমতারও বিশেষ বৃদ্ধি হইল। এতদিন ভির তির মন্দিরের পুরোহিতদের পরম্পরের মধ্যে কোনরপ সম্বন্ধ ছিল না। এখন থিব্দের আ্যামন-দেবের প্রতিপত্তি ও তাঁহার প্রধান পুরোহিতের ক্ষমতা অসাধারণরূপে বৃদ্ধি পাওয়াতে অক্যান্থ সম্বত্ত মন্দিরের পুরোহিতেরা তাঁহার অধীন হইলেন। মন্দিরের ঐশর্থের বৃদ্ধির সঙ্গে সংক্ষ প্রার প্রতিও অটিলতর ও কাঁক্ষমকে পূর্ণ হইল।

মিশরবাদীদের পরলোকের বিষয়ে ধারণা ष्यत्वकी ष्रन्तहे ७ व्यक्ति। কিন্ত মিশরের ইতিহাস বুঝিডে হইলে ভাহা জানা দরকার। মিশরবাসীরা মনে করিত যে, মান্তবের জন্মের সকে সকে ভাহার দেহে প্রাণের সঞ্চার হয়। মৃত্যুর পর দেহ ও প্রাণ একসক্ষেই পরলোকে প্রয়াণ করে। ইহাছাড়া প্রত্যেক লোকেরই আত্মা আছে। তাহাদের ধারণা অহুসারে ছায়াও দেহেরই অংশ। ইহাদের পরম্পারের মধ্যে কি সম্বন্ধ ভাহা বুঝা যায় না। পরলোকের বিষয়েও ভাহাদের ধারণা অসম্বন্ধ ও পরস্পর বিরুদ্ধ। কথনও মনে করা হইত মিশরের পশ্চিমদিকে প্রেতলোক অবস্থিত। আৰার কথনও মনে করা হইত যে, পাতালপরীতেই মুতেরা বাস করে। নক্ষরখচিত রাত্রিতে কিন্ত তাহারা আবার ভাবিত বে, মৃত্যুর পর মাছ্য পাথীর রূপ ধরিয়া আকাশে উডিয়া যায় এবং ভগবান 'রি'র অহগ্রহে জ্যোভিষরণ ধারণ করে। এদিকে অনেক সময় আবার ভাহাদের মনে হইত যে. আকাশের উত্তর-পূর্ব্ব দিকে "মক্লজুমি" বলিয়া একটি দেশ আছে। মরণের পর মুভেরা সেখানে হথে স্বচ্ছদে বাস করে। সেধানে প্রচর পরিমাণে ধাক্তরত ত পাওয়া যায়ই : তাহা ছাড়া পথিবীতে মৃতের কবরে যে ভোগদ্রবা দেওয়াহয়, ভাহাও ভাহাদের ভোগে আসে। স্বাই যে এই পুণ্য-ভূমিতে আদিতে পারে, ভাহা নহে; কারণ ইহার চারিধারে মহাসমূত্র। কাঞ্পাধী অথবা বন্ধভাবাণর দেবভাদের অহুগ্রহ হইলে ভাঁহাদের সাহায্যে এখানে আসা ঘাইতে পারে। স্থাদেবও ৰাহাৰে ৰাহাকৈও ভাহার নৌভায় কৰিছা এখানে

### শিশু-ভারতী

পৌছাইয়া দিয়া থাকেন। তবে সাধারণত: পুণ্যাত্মারা একজন ধেয়ামাজির সাহায়ে এথানে আদিয়া থাকেন। পাপীদের কিন্ত, সে তাহার নৌকায় উঠিতে দেয় না। এইথানেই প্রথম পাপপুণ্যের প্রভেদ ও পরলোকের উপর কর্মফলের প্রভাব দেখা যায়।

পরবর্ত্তিকালে এই সমন্ত প্রাচীন বিশাসের সঙ্গে ওরিরিসের আখ্যান জুড়িয়া দেওয়া হয়। ওসিরিসেই সর্ব্বপ্রথমে প্রেতলোকে সমন করিয়া সেখানকার রাজা হন। বাঁহারা ওসিরিসের মত সংভাবে জাবন-যাপন করেন তাঁহারা মৃত্যুর পর ওসিরিসের মত সশরীরে অর্গে যান, এবং ওসিরিস্থ প্রাপ্ত হন। প্রকৃতপকে তাঁহাদের মৃত্যু হয় না। শুর্ এ পৃথিবী ছাড়িয়া তাঁহারা অনত্র গমন করেন। ভবে বাহাতে ওসিরিস্থ প্রাপ্তির বিষয়ে কোনরূপ বাধাবিদ্ধ না ঘটে সেইজ্বল্ঞ কবরের দেওয়ালে এই সমন্ত বিষয়ে মন্ত্রপুরাণাদি খোদিত করা হইত। পিরামিতের প্রবেশপথে এই সমন্ত মন্ত্রাদি, লিখিত দেখিতে পাওয়া যায়। সেইজ্বল্ঞ ইহাদিগকে "পিরামিডগ্রন্থ" (Pyramid) Tests) নাম দেওয়া হইয়াছে।

কিন্তু মজার কথা এই যে, যদিও মিশরবাসীরা মনে করিত পরলোক পৃথিবী হইতে অনেক দুরে, তবু দেহছাড়া আত্মা যে পরলোকে যাইতে পারে একথা ভাহারা ধারণাই করিতে পারিত না। কাজেই, দেহ যাহাতে নটু না হয় সেইজ্ঞ তাহা রক্ষার আবল বিশেষ যক্ষ লওয়া হইত। ঔষধাদির সাহায়ে ভাষাকে "মামি" (Mummy) করা হইত এবং যাহাতে কোন কারণে মামি বিনষ্টনা হয় সেইজ্রন্ত ক্ষর নির্মাণ করা হইত। নির্দিষ্ট দিনে মামিকে শ্বাধারে (Coffin) পুরিয়া প্রাধারে (Sarcophagus) রাখা হইত। আর মত ব্যক্তির বাবহারের জন্ম থাগ্যম্বা,পোষাক-পরিচ্চদাদি এবং সর্পাদি শত্তর কৌশল বার্থ করিবার জন্ম মন্তপ্ত যৃষ্টি ও তাবিজাদি রাখা হটত। আবার কখন কখন পাশের একটি ঘরে মুত্রাক্তির প্রতিমৃতিও রাখা হইত। যাহাতে বীতিমত ভোগদ্রব্যাদি দেওয়া হয় সেইজন্ম কবরের কাৰে পুরোহিতও নিযুক্ত হইত এবং কবরের বায় নির্বাহের জন্ম জায়গীরেরও বন্দোবন্ত করা হইত। অবশ্র জমীদার ও রাজারাজড়ারাই এতটা করিতে

পারিতেন। সাধারণ-লোকের পক্ষে এই সমস্ত বন্দোবন্ত করা অসম্ভব ছিল। ভাহাদের মাটির দেহ মাটিতেই মিশিত।

কালক্রমে মাহুবের মনে এই ধারণা বন্ধমল হইল যে, যাহারা ওসিরিসলোকে গমন করিয়া থা<del>কে</del> প্রসিরিসের মত তাহাদের বিচার হয়। বিচার করেন খয়ং ওসিরিস ৪২ জন কিছতকিমাকার দানবের সাহায্যে। এই ৪২ জন বিচারকের প্রত্যেকের কাছে মৃতব্যক্তি নরহত্যা, মিধ্যাভিযোগ, চৌর্যাদির এক একটি পাপের কথা অস্বীকার করে। নে সতা কি মিখাা বলিভেছে ভাহা নির্ণয় করিবার জন্ম তাহার হৃদয় ওজন করা হয়। মানদর্থের একদিকে থাকে ভাষার জনয় অক্সদিকে থাকে একটি পালক—কারণ পালককে সভ্যের চিহ্ন (Symbol) মনে করা হইত। যাহারা বিচারে পরাস্ত হইত, হয় ভাহাদিগকে চিরদিন আলোকবাভাস-শৃষ্ঠ কবরে কুধাত্য্বায় যন্ত্রণা ভোগ করিতে হইত, অথবা কিছতকিমাকার জলাদের হাতে সঁপিয়া দেওয়া হুইত। এই জ্লাদেরা তাহাদিগকে খণ্ডবিগণ্ড করিয়া ফেলিড। আর হাহারা এই পরীকায় উকীৰ্ চইতেন ভাঁহার৷ "সভাবাক" আখা৷ লাভ করিয়া স্বর্গস্থথ ভোগ করিতেন। এই ওসিরিস আখ্যান যে, মাছুবের সম্মুথে এক্টা উচ্চনৈতিক चामर्च चापन कवियाहिन. त्म विषय मत्मर नारे।

এদিকে পরলোকে শক্রর ভয়ও বিশেষ বাড়িয়াছিল। যাহাতে পরলোকে সে শান্তিতে ও স্থবে
না থান্তিতে পারে, এই সব শক্ররা সর্বনাই সেই
চেষ্টা করিত। এমন কি, তাহাকে বিনাশ করিতেও
তাহারা পরাত্ম্য হইত না। ইহাদের হাত হইতে
নিজ্ঞার পাইতে হইলে নানাবিধ যাত্মন্ত্র আওড়াইতে
হইত। এই সব মন্ত্রাদি এখন শ্বাধারের ভিতর
দিকে লিখিত আচে। অনেক সময়ে বিচারের চিত্রও
আবা হইত এবং বিচারের সময় যাহা বলিতে
হইবে তাহাও লিখিত হইত।

গুদিরিসের আগান বে উচ্চ নৈতিক আদর্শের করি করিয়াছিল, সাম্লাজ্যের যুগে বিকৃতির ফলে তাহা ইইতে ক্ষলের পরিবর্গ্তে কুফলই ফলিয়াছিল। প্রেতলোকের যাত্মন্তালির সংখ্যা ক্রমেই বাড়িয়া চলিয়াছিল। স্থানাভাবে এইগুলিকে আর শ্বাধারে লেখা হইত না। তাহার বদলে কাগজ্যের মোড়কে (papyrus roll) লিপিয়া কবরে রাখা হইত। এই

## পুথিবীর ইতিহাস-মিশর

ভাবে প্রেভগ্রের বা মৃতের পুস্তকের (Book of 'the Dead) বৃষ্টি হয়। ইন্দ্রমান ও ধাপ্লাবাজীর নাহায়েই এখন সম্ভ হুবিধা ভোগের ব্যবস্থা কর। হইরাছিল। বিলালী আমীর-ওমরাহগণ প্রেত-লোকেও শারীরিক পরিশ্রম করিতে নারাজ ছিলেন। কালেই বাহাতে "মক্ষভূমিতে" তাঁহাদের বাটিতে না হয় দেইজন্ত কবরে অসংগ্য প্রতিনিধির মন্ত্রপুত মৃতি রাণা ইইড। ইহারাই তাঁহার হইয়া সব কাজ कतिता हेशमिश्रक "উल्पर्जी" बना इहेज। कै:कि निया वर्गनाट्यत वत्नावछ व कत्। इहेग्राहिन । একটি মন্ত্রপুত পাথবের পোকা তৈয়ারী করিয়া 'মাসির' বুকের উপর কাপডের ভিতর রাখিয়া দেওমা হইত। যধন ওসিরিসের কাছে তাঁহার বিচার হইত হাজার পাপ করিয়া থাকিলেও তথন এই পোকার প্রভাবে তাঁহার হৃদ্য আর তাঁহার বিক্লমে সাক্ষ্য দিত ন।। কাজেই তাঁহার পাপের কণা দেবতার অজাত থাকিত এবং জয়ী হইয়া তিনি ওসিরিস্থ লাভ করিতেন। স্থবিধা বঞ্জিয়া পুরোহিতেরা বিচারের চিত্র সম্বলিভ প্রেভগ্র -विक्रम् कतिम्। नाख्यान श्हेर्ट नागिरनन । स्नारक এই পুঁথি কিনিত, কারণ ইহাতে নিজের নাম লিখিয়া কৰৱে স্থাপিত করিলে পরীক্ষায় উত্তীৰ্ণ হইবার আর কোন ভয়ই থাকিত না। ইয়ার ফলে জাতির নৈতিক জীবনের বিশেষ অধাপতর उड़ेका।

এইড গেল মোট।মুটি ধর্মের কথা। এইবার আমরা সাহিত্যের বিষয় একট আলোচনা করিব। মধাযুগেই মিশরের সাহিত্যের বিশেষ উল্লভি হইয়াছিল। ছলের .(करणात्तर भिकात क्रम क्रमत क्रमत **का**नर्भ मिनि রচিত হইয়াছিল। পর সাহিত্যেরও এই সময় অল হয়। সন্থান্ত বংশীয় সিভূছির (Sinulie) চিন্তাকর্বক অমণবৃত্তাৰ ও রোমহর্ষ ঘটনাবলী থবট কনলিয় ছিল। সিন্দবাদ নাবিকের গ্রের মত একটা গ্রন্ত প্রচলিত ছিল। দার্শনিক বিষয়েও একট আঘট আলোচনার পরিচয় পাওয়া যায়। সাহিত্যেরও বিকাশ দেখা যায়। এমন কি সাধারণ লোকেদের দৈনন্দিন জীবনের বিষয় লইয়াও গীত রচিত হইত। নাটকেরও সৃষ্টি হইয়াছিল। ওসিরিসের জীবনের ঘটনাবলী লইয়া নাটকা রচিত হইত এবং অভিনীত হইত।

শাষ্ট্রাজ্যের যুগের সাহিত্যের নিদর্শনও বর্তমান আছে। আামনদেবের পুরোহিত তৃতীয় বধুমোনের বিষয়ে একটি ক্লমর স্থোত রচনা করিয়াছিলেন। তবে এসময়কার সর্বোৎকার রচনা হইতেছে একেশ্বরবাদী সমাট ইথ্ডাটনের "আটন্ ভোত্র"। এই ডোতগুলির দার্শনিক ভাব উচ্চ ছের। ইহা ছাড়া ইহাদের মধ্যে খাঁটি কবিজের পরিচয় পাওয়া যায়। এই যুগে প্রভু মহাকাব্য রচনার চেটাও দেখা যায়। একজন জ্জাত কৰি বিভীয় র্যামসেসের কাদেশের যদ্ধ লইয়া ক্লমর একটি গভাকার্য রচনা করিয়াছিলেন। এই সময়কার সাহিত্যের বিশেষভ इटेटर कथा-माहिला। दिक्तम ताबा जा। पिनम ও থিব দের সামস্ত রাজা সেকেনেরের যুক্তের বিষয়ে স্বন্ধর একটি গল প্রচলিত ছিল। সমাট্র ধর্মোসের বিজয়কাহিনী লইয়াও অনেক গল রচিত হইয়া-ছিল। তবে "হতভাগ্য রাজপুত্রের" নাহরিণ রাজ-কল্যালাভের গল্পই সর্বাপেক্ষা স্থান গ্রাহী। चनश्था शह अहे नम्दा शहतिक किन। সাহিত্যেরও বিশেষ উৎকর্বতা দেখা যায়। খনেক ক্ষমর ক্ষমর প্রেমের কবিটা ও ধর্মসন্ধীতও রচিত এটখানে "প্রেডগ্রন্থের" উ**ল্লে**খ প্রয়োজন। পিরামিড-রাজাদের সমর পিরামিড-পুৰিতে সাহিত্যের নিম্পন পাওয়া যায়। এই সময়ে ভাছার পরিষর্ভে "প্রেভগ্রাছে" অসংখ্য মন্ততন্ত্র महितिहै (मश वाम ।

বাজনৈতিক ইতিহাস আলোচনার সময় মিশরের निश्चय विषय जातक कथाई देना इंदेशांक । कारबंदे **এ**डे शास ভাহার 水に味が আলোচনটি যথেই। বাছলিছে মিশ্বৰাসীরা অসাধারণ ক্তিত দেখাইবারে। ইহার পরিচর পাই রাজাদের কবর ও দেবালয় নিশাবে। পিরামিডের বিশালতা ও শিরকৌশল সতাই বিশ্বরের উদ্রেক করে। যে শিল্পীর। ইহা নির্মাণ করিয়াছিল वाक्षभितात देखिलात जाहातात की कि विविधिन অমর চুট্টা থাকিবে। এই সময়কার মঞ্জির নির্বাণের কৌশনও কম উল্লেখযোগ্য নহে। ইহার প্রধান বিশেষর গুড়প্রেণী। গুড়গুলি দেখিতে হয় শেজুরগাছ, না হইলে প্যাপাইরাস (papyrus) প্রক্রের মত।

মধার্বের ছাপভ্যের নিদর্শন বিশেব কিছুই বর্তমান নাই। ভবে ঐতিহাসিক ট্রাবোর (strabo) লেখা হইতে জানা বার বে, তৃতীয় জ্যামেনেম্হেট অথবা অন্ত কোন শক্তিশালী রাজা ফ্যার্মে একটি বিশাল প্রানাদ নির্মাণ করিয়া-ছিলেন। ইহার সৌন্দর্য্য ও শির্কোশন অসাধারণ ছিল। ট্রাবোর সময় ইহা ল্যাবিরিছ (Labyrinth) বলিয়া প্রসিদ্ধ ছিল।

সাম জ্বোর যগে বাক্ষশিরের চরম উৎকর্বতা দেখা যায়। এই সময়ে যে সমস্ত মন্দির নিশ্মিত হইয়াছিল সৌন্ধ্য ও বিশালতায় সতাই ভাহারা অতুলনীয়। প্রথম থথুমোসের সময় হইডেই विव मित्र निक्षेत्र कर्गाक च्यास्मिन्स्यतं स्रमत স্থন্দর মন্দির ও তৎসংলগ্ন গ্রাদি নির্দ্ধিত চইতে আর্ভ হয়। রাণী হাটসেপস্থটের "দের এল-বার্ডি"র नमाधि मन्दितत कथा शुर्काह वना इडेबाएड । मुख्ये ততীয় পথমোস বর্ণাকে একটি স্থন্দর ও বিশাল স্তম্পাভিত মন্দির নির্মাণ করিতে আরম্ভ করেন। ইহা ছাড়া তিনি নানাঝায়গায় অনেক যন্দির নির্মাণ করেন। কিন্ধ এক হিসাবে মিশরের বাল্পশিলের শ্রেষ্ঠ নিদর্শন ততীয় অ্যামেনহোটেপের সময় নির্দ্ধিত হয়। থিব সের দক্ষিণ উপকণ্ঠশ্বিত লাক্সরে(Luxor) তিনি আমনের যে মন্দির, তৎসংলগ্ন প্রকোষ্ঠ, হল্ঘর ও ফদত ভত্তশোভিত দ্বদালান নিৰ্মাণ করেন সৌন্দর্যা ও শিল্পকৌশলে তাহার সমৰক দেখা যায় না। তবে ছাথের বিষয়, বিশাল হলঘরটির নির্মাণ কাৰ্যা ডিনি শেষ করিয়া যাইছে পারেন নাই। ইভা চাড। তিনি আরও অনেক চন্দ্র স্থানর মন্দির প্রবেশহার প্রভৃতি নির্মাণ করেন। কর্ণাক মন্দিরের সন্মধে আামনহেণ্টেপ যে বিশাল প্রবেশদার নির্মাণ করেন ভাহার সৌন্দধ্য অবর্ণনীয়। নদীর অন্স পারে তিনি তাঁহার অস্ত একটি বিশাল স্মাধি-মন্দিরও নির্মাণ করেন।

মন্দির নির্মাণে প্রথম সেটিও কম ক্লভিড দেখান নাই। কর্ণাকেও মন্দিরের সমূথে প্রথম রাামসেস্ যে বিশাল জন্তশোভিত হলবর নির্মাণ করাইতে আরম্ভ করেন তিনি তাহা অনেকটা সম্পূর্ণ করেন। আরতনে ইহা তৃতীয় অ্যামেনহোটেপের নার্মরের হলবর ইইভেও বড়। মিশরের প্রধান গেবতা ও ভৃতপূর্ব দ্যারাওদের পূলার কম্ম ভিনি আ্যাবাইড্সে একটি চমৎকার মন্দির নির্মাণ করেন। মন্দিরটির অনেকাংশ অতীতকালের শিল্পানপ্রশের সাকীম্বরূপ আন্ধও দাঁড়েইবা আছে। ধিব্সের পশ্চিমদিকে

তিনি নিজের সমাধিমন্দিরও নির্মাণ করেন। আরও অনেক মন্দির যে তিনি নির্মাণ করেন সে বিবয়ে সন্দের নাই।

ষিতীয় র্যামসেদের সময় এক অধিকদংখ্যক মন্দির নিমিত হয় যে, তাহা সংখ্যাতীত।
আ্যাবাইডসে তাঁহার পিতা যে ক্লনর মন্দির আরম্ভ করিয়াছিলেন তিনি তাহা শেষ করেন। সেটির সমাধিমন্দিরের নিকট তিনি নিজের স্মাধিমন্দির স্থাপনা করেন। এই যুগের সর্বাপেক্লা রহং অট্টালিকা কর্ণাকমন্দিরের সম্মুখন্থিত হলঘর তিনি সম্পূণ করেন। এমন কি. স্পূর নিউবিয়া দেশে আরু সিম্বেলেও তিনি একটি চমৎকার গিরিমন্দির নির্মাণ করেন। মোটকথা এমন সহর ছিল বা যেখানে তিনি মন্দির স্থাপনা করেন নাই।

ভাষ্ট্যাপিরে মিশরের শিল্পীরা যে নৈপুণা, দেখাইয়াছে সভাই ভাছা বিশ্বয়কর। বোধ হয় গ্রীক্ শিল্পী ছাড়া প্রাচীন জগতে এই বিষয়ে ভাহাদের সমকক আর কেহ ছিল না। ভবে প্রথমেই বলা দরকার যে; গ্রীক্দের মত মিশরবাসীর। নিছক সৌন্দর্যোর উপাসক ছিল না। কাজেই মিশরীয় ভাষরের। মৃতি গড়িভ

মন্দির অথবা কবরে ৰাবহারের জন্ত-গৃহ-দৌষ্ঠব অথবা নগরের শোভাবর্দ্ধন করিবার জন্ম নছে। অতি প্রাচীনকাল হইতেই মিশরীয় ভারবেরা যে সব মর্ত্তি গডিয়'ছে তাহা তে কোন দেশের শিল্পীর পক্ষে গৌরবের বিষয়। এই শিল্পীদের প্রধান বিশেষত্ব এই যে, ভাহারা মর্ত্তিকে স্বাভাবিক ও প্রাণবন্ত করিতে কবিয়াছে। পিরামিড রাজা গাপ্রের বিখাভে মর্মিটি যে শিল্পী গডিয়াছে ভাহার স্থান অগতের শ্রেষ্ঠ ভাত্তরদের পার্ষে। কঠিন অমণ্ডণ পাণ্ডর র্থদিয়া রাজার জীবন্ত মৃত্তি গড়া যে সে ভাগরের কাজ নয়। ভারপর লুভার গিউজিয়ামের হেমদেটের (Hemset) উপবিষ্ট মন্তিটিও আর একটি বিশাদকর বস্তু। মৃত্তিটির চোপ মুধে যে সন্ধীবভার ছাপ পডিয়াছে সচরাচর তাহা বড একটা দেখা যায় না। পুরোহিত ব্যানোফারের (Ranofer) মৃত্তির মূপে যে ঔদ্ধন্তা ও অহমার ফুটিয়া উঠিয়াছে তাহা कृष्टेशिक ना स्थानि कर सम्भ माधना कविएए हम। নেখ-এল-বেলেড (Shekh El Beled) নামে পরি-চিত একজন বাজকপ্রচারীর কাঠের মৃত্তির মুখে বে আত্মপ্রসাদ ও আত্মনুগুরি কৃটিয়া উঠিবাক্তে তাহা
প্রেট্ট শিল্পীর কাডেই সন্তবে। আর যে ভাররের
বাটালির বাবে বিশ্যাত "লুডার সেপকের"
(Louve Scribe) স্টি ইইরাড়ে তাহার স্থান অমরশিল্পী কিডিরানের (Phidias) পাশে। বথাওই
একক্সন পণ্ডিত বলিয়াছেন যে, এই মৃতিটির দিকে
চাহিরা থাকিতে থাকিতে মনে হয় বে, হঠাং বলি
লেখক মহাশর প্রোণ পাইরা হত্তব্বিত কাগজে
বিভার ইহার
(পাথরে) লিখিতে আরম্ভ করেন ভারতে

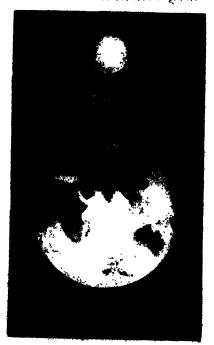
আক্রা হইবার কিছুই নাই। এই সমরের শিল্পীরা ডামার মৃত্তিও গড়িতেন। প্রথম পেপির (Pepi 1) বে ডাম্মার্ডি ডগ্ন অবস্থার পাওয়া গিরাছে ডাহাডেও শিল্পীনপুণা বিশেষ লক্ষিত হয়।

মধার্গের ভালর শিলের বিশেষর এই বে, এই সময়ের শিল্পীরা প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড মৃত্তি গড়িত, এয়ন কি ৪০।৫০ ফুট উচ্চ। এরপ অনেক মৃত্তির ধ্বংসাবশেষ নানা জারগায় পড়িয়া আছে। কতক-শুলি মৃত্তি অভয় অবস্থায়ও দেখিতে পাওয়া যায়। তবে এই সব মৃত্তির মৃধে আর পূর্বের মত সঞ্জীবভা দেখা যায় না। পাথরের বৃক্তে শিল্পীরা আর নিজেদের বিশেষর দেখাইতে পারে নাই। অবস্থা মারে মারে ইহার বাতিক্রমণ্ড দেখিতে পাওয়া যায়। তৃতীয় আগমেনেম্হেটের বিশালকার মৃত্তিতে ও তৃতীয় সোমেনেম্হেটের বিশালকার মৃত্তিতে ও তৃতীয় সোমারে ও পার্রিনপ্ণা ফুটিরা উঠিয়াছে জাতা অসাধারণ।

সাদ্রাকোর বৃগে যিশরের ভাষণ্ঠ একছিসাবে অতুসনীর ছিল। এখনকার ভাষরের। বৃত্তির প্রভাকে প্রতিনাটি বিষয়ে বে সতর্কতা ও মনোযোগ দেখাইযাছে সভাই ভাষা বিশ্বরুকর। প্রতাকটি বৃত্তিতে
অসাধারণ লাবণা ও সৌন্ধর্য ফুটিরা উঠিয়াছে—তবে
মনে হর যেন পূর্বেকার মুখের বৈপিট্য দেখিতে
গাওয়া বার না। ইখ্ ফ্লাটেনের সময়কার মৃত্তিভলি এক ফুলর যে, এগুলি গ্রীক ভাষরদের হাতের
কাল বলিরা বনে হব। ছিতীর রাামসেরের সমরের
মৃত্তিগুলি গুবই ফুলর বিশেষত: টিউরিন্ মিউজির্মে ব্যামসেরের প্রতিমৃত্তি।

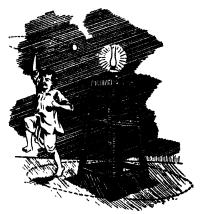
বিপরের ভাতরদের রিলিফ-চিত্রের বিবর কিছু জানা ধরকার। অতি প্রাচীনকাল হইতেই শিলীবা রিলিক চিত্রে ভাত্যদের ক্রতিত নেশাইরাকে। বিশ্বের প্রথম রাজারা দেবালয়ে বে সম্বত্ত প্রাচি উপচৌকন বিভেন ভাহাতে যে চিত্ৰ দেখিভে পাওয়া যায় ভাটাতে নিপুণ শিল্পীর হাতের পরিচর পাওয়া যায়: রাজাদের ক্বরের দেওয়ালেও বাক্তর জীবনের অনেক রিলিক-ছিত্র দেখিতে পাওয়া যায়। এইসব চিত্র পুরুষ ক্ষমর। ইহাতে রঙ দেওরা হইত। রিলিফ-চিত্র ছাড়া স'ধারণ চিত্রও দেখিতে পাওয়া বার। এই চিত্রকরদের অভিত মেড়ুমের কোন कवत्वत्र दश्मालीत विक तिथितिह वृका यात्र ति अहे বিভাষ ইহারা কভদুর সফলতা লাভ করিয়াছিল। সামাজ্যের খুগের শিল্পীর প্রতিভার চরম বিকাশ পাইয়াছে বিলিফ-চিত্তে। ৰাৰ্লিন মিউজিয়ামে রক্ষিত মেমফিনের প্রধানপরোহিতের প্রযাতার **চিত্রে** তাহার পুত্রদের হৃদর্বিদারক শোকের যে পরিচয় পাওয়া বাহু ভাহাতে এই অমর শিল্পীর কাছে আপনা হইতেই শ্ৰহায় আমাদের মাথা নত হইরা পড়ে। ইধ্সাটনের প্রানাবের ভগ্ন যেজেভে খাৰমান কুকুর, পলায়নপর বুব ও উড়ম্ভ পক্ষীর বে চিত্ৰ শহিত দেখিতে পাওয়া যায়, পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ চিত্রাবলীর যথ্যে ভাহার স্থান। কর্ণাকে সেটির অভাগোডিত হলবরের দেওয়ালে তাঁহার যানের যে রিলিফ-চিত্র আছে ভাহার প্রশংসা না করিয়া থাকা যার না। কিন্তু ইহা অপেকা অনেক ক্ষমর ভাঁচার স্যাবাইডসের দেবসন্ধিরের ও থিবুসের স্মাধি-যশ্চিত্রের বিলিফ-চিত্র। সাধারণ চিত্রেরও বিশেষ উন্নতি হইয়াছিল। এই সমন্ত্রার থিব সের কবরে শিকারের যে চিত্র কেখা যায় ভাহা ৩৫ শ্রেষ্ঠ চিত্রকরের তুলিকা হইতেই সম্ভবে। न्यात्रात्रात्रत कारमान्य गुरुषत रव निमिक्त किखाननी আছও বৰ্ত্তমান আছে তাহাতে একভিসাৰে বিলিম্ব-চিত্রের চরম-পরিণতি দেখিতে পাওয়া যায়। ইছার' পরে বিলিফচিত্তের অবনতি আরম্ভ হয়। ততীয় রামেসেরে মেডিনেটছাবুর মন্দিরের চিতাবলী দেখিলেই ভাহ। বেশ বৃষ্ধা যায়। তবে মিশরের খাধীনভা-সূৰ্যা অন্ত যাইবার পূর্বে মিশরের শিক্স-প্রতিভা ভামেটিকের সময় একবার বেন উচ্ছন इहेश क्रांतिश डिजिशिका। अहे नमश्कात करात. মন্দিরে প্রাচীন মিশরের অভকরণ বাতবজীবনের ক্ষমৰ ক্ষমৰ চিজাবলী কেবিতে পাওৱা বাব। এই ভাষ্টেররা সভাই বিশরের গৌরবের সাম্থী। विभिन्न-कित्व वर् पृष्टि श्रीदन हरात। त्या ঞীক-শিল্পাদের স্বান্ধ এক স্থাসনে বসিবার উপরক

তোমর। সকলে চাঁদ দেখিয়াছ। পূর্ণিমার



্র শুশিবাও চার চাঁদ বখন সুর্ব্যান্তের পর একখানি রূপার

থ,লার মত: বাহিং: ইইয়া আসে এবং ফুটফুটে জ্যোৎস্লায় জল ও স্থল ভরিয়া দেয়, তখন বাহার না মন আনলে নাচিয়া উঠে ? কবিরা চাঁদের হিষয়ে কত কবিতা লিখিয়া-ছেন। পুবাকালে লোকেরা চাঁদকে দেবতা-জ্ঞানে পূজা করিত। জ্যোতির্ব্বিদেরা এখন জানেন যে, চাঁদ পৃথিবীর উপগ্রহমাতা। পৃথিবী যেমন স্থোর চারিধারে ঘ্রিয়া বেড়ায়, চাঁদও ডেমনই পৃথিবীর



একট বাদক বল পড়িতে বাধিনা অলাপের চারিদিকে খুরাইছেছে চারিদিকে অনবরত খুরিভেছে।একটা প্রদৌপ

মাঝখানে রাখিয়। ভূমি উহার চারি-দিকে অনবরত ঘুরিতে থাক, আব সেই সঙ্গে একটি 'বল' দড়িতে বাঁধিয়া ভোমার গারিধারে ঘুরাইতে থাক। প্রদীপটি চইল সূর্য্য, তুমি পৃথিবী সাজিয়াছ এবং 'বলটা' মনে কর তোমার উপগ্রহ চাদ। এখানে 'বল'টার গতি অনেকটা সত্যকার চাঁদের গতির মত। পৃথিবীর চারিধারে একবার ঘুরিতে চাঁদের প্রায় সাতাশ দিন আট घटो সময় लाश-यिन আমরা ধরিয়া

লই যে, পৃথিবী স্থির। কিন্তু বস্তুত: পুথিবী স্থির নয়, উহা সুংগ্যব চারিদিকে ক্রমাগভ ছুটিতেছে। পৃথিবী যদি স্থির থাকিত আজ এখন যদি চাঁদ. সূৰ্য্য ও পৃথিবীর মধা-च्रल शारक. হইলে প্রায় সাতাশ **किम आहे चन्हे। श**रत চাঁদ আবার ঠিক সেই ফিবিয়া মধাস্তলে আসিবে। কিন্তু পৃথিবী শ্চির না থাকায়: এই সময়ের ব্যবধান একট বাড়িয়া যায়; পুনরায় মধ্যস্থলে **ফিরিয়া** আসিতে

চাঁদের প্রায় উনত্তিশ দিন তের ঘণ্টা সময় मार्ग।

আকাশে যত সব গ্রহনক্ষত্র আছে, ভাহাদের সকলের চেয়ে চাঁদ আমাদের কাছে। জ্যোতির্বিদের। গণনা করিয়া দেখিয়াছেন বে, মোটামুটি হিসাবে চাঁদ পৃথিৰী হইতে প্ৰায় ছই লক্ষ, উনত্ৰিশ হাজার মাইল লুরে অবস্থিত। পৃথিবীকে বেষ্টন করিয়া চাঁদ যে কক্ষের (orbit) উপব ঘুরিভেছে, ভাহা ঠিকু গোলাকার নহে, বরঞ্ একটু ডিম্বাকার (elliptic)। সেই-জক্তই উপরে চাঁদের দূরত্বের যে মাপ দেওয়া হইয়াছে, ভাহা হইতে চাঁদ কখনও কখনও ষোল হাজার মাইল আরও কাছে আসিয়া পড়ে, আর কখনও বা আরও তের হাজার মাইল দূরে সরিয়া যায়। তোমরা অনেকে বে'ধ হয় রেলের "পাঞ্জাব মেল" কিম্ব।



**5ताला.३३ गाजी** 

"তুফান মেলে" চড়িয়াছ। 'পাঞ্চাব মেল'' ঘণ্টায় ৪৫ মাইল চলে। পৃথিবী হইতে চাঁদ পর্য্যস্ত হৃদি রেল-লাইন তৈয়ার করিতে পারা যায়, ভাহা হইলে অনবর্ড চলিয়া৷ পাঞ্চাব মেলের মন্ত ক্রতগামী রেলগাড়ীর চঁ'দে পৌছিতে অস্ততঃ সাতমাস দশ দিন লাগিবে। এয়ারোপ্পেন (aeroplane) রেল-

\*\*\*\*

গাড়ী হইতেও ক্রতগামী। এয়ারোপেন বা হাওয়াই-জাহাজ অনায়াদে ঘণ্টায় এক-শত মাইল যাইতে পারে। তোমার যদি এয়ারোপ্লেনে চাঁদের দেশে যাওয়া সম্ভব হয় তাহা হইলে তুমি প্রায় ভিনমাস দশ-দিনে সেথায় পৌছিবে। যদি একটি পাকা রাস্তা চাঁদ পর্যান্ত তৈয়ার করা সম্ভব হয়, আর যদি না ধাইয়া, না ঘুমাইয়া, না বিশ্রাম করিয়া, ঘণ্টায় চার মাইল হিসাবে তুমি ক্রমাগত হাঁটিতে থাক, ভাহা হইলে চন্দ্রলোকে পৌছিতে ভোমার প্রায় ছয় বংসর দশমাস সময় লাগিবে। আলোক-রশ্মি প্রতি সেকেণ্ডে প্রায় ১.৮৬.০০০ মাইল বেগে চলে। কাদ্রেই, এই রশ্মি প্রায় ১৩ সেকেণ্ডে চাঁদে পৌছিতে পারে।

পৃথিবীর বাাস মোটামৃটি হিসাবে ৭৯২০ মাইল ধরা বাইতে পারে। আমাদের পৃথিবীর মত ৩০টা গোলাকার পিণ্ড বদি পাশাপাশিভাবে রাখা বার, তাহা হইলে টাদে বাইবার এক প্রকাণ্ড পুল তৈরার ছইতে পারে।

চাঁদের বাাস ২১৬০ মাইল—পৃথিবীর ব্যাসের প্রায় একশভ ভাগের সাতাশ ভাগ মাত্র। পৃথিবী গড়িতে যত কাদামাটির দরকার হইরাছে, তাহাতে প্রায় উনপঞ্চালটা চাঁদ গড়িতে পারা যায়। পৃথিবীর ওকন চাঁদের ওজনেব প্রায় ৮২ গুণ। চাঁদের মাধাকর্ষণ শক্তির পৃথিবীর আকর্ষণ শক্তির ছয়ভাগের একভাগ। তুমি যদি চাঁদে যাও, ভোমার শরীরটা খুব হাছা বোধ হইবে। ভোমার ওজন যদি এইখানে একমণ হয়, চাঁদে তাহা এখানকার হিসাবে প্রায় সাত সেরের সমান হইবে। তুমি যদি এইখানে২০ সের ভারি জিনিব তুলিতে পার, চাঁদে গিয়া দেখিবে বে, তুমি অনায়াসে ভিনমণ ভারী জিনিব তুলিতে পারিতেছ। ধর,

তুমি একজন নামজাদা খেলোয়াড় তুমি যদি ছয়কুট উচু লাফাইতে পার, চাঁদে গিয়া



পুৰিবীতে আধমণি বোঝা ভুলিতে কি কট



গালর দেশে ৰাদ্ধাই মণ ১ ডিন মণ বোৰা দি হাকা ভূমি দোভলা ৰাড়ীর সমান উচু লাকাইডে পারিবে। আর যদি ভূমি ১৫ ফুট লখাই

\*\*

লাকাইয়া ৰাইতে পান, তাহা হইলে চাঁদে পিরা ভূমি অস্তত: ৯০ ফুট লম্বাই লাকাইযা যাইতে পারিবে। চক্রলোকে ছোটখাট নদী অনায়াদে লাকাইয়া পার হইতে পারিবে.



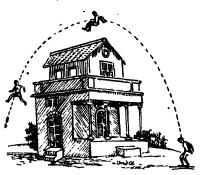
পূৰিবীতে চহ কৃট উ চু লাফাইতেছ

পুলের কোনও দরকার থাকিবে না। ছ:খের বিষয়, রেলগাডীতে, পদত্রজে কিংবা

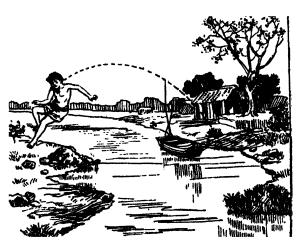
হাওয়াই ভাহাতে পৌছিবার **डै**रिन কোন ও সম্ভাবনা নাই। রেলের লাইন বা ইাটিবার রাস্কা তৈয়ার করা সম্ভব নয়, আর বাতাস না থাকিলে এয়ারোপ্লেন উডিতে পারে না। পৃথিবীর বাতাস উপরিতল (surface) হইছে কেবল ১০০ মাইল উচু প্ৰ্যান্ত আছে।

যদি তুমি কোন-প্রকারে চাদে যাইতে

পার, ভাছা হইলে সেখানে গিয়া ভূমি অল্লকণমাত্র বাঁচিতে পারিবে,কারণ,চাঁদে না আছে বাভাস, না আছে অল্লজান (oxygen)। ভূমি নিশাসই লইতে পারিবে না। না আছে সেখানে গাছপালা, আর না আছে সেখানে জল—হয়ত সেধানে ধুব জ্বমাট বরফ আছে, তাহা এত ঠাণ্ডা এবং তাহার



চাদের দেশে লোভনা বাড়ী অনালাদে লাকাইলা পার হইডেছ তাপ এক কম যে, চাঁদের দ্বিপ্রহরের রৌজ-তাপও এই জমাট বরফকে জ্বল কিংবা বাস্পে



है। दिन क्रिक्ट काकार का नहीं भारत है अहा कि मक्षा

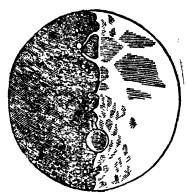
পরিণত করিতে পারে না। এই টাদের দেশে যাইলে, না পাইবে নিশ্বাস লইতে, না পাইবে আহার করিতে এবং না পাইবে জলপান করিতে; তাহা হইলে কতক্ষণই বা তুমি বাঁচিয়া থাকিতে পারিবে! টাদের শিশু-ভারতী

ভিতরটা খুবই ঠাণা হইয়া ও জমাট বাঁধিয়া গিয়াছে। চাঁদের এখনকার অবস্থায় সেখানে কোনও জীবজন্ধ বাঁচিয়া থাকিতে পারে না। চাঁদের চিরকাল এই দশা ছিল না. এককালে চাঁদও আমাদের পৃথিবীর স্থায় জীবজন্তর বাসের উপযোগী ছিল। পৃথিবীরও এককালে চাঁদের মত অবস্থা আসিবে। পরে এই বিষয়ে একট বিশদ-ভাবে তোমাদিগকে বলিব।



পুধিবীর একটি থাল ডিলাইডেই মাধার হাত

সাহায্যে চাঁদকে পরীক্ষা করিলেন। गालिलंड अधाम अहे यम वाविकात করেন। তিনি সকলের আগে চাঁদকৈ এই যন্তের সাহায়ে দেখিয়া লইলেন। গ্যালিলিওর দুরবীণের মতন দুরবীন এখন খেলানার দৌকানে তিন চারি টাকায় পাওয়া যায়। এখন দুরবীণের অনেক



বেলিলিয়ের আঁকা চাঁদের মান্ডিজ

होराय अक कारनव हिज দূরবীক্ষণ যন্ত্র আবিকার হইবার পর চইতে জোভিবিবদের। প্রথমেই এই যন্ত্রের

**डेम्र**डि হইয়াছে। মার্কিনদেশে মাউন্ট উইল্সন পর্বতের উপর যে মানমন্দির আছে 'তাহাতে অভি বুহং এক দৰ্পণযুক্ত मृत्रवीन (reflecting) telescope) আছে, ইহার দর্পণের বাাদ ১०० हेकि इहेरव। শুন যায়, সম্প্রতি ইহার দ্বিগুণ বড এক দূরবীণ তৈয়ার श्रेटिका করা

যাহার দর্পণের ব্যাস ২০০ ইঞ্চি হইবে। চাঁদ ছুইলক উন্ত্রেশ হাজার মাইল দুরে না

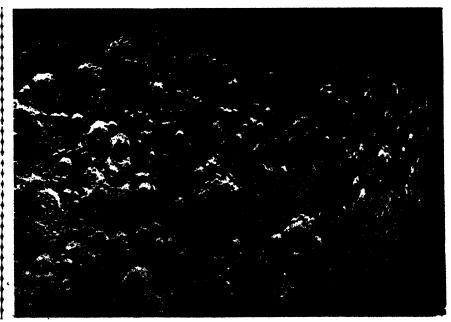
\*\*

থাকির। কেবল পঞ্চাশ মাইল দ্রে থাকিলে, ভুধুচোখে েরকম দেখাইড, এড



চাদের-দেশের স্বন্ধিত-বাদ বড় দূরবীণ দিয়া দেখিলে সেইরূপই দেখায়।

পারি। জ্যোতিবিবদেরা চাঁদের মানচিত্র আঁকিয়াছেন। কোথায় কোন্ সমুজ, কোথায় কোন্ সমুজ, কোথায় কোন্ সমুজ, কোথায় কোন্ পর্বত সবই আঁকিয়াছেন। অবস্থা চাঁদের সমুজে এখন জল নাই, কেবল তাহার বৃহৎ খাদগুলিই পড়িয়া রহিয়াছে। কোথায় কোন্ আগ্লেয়গিরি ছিল ভাহাও জ্যোতিবিবদেরা বাহির করিয়াছেন। চাঁদের দেশে দেখিবার অনেক জিনিষ আছে, কিছ ছংখের বিষয়, মান্থ সেখানে যাইতে পারে না এবং জ্যোতিবিবদদের মানস-নেত্রেই এই জিনিষগুলি দেখিয়া লইতে হইবে। চাঁদের গায়ে অনেক উচু উচু পাহাড় আছে। কোন কোনটি ২৫,০০০ ফিটেরও বেশী উচু।



केरताब टनटन

এই দুরবীপের সাহাব্যে টানের উপরকার জিনিব আমরা বেশ ভালভাবেই দেখিড়ে পাহাজ্ঞলির চ্জার উপর বখন সুর্ব্যক্তিরণ পড়ে ডখন সেইঞলি আলোর বল্-নল্

**→**∦

কবিতে থাকে। এই সকল পাহাডের পার্ষে ছায়াময় অঞ্জ দেখা যায়, সেই গুলি সমতল ক্ষেত্র। চাঁদের গায়ে অনেকগুলি ধুসরবর্ণ দাগ দেখা যায়। পণ্ডিতেরা অমুসান করেন যে, এই হুলি টাদের জলপ্র সমুদ্র। এই সমুদ্রগুলি থুবই গভীর এবং শত শত মাইল জায়গা জড়িয়া আছে। চাঁদের ত নিজস্ব আলো নাই। চাঁদেব উপর সূর্যা-কিরণ পড়াতেই ইহার উচ্চ পর্বতশিখন-গুলি ঝকমক কবে। কিন্তু যেখানে গভীর গর্ত্ত, সেইখানে সুযোৱ আলো প্রবেশ কবিতে পারে না, সেইজমুই গরগুলি কালে। দেখায়। চাঁদে অনেকগুলি বড বড আগ্রেয়পর্বত আছে, কিন্তু তাই বলিয়া मत्न कति । ता ता वह मकल जालामुथी কুইতে এখনও অগ্নাৎপাত হয়। চাঁদের ভিতরকার তাপ এখন অনেক কমিয়া আসিয়াছে, সেইজ্ঞাই চাঁদের ভিতরটা একেবারে জম'ট বাঁধিয়া গিয়াছে। কিন্তু প্থিবীর ভিত্রটা এখনও খুব গ্রম এবং সেখানে ধাতৃগুলি এখনও গলা অবস্থায় আছে। চাঁদের অভাস্থবটা লক্ষ্ণ লক্ষ্ বংস্ব পুর্বের পৃথিবীর মত থব গবম অবস্থায় ছিল এবং ধাতগুলি ফটন্ত তরল অবস্থায় ছিল। কোনও কারণে যদি ভিতরকার চাপেব কমবেশী হটত তাহা হটলে জলম তরল ধাতৃ ও ধুম জাগ্নেয় পর্বতের খোলা মুখ দিয়া বাহির হইত।

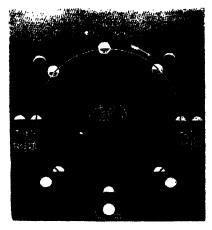
আগেই বলিয়াছি যে, পৃথিবীব হিদাবে চাঁদের আকর্ষণশক্তি খুবই কম। চন্দ্রলোকে সব বস্তু ওজনে খুবই লঘু এবং সেজজ তথায় তরল ধাতুর ফোয়ারা আনেক পরিমাণে বাহির হইয়া আনেক উচুতে উঠিতে পারে এবং সেইজজ্ঞাই চাঁদে আনেক আগ্নেয় পাহাড়ের মুখ বেশ বড় হয়, এমন কি কোন কোনটার ব্যাস একশন্ত মাইল প্র্যান্ত হয়। চাঁদের কভকগুলি আগ্নেয়

গিরির ছবি পর পৃষ্ঠায় দেওয়া পেল। উপরে টাইকো (Tycho) গিরির ছবি দেখিতে পাইবে। প্রায় মধান্থলৈ কোপার্নিকস্ (Copernicus) গিরি, তাহারই ডানদিকে কেপ্লার (Kepler) পর্বত দেখিতে পাইবে।



हारमत खालागुनी

চাঁদের ক্ষর্দ্ধি ভোমর। সকলেই দেখিয়াছ। সমানস্থার রাত্তে চাঁদকে একে-



Stera wei

বারে দেখিতে পাওয়া বায় না। সেইদিন চাঁদ, স্ব্য ও পৃথিবীর মাঝখানে থাকে। আগেই বলিয়াছি চাঁদের নিজের আলো নাই। এই অমাবস্থার বাত্তে চাঁদেব যে পিঠটা পৃথিবীর দিকে থাকে তাহার উপর সূর্যোর আলো মোটেই পড়েনা, সেই জন্মই চাঁদকে একেবারে দেখিতে পাওয়া যায় না।

অমাবস্থার প্ৰতিপদ · বা দিতীয়ার 5 19 অনেকটা সরু কান্তের মতন দেখায়। অবস্থায় চাঁদের যে পিঠটির উপব সুর্যোর আলো পড়ে, ভাহাব তাল্লাংশ মাত্রই পৃথিবী হুইডে দেখা যায়। সপ্তমী ভিথিতে চাঁদের আলোকিত সংশের প্রায় আধ্যানা পথিবী হইতে দেখিতে পাওয়া যায়। একাদশী কিংবা দ্বাদশীতে চাঁদের আলোকিত অংশের প্রায় বারো আনা দেখিতে পাওয়া যায়। অমাবস্থার প্রায় পনেরোদিন পুর্ণিমার পরে

অংশ তথন দেখিতে পাeয়া যায়। গোলা-কার পুর্বচন্দ্র তথন আমাদের নয়নগোচর হয়।

অমাবস্থা হউতে পূর্ণিমা পর্যাস্ত যে পক্ষ. ভাহাকে আমরা শুক্লপক্ষ বলিয়া থাকি



টাদের ভিনট আগ্রেম্পিরি (১) টাইকো. (২) কোপার্নিকন্, (৩) কেপলার

রাত্রিতে চাদ পৃথিবীকে বেষ্টন করিয়। খ্রিতে খ্রিতে ঠিক্ বিপরীত দিকে আসিয়। পড়ে এবং পৃথিবী তখন স্থা ও চক্ষের মধ্যানে পড়িয়া যায়। চাদের সমস্ত আলোকিড

এবং পূর্ণিমা হইতে অমাবস্তা পর্ব্যস্ত যে পক্ষে চন্দ্রের কলার হ্রাস হয়, ভাহাকে আমরা কৃষ্ণপক্ষ বলি। ত্রুপক্ষে চাঁদের ক্রেমাগত বৃদ্ধি হয়। পূর্ণিমার পর ছইতে

\*\*

চাঁদের ক্ষয় আরম্ভ হয়, কমিতে কমিতে
চাঁদের আলোকিভ অংশের বার আনা,
আট আনা, চার আন। ক্রমশঃ দেখিতে
পাওয়া যায় এবং অবশেবে পুনরায় চাঁদ একেবারে অদৃশ্য হইয়া যায়—আবার অমাবস্থা আসে। এইরূপ চাঁদের ক্ষয়বৃদ্ধি চক্রের মত পরিবর্তিত হয়। চাঁদের এই হাসর্বদ্ধিক চন্দ্রকলা বলা হয়।

এক অমাবস্থার পর দ্বিতীয় অমাবস্থা আসিতে প্রায় উনত্রিশ দিন তের ঘণ্টা সময় लारा। পুরেবই বলিয়াছি, পৃথিবী यদি স্থির থাকিত, তাহা হইলে তুই অমাবস্থার মধ্যে সময়ের ব্যবধান প্রায় সাভাশ দিন আট ঘণ্টা হইত। দ্বিতীয়া ও তৃতীয়ার চাঁদের সঙ্গে এক অভিনব ব্যাপার দেখিতে পাওয়া যায়। কাস্তের মত অংশটা পুর উজ্জ্বল দেখায়, কিন্তু বাকী অংশটায় আব-ছায়া রকমের আলো দেখা যায়। কাস্কের মতন অংশটা অবশ্য সূর্য্যের আলোয় পুর উজ্জ্বল দেখা যায়; কিন্তু তোমরা জিজ্ঞাসা করিতে পার, চন্দ্রের ত' আর নিজের বলিয়া কোন আলো নাই, তবে বাকী অংশটার উপর আব্ছায়া আলো কোথা হইতে আসিল ? ইহার উত্তরটি বড়ই চমৎকার। উত্তর হইতেছে—পৃথিবীর উপর চাঁদ যেমন জ্যোৎস্থা দেয়, তেমন চাদের উপরও পৃথিবীর পৃথিবীদন্ত জ্যোৎস্না. জ্যোৎস্থা পড়ে। চাঁদের জ্যোৎস্নার চেয়ে চৌদ্দগুণ বেশী উজ্জেদ। চাঁদের উপর এই পৃথিবীদত্ত জ্যোৎস্নার আলোকই আমরা দেখিতে পাই। এখন বৃঝিতে পারিতেছ যে, রাত্রিতে যখন পুথিবীর জ্যোৎসা চাঁদের উপর পড়ে, তখন চাঁদে অন্ধকার থাকে না। সপ্তমী বা অষ্টমীর দিনও কিংবা আরও বড় ভিথিতে চাদের অশ্বকার অংশে পৃথিবীর জ্যোৎসা পড়ে, কিন্তু সূর্য্যকিরণে আলোকিত চাদের অংশ এত বেশী উচ্ছল যে, পুধিবীদন্ত জ্যোৎস্লায় অপেক্ষাকৃত অতি মৃতু আলো আমাদের
চক্ষে পড়ে না। একটি উদাহরণ দিলে এই
বিষয়টি আরও স্পষ্টভাবে বৃঝিতে পারিবে।
গভীর অন্ধকার রাত্রিতে যদি একটি ক্ষোনাকী
পোকা বাহিরে উড়িয়া বেড়ায় তাহা
হইলে তুমি স্পষ্টই তাহা লক্ষ্য করিবে।
কিন্তু তোমার পড়িবার খরের টেবিলের
উপর যদি একটি উজ্জ্বল বাতি আলিয়া



চাদের দেশে পৃথিবীর জোৎসা

রাখ, এবং জোনাকীপোকাটি যদি এই উজ্জা আলোর নিকটে উড়িয়া বেড়ায়, তাহা হইলে জোনাকীপোকাটি অনেক সময়ে তোমার নজরে পড়িবে না। এই একই কারণে সপ্তমী কিংবা আরও বড় তিথিতে চাঁদের উপর পৃথিবীর দেওয়া জ্যোৎস্পা আমরা দেখিতে পাই না। গুল্ল-পক্ষই হউক আর কৃষ্ণপক্ষই হউক যথনই জ্যোভিন্বিদেরা দূরবীক্ষণের সাহাব্যে চাঁদের

উপরিতল (surface) পরীক্ষা করিরাছেন, সব সময়ই চাঁদের একটা নির্দিষ্ট পিঠই তাঁহারা দেখিতে পাইয়াছেন। অন্ত পিঠে কি আছে, তাহা কোন সময়েই দেখিতে পাওরা বায় না।

আগেই বলিয়াছি, পণ্ডিতেরা চাঁদের মানচিত্র আঁকিয়াছেন। মানচিত্রে বেখানে যে পৰ্বত কিংবা সমুদ্ৰ আছে, সেগুলি -সর্বাদাই যথাস্থানে দেখিতে পাওরা বার। ইহা হইতে বোঝা যায় যে, চাঁদ পিঠ বদলায় না এবং সর্ব্বদা ডাহার একই পিঠ আমরা দেখিতে পাই। পৃথিবী যেন জোর कतिया होएमत अक्षा शिठ निस्कत पिरक টানিয়া রাখিয়াছে। ভোমাদিগকে পূর্কেই বলিয়াছি যে, চাঁদ যদি এখন সূৰ্যা ও পুথিবীর মধান্তলে থাকে, ভাচা হইলে পুনরায় সেই মধাস্থলে ফিরিয়া আসিতে ইহার প্রায় ২৯ দিন ১৩ ঘণ্টা লাগিবে। পণ্ডিভেরা সেইজ্ঞ স্থির করিয়াছেন যে, নিজের মেরুদণ্ডের চারিপাশে স্থুরপাক थाहेरछ हाँएवत २२ मिन ३७ चन्हा नार्ग। সেই কারণেই চাঁদে প্রায় পনেরো দিন দীর্ঘ पित्र ७ शत्वाता पिन मीर्च ताखि **हया।** একটি উদাহরণ দিলে অনায়াসে বৃথিতে পারিবে। ডুমি একটি সরু দণ্ড লও। ইহার এক প্রান্তে একটি চাকা শক্ত করিয়া লাগাইয়া দাও এবং অস্ত প্রাম্বটি তুমি ছাতে করিয়া ভাল ভাবে ধরিয়া থাক। ভূমি একটি নির্দিষ্ট স্থানে দাড়াইয়া চারি ্দ্রিকে স্বরপাক খাইতে থাক এবং সেই সঙ্গে ভোষার চারিধারে চাকাটিকেও ুৰুৱাইডে থাক। ভোষার মুখ ৰখন পশ্চিম দিকৈ থাকিবে, চাকার বে-পাশটা ভূমি ৃষ্টেশিকে পাইডেছে, ভাষা তখন পূর্ব্দ দিকে शांकिता पुति वथन शक्तिमिटक कितित्व, ্ফাকার এই পাশটা তথ্য উত্তরনিকে কিরিয়া হাইবে। ভূমি যথন পূর্বা দিকে ভাকাইবে, চাকার এই মুখটি ভখন পশ্চিম
দিকে ফিরিবে। ভূমি যখন উত্তর দিকে
ফিরিবে, ভখন চাকার এই পিঠটি দক্ষিণমুখী
হউবে। পুনরায় যখন ভূমি পশ্চিমে
ভাকাইবে, ভখন চাকার এই পাশটি পুনরায়
পূর্বমুখী হইবে। এখন স্পাইই বৃথিতে
পারিবে যে, যে-সময়ে চাকাটি ভোমার
চারিখারে একবার ঘুরিয়া পুনরায় পূর্বস্থান
আসিয়া পৌছিয়াছে, ঠিকু সেই সময়ের
মধ্যে সে নিজের মেক্ষদণ্ডের চারিপাশে
একবার ঘুরপাক খাইয়াছে। চাঁদের ঠিক
এই অবস্থা—চাঁদের এক দিন পৃথিবীর প্রায়
সাড়ে উনত্রিশ দিনের সমান।

আরও ছই একটি কথা বলিয়া এই প্রবন্ধ শেষ করিব। পনেরো দিবসব্যাপী দিনে অনবরত সুর্যাকিরণ পড়িয়া চাঁদের উপরিতলের (surface) অনেক অংশ খুবই পরম হইয়া উঠে। চাঁদে ত বাষ্পু ও বাতাস নাই, সেজক্স যে-সকল জায়গায় পাথর আছে, তাহা শীঘ্রই উত্তপ্ত হইয়া উঠে এবং কোনও কোনও স্থানে উত্তাপ ২৫৬° ফারনহাটট্ পর্যান্ত হয়। সূর্য্য অন্ত গেলে রাত্রিতে শীম্র শীম্র এই সকল অংশ ঠাণ্ডা হুইয়া যায়। রাত্রিও পনেরো দিবসবাপী। কোনও কোনও স্থান এত ঠাণ্ডা হইয়া বার বে, ইহার উভাপ-->•° কারনহাইট্ পর্যান্ত নামিয়া যায়। ৩২° ফারনহাইট্ উত্তাপেই জল বর্ফ হইয়া যায়। হইতে বৃঝিতে পারিবে যে, যখন উদ্ভাপ --->•° ফারনহাইটে নামিয়াছে ভখন ঠাণ্ডাটা কিরূপ !

পণ্ডিতের। বলেন বে, এককালে চাঁদ পৃথিবীর অংশ ছিল। এ বিষয়ে পরে বিশদভাবে বলির। ভোষরা জিল্লাসা করিতে পার—যদি চাঁদ এককালে পৃথিবীরই অংশ ছিল, ডাছা ছইলে চাঁদের বাভাস গেল কোথায়? এ বিষয়ে পশ্চিতেরা এখনও একমত হইতে পারেন নাই। কোনও কোনও পণ্ডিত বলেন যে, এককালে টাদে ভীষণ সগ্নাংপাত হইত সেইজক্ম টাদে বৃহদাকার অনেক গর্ভ হইয়া গিয়াছে এবং ভিতরকার পাথরগুলির কাপা হইয়া গিয়াছে। এই কাঁপা পাথরগুলির মধো টাদের বাতাস প্রবেশ করিয়া সুকাইয়া আছে। অক্সাক্ম পণ্ডিতেরা বলেন যে, টাদ যখন পৃথিবী হইতে বিচুতে হইয়া গেল, ইহার্ম নিজস্ম আকর্ষণ শক্তি অনেক কম বলিয়া বাতাসের কণাগুলিকে আর আট্কাইয়া রাখিতে পারিল না। অল্পে অল্পে বালীন হইয়া গেল। এখন আর চাদে বাল্পও নাই, বাতাসও নাই। অধ্যাপক রাদেল (Russell) আমেরিকার

অধ্যাপক রাদেল (Russell) সামেরিকার
একজন প্রসিদ্ধ জ্যোতির্বিদ্। তাঁহার মতে
চাঁদেব আকর্ষণ শক্তি এত কম যে, চাঁদ
পৃথিবী হইতে পৃথক্ হইয়া যাওয়। মাত্রই
নিজ্রেবায়ুমণ্ডলকে আর ধরিয়া রাখিতে না
পারিয়া হারাইয়া ফেলিয়াছে।

ভোমরা কেচ কেছ জিজাসা করিবে যে, চাঁদের অপর পূর্য্নে কি আছে ? এই বিষয়ে বৈজ্ঞানিকেরা নানারূপ করনা করিয়াছেন। ছই একজন জ্যোভির্বিল্ এমনও বলিয়াছেন যে, চাঁদের অপর দিকে জল বাভাস যথেষ্ট পরিমাণে আছে—এমন কি, সেখানে গাছ-পালা জন্মে ও জীবজন্ধ বাস করে। কিন্তু ইহা সন্তব নয়, কারণ চাঁদের ছই পাখে রই প্রাকৃতিক অবস্থা এক প্রকার। অপর দিকেও কেবল উচু পাহাড়, জলশ্ম্ম সমুদ্র ও বৃক্ষলতা বিহীন মক্কভূমি থাকাই সন্তব—
বাভাসও নাই এবং কোন জন্মও বাস করিতে বা বাঁচিতে পারে না।

চাঁদের অবস্থার অনেক পরিবর্জন হইয়াছে। পৃথিবী যখন খুব গরম ছিল-ডখন ডাহার দেহ কোমল ও বাম্পের আকারে ছিল, সেই অবস্থায় কে'নও সময়ে

চাঁদ ছিট্কাইয়া গিয়া পৃথিবীর চারিধারে বুরিতে আরম্ভ করিল। চাঁদ তথন ধুব পরম ছিল এবং সেই সময়ে চাঁদ ও পৃথিবীর ভাপ সমান ছিল। কিন্তু চাঁদ আকারে ছোট বলিয়াই শীম শীম ঠাঙা হইডে লাগিল। উমুংন এক বড় ডেক্চি ভরা कन क्रोडेश नह धवर भरत छेशून निवाहेश দাও। এই ডেক্চি থেকে এক পেয়ালা গরম জল লইয়া ডেক্চির পালে রাখিয়া দাও। তুমি দেখিবে যে পেয়ালার জল শীজই ঠ'ণ্ডা হইয়। যাইবে এবং বড় ডেক্চির জল অনেককণ পর্যান্ত গরম থাকিবে। চাঁদ ও পৃথিবীর ঠিক এই অবস্থা। চাঁদের চেয়ে অনেক বড় বলিয়াই ইহার ঠা**ও**। হইতে অনেক সময় লাগিতেছে। চাঁদের বায়ৰীয় দেহ শীঅ শীঅ তরল চইয়া জমাট বাঁধিতে আরম্ভ করিল। ইহার বাহিরের আবরণটি জ্লমাট বাঁধিয়া শক্ত হইয়া গেল এবং তখনও ইহার ভিতরটা গ্রম ছিল, সেই সময়ে চাঁদে शकात शकात वालामुथी प्रथा पिल এवः অনবরত: অগ্না-পাত হইতে লাগিল। কোনও কোনও বৈজ্ঞানিক বলেন যে চাঁদের উপরিভাগে (surface)যে পর্ব্বত-গহরব গুলি আগ্নেয়গিরির মুখ (crater) বলিয়া পরিচিত সেইগুলির উৎপত্তি অগ্ন্যুৎপাত हरेर७ इस नाहै। वर् वर् छैकालिश मेरवरन চাঁদের উপর পড়িয়া এই সকল বৃহৎ গছরর সৃষ্টি করিয়াছে। আমেরিকার আরিজোনা (Arizona) প্রদেশে উদ্বাপিতের আঘাতে উৎপন্ন এইরূপ একটি বৃহৎ গহবর দেখা যায় আমাদের মনে হয় যে, চাঁদের কোনও কোনও গহারের উৎপত্তির কারণ উদ্ধাপাত হইতে পারে কিন্তু বেশীর ভাগ এই সকল পর্বত-গহার অধ্যুৎপাত বারাই স্ট হইয়াছে। চাঁদের ভিতর্টা যখন গ্রম ছিল তখন ভিত্র ভিন্ন অংশে চাপের ভারতম্যের স্বস্তুই খন খন

অগ্নাৎপাত ১০ত। ক্রমশ: চাঁদ আরও ঠান্ডা হইয়া পুথিবীর এখনকার যে সবস্থা সেই অবস্থা পাইল। আগেই বলিয়াছি যে, রাদেল সাহেবের মতে চাঁদ পৃথিবী হইতে পুথক হইবামাত্রই নিজের বাষ্প ও বাতাস হারাইয়া ফেলিল। র।দেল সাহেবের মত যদি সতা হয় তাহা হইলে কোনও কালে চাদ জীব-জন্ধব বাদের উপযোগী ছিল না \ আমাদের কিন্তু মনে হয় চাদ মলে মলে নিজেব জল ও বাডাস হাবাইয়াছে। ভাহা হইলে কোনও এক সময়ে চালের প্রাকৃতিক সবস্থা গাছপালা জন্মিবার ও জীবজন্ধ থাকিবার উপযোগী ছিল। ভাবশেষে চাঁদের ভিতরটাও সাও। হুইয়া গিয়া একেবারে জমাট বাঁধিয়া গেল এবং এখানকার অবস্থায় আসিয়া পড়িল। আমরা কিন্তু নিশ্চয়ভাবে বলিতে পারি না যে চাঁদে কোনও প্রাণী কখন বাস করিত কি না এবং দেখানখার সমতল ক্ষেত্রগুলি পৃথিবীর স্থায় শস্ত্রশামলা ছিল কি না। এখন এই সমতলক্ষেত্রগুলি মক্ষভূমিতে পরিণত তইয়াছে। দিনের বেলায় ও রাত্রিতে তাপের বেশী ভারতম্য হওয়াতে চাঁদের উপরিভাগের অনেক জায়গা গিয়াছে। পৃথিবীরও এককালে এই চাঁদের प्रभा उठेरत ।

অধ্যাপক পিকারিং (Pickering) একজন
নামজাদা জো:তির্বিদ ছিলেন। জ্যামাইকার
(Jamaica) উপরকার বায়ুমগুল পুব পরিজার
কলিয়া তিনি সেইখানে গিয়া দ্রবীণ দিয়া
চাদকে ভাল করে পরীকা করিলেন। তিনি
লিখিয়াছেন যে ঋতু বদলাইবার সঙ্গে সঙ্গে
চাদের কোনও কোনও অংশের পরিবর্তন
ঘটে ইহা তিনি বিশেষ ভাবে লক্ষ্য
করিয়াছেন। তাঁহার মতে এই সকল
জায়ণায় গাছপালা জন্মায় বলিয়াই এইরূপ

হয়। পিকারিং সাহেবের দেখিতে ভুল হইতে পাবে, সভা সভাই এই সকল অংশে উদ্ভিদ জ্বায় কি না তাহার কোনও বিশাস-যোগা প্রমাণ এখনও পাওয়া যায় নাই। আমাদের মনে হয়, পিকারিং সাহেবের অভুমান সভা নয়। চাদের এখনকার সাবস্থা বৃক্ষণতা জন্মিবার উপয়ে:গী নতে। আর একটি ম**জা**র কথা <u>ব</u>লিয়া এই প্রবন্ধ শেষ করিব। সামেবিকার ক্লাক বিশ্ববিভালয়েব পদার্থবিজ্ঞার অধ্যাপক গডার্ড (Goddard) সাতের একটি বড় এবং অতি দ্রুত্রামী বকেট (Rocket) নির্মাণ করিয়া চালে পাঠাইবাব । বাৰস্থা কৰিতেছেন। কোনও কোনও বৈজ্ঞানিক এমনও মতলব আঁটিয়াছেন যে. উাহারা মস্তবভ একটা রকেট ভৈয়ার করিবেন-এবং এমন বাবস্থা করিবেন যে. যথন রকেট শৃয়ে ছুটিবে ইহার গভির বেগ কিংবা মুথ ইচ্ছামত বদলাইতে পারা যাইবে। পৃথিবী থেকে প্রতি সেকেণ্ডে সাত মাইল বেগ হিসাবে রকেটটিকে ছোডা হইবে এবং ইহা গিয়া চাঁদের চাঁদ কিংবা উপগ্রহ হইয়া চাদকে কয়েকমাস প্রদক্ষিণ করিয়া পুনরায় পৃথিবীতে ফিরিয়া আসিবে। এই রকেটটিতে যাত্রী যাবার বন্দোবস্ত করিতে হইবে এবং এক বংসরের জল রসদ ও অমুজানের **জো**গ।ড রাখিতে হইবে ৷ বৈজ্ঞানিকদের এই সঙ্কল্প কার্য্যে পরিণ্ড হইবে তাহ। বল। যায় না এবং কোনও কালে হইবে কি না ভাহাতেও গভীর সন্দেহ আছে। ভোমাদের মধ্যে কি কেত রকেটে চড়িয়া চন্দ্রলোকের যাত্রী হইছে রাজী আছ ?

পরে ভোমাদিগকে চক্র ও সূর্য্য গ্রহণের কথাও কিছু বলিব এবং চক্র সূর্য্যের আকর্ষণের জক্ত পৃথিবীতে কিরূপে জোরার ভাটা হয় ভাহাও বলিব।



# তুই সওদাগর

দে বছকালের কথা। এক দেশে ছই সওদাগর থাক্ত। তারা এক সাথে দেশ-বিদেশে খুরে বাশিল্য ক'রে বেড়াত। টাকা পয়সা যা হ'ত, ছই জনে ভাগ ক'রে নিত। এমনি ক'রে হুখে-ছুজ্জেল ভাদের দিন কেটে যায়।

হঠাং পর পর করেক সন অজয়। হ'য়ে দেশে বড় ছভিক হ'য়। গোলায় ধান নেই, পুকুরে জল ভিকিষে উঠ্ল—লোকে পেতেই পায় না—বাণিজা আর কি করে চলে । দেখতে দেখতে দেখতে এমন যে ধনী ছই সওলাগর ভালেরও আপনার বল্তে আর কিছুই রইল না। ভারা অভ্যন্ত গরীব হ'য়ে পড়ল। লাসদাসীর মাদের সংখ্যা ছিল না, নানারকম জিনিবে ঘর যাদের সর্বাবা ভরা খাক্ত, তাদের এখন শ্ম্ম পুরীতে গাছম্ ছম্ করে, ছবেলা ছটি থেতে জোটে না।

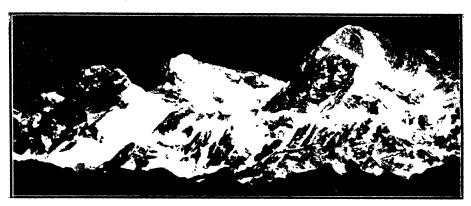
এম্নি কৈটে দিন যায়। ক্ষার আলা ক্রমেই অসক্ হ'য়ে উঠুল। একদিন ছোট সওদাগর এসে বড়কে ৰলে, "ভাই, তিন দিন ধ'রে উপোস ক'রে আছি—চাল ছোক্, কড়ি হোক্, যা ভোমার ঘরে আছে আমাদের ধার দাও, আমরা ধেরে বাঁচি।"

বঁড় সওদাগর মাথায় হাত দিয়ে বলে, "হা অদৃষ্ট, আমাদেরও যে আৰু ছদিন ধরে অল নেই, তোমার্য কোথা থেকে কি দিই ?" ছোট আর কি করে ? মুখটি চুণ ক'রে থালি হাতেই কিরে এল।

এ দিকে হয়েছে কি, বড় স্ওলাগরের কাছে এক-ধানা রূপোর ধালা ছিল। এড কটে পড়েও সে কি জানি কেন সেটিকে খ্ব যন্ত ক'রে রেখে পিরেছিল, হাত ছাড়া করেনি। ছোট স্পনাগরও সে
কথা জানত। নিরাশ হ'রে সে যখন বাড়ী ফিরে
গেল, তগন বড় স্পলাগর এসে ভার বৌকে ডেকে
চুপি চুপি বল্লে, "দেশ, আমালের এই থালাখানার
কথা তো ছোট স্পলাগর জানে, সে নিশ্চরই রাতে
এটা চুরি করডে জাস্বে। তা এক কাজ করা
যাক্। থালাখানাতে জল দিয়ে আমালের মাধার
উপর একটা শিকার টালিরে রাখি। চুরি করডে
এসে থালায় হাত দিলেই আমালের মুথে জল
পড়বে; তথনই আমালের মুথও জেকে বাবে।
ঠিক্ তেম্নি ক'রে থালাখানা ঝুলিরে রেখে তথন
তারা ছক্তনই ঘুমিয়ে পড়ল।

নিওতি রাত ; পত পাথী সব অংঘারে ঘ্যোছে।
পা টিপে টিপে নিঃশব্দে ছোট সঙলাগর ভৌ
ঘরে চুকেছে –থালাখানা নিরে যাবে—উপোসের
কট আর সর না। ভালা ঘরের দেওয়ালের কাক:
দিরে মিট্মিটে ভারার আলাে দেখা যাছিল।
ভাইতেই ভাল ক'রে ভাকিরে দেখে ছোট সঙলাগর
ব্যাপারখানা ঠিক্ বৃক্তে পারলে। বৃদ্ধিতে সেও
ভো কম যার না। খীরে একটি আলুল খালার
উপর রেখেই সে বৃক্তে, বে, খালা ভরা জল
রয়েছে। মনে সনে হেসে বল্লে, "আছাে, দেখা
যাক্ কে কত বাহাছুর।" ভারপর করলে দি না
এক রাশ বালু নিয়ে এসে আছে আতে সেই খালার
চেলে দিলে। অধ্নি সমন্ত জল চটু ক'রে ভাকিরে
গেল। ভথন খীরে খালা সামিরে নিয়ে সে

# পৃথিবীয় ছয়টি উচ্চ পৰ্বত শিখর



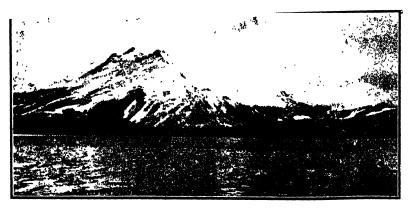
এভাবেষ্ট ( ১৯,০০২:ফিট )—এশিয়া



কাঞ্চনজন্তা ( ২৮,১৭৮ ফিট )—এশিয়া



একাস্বাপ্তয়া, দক্ষিণ-আমেরিকা—( ২২,৮৩৪ ফিট )



কেনিয়া বিটিশংপসা-আফিকা, (২০,০০০) ফিট উচ্চ)



পোপোকাটিপিটল, উত্তৰ-আমেৰিকা—( ১৭,৪০০ ফিট )



মণ্টব্লান্ধ ( ১৫,৮১০ ফিট )—ইউরোপ

বর ছেড়ে বেরিয়ে এল। বড় সওলাগর আর তার বৌতখন নাক ভাকিয়ে খুমোছে।

ছোট সওদাগর কিন্তু থালাখানা নিয়ে তথনই বাড়ী গেল না। কারণ, এ তো তার জ্বানাই আছে



करनव मीरह भारक मारक थानाथामा नुकिए ताथन

যে, থালা না পেলেই বড় স্ওদাগর আস্বে তার বাড়ী থেঁ জ করতে ! কাছেই ছিল পুকুর, ভার জল প্রায় শুকিরে গিয়েছে, তাবই ভিতর নেমে গিয়ে ধালাটিকে সে জলের নীচে পাঁকের মাঝে পুকিয়ে রাধল—স্থ্যাগ পেলেই উঠিয়ে এনে বিফ্রী করে দিবে। জায়গাটিতে চিহ্ন রাধবাব জায় জলের ধার থেকে লম্বা একটা ঘাদ এনে দেবানে পুঁতে দিলে—থেন জালের মধাই ঘাদ হ'য়ে আছে।

পরদিন থুব ভোর বেলায় বড় সওলাগরের তো ঘুম ভেক্ষেছে। চম্কে চোথ চেয়েই দেখে বে, শিকের উপর খালা নেই! তথনি বুঝে নিলে যে, এ ছোট সওদাগরেরই কীর্ত্তি! "আচ্ছা, দেখা যাক" বলে সে তো ৰাড়ী ছেড়ে বেরিয়ে পড়ল। যেতে ষেতে পুকুর-ধারে এদে ভাব্দে নেমে নিবে। জলে নামতে গিয়ে দেখে—বাং, এ তো ভারি মজা! কোথাও কিছু নেই, মাৰাপুকুরে শুধু একটি ঘাস হ'য়ে আছে। মনে মনে ভাল ক'রে ভেবে দেখলে.—না, কোথায়, কাল এটাকে দেখেছি বলে তোমনে পড়ছে না! ব্যাপারটা তবে দেখ্তেই হচ্ছে। এই ভেবে চিক্তে সে ভখনি নেমে সেধানে গেল। গিয়ে একটু এদিক্ ওদিক হাত্ডাতেই পাঁকের নীচে থালায় হাত পড়ল। খুসী মনে বড় স্ওলাগর থালাখানা তুলে নিয়ে কাপড়ে ঢেকে বাড়ী ফিরে এল। 📆 জলের মাঝে ঘাসটি যেখানে ছিল সেইথানেই যেমন ছিল তেম্নি দাঁড়িয়ে হাওয়ায় হেল্ডে ছল্ডে লাগ্ল।

ছু'তিন দিন বাদে ছোট সওদাগর এসেছে---থালাখানা তুলে বিক্রী করতে নিয়ে যাবে! নেমে গিয়ে জলের মধ্যে বদে প'ড়ে দে কত খুঁজতে नाभन, একবার এদিকের পাঁকে হাত দিচে, একবার ওদিকের পাঁকে হাত দিচ্ছে। কাদায় জলে তার সর্বান্ধ ছেয়ে গেল, কিন্তু তবু কি তার (थेंब्जात (भन इम्र । व्यवस्थित यथन त्यास (य থালাধানা সেধানে সন্ত্যি নেই, বড সওদাগর তুলে নিয়ে গিয়েছে, তথন উঠে নেয়ে ধুয়ে নিয়ে বড় म अमागदार वाफी द्यार माक मितन। यक्छ বেরিয়ে এল। তথন তোতুই শেহানে শেয়ানে কোলাকুলি! ভারপর ছোট সওদাগর বলে. "ভাই, বুদ্ধিতে দেখছি আমরা কেউই কম নই ; তুজ্বলে মিলে একদক্ষে এতদিন বাণিদ্যা করেছি, চল এবার ত্জনে মিলে দৃবদেশে গিয়ে নৃতন রকমে ভাগা পরীকা ক'রে দেখা যাক। এবার বৃদ্ধির জোরে লোক ঠকিয়ে টাকা-পয়স। উপাক্ষন ক'রতে হবে। এম্নি ক'বে তে। দিন আর চলছে না।"

বড সওলাগরও দেশ লে যে, এ বৃদ্ধি মন্দ নয়। দেও তৎক্ষণাৎ রাজী হ'য়ে গেল। ভারপর হল্পন বেরিয়ে পডল।

চল্ভে চল্ভে অনেক দ্রে এক নৃতন রাজ্যে তারা যধন এসে পৌছল, তথন বেল বেলা হয়েছে। ধাবার সন্ধানে বেরিয়ে তাদের মনে হ'তে লাগল, সাবা সহরের লোক যেন অত্যম্ভ ব্যস্ত। পথে যেতে যেতে ভাদের কথাবার্ত্তা খুব মন দিয়ে ভনে ছুই বন্ধু বুঝতে পারল যে, সেই সহরের সবচেয়ে ধনী সওদাগর ধনপতি শেঠের আগের দিন য়াতে হঠাৎ মৃত্যু হ'ৰেছে। সেইদিন সকালে তাঁকে শ্বশানে নিষে যাওয়া হ'বে, তাই সহর জুডে সবাই বাস্ত। ভন্তে ভদ্তে বড় সভদাগরের মাথার একটা বৃদ্ধি र्थान (भन । म हार्डे मक्षानद्रक एउक चाड़ात নিমে এসে কি করতে হ'বে তা সব তাকে ভাল ক'রে বুঝিয়ে দিলে। ভারপর রাত্তির অন্ধকারে গা ডেকে যেখানে ধনপতি শেঠের চিতা জগছিল চুজনে মিলে সেখানে এল। অন্ধকারে বেশ ক'রে একটা গর্ভ খুঁড়ে ছোট সওদাগর তার ভিতর লুকিয়ে রইল। বড় সওদাগর তার উপর পোড়া কাঠ-কুটো এমন

### r শিশু-ভারতী ++-

ভাবে সাজিয়ে দিলে যে, বোঝবার আর যে। রইল না, সেখানে একটা গর্ভ রয়েছে। মনে হ'তে লাগল যেন চিতারই নিভে-যাওয়া আধ-পোড়া কাঠগুলি এদিকে ওদিকে ছড়িয়ে পড়ে আছে।



এই দেখ দলিল, বাপের ঋণ শোধ কর

পরদিন ভোর হ'তে না হ'তে বড় স্ওদাগর ভো কতকগুলি কাগজ্ব-পত্ৰ হাতে ধনপতি শেঠেব বাডী এসে উপস্থিত। এসে তার ছেলেদেব বল্লে, "আমি দুরদেশের বিদেশী স্ওদাগর। তোমাদেব বাপ আমার কাছ থেকে চলিশ হাজার টাকা ধার নিয়েছিলেন। এই দেখ ভার দলিল: এবার ভোমরা বাপের ঋণ শোধ কর।" ছেলেরা তাই ভনে এ ওর মুখের দিকে চাইতে লাগল। তারপর বাপের কাগজ-পত্র পাঁতি পাঁতি ক'রে খুঁজে নিয়ে বল্লে, "কোথান, কাগজ-পত্তের মধ্যে তো চলিশ হাজার টাকার ঋণের কথা কোথাও লেখা নেই।" সে কথা শুনে সওদাগর যেন ভন্নানক বিপদে পডেচে এমনি ক'রে মাধায় হাত দিয়ে বদে পড়ল i তারপর আর কোন উপায়ই যেন নেই এই ভাবে ছেলেদের বলে, "আচ্ছা, চল শ্বশানে গিয়ে ভোমাদের বাপকেই বিজ্ঞানা করা যাক। তিনি ছিলেন সভাবাদী, এ যদি সভা ঋণ হয় তবে তিনি খৰ্ম থেকে নিশ্চয়ই অবাব দিবেন। নয় তে। আমি ফিরেই যাব।"

তাতে রাজী হ'য়ে লোকজন সাকী ইত্যাদি সব নিয়ে সবাই শ্মশানে গিয়ে উপস্থিত হ'ল।

সেথানে গিয়েই বড় স্ওদাগর চীৎকার ক'রে বল্তে লাগ্ল, ওহে ধনপতি, তুমি ধদি সত্তি আমার কাছ থেকে চল্লিশ হাজার টাকা নিয়ে নাক, তবে ম্বর্গ হ'তেও সে-কথা স্বার সামনে বল।" প্রথম বার কোন সাড়াশন্ধ নেই। স্ব চুণ্ চাণ্। আবার বড় সওলাগর ডাক্লে। এবারও কোন সাড়া নেই। স্বাই এ ওর মুথের দিকে ডাকাতে লাগ্ল। কিছু তৃতীয় বার ডাকের পরে চিতার ভিতর থেকে মৃত্তরে ক্বাব এল, "এই ঋণ স্ডা। এ শোধ না হ'লে আমি কিছুডেই শান্তি পাছিল।।"



এই ঋণ সভ্য

ছেলেরা তো একথা শুনে পরম সমাদরে বড় সওদাগরকে ডেকে নিয়ে চিক্লিশ হাজার টাকা দিয়েই দিলে। সেই সকে টাকা বয়ে নিয়ে যাবার জক্ত একটা গাধাও দিয়ে দিলে। বড় সওদাগর বিনার নিয়ে মহা ফুর্জিডে টাকা নিয়ে গাধার শিঠে চড়ে বস্লো। ভারপরে গান গাইছে বাজীর পথ ধ'রে চল্ল। ছোট সগুদাগরের কথা ভার আর একটুও মনে পড়ল না।

### +++ দুই সওদাগর

এদিকে ছোট স্ওলাগর সেই গ্রের মধা বসে আছে তো আছেই। বড় স্ওলাগরের মার দেধাই নেই। শেষকালে ভাব্নে, "ভাই তো, বড় স্ওলাগর ফাকি দিয়ে টাকা নিয়ে স্বে পড়েন ভো। ভার ভো ভারি রাগ্ হ'ল। ভাব্লে, "কা ? সারারাভ স্থানে গর্ভের ভিতর বসে কই করলাম স্থামি, আর টাকার বেলায় বড় স্ওলাগর একা!" ভ্রুনই গর্ভের ভিতর থেকে উঠে ছোট স্ওলাগর হন্হন্ক'রে বাড়ীব প্রধ্বে চলা হৃষ্ণ করলে।

কিছুদ্র গিয়েই দেখলে ঐ যে সাম্নেই বড সঙ্গাগর গাধার পিঠে টাকার বন্ধা চাপিয়ে বেশ ফুরিতে চলেছে। অম্নি ছোটও চুপি চুপি ভার পিছনে চলল।

থানিক দ্ব গিয়ে বড় সওদাগর দেখলে, জরীর কাজ কর। থ্ব ফুলর একটি জুতে। রান্তার উপর পড়ে আ,ছে। কিন্তু টাক। পাওয়ার আননেকই মন



ছোট সওদাগর ঝোপের আড়ালে লুকিয়ে রইল

তথন তার ভরে আছে, ফ্তোর দিকে সে আর তাকিয়েও দেখলে না, চলে গেল। একটু পরেই ছোট সওদাগর সেথানে এসে সেই স্তো দেখতে পেল। অমনি সে এক মতলব এটে স্তোটি তুলে নিয়ে মাঠের মাঝখান দিয়ে যে একটা সক রাছা সোজা চলে গিয়েছে তাই ধ'রে ছুটে চল্ল। ছুট্তে ছুট্তে যেধানে সেই মেঠো পথ বড় রাছায় এদে মিলেছে সেধানে সে বড় সওদাগরের অনেক আগেই পৌছল। তথন সেখানে সেই জতোটী ফেলে বেথে কাছেই একট। ঝোপের আড়ালে সে লুকিয়ে বইল। এদিকে বড় সওদাগর তো দিব্যি গাধায় চেপে গান গাইতে গাইতে আতে আতে চলেছে। হঠাৎ দেখলে দাম্নে ঠিক আগেরই মত একপাটি জুতো পড়ে আছে। এবার তার মনে হল "ভাইতো, বড় বোকামি হ'য়ে গেছে. ওপাটিও ভবে নিয়েই আসা যাক।" এই না ভেবে ঝে:পের কাছে গাধাটিকে দাঁড় করিয়ে সে চলল আব এক পাটির থোঁজে। চোথের আড়াল হতেই ঝোপের ভিতর থেকে ছোট সওদাগর বেরিয়ে এসে টাকার বস্তা পিঠে গাধাটিকে নিয়ে একেবারে নিজেব বাড়ীর দিকে' প্রস্থান করলে। এদিকে অনর্থক জুতোর খোঁজে ঘুরে খুরে হয়রাণ হ'য়ে ফিরে এসে বড় সওদাগর দেখে ঝোপের কাছেও সব শৃষ্য পড়ে আছে। কোথায় বা গাধা, আর কোথায় বা টাকার বস্তা! বুঝতে দেরী इ'ल मा. এ সব ছোট সওদাগরের চালাকি। कि আর করে-ক্র মনে বাড়ী ফিরে এসে স্ত্রীকে স্ব কথা বলে। তুজনে মিলে তখন ভাবতে বস্ল কি করে এ টাক। ফিরে পাওয়া যায়।

এদিকে ছোট স্বদাসর তো টাকা এনে ঘরের মেক্সের পুঁতে রেথে গ্রামের বাইরে এক ভাঙ্গা ক্রোব নীচে গিয়ে লুকিয়ে আছে। ছোট স্বদাগরের স্ত্রী রোক্ষ তার থাবার নিয়ে যায়। বোক্ষ দেথে দেথে বড় স্বদাগর ভাবতে লাগল, "ভালরে ভাল, রোক্ষ রোক্ষ একই সময়ে ছোট স্বদাগরের বৌ একা একা কোঝায় যায়? এ দেখতে হচ্ছে।" একদিন সন্ধ্যায় স্বদাগরের বৌ যথন থাবার নিয়ে যাচছে, তথন আক্ষারের বৌ যথন থাবার নিয়ে যাচছে, তথন আক্ষারের বুকিয়ে পা টিপে টিপে বড় স্বদাগর তার পিছন নিলে। যেতে যেতে সেই ভাঙ্গা ক্রোর কাছে যেরে ব্যাপার দেখে তো স্বই ব্রলে! সেদিন আর কিছু না ক'রে চুপ্চাপ্রাফ্টা ফিরে এল।

পর্যনিই সন্ধাবেলার ঠিক সমযের কিছুক্ষণ আগে মেরে সেক্ষে সব পচা গলা ধাবার নিমে বড় সওদাগর তো ক্রোর কাছে থেরে উপস্থিত। একটা দড়ি ফেলে প্রতিদিনের মন্ত ধাবার নামিয়ে দিলে। সেই খাবার মূথে দিয়ে ছোট সওদাগর তোরেগেই আগুন। তথন বড় সওদাগর করলে

কি, মেয়েদের মত গলা ক'রে বল্তে লাগল, "আমার কি দোব, তুমি টাকা দাও না, পরসা দাও না, আমি মেয়ে মাছ্য, কোথা থেকে রোজ বোজ পরসা জুটিরে ভাল ধাবার আন্ব ?" ভনে তো ভোট সওদাগরা আরো চটে উঠ্ল। চীৎকার ক'রে বল্তে লাগ্ল, "শোবার ঘরের মেঝের নীচে সেদিন যে চারাশ হাজার টাকা এনে প্তেরাধলুম ভাও কি তুই জানিস্নে? সেখান থেকে টাকা তুলে বিতে পারিস্ নি ? কাল থেকে ভাল ধাবার না আন্লে দেখতে পাবি মজা!"



ছোট সওদাগবের বাড়ী এসে উপস্থিত

বড় স্থদাগরকে স্বার পায় কে 
 তৃত্বদের রাজ 
হয়ে গেছে একেবারে চুপচাপ সেথান থেকে 
সে সোজা ছোট স্থদাগরের বাজী এসে উপস্থিত! 
এসে দেখে ছোট স্থদাগরের বাজী এসে বাজী 
স্ক্রকার করে ভাত নিয়ে চলে গিয়েছে। চুপি 
চুপি মাটী খুঁড়ে সব টাক। তুলে নিয়ে বড় স্থদাগব 
বাড়ী এসে বৌ-এর কাছে হাজির হ'ল। তারপর 
ছল্পনে মনের স্থানন্দে খুব হাসলে।

হাসি থাম্লে বড় সওদাগর স্থীকে বল্লে, "দেধ এখনি তো ছোট সওদাগর আসবে থোঁজ করতে। তা কিছু একটা তো করতে হয়। এক কাজ করা থাক্। আমি মরার মত ওয়ে থাকি, আব তুমি থুব চীৎকাব ক'রে কাঁদ। আমাকে শ্লশানে নিয়ে যাবার সময় আমি ভাগ করব যেন আমায় ভূতে পেয়েছে। স্বাই তথন আমায় ফেলে পালিয়ে যাবে। ভারপরে ছুপুর রাতে চুপি চুপি ফিরে এসে টাকাব থলে নিয়ে ভূমি আর শ্লামি, অক্ত দেশে পালিয়ে যাব।" এই ঠিক ক'রে বড সওলাগরকে কাপভ চাপা দিয়ে ভার স্থা চীংকার ক'রে কাদতে লাগল।

এখন ছোট সওদাগরের কি হ'ল দেখা ঘাক্। ব**ড়সওদাগর চলে আসার** কিছুক্ষণ পরে যথন সভি৷ সভি৷ ভারত্তী খাবার নিয়ে এসে হাজির হ'ল, তথন তো তার চক্স্থিব ় ব্যাপাব স্বই 🖯 বু**ঝতে পেবে কুয়োধেকে উ**ঠে তাভাতাড়ি বাডী এসে দেখলে, যা ভেবেছে ঠিক ভাই! সব শৃক্ত পড়ে আছে। হুজনে মাথায় হাত দিয়ে বদে পডেছে, এমন সময় ভন্লে পাশেব বাড়ীতে ভীষণ কালাব রোল উঠ্ন। ব্যাপাব কি দেখতে তৃত্বনেই ছুটে পেল। গিয়ে দেখে বছ সভদাগর ভাষে আছি, পা থেকে মাথা প্যান্ত একটা চাদ্বে ঢকো, আর পাশে বসে তাব স্ত্রী যুব চীংকাব ক'রে কানছে। व्या दिन्मीया हात्रधारय माफ़िश्च (कडे नायुना निर्देख, কেউ বা শাশানে নিয়ে যাবাব যোগাভ করছে। ছোট সওদাগব কিছুন। বলে চুপি চুপি বেরিয়ে এসে কারো কাছে কিছু না বলে একেবারে ঋশানে গিয়ে একটা প্রকাও গাছের উপর লুকিয়ে বসে वहेल। १ (भ (छ। कात्न (य, अ भवहे हालांकि।

এদিকে প্রতিবেশীরা স্বাই মিলে তো বড় সঙ্গাগরকে ঋশানে এনে নামিয়েছে, এমনি সময় বাঁধনের ভিতর খেকে বড় সন্তদাগর বিকট হরে চীংকার ক'রে উঠেছে। তাই শুনে ভূতে পেয়েছে ভেবে আর কি কেউ সেধানে দীড়ায়। তথন কে কত আগে পালাবে সেই চেইটি চল্তে পাগ্ল। দেখ্তে দেখ্তে ঋশান আবার শৃষ্ঠ পড়ে রইল। চারিধাবে কেবল অন্ধকার আর শেষাল-কুকুবের চীংকাব।

ছোট পওদাগর থানিকক্ষণ অপেক্। ক'রে বেরিয়ে আস্বে, এম্নি সময়ে দ্রে অনেক পায়ের শব্দ ভন্লে। তথন সে আবার চুপ চাপ নিজের শায়গায় বদে রইলো।

## -- ভিল্নী-মা

এখন হয়েছেকি, সাতচোর চলেছে চুবি করতে-किष्ट्रमृत यारख्डे अक्षकारत कि रचन भारत रहेक्ता। ভাল ক'রে দেখে ব্বালে মড়। প'ডে আছে। তথন তাদের সন্ধার বলে, "ভাই, পথে মড়া দেখুতে পা ওয়া বড় ভাল। আৰু যদি আমাদেব কাল ভাল ক'রে শেষ করতে পারি, তাহ'লে ফিরে এসে একে কিছু ভাগ দিব।" এই বলে তারা চলে গেল। বড় আর ছোট সওদাগব যে যেমন ছিল, তেম্নিই রইল। অনেককণ হ'য়ে গেল। চারধার নিঝুম, কেবল সেই ফাকা শ্বশানের উপর দিয়ে মাবে৷ মাঝে ছুই একটা পাখা উড়ে যাবার শব্দ শোনা যাছে। বড় আর ছোট সওনাগর অপেকা করতে লাগুল। ष्यां करत करत यथन क्राष्ट्र इ'रह পডেছে, এমন শময় চোরেরা ফিবে এল--সঙ্গে তাদের চৌদ্দ ঘড। মোহব। মোহরের ঘড়া নামিয়ে বেখে কাণা স্দার বলে, ''দাড়া ভাই, একটা করছি।" এই না বলে খানিক চুর্গদ্ধ নোঙরা कत रफ मछनागरतत मृत्थ द्वारण निरम्रह । বড় সওলাগর তো সে জল মুখে যেতেই ভয়ানক ভাবে কাশতে স্থক করে দিয়েছে। সেই স্থোগে গাছের ঘন পাভার আডাল থেকে ছোট সওদাগর विकृष ऋत्त्र की श्कात कत्त्र छित्रे हृ, "बत्न, धत्न, পিছনের গুলো ছেড়ে দিয়ে আগে সামনেরটার घाड डाक !" এই ना (मध्य अवर अतन हारतवा कि আর শেধানে দাড়ায়! ঘাড় ভাকার ভয়ে চোধ বুলে যে যেদিকৈ পারলো মোহরের ঘড়া কেলে দৌডোলো। তথন আর কি! ছোট সওদাগরও গাছ থেকে নেমে এল, বড় সওদাগরও গা বেড়ে উঠে বস্ল। একজন আর একজনকে বরে, "ভাই এতকাল মিথো একজন আর একজনকে ঠকাতে



্চোবেরা যে যেদিকে পারলে দৌড়োলো

গিয়ে কট পেলুম। চল এবাব ত্জনে মিলে কাফ করব।" এই বলে মোহবেব ঘড। তুলে বাড়ী ফিরে এল। ভারণর সব টাকাকড়ি সমান ভাগ ক'রে নিয়ে ত্জন মহাস্থাধ বাস করতে লাগ্ল।

# চিল্নী-মা

(পূर्ववाःनात ज्ञानकथा)

এক রাজা। রাজার চুই রাণী। কোন রাণীরই ছেলেপিলে হর না—রাজার মনেও শাস্তি নাই, রাণীদের মনেও শাস্তি নাই।

রাজা যাগ করেন, যজ্ঞ করেন, রাপীরা বারমানে তের ত্রত করেন, কিছুতেই কিছু হয় না! এক-দিন প্রণিযার রাতে ছোটরাণী হঠাৎ স্বপ্ন দেখেন— রাজবাড়ীর অন্দরমহলে চ্থপুকুরের মাঝখানে সাদা-ধব্ধবে একটা পদ্ম ফুল ফুটিয়া আছে; সেই ফুল তুলিয়া আনিয়া তিনি বাটিয়া খাইরাছেন, আর কোলে পাইয়াছেন দিব্য-ফুটুফুটে একটি রাজ-ক্যা। সেই রাজক্তার নাকের নিঃখাসে জল-পদ্মের গন্ধ, তার গায়ে ছবে-আলতা মিশানো স্থল-পদ্মের রং আর কালো-কুচ্কুচে ছই ভুকর মাঝে খেত-পদ্মের একটি টিপ্। বথ দেখিয়াই ছোটবাণী তড়াক্ করিয়া বিছানা ছাড়িয়া উঠিয়া বদিকেন। তারপর কাহাকেও কিছু না বলিয়া বিড্কির দরকা খুলিয়া ছ্ধ-পুকুরের পাড়ে ছুটিয়া গেলেন। দেখানে গিয়া দেখেন – সত্য-সতাই ত্ধপুকুরের মাঝখানে সাদা-ধ্ধ্বে একটা পুলফুল! পদ্মফুল দেখিয়া ছোট রাণীর আার তর্সয় না—জলে র্মাপাইয়া পড়িয়া ছ্ধ-পুকুরের মাঝখানে গিয়া প্লফুলটি তুলিয়া আনিলেন।

বড়রাণী আঁত্ড় ঘরের পিছনে পুকাইয়া রহিলেন। আঁতৃড়-ঘরে যাই-না ছোটরাণীর মেয়ে হইয়াছে, অম্নি ধাই পিছন দিক দিয়। তাঁহাকে বড়রাণীর হাতে দিলেন আর ছোট-রাণীর কোলের কাছে রাথিয়া দিলেন একটা বিড়ালছানা। রাজ্বাড়ীব কেহই জানিতে পারিল না—বাাপার কি হইল; ছোটরাণীও ব্ঝিতে পারিলেন না—কেন এমন হইল।



ত্ধপুকুরের পাড়ে ছুটিয়া গেলেন ভারপর রাশ্বপুরীতে ফিরিয়া আদিয়া ফুলটি বাটিয়া খাইয়া ভইয়া বহিলেন।

দিনের পর দিন ধায়, কিছুদিন থাইতে না থাইতে ছোটরাণীর মনে আনন্দ ধরে না—স্বপ্লের ফল বুঝি সত্য হইল। বড়রাণী আড়-চোধে ছোট-রাণীর দিকে চান, আর মনের হিংসার জলিতে

থাকেন—হায় হায়, ছোটর কপাল হইল বড়, আর বড় হইয়াও তাঁর মান বুঝি আর থাকে না! বড়বালী দিনবাক নিজেব দাসী বাদীর সভে

বড়রাণী দিনরাত নিজের দাসী বাদীর সজে

যুক্তি করেন, রাজবাড়ীর ধাইকে ডাকাইয়া আনিয়া
কানে কানে কথা কন। দশমাস দশদিনের দিন



ধাই মেয়েকে বড়র।ণার হাতে দিলেন

বড়রাণী রাজক্তাকে রাজবাড়ীর ত্রিসীমানাও রাখিলেন না—নতুন হাড়ির ভিতর শোয়াইয়া নতুন সরা মৃথে চাপা দিয়া নদার জলে ভাসাইয়া দিলেন।

ইাড়ির ভিতরে রাজকল্পা নদীর কলে ভাসিয়া চলিয়াছেন। নদীর চেউরে ইাড়িতে যথন দোলন লাগে, রাজকল্পা কাদিয়া উঠেন। নদীর পাড়ে বটগাছের মাথায় এক শৃশ্বচিলের বাসা। শৃশ্ব চিল বাসায় বসিয়া শোনে ইাড়ির ভিতর মালুষের কাল্লার শশ্ব। শশ্বচিল শোঁ করিয়া উড়িয়া আসিয়া ইাড়ির উপর বসিল। ভারপর ঠোঁট দিয়া ইাড়ির

মুখের সরা সরাইয়া দেখে—দিব্য-ক্ষর ফুট্ছুটে এক রাজকল্পা! শত্তিল রাজকল্পাকে মুখে করিয়া বটগাছের মাধায় লইয়া গেল।

বাজকতা শখ্টিলের বাসায় থাকেন, শখ্টিলের পিঠে চজিয়া নীচে নামিয়া আদেন, আর শখ্টিল যথন চরিতে যায়, তিনি তথন নদীর পারে বিলয়া খেলা করেন। শখ্টিল এদেশে যায়, ওদেশে যায়, রাজকতার অতা ঠোটে করিয়া রাজ্যের জিনিয় লাবারের হুংখ নাই,—দিনে দিনে রাজকতা শখ্টিলের বাসায় বাডিয়া উঠেন।

#### -8-

একদিন সেই নদী দিয়া সাত ডিক্সা বোঝাই করিয়া এক সদাগর চলিয়াছেন। সদাগর ডিক্সায় বসিয়া জ্বলপ্রের গদ্ধ পান। নদীর জ্বলে পদ্ম ফ্লল কোথায়? সদাগর এদিকে চান, ওদিকে চান, নদীর পাড়ে নজর পড়িতে দেখেন—যেন থোকা-বাধা পদ্মদ্বলের রাশ! কিন্তু কেমনই বা এই পদ্মদ্বল?—হাওয়ায় যে পদ্ম দোল খায়, ভাহা বোটার সঙ্গেই নড়ে-চড়ে। এ যে দেখি চলন্তু পদ্ম!—এদিকে যায়, ওদিকে যায়, কোনোখানেই ছির নাই! সাত ভিক্পা কুলে ভিড়াইয়া সদাগর নদীর পাড়ে উঠিলেন। উঠিয়া দেখেন—

চলস্ত পদাই বটে,—এ কোন্ পদাস্কা!—

চক্ষে কভু পড়ে নাই রে এমন রূপের তুল!

চোধে পলক পড়ে না, স্বাগর একদৃষ্টে রাজক্সার

দিকে ডাকাইয়া ভাবেন—এ কি বর্গের অধ্বরী!

সদাগর ডিলা লাগাইয়া নদীর পাড়ে সাত দিন রহিলেন। রাজকল্পাকে না পাইলে তিনি দেশে কিরিবেন না। সদাগর শশুচিলকে ধরিয়া পড়িলেন—তিনি রাজকল্পাকে বিয়ে করিতে চান। শশুচিল তাবিল—বিয়ের বয়স ইইয়াছে, মেয়ের বিয়ে দেওয়ায় কতি কি। রাজকল্পা শশুচিলের মনের ভাব বৃকিতে পারিয়া বলিলেন—'চিল্নী-মা, তোমার কোলে আমি এত বড় ইইয়াছি, এখন আবার কাহার কাছে য়াইব! তোমাকে ছাড়িয়া আমি থাকিতে পারিব না।' শশুচিল রাজকল্পাকে ব্রাইয়া-হুয়াইয়া রাজী করিল। রাজী ইইয়া রাজকল্পা বলিলেন—'বেশ, আমি সদাগরের সক্ষে

যাইব। কিন্তু বে ঘরে আমি থাকিব সেই ঘরের সঙ্গে আর চিন্নী-মায়ের বাসায় একগাছা সূডা বাধিরা দিতে হটবে। আমি দেই সূডায় ছিনবার নাডা দিয়া যথনই বলিব—

স্তাগাছটি নড়েচড়ে, চিল্নী-মা আমার উড়িয়া পড়ে ! তথনই কিন্ত চিল্নী-মায়ের দেখা পাওয়া চাই।'



#### এ यে দেখি চলম্ভ পদা!

শঙ্কচিল বলিল—'আছা।' সন্মাগরও বলিল— 'আছো।'

ইহার পর স্থাপর রাজক্তাকে বিবাহ করিছা দেশে লইয়া চলিলেন।

দেশে গিয়া সদাগর রাজকজার কথামত তাঁর শোবার ঘরে আর শঝ্চিলের বাসায় একগাছা স্তা বাঁথিয়া দিলেন।

### -0-

সদাগর এখন হইতে দিনরাত রাজক্সার খরেই থাকেন,—ব্যবসা-বাগিজ্যে আর মন নাই। ছেলের কাও দেখিয়া স্বাগ্রের মা ভাবিয়া অস্থিত—এমন হইলে ঘর-সংসার চলে কি করিয়া! সদাগরের মা ভাবিয়া-চিভিয়া ঠিক করিলেন—বৌকে যদি ঘর-সংসারের কাজে বাত্ত রাখা যার, ভাহা হইলেই ছেলের মনও কাজকর্মের দিকে ফিরিয়া যাইবে। ইহা ভাবিয়া সদাগরের মা ফরমাসের উপর ফরমাস দিয়া রাজকল্ঞাকে দিনরাত খাটাইবার ফন্দি করিলেন।

আক্ষু পাৰীর বাসায় মাছুব,—রাজকতা। এত ফাই-ফরমাস থাটেন, সাধ্য কি! তার উপর কাজকর্মেরই বা তিনি জানেন কি! সদাগরের মা আপের দিন শোবার আগে পবের দিনের রাজ্ঞার কাজের ফরমাস করিয়া রাখেন। রাজকতা। ঘরের গিয়া শুঝুচিনের বাসায় বাঁধ। স্থত। গাছা ধরিয়া তিন তিনবার নাড়া দিয়া বলেন—

'স্তাগাচটি নড়েচড়ে

চিল্নী-মা আমার উড়িয়া পড়ে!'
অমনি শোঁ শোঁ করিয়া উড়িতে উড়িতে শশ্বচিল
ভার কাছে আসিয়া উপস্থিত হয়। রাজকল্পা
শশ্বচিলের কাছে কাদিয়া বলেন—'চিল্নী-মা, আমি
তো কাজকর্ম কিছুই জানি না। এখন উপায়?'
শশ্বচিল বলে—'ভয় কি! আমিই সব করিয়া
দিভেছি।'—এই বলিয়া শশ্বচিল রাজকল্পার সমন্ত
ভাজ করিয়া দিয়া চলিয়া যায়। পরের দিন
সলাপরের মা উঠিয়া দেখেন—কোন কাজই বাকী
নাই।

কন্ত দিনের পর দিন এই রকম হয়, অথচ ছেলে-বৌ আগেও বেমন ছিল, এখনও তেমনই আছে—দেখিয়া সদাগরের মায়ের মনে সন্দেহ হইল। তিনি রাজকন্তার ঘরের পিছনে লুকাইয়া রহিলেন, আর সেখানে লুকাইয়া থাকিয়া দেখিলেন —রাজকন্তা আর শখ্চিলের কাও। তারপর ঘরে ছিরিয়া গিয়া তিনি মনে মনে আর এক ফন্দি আঁটিয়া রাধিলেন।

ইছার পর একদিন স্বাগর বাইরে গিরাছেন,
আর রাজকল্পা নাইতে গিরাছেন, সেই স্থবোগে
স্বাগরের মা চূপে চূপে রাজকল্পার ঘরে গিরা
স্থভা ধরিয়া নাড়িতে নাড়িতে বলিতে লাগিলেন—
'স্ভাগাড়টি নড়েচড়ে'

চিল্নী-মা আমার উড়িয়া পড়ে।' অম্নি শোঁ পোঁ করিয়া উড়িতে উড়িতে শথ্চিল রাজকভার খবে আদিয়া হাজির। স্বাগরের মাও তথনই থপু করিরা শশ্চিকৃত্বে ধরিরা ফেলিলেন। তার পর ভাহাতে কাটিরা কুটিরা মাংস র'থিয়া রাধিলেন।

তুপুরবেলা রাজকল্পা থাইতে বসিরাছেন, স্নাগরের মা বাটি ভরিরা মাংস আনিবা তার পাতের কাছে দিনেন। রাজকল্পা হাতের গ্রাস মূধে তুলিবেন, মাংসের গন্ধ নাকে যাইতেই



শশ্চিদ তার কাছে আসিয়া উপস্থিত হয়
চম্কাইয়া উঠিলেন। তাঁর পাতের ভাত পাতে
পড়িয়া রহিল। রাজকল্পা কাদিতে লাগিলেন—
'একি ধাইতে দিলেন, ঠাক্কণ,—এমন থাবার
কেমনে আজা বাই ?—

পাতের কাছে কেন আমার চিল্নী মায়ের গায়ের গন্ধ পাই!

রাজকভার আর খাওয়া হইল না,—ছুটিরা তিনি ঘরে গিয়া স্তা ধরিয়া তিন তিনবার নাড়িয়া দিয়া বলিতে লাগিলেন—

'স্তাগাছটি নড়েচড়ে, চিপ্নী-মা আমার উড়িরা পড়ে !" 4

### किर्मा-मा

কিন্ত, কই, স্ভা ধরিয়া ষ্ডট নাডেন, দ্যুচিল ভো আদে না! রাজকলা এদিকে চান, ওদিকে চান, দেখেন, ঘর-ভরা শুখাচিলের পালক। পালক দেখিবা রাজকলার বুঝিবার কিছুই বাকী রহিল না। পালকগুলি গুড়াইয়া বুকে তুলিরা লইয়া ভিনি আচাড ধাইয়া কাদিতে লাগিলেন।



আছাড় খাইয়া কাদিতে লাগিলেন স্বাগর ঘরে কিরিয়া আসিয়া রা এইভাবে দেখিয়া অন্থির।

ওরে, এই বে রাধিরা গেলাম

তাজা পল্লের কলি,
কোন্ কালো-ঝড় আসিল রে—
পড়িয়াছে ঢলি!

সদাগর রাজকভাকে কোলে তুলিয়া লইয়া নিজেও চোখের জলে বুক ভাসাইতে লাগিলেন।

-3-

সেই হইতে রাজকক্তা ক্রিয়ে পডিরাই আছেন—
নানও না, থানও না; সদাগর কিছু বলিতে
চাহিলে ডুকুরিয়া কাঁদিয়া উঠেন, বলেন—'চিল্নীয়াকে আযার আনিয়া দাও, নইলে এ প্রাণ রাথিব

না।' রাজকভার নতে নতে নগাগরেরও বাওয়া-থাওয়া বছা।

সলাগরের মা লেখিলেন—এ বে বিপলের উপর বিপল হইল। ছেলে ব্যবসা-বাপিছা না করুক্, প্রালের তো ভয় নাই। এখন বে, বৌরের সংস্ক্ ছেলেও না খাইলা মহিতে বসিয়াছে।

ছেলের বারার মারের মনে সোরাভি নাই। স্বাগরের মা দেবভার ছ্রারে গিরা ধর্ণা দিরা পড়িরা হহিলেন—দেবভা দরা না করেন ভো সেইখানে ওকাইয়া মহিরা থাকিবেন।

মাছরের মনের কথা দেবতার জানিতে দেরী
হর না। সদাগরের মারের মনের কথা জানিতে
পারিয়া দেবতার সরা হইল। তিনদিনের দিন
সদাগরের মা অগ্ন পাইগেন—ছইয়াসের পথের পর
এক রাজপুরী আছে; সেধানে সাদা-ধর্ধবে ছ্বের
রঙ্কের জান, এক ত্ণপূক্র আছে; শশ্চিগের সালক
লইয়া রাজকন্তা সেই পুকুরে পৃণিযার রাতে নাইয়া
উঠেন তো শশ্চিগ জায়ত্ত হইয়া উঠিবে।

স্বপ্ন পাইরা সদাগরের মা স্বপ্নের কথা ছেলেকে আর ছেলের বেকৈ বলিলেন। সদাগর স্থান রাজকভাকে দইরা তৃথপুকুরের ধোঁতে ছলিলেন।

নদীর অনে ছপ্ছপ্ করিয়া সদাপ্তের জিলা চলিল। জিলার মাঝি-মায়ায়া পথের লোককে ভাকিয়া কিঞাসা করে—'দালা-ধব্ধবে মুধের রুদ্ধের রুদ্ধের ক্ষেত্র আক এমন ছ্পপুরুর আছে বে রাজবাড়িতে ভাহা কি ভোমরা চেন ?' পরের লোকের। কেউ বলে—'উ'। বৈ ছ'- বলিল, ভার নিকট হইতে পথ-ঘাট চিনিয়া লটয়া ভিলা চালাইতে চালাইতে মাঝি-মায়ায়া ছইমান পরে রাজবাজির ঘাটে আসিয়া পৌছিল। মেথানে আসিয়া স্বাই পোনে রাজবাজির অকর্মহলে সত্যই এক ছ্থপুতুর আছে, আয় ভার জ্লও ছ্থের মতই সালা।

হুণপুৰুবের খোঁক তো মিলিল; উহাতে নাইতে হইলে রাজবাড়ির অন্ধরমহলে বাওয়া চাই, আর নাইতেও হইবে পূর্ণিযার রাতে;—স্ব স্বের ডিকা রাজবাড়ির বাটেই বাধা র'হল। পূলিমার রাতে সদাগরকে ডিকার রাখিরা র ক্ষত্রা ভূথপুকুরে নাইতে রাজবাড়ির অন্ধরমহলে চলিলেন।

ে কোথাকার কোনু বিদেশী ভ্যপুরুরে নাইভে আনিবাহে, রাজপুরীতে আগেই নে কথা রটবা গিছ'ছে। রাজপুরীর লোকজনের। স্কা। ইইতেই ত্থপুকুরের পাড়ে সার দিয়া দাড়াইয়া রহিল। রাজক্ত্রা পুকুরের ঘাটে পা দিতেই জল-পদ্মের গঙ্কে চারিদিক ম'—ম'। তার উপর তাহাকে দেখিয়াও স্বাই অবাক্—কে এই অর্গের অক্সরী, গায়ে ত্থেআলতা-মিশানো ছুল-পদ্মের রং, আর কালোকুচ কুচে তুই ভুকর মাঝে খেতপদ্মের একটি টিপ্।

ছোট রাণীর দাসী ছোট রাণীর মহলে দৌড়াইয়া গিয়া থবর দিল— 'রাণী-মা, স্বর্গের কোন্ অব্দানী যেন ত্বপুকুবে নাইতে আসিয়াছে! সে পুকুরের ঘাটে পা দিভেই জনপল্লের গজে চারিদিক ম'-ম'। তার উপর তার গায়ে তুখে-আল্তা-মিশানো স্থলপদ্মের রং, আর কালো-কুচকুচে ছুই ভুকুর মারো শেত-পদ্মের একটি টিপ!'

দাসীর কথা ওনিয়া ছোট্রাণী চম্কাইয়া উঠিলেন। ছাাং করিয়া অপ্রের কথা তাঁর মনে



কার ঝিয়ার তুমি, বাছা ?

পড়িল। ত্ৰপুক্রের পলফুল বাটিয়া খাইয়া তাঁর বে-রাজকভাকে পাওয়ার কথা ছিল, এতদিনে সেই আদিল নাকি! ছোটবাণী ভূধপুকুরের ঘাটের দিকের জানালায় দাঁভাইয়া রাজবক্তাকে দেখিতে লাগিলেন।

কিন্ত শুধু চোখের দেখা দেখিয়াই মনের খাঁধা খোচে কই ? ছোটরাণী রাজকল্পাকে ডাকিয়া কিল্লানা করিলেন—

'কার ঝিয়ারি তুমি, বাছা! কোথা ভোষার ঘর ? কাদের কুলের বৌ গো তুমি ? কেব৷ ভোমার বর ?'

রাজকন্ত। উত্তর কবিলেন—

'কার ঝিয়ারি নাহি জানি,
সদাগর মোর স্থামী।

জন্ম হ'ডে চিল্নী-মামের

কোলে মাছুয আমি।

'চিলনী-মায়ের কোলে মাছব !'—ছোটরাণী বলিলেন—'সে কি ?'

রাজকল্পা ছোট রাণীকে তার চিল্নী-মায়ের কথা ব্যাটয়া বলিলেন।

ছোট রাণী জিল্পাসা করিলেন—'ভোমার সে চিল্নী-মা কোথায় থাকে ?'

রাজকন্তা শখ-চিলের পালকগুলি ছোট রাণীকে দেখাইয়া বলিলেন—'চিল্নী মা-মারা গিয়াছে। এই তার পালক। ইহার জন্তুই ত্রণপুকুরে নাইতে আদিয়াছি। পূণিমার রাতে ত্রধপুকুরে এই পালক লইয়া নাইলে চিল্নী-মা আমার বাচিয়া উঠিবে।'

ইহার পর ছোটবাণী চূপ করিরা দীড়াইয়া রহিলেন। ভাবিলেন—শম্বাচল আগে বাচিয়া উঠুক। তারপর আর যে কথা আছে ক্ষিঞালা করা যাইবে।

#### -9-

শ্মচিনের পালক লইয়া রাজকঞা ত্থপুসুরের জলে নামিলেন। ত্থপুসুরের জল পালকে লাগিতেই শ্মচিল বাচিয়া উঠিল। শ্মচিলকে বৃকে জড়াইয়া ধরিয়া রাজকঞা পাড়ে উঠিলেন। ছোটরাণী তথন জাদর করিয়া রাজকঞাকে ডাকিয়া রাজপুরীতে লইয়া গেলেন।

রাজকল্পাকে দক্ষে করিয়া ঘরে সিয়া ছোটবাণী শশ্চিলকে জিজানা করিলেন—'নৃত্যবুগের পাখী তুমি, শৃশ্চিল,—সভ্য করিয়া বল দেখি, ভোষায় \*

কোনে য়াম্ব এই যে কলা, ইহাকে তৃষি কোথায় পাইয়াছ।'

শশ্চিল বলিল—'নদীতে ইহাকে পাইয়াছি। নতুন দরা ঢাকা নতুন ইাড়ির ভিতর ভাদিয়া ধাইতেছিল, কারা শুনিয়া ইহাকে আমার বাদায় লইয়া গিয়াছিলাম।'

শৃথ্যতিল রাজক্তার বয়স গ্লিয়া বছরের হিসাব

বছরের হিসাব পাইয়া ছোটরাণীর স্মার ধৈব্য ধরিতেছিল না। দাসীর দিকে ফিরিয়। তিনি ছকুম দিলেন—'রাজবাড়ীর ধাইকে এখনই ডাক দেখি।'

রাজবাড়ীর ধাই বৃড়ামানুষ। ছোটরাণীর হকুম পাইয়া লাঠি ঠক্ ঠক্ করিতে করিতে ভখনই রাজ-বাড়ীতে আসিয়া হাজির হইল।

ছোটরাণী ধাইকে বলিলেন—'ধাই, তুমি রাজ-বাড়ীর তিনপুরুষের ধাই-মা। সভা করিয়া বল দেখি —মাছষের পেটে বিড়াল-ছানা হইতে দেখিয়াছ?'

কোন্ স্থাবের কি মনে করিয়াছোটরাণী এ কথা বলেন, বুড়া বয়সে ধাইয়ের কি অত ধেয়াল আছে। ফোকলা মূথে হাসিয়া সে জবাব দিল—'তাহা কি কথনও হয়, রাণী-মা।'

ছোটরাণী রাজক্তাকে দেখাইয়া বলিলেন— 'তবে বল দেখি এখন সতা করিয়া—জ্বার সময় ইহাকে তুমি দেখিয়াছিলে কি না।'

ধাই রাক্ষকার মুখের দিকে চাহিরা থমকিয়া দাড়াইল—তাই তো! ছোটরাণীর আঁতুড়-মরে এই রকমই তো রাজকলা প্রত্মিয়াছিল!—এই রকমই তো গায়ে হুদে-আল্তা-মিলানো স্থপদার রং, আর কালে। কুচ্কুচে ছই ভুকরমাকে খেতপদ্মের একটি টিপ্! তার উপর তার উপর আবার… ধাই ক্ষপদার গদ্ধ পাইয়া ঠিক ব্রিতে পারিল—একে! কিন্তু মনের কথা মুখ কুটিয়া বলার জো কি আছে! ধাইদের মুখে কথা স্বিল না, মাথা নীচুক্রিয়া সে গাড়াইয়া রহিল।

ছোট রাণীর বৃকে তথন মায়ের ক্লেহের কড় উঠিয়াছে। ধাইয়ের ক্লবাব না পাইয়া ধাইয়ের কাছে তিনি আগাইয়া গেলেন; তারপর নিকের হাতে তার হাত চুইখানি জ্বচাইয়া ধরিয়া বলিতে লাগিলেন—'বল, ধাই, বল, একবার ম্বের কথা বল
—এই কল্পাই আমার আঁত্ড়-ঘরে জ্বিয়াছিল
কি না। তোমাকে আমার এই গলার হার
দিন্তেছি—তুমি একবার শুদ্রন, হা।'- বলিয়া
ছোটরাণী গলার হার খুদিয়া সভাসভাই ধাইয়ের
গলায় পরাইয়া দিলেন।



্ছোটরাণী গলার হার খুলিয়া ধাইয়ের গলায় প্রাইয়া দিলেন

ধাইয়ের মনে কি হইল, কে জানে ? সে ছুই একবার ঢোক গিলিয়া বলিয়া ফেলিল—'রাণী-মা, অভয় পাই তো বলি—এই রাজক্ঞাই আপনার আঁতুড়-থরে জ্ঞায়িছিলেন।'

—'ভার পর ্'

— 'ভারণর বাহা, বড়-রাণী মা জানেন। ভানিয়াছি, নতুন হাঁড়িতে শোওয়াইয়া নতুন সরা মুখে দিয়া রাজকল্ঞাকে নদীর জলে ভাসাইয়া দেওয়া হইয়াছিল।'

ধাইয়ের মূথের কথা শেষ না-হইতেই ছোটরাণী পাগলের যত ছুটিয়া গিয়া রাজকভাকে বুকে জড়াইয়া ধরিলেন। -विशाष--- त्रदे विशाष्ट्र भृष्यित्वत्र वाता इहेन ।

ভবের থবর হাওরার ছোটে। রাজবভাবে দেখিতে ছুপুর রাভেই রাজ্যের লোক রাজবাড়ীতে ছুট্টরা আদিন। ক্লাজা আদিরা রাজবভাবে দেখিয়া আহলাদে আটখানা!

কিছুক্দ পরে রাজা বড়রাণীকে তলব দিয়া শোনেন—রাজপুরীতে তাঁর খোজ নাই; রাভারাতি কোথায় তিনি পলাইয়া গিয়াছেন।

রাজক্তা স্বাগরের স্থী হইয়াছেন, স্বাগর রাজার জামাই হইলেন। বুড়া রাজার পর রাজ্যের রাজা তিনিই হইবেন, ঠিক হইল।

ছোটরাণী ত্থপুকুরের চারিপাড় সোনায় বাধাইয়া দিলেন—এই ত্থপুকুরের দৌলভেই তিনি রাজক্ঞাকে পেটে ধরিয়াছিলেন, আবার ইহারই ঘৌলতে তার হারানে। ক্ঞা লাভ হইল। রাজক্ঞা শুখাচিলের জ্ঞা বানাইয়া দিলেন একটা সোনার



রাজকল্প। একশবার ভাকেন—চিল্নী মা! রাজকল্পা সোনার ব্টগাছের কাছে যাইয়া দিনের মধ্যে একশবার ভাকেন—চিল্নী মা!

# **ठाँ मृ**र्यात (मरम

( চীন পুরাণের গল্প )

দে অভি সভিাদ্গের কথা। একদিন চীন-সমাট ইয়াও তাঁর রাজধানীর পথে পথে পুরে রাজ্যের অবস্থা দেখে বেড়াজ্ঞেন, এমন সময় একটি লোক এনে তাঁর সামনে দাড়াল। এক হাতে ভার প্রকাণ্ড এক ধন্তক, আর এক হাতে ভার মন্ত বড় তীর; এনে বলে, "আমার নাম চী-চিরাং। পৃথিবীতে আমার মত ওভাদ্ ভীরদাক আর নেই। এ ছাড়া আরো একটা কাক আমি পারি। হাওয়ার ব্কেন্ডেনে আমি বেখানে ইচ্ছে উড়ে বেতে পারি।" স্মাটু ইয়াও ভাকে পরীকা করবার ক্বন্ত বদ্দেন—

"আছে। এ বে সামনে পাহাড় দেখা যাছে, আর তারই চূড়োয় দাঁড়িয়ে রহেছে একটি গাছ—বেন নীল আকাশের গায়ে একটি সক্ল কাল রেথা— এথানে বদি তোমার তীর বায় তবেই ব্রুব তুমি বাহাছর!", বগভে বলতেই লন্ লন্ ক'রে তীর ছুট্ল, আর সক্লে সাক্ল চী-চিয়াংও হাওয়ায় উড়ে চল্ল—বেন আকাশেব কোলে একটি পাখী ভেনে চলেছে। কিছুক্লণ বাদে যথন তীর নিয়ে সে কিয়ে এল, তথন তো সবাই অবাক্! খুনি হলে রাজা তার নাম দিলেন "শেন-ই"—কি না "স্বর্গের

ভীরদার। শার ভাকে খুব বড় পদ দিলেন। শেন্-ই-ডধুই ফুলের মধু ধেত আর রাজার পাশে পাশে থকেত।

ক্রমে যত দিন যেতে লাগ ল, শেন্ই তার অভ্ত বীর র দেখিরে স্বাইকে ততই অবাক ক'রে দিতে লাগল। যুদ্ধ ক'রে ক্রড়ের দেবতাকে হারিরে দিয়ে সমস্ত চীন দেশকে ক্রড়ের হাত থেকে বাঁচালো। অভ্ত আকারের ন্যটা পাখী বখন মুখ দিয়ে আগুনের হল্কা বের ক'রে সমস্ত দেশ জালিয়ে দিছিল, তখন শেন-ই গিরে তাদের শান্তি দিলে। আবার যখন কিছুদিন বাদে কোখা থেকে প্রবল বস্তা এলে সমস্ত চীন-দেশ ভাসিয়ে দিয়ে গেল, তখন শেন-ই গিয়ে ক্ললের দেব্তাকে যুদ্ধে হারিয়ে দিয়ে তার ছোট বোন হেড্-ছোকে নিয়ে বাড়ী এল্য মহাস্মারোহে চীন-সম্ভ তাদের বিয়ে দিয়ে দিলেন। আরো যে কত কি পুরস্কার দিলেন তা কি আর গোণা যায় ?

একদিন তৃপুর রাতে ঘুষ ভেঙে সমাট ইয়াও रमथरनन, शैरतत शास्त्रत यह सन्धरन এकि जारनात রেখা যেন পৃথিবীর সর্বাচ্চ অভিয়ে এক প্রান্ত থেকে এসে দূরে আৰু এক প্রাস্তের পাহাড়ের গায়ে মিশিয়ে গিয়েছে। কি হয়েছে, জানবার অন্ত ভথনি রাজা শেন-ইকে পাঠালেন। শেন-ই গিয়ে সেই পাহাড়ের দেবী চীন-মূর প্রাসাদে উপস্থিত। গিয়ে ভনলেন দেবীর মেয়ে দেই আলোর রাজা বেয়ে মায়ের সঙ্গে দেখা করতে এসেছিলেন। যা হোক দেবী শেন-ইর পরিচয় শুনে তাকে আদর করে ডেকে বসিয়ে বল্লেন, তাঁকে একটি প্রাসাদ তৈরী ক'রে দিভেঁ। চমৎকার একটি প্রাসাদ তৈরী क'रत रमवीरक थुनी करत मिरह कांत्र वमरम स्मा-हे তার কাছ থেকে চেয়ে নিলে অমৃত-যা থেলে লোক অমর হয়। কিন্তু দেবী তাকে বলে দিলেন যে, এক বছরের আগে তাঁর দেওয়া এই অমৃত (थाल कान कन श्रव ना। (नन-हे वाड़ी आत्र সেটাকে লুকিয়ে রেখে আর একটা দৈভার সকে লড়াই করতে দূর দেশে চলে গেল।

দেখতে দেখতে এক বছর কেটে গেল। একদিন পেন্-ইর স্ত্রী হেড্-হো দেখতে পেলে যে, ঘরের এক কোণে একটুখানি জায়গা খেকে থেন জ্যোতি ফুটে বেরুছে, জার সমস্ত বাড়ী যেন স্থলের স্থাকে চেয়ে গিয়েছে। অবাক্ হয়ে সেইখানটিতে গিয়ে নে সেই অমৃত দেখতে পেরে তাই তুলে নিয়ে মৃধে পুরে দিলে। অমৃনি তার মনে হ'ল যে সমন্ত পরীর যেন দেখতে দেখতে তুলোর মত হাজা হ'রে গেল—বেন ইচ্ছে করলেই সে এক্নি উড়ে থেতে পারে। এমনি সময় শেন্-ই বাড়ী ফিরে এল। এসে অমৃত খুঁজে না পেরে হেড্-হোকে ডেকে জিজাসা করলে, কোথায় তার লুকানো অমৃত-ভাও ? সব তানে হেড্-হো ভয় পেরে তথনি জানালা খুলে উড়ে পালিয়ে গেল। শেন্-ই রেগে তীর-ধয়্থ নিয়ে তার পিছনে ছুট্ল।



হেঙ্-হো ভয় পেয়ে জানালা খুলে উড়ে পালিয়ে গেল

পূণিমার রাত। ফুট্ফুটে পরিষার চারিধার !
তারি মাঝে শেন্-ই দেখতে পেলে যে হেড্-হো
টাদের দিকে উড়ে যেতে যেতে ক্রমে ছোট হ'ছে
হ'য়ে মিলিয়ে যাচ্ছে। ছুটে সে তাকে ধরতে
যাবে, এমন সময় কোথা থেকে এক ঝোড়ো হাওয়া
এসে তাকে, মাটিতে ফেলে দিলে—যেন শুক্নো
পাতা পৃথিবীর বুকে করে পড়ল।

এদিকে হেঙ্-হো ভো উড়তে উড়তে চাদে এসে উপস্থিত—প্রকাশ্ত দেশ—চ্যুর্থানে ক্ষমাট্ \*

বরক কাঁচের মত থক্ কক্ করছে। গাছপালা আর কোন-কিছু নেই—তথু দারচিনির গাছ চারধারে মাথা তুলে দাঁড়িয়ে আছে। উড়ে উড়ে সে প্রান্ত হ'রে পড়েছিল, তাই শিশিরের জল দিয়ে তেইা মিটিয়ে দার্হচিনি খেরে দে বিশ্রাম ক'রে নিলে। ভারপর চাঁদের দেবী হ'রে সেখানেই রয়ে গেল।

এদিকে ঝোড়ো হাওয়া শেন-ইকে তুলে বে পর্বতেও উপর দেবতাদের রাজা থাকেন সেথানে নিয়ে গেল! সেথানে দেবরাজ্ব তাকে বললেন, "হেড্-হো ভূল করে অমৃত থেয়ে অমর হয়েছে বলে ভূমি তার উপর রাগ ক'রোনা। সে চাঁদের দেশে গিয়ে চাঁদের দেবতা হয়ে র'গেছে। তোমার কাজের পুরুষার তুমি পাবে। তুমি হবে কুর্যোর দেবতা। তোমার ইচ্ছে হ'লেই তুমি গিয়ে হেড্-হোকে দেবে আস্তে পারবে, কিছু হেড্-হো তোমার কাছে আসতে পারবে না।

তথন খুসী হ'য়ে শেন্-ই সুখোর দেশে গিয়ে সুর্বোর দেবতা হয়ে রইল। কিন্তু হেঙ্-হোর কথা সে ভুললে না। একদিন আলোর রথে চড়ে সে চাদে গিয়ে উপস্থিত হ'ল। গিয়ে দেখে প্রকাণ্ড সেই বরফের দেশে জন-মানব-হীন জায়গায় একটি গাছের নীচেয় হেঙ্-হো চুপ্টি ক'য়ে একাএকা বলে আছে—মুপথানি তার শুক্নো। শেন্-ইকে দেগেই সে ভয় পেয়ে উঠে দাড়াল। শেন্-ই কিন্তু মিষ্টি কথায় তার ভয় ভালিয়ে দিলে; আয় তাকে খুব ফ্লর একটি প্রাসাদ তৈরী ক'য়ে দিলে। বয়ে, প্রতি মাসে একবার কয়ে এসে সে হেঙ্-হোকে দেখে বাবে। হেঙ্-হোব বিষয় মুধথানি খুগীতে উজ্জল হ'য়ে উঠল। সেদিন

বেকেই চাদ প্রয়ের কাছে আলো পার। প্রথ মধন চাদের কাছে আস্বার জন্ত যাত্রা ক'রে তথনই ধীরে ধীরে চাদের মুধধানি হাসিতে ভ'রে ধঠে। ভার সেই হাসির আভা জোৎসা হ'রে পৃথিবীতে চড়িয়ে পড়ে, ভারও মুধধানি হাসিতে ভরিয়ে দিয়ে যায়। আবার যথন পূর্ধা ধীরে ধীরে ভার নিজের দেশে চলে যায়, ভধন চাদের মুধের



त्मन्-हेरक त्मरबहे तम् छत्र त्मरत्र छेरठे मांफान

দীপ্তিটুকুক্রমে ক্রমে য়ান হ'য়ে একেবারে নিবে যায়। এমনি কবেই ২৪ই হয়েছে পূলিমা আনর অমাবভা।



### আলো

যদি এরপ প্রশ্ন করা ধার বে, স্বোদ্যেব পূর্বে বা স্ব্যান্তের পরও স্বাকে দেখা সম্ভব কি না, তথন নিশ

দেখা সম্ভব কি না, তখন নিশ্চয়ই তোমরা এ প্রস্তাকে উডাইয়া দিবে: কিন্তু যভই প্রকাপের মত ভনিতে হউক না কেন, ইহা অতি সতা যে. আমরা সুর্ঘাকে নিভাই তাঁহার প্রকৃত উদয়ের পূর্বে ও প্রকৃত অন্ত যাইবার পরেও কিছুক্ণের জন্ম দেশিয়া থাকি। ইহা কিরূপে সম্ভব হয় ভাহা এইবার শোন। ভোমরা পর্বেই শিগিয়াছ যে, ঘনত যেমন যেমন বেশী হয়, আলোক-রশ্মির ডিহাকত্ব-প্রাপ্তিও সেই অমুপাতে বাডিয়া চলে। এই ভক্টি মনে করিয়া রাখিও : তাহা হইলে ব্যাপাংটি বুঝিতে কঠিন অগিবে না। পৃথিবীর চতুদ্দিক ट्यातिका बहमूत भर्गास बाबूत अवन्ता खत च्याटक हेटा ভোমরা জান-ইহাকে পৃথিবীর বাযুমওল বলে। এই ৰাষুষত্তৰ পৃথিৰী হইতে যত দূর চলিয়া গিয়াছে ভত লখু হইয়া গিয়াছে। এয়ারোগেনে বা भाराए देवित वायुत धरे शनका इरेश या अश বেশ অভ্ৰুত্তৰ করিতে পারা হায়। মধ্যে যাহারা পাহাড়ে গিয়াছ সেখানকার পাহাডের লযুতার অভিজ্ঞতা নিশ্চয়ই স্কয় করিয়াছ। এই লখুতার কারণ পাহাড়ের উচ্চতা। বায়ুমওল পাহাড় ছাড়াইয়া আরও বহুদুর উঠিয়া গিয়াছে---**অভএব বুরিতেই পারিতেছ ইহার গুরুত্তও ধীরে**  ধীরে কমিয়া কমিয়া শ্রে মিলাইয়া গিয়াছে। ফলে দ ড় ইয়াছে যে, বাযুমগুলের

উপরিত্ম ভার হইতে নিয়তম ভার পর্যাভ ইহার ঘনত সর্বতে একরূপ নাই-খীরে ধীরে কাডিতে বাডিতে নামিয়া ভিতৰ দিয়া ষপি রশ্মি চলিতে চাম ভাচা হইলে প্রতি পদেই ভাহাকে তিৰ্বাৰুত্ব প্ৰাপ্ত হুইতে হুইবে এবং ভাহ'র পথ বক্র হইয়া পড়িংব। সূর্ব্যান্ত মানে, সূর্ব্যের निक-ठक-८वथात्र नीरह नामिश्रा शास्त्रा। দিক-চক্র-রেখার উপর দিয়া যে র**শ্মি চ**লিয়া बाइटिएइ कदः हाइ। त माधादम् छाटव भृषिवीत छेभव আদিয়া পড়িয়া স্থাকে দুখ্যনান করিবার কোনও পূর্ব্ধাক্তরণ শক্তি নাই--ভাহা বাযুমগুলের অবস্থার জন্ত বাঁকিয়া গিয়া স্ব্যাত্তের পরেও পৃথিবীতে আসিয়া পড়ে। কালে কালেই দিক্-ठळ-द्रवधात नीत्र थाकित्मक मूर्वा मृष्टित्भावत द्व। সর্বোদয়ের সময়ও এই কারণেই সুর্বোদয়ের পর্বেই সূৰ্যা বৰ্ত্তমান থাকে। অভএৰ ভোষরা পূর্ব্যাদয় বা পূর্ব্যান্ত লক্ষ্য কর, প্রকৃত পক্ষে সুর্ব্যোদ্য তাহার পরে ও সূর্ব্যান্ত ভাহার পূর্বেই হইয়া যায়।

রাতের আকাশে নক্ষত দেখিলে ভোষাদের মনে সাধারণক্ষ এই প্রস্নের উদর হব যে ভাছারা

### ন্পিত-ভাষাতী

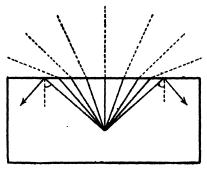
মিট্ মিট্ করে কেন ? মিট্ মিট্ করার অর্থ ইহানের উজ্জ্বলভার ছাল-বৃদ্ধি হওয়া। উজ্জ্বলভার আরপ কারণ কি ? পূর্বেই বলিয়াছি বে, বার্মপ্রলের ঘনত ভূমিনংলার ইহার নিয়তম তার হইতে ক্রমে ক্রমে উপরের দিকে ক্ষিয়া লিয়াছে। এই হক্তমিকভাবে হাল প্রাপ্তির সন্দে সক্রে শীত ও উক্ত বাভালের স্রোত্তর সংমিত্রাপের ফলে কোথাও কোথাও অকস্মাৎ ইহার ঘনত্বের বিপর্বায় ঘটিয়া থাকে। এই বিপর্বায় তার পার হইবার কালে বাভালের ঘনত্বের বিভিন্নভা হেতু নক্ষ্ম হইতে আগত আলোকর বিভিন্নভা হেতু নক্ষম হইতে আগত আলোকর বিভিন্নভা কোনটা একদিকে আবার কোনটা অপরাদিকে তির্যাকভা প্রাপ্ত হয়।

এইছপে বায়ুর এই বিপর্যন্ত শুর্টি পার হইবার পর রশ্বিগুলি স্থানে স্থানে একত্রীজৃত হইয়া পড়ে। রশ্মি একত্রীক্ত হইতেছে এরণ কোনও স্থানে আমাদের চোধ যদি বর্তমান থাকে তবে আমরা নকত্রটিকে উজ্জাল হইতে দেখিব, অপর পক্ষে যেখানে রশ্মি আদে নাই বা কম আসিয়াছে একপ স্থানে ৰাকিলে সেখানে নক্ষটট হয়ত দেখা ষাইবে না অথবা অহুজ্জনভাবে লক্ষিত হেবে। ৰায়মণ্ডলের ভিতর বাতালের বিপ্রান্ত তরটি এক ভাষগায় কখনও স্থির থাকিতে পারে না—ভাহার সৃষ্টি, সঞ্চরণ ইত্যাদি সব কিছুই বাছুর স্রোডের উপর নির্ভর করে। তাই রশ্মিগুলির ও সব সময় একট ভানে একতীয়ত হইতে পায় না। ফলে बाफाब এট यে. नक्खि धक्वाब ऐक्टन हरेबा सर्फ এবং পরক্ষণেই তাহার উক্ষলতা কমিয়া যায়---এইরপ অনবরত হইতেছে-এবং এই কারণেই মক্ষত্র মিট মিট করিতে থাকে।

তোমরা মৃণভৃক্ষিকার নাম গুনিয়াছ। মরুভূমিতে বাহারা স্রমণ করে, কথনও কথনও
ভাহাদের এক বিষম রিপদে পড়িতে হয়। ভূকাদ্ব
আর্গ্র হয়া জলের অবেরণ করিতে করিতে কথনও
কথনও ভাহারা বৃরে বৃহৎ জ্বলাশর দেখিতে পায় এবং
সেই দিকে আগাইরা বায়। ভাহারা বতই অগাশরের
হউক না কেন শেব পর্বাভ কিছুতেই জ্বলাশরের
নিকট পৌছিতে পারে না—অবশেবে পরিপ্রাভ
অবস্থার দেখিতে পায় বে, সমুত্রবৎ জ্বলাশর শ্লে
বিধাইরা বাইভেছে। কড বাঝীকে এইরপ মরুভ্রির
বায়ার পড়িয়া প্রাণ বিস্ক্রন দিতে হইরাছে, ভাহার

ইয়ন্তা নাই। ইহারও মৃলে রহিয়াছে ঘনত্বের বিভিন্নতা হেতু আলোক-রশ্মির তির্বাক্তা প্রাপ্তি।

ষুণ চ্ছিকার কারণটি ঠিক করিয়া বলিতে ইইলে
মালোক-রশ্মির তির্যাকতা-প্রাপ্তির ব্যাপারটি সম্পর্কে
মারও করেকটি কথা বলিতে হয়। ভোমরা জান
যে, কোনও ঘন বজ্ব ইউতে লঘু বজ্বতে ঘাইতে
হইলে রশ্মির পথ উর্ধরেখা ইউতে মূরে সরিরা বায়।
এখন ঘন বজ্ব দিয়া চলিবার সময় জালোকরশ্মি যে
পথ করিয়া লইরাছে তাহা যদি ক্রমে ক্রমে
উর্দ্ধরেখাটি ইউতে মূরে স্রাইখা দেওয়া যার, তাহা
হইলে তিহাকরশ্মিও সঙ্গে সঙ্গে মারও দ্রে সরিয়া
বাইবে এবং শেষ পর্যান্ধ্র দীমাতলের উপর দিয়া
নিজ্মের পথ করিয়া লইবে। ইহার পরেও যদি
প্রথম রশ্মিটিকে আরও দ্র দিয়া ঘাইতে দেওয়া হয়্



আলোক-রশ্মির তিহ্যকতা-প্রাহি

তথন কি হইবে ? ব্কিতেই পারিতেছ বে, এই রশ্মিটি হইতে উপ্রেখার নিকটতর রশ্মি মহত্তম তির্বাক্তা অপ্রেই পাইয়া গিয়াছে বলিয়া ইহার আর তির্বাক্তা পাইবার (refracted হইবার) কোনও সম্ভাবনা নাই। এরুপ অবস্থায় চুইটি বস্তুর দীমাতলটি রশ্মিটির নিকট দর্পপের স্থায় হইয়া উঠে এবং রশ্মিটি ঘন বস্তুটির ভিতরেই পরাবর্ত্তিত ইইয়া যায়। ঘন বস্তু হইতে গলু বস্তুতে আলোক যাইবার কালে প্রথম রশ্মিটির এক অবস্থায় ভাছার তির্বাক্তা-প্রাপ্তির অক্ষমভার ক্ষম্পূর্ণ প্রাবৃত্তিত ইইয়া যাওয়া ব্যাপারটিই হইল মুগত্তিকার প্রথম কারণ। এইটি যদি ঠিক ধরিতে পাল, তবে পরে যাহা বলিভেছি ভাহা ভোমরা ঠিক মত ব্রিভে পারিবে।

#### আলে +-

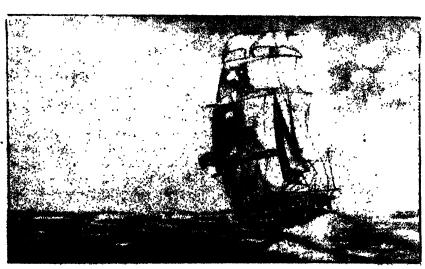
বায়্বযুদ্ধনের ঘনত্ব ক্রমে ক্রমে উপর দিকে ক্রমিতে ক্রমিতে উঠিয় গিয়াছে ইহা তোমাদিগকে বলিয়াছি।
মক্ত্মির দিগতপ্রসারিত খেতবর্ণের বাসুকাময় পৃঠে
মেঘবাশাহীন আকাশ হইতে প্রথর ক্রেয় ক্রমণ
পড়িয়া ভাহাকে দারুণ উত্তপ্ত করিয়া ভূলে। এই
অসম্ভব উত্তাপের সংস্পর্শে আসার ফলে বাসুকাসংলয় বায়্মগুলের কিছু অংশও উত্তপ্ত হয় বলিয়া
এই অংশের ঘনত্বও স্বাভাবিক অবস্থার ভূলনায়
অনেক ক্রময়া য়য়। এই লঘু তরের ভিতর দিয়া
রশ্মগুলি মাটির দিকে বাইবার সময় কিছুক্রণ ত
ভিষ্যক্তা প্রাপ্ত হইতে হইতে চলিতে পাকে এবং



বশ্মিগুলি বাঁকিয়া গিয়াছে

মবশেষে এমন এক খবস্থায় পৌছায় যুখন ইহাদের পূর্ণ পরাবস্তিত হওয়া ছাড়। গৃত্যন্তর থাকে না। আদিরা পড়িবে। একটি ত সাধারণ রশ্মি—
যাহা অব্যাহত ভাবে সরল পথে তাহার নিকট
আসিতেছে এবং অপরটি—যাহা গুরু হইতে
লঘুতার ভবের ভিতর দিয়া চলিতে ইইতেছে বলিয়া
ভরটির লঘুতার এক বিশেষ অবস্থার জন্ম তরটির
ছারা পূর্ণ পরাবত্তিত ইইয়া আসিতেছে। ফলে
দাড়ায় এই বে, পদার্থটিকে দেখিবার সঙ্গে
সংলই তাহার প্রতিবিশ্বও দেখিতে পাওয়া যায়।
বিশ্বত স্থানে এরূপ প্রতিবিশ্ব দেখিতে পাওয়া
জলাশয়ের ছারা উৎপন্ন হওয়া ছাড়া অন্য কোনও
উপায়ে হওয়া আমাদেব অভিজ্ঞতায় নাই বলিয়া
দৃষ্ঠটী বৃহৎ জলাশয়ের হারাই প্রতিবিশ্বত
হইতেছে বলিয়া ধারণা করিয়া লই।

আলোকের তির্থাকত। প্রাপ্তির জন্ম প্রকৃতির মধ্যে এ জাতীয় নানা প্রকার দৃষ্টি-বিভ্রম দেখিতে পাওয়া যায়। সবগুলিকে মবশ্য মৃগতৃষ্ঠিক। নাম দেওয়া চলে না, কারণ ইহাদের বেশীর ভাগই বিস্তৃত



সমুদ্র-বক্ষে পালের জাহাজ

ভূষন ভাছাদের আবার উপর দিকে উঠিয়া আদিতে হয়। এ অবস্থায় যদি কেই দ্বন্থিত কোনও পদার্থের প্রতি লক্ষা করে ভবে ভাষার চোথে সেই পদার্থ ইইতে আগত ছই প্রকার রশ্মি জলভাগের উপরেই ঘটিতে দেখা যায়। ইহাদের মধ্যে একটির বিবরণ ভোমাদিগকে দিভেছি। সমুদ্রের মধ্যে জাহাজে করিয়া যাইবার কালে কথন কথন আকাশে উন্টা হইয়া জাহাজ ভাসিয়া যাইভে দেখা

বাছ। কথনও বা আবার আকাশের মধ্যেই স্থল-ভাগ, ভটভূমি ইত্যাদির চিত্র ফুটিয়া উঠে। প্রাচীন-কালে নাবিকদের ও ঘাত্রীদের সদয়ে এই সব সলৌকিক ব্যাপারে আতত্তের সঞ্চার হইত। মাকাশের ভবে হারে নানারপ বাডাসের স্রোড অনবর্ত বহিতেছে। কিন্ত কখন কোন অনিষ্টি কারণে আকাশের কোন উচ্চন্তরে অত্যন্ত তপ্ত বাতাস অনেকটা স্থান জড়িয়া रुकेा९ यनि পরিব্যাপ্ত হইয়া পড়ে, ভাষা ইইলে যে সৰ ৰুদ্ধি এই ভগ্ন গুৱটা ভেদ করিয়া উপর দিকে চলিতে চায় তাহাদের অনেকগুলি তপ্ত হওয়ার দক্ষণ এই স্তরের ঘনত্ব অত্যস্ত কমিয়া যাওয়ায় শেষ-পৰাস্ত ভিৰ্বকতা প্ৰাপ্ত হয় না এবং পূৰ্ণব্ধপে পরা-বর্ডিত হইয়া পথিবীর দিকে ফিরিয়া আসে। দর্পণ ষারা কোন বস্তু পরাবস্তিত হইলে যেমন দর্পণের মধোই সেই বস্তুটিকে উন্টা অবস্থায় দেখিতে পাওয়। বায়, তেমনি এই স্কর্টির স্বারা প্রাবর্ত্তিত হইবার পর যে বন্ধ হইতে রশ্মি নির্গত হইয়া এরপ অবস্থা পাইয়াছে সেই বস্তুটি এই শুরুটির মধ্যে উন্টা হইয়া খেন আকাশে ঝুলিয়া আছে এরপ অবস্থায় দৃষ্ট হইবে। ফ্রান্স হইতে ইংগণ্ডের নিকটভম স্থানের নাম ডোভার। একবার ডোভারের সমুদ্রতটের লোকগুলি আকাশে হঠাৎ ফ্রান্সের সমূত্রতট ও সেধানে বাধা জাহাজগুলি উন্টা অবস্থায় আকাশে চিজিড হইতে দেখিয়া অত্যম্ভ বিশ্বিত হইয়া পডিয়াছিল।

ভোমাদিগকে আগেই বলিয়াছি থে, বাতাস হইতে কাঁচের ঘনত অধিক বলিয়া বাতাসের ভিতর দিয়া চলিয়া আদিবার পর যুধন আলোক-বল্মি কাঁচের মধো প্রবিষ্ট হয় তথন ইহার পথ বাঁকিয়া যায়। কাঁচের এই গুণ পাকাতে আমাদের কত যে অবিধা হইরাছে তাহা বলিয়া শেষ করা যায় না। কাঁচের নানারকম পরকলা (lens) তৈয়ার করিয়া লোকে নানান কাজে লাগাইয়াছে। ভাগাদোরে বাঁহাদের চক্ষ্ বারাপ হইয়া গিয়াছে তাঁহারা কাঁচের চলমা পরিয়া আর অস্থবিধা ভোগ করেন না। দ্রবীণ ও অণ্বীক্ষণ যক্ষ তৈয়ার করিতে অক্তভঃ ছইখানি করিয়া কাঁচের পরকলার দরকার হয়। দ্ববীশের সাহায়ো আমরা চক্ত, প্রবা, গ্রহ ও নক্ষত্র-ভানিকে ভাল করিয়া পরীক্ষা করিয়া লাইতে পারি। অপ্বীক্ষণ দিয়া আমরা অতি হন্ধ পদার্থগুলিকে

তর তর করিয়া দেখিরা নইবার ক্রহোগ পাইয়াছি। ফটোগ্রাক তুলিবার ক্যামেরার মূখে কাঁচের পরকলা থাকে। একদিক হইতে আলোক-বৃদ্ধি আজিলা যথন এই পরকলায় প্রবিষ্ট হয়, তথন ইহার পথাঁট বাঁকিয়া যায়। আবার যথন পরকলা ছাডিয়া আলোক-রশ্মি বাহিরে আসে তথন ইহার পথটি পুনরায় বাঁকিয়া যায়। যদি পরকলার এক পিঠ সমতল ও অক্ত পিঠ কুজ (Convex) কিছা উচ্চয় পিঠই কৃষ্ণ হয় ভাছা হইলে দেখা বাহ বে, খালোক-রশ্মিপ্রলি পরকলা হউতে বাহির হউরা আসিবার পর এক্স বা কেন্দ্ৰীক্ষত ( Convergent ) इहेबान क्रिडी করে। যদি পরকলার এক পার্থ সমতল এবং 🖼 পার্ম নডোদর (Concave) বা রাধিবার কণ্ডার ভিডরের পিঠের ক্সায় হয় কিম্বা উভয় পার্যই নডোদর হয়, তাহা হইলে আলোক-রশ্মিঞ্জি পরকলা হইতে বাহিরে আসিবার পর আরও ছড়াইয়া (Devergent) যায়। এইব্লপ ছড়াইয়া পড়ায় যে সকল রশ্মি দুরের জিনিব হইতে আসিতে-ছিল, মনে হয় যেন সেইগুলি নিকট হ'ইতে আসিতেছে। বাহাদের দৃষ্টি ক্ষীণ এবং বাহার। **पृर्वत व्य**निय न्नाष्टे कतिया (पश्चिट्ड भान ना তাঁহাদের চশমার জন্ম এইরূপ নভোদর পর্কলা বাবহার করিতে হয়। কু<del>জপ</del>র্চ পরকলা দিয়া যদি কোন জিনিবকৈ দেখা যায় তাহা হটলে মনে হয় যেন সেই জিনিবটা আরও পিছনে, আরও দরে সরিয়া গিয়াছে।

मृत्त मतिया याहेवात मक्रण देशात आकाति। अ আরও বড হইয়া গিয়াছে বলিয়া মনে হয়। কুক্সপৃষ্ট পর্বলার এই বিশেষ গুণ যে, ইহা ছোট দ্বিনিষকে বড় করিয়া দেখায়। বুড়া মাছবের চশমার জন্ম এইরূপ পরকলাই ব্যবহার করিতে হয়। আর এক প্রকার কাঁচের পরকলা হৈয়ার করিতে পারা যায়--- যাহার একপার্থ নজোদর এবং অপর পার্থ এক্রপ প্ৰকলার কোন কোন্টা আলোক-রশ্মিগুলিকে কেন্দ্রীভূত করে এবং কোন কোনটা রশ্মিগুলিকে আরও ছড়াইয়া দেৱ। যে পরকলার অক্ষের (axis) উপর অংশটাট সবচেয়ে বেশী মোটা ভাহার আলোকরশ্মি কেন্দ্রীভূত করিবার क्ष्मण चाह्य ध्वर (१ शतकनात चरकर छेन्द्र অংশটা সবচেয়ে বেশী পাডলা উচ্চা রশিক্ষলিকে আরও ভডাইয়া দেয়।



## আচার্য্য প্রফুল্লচন্দ্র রায় ও হিন্দু রসায়ন

জ্ঞান ও বিজ্ঞানের বিষয় আলোচনা করিতেন। বিজ্ঞোৎসাহী চরিশ্চন্দ্র নিজ দেশে শিক্ষা বিস্তারের

আমরা পুরাতন হাতেব লেখা পুঁথি হইতে তাহা জানিতে পারি।

পৃথিবীর সবদেশেই বর্তমানকালে পদার্থ-বিজ্ঞান ও রসায়ন-বিজ্ঞানের প্রভাব বিস্তৃত হইয়া প্ডিয়াছে। এক সময়ে রসায়ন-বিজ্ঞান ভারতবংগ বিশেষভাবে প্রভিষ্ঠালাভ করিয়াভিল। কিছ সে কথা আমরা ভাল করিয়া শ্নিতাম না। হিন্দু রুগায়নের প্রাচীনতা, হিন্দু রসায়নের ইতিহাস ও विद्मश्य भागमा श्रीमुक क्षम्बद्ध ताम প্রবীত 'হিন্দু রসায়নের ইভিহাস' প্রকাশিত হইবার পর সর্বত প্রচারিত হট্যাছে। আমবা हिन्दू तमायन अवस्य করিবার পূর্বে প্রফলচন্দ্রের জীবনী সম্বাদ্ধে এখানে ছই একটি কথ। বলিতেছি।

१५७० श्रुहोटकाव ( ১२७৮ वाक्ना ) আগষ্ট মাসের ২রা তারিখে পুলনা জেলার রাভলি নামক একটি ছোট शास्त्र श्रेष्ठातस्त्र क्या द्या अपूत्र-চল্লের পিত। হরিশ্চদ্র রায় একজন পণ্ডিত লোক ছিলেন। তিনি যেমন

পারক ভাষায় কুপণ্ডিত ছিলেন তেমনি ইংরাজী

প্রাচীনকাল হইতেই ভারতবর্ষের লোকের। সাহিত্যের সহিত্ত তাহার ঘনিষ্ট পবিচয় ছিল।



बाह्यण अक्ट्रहे अध इन शास्य १कि विकालक शायन कविशाहित्तन।.

প্রসুষ্ণত ও তাহাব আতাদের প্রাথমিক শিক্ষা গ্রামের ये विजानस्य इटेयाहिन। शास्त्र भूषा स्वय इटेस পর তাঁহার পিতা ছেলেদের শিক্ষা যাহাতে আরও হ্য সেজন্য তাঁহাদিগকে লইয়া কলিকাভায় আদেন। কলিকাভায় আসিবার পর প্রফলচন্দ্রকে হেয়ারগুলে ভাই করিয়া দেন। এ সময়ে তাঁহাৰ পড়ার দিকে মতা**ন্ত আ**গ্ৰহ **জন্মে**। হেয়াবন্ধলে পডিবার সময় তাঁহার শরীর অক্স হইয়া পড়ায় তুই বৎসৰ শ্বুৰে পড়িভে পারেন নাই। সেই ছই বংসর কাল তিনি বাডীতে निम्या निष्कृत (हरी अ यह बादा है शक्ती, करानी ও ল্যাটন,ভাষা শিখিয়াছিলেন। এ সময় হইতেই তাঁহার ইতিহাসেব উপর একটা আন্তরিক আগ্রহ গিয়াছিল। (44- निर्म**्बन** পডিয়া তিনি অভান্থ আনন্দ লাভ কবিতেন। 'হিন্দু ব্যায়নের ইতিহাস' লিপিবার সময় উাহার এই हे रिशंत्र व्यवाहानत भएन वासक माश्या **इवेगाहिन।** 

স্থান্থ হইবাৰ পৰে প্ৰজন্ম এলবাট স্থলে ভঙ্জি হন এবং সেখান ১ইতে প্রবেশিকা পরীক্ষায় উত্তীর্ণ অতঃপর ১৮৮০ খুরাকে মেটোপলিটন কলেম্ব হইতে খিতীয় বিভাগে এফ. এ পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া বি. এ পড়িতে আরম্ভ করেন। বি. এ পভাব সময়েই গিলকাইট (Gilchrist) বৃত্তি লাভ করিয়া বিলাত গমন করেন। এডিনবর। বিশ্ববিদ্যালয় হইতে ১৮৮৫ খুটান্দে বি, এস-সি পরাক্ষায় উত্তার্থ হন। গন্ধক ভাবকের সহিত তাম, লৌহ, নিকেল প্ৰভৃতি কতকগুলি ধাতু মিশিয়া এক ঘৌরিক পদার্থ উৎপাদন করে --প্রদল্পচন্দ্র এই বিষয় লইয়া গবেষণা কবিতে আরম্ভ করেন। ভাছার গবেষণার বিবরণ ১৮৮৮ বুটাবের এডিন্বর। রয়েল সোসাইটির পত্রিকায় প্রকাশিত হইলে পর সক্ষত্র তাহার প্রতিভাব কথা প্রচারিভ হইয়া পডে। এই গবেষণার অন্ত এডিন্বরা বিশ্ববিভালয় ই**হাকে** ডি. এস. সি উপাধি এবং হোপ ( Hope Prize ) नामक श्रुतकात व्यवान करतन ।

প্রকৃষ্ণচন্দ্র দেশে ফিরিয়া আদিয়া কলিকাতা প্রেসিডেকী কলেজের অধ্যাপকের পদে নিযুক্ত হন এবং ক্রমশং দেখানকার রসায়নশাল্পের প্রধান অধ্যক্ষের পদে প্রতিষ্ঠিত ইইয়াছিলেন। এখানে অধ্যাপনা হার। তিনি অসাধারণ কীতি অজ্ঞান করেন, তাঁহার অনেক ছাত্র বর্তমান সময়ে জ্বগতেও শ্রেষ্ঠ পণ্ডিতরপে পরিচিত হইরাছেন। প্রেসিডেন্সী কলেন্দ্র হইতে অবসর গ্রহণের পর, কলিকাডা বিশ্ববিভালয়ের বিজ্ঞানকলেন্দ্র স্থাপিত : হওয়ার সন্দে সন্দেই স্থার আশুডোব ম্থোপাধ্যায় তাঁহাকে পালিত প্রফেসারের পদে বরণ করিয়াছিলেন।

সাধারণভাবে দেখিতে গেলে অধ্যাপনার কাষ্যে নিযুক্ত হওয়ার পরেই তাঁহার ছাত্র-জীবন শেষ হইয়াছে এইরপ বলা ঘাইতে পারে, কিছ প্রত্রুত বলেন-তিনি আজীবন ছাত্র: ছাত্রাবস্থার কখনও শেষ হয় না। তোমরা শুনিলে আশ্চধা চইবে থে. এখনও তিনি প্রতিদিন চুইঘন্টাকাল নিয়মিত ভাবে পড়াভনাকরেন। এই সময় সভা সভাই খানিরভ ভাপদের মত তাঁহার সময় অভিবাহিত হয়। এই पूरे घण्डाकान প্রফুলচন্দ্র নান। বিষয়ের পুস্তক পাঠ করেন। আচাযা প্রতুল্লচক্রের উপদেশ এই যে. "জ্ঞান দেবল কতক গুলি বইয়ের মধোই পুঞ্জাভত নহে। স্থল-কলেজের নিষ্কারিত পাঠাপুস্তক ছাডাও জ্ঞানের দৃষ্টিপথ বাডাইতে হইবে, সব কিছুর্ই যথাসাধ্য চচ্চা করিতে ইইবে।" তাহার নিজের জীবনে এই জ্ঞানাফুশীলনের দিকটা অতি স্থনার ভাবে ফটিয়া উঠিয়াছে :

ইংরর প্রণীত . 'হিন্দু রসায়নের ইতিহাস' নামক গ্রন্থ ভারতবাসীর গৌরবের জিনিষ। বিভিন্ন যুগেব হিন্দু ও বৌদ্ধ-যুগের ইতিহাস আলোচনা করিয়া এই গ্রন্থ বিরচিত হইয়াছে। বসায়ন শাল্পে হিন্দুরা কতটা উন্নত ছিল, ঐ ইতিহাস আলোচনার সঙ্গে সংস্কৃপের কথা বলিব।

বেক্স কেমিকেল নামক বিবাট্ ঔষধানমের প্রতিষ্ঠা তাহাব জীবনের একটি প্রধান কীর্ত্তি। সামাছ আটশত টাকা মূলধন দারা উহা প্রথম প্রতিষ্ঠিত হইয়া থাক বেক্স কেমিকেল ও ফার্মাসিউটিকেল ওয়ার্কস্ ভারতবর্ধের একটি প্রধান ঔসধালয় রূপে প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছে। বাবসা বাণিকা দারাও যে আমানের দেশের লোকেরা অর্থলাভ করিতে পারেন —ইহা দেশাইবাব জন্তুই তিনি বিজ্ঞান ও রসায়ন শাত্র শিক্ষা করিয়াছিলেন এবং তাহারই ফলম্মরূপ সামান্ত ৮০০ আটশত টাকা মূলধন দারা প্রতিষ্ঠিত বেক্ল কেমিকেল এখন লক্ষ লক্ষ্টাকার মূলধনে পরিণত হইয়াছে। "দেশের সেবাই জীবনেব প্রেষ্ট ধর্মা —প্রক্রিটক্র এখন ভারতের সর্ব্বের





মগ্রের অভ্যুদয়

আমরা পুর্বের বলিয়াছি যে, বুদ্ধের সময়ের কিছু পুর্বের উত্তর-ভারতে যোলটি বড বড রাজা বা 'মহাজন-

পদ' ছিল। মানচিত্রে এই দেশগুলির অবস্থান দেখ। দেশগুলির পবিচয়ও এখানে দেওয়া গেল। এই গুলির মধ্যে চাবটি রাজ্য ধীরে ধীরে থুব প্রভাবশালী ইইয়া উঠে: অবস্থি, বংস, কোসল ও মগধ। বুদ্ধের মৃত্যুর হু'তিন শত বংসরের মধ্যে মগধ ক্ষমতায় অন্য দেশগুলিকে ছাড়াইয়া উঠে এবং মগধের রাজগণ ক্রমে ক্রমে সমস্ত ভারতব্ধের সমাট্ ইইয়া পড়েন। এই সময় পুদুর দক্ষিণের অবস্থা কিরপ ছিল, বলা যায় না। বাঙ্গলাদেশের নামও বিশেষ কোনও প্রাচীন প্রস্থা দেখিতে পাওয়া যায় না।

প্রাচীনকালে এলাহাবাদের নিকটবর্তী দেশের নাম ছিল বংস, রাজধানী কৌশালী। এই নগরে পাগুবদের বংশধবগণ বাজ্যকরিতেন। বুদ্ধের সময়ে এই নগরে রাজা ছিলেন উদয়ন। উদয়ন বড় আরামপ্রিয় রাজা ছিলেন। তিনি সর্বাদা নিজের স্থাধের জন্ম বাস্তুর থাকিতেন, বাজকার্যা বড় একটা



দেখিতেন না। যৌগন্ধ-রায়ণ নামে তাহার এক বৃদ্ধিমান মন্ত্রী ছিলেন, তিনি রাজ্যের সব কাজ

দেখিতেন।

আজকাল আমরা যে দেশকৈ মধ্যভারত (Central India) বা মালোয়া বলি, পুরা-কালে তাহার নাম ছিল অবস্তি, রাজধানী ছিল উজ্জয়িনী। কৌশাম্বীতে যখন উদয়ন রাজা ছিলেন, তখন উক্ষয়িনীতে প্রভোত-মহাসেন নামে এক পরাক্রান্তরজা ছিলেন। শুনা যায়, প্রছোত নাকি বড় রাগী ও নিষ্ঠুর লোক ছিলেন, সেইজ্ব্য লোকে ভাঁহাকে চণ্ডপ্রস্থোত বলিত। তাঁহার গোপালক ও পালক নামে ছই পুত্ৰ ও বাসবদতা নামে এক কন্সাছিল। প্রস্থোতের **ইচ্ছাছিল যে.** বংসরাজ উদয়নের সহিত বাসবদন্তার বিবাহ দেন। এই প্রস্তাব করিয়া তিনি উদয়নের নিকট লোক পাঠান, কিন্তু যৌগন্ধরায়ণ এই প্রস্তাবে সম্মত না হওয়ায় সম্বন্ধ ভাঙ্গিয়া শায়।

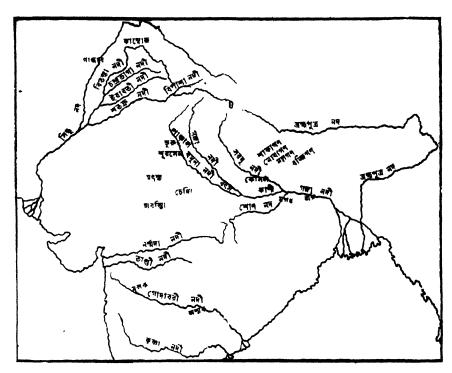
প্রছোত কিন্তু সহজে ছাড়িবার লোক ছিলেন না। তিনি উদয়নকে ধরিবার জন্ম এক কাঁদ পাতিলেন। উদয়নের হাতী
শিকার করিবার বড় সথ ছিল। প্রভােড
এক ছলুবেলী লোককে দিয়া উদয়নের নিকট
থবর পাঠান যে, অমুক বনে অনেক হাতী
আসিয়াছে। উদয়ন যথন হাতী ধরিবার
কল্প বনে প্রবেশ করেন, তথন প্রভােতের
সৈক্ত আসিয়া তাঁহাকে বন্দী করিয়া
উক্ষয়িনীতে লইয়া যায়। প্রভােত তাঁহাকে
অস্তঃপুরে বন্দী করিয়া বাসবদভার নিকট
রাখিয়া দেন। উদয়ন নিকের বন্দী অবকা
ভূলিয়া শক্রগ্হে আমাদ-প্রমাদে মন্ত
হউলেন।

তদিকে উদয়নের মন্ত্রী যৌগন্ধরায়ণ নিজের প্রভুর বন্দী হওয়ার সংবাদ পাইয়া তাঁগার উদ্ধারের জন্ম উচ্চয়িনীতে উপস্থিত হন এবং ভিক্ষ্কের বেশে প্রজোতের অন্ত:পুরে প্রবেশ করেন। তিনি উদয়নকে পলাইতে উপদেশ দেন: কিন্তু উদয়ন বাসবদন্ত কে ছাড়িয়া যাইতে সন্মত না ছওয়ায়-অগত্যা যৌগন্ধবায়ণ উদয়ন ও বাসবদতা ছ'জনকে লইয়া কৌশাস্বীতে পলাইয়া আংসন। প্রান্তে প্রথম প্রথম এक है तांश कतिरलं अरत छेमग्रनरक कमा করেন ও উদয়নের সহিত বাসবদভার বিবাহে সম্মতি দেন। সংস্কৃত ও পালি অনেক প্রন্থে উদয়ন ও বাসবদভাব এই গল্ল নানারপ ভাবে দেখিতে পাওয়া যায়। এই কারণে মনে হয় যে, প্রাচীন ভারতের लात्कत कार्ष्ट देश थू वर्षे श्रिय श्रेष्ठ हिन। ইছার সকল অংশ সতা কিনা বলা যায় না. তবে প্রধান ঘটনাগুলি যে সতা, ভাহাতে সন্দেহ নাই।

উদয়ন ও প্রজোভ ছ'জনেই বুজের সময়কার লোক। শোনা যায় যে, উদয়ন চন্দনকাঠের একটি চমৎকাব বৃদ্ধার্তি প্রস্তুত করান। প্রজোতেব সম্বাদ্ধে কথিছে আছে যে, বুজেব এক শিশ্য ভাঁচাকে নৌদ্ধান্ম দীক্ষিত করেন। এই কথার সত্যতা অনেকে সন্দেহ করেন, কারণ কোনো প্রাচীনগ্রন্থে ইহার উল্লেখ নাই।

এই সময় কোসলদেশে (বর্ত্তমান আউধ) প্রসেনজিং নামে রাজা ছিলেন। মানচিত্রে দেখ, ইহার রাজ্বদের উত্তরে ছিল শাক্যদের দেশ, এই শাক্যদের বংশে বৃদ্ধের জন্ম হয়। মনে হয়, বৃদ্ধের পিডা শুদ্ধোদন প্রদেন-জিতের অধীন ছিলেন। কোসলের পূর্ব-দিকে কাশীরাজ্বাও প্রেসেনজিতের বশে ছিল। প্রসেনজিং বৌদ্ধদের অনুগ্রন্থ করিতেন ও বৌদ্ধভিক্ষদের বাসের জম্ম কয়েকটি বিহাৰ প্রস্তুত করাইয়াছিলেন। ত্রাহ্মণদের উপর ৬ তিনি সদয় ছিলেন এবং অনেক ব্রাহ্মণকে ভূমিদান করিয়াছিলেন। তাঁচার বৃদ্ধ বয়ুদে ঠাঁহার পুত্র বিভূডভ বিজোগ করে। সেই-কারণে তিনি সাহায্যের জক্ত মগধরাজ অজাতশক্রব নিকট পলাইয়া যান। কিন্তু মগধের রাজধানীতে প্রবেশ করিবাব পুরেবই তিনি মৃত্যুমুখে পতিত হন।

নগধের রাজা বিশ্বিসার ও অজাতশক্র প্রসেনজিতের সমসাময়িক লোক ছিলেন। বৌদ্ধগণ বলেন যে, অজাতশক্রর রাজতের অষ্টম বর্ষে দেহত্যাগ করেন। বৃদ্ধের মৃত্যু ধুব সম্ভব খৃষ্টপূৰ্বে ৪৮৩ অকে ছইয়া-ছিল, স্বতরাং অজাতশক্ত খৃষ্টপূর্বে ৪৯১ অবে সিংহাসন লাভ কবেন। বৌদ্ধগণের মতে অজাতশক্র পিতা বিশ্বিসার ৫২ বংসর রাজ্য করেন ; মুভরাং তাঁহার রাজ্যকাল ४५० व्हेर्ड ४३३ युह्रेश्व्वांक भ्रांश्वः। বিস্বিদার প্রসেনজিতের বন্ধু ছিলেন এবং তাঁহার ভগিনী কোসলাদেবীকে বিবাহ কবেন। বিবাহে যৌতৃক স্বরূপ বিশ্বি<mark>সা</mark>র কাশীরাজ্য পাইয়াছিলেন। পবে বিশ্বিসার হঙ্গ*দেশে*র বাজাকে পরাজিত করিয়া তাঁচার রাজা অধিকার কবিয়া <mark>লন। এইরূপে কাশী</mark> ও অঙ্গ অধিকৃত হওয়াতে বিশ্বিসারের রাজ্য



ভারতব্যের প্রাচীন মহাজনপদের মান্চিত্র

এই মানচিকে প্রাচীন ভারতের মহাজনপদগুলির অবস্থান দেখান হইয়াছে। বর্ত্তমানের সহিত অতীতের কতথানি প্রভেদ ঘটিয়াছে এবং কোন্ কোন্ প্রদেশের নামের পরিবর্ত্তনও কিরপ ভাবে সম্পন্ন হইয়াছে, তাহা এই প্রাচীন মানচিত্রের সহিত বর্ত্তমান মানচিত্র মিলাইয়া দেখিলেই বৃদ্ধিতে পারিবে।

অনেক বাড়িয়া গেল। বৃদ্ধ বিশ্বিসারের বন্ধ্ ছিলেন ও তাঁ:হার রাজধানী গিরিব্রজে অনেকদিন বাস করিয়াছিলেন। জৈনধর্মের প্রবর্ত্তক মহাবীরও বিশ্বিসারের রাজতে ধর্ম্ম-প্রচার করিয়াছিলেন। জৈনদের ধর্ম্মগ্রান্তে বিশ্বিসারের নাম শ্রেণিক ও তাঁহার পুত্র অজ্ঞাতশক্রর নাম কুণিক।

পালিপ্রন্থে দেখিতে পাওয়া যায় যে, অজ্ঞান্তলক্র পিতার মৃত্যুর বিলম্ব দেখিয়া অন্থির হইয়া পড়েন এবং তাঁহাকে হত্যা করিয়া সিংহাসন লাভ করেন। পিতৃঘাতককে কাশীরাজ্য ভোগ করিতে দেওয়া
উচিত নয়, এই ভাবিয়া কোসলরাজ
প্রসেনজিং অজাতশক্রর নিকট হইতে
কাশীরাজ্য কাড়িয়া লন। কিন্তু অজাতশক্র
বিনা যুদ্ধ কাশী ছাড়িয়া দিতে সম্মত হইলেন
না। এইল্লপে মগধ ও কোসলের মধ্যে
বিরোধ উপন্থিত হয়। অনেক বংসর যুদ্ধ

### শিশু-ভারতী

চলিতে থাকে, কখন বা অজাতশক্রর জয় হইত, কখন বা প্রসেমজিৎ অজাতশক্রকে হারাইয়াদিতেন। আন্দেবে হুই রাজার মধ্যে সন্ধি হইল, ফলে কাশীরাজ্য মগধের অধিকারে আদিল।

অজাতশক্র বৈশালীর অধিবাসী বৃজ্জিণ গণকে বিনাশ করিতে সকল্প করেন। কথিত আছে, বোল বংসর ধরিয়া যুদ্ধ চলে। অবশেষে অজাতশক্র কৌশলে বৈশালী অধিকার করিয়া লন। এইরপে বিম্বিসারের সময় অঙ্গ এবং অজাতশক্রর সময় কাশী ও বৈশালী অধিকৃত হওয়াতে মগধসামাজ্য বেশ বিস্তুত হউয়া পডিল।

বৌদ্ধ প্রস্থাত্ত পোওয়। যায় যে, অজাতশক্ত রাজা হইবার কিছু দিন পরে পিতৃহত্যার জন্ম অমুতপ্ত হইয়া বুদ্ধেব শরণ প্রার্থনা করেন। বুদ্ধ উচ্চাকে প্রকৃত অমুতপ্ত দেখিয়া ক্ষমা করেন ও বৌদ্ধধর্মে দীক্ষিত করেন।

মজাতশক্রর মৃত্যুর পর তাহার পুল্ল উদয়ী ( ৪৫৯ হইতে ৪৪০ খুই পুর্বাক্ষ ) রাজা হন। তিনি গঙ্গা ও শোণ নদের সক্ষমন্থলে পাটলিপুত্র ( বর্ত্তমান পাটনা ) নামে এক বিরাট নগর স্থাপিত করেন। বহুশত বংসর ধরিয়া এই নগর সমগ্র ভারতবংধর রাজধানী ছিল। ইহার মঞ্চ নাম ছিল কুম্মপুব বা পুপপুর। গ্রীকগণ ইহাকে পালিবোথা (পাটলিপুত্রের মপ্রংশ) বলিয়া জানিতেন।

উদয়ীর বহু বংসর পরে মগধে শিশুনাগ নামে এক রাজা হন (৪১১—০৯০ খৃষ্ট-পূর্ববান্ধ)। রাজা হইবার পূর্বে তিনি কাশীরাজ্যে রাজপ্রতিনিধি ছিলেন। পরে মগধের রাজাকে অতান্ত হ্বাল দেখিয়া বাহু-বলে সিংহাসন অধিকার, করেন। অনেক ঐতিহাসিক মর্নে করেন। অনেক ঐতিহাসিক মর্নে করেন শিশুনাগ বিম্বি-সারের পূর্বপুক্ষ ছিলেন, কিন্তু একথা সত্য বলিয়া মনে হয় না। তিনি অবস্থীরাজ প্রভাতের বংশধরতে সিংহাসনচ্যুত করিয়া অবস্থীরাজ্য অধিকার করিয়ালন। এইরূপে মগধ অত্যন্ত পরাক্রমশালী রাজ্য হইয়া পড়ে।

শিশুনাগের তুই ভিন পুরুষ পরে মগধে মহাপদ্ম নন্দ নামে এক প্রবল রাজা হন। অতান্ত নীচবংশে সম্ভবত: নাপিতের ঘরে. ইহার জন্ম হইয়াছিল। সেইজ্ঞ্স তাঁহার প্রজারা তাহাকে ঘূণা করিত। কিন্তু ইহার। মত পরাক্রান্ত রাজা ভারতে **ধু**ব কমই <sup>\</sup> হইয়াছেন। তাঁহার একটি প্রকাণ্ড সেনা ছিল, 🗄 তাহাতে ২০,০০০ অশ্বারোহী, ২,০০,০০০ পদাতিক, ২,০০০ রথ ও ৩,০০০ রণহস্তী ছিল। এই প্রকাণ্ড বাহিনী লইয়া তিনি পাঞ্জাব বাতীত সমস্ত উত্তর ভারতব**ধ** ও সম্ভবতঃ দক্ষিণভারতেরও অনেকথানি অংশ এইরপে তিনি ভারতের জয় করেন। একচ্ছত্র সমাট বলিয়া খ্যাত হইলেন। কোন কোন গ্রন্থে দেখিতে পাওয়। যায় যে. মহাপদ্ম ও তাঁহার আট জন পুত্র (নবনন্দ) মিলিয়া প্রায় ১০০ বৎসর রাজহ করিয়া-ছিলেন। এ কথা সভা বলিয়া বোধ হয় না এবং খুব সম্ভব নন্দগণ প্রায় ২৫ বংসর বাজহ করেন। নন্দগণ তাঁহাদের ধনসঞ্যের জন্য বিখ্যাত ছিলেন। তাঁহাদের রাজকোষে নাকি ৯৯০০ কোটি মুদ্রা জনা ছিল। অনেক গ্রন্থে দেখিতে পাওয়। যায় যে, নন্দগণ চাণকা বা কৌটিলা নামে এক বান্ধণের প্রতি অসদ্বাবহার করেন। এই কারণে চাণক্য চন্দ্রগুপ্ত নামে এক বীর**পুরুষে**র সাহায্য লইয়া নন্দবংশের উচ্ছেদসাধন করেন এবং চন্দ্রগুপ্তকে সিংহাসনে স্থাপিত करत्रन ।

নন্দগণ যথন মগথে রাজত করিতেছিলেন সেই সময় ( খুষ্টপূর্বে ,৩২৭—৩২৬ অব্দে ) পাঞ্জাবদেশ গ্রীকদেশীয় বীর আলেক্জান্দার.

### আমাদের দেশ-ভারতবর্ষ ...

কর্ত্তক আক্রান্ত হয়। আলেক্জান্দার কিরূপে একে একে বিপাশা নদী (Beas) পর্যান্ত সকল দেশ জয় করেন, দে কথা পরে বলব। কিন্তু নন্দগণ এত প্রবল ছিলেন যে, আলেক্জান্দারের সেনা বিপাশা নদী পার হইতে সাহস করে নাই।

উপরে যে কয়েকটি রাজ্যের নাম করিয়াছি, সেগুলি ছাড়া উত্তর-ভারতে আরও অনেক-গুলি রাজ্য ছিল। যেমন চেদি, কুরু, পাঞ্চাল, মংশু, শ্রসেন, গান্ধার, কাখোজ প্রভৃতি। বিশ্বপর্কাতের দক্ষিণে ও গোদাবরীর তীরে মূলক ও অশাক নামে ছইটি রাজ্য ছিল। আরও দক্ষিণে কোনও রাজ্যের নাম জানা যায় না।

এই রাজ্যগুলি ছাড়া আর একল্রেণীর কডকগুলি রাজ্য ছিল, তাহার নাম গণরাজ্য। এই সকল রাজ্যে একজন রাজার বদলে অনেকগুলি শাসক থাকিতেন। শাসকেরা কিরপে নির্বাচিত ইতৈন বলা যায় না, তবে এরপ কোন প্রমাণ নাই বে, প্রজাগণ শাসকদিগকে নির্বাচিত করিত। বরং বোধ হয় যে, শাসকগণ বংশামুক্রমেই রাজ্যশাসন করিতেন। প্রধান শাসকের নাম ছিল 'রাজা'। প্রত্যেক গণরাজ্যে একটি করিয়া প্রকাণ্ড সভাগৃহ থাকিত, তাহার নাম সংস্থাগার। এইখানে প্রজাগণ একত্ত ইইয়া রাজকার্য্য আলোচনা করিত। বোধ হয়

ভাহাদের আলোচনার যে ফল হইত, শাসক-গণ ভাহাই নির্বাহ করিতেন।

এইরূপ গণরাজা হিমালয়ের দক্ষিণে ও পাঞ্চাবে অনেকগুলি ছিল। প্রধান কয়েকটির নাম করিলাম। কপিলাবস্তুর শাক্যগণ (ইহা-দের রাজকুলে বৃদ্ধের জন্ম হয়), পিপ্ফলিবনের মৌর্য্যগণ, कुनीनगत्त्रत मञ्जगन ও दिशानीत বৃক্তিগণ। বৃক্তিগণের মধ্যে একটি প্রধানভাগ ছিল লিচ্ছবিগণ। ইহাদের অবস্থান মান-চিত্রে দেখ। কথিত আছে যে, কোসলরাজ প্রসেনজিংতর পুত্র বিভূতত শাক্যদিগকে নুশংসভাবে বিনষ্ট করেন। অজ্ঞাতশক্রর वृष्किविरवारभव कथा शृर्त्वहे वना इहेग्रारह। পাঞ্চাবের সমস্ত গণবাজ্য আলেক্জান্দার কর্ত্তক বিজিত হয়, পরে চন্দ্রগুপ্ত সেগুলি মগধসাফ্রাজ্য-ভুক্ত করিয়া লন। এইরূপে গণরাজ্যগুলি ভারতবর্ষ হইতে লোপ পায়। ব্দ্ধের কাল হইতে আলেক্জান্দারের ভারত আক্রমণ পর্যান্ত ভারতবর্ষের ইতি-হাসের মূলসূত্র মগধের অভ্যুথান। কিরুপে बीदा धीरत अञ्च, रेवमानी, कानी, अवस्ति প্রভৃতি রাজ্য গ্রাস করিয়া মগধ নিজের আকৃতি বৃদ্ধি ব বিতেছিল, ইছাই এই সময়-কার ইতিহাসের প্রধান কথা। কিছুকাল পরে চন্দ্রগুপ্ত ও অশোকের রাজঘ-কালে মগধনামাজ্য সমস্ত ভারতবর্ষে বিক্তত হইয়া পডে।



বায়ামের মোটামুটি প্রভাবটা ৪৪৮ পৃষ্ঠার পর পড়ে শারীরিক প্রক্রিয়া ও বিরোধী না হলেও চুটোর পাৰ্থকা শরীর . থানিকটা गरश গঠনের উপর। এককালে এর কতকটা মূল্য ছিল বটে আছে। ব্যায়াম ধবে নেওয়া যাক্ এমন कि छ आधुनिक माशकाठि हिनाद अहुकू



यरबहे नग् । श्रुक्तगुरम মনটাকে বলি দিয়ে শরীর গঠন করা হত। তাতে বলিষ্ঠ মামুষ ও বলবান জানো-য়ারের মধ্যে কোন ভফাৎ থাকত না। পৰ্বায়ুগ বলতে আমি গ্রীকদের সময়কার ব্যায়ামের উদ্দেশ্তের कथा वनहि मा, कात्रन এ্থনকার ব্যায়াম সেই আদর্শটাই পুনরায় অভুসরণ कब्राह्म । व्यामारमञ्ज रम्दम औ (मायवस्य প্রথাটা চলেছিল ঠিক বছর পঞ্চাশ আগে, যখন দার্কাদীব্যাদ্বামেরপ্রভি थूव मक्का हिम, इःस्थत ্ৰ বিষয় বাংলাবেশ-

্শবীৰ পঠনই হবে খাকে। পূৰ্ব-প্ৰবন্ধের হিসাবে থেকে ওটা এখনও সম্পূৰ্বন্ধে লোপ পেয়ে ধাৰনি।

নেই জিনিবটাই শ্রেষ্ঠ ব। সমাজের ও বহুতম
মানবের পকে ক্ল্যাণকর, কাজেই স্থামরা
ব্যারামের সামাজিক দিঁক ও প্রভাবটা গুলে নিতে
বাধ্য। শরীর কৃত্ব রাধা ও বলশালী হওরা প্রত্যেক
নাগরিকের কর্মবা। কিছু মান্দিক গুণগুলিকে বলি

নাধারণ হছে ব্যক্তি দেশের অধিকতর কল্যাণ সাধন করে। তবে শ্রেষ্ঠ পালোয়ান বা ধেলোয়াড়ের যে প্রয়োজন নেই এমন কথাও আমি বলতে চাই না, ভারা জাতীয় প্রভিণতি বৃদ্ধি করে এবং আপন মাপন জাতির শারীরিক উংক্রের একটা চরম

मिर्स मिठा क्रांक গেলে সমাজ পুৰ নীচু खदा त्नस्य बाब । वृत्र वााली हिन्दा (य मडा-ভার নিরিধ ভার হিদাবে দে সমাজ মৃত इरव . यात्र । छे९क्रहे ব্যায়াম বা খেলা ভাকেই বনভে হবে যাতে পূৰ্ব প্ৰকাশিত নিরিপ হিসাবে ডিনটি প্ৰভাৱই বর্জমান। কিছ সাধারণত: আমবা যে সব ব্যায়াম পছতি ও খেলাব সৃহিত পরিচিত, কোনটাই ও হিসাবে সম্পূৰ্ণ নয়, কাজেই বিশেষজ্ঞেরা ব্যায়াম থেলার এমন একটি সংগিতাণ করে निरम थारकन, यारज উপকারটা আমরা পুরোপুরিই পাই। ব্যায়াম করবার কি (बनवाद कि नका ভোমাদের হতে भारत ? मुलकः नका



তিনটি——পেশাদার
পালোয়ান হওয়া; দেহ সম্পূর্ব হছ ও কার্যাক্ষম
করা এবং আনন্দ লাভ করা। আম্রা বলে থাকি
প্রথম সক্ষাটির চেয়েও বাকি সক্ষা ভূইটিই শ্রেইডর,
কারণ দেশের স্বাস্থ্যের মাপকাটি তৈরী হয় বছতম
হন্থ লোক দিয়ে, জন কয়েক বড় পালোয়ান দিয়ে
নয়। আর্থানীর ভূতপূর্ব কাইসার প্রায়ই বলভেন—
এক্জন অতি শ্রেষ্ঠ পালোয়ানের চেয়ে ১০,০০০

কুন্তি খেলা

আন্দ হয়ে থাকে, এ ছাড়া ভাদের কোন বিশেষ মূল্য নেই। অন্তাদিকে নাধরেণ স্বস্থ ব্যক্তির সমষ্টি দেশের উন্নতি বিধান নানাদিক থেকে কবে থাকে।

অর্থশাল্পের নিক নিয়ে প্রত্যেক মাছবের একটা মূল্য আছে। শিকাও স্বাস্থ্যের অন্থপাতে তার উপার্জনে ও তা থেকে সমাকের কলাণ নির্ভর করে। এই কারণে প্রত্যেক মাছবই সমাসের শক্তি



मृष्टि यूक



ভার তোলা



ও সম্পত্তি। আমারের বেশে আপাততঃ শিকাটা

সুইডিস্ব্যায়াম नर्सक्रमवाणी नव, जा रत्नल वर्षकत्रो निक। देवहिक স্বাস্থ্যে তুলনায় বড় হত না, কেননা মোটের উপর দৈহিক সাস্থ্য প্রত্যেক মাসুবের সর্থোপার্ক্ষন করবার क्रमछाडाटक मण्यूर् व्यमात्रका नित्य थाटक। शहू



দৌড়ান



### স্যাস্থাত্য ও ভোলা



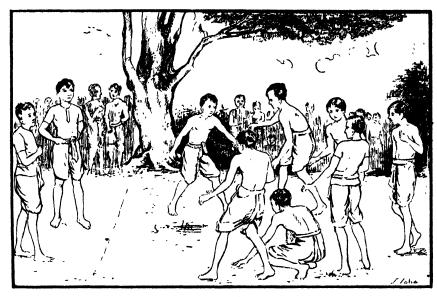
ফুটব**ল** 



হকি

বা অপট প্রমিক, যাদের প্রত্যেক দেশে সংখ্যাধিকা আছে, স্বস্থ হলে অর্থোপার্জনে আপনার চরমশক্তি নিয়োজিত করতে পারে। এই ধরণের শ্রমিকের উপর ধনীদের নির্ভরতা ও কলকারধানার উৎপাদন 🏗 নির্ভর করতে ও স্পূর্ণ আক্রাধীন হতে শেখা করবার শক্তিও অধিকতর হয়ে থাকে।

ব্যায়াম-বিশেষজ্ঞেরা স্বাস্থ্যের এই দিকটা আৰু প্যাস্ত বিচার করে দেখেন নি. কিন্তু সামার ব্যক্তি- ধে নিয়ম আছে ভার উদ্দেশ্য আরও বড়। উপরি-উক্ত উদেশগুলি ত আছেই কিন্তু সঞ্চাবৰ ব্যায়াম বা খেলার উদ্দেশ্য নিয়মাত্রবিষ্টভা, পরস্পরের ওপর এবং ব্যক্তিগত লাভ-ক্ষতি ভূলে গিয়ে সজ্বের हेडानिट्डेन क्यांठाहे छावट्ड (नया। अहे हम यामाम ও খেলার আসল শিক্ষার দিক এবং এই ফল পাওরা



হাডুড় ব। ৰূপাটি থেল।

গত অভিজ্ঞতা এইদিকটাই আমার কাছে বড় করে দিয়েছে এবং আমার বিশাস বাায়াম সম্বন্ধে এর চেয়েও শ্ৰেষ্ঠ যুক্তি আর কিছু থাকতে পারে না।

শ্রীর স্কুরাখা ও কার্যাক্ষম করার সর্থ কি ? সোজা কথা এই মনে রাখতে হবে যে, শারীরিক প্রক্রিয়াগুলি ব্যায়াম ও খেলার বারা এমন নিয়মাত্ববর্তী করতে হবে যাতে দেহের ক্ষিপ্রতা ও স্হিষ্ণুতা বাড়ে ও ছোটখাট বা নিবাৰ্য রোগের হাত থেকে সম্পূর্ণ মুক্তিলাভ করা যায়। এটা কিন্তু ব্যক্তিগত ফল এবং সাধারণ ব্যাঘ্রামের স্বারা আমরা লাভ করতে পারি।

শিক্ষালয়ে ভোমাদের ব্যায়াম করার বা থেকার

সম্ভব বলেই ওচুটি আৰু এত করে রাষ্ট্র ও िखानीन वाकित्तत पृष्टि व्यक्ति करहर ।

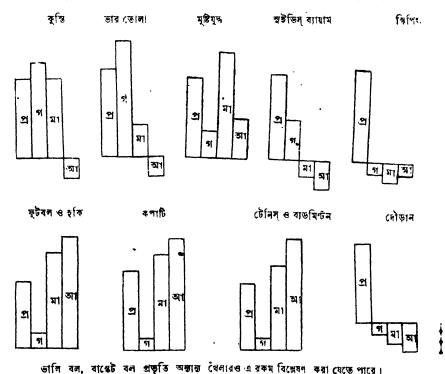
যে সব দেশ স্বাধীন এবং যে দেশকে আছারক্ষার দেনা-বাহিনী প্রতিপালন করতে হয়. জনগণের দৈহিক স্বাস্থ্য ও পট্ড। তার কাছে সমাক আদরের। আমাদের দেশে শিকিত বাক্তিদের যে খেলার প্রতি বিরুষত। আছে তার কারণ এ বিষয়ে শিক্ষার দারুণ অভাব।

থেলার ছারা আনন্দ লাভ করা ও খেলার দামাজিক প্রভাব জমেকটা একই জিনিষ। অনেক ওলি ৰামাম পছতি আছে যা থেকে কোন আনন্দ লাভ করা বা অল্পের সাহচ্যা পাওয়া যায় \*-

না, কারণ সেগুলি বান্তিগদ কিব প্রত্যেক থেলার মন্তের সহিত আদান-প্রদানটাই বড় কথা। থেলার ভিত্র দিয়ে আমরা অন্তের অধিকারটা বীকার করতে ও তার গুণগুলিকে শ্রনা করতে শিবি। তা ছাড়া পেলা একমান দিনিল মাতে বয়স, জাতি, আবিক বা সামাদ্রিক অবস্থা প্রশক্তি ছলে গিয়ে সমান পর্যায়ভূক হয়ে পরস্পরের সহিক মেশবার স্থ্যোগ হয়ে থাকে।

তোমরা একথাট। অবশ্রই জান যে, ইচ্ছাশক্তির প্রয়োগ ভিন্ন শুধু বায়োমে দেহ গঠিত হয় না। বায়োম যদি শুধু শারীবিক পরিশ্রমে দাভায় তাহলে ভার লক্ষ্য ব্যথ হয়ে যায়। আমি বলি ব্যায়াম থেকে
আনন্দ লাভ কবভে পাবলে ভাব উপ্যোগিতা
শতপুণ বৃদ্ধি পায়। ব্যায়াম ও খেলার মূল উদ্দেশ্য
ভাবনীশক্তি বৃদ্ধি করা, আনন্দ যে সেই জীবনীশক্তিটকে চের বেশী বাডায় সে বিষয়ে কোন
সংক্ষ্য থাকভে পারে না।

আমাদের হপরিচিত বাায়ম বা খেল র পছতি-গুলির প্রক্রিয়াব, গঠন, মন ও মানন্দের দিক দিয়ে কতটুকু মৃল্য আমরা নিম্নলিখিত উপায়ে খানিকট। নির্ণয় কর্তে পারি। এই চিত্রগুলির মধ্যরেখার উবিটা সক্রিয় ও নীচের দিকটা নিজিয় দিক।—





### তিৰত

ষোল বংসর বয়সে মহাত্ম।
রাজা রামমোহন রায় হিমালর
পর্বত পার হইয়া তিবনতে
গিয়াছিলেন—তোমরা তোমাদের পড়ার বইতে কিংবা

দের পড়ার বইতে কিংবা রাজ। রামমোহন রায়ের জীবনচরিতে এইরূপ পড়িলা থাকিব। তিনি দেখানে য'়ইয়া দেখানকার বৌজ-সন্ন্যাদী লামাদের দুজে ধর্মস্থতে নানাকথার



ভিক্তের লোক
আলোচনা করিয়ছিলেন। বাজালী ভ্রমণকারী
রাজা রামমোহন রায়ের ভিক্তে **যাই**বার শভ

শত বৰ্ব পূৰ্বে বৌদ্ধৰ্মের অসাধারণ জ্ঞান ও ধর্মনীতি শিক্ষা দিবার জন্ত মহাপুরুষ বালালী দীপত্তর তিবতের

রাজার মাজ্বানে ভিকাতে গিয়াছিলেন। ভিকাত যাত্রীদের মধ্যে তিনিই প্রথম বান্ধানী। তোমরা 'বৃহত্তর ভারত' পড়িয়া জানিয়াছ, একদিন ভারতের শিকাও সভ্যতা ভারতের বাহিরে যে সকল দেশে বিস্তৃত হইয়াছিল—ভিকাত তাহাদের মধ্যে একটি।

তিকত যেন দ্বপকথার বিচিত্র দেশ। হিমালদ্বের পরপারে সে কোন্ অপ্রপুরী ঐ তিকত তাহার সহক্ষে আমরা তেমন ভাবে কিছুই জানিতাম না। ইউরোপের লোকেরা বছদিন পর্যন্ত তিকতে প্রবেশনাভ করিতে পারেন নাই; এইত সেদিন যাত্র ভাগার তিকতে প্রবেশ লাভ করিতে পারিয়াছেন। জাঁহাদের ভ্রমণকাহিনী এবং বর্ত্তমান যুগের বালালী ভ্রমণকারী শরংচন্দ্র লাসের তিকতে সহক্ষে নানা গ্রন্থ হুইতে আমরা আক্ষালনিবিদ্ধনগরী (Forbidden City) লাসা ও তিকতে সহক্ষে নানা কথা জানিতে পারিতেছি। আমরা শরৎচন্দ্র দাসের বিচিত্র ভ্রমণকাহিনীর কথা ও তাঁহার জীবনী সম্বন্ধেও হুই একটি কথা তোমাদের কাছে বলিব। ১৮৭৯ খুইাক্ষে শরংচন্দ্র তিকতে যান, তাঁহার আগে ১৮৬৬ খুটাক্ষে নম্বান সিং এবং তাহার পরে কিমণ সিং



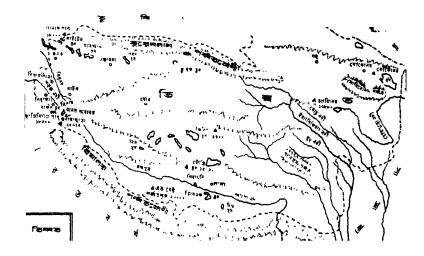
রাজা রামমোহন রায়

- ※

নামে আরও হৃইজন ভারতবাসী তিকাতে গ্যন ক্রিয়াছিলেন।

ভিক্ত পাহাড়ের দেশ। ইংরাক্সীতে ভিক্ততকে
টিবেট্ বা থিবেট্ (Tibet or Thibet) বলে।
সাধারণ বর্ণনা সমতল ভূমির মাছুষের কাছে
অতি উচ্চ গিরিশিথরের অধিবাসী
ভিক্তবিদের কথা ক্সানিবার ক্ষন্ত বহুকাল হইতেই
নানা কৌতুহল ক্সাগিয়া আসিতেচে। মাছুষের

হত্যা করিয়া রজের নদী বহাইয়া দিয়াছে, এমন কি রুশিয়ার সমাট জারের প্রভাব ক্র করিতেও তাহারা পশ্চাংশদ হয় নাই, কিন্তু মোলদেরা পর্যান্ত তাহাদেব দেশের অতি নিকটবর্ত্তী এই তিব্বতে আদে নাই। পঞ্চম ও সপ্তম শতালীতে চীন পর্যাটকেরা ভারতবর্ষ প্রমণ করিতে আদেন। তাঁহাদের প্রমণ-বিবরণ হইতে আমরা ভারতবর্বর ইতিহাদ সম্বন্ধে অনেক কথাই জানিতে পারি,



খতাব এই যে, তাহার মন যাহা কিছু বিচিত্র
যাহা কিছু নৃতন, তাহার সদক্ষে জানিবার জঞ্চ
বাগ্র হইরা পড়ে। তিব্বতের প্রাক্তিক বিভাগ,
তিব্বতের লতা-পাতা, ফুল, ফল, তিব্বতের পুক্ষ,
ও নারী, তিব্বতের বাড়ী-ঘর, পথ-ঘাট, নদ-নদী,
রুদ, আচার-ব্যবহার, রীভি-নীতি সবই নৃতন—
তার শাসন, রাজনীতির সহিত জক্ত দেশের
বাষ্ট্রনীতির কত প্রভেদ! বাহিরের নানাদেশ
বর্ত্তমান সভাতার উজ্জ্বদ আলোকে প্রদীপ্ত, কিছ
ভিব্বতের এই পর্বত প্রাচীরের অন্তরালে এখনও
সে আলো যাইয়া পৌছায় নাই—কবে পৌছিবে,
বলা বড় সহন্ধ নয়। তোমরা ভনিয়া আশ্র্তায় মনে
করিবে যে, প্রতাপশালী মোক্লেরা দেশের পর
সেশ জয় করিয়াছে, মধা এশিয়ায় লুঠতরাজ ও

কিছ তাঁহারা কেহই তিবৰত সম্বচ্ছে একটি কথাও লেখেন নাই।

এশিয়ার দক্ষিণ ভাগে তিব্বক্ত অবৃহিত।
কালেই, ইহার উত্তর সীমা মধ্যএশিয়া, দক্ষিণ সীমা
হিমালয় পর্বত। দেশটির পরিমাণ ফল ৪৬৩, ২০০
বর্গমাইল। সাধারণকা তিব্বক্তের প্রশান্ত সমতল
ভূ-ভাগের উচ্চতা ১০,০০০ দশ হাজার ফিট্ হইবে।
এশিয়ার অনেক বড় বড় নদীর উৎপত্তিছান
তিব্বক্তের পর্বক্তপ্রেণী। সিদ্ধু (Indus), শতক্র
(Sutlej), অক্ষপুত্র, হোয়াল হো (Hoang Ho),
ইয়াল-শি-কিয়াল (Yang tse kiang) এসকল
বড় বড় নদী ভিব্বক্তের উচ্চ পর্বক্তপ্রেণীর বৃক্
হইতে নামিয়া আদিয়া দেশে দেশে বহিষা
চলিয়াছে।

**一米** 

তিব্বতে অনেক বড় বড় হল আছে। এখানকার অনেক হল ১৩,৮০০ হইতে ১৫,০০০ ফিট্ উচুতে অবস্থিত। মানস সরোবর নামক হল, রাবণ হল প্রভতি পশ্চিম ভিকাতে অবস্থিত।

প্রাক্তিক বিভাগের দিক দিয়া ভিক্ততকে ভিনটি ভাগে ভাগ করা যায়। তিক্তের পশ্চিম ভাগে লোকজনের বদতি বড কম। এমন কি, এক বর্গ



ভিন্দভপর্যাটক স্বর্গীয় শরৎচন্দ্র দাস

মাইল পরিমিত স্থানে একস্পনেব বেনী; লোক বাস করে না। এ অঞ্চলটা সমুস্ত তবেশা (Sea-level) হইতে প্রায় ১৫,০০০ ফিট টুচু, এত উচুতে কোন ফসল ফলে না। এ অঞ্চলের জ্ব-ভাগ পশ্চিম দিক হইতে প্রাদিকে চালা। দক্ষিণ-প্রাদিকেব উপতাকা কোন কোন স্থানে ৫,০০০ ফিটের বেনী উচু নয়। এখানে মূলা, গোল আলা, গম, যব, মটর, জ্ট্রা এমন কি ধানও জ্যো। এজন্ম এ ঢালা অঞ্চলটায় লোকসংখ্যা বেনী। পশ্চিমদিকের উপরের আংশে মাঝে মাঝে ভয়নক ত্বার-ঝড় বহে। সেই বড়ে কাহারও সাধা হয় না যে, ঘরের বাহির হইতে পারে।

তিব্বতীয়েব। বেশীর ভাগ শাসা ও চীন-সীমান্তের মধো বাস করে। তিব্যতের উত্তর দিকের সমতল ভ্রাগের নাম চাল টাল (Chang Tang) চাল টাল লব্দের অর্থ উত্তরদিকের সমতল ভূমি। ইহার উত্তরে কুইএন্ লুন (Kuen Lun) পর্কত্রেশী। চাল টাল অঞ্চলে অনেক রুদ আছে। চারিদিকের পাহাড় হইতে যে সকল নদীর উৎপত্তি হইয়াছে তাহার। সকলে আসিয়া এই সব হুদে মিলিয়াছে। তিব্যতের অধিকাংশ হুদের লুলই লোনা, কেবল এখানকার হুদগুলির জল স্থমিই। এখানে গাছপালা লাই, আর শীত খুব বেশী। অত ঠাগুর গাছপালা জব্মেনা। এখানে যে পরিমাণ ঘাস ক্লব্মে তাহাতে বুনো চমরী গরু, বুনো গাধা, বুনো ভেড়া, বুনো ছাপ্রল



শতক্র স্রোভোধার।

দক্ষিণ-পশ্চিম দিকটা ভারতের দিকে অবস্থিত। তিকাতের পূর্বা ও উত্তরাংশে যে সকল নদীব



ব্ৰহ্মপুত্ৰের জন্মভূমি

উৎপত্তি হইগাছে, সে সব নদী অন্ধনেশ, শ্রাম দেশ, চীন, মঙ্গোলিয়া এবং তৃকীস্থানের দিক দিয়া বহিয়া গিয়াতে।

পূর্ব হইতে পশ্চিমে ১৫০০ পনের শত মাইল উত্তর হইতে দক্ষিণে ৫০০ পাচ শত মাইল। প্রায় যোল হাজার কিট্ উচ় ভিন্নতেব পার্বব্য-প্রদেশ ভারতবর্ষের উত্তর দিকে অবস্থিত থাকিয়া ইহাকে

ভারতবধের সীমাস্ত প্রদেশ হইতে বিচ্ছিন্ন কবিয়া রাথিয়াছে । ভিকাতের পশ্চিম দিকে সিদ্ধ ও শতক নদীর অধিভাক। প্রদেশ। ত্রহ্মপুত্র নদী এ প্রদেশের দক্ষিণ-পুর্ব দিক হইতে জন্ম-লাভ করিয়াভে। তিঝতে ব্রহ্মপুল নদীর নাম সাহ (4) (Tsang Po) বাপবিত্রনদী। সাঞ্

কাব্যে এই কৈলাদ পর্বতের অতি স্থন্দর বর্ণনা আছে। কালিদাস লিখিয়াছেন---আকাশে শত শত উচ্চ চূড়া-শোভিত কৈলাস পৰ্বত দেখিতে অতি মনোহর। অতি সাদা বরফের স্তুপে উহার



তিব্বতের দক্ষিণ পশ্চিম দিকেব দুখ্য

(भा नतीत नाथा-नतीत जीरव नामा I Lhase ), ৰিপাৎসি(Shigutse) এবং পিয়ানংসি(Gyantse) অবস্থিত। তিকভীয়ের। সে দেশের সর বড नर्गात्करे मान (भा वरन। मिक्, जन्नभूज এवः

সিন্ধনদের বুকে

শতক্র এই ভিনটি নদীই মানসসবোববের কাছা-কাছি পার্বান্তা-প্রদেশ হইতে উৎপত্তি করিয়াছে। কৈলাস পর্বত শতক্ত ও সিদ্ধনদের উংপত্তি-স্থান। কবি কালিদাপের মেঘদুত নামক मिथत अमि ঢोका। এই পাহাডের পা এত স্বচ্ছ (य, দেবতাৰ মেয়েরা দর্পণের বদলে ইহার গায়ে মুখ দেপেন--তাঁহাদের আর দর্পণের প্রয়োজন হয় ন।।

১২,০০০ হাজার ফিট্ উচু পাহাডে বুক্ भिया त्य ज्वन नहीं वहिया हे नियाहरू. तम जव নদীর জলে নৌকা চলাচল করে। লা (La) নামক গাছের কাঠ দিয়। নৌকার কাঠামে। প্রস্তুত করিয়া চমরী গরুর চামরা দিয়া ঢাকিয়া ইহারা নৌক। তৈয়াবী করে। याम्याच त्यारकवा शाधा, त्यांका, श्रमः (চমরী), ভেড়া ছাগল, কুকুর এ সকল পোশে এবং ইহাদেব সাহায়ে নানারপ কাঞ क त्रिया चाटक।

তিব্বতের সকলেব চেয়ে বড হুদটির নাম কোকোনোর(Koko Nor)। এই ব্রদটির যায়তন ১,৬৩০ বৰ্গ-মাইল। টেম রি (Tengri) इरने याकात स्ट्रेर श्रीम ১,০০০ বৰ্গ মাইল। আব ছোট ছোট তুদগুলির কোনটির খায়তনই ১০০ বর্গ-

माइरिनद कम नरह। शर्व्य এहे ग्रव इम्छनि আয়তনে আরও অনেক বড ছিল। এ দেশের বড় ছদে অনেক সময় উঠে।

### ম্পিশু-ভারতী

তিব্বত পৃথিবীর সব চেয়ে উচু দেশ। এত উচু দেশেব আব্হাওয়া যে অদ্ভুত রক্ষের হইবে, ভাহা পড়িতেছে—শীতের বাডাস ত্যার কণা বেগে বহিয়া চলিয়াছে, তবুও দেখিতে পাইবে



ষে, টোমোরা হাসি-মুখে জিনিষ-পতা লইয়া **रय लामात निरक.** मा स्मिनिश নতুবা কালিম্পোর বা प्रिटक আদিতেচে ও ষাইতেছে। চুম্বি উপতাকা ব্যবসায়ের প্রেসিদ্ধ। এথানে নানা-জাতীয় গাছ माधात्रगटः জ্বো। গাছেব দেবদাক मःशा (वभी। **চृ**षित প্রাকৃতিক (419)

চুম্বি উপতাকা

সহজ্ঞেই অন্তমান করিতে পার। বংসরের বেশীর ভাগ সময় এখানে ভয়ানক শীত থাকে। সে শীত যেমন মনোহর, তেমনি এখানকাব ভূমির উপরত। শক্তি থুব বেশী। ১২,০০০ ফিট উচু এই প।প্রত্য-

নিবাবণ করা পশুলোম দাবা নির্মিত
লোম দাবা নির্মিত
লোম দাবা নির্মিত
পো যা ক-পরিচ্ছদও
সহজ হইয়া উঠে না।
তারপব তুঘারকাটকাব উৎপাতে
কাহার সাধা ঘবের
বাহিব হয়। এ স্বল
দেশে জালানি কাঠের
আদব থে কড় বেশী
তাহা সহচ্ছেই বঝিতে
পাব।

চুম্বি উপত্যকা—
১২,০০০ ফিট্ উচু।
চুম্বি প্রদেশের সৌন্দর্য্য
মনোমুগ্ধকর। এখানে

শীত বেশী হইলেও চুধি উপত তাহা স্বাস্থ্যের পক্ষে ভাল এবং সৃষ্ক্ করা যায়। এখানে ব্যারাম ও পীড়ার প্রাত্তিবে বড় কম। চুধি অঞ্চলে টোমো (Tomo) নামে একজাতি লোক বাস কবে। টোমোরা কট্রসহিষ্ণু জাতি। বরফ



চৃষি উপতাকার চোমোলহরি বা দেবী পাহাড়

প্রদেশে, এত প্রচুর পবিমাণে শশু জন্মে যে, চার পাঁচ হাজার লোক পরম পরিহৃত্তির সহিত জাবনধারণ করিতে পাবে। এ অঞ্চলের বাডী-ঘর, প্রধু-ঘাটও বেশ ভাল।



### धाँधा-दिंशानी

ধাধা ও 'হেঁয়ালীর' জন্মের ইভিহাস জ্ঞালোচনা করিলে দেখা যায়, জতি পুরাতন কালে হেঁয়ালী প্রচলিত ছিল। গ্রীদের ও মিশরের প্রাচীন ইভিহাসে 'ক্ষিংক্স' নামক জ্ঞুত কল্লিত জ্ঞাবের উল্লেখ দেখা যায়। এই জ্ঞাবের শরীর সিংহের মত, মুখ মাস্থেষৰ মত, শাবার হুটি ভানাও আছে। কথিত জ্ঞাচে, প্রাচীন গ্রীদেব ধিব্স নগবে একটি ক্ষিংক্স নগবের ম্ধিবাদীদিগকে হেঁয়ালীর উত্তর বাহিব ক্লিতে বলিত; উত্তব বাহির ক্রিতেনা পাবিলে সে অধিবাদীদিগকে হত্যা করিত।

মহাভারতেও ইেগালীর উল্লেখ দেখা যায়। বন-পর্কের এক কামগায় আছে, তাম, অর্জ্বন, নকুল ও সহদেব ওফার্স্ত : ইয়া এক জলাশরে কল পান করিতে আদায় এক ফল আকাশ হইতে উহাদিগকে নিষেধ কবিয়া বলিলেন, "আগে আমার প্রশ্নের উত্তর দাও, তাহাব পর ক্ষল পান কর।" তাহাব। যুক্তের প্রশ্নের প্রশ্নের প্রশ্নের প্রশ্নের প্রশ্নের ক্রিয়ের উত্তর দিতে পারেন না, কিন্তু জল পান করেন। ফলে, তৎক্ষণাৎ তাহাদেব মৃত্যু হয়। যুধিন্নির ভাইদিগকে খুক্তিতে খুক্তিতে ত্থার্ক ত্থার হলন। যক্ষের সে হেঁয়ালীর-প্রশ্নের উত্তর দিয়া যুধিন্নির ভাইদিগকে বাঁচাইয়াছিলেন। যক্ষেব কয়েকটি প্রশ্ন ও যুধিন্তরের উত্তরগুলি নীচে দিলাম:—

যক—"পৃথিবীর চেয়ে ভারী কে ? আকাশের চেয়ে উচু কে ? বাতাসের চেয়েও ফ্রতগামী কে ? ভূণের চেয়েও কাহার সংখ্যা বেশী ?" যুখিচির—"মাতা পৃথিবীর চেয়ে ভারী, পিত। আকাশের চেয়ে উচু, মন বাতাসের চেয়ে ক্রতগামী, চিন্তার সংখ্যা ভূণের চেয়েও বেশী।" শ শেকে ঘুমাইলে চোধ বোজে না? কে

জিলিয়া নডে চডে না? কাহার হৃদয় নাই?

কে নিজের বেংগতেই বড়হয় ?"

ষ্ধিন্তির—"মাছ খুম।ইলে চোৰ বোজে না, ডিম জ্মিয়া নড়ে চডে না, পাণ্রের হৃদয় নাই, নদী নিজেব বেগেব ঘাবা বড় হয়।"

যুধিষ্ঠির—"যাহার ঋণ নাই, আর নিজের অরে
পাকিয়া দিনেব শেবে যে চারিটি শাক-ভাত
ঝাইতে পায়, দেই স্থী। প্রতিদিন জীবেব
মৃত্যু হইতেছে, তথাপি যে লোকে চিরদিন
বাঁচিতে চ'য়, ইহাই আশুর্গা মহাপুরুষেরা
যে পথে যান তাহাই পথ। সময় যেন পাচক
সে যেন প্রাণিতিছে,
ইহাই সংবাদ।"

পুরাতন অনেক রূপকথা ও হেঁয়ালীর কথা পাওয়া যায়। অভাত ধাঁধাব জয় হেঁয়ালীর অনেক পরে হইয়াছে বলিয়া মনে হয়। পুরাতন জারবী পুতকে নানা প্রকাব অভের ধাঁধার উল্লেখ জাতে। মাপ-জোক, ভাগাভাগি ইত্যাদির ধাঁধা, আরবীদের মধো বহুকাল আগেই প্রচলিত ছিল। গ্রীস ও রোমেও ধাঁধার-হেঁয়ালী বহুকাল আগে প্রচলিত ছিল। "অহের যাজুর চৌক" (Magic Square) প্রায় ৫০০ বংসরের পুরাতন পুত্তকে পাওয়া যায়।

গোলক ধাঁধাও বছকালের পুরাতন জিনিষ।
প্রীক ও মিশরদেশীয় পুরাণে গোলক ধাঁধার উল্লেখ
আছে। এশিয়া ও ইউবোপের নানাদেশের বাগানে
ও উঠানে এখনও বছকালের পুরাতন গোলোক
ধাঁধা পাঙরা যায়;—কোনটি বা ইউ-পাধরের

**→**\*

কোনটি শুধু মাটিতে 'আল্' বসাইয়া কবা হইয়াছে, আবার কোনটি ছোট গাছের বেড়ার জৈয়ার। এই সকল গোলক ধাধার অনেকগুলির মধ্যে প্রবেশ করা বেশ কঠিন। কলিকাভাব উত্তরে "মরকভ কুল" নামে একটি বাগানে টিনের বেড়ার তৈয়ারি একটি গোলক ধাধা, আছে। ভাহার মারখানে যাইতে পারিলে দেখা যায় একটি কাঠের ফলকে লেখা আছে:—

"এমনি সংসাব গথ ধাঁধায় ভ্রমণ,

ে, পায় প্রক্রত পথ সেই বিচক্ষণ।" কোন ধাঁধার পব কোন ধাঁধার জন্ম ত্ইয়াছে, क्रिक दल। मध्य मा , তবে, करयक क्षकादान धीभारक 'আধনিক' আর কয়েক প্রকাবের ধাধাকে অতি 'আধুনিক' বল। চলে। 'আধুনিক' শ্রেণীর ধাঁধবে মোটামুট উন্বিংশ শতান্ধীর শেষ ভাগে জন্ম. 'অতি সংগ্ৰিক' ধাধাৰ বিংশ শতাকীতে জনা। 'आधनिक' इल्लीत भीभाव मर्घा 'नक इहाँकि' (Word squares), 'ল্কানো নাম' (Hidden names) 'শব্দ বদল' (Transformation) প্রভৃতির উল্লেখ কবা দাইতে পাবে। 'অভি আবনিক' ধাঁধার মধ্যে 'শাস ছক' (Cross-word Puzzles) 'অংশহাবা ছবি' (Missing-detail pictures); প্রভৃতির উন্নেধ কবা ঘাইতে পাবে। আ**ধুনিক** ধাধার কয়েকটি আবার পুরাতন ধাধার কপাস্তর মাত্র। 'অতি আধনিক' কোন কোন ধাঁবাভ আধুনিক ও পুরাতন ধাধার রণান্তর। অধিকাংশ আপান : ও গুলাতন অংগল ধাঁধা প্রকৃতগক্ষে এক একটি - ৯ কণিবেৰে বিয়ম জানা থাকিবে ভি ধার উত্তৰ অন্যালনে ক্ষিয়া বাহিব কৰা খাইছে পাৰে।

এখানে কাষে টার্নাধার উপাহরণ এলার দেওয়া হল্। এরণ এবং মতাত নামা প্রকারের ধার্যা প্রোন্ত্যা হটবে।

### ৰ্মা

১। অঙ্কের যাত্ব চৌকি (Magic squares)

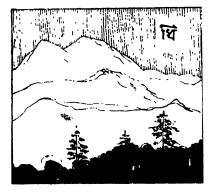
এই ধাঁধাৰ ক্ষেকটি সংক্ষা চৌপোপির মধ্যে এমনভাবে সাজনে হয়, নংহাতে ভাইনে-বাঁষে, উপ্ব-নীচে, সকল দিকেই যোগ বা গুণ করিলে ফল একই হব; কোন কোনটাতে ভাগ বা বিয়োগেবও ব্যবস্থা দেওয়া হয়। এরপ নানাভাবের চৌধোপী হইতে পাবে। কোনটিতে কোণাক্রি যোগ-বিয়োগ

ইত্যাদি করিলেও এক ফল হয়, কোনটিতে
মাঝথান হইতে কোথ। পর্যন্ত খোগ, বিয়োগ বা
গুণ করিলে চারিদিকেই এক ফল হয়, ইত্যাদি।
এখানে যে চৌথোপী দেওয় হইল, ইহাতে ১
হইতে ১ পর্যন্ত সংখ্যাগুলি এমনভাবে সাঝান
আছে, যাহাতে কোণাক্ণি, পাশাপাশি, যে ভাবেই
যোগ করা যায়, তিনটি সংখ্যার যোগফল ১৫ হয়।

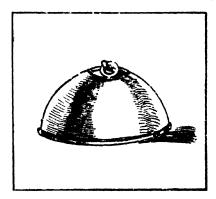
| ٩ | ٩          | و |
|---|------------|---|
| r | <b>(</b> . | > |
| q |            | ь |

### ২। লুকানো নাম

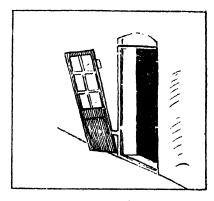
এট ধাঁধায় ছবি আঁকিয়া দেওয়া হয়। অৰ্থ বাহির কবিতে পাবিলে একটি নাম ধরা পড়ে। যেমন, নীচের একটি ও পরপৃষ্ঠাব তিনটি ছবিতে ভারতবর্ধেব চারটি জায়ধার নাম লুকানে। আছে।



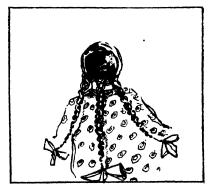
গিরিধি



ঢাকা



ৰারভাৰা



**ত্রিবে** 

#### ০। অংশ-হারা ছবি

এই ধাধায় ছবির বিশেষ কোন সংশ্বাদ দিয়া ছবিটি আঁকা হয়। কোন্ অংশ বাদ দেওয়া হইয়াছে বাহির করিতে হইবে। নাচের ছবি ছুইটি দেখিদেই বুঝা যাইবে। ছবির নামেরও



লে-ম উত্তর-দোলার মন্ত্রা



বে—ফু –প্র—ছ উত্তর (বেশ ফুটিয়েছে প্রতিহংসা ছবিতে)

প্রথম অক্ষরটি দেওয়া হইয়াছে। ছবির হার। অংশ বাহির করিতে পারিলে নামের হারা-অংশও সহজে বাহির করা যাইবে।

### ৪। শব্দ-ছক্ (Cross-word puzzle)

এই ধাঁধায় একটি ছক্ দেওয়াথাকে তাহার মধ্যে কয়েকটি ঘর সাদা আব কয়েকটি ঘর কালো।
শাদা ঘবের কোন কোনটিতে এক একটি সংখ্যা
(১, ২, ৩, ৪ ইত্যাদি) লিখিয়া দেওয়া খাকে, এবং
সক্ষে সকে 'পাশাপাশি' এবং 'উপব হইতে নীচে'
বসাইবাব জন্ম কয়েকটি কথাব অথ বা নির্দেশ
দেওয়াথাকে। কথার এক একটি অক্ষব ছকে ঠিক
মত বসাইতে পারিলে ছক পূর্ব হইয়া যায়। কালো
ঘরে কোন অক্ষব বদে না। 'পাশাপাশি' বা

(৮) 'ন্তন, (≯) মূধ, (১১) জল, (১২) বোনা, (১৫) তোমার, (১৮) জোর, (১৭) জলর,(১৮) পাত্র-বিশেষ।

### **'উপর হইতে নীচে' ক**থা

(১) তলোয়ার,(২) শরীরের ভিতরে বহে, (৪) মানস (৫) ইহা ভিন্ন ব্যঞ্জনে স্বাদ নাই, (৭) ক্রমাগত (১) এশিয়ার দেশ, (১০) চকু, (১০) যাহা তলাইয়া দেপা যায় না,(১৪) দাগ, (১৬) বিবাহের পাত্ত।

ইহাব উত্তৰটি দেখিলেই শব্দ-ছক কৰিবার উপায় সহক্ষে বুঝা যাইবে।

| 5  | ২  |   |    | 9  | 8  | 3  | কি | র  | 4 |   | ক  | ম | ਜ |
|----|----|---|----|----|----|----|----|----|---|---|----|---|---|
| ઙ  |    |   | 9  |    | ৮  |    | রি | ঞ  |   | অ |    | ন | ব |
|    |    | ১ |    | 20 |    |    | Б  |    | আ | ਸ | ন  |   | ฯ |
|    | 77 |   | 32 |    |    |    |    | নী | র | ব | য় | ন |   |
| 70 |    |   |    |    |    | 78 | অ  |    | ব | র | ন  |   | ক |
| 70 |    |   |    |    | 76 |    | उ  | ব  |   | ত |    | ব | ਜ |
| 29 |    |   |    | 76 |    |    | ল  | নি | ত |   | ক  | র | 零 |

'উপর হইতে নীচে' কথাগুলি বসাইবার সময় দেখিতে হইবে যে পরবর্তী সংখ্যার আগেব ঘবেই আগের কথাটি যেন শেঘ হয় (যদি সে ভাবে নম্বর দেওয়া থাকে)। যেমন উপরেব ছকটিতে ১১নং 'পাশাপাশি' বসিবার কথাট ১২নং লেখা ঘরের আগেই শেষ হইবে; অর্থাৎ ছই অক্ষরেব কথা হইবে। উদাহরণ—

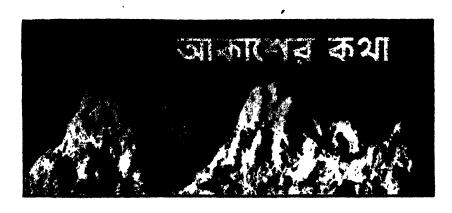
### পোশাপাশি কথা-

(১) আলোক-ছটা, (৩) পদ্ম, (৬) খালি,

#### १। अवर-वनम

উদাহরণ: 'পচা'কে 'ভাজা' কর।
উত্তর: পচা—পড়া—পাডা—ভাড়া—ভাজা।
এই ধাধায় একটি কথার এক একটি অক্ষর বা
আকাব-ইকার ইত্যাদি বদ্লাইয়া ক্রমে আর একটি
কথা তৈয়ারী করিতে হইবে। একবারে একটি
অক্ষর বা আকার-ইকার বদল বা যোগ করা যায়
এবং প্রভ্যেকটি পরিবর্ত্তনের স্কে এমন একটী
কথা তৈয়ারী করিতে হইবে যাহার অর্থ হয়।





## মঙ্গলগ্ৰহ

৫১৯ প্রার পর

তোমাদের কাছে চাঁদের কথা বলিয়াছি, এইবার মঙ্গলগ্রহের কথা বলিব।

তোমরা অনেকেই বোধ হয় মঙ্গলকে দেখিয়া থাকিবে। সাধারণতঃ ইহাকে

লালরঙের নক্ষত্রের মত দেখায়। সেই-জন্মই প্রাচীনকালে জ্যোতিবীরা ইহার নাম 'লোহিতাঙ্গ' রাখিয়াছিলেন। সে-কালের হিন্দু জ্যোতিবীরা মঙ্গলকে নব-গ্রহের একটি গ্রহ বলিয়া ইহার স্তব ও স্তুতি করিয়াছেন। এই মঙ্গলকে লইয়া পৃথিবীর বড় বড় বৈজ্ঞানিক পণ্ডিতেরা অনেক দিন হইতেই নানারূপ জন্মনা করনা করিতেছেন। অনেকে বিশ্বাস করেন, পৃথিবীর মড মঙ্গলগ্রহও জীব-নিবাসের উপযুক্ত। সে সকল কথা একে একে তোমাদের কাছে বলিব। তাহার পূর্কে মঙ্গল সম্বন্ধে অঞ্চান্ত বাহা জানা গিয়াছে তাহাই তোমাদিগকে বলিতেছি।

মঙ্গলও পৃথিবীর স্থায় সূর্য্যের চারিধারে ঘুরিতেছে। সৌরজগতে মঙ্গল ও শুক্র এই ছুই গ্রহকেই পৃথিবীর প্রতিবেশী বলা যাইতে পারে। পৃথিবী অপেকা ভক্ত আরও নিকটে এবং মঙ্গল আরও দূরে

থাকিয়া স্থ্যকে অনবরত প্রদক্ষিণ করিতেছে। স্থ্য হইতে মঙ্গলের দূরত্ব

গড়ে ১৪১,৫০০,০০০ মাইল, কিন্তু ইহার পথ অনেকটা ডিমের আকারের মত বলিয়া ইহার দুর্ছ ক্ধনও ক্ধনও আরও ১২,০০০,০০০ মাইল কমিয়া যায় এবং কখনও বা ১৪,০০০,০০০ মাইল বাড়ে। মঙ্গলের ও পৃথিবীর কক্ষ ছুইটির (orbits) চিত্র দেওয়া তোমরা দেখিতে পাইবে যে, মঙ্গলের কক্ষের স্থায় পৃথিবীর কক্ষ অভটা ডিম্বাকার নয়। সুর্য্যের চারিধারে একবার क्षांकि क्रिए मक्रांत्र ७৮१ मिन नार्ग। খুরিতে খুরিতে পৃথিবীও যথাকালে সূর্য্য ও মঙ্গলের মধ্যস্থলে আসিয়া উপস্থিত হয়। আজ যদি পৃথিবী সূর্য্য ও মঙ্গলের मायथात्न थांत्क, छाटा ट्टेंग १४० मिन পরে পুনরায় পৃথিবী এই মধ্যক্ষে আসিয়া (नीहित्व। शृथिवी यनि चित्रे थाकिछ, ভাগা হইলে এই কালের বাবধান ৬৮৭ দিন হইড, কিন্তু পৃথিবীও নিজে ঘুরিতেছে বলিয়া এই ব্যবধান বাড়িয়া ৭৮০ দিন হয়। যধন পৃথিবী সূর্য্য ও মঙ্গলের মাঝখানে হইতে মঙ্গলের দুবন্ধ পুব কমিয়া গিয়া মোটে ৩৪,০০০,০০০ মাইল হয়। মঙ্গল যথন এত কাছে আসে, তথন জ্যোতির্বিদ্গণের

मत्या भूवरे छे शाह छेर्छ । জাগিয়া তাঁহারা বড় বড় দুরবীণ লাগাইয়া মঙ্গলগ্রহকে তর তর করিয়া পরীকা করিতে ব্যস্ত হন। প্ৰতি ১৫ কিংবা ১৭ বৎসর ব্যবধানে এইরূপ ঘটিয়া থাকে ৷ १०० ८०८८ 7958 খুষ্টাব্দে এই স্থােগ घिषा ছिल. ১৯৪১ খুষ্টাব্দে আবার এই সুযোগ আসিবে। সূৰ্য্য যখন পৃথিবী ও মঙ্গলের মধ্যে পড়িয়া যায় তখন মঙ্গল অনেক দুরে সরিয়া যায়, এবং ছই গ্রহের

মঙ্গল ও পৃথিবীর কক্ষ

থাকে, তখন এই ছই গ্রহের মধ্যে দূর্ছ

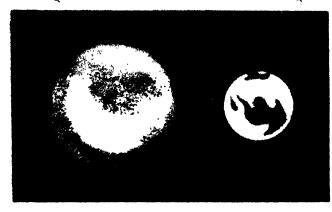
মধ্যে দুরভের ব্যবধান গড়ে ২৩৪,৪০০,০০০

গড়ে ৪৮,৬০০,০০০
মাইল হয়। কথন
কখন এমন হয়
যে মঙ্গল যথন
নিজের কক্ষের যে
স্থানটি সুর্য্যের সব
চেয়ে কাছে,
সেখানে অবস্থান
করে, তথন
গৃথিবী ও সুর্য্য
এবং মঙ্গলের মধ্যে

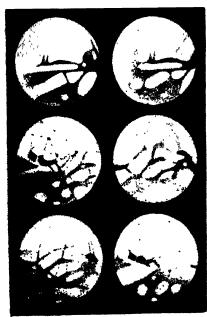
এবং মঙ্গলের মধ্যে পৃথিবী হইতে দূরত্ব হিসাবে মঙ্গলকে বেমন ছোট, মাঝারি ও বড় দেখায় আসিয়া উপস্থিত হয়। এই সময় পৃথিবী মাইল হয়। কোনও কোনও সময়ে মঙ্গল

২৪৯,০০০,০০০ মাইল প্রান্ত ৠদূরে সরিয়া ন-গুণ। যদি একটা প্রকাণ্ড তুলাদণ্ড

যায়, তখন ইহাকে অতি কুদ্র দেখায়। মঙ্গলের বাাস ৪২১৫মাইল মাত্র। পৃথিবী আয়তনে মঙ্গলেব প্রায় সাত গুণ। পুথিবীকে ভাঙিয়া চুরিয়া যত কাদামাটি পাইবে, তাহাতে সাতটা মঙ্গলগ্রহের সমান গোলাকার তৈয়ার পিত করিতে পারিবে।



পুথিবী ও মঞ্চলের আয়তনেব তুলনা কবা হইয়াছে



১৯০৯ খুটাকে মঙ্গল গ্ৰহকে যেমন দেখা শিষাছিল ওজনে পৃথিবী মঙ্গলেব প্ৰায় সওয়া

যোগাড় করিতে পাব এবং তাহার একটি পাল্লায় নয়টা মঙ্গলগ্রহ চাপাইয়া দাও ও অক্সটিতে কেবল পৃথিবীকে রাখ, তাহা হইলে দেখিবে যে, পৃথিবীর দিকের পাল্লাটি অপেক্ষাকৃত বেশী ভারী বলিয়া নানিয়া পড়িয়াছে। পৃথিবীর আকর্ষণশক্তি মঙ্গলের আকর্ষণশক্তিব প্রায় পৌনে তিন গুণ। যে জিনিষের ওজন পৃথিবীতে ১০০ সের, মঙ্গলগ্রহে ভাহা (এখানকার হিসাবে) ৩৮ দেরের মত হাজা বোধ হইবে।

ভোমবা অনেকেই বোধ হয় লাটিম
লইয়া খেলা করিয়াছ। মঙ্গল ও পৃথিবী
লাটিমের মত নিজেদের মেরুদণ্ডের চারেধারে
ঘুরপাক্ খাইতেছে। পৃথিবীর একবার
ঘুরপাক্ খাইতে প্রায় ২০ ঘটা ৫৬ মিনিট
সম্য লাগে। পৃথিবী যদি স্থাকে প্রদক্ষিণ
না করিত এবং কেবল এক নিদিষ্ট স্থানে
থাকিয়া লাটুর মত ঘুরপাক্ খাইত, তাহা
হইলে আমাদেব দিবারাত্রির পরিমাণ ২৩
ঘটা ৫৬ মিনিট হইত। কিস্তু পৃথিবী
স্থাকে পরিভ্রমণ করিতেছে বলিয়াই দিবা-

\*

রাত্রির পরিমাণ একটু বেশী হইয়া ২৪
ঘটা হইয়াছে। মঙ্গলের নিজের মেরুদণ্ডের
চারিপাশে ঘুরপাক্ খাইতে প্রায় ২৪ ঘটা
৩৭ মিনিট লাগে। মঙ্গলও স্থ্যকে প্রদক্ষিণ
করে; সেজন্মই ইহার দিবারাত্রির পরিমাণ
কিছু বেশী হইয়া ২৪ ঘটা ৩৯ মিনিট
হইয়াছে।

মঙ্গলের তুইটি চাঁদ আছে। ১৮৭৭ খুষ্টাব্দে অধ্যাপক আসাফ্হল (Asaph Hall) কোনও এক রাত্রে ওয়াসিংটন (Washington) नगरतत मानमन्तिरत वर्ष मृतवीन मिशा মঙ্গলকে দেখিতেছিলেন। হঠাৎ ভিনি দেখিতে পাইলেন যে, ছুইটি ছোট আলোক-বিন্দু মঙ্গলের চারিদিকে ঘুরিয়া বেড়াই-তেছে। তিনি তৎক্ষণাৎ বৃঝিতে পারিলেন যে, এই ছইটি আলোক-বিন্দু মঙ্গলের ছইটি উপগ্রহ মাত্র। মঙ্গলের ইংরাজী নাম Mars। প্রাচীন রোমান্দের যুদ্ধ-দেবতার নামও Mars ছিল। এই দেবতার ছুই অমুচর ফোবস (Phobos)—ভয় ও ডাইমস (Deimos)—বিপ্লব। মঙ্গলের ছই চাঁদের নাম ফোবস্ ও ডাইমস্ রাথা হইল। মঙ্গলের কেন্দ্র হইতে ফোবস্ ৫৮২৬ মাইল দুরে এবং ডাইমস্ ১৪,৮০০ মাইল দূরে ঘুরিতেছে। মঙ্গলের চারিধারে ঘুরিয়া আসিতে ফোবসের ৭ ঘণ্টা ৪৯ মিনিট লাগে এবং ডাইমসের ৩০ ঘণ্টা ১৮ মিনিট লাগে। ইহা হইতে বোঝা যাইতেছে যে, ফোবসের একমাস প্রায় আট ঘণ্টায় এবং ডাইমসের একমাস প্রায় ৩০ । ঘণ্টায় হয়। মঙ্গলকে একবার প্রদক্ষিণ করিতে ফোবসের মঙ্গলের এক-দিনের প্রায় এক তৃতীয়াংশ সময় লাগে। ফোবসের এই একটি বিশেষত। অস্ত কোনও গ্রহের নিজের মেরুদণ্ডের চারিধারে ঘুরপাক্ খাইতে যত সময় লাগে, তাহার অপেকা উহার উপগ্রহের উহাকে প্রদক্ষিণ করিতে বেশী সময় লাগে। ভোমরা অনেকে বোধ হয়

সুইক্ট্ (Swift) সাহেবের প্রণীত গালিভাবের অমণ-রুত্তান্ত (Gulliver's Travels) নামে একটি গল্পের বই পড়িয়াছ। গালিভার (Laputa) দেশে গিয়া দেখিলেন বে, সেখানকার অধিবাসীরা জ্যোতিষশাল্তে ও সঙ্গীতবিভায় অভিশয় পারদর্শী; অক্সান্ত বিষয়ে তাহারা একেবারে অকর্মণ্য এবং তাহাদের প্রকৃতিও অস্কৃত ছিল। তাহারা সর্ববদাই এই ভয়ে শক্ষিত থাকিত যে, যদি



ডাইমো হইতে মঙ্গলকে যেমন দেখার

পূর্য্য-কলঙ্ক বেশী বাড়িয়া পূর্য্যের তেজ অনেক কমিয়া যায় তাহা হইলে পৃথিবীর কি দশা হইবে। কিংবা যদি কোনও ধৃমকেতৃ পৃথিবীর উপর দিয়া চলিয়া যায় এবং সেজস্ত প্রলয়কাণ্ড উপস্থিত হয়, তাহা হইলে কি করিয়া রক্ষা পাওয়া যাইবে? সেখানে সকাল বেলা তুই বন্ধৃতে দেখা হইলে প্রথম প্রশ্ন এই উঠে যে, পূর্য্যের

অৰস্থা কি প্ৰকার কিংৰা ধূমকেতৃটি কত গালিভার আরও কাছে আসিয়াছে। যে, লাপুটাবাসী জানিতে :পারিলেন জ্যোতির্বিদেরা মঙ্গলের ছুইটি উপগ্রহ আবিষ্কার করিয়াছেন। একটি দশ ঘণ্টায় এবং অপরটি ২১১ ঘণ্টায় মঙ্গলকে পরিভ্রমণ করিতেছে। অবশ্য গালিভারের গল্প উপকথা. কিন্তু ইহা স্বীকার করিতে হইবে যে. সুইফ্ট (Swift) সাহেব মঙ্গলের চাঁদ সম্বন্ধে যে ভবিষ্যদ্বাণী করিয়াছিলেন তাহা অনেক অংশে সফল হইয়াছে। তোমরা ভাবিয়া দেখ-পৃথিবীর যদি ছুই চাঁদ থাকিত তাহা হইলে কি মজাই হইত। ফোবসের আট ঘণ্টা-ব্যাপী একমাস মঙ্গলের সওয়া বার ঘটা ব্যাপী একরাত্রির চেয়েও কম। ইহার বিচিত্র ফল এই ষে, ফোবস্ পশ্চিমে উঠিয়া পূর্বের অস্ত যায়—তোমরা দেখিয়াছ যে, পৃথিবীর চাঁদ পূর্বের উঠিয়া পশ্চিমে অস্ত যায়। আরও আশ্চর্য্য এই যে, ফোবসের অমাবস্তা ও পূর্ণিমা এবং বিবিধ কলা মঙ্গল হইতে প্রত্যেক রাত্রিতেই দেখিতে পাওয়া যায়।

ভাইমদের গতিরও কিছু বিশেষত্ব আছে।
ভোমরা বোধ হয় জান যে, পৃথিবী নিজের
অক্ষের (axis) চারিধারে পশ্চিম হইতে
পূর্ববাধ্য ঘুরপাক্ খাইতেছে বলিয়াই
আমাদের মনে হয় যে, আকাশের নক্ষত্রগুলি
পূর্বে হইতে পশ্চিম ঘাইতেছে। পৃথিবীকে
একবার প্রদক্ষিণ করিতে চাঁদের প্রায়
উনব্রিশ দিন লাগে—ইহা এক দিবসের
অর্থাৎ পৃথিবীর অক্ষ-ভ্রমণ (rotation)
কালের চেয়ে অনেক বেশী সময়। সে জভ্ত
আমরা প্রতিদিন চাঁদকে পূর্ব্বেদিকে উঠিতে
ও পশ্চিমদিকে অন্ত যাইতে দেখি। ভূমি
যদি মঙ্গলে যাও সেখানেও দেখিতে পাইবে
যে, ভারাগুলি পূর্ব্ব হইতে পশ্চিমে
যাইতেছে। ভাইমসের প্রদক্ষিণ কাল

মঙ্গলের অক্ষ-ভ্রমণ কালের অপেক্ষা অৱই অধিক। অবশ্য প্রদক্ষিণ-কালের অধিক বলিয়াই ডাইমস্ পূর্ব্বদিকে উঠিয়া পশ্চিমদিকে অস্ত যায়। কিন্তু এই ছই কালের মাত্রার প্রভেদ অল্প বলিয়াই. প্রতিদিন ডাইমস্কে উঠিতে দেখা যায়না— কয়েকদিন পরে পরে ডাইমস্ পূর্ব্বদিকে উদিত হয়। এখন যদি ডাইমস্ পূর্ব্বদিকে উঠে, তাহা হইলে ১৩২ ঘণ্টা পরে ইহা আবার পূর্ব্বদিকে উঠিবে। তুমি যদি মঙ্গলগ্ৰহে যাও, তাহা হইলে, পৌনে তিন-দিন তুমি অনবরত ডাইমস্কে দেখিতে পাইবে এবং ভাহার পর পৌনে ভিন দিন উহা তোমার দৃষ্টির বাহিরে চলিয়া যাইবে। এই পৌনে ভিনদিনের মধ্যে সে অস্ততঃ তুইবার কলা পরিবর্ত্তন করিবে।

পণ্ডিতেরা অঙ্ক ক্ষিয়া দেখিয়াছেন যে. ফোবসের ব্যাস ১০ মাইল ও ডাইমসের ব্যাস ৫ মাইল মাত্র। ফোবস্ মঙ্গলের থুব কাছে বলিয়াই উহাকে মঙ্গল হইতে একটি ছোট রেকাবীর মত দেখায়। এই রেকাবীর ব্যাস পৃথিবী হইতে চাঁদ যত বড় দেখায় তাহার ব্যাসের তিন ভাগের এক ভাগ মাত্র। মঙ্গল হইতে ফোবস্ খুব কমই উজ্জ্লল দেখায়, পঁচিশটা ফোবস্ একত্র করিলে তবে আমাদের চাঁদের মত উজ্জ্বল দেখাইবে। তোমরা এখন বৃঝিতে পারিতেছ যে, মঙ্গলগ্রহের উপর ফোবসের জ্যোৎসা কতই কম উজ্জল। পূর্ণিমার সময় মঙ্গলের উপর যে জ্যোৎসা পড়ে, তাহা আমাদের দ্বিতীয়ার চাঁদের চেয়ে বেশী উজ্জ্বল নয়। মঙ্গল হইতে ডাইমস্কে ওকের মতন একটি উজ্জ্বল তারার ক্যায় দেখায়। ডাইমস যে জ্যোৎসা দেয় তাহা নগণ্য।

১৬১০ খৃষ্টাব্দে গ্যালিলিও (Galileo) দূরবীন দিয়া সকলের আগে মঙ্গলকে

## শিশু-ভারতী 🙌

দেখিয়াছিলেন। কয়েকদিন ধরিয়া মঙ্গলকে দেখিবার পর তিনি লক্ষা করিলেন যে. চাদের মত মঙ্গলেরও ক্ষয়-বৃদ্ধি হয়, কিন্তু ইহার পরিমাণ অভি অল্ল। মঙ্গলকে কখনও কাস্তের মত সরু কিংবা অর্দ্ধগোলাকার অবস্থায় দেখিতে পাওয়া যায় না। ইহাকে কেবল মুাজ (gibbous) কিংবা গোলাকাৰ অবস্থায় দেখিতে পাওয়া যায়। ক্ষেক বংসর পরে জ্যোতির্কিদ্ হাইগেম্স (Huyghems) মঙ্গলের লাল রঙের পিঠের উপর কতকগুলি সামাস্য কাল দাগ দেখিতে পাইলেন। এইগুলি দেখিয়া তিনি সর্ব-প্রথমে ১৬১৯ খৃষ্টাবে মঙ্গলের ছবি আঁকিলেন। ১৭১৯ খুষ্টাব্দে মারাল্ডি (Maraldi)নামে একজন জ্যোতিধী মঙ্গলের উত্তব ও দক্ষিণ মেরুর উপব শাদা রঙের আববণ দেখিতে পাইলেন। তা ই দেশ শতাকীর শেষভাগে বিখ্যাত জ্যোতির্বিদ হাসেল (Herschel) লক্ষ্য করিলেন যে, মঙ্গলের ঋতু পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে এই সাদা আবরণটির আয়তন কমে ও বাড়ে। ১৮৩০ খৃষ্টাবেদ মঙ্গল পৃথিবীৰ খুৰ নিকটে আসিয়াছিল। সেই সময়ে এই গ্রহটিকে ভাল কবিয়া দেখিয়া লইবাব খুব স্থ্বিধা হইয়াছিল। এই সুযোগ পাইয়া বিয়র (Beer) ও মাডলার (Madler) নামে ছই জ্যোতির্বিদ মঙ্গলের বিস্তারিত মানচিত্র আঁকিতে আরম্ভ করিলেন। গত শতাকীর প্রথম অদ্ধাংশে বৈজ্ঞানিকের৷ বিশ্বাস করিতেন যে. মঙ্গলের উপরিভাগের লাল অংশগুলি "ভূথও" এবং মলিন স্থানগুলি "সাগর"। ইহারা সাগরগুলির পৃথক্ পৃথক্ নাম দিলেন এবং ভূথগুকে বিভিন্ন "মহা-দেশে" বিভক্ত করিয়া তাহাদের নামকরণ করিলেন। পরে অক্যান্য জ্যোতির্বিদের। আরও অনেক উৎকৃষ্ট মানচিত্র তৈয়ার করি-লেন। ১৮৭৭ খুষ্টাবেদ মঙ্গল আবার পৃথিবীর খুব নিকটে আসিয়াছিল। সেই সময়ে ইটালিদেশে মিলান (Milan) মানমন্দিরের অধাক্ষ গিওহ্বানি শিয়াপারেলী (Giovani Schiaparelli) বড় দ্রবীন দিয়া মঙ্গলকে ভাল করিয়া পরীক্ষা করিয়াছিলেন। তিনি দেখিতে পাইলেন যে, কতকগুলি মলিনরেখা মহাদেশগুলির উপর দিয়া আড়া-আড়ি-ভাবে চলিয়া গিয়াছে। তিনি এই বেখাগুলিকে 'খাল' (canali) বলিয়া অবিহিত কবিলেন। অনেকগুলি রেখা দেখিতে 'সরল' বলিয়াই তিনি এইগুলির



গিওহ্বানি শিয়াপারেলী

নাম 'খাল' রাখিয়াছিলেন। এইগুলি যথার্থ জলপূর্ণ থাল কি না, সে বিষয়ে তিনি কোনও অভিমত প্রকাশ করেন নাই। সেই সময়ে অস্তান্ত বৈজ্ঞানিকেরা এই রেখা-গুলিব আবিকারের কথা শুনিয়া অত্যম্ভ বিস্মিত হইলেন এবং অস্তা কেহ এইগুলি দেখিতে না পাওয়ায় অনেকে শিয়াপারেলীর কথা বিশাসই করিলেন না।

<del>----</del>

১৮৭৯ ও ১৮৮১ খৃ: শিয়াপারেলী পুনরায় এই খালগুলি আরও স্পষ্ট করিয়া দেখিতে পাইলেন। তিনি আরও আবিষার করিলেন যে, কোনও কোনও খাল "হু-পুরু" খালের কথা ওনিয়া অক্ষান্ত জ্যোতিবিদেরা স্তম্ভিত হইয়া গেলেন। ছু-পুরু খাল ত' দ্রের কথা, একপুরু খালও তাঁহারা দেখিতে পাইলেন না। অনেকে বলিতে লাগিলেন যে, শিয়াপারেলী নিশ্চয় উন্মাদ হইয়া গিয়াছেন কিংবা কোনও বিষম মোহে



হেন্রী পেরোটন

পড়িয়াছেন। স্থাপেব বিষয়, ১৮৮৮ খৃঃ
ফ্রাফ্সদেশের নিস্ (Nice) নগরে পেরোটিন
(Perrotin) সাহেব ৩০ ইঞ্চ দ্রবীন দিয়া
খালগুলি স্পষ্টরূপে দেখিতে পাইলেন।
কিছুদিন পরে আমেরিকার লিক্ (Lick)
মানমন্দিরের জ্যোতির্বিদেরা ৩৬ ইঞ্চ দ্রবীন
দিয়া এই রেখাগুলি দেখিতে পাইলেন
এবং কোনও কোনও রেখা যে ছ-পুরু,

তাহাও তাঁহারা দেখিলেন। এখন আর খালগুলির অন্তিত্ব সম্বন্ধে কাহারও সন্দেহ রহিল না। শিয়াপারেলীর নামে ধ্রন্থ পড়িয়া গেল। ১৮৯২ খৃঃ অধ্যাপক পিকারিং (Pickering) দেখিতে পাইলেন থে, যে অংশগুলিকে 'সাগর' নামে অভিহিত করা হইয়াছে, তাহাদের উপর দিয়াও কয়েকটি খাল চলিয়া গিয়াছে। ১৮৯৪ খৃঃ আরিজোনা (Arizona)



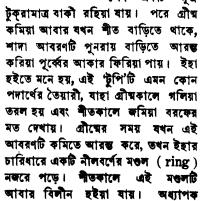
পি, লাওয়েল

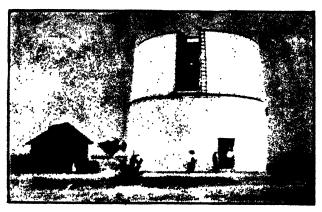
প্রদেশের ফ্লাগষ্টাফ্ (Flagstaff) মানমন্দিরের অধ্যক্ষ লাওয়েল্ (Lowell)
সাহেবও দেখিতে পাইলেন যে, 'সাগর'
সমৃদয় ভেদ করিয়া অনেকগুলি থাল
গিয়াছে। খালগুলিকে স্থায়ী অবস্থায়
দেখিতে পাওয়া যায়। তরল জলের উপর
এইরাপ স্থায়ী দাগ থাকিতে পারে না।
অতএব যে অংশগুলিকে 'সাগর' নাম

দেওয়া হইয়াছে, সেগুলি কোনওক্রমে জলপূর্ণ সাগর হইতে পারে না। লাওয়েল্ (Lowell) সাহেব আরও লক্ষ্য করিলেন যে, এই মলিন অংশগুলির রঙ ও আকার ঋতৃ-পরিবর্জনের সঙ্গে সঙ্গে বদ্লাইয়া যায়। লাওয়েল্ সাহেব মঙ্গলের বিষয় নানার্মপ জ্ঞানলাভ করাই জীবনের একমাত্র বৃত্ত করিয়াছিলেন। এমন একনিষ্ঠ সাধক খ্ব কমই দেখা যায়। মঙ্গল সম্বন্ধে অনেক জ্ঞাতব্য বিষয় লাওয়েল সাহেব লিখিয়াছেন।

ভোমানিগকে পূর্বেই বলিয়াছি বে, উভয় মেরুর উপর শাদা রঙের আবরণ দেখিতে পাওয়া যায়। ভোমাদের মনে প্রশ্ন হইতে পারে যে, এই শাদা আবরণ ছইটী কি পদার্থ। হার্শেল সাহেব সর্বপ্রথমে অহুমান করেন যে, মেরু ছইটির শাদা টুপি" (polar caps) বরকের ভৈয়ারী। কোনও কোনও বৈজ্ঞানিক এই অভিমত প্রকাশ করিয়াছিলেন যে, শাদা আচ্ছাদন ছইটি জমাটবাঁধা কার্ব্বন-ডাই-অক্সাইড্

(carbon dioxide) **এই শাদা** আবরণটি। বরফ, কাৰ্ব্বন -ডাই - অক্যা-ই ড. কি কোনও পদার্থ, এই বিষয়ে কিছু আলো-চনা করা আবশ্যক। শীতকালে টুপিটির আকার বেশ বড হয়। শীত কমিয়া যেমন গ্রীম বাডিতে থাকে, এই টুপিটিও ছোট হইতে থাকে: শেষ একটি





विकारका तमान ना अस्त्रम् मानमन्त्रत

সুষ্য হইতে যে আলোক আসে ভাহা বিশ্লেষণ করিয়া পদার্থবিদের। প্রমাণ করিয়াছেন যে, পৃথিবীতে যে সকল মূল পদার্থ পাওয়া যায়, ভাহার প্রায় সবগুলিই সূর্য্যে আছে। বৈজ্ঞানিকেরা আরও বলেন যে, এককালে গ্রহগুলি সূর্ব্যেরই অংশ ছিল। ইহা যদি সভ্য হয়, ভাহা হইলে পৃথিবী যে যে উপাদানে গঠিত, মঙ্গলেরও সেই সমস্ত উপাদানে গঠিত হওয়াই সম্ভব। কিন্তু কোনও একটি পদার্থ সত্য সভ্যই মঙ্গলে আছে কিনা, ভাহা জানিতে হইলে সভ্য প্রমাণের আবশ্রক।

\*\*\*

পিকারিং (Pickering) পোলারিকোপ্ (Polariscope) বন্ধ দিরা পরীকা করিয়া দেখিয়াছেন যে, এই নীলবর্ণের মণ্ডলটি ইউতে যে আলো আদে, ভাহার কম্পনগুলি এক সমতল ভটেই আবন্ধ থাকে। পদার্থবিৎ মাত্রেইজানেন, কাঁচ কিংবা কোন মন্থণ ভরল পদার্থের সমতল ভট (plane surface) মধ্যে মিলাইয়া বায়। শালা আবরণটি জ্মাট কার্ম্বন-ভাই-অক্সাইড্ইডে পারে না, কারণ পৃথিবীর বায়ুমণ্ডলের বে চাপ, সেই চাপের মধ্যে জ্মাট বাঁধিতে হইলে কার্ম্বন-ভাই-অক্সাইডের ভাপক্রম (temperature)-১১০° সেন্টিগ্রেডের নীচে নামিয়া বাওয়া আবশ্যক। ভাপ যদি আরও কম হয়, ভাহা হইলে

২৩ জুন ১০ জুলাই ১৫ জুলাই ১৯ জুলাই २२ छुनाई ১ অগষ্ট ১২ অগষ্ট ২৩ অগষ্ট ২৮ অগষ্ট ৩ সেপ্টেম্বর ৪ সেপ্টেয়র ৬ সেপ্টেম্বর ২৮ সেপ্টেম্বব ৫ আইেবর ১১ অক্টোবর ১৯ অক্টোবৰ

মকলের দক্ষিণ মেরুপ্রাদেশের তুষাবের আববণ-->১০১ খুটান্দ

দারা প্রতিফলিত (reflected) আলোকের কেবল এই গুণ থাকে। মণ্ডলটি কাঁচ কিংবা অন্থা কোনও কঠিন স্বচ্ছ পদার্থের তৈয়ারী হইতে পারে না, কারণ ঋতু পরিবর্ত্তনের সঙ্গে সঙ্গে কাঁচেব মণ্ডল কমিতে, বাড়িতে কিংবা বিলীন হইতে পারে না। 'মণ্ডল'টি সেজন্থা কোনও তরল পদার্থ দারাই গঠিত হইবে এবং শীতকালে ইহা জমিয়া শাদা টুপিব জমাট বাঁধিবার জন্ম এই পদার্থের ভাপক্রম আরও কম হওয়া দরকার। ভোমরা পরে জানিতে পারিবে যে, মঙ্গলেও বায়ুমগুল আছে। কিন্তু ইহার চাপ পৃথিবীর বায়ুমগুলের চাপের চেয়ে অনেক কম। মঙ্গলের কার্বন-ভাই-অক্সাইভের জমাট বাধিতে হইলে ভাপক্রম—১৫০° সেটিগ্রেডের নীচেনামিয়। যাওয়া দরকার। রাসায়নিকেরা



٠.

পরীক্ষা করিয়া দেখিয়াছেন যে, চাপ যদি
পৃথিবীর বায়ুমগুলের চাপের পাঁচগুণের কম
হয় এবং এই চাপের মধ্যে জমাট কার্ব্বন ডাইঅক্সাইড্ যদি গলিতে আরম্ভ করে, তাহা
হইলে ইহা তরল না হইয়া একেবারে অনিল
(gas) অবস্থায় চলিয়া যায়। এদিকে
অধ্যাপক পিকারিং দেখাইয়াছেন যে,
মঙ্গলের মেরুর শাদা টপিটি গলিয়া কোনও



बशावक है, मि विकातिः

তবল পদার্থে পরিণত হয়। ইহা হইতে প্রমাণ হইতেছে যে, শাদা আবরণটি কার্ফন-ডাই-অক্সাইডে গঠিত নয়।

ৰোধ হয় তোমবা অনেকেই জান যে, শুল্রবর্ণের আলোর মধ্যে নানাবর্ণের আলোক আছে। এমন একটি কাঁচের কলম লও যাহার তিনটি পাশ ও তিনটি শির আছে। সূর্য্যের আলো শাদা, কিন্তু এই আলো যদি কাঁচের কলমের মধ্যে প্রবেশ করিয়া আবার বাহিরে আদে তাহা হইলে উচা তাব শাদা নাথাকিয়া নানাবর্ণে বিভক্ত হট্যা যায়। এই নানারঙের আলো যদি একটি পর্দার উপর গিয়া পড়ে, তাহা হইলে ইহার স্থলর বর্ণজ্ঞটা বা কিরপচিত্র (Spectrum) দেখিতে পাওয়া যায়। এই বর্ণজ্ঞটায় কতকগুলি আঁধার রেখা দেখিতে পাওয়া যায়—যেগুলিকে ফান্-হোফারের (Fraunhofer) রেখা বলা হয়। এই বেখাগুলি পবীক্ষা করিয়া পণ্ডিগুরা বলিতে পারেন যে, সূর্য্যে কোন্কোন্পদার্থ অনিল অবস্থায় আছে। ১৯১৪ খ্বঃ ফ্লাগষ্টাফ্ মানমন্দিরে ডাক্ডাব সুাইফার(Dr. Slipher) মঙ্গলের আলোকরশার কিরণচিত্রের এক ফটোগ্রাফ লইয়াছেন। তিনি বিশেষভাবে



১৯১৮ খুটাকে মন্ধলগ্ৰহকে যেমন দেখা পিয়াছিল গৌনউটচ)

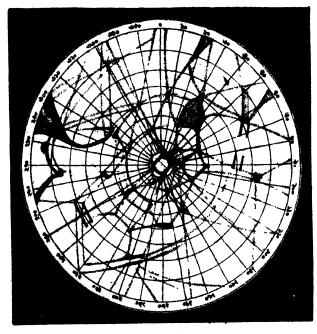
এই কিরণচিত্র পরীক্ষা করিয়া দেখিলেন যে,
মঙ্গলের বায়ুমগুলে জলীয় বাষ্প পাওয়া
যায়। বৈজ্ঞানিকেরা আরও পরীক্ষা করিয়া
দেখিয়াছেন যে, গ্রীপ্রকালে যখন মেরুর
টুপিটি গলিয়া কমিয়া যায় সে সময়ে মেরুর
উপরকার বাতাসে জলীয় বাষ্পের পরিমাণ
অনেক বাড়িয়া যায়। মেরুর শাদা আবরণটি
যে বরফ এবং গ্রীপ্রকালে ইতার চারিধাবে
যে নীলমগুলটি দেখিতে পাওয়া যায়, তাতা
যে ভল, সে বিষয়ে আর কোনও সন্দেহ
থাকিবার কারণ নাই। গ্রীপ্রকালে বরক্ষের

বেশীর ভাগ গলিয়া জল হইয়া যায় এবং কিছু অংশ গলিয়া যাইবার পর বাস্পে হইয়া যায় এবং কিছুক্ষণ পরে আবার উহ। স্পষ্টরূপে ফৃটিয়া উঠে। ইহা হইতে মনে

পরিণত হয়। শীত कारम মেক ব উপরকার বাতাসে জলীয় বাষ্প ঠাণ্ডা হইয়া ও জমিয়া গিয়া মেকুর নিকটবর্ত্তী ভূখণ্ডের উপর বরফ হইয়া পডে এবং সে-জম্মই মেরুর টুপির আকার বাডিয়া যায়। আমরা এখন জানিতে পারিলাম (य. मक्राल खन, বরফ ও বাষ্প তিন বস্তুই আছে।

ভোমা দি গকে পূৰ্ব্বেই বলিয়াছি যে, মঙ্গলেও বায়ু-

আছে। মপ্তল যাউক কি কি কারণে এখন দেখা এই সিদ্ধান্তে উপনীত বৈজ্ঞানিকেরা ক্লোভিব্বিদের। মঙ্গলে তইয়াছেন। "সাদ্ধান্ত্যেতিং"ও (twilight) লক্য করিয়াছেন। মঙ্গলে বায়ুমগুল না থাকিলে সেখানে সাদ্ধ্যক্ষ্যাতিঃ সম্ভব হইত না। বায়ুর ঘনছের জন্য সূর্য্যরশ্মির পথ বায়ু-কণাগুলির দ্বারা প্রতিফলিত হইয়া বাঁকিয়া যায় এবং সেইজকাই সূর্য্যান্তের পরও আমরা কিছুক্ৰণ পৰ্য্যস্ত সাদ্ধ্যজ্যোতি: দেখিতে পাই। এমন প্রায়ই হয় যে. মঙ্গলে কোনও কোনও অংশ এক সময়ে অতি পরিষাররূপে দেখা যাইতেছে, কিন্তু অৱকণ পরে উহা অস্পষ্ট



গ্রীম্মকালে মঙ্গলের উত্তর মেক

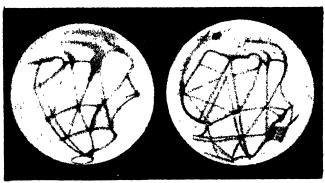
হয় যে, মঙ্গলের এই সকল অংশ যখন
কুয়াসায় আচ্ছন্ন হয়, তখন এইগুলি অস্পষ্ট
হইয়া উঠে। কখনও কখনও দেখা যায় যে,
ভাসমান মেঘখণ্ডগুলি স্থাকিরণে ঝল্মল্
করিতেছে এবং নীচে মঙ্গলের গায়ের উপর
ইহাদের ছায়া পড়িয়াছে। এই ভাসমান
ভ্রুখণ্ডগুলি অনবরত স্থান পরিবর্ত্তন
করিতেছে—সেজজ্ঞ এগুলি মেঘেরই অংশ।
বরকে-ঢাকা উচ্চ পর্বতলিখনও অনেক সময়
স্থ্যিকিরণে ঝল্মল্ করে কিন্তু উহা স্থান
পরিবর্ত্তন করে না এবং একই জায়গায়
স্থায়িভাবে থাকে। বায়ুম্ভল না থাকিলে
কুস্বাটিকারও উদয় হইত না এবং মেঘণ্ডলিও

ভাসিতে পারিত না। গণনা করিয়া দেখা গিরাছে যে, কোনও কোনও সময় মেঘখণ্ড-গুলি মঙ্গলের পিঠ ছইতে প্রায় ২০ মাইল উপরে উড়িয়া বেড়ায়। কখনও কখনও হলুদ রঙের মেঘও দেখিতে পাওয়া যায়। বৈজ্ঞানিকেরা মনে করেন যে,ইহাউড্ডীয়মান বালুকারাশি ছাড়া অশ্র কিছুই নয়।

মঙ্গলে যে বায়ুমণ্ডল আছে, সম্প্রতি তাহার এক উৎকৃষ্ট প্রমাণ পাওয়া গিয়াছে রঙের রশ্মি যাইতে পারে বা কোনটা
দিয়া কেবল বেগুনি বা অস্থ্য কোনও রঙের
আলো যাইতে পারে—এক একটার ভিতর
দিয়া কেবল একপ্রকার রঙের আলোই
প্রবেশ করিতে পারে। ১৯২৪ খঃ
আমেরিকার লিক্-মানমন্দিরের অধ্যাপক
রাইট্ (Wright) মঙ্গলের তুইটি আলোকচিত্র লইবার সময় তু প্রকার রঙের ছাক্নি
ব্যবহার করিয়াছিলেন। এই তুইটির মধ্যে

একটা লাল আলো যাইবার ছাক্ৰি ও অক্সটি বে গুলি যাইবার আলো ছাক্নি। नान्त्रस्थितं আলোকচিত্রে মঙ্গ-লের গায়ের মলিন অংশ ও বেখাগুলি স্পষ্ট দেখা যায়। কিন্তু বেগুনি রশ্মির চিত্ৰে এগুলি কিছুই দেখিতে পাওয়া যায় না. কেবলমাত্র

উভয় 'টুপি' মেরুর বরফের দেখিতে পাওয়া যায়। ইহা ছাডা বেগুনি রশ্মির ফটোগ্রাফে মঙ্গলের ছবি একট वष् प्रथाय। देवक्कानित्कता वरमन त्ये. লালরশ্মির ও বেগুনিরশ্মির ছুই আলোক-চিত্রের মধ্যে এত প্রভেদ থাকাভেই বোঝা যায় যে, মঙ্গলে নিশ্চয় বায়ুমণ্ডল আছে। যে কিরণগুলি মঙ্গলের পায়ে পৃথিবীর দিকে প্রতিফলিত হয় তাহার মধ্যে লাল রশ্মি-গুলি প্রায় সমস্তই মঙ্গলের বায়ুমণ্ডলের ভিতর দিয়া আসিয়া আমাদিগের নিকটে পৌছায়. সে-জক্তই প্রথম আলোকচিত্রে মঙ্গলের গায়ের নানাবিধ দাগ ও মজিন অংশগুলি স্পষ্টই দেখা যায়। কিন্তু বেগুনি রশ্মিগুলির বেশীভাগ পুনরায় র্মঞ্চলের বায়ু-

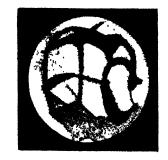


১৮৮৮ খুটাব্দে মঙ্গল গ্ৰহকে বেরূপ দেখা গিয়াছিল

—সে বিষয়ে এখন তোমানিগকে কিছ বলিব। সম্প্রতি কয়েক বংসর হইতে মঙ্গলের আলোকচিত্র (photograph) লওয়া হইতেছে। তোমরা অবশ্য জান যে, মঙ্গলের আলো নাই: সুর্য্যকিরণগুলি মঙ্গলের গায়ে প্রতিফলিত হইয়া আমাদের কাছে পৌছায়, তখন মঙ্গলকে দেখিতে পাই। এক আলোচিত্র লইবার সময়, ক্যামেরার (camera) মুখে পৌছাইবার আগে আলোকরশ্মিগুলিকৈ একরূপ পর্দ্ধার ভিতর **मिया लहेया याख्या हया এই প्रकारक** "রঙের ছাক্নি" (colourfilter) বলা যাইতে পারে। নানারকম ছাক্নি হয়। কোনও ছাক্নি দিয়া কেবল মাত্ৰ লাল















১৯২০ খৃষ্টান্ধে মঞ্চলগ্ৰহকে ষেত্ৰপ দেখা গিয়াছিল।

কণার দ্বারা প্রতিফলিত হইয়া অম্পদিকে চলিয়া যায় এবং মঙ্গলের ভবির আকারটা কিছু বাড়াইয়া দেয়। বৈগুনি রশ্মগুলির অতি অল্প অংশই পৃথিবীতে পৌছায়, সে জন্মই দ্বিতীয় ছবিতে মঙ্গলের পিঠের দাগ-গুলি দেখা যায় না। আমরা এখন নিঃ-সন্দেহে বলিতে পারি যে, মঙ্গলৈ বায়ুমণ্ডল আছে। রাইট সাহেবের মতে মঙ্গলের বায়-মণ্ডল প্রায় ১০০ মাইল উচু। পণ্ডিতেরা গণনা করিয়া দেখিয়াছেন যে, মঙ্গলের বায়-মণ্ডলের চাপ পৃথিবীর বায়ুমণ্ডলের চাপের এক-চতুর্থাংশ কিংবা এক-পঞ্চমাংশ। ১৯২৫ খৃষ্টাব্দে য্যাডামস্ (Adams) ও সেণ্ট জন (St. John) নামে ছই জ্যোতিয়ী মঙ্গলের গায়ে প্রতিফলিত আলোক-রশার বর্ণচ্চটা ভালরপে পরীক্ষা করিয়া বৃঝিতে পারিলেন যে, মঙ্গলের বায়ুমণ্ডলে অমুজানও পাওয়া যায়। নাইটোজেন কিংবা কার্বন-ডাই-অক্সাইড্ গ্যাস এই বায়ুমণ্ডলে আছে কি না. তাহার বিশ্বাসযোগ্য প্রমাণ এখনও পাওয়া যায় নাই।

আগেই বলিয়াছি যে, মঙ্গলের উপরি-ভাগের মলিন অংশগুলি ঋতু পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে বদ্লাইয়া যায়। পণ্ডিতেরা এখন বিশ্বাস করেন যে, এই সকল স্থানে গাছ-পালা জন্মায় এবং সেইজ্ফুই ঋতু পরিবর্ত্তনের সঙ্গে সঙ্গে এই সকল অংশের রঙ ও আকার বদলায়। মেরুর বরফ বখন গলিয়া কম হইয়া যায় সেই সময় নিকটবৰ্জী ছায়াময় অংশগুলি আরও বেশী মলিন হইতে আরম্ভ করে। ক্রমশ: দরবর্তী ছায়াময় অধিক মলিন দেখায়। শরংকাল শেষ হইয়া গেলে এবং শীত আরম্ভ হইলে এই সকল স্থান ফ্যাকাশে হইতে আরম্ভ করে এবং শীত ঋতুর মধ্যভাগে এই সকল জায়গা অনেকটা বিবৰ্ণ ছইয়া যায়।

সাহেব এই মলিন অংশগুলি অনেকদিন ধরিয়া পুর ভাল করিয়া পরীক্ষা করিয়া-ছেন। তিনি লক্ষ্য করিয়াছেন যে, ঋতু পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে এই মলিন অংশগুলি ছই তিন বার রঙ্বদ্লায়। শীতকালে এই স্থানগুলি প্রথমে বাদামী রঙের হয়. হইয়া বি বৰ্ণ যায়। বসস্থকাল আসিলে এই ক্ষেত্রগুলি ঈষৎ হরিৎবর্ণের হয়, এবং গ্রীমের প্রারম্ভে ইহাদের রঙ্ গাঢ় সবুজবর্ণে পরিণত হয়। সাহেব মঙ্গলের মলিন অংশগুলির রঙ পরিবর্ত্তনের এক স্থন্দর কারণ দেখাইয়া-ছেন। তিনি বলেন যে. এই সকল স্থানে শীতকালে গাছের পাতা শুকাইয়া গিয়া বাদামী রঙের হইয়া যায়। যখন এই পাতা**গুলি ঝ**রিয়া পডে. শাখাঞ্চলি বিৰৰ্ণ হইয়া যায়। মেকুর বরফ-গলা সকল ছায়াময় অংশে আসিয়া পৌছায়, তখন সেইখানকার গাছপালাগুলি সতেজ ও সবুজ হইয়া উঠে। স্থইডেনের খ্যাতনামা বৈজ্ঞানিক অধ্যাপক আরহে-নিয়াস ( Arrhenius ) মনে করিতেন যে. মঙ্গলের ছায়াময় অংশগুলি বুক্ষলতা-পরিপূর্ণ খ্যামল ক্ষেত্র নয়। তাঁহার মতে নানাপ্রকার জবণীয় লবণ (Soluble Salts) এই সকল স্থানের মাটির মধ্যে যথেষ্ট পরিমাণে আছে। উপরকার বাতাসে যখন জলীয় কাম্পের পরিমাণ খুব বাড়িয়া যায়, তখন তাহা আর্জ হইয়া উঠে। এই লবণ-গুলি তখন বাতাস হইতে জলের কণা কাডিয়া লয় এবং সেজস্তুই মাটি ভিজিয়া গিয়া আরও মলিন দেখায়। কিছু যখন উপরকার বাডাসে বাস্পের পরিমাণ পুব কম হইয়া যায়, তখন শুষ্ক বাতাস জলের কণাগুলিকে আবার ফিরাইয়া লয়। সেই-জ্ঞ মাটি ওকাইয়া গিয়া পুনরায় বিবর্ণ হইয়া যায়। আর্হেনিয়াস্ সাহেবের
অন্নান ঠিক্ বলিয়া মনে হয় না। ঋত্
বদ্লাইবার সঙ্গে সঙ্গে এই ছায়াময় স্থানগুলি বিভিন্নবর্ণের হয়—কখন ঈষং হরিৎ,
কখন বাদামী, আবার কখনও বা গাঢ়
সব্জ বর্ণের হয়। আর্হেনিয়াস্ সাহেবের
অন্নান সত্য হইলে ইহা কখনও সম্ভব
হইত না। আধুনিক জ্যোতির্বিদেরা
এই মতের অন্নাদন করেন না।

মঙ্গলের গায়ের পাঁচভাগের তিনভাগের রঙ্জনেকটা কমলা লেবুর ন্যায়। ঋতু-পরিবর্ত্তনের সঙ্গে সঙ্গে এই অংশগুলির রঙ্বদ্লায় না। পণ্ডিতেরা মনে করেন যে, এই স্থানগুলি বালুকাপুর্ণ মরুভূমি।

মঙ্গলের গায়ের তাপ কিরূপে মাপিতে পারা যায়, এখন সেবিষয়ে কিছু বলিব। থাকোঁকাপল (Thermo-couple) নামে অতি সুক্ষয়ন্ত দাবাই গ্রহণ্ডলির তাপ মাপিতে পারা যায়। অতি ক্ষুত্র এক ধাতৃ-খণ্ডকে প্রদীপের ভূসা দিয়া কালো করিয়া ইহার সঙ্গে বিভিন্ন মিশ্রধাতুর (alloy) তুইটি তার লাগাইয়া দাও। তার তুইটির অন্য প্রাস্ত একটি সৃক্ষ গ্যালভ্যানো-মিটারের (Galvanometer) সঙ্গে যুক্ত কবিয়া দাও। ভোমরা কেহ কেহ বোধ হয় জান যে, গ্যালভ্যানোমিটার যন্ত্রদারা তড়িৎ-ধারা (electric current) মাপিতে পারা যায়। কোন গ্রহের যদি কোন অংশের তাপ মাপিতে হয়, তাহা হইলে সেই অংশ হটতে যে কিরণগুলি আসিতেছে, সে-গুলি এই কালো ধাতৃখণ্ডের উপর ফেল। এই কিরণগুলিতে যে তাপ আছে, তাহা এই ধাতৃথগুকে অল গরম করিয়া দিবে. এবং সেইজন্য এই তার ছইটিতে ক্ষীণ ভডিৎধাবা সঞ্চারিত হইবে। গ্যালভ্যানো-মিটারের সাহায্যে এই ক্ষীণ ভডিৎধারার পরিমাণ বঝিতে পারা যায়। এই তডিৎ

ধারার পরিমাণ হইতে গণনা দ্বারা যে অংশ হইতে আলোক কিরণ আসিতেছে ভাহার তাপক্রম সহজেই বাহির করিতে পারা যায়। আমেরিকার বুরো অব্ত্রাণ্ডার্ড সের(Bureau of Standards) অধ্যক্ষ ভাস্তার কব্লেন্টস (Coblentz) সম্প্রতি এক ক্ষুত্র ও অতি সুক্ষ থার্ম্মোকাপল নির্মাণ করিয়াছেন. যাহার ব্যাস মোটে इके ইঞ্। এই যন্ত্রের সাহাযো অতি সহজেই মঙ্গলের বিভিন্ন অংশেব তাপ মাপিতে পারা যায়। সম্প্রতি ডা: কবলেন্টস্ ও লাওয়েল মানমন্দিরের ডা: ল্যাম্পল্যাও (Lampland) বিভিন্ন ঋতুতে মঙ্গলের অংশগুলির তাপ মাপিয়াছেন। **গ্রীম্মে**র মধ্যাকে দক্ষিণ মেরুপ্রদেশের তাপক্রম ১৫° হইতে ৫০° ফারনহাইট্ (Fahrnheit) পর্যান্ত হয়। দক্ষিণ-শীডোঞ মণ্ডলে(South Temperate Zone) গ্রীম্মের দ্বিপ্রহরে তাপক্রম ৬০° হইতে ৭৫° ফারন হাইট হয়। গ্রীম-মগুলে (Tropics) তাপক্রম ৬৫° হইতে ৮০° ফারনহাইট প্রয়ন্ত উঠে। উত্তর-শীতোক্ষমগুলে(North Temperate Zone) এই সময়ে শীতকাল এবং শীতকালেও মধ্যাক সময়ে এই প্রদেশের তাপক্রম ৩০° হইতে ৬০° পর্যান্ত উঠে। উত্তর মেরুপ্রদেশে এই সময়ে শীতকাল; সেখানে দ্বিপ্রহর বেলায় তাপক্রম -- 80° হইতে -- ১০° ফারনহাইট পর্যান্ত হয়। রাত্রিকালে মঙ্গলে প্রায় মেঘের উদয় হয়। সে-জনা বালিতে তাপক্রম যভটা কমিয়া যাইবার কথা, ভভটা কমিতে পারে না। মেঘ না থাকিলে রাত্রিকালে মঙ্গলের উপরিভাগ আরও অনেক বেশী ঠাণ্ডা হইয়া যাইত। ১৯২৪ ও ১৯২৫ थः मक्रल यथन অन्तिक निकर्ण वानियाहिन, ডাঃ কব্লেন্টস্ তখন ইহার বিবিধ অংশের তাপক্রম মাপিবার স্থবিধা পাইয়াছিলেন। তিনি আশা করেন যে, মঙ্গল আবার যথন খুব নিকটে আসিবে, তখন তিনি আরও

\*\*\*\*\*

ভাল করিয়া মঙ্গলের নানাস্থানের তাপক্রম মাপিতে পারিবেন। কয়েক বংসর ধরিয়া বৈজ্ঞানিকেরা এক বিষম ধাঁধাঁয় পডিয়া-গ্রীমকালে মঙ্গলের মক্ষতিত বরফ গলিতে আরম্ভ করিলে ইহার যাহা তাপক্রম হওয়া উচিত, বৈজ্ঞানিকেরা গণনা করিয়া ভাহার চেয়ে অনেক কম ভাপক্রম পাইতে লাগিলেন। কোথায় যে ভুল হইতেছে,তাহা তাঁহারা বছদিন পর্যান্ত ধরিতে পারিলেন না। অবশেষে ডাঃ কব্লেণ্টস্ ভলট। ধরিয়া স্থলর মীমাংসা করিয়া দিয়াছেন। মেরুস্থিত বরফথণ্ডের রশ্মি-বিকিরণ শক্তি (Radiation) অল্প বলিয়াই সেখান হইতে যে কিরণগুলি আমাদের নিকট পৌছায়, তাহাদের সংখ্যা অনেক কমিয়। যায়। সেজন্যই পূর্ব্বেকার গণনামুসারে ভাপক্রম অনেক কম বলিয়াই বোধ হয়। ডা: কব্লেণ্টস এই গণনার সংশোধন করিয়া মেরুপ্রদেশের তাপক্রমের যে মাপ দিয়াছেন ভাহা ঠিক বলিয়াই মনে হয়। আগেই লিখিয়াছি যে, ডাঃ কব্লেন্টসের মতে মেক-প্রদেশে গ্রীমকালের দ্বিপ্রহরবেলায় তাপক্রম ১৫° হইতে ৫০° ফারনহাইট পর্যান্ত উঠে এবং শীভকালে মধ্যাকে—১০° হইতে— ৪০° ফারনহাইট পর্য্যস্ত নামে। কয়েক বংসর পূর্বের জ্যোতিবিরদেরা মঙ্গলকে যত ঠাণ্ডা মনে করিতেন, এখনকার বৈজ্ঞানিকদের মতে ভাহার চেয়ে মঙ্গল যথেষ্ট বেশী গরম। আমরা এখন জানিতে পারিলাম যে. मक्राल वाग्रमश्रम, जल, वत्रक, जलीग्र वान्त्र,

অমুজান উদ্ভিদ ইত্যাদি আছে। আধুনিক

বৈজ্ঞানিকদের পরীক্ষার ফলে ইহাও জানা গিরাছে যে, মঙ্গলের ভাপক্রম (Temperature) জীবজন্তর বাসের উপবোগী। মেখ, কুয়াশা ও বায়ুমণ্ডলে জলীয় বালা আছে বলিয়াই মঙ্গলের উপরিভাগ বেশী ঠাণ্ডা হইতে পারে না। আগেই বলিয়াছি যে, মঙ্গলের বায়ুমগুলের চাপ পৃথিবীর বায়ুমণ্ডলের চাপের পাঁচ ভাগের এক ভাগ। মঙ্গলের উপরিতলে তাপক্রম বধন ৬০° সেটিগ্রেড হয় তখন জল ফুটিয়া বাষ্প হইয়া উড়িয়া যায়। আমেরিকার আতেস্(Andes) পর্বতের উপর এবং হিমালয় ও ভিকতের এমন স্থলে মাতুষ বাস করে, বায়ুর-চাপ অর্দ্ধেক হইয়া যায়। মানুষও বেলুনে এভ উচ্চে উঠিয়াছে যে, সেখানকার বায়ুর চাপ নীচেকার চাপের তিনভাগের একভাগ মাত্র। ইহা এমন কিছু আশ্চর্যোর কথা নয় যে, কোন কোন জীব স্বভাবগুণে এমন স্থানেও থাকিতে পারে. যেখানকার বায়ুর চাপ আমাদের বায়ুমণ্ডলের চাপের এক-চতুর্থাংশ কি এক-পঞ্চমাংশ। সন্দেহ নাই যে মঙ্গলের বর্তমান অবস্থা व्यत्नकारम कोरक इत्तर वात्मत छेशरयाती। কিন্তু সেধানে কোনও প্রাণী সভাসভাই বাস করে কি না, তাহার অকাট্য প্রমাণ এখনও পাওয়া যায় নাই। মঙ্গলে কার্ব্বন-ডাই-অক্সাইড গ্যাস আছে কি না, ভাহারও স্পাষ্ট প্রমাণ পাওয়া যায় নাই। উদ্ভিদের বাঁচিবার জন্ম এই গ্যাসটির বিশেষ আবশ্যক। মঙ্গলে যখন গাছপালা জন্মায়, তখন মনে হয়, মঙ্গলে এই গ্যাস্টিও পাওয়া যায়।



# চীনের অর্দ্ধমানব

ভোমবা মাস্থ্যেব পূর্ব্ব-পুরুষেব কথা শুনিয়াছ। এপন ভোমাদিগকে চীনেব অদ্ধ মানবেব কথা বলিব। মাসুষের

পূর্ব্বপুরুষের কথাগুলি আর একবার মনে করিয়া লওয়া যাক। মাহুষ বড হইয়াছে বৃদ্ধির বলে। বৃদ্ধির বিকাশেব জায়গা মাথাব মগক্ষের পরিপুষ্টিতে। স্ত্রাং মগজ যত বাড়িয়াছে ও পাক খাইয়াছে. তত্ই মাহুষের বৃদ্ধি বাডিয়াছে। যভই দেখিবার ও শুনিবাব শক্তি বড়িয়াছে, মগজ্ঞ আবাব সেই সঙ্গে বাড়িয়া চলিয়াছে। ইহার মধো প্রথমে অহুভব করিবার ও অঙ্গ চালনা করিবাব ক্ষেত্র বড হইয়াছে, ভারপর বাড়িয়াছে সাম্ঞ্জ ক্ষেত্র। গাছ-পালার কোনও নড়িবার শক্তি বিশেষ নাই-- দুওহান প্রাণীর নড়া-চড়া থুবই সীমাব মধ্যে , মাছ প্রভৃতি জীবের চলা-ফেরার জন্ম মগজের ছাণের অংশই বেশী ছিল। ভেক-সরীস্পাদি জীবেব বক্ত ঠাণ্ডা বলিয়া ভাহাদিগকে শীভের সময়ে নিম্র কাটাইভে হয়। তাই গ্রম-রক্তবিশিষ্ট প্রাণীর উদ্ভব হইল। তারপর আবার গাছে উঠার সঙ্গে সঙ্গে দৃষ্টি ও শ্রবণ শক্তির আধিকা আসিল ত্রবং মগজের অগ্র-ললাটের কুগুলী বেশ পাক খাইল। ক্রমশ: দেখা দিল বনমাত্রণ, তারপব আধামাত্রষ, স্বশেষে মাত্র্য। ধাপে ধাপে ব্রহ্মরন্ধ বাড়িয়া চলিয়াছে. সামগ্রস্থ্য ক্ষেত্র বড় হইয়াছে, সঙ্গে সংখ সাবা ব্রহ্মরন্দ টা পাকে ভত্তি হইয়াছে ও ওজনে বাডিয়াছে। ফলে দাঁড়াইয়াছে যে, মাথার খুলি উচতে, লম্বায়,

চওড়ায় বেশ বাড়িয়া গিয়াছে। এই নৰম আয়তন সাঙাৰ কমেৰটা ধাপ জামবা প্ৰধানতঃ তিনটা আধামালুগে প্ৰিয়াছি.

যথা, চীনের অর্ধ-মানব, যবছীপের ক্পিমান্স ও ইংল্ডের পিন্টভাউন গ্রামের উয়ামান্ব।

এই সব আবিদ্বারের কলে আমাদের জীব শ্রেণী-বিভাগ পাশ্চাভা বৈজ্ঞানিকগণ এই কবিয়াছেন। জবায়জ (mammal)-বর্গে একটি বংশ শ্রেষ্ঠ (Primate) , তার মধ্যে স্থানে হইয়াছে টাশিয়াস, নতন ও পুৰাতন পৃথিবীৰ বনেৱাদি গিবন, বনমান্ত্র ও মানবগোলীর। এই মান্ত্র-গেষ্ঠাৰ (Hominidal) মধ্যে ক্যেকটা ভিন্ন ভোগ (Species) ও ভিন্ন গণ (Genus) বিভাগ কলঃ হুইয়াছে। এখন প্ৰিবীকে যত বক্ষেৰ মান্ত্ৰ আতে —িক খেতকায় ইউবে,পীয়, কি ক্রমকায় নিজে: কি লোহিতবাম চানবাদী সকলেই এব লোমা এক গণ ও এক শ্রেণাভুক্ত। তাহাদের পার্থক্য বৰ্ণ (race)-গভ ঘাত্ৰ, কিন্তু ২০।২৫ হাজাৰ বছৰ আগেকার মান্ত্র স্পর্ণ আলাদ। রক্ষের ছিল। ভাষাদের পাথকা এখনকার মান্তব্যের মধ্যে পাথকোর চেয়ে **অনেক বেশী ছিল। 'গনেকটা যেমন বিভ্**লে ব্যাদ্র ও সিংহেবসধ্যে শ্রেণী বা (Species)-এই প্রত্নেদ আছে। কিন্দু গণ এক Pelis, সেইভাবের। গারেও আবেকাৰ যে আধাম,ভুষদেৰ কথা বলিলাম, তাহাদের সঙ্গে প্রভেদ আনেক বেশী—গ্রিও এক গোষ্ঠীৰ মধ্যে, ভথাপি আহাদেব গুণালা Genns

\*\*\*

ভফাৎ। এই ব্যাপারটি এইভাবে তোমরা ব্রিভে. চেষ্টা কর, তাহা ইইলে সহজ হইবে। মাসে ভাক্তার বলিন (Dr. Bohlin) নীচের চোয়ালের একটা দাঁভ পান। এইটা দেখিয়াই

### মানবগোষ্ঠা (Hominidal)

শ্ৰেণী গণ मानव (Homo) (क) वृक्तिकीरी (Sapiens) খেত (ইউরোপীয়, আর্য্য, আরব প্রভৃতি স্থানে ) পীত (চীন, জাপান ও মালয় উপদ্বীপে ) কৃষ্ণ (আফ্রিকা প্রস্তৃতি স্থানে) ( খ ) কোম্যাগনন্ প্রভৃতি বিশ হাজাব বছর পূর্বে। (গ) নিয়াভারটাল (প্রায়মানব) চল্লিশ হাজার বৎসর পর্বে। (ঘ) রোভেশীয (ঙ) ছাইডেলবার্গ পঞ্চাশ হাজার (চ) ওয়াজাক, টালগাই প্রভৃতি বিশ হাজাব ২। উধামানৰ (Zonnthropus) ভূমন প্রাপ্ত (Dawsoni) পঞ্চাশ হাজার বা লকাধিক বৎসর পর্বের। ৩। কপিমানব (Pithecanthropus) ঋজু (erectus) २। १ नक्षाधिक वश्मत्र शुर्वत । ৪। চীনের অর্দ্ধমানব (Sinanthropus)

স্থামর। প্রথমে শেষটা দিয়া আরম্ভ করিব। ১৯২০ দালে স্থইডেনের ভবিজ্ঞানবিৎ ডাক্তার ক্ষে

পিকিং মাস্তব্যের দাঁত

জি. এণ্ডারদন (Dr. Andersson) প্ৰথমে পিকিঙ সহরের মাত্র ৩৭ মাইল দুবে চকুভিয়া (Choukowtien) নামক গ্রামে প্রায়াধুনিক বা Pleistocene মুগের প্রথম ভাগের নানা পাথরের হাত বা প্রশীল 9171 ১৯২৬ সালে তাঁহাং হ সহক্ষা জার্মানীর ডাক্তার ক্লেডিনিঞ্চি (Dr. Zdansky) ছুইটি

পুরান্তন মামুষের দাঁত পান। পর বংসর অক্টোবর

পিকিঙ মেডিক্যাল কলেজেব অধ্যক্ষ সাবান্ত করেন বে, এই দাঁত কোনও প্রাচীন আধামায়ুগের ও তিনি ভাহার নামকরণ কবেন Sinanthropus বা চীনেব অন্ধ্যানবী ১৯২৮ সালে নিয়



কপিমানবের মাথার খুলি চিবুকের কিছু ও আরও চারিটি দাঁতে পাওয়া যায়। সঙ্গে সঙ্গে মাথার খুলির উপরিভাগেরও

\*-

কিছু পাওয়। যায়। ১৯২৯ সালের ডিসেম্বর মাসে সৌভাগাক্রমে এই আধামান্তবেয় প্রায় সমস্তটা মাধাব হাত পাওয়া গিয়াছে।



চানের অদ্ধ্যানবের মাথার খুলি

আগেই বল। হইয়াছে যে, মগজ যতই বাড়িয়াছে ততই মাধার খুলি বড় হইয়াছে। এই চীনের আধামাছ্যটির মাথার খুলি ও করোটির অন্ত সব ভাগ কতকটা বেশ এখনকার মাজুযের মত। লম্বায়



পিকিং মাস্থ্যের মাথার খুলির উপরের অংশ
১৯০ মিলিমিটর ও চওড়ায় ১০০ মিলিমিটর,
আধুনিক মাস্থ্যের করোটির সঙ্গে ইহার প্রায় মিল
আহি। কিন্তু মাথার তালু ডড় উচ্চ নয়—
আধুনিক মাস্থ্যে, উহা প্রায় ১১০ মিলিমিটর, ইহাতে

মাত্র ৭৬ মিলিমিটর। কিন্তু যবন্ধীপের কপিমানবের তুলনায় ইহার মাধার তালুর উচ্চতা ২ মিলিমিটব বেলী। মগজের পরিমাণটা দেখিলে কেন ইহাকে আধামাক্স্য বলিতেছি, বুঝা যাইবে। গিবন বা



কপি মানবের মাথার থুলি

উন্ত্ৰণতীয় অন্তদের মগজের পরিমাণ ৮০ হইতে ১৫০, বনমাত্বদের ২০০ হইতে ৬৫০, আধুনিক মানবে ইহা ১০০০ হইতে ১৯৫০ ঘন সেটিমিটর। কিন্তু যবন্ধীপের কপিমানবে ইহাব পবিমাণ ঠিক



রোডেশিয়ান

মাঝামাঝি প্রায় ৮০০ হইতে ২০০ ও চীনের আর্ধনমানবে তাহা অপেক্ষা কিছু বেশী—প্রায় ১০০০ ঘন সেন্টিমিটর। ইংলণ্ডের উয়ামানবের মগজের পরিমাণ কিছু অনেক বেশী; তবে তাহার চিবুক ও চোয়াল একেবারে বনমান্তবের মত, তাই তাহাকেও আধামান্তব বলিয়া ধরা বায়।

আরও অনেক বিধয়ে এই চীনের আধামায়ব ক্পিমানবের মড। বনমায়বে প্রায়ই দেখা যায় **米-**-

বে, জর উপরের উচু জায়গা একটানা ও খ্ব উচু 

ক্রপথি তাদের জ্রুক্ক বা suprorbital ridge

ক্রাছে। এটা প্রায়মানবে বা নিয়াণ্ডারটালে ও কপিমানবে এতদিন ধরা পড়িয়াছিল। উবামানবে ইহা
মোটেও নাই কিন্ত চীনের ক্রমানবে ইহা বেশ

ক্রাছে। ইহার প্রক্রের পরিমাণ ১০৯, কপিমানবে

প্রায় ১০৬, নিয়াণ্ডারটাল প্রায়মানবে ১১৯ ও

রোডেশীয় মানবে ১২৯ মিলিমিটর।



পিথেনপ্রোপাস মাত্র

উপর হইতে মাথার খুলি ও করোটি দেখিলে ছইপাশে গগুমুলে চিহুস্থানের (temporal lines) দূবত। বর্ত্তমান মাহুবে দেখা যায় ৯৮, নিয়াপ্তারটাল প্রায়মানবে ১০০, চীনের অর্দ্ধমানবে ৮০ ও কপি-

মানবে ৮৪ মিলিমিটর। এই হিসাবে চীন ও যব-বীপের আধামায়ুষ ছুটি খুব কাছাকাছি বোধ হয়।

পশ্চাৎ ইইভে দেখিলে এই অর্জমানবে কভক-গুলি বানরের মত লক্ষণও দেখা যায়। যেখানে গ্রীবাদেশে মন্তিকে যুক্ত হয় ভাহার পরিসর ইহাতে প্রায় ১৪৫ মিলিমিটর। করোটির পৃঠান্থি বা Occipital bone প্রস্থেত মেলিমিটর, কিছ ধর্মাকৃতি—গ্রীবাসংযোগ স্থলের উপরিভাগ উহার ে মিলিমিটর—কপিমানব অপেক্ষা ২০ মিলিমিটর কম। করোটির পার্যান্থি বা parictal bone ইইভেও দেখা যায় যে, উপরের দিকে সক্ষ্চিত। বর্তমান মান্তবে এই পার্যান্থি বেশী প্রসারিত ও পৃঠান্ধি প্রশ্নে আর্জমানব ও কপিমানব ভূইটিই প্রায় এক রক্মের—আর্জমানব ও কপিমানব ভূইটিই প্রায় এক রক্মের—আর্ধমানব ও কপিমানব ভূইটিই প্রায় এক রক্মের—আর্ধমান্থ্য ও বর্তমান মান্তবে হুইতে ভিন্ন।

চোয়ালের নিমাংশ ও দস্ত কয়েকটি দেখিলে আমরা বৃঝিতে পারি যে, এই সব অংশ এই আধানায়হে অনেকটা বর্জমান মাছহের মত; অস্ততঃ উনামানব ও হাইভেলবার্গ মানব অপেক্ষা উন্নত। এই আধানায়হের চোয়াল ও চিবৃক্ও মাঝামাঝিরকনের। বনমাছবের এই চিবৃহের লেশমাজ নাই; হাইভেলবার্গ ও উবামানবের চিবৃক প্রায় তাহা-দেরই মত। চীনের অর্জনানবের অল্প চিবৃক আছে। ভিতরের দিকে কিন্তু চিবৃক খাদ বা genial pit প্রায় বনমাছ্যদের মতই আছে।





# ফুলের ফসল

ভোমরা সকলেই ফুল ভালবাস কাবণ, ফুল দেখিতে স্থলর; শুধু কি ডাই । না, ডাহা নয়। কাবণ, পদ্মালায় ডোমরা সকলেই পড়িয়াছ থে, মতি যথন তাহার পিতাকে বলিল, সব ফুলের চেয়ে রালা পলাশ ফুল ভাল, তথন তাহার পিতা তাহাকে ব্রাইয়া দিলেন যে, ফুলের প্রকৃত শুণ ভারার ফুলের গদ্ধ। কিন্তু ডোমরা বোধ হয়, অনেকেই লক্ষ্য করিয়াছ যে, পোলাপ ফুল ভিন্ন অধিকাংশ স্থান্ত ভূলের রং শাদা এবং দেখিতে ডভ ভাল নয়। তাহা হইলে ব্রিভে পারা বাদ্ধ যে, ফুলের গদ্ধের সহিত তাহার রক্ষের ও চেহারার বিশেষ কোন সম্বদ্ধ নাই। গাছ হইতে তুলিবার পর প্রায় সকল ফুলেই অনেকক্ষণ প্র্যান্ত গদ্ধ থাকে। এমন কি, ফুল শুকাইয়া গেলেও অনেক সমন্ত্ ভাহার গদ্ধ একেবারে উড়িয়া যায় না।

ভোমাদের অনেকেরই হয়ত ধারণা থে, গন্ধ
তথু ক্লেই থাকে, কিন্তু তা নয়। এমন অনেক
গাছ আছে বাহার পাতায়, কচি ভালে, এমন কি,
তক কাঠে পর্যন্ত হুগন্ধ পাওয়া যায়। তুলসীয়
পাতায় ও কচি ভালে বেশ হুলর গন্ধ, দাকচিনির
গন্ধ তাহার গাছের ছালে, চলনের গন্ধ তাহার
কাঠে, থসখসের গন্ধ তাহার শিক্তে, লের ও
কমলার গন্ধ তাহার ফলে, ন্মিরে, মৌরী ইত্যাদির
গন্ধ ভাহার বীজে এবং ধুপ ও ধুনার পন্ধ গাছের
আঠায়। ইহাও দেখা গিয়াছে বে, প্রার্গ সকল
প্রকার ফ্ল ইত্যাদির গন্ধ দেশ ও আব্হাওয়ার
উপর অনেকটা নির্ভর করে।

এখন তাহা হইলে তোমরা জ্ঞাসা করিতে পার যে, গদ্ধ কি জিনিব এবং কেন হয় ? "গদ্ধ কি জিনিব" তাহা বোধ হয় কতকটা বলিতে পারা যায়। কিন্তু কেন হয়, ইহা বলা বড়ই কঠিন। বৈজ্ঞানিকেরা ইহা লইয়া অনেক গবেষণা করিয়াছেন, কিন্তু বিশেষ কিছুই দ্বির করিতে পারেন নাই।

ভোমনা বোধ হয় জানিতে চাও বে, ফুলের ভিতর হইডে তাহার গন্ধ বাহির করিতে পারা যায় কি না ? হাঁ, তাহা পারা যায় ও সকল প্রকার ক্ষান্ধ কুল ইত্যাদি হইতে তাহার গন্ধ পদার্থ বাহির করা হইয়াছে। অধিকাংশ গন্ধ পদার্থ দেখিতে তেলের মত কিন্ধ প্রভেদ এই যে, গন্ধ তেল গরম বাম্পের সহিত উড়িয়া বাহির হইয়া ঘাইতে পাবে এবং সাধারণ তেল যেমন—তিল, নারিকেল, সরিবা ইত্যাদি, তাহা পাবে না। এইজন্ত গন্ধ-তেলকে 'আতর' (essential oil) বা (Volatile oil) ও সাধারণ তেলকে স্থায়ী (fixed oil) কহে।

ফুল, ফল ইত্যাদিতে এই গন্ধ-তেলের পরিমাণ অতিশয় সামার্গ্র, কিন্তু আতরের গন্ধ এত তীত্র বে, কুল পরিমাণে থাকা সন্বেও তাহা বেশ পাওয়া বায়।

ভোমরা হয়ত শুনিরা আশ্চর্য্য হইবে যে, প্রার ৪০০০ গোলাপ ফুল হইতে এক ফোটা আভর পাওয়া বায় কিংবা একমণ বসবস ঘাস হইতে বড় স্থোর তিন ছটাক আতর বাহির হয়।

### গন্ধ পদার্থ বাহির করিবার উপায়

গদ্ধ পদার্থ বাহির করিবার উপায় মোটের উপর তিন প্রকার, যথা—(১) বাম্প দারা, (২) হাত বা যন্ত্র দারা চাপ দিয়া এবং (৩) কে'ন তরল পদার্থের ভিডর তুরাইয়া রাখিয়া। এই তিন উপারের ভিতর বাম্পের সাহায়ে বাহির করাই পুরাতন প্রথা ও অধিকাংশ ক্ষেত্রেই এই উপায় ব্যবহৃত হইয়া থাকে। (১) যথন ফুল ইত্যাদি কোন পারের ভিতর রাখিয়া জলের সহিত সিদ্ধ করা হয়, তথন ফুল হইতে আতর বাহির ইইয়া জলীয় বাম্পের সহিত মিশিয়া যায়। পরে যথন এই

লাগে তাহাও সহজ্ঞ উপায়ে চালান যাইতে পারে।
এইজন্ম আমাদের দেশে অধিকাংশ ক্ষেত্রেই এই
উপায় অবলঘন করা হয়। একটি তাত্র বা লোই
পাত্রে ফুল বা ঘাস ভরিয়া তাহাতে থানিক ক্ষল
ঢালিয়া দিয়া উনানের উপর চড়াইয়া দেওয়া হয়।
উনানে আঁচ অক্ল রাখা হয়। পাত্রের মূথের উপর
এমন এক ঢ:ক্না থাকে য'হাতে কেবলমাত্র একটি
ছিল্ল আছে। এই ছিল্ল হইতে একটি নাঠের বা
তামার নল বাহির করিয়া অপর একটি নলের সহিত
যোগ করিয়া দেওয়া হয়, এই ছিতীয় নলটি
বেশ লঘা ও একটি জলের চৌবাচ্চার ভিতর
রাখিয়া সর্বদ। ঠাঙা করা হয়! নলের ভ্রপর

ম্ধের নীচে এফটি পাতা রাখিয়া নলের ভিতর হইতে যাহা বাহির হয় তাহা সংগ্রহ করা হয়।

বলা বাহুল্য যে,
এই উপায়ে আতর
বাহির করিতে হইলে
থব সাবধানে কাজ
করিতে হয়। কারণ,
যদি কোন সময়
আগুনের উত্তাপ বেশী
হয় ভাহা হইলে
আতরে একরূপ
পোড়াগন্ধ আসে এবং
সেই আতরের মূল্য
আন্দেক কমিয়া যায়।

ইহা ছাড়া আরও
অক্সান্ত কারণের জন্ম আধুনিক কারধানায় জ্বলীয়
বাষ্প ফুলের পাত্র হইতে অন্তত্ত উৎপাদন করিয়া
(steam boiler) পরে ফুলের ভিতর দেওয়া
হয়। অনেক সময় ইহা ব্যতীত ফুলের পাত্রটি
আর একটি পাত্রের ভিতর বসান থাকে।
এই দ্বিতীয় পাত্রের ভিতর দিয়া বাষ্পাধার হইতে
বাষ্প আনাইয়া ফুলের পাত্রটি গরম রাথা হয়।
এইরূপ উপায় অবলম্বিত হইলে ফুল কোন ক্রমেই

ষ্মধিক মাত্রার গরম হইরা পুড়িতে পারে না। কেবলমাত্র লেবুর খোসার গন্ধতেল চাপ প্রধালীতে বাহির কর। হয়। তোমরা হয়ত



চোয়াইয়া ফুল হইতে আতর বাহির করা হইতেছে

মিশ্রিত বান্প আবার ঠাণ্ডা করা হয় তথন আতর অলের উপর ভাসিয়া থাকে ও সহজেই জল হইতে পৃথক করিয়া লওয়া হয়। অবশিষ্ট যে জল থাকিয়া যায় ভাহাণ্ড থ্ব স্থগজ-যুক্ত হয় এবং ইহাই ভোমাদের পরিচিত "গোলাপজল", "কেওড়ার জল" ইভাদি। ফুলের নাম অহুসারে এই জলের এইরূপ নামকরণ করা হয়। এই উপারে গোলাপ, কেওড়া, লেভেণ্ডার (Lavender), মোভিয়া, খসখন, চন্দন, জোরান ও আরও অনেক দ্রব্য হইতে আতর বাহির করা হয়। ইহাতে যজাদির আবশ্যকতা ধ্ব কম স্থভরাং থরচও পুব জল এবং যজাদি যাহা

ইটালী প্রেদেশের নাম অনেকেই শুনিয়াছ। এখনও ইটালীর দক্ষিণভাগে ও সিদিলি ছাপে এই উপাছে লেব্র গন্ধ বাহির করা হয়। বেশীর ভাগ গন্ধরদ হাত দিয়া নিঙ্ডাইয়া লওয়া হয়।

পূর্বেই বলা হইরাছে, অনেক ফুল ও লতা-পাতা হইতে জলীয় বাস্পের সাহায়ে আতর বাহির করা যায়। কিন্তু দেখা গিরাছে, এমন আনেক জিনিব আছে যাহা হইতে এই উপায়ে আতর বাহির করিতে গোলে আতরের গন্ধ অল্পবিত্তর নই হইয়া যায়। এইরূপ হইবার বোধ হয় প্রধান

কারণ এই খে, এ সকল গন্ধবন্ধ এত কোমল ও সৃত্মশ্পর্ণী তাহা জনীয় C₹. বাস্পের উত্তাপে নষ্ট হইয়া যায়। স্বতরাং এই সকল ক্ষেত্ৰে উষ্ণ জলীয় বাষ্প বাবহার না করিয়া অপর কোন তরল বস্তু বা কোন রক্ম তেল, বা মোম বা চৰিব, ঠাণ্ড৷ বা গ্রম অবস্থায় ব্যবহার कता इया व्यागातमत CHEM আৰু ও কনৌজের লোকেরা সাদা তিল ধুইয়া

পরিকার করিয়া পরে ভাহা বেলা, চামেলী ইত্যাদি ফুলের সহিত রাথিয়া দেয়। এইরূপে ফুলের গন্ধ ভিলে প্রবেশ করে; পরে এই ভিল যন্ধে পিষিয়া ভেল বাহির করে ও এই তেল "হুগদ্ধিত চামেলীর তেল" বলিয়া বাজারে বিক্রয় হয়। বল। বাছলয় যে, এই চামেলীব ভেলে আসল চামেলীর গন্ধ আতর খুব অল্প থাকে। প্রায় সবটাই থাটি ভিলেয় ভেল। আধুনিক বড় বড় করিথানায় ভিলের পরিবর্ত্তে ভাল চর্ব্বির ব্যবহৃত হয়। ফুলের গন্ধ-ভরা চন্বির পমেড (Pontade) করে। এই পমেড হইতে আসল আতর বাহির করিতে হইলে পমেড্ ও হুয়া (alcohol) এক সলে মিশাইয়া কিছুলগ্রাধিয়া দিলে দেখা যায় যে, চন্বির হইয়া করিতে হইল

স্থবায় চলিয়া গিরাছে। বেহেতু চর্কিব স্থবার সহিত মিশ্রিত হয় না, অতএব উহা সহজেই পৃথক করিয়া ফেলিতে পারা যায়। এই উপায়ে ফুল হইতে গন্ধ বাহির করাকে "Enflemage process" কহে। জুই, বেলা, চামেলী, রজনীগন্ধা ইত্যাদির আতর এই উপায়ে ঠাণ্ডা অবস্থায় বাহির করা হয়।

আর এক প্রকার প্রণালীতে আতর বাহির করা হয়—মাহাকে "solvent extraction process" বলে। প্রায় সকল পদার্থেরই আতর হুরা, Petroleum ether) অথবা "chloroform"র মন্ত



মাডাগান্ধার খাঁপে লিমন ঘাসের চায

তরল পদার্থে থ্ব বেশী রকম দ্রব (soluble), স্তরাং এই দকল তরল পদার্থের দহিত ফুল রাখিয়া আমবিন্তর গ্রম করিলে ফুল হইতে গন্ধ বাহির হইয়া যায়। পরে ছাকিয়া ফুল ফেলিয়া দিয়া গ্রম করিলে তরল solvent বাহিব হইয়া যায় ও আতর থাকিয়া বায়।

এখন বোধ হয় তোমবা কতকটা ব্ঝিতে পারিয়াছ যে, কি উপায়ে ফুল ইত্যাদি হইতে ভাহাৰ গৰা বাহির করা হয়।

এইবার তোমাদিগকে ভাল, দামী আতরের বিষয় কিছু বলিব। তোমাদের ভিতর এমন কেহই নাই যাহার গোলাপের গব্ধ ভাল না লাগে। স্বতরাং দকল ফুলের চেয়ে গোলাপের গব্ধেব আদর +++++

বেশী ও গোলাপ ফুলের চাব সব ফুলের চেয়ে
অধিক পরিমাণে ইইয়া থাকে। যদিও গোলাপের
চাষ অনেক দেশেই হইয়া থাকে কিন্তু বুলগেরিয়াতে
(Bulgeria) ইহা একরূপ সরকারী ব্যবসা।
"গোলাপের অটো" (otto of rose) বুলগেরিয়া
ছাড়। অন্ত দেশে খব অন্ধ তৈরার করা হয়।

এদেশে প্রায় ১৬,০০০ একর (acre) হ্লমিতে গোলাপের চাব হয়। ফুলের সময় (Season) মে
মাস ও ফুনের কয়েক দিন পর্যস্ত। এদেশে ছোটবড় সর্বান্তন প্রায় ৪০টি "otto" বাহির করিবার
কারথানা আছে। ফুল তোলা প্রত্যুহ ভোর
বেলা সুর্য্য উদয়ের সঙ্গে সঙ্গেই শেষ করিয়া থলের
ভিতর ভরিয়া বাগান ইইতে কার্থানায় পাঠান

সহিত আথতে আতে অপর একটি পাত্রে বাহির করিয়ালওয়াহয়। যে জল রহিয়া গেল তাহাই "গোলাপ জল"।

কমেক বংসর পূর্বে গোলাপের আতর ছোট ছোট পাত্রে বাগানের ভিতরেই বাগানের মালিকগণ নিজেই বাহির করিয়া লইভেন, কিন্তু আজকাল কয়েকটি বড় বড় কারখানা হইয়াছে। এই সকল কাবখানার ফুল চোয়াইবার পাত্র আকারে এড বড় যে, ভাহাতে একবারে প্রায় ২০ মণ ফুল লইডে পারা যায়। একটি কারখানায় এইরূপ একশত পাত্র এক দলে ব্যবহৃত হয়।

আমাদের দেশে গোলাপ হইতে প্রধান্ত: গোলাপ জলই প্রস্তুত কর। হয় এবং ইহা পুরাভন

व्यथार्टिं कता इत्। এইখানে বলিয়া রাখা ভাল যে. বিলাভী "otto" ও আমাদের "আডরে" দেশের খনেক প্রভেদ। "otto" আসল গন্ধ দ্রবা, কিন্তু আতরে আসল গন্ধ দ্ৰোর সহিত অন্ত জিনিয---চন্দনের প্রধানত: ভৈল মিজিভ থাকে। গোলাপ ফুলে আসল গন্ধ পদার্থের পরিমাণ খুব অল। প্রায় ১০০ মণ ফুল হইতে এক সের "Otto" বাহির

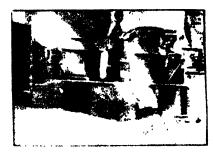


ল্যাভেগুর ফুলের চায

হয়। এখানে ইহা বড বড় লোহার বাদনের ভিতর পুরিয়া জ্ঞলীয় বাম্পের সাহায্যে চুয়ান (distil) হয়। এইরপে প্রথমে গোলাপজ্জল প্রস্ত হয়। ইহাতে ottoর মাত্রা বড অল্প স্তরাং এই গোলাপজ্জল ন্তন ফুলেব সহিত মিশ্রিত কবিয়া আবার 'distil' কবা হয়। এইরপে অস্ততঃ তিনবার নৃতন ফলের সহিত ফুটাইবাব পর যে গোলাপের জ্ঞল প্রস্তত হইল, তাহে কিছুফণ্ ঠাপ্তঃ স্থানে রাখিয়া দিলে গোলাপের গ্লাতেল বা otto উপরে ভাদিয়া উঠে এবং অভি যতের

করিতে পারা যায়। স্থতরাং গোলাপের "Otto"র দাম খ্ব বেশী এইজন্ম ইলতে ভেজাল দিবার খ্ব চেটা করা হয়। ভেজাল দেওয়ার স্থবিধাও খ্ব, কাবণ, ভেজাল ধরা খ্ব কঠিন। ইলতে কি ভেজাল দেওয়া হয় তাহা জানিবার কৌতৃহল হওয়া খাভাবিক। ইং। বোঝা একট শক্ত এবং ব্রিতে হউলে রসায়ন শাখ্মে সামান্য জ্ঞান থাকা দরকার। গদ্মপ্রামাত্রই এমন জিনিষ যে তাহা রাসায়নিক প্রতিয়া দ্বারা প্রস্তুত করা সন্তব। যে কোন ফুল বা ফলের গদ্ধবস্তু বা বায়নিক বিভ্রেষণ করিলে

তাহার বিভিন্ন উপাদানের পরিমাণ জানা যায়।
রাসায়নিক বিলেবণ কাজের ভিতর (chemical
analysis) ইহা বোধ হয় সব চেয়ে শক্ত, তথাপি
রাসায়নিক পণ্ডিতদের জয়ান্ত পরিশ্রমে অনেকগুল ফুলের গজের বিষয় অয়বিশুর জানা
গিয়াছে। স্থতরাং এ সকল পদার্থ রাসায়নিক
প্রক্রিয়ায় প্রস্তুত করিয়া বা অপর কোন সন্তা ফুল,
যাস, পাতা বা গাছ-গাছড়া হইতে বাহির করিয়া
পরে পরিমাণ মত মিশ্রিত করিলে এমন জিনিব
প্রস্তুত হয় যাহা অনেকটা আসল ফলের "Otto"ব



ফুল হইতে অটো বাহির করণ

গান্ধের সহিত দাদৃত্য রাখে। এইরণে প্রস্তেত গদ্ধ আসন ফলেব গান্ধেন মাধুর্য হইতে বঞ্চিত, তবে প্রস্তকারকেব নিশুনতাব উপর জিনিষের গুল খুব বেশা বক্ষন নির্ভিব কবে। মোটের উপব ইহা বলা ঘাইতে পাবে যে, মিশ্রিত আত্র যতই ভাল হইবে.

ততই তাহার মধ্যে ফুলের আসল আতরের পরিমাণ বেশী থাকিবে। সাধারণের বিখাস যে, রাসায়নিক প্রক্রিয়াবারা প্রস্তুত গছ ক্রব্যের স্কৃত্তির জন্ম ফল হইতে ৰ'হির করা আতরের ব্যবহার কমিয়া গিয়াছে। কিন্তু প্রকৃতপক্ষে তাহা নহে বরং ফলের আতরের প্রান্তকার্যা ও তাহার ব্যবহার বাডিয়া গিয়াছে। কারণ, রাসায়নিক জব্যের গঙ্কে এমন এক ভীব্ৰ ভাব থাকিয়া যায়, যাহা আদল ফলের গন্ধ ব্যতীত অন্ত কোন উপায়ে কোমল ও প্রীতিকর করিতে পারা যায় না। এইবার ভোমাদিগতে বিভিন্ন প্রকারের সেণ্টের (Scent or Perfume) কি কি গুণ হওয়া উচিত এবং সেজন্ম কি প্রকারের গন্ধ দ্রব্য ব্যবহৃত হয়, এই বিষয়ে কিছু বলিয়া শেষ করিব। তোমরা সকলেই লক্ষা করিয়াছ যে, অধিকাংশ দেণ্ট ব্যবহার করিষার অল্ল সময়ের ভিতরই গন্ধ উডিয়া যায় কিন্তু বেশী লামী সেণ্টে ভাহা হয় না বরং গন্ধ কয়েকদিন অৱবিল্যব থাকিয়া যায়। সকল প্রকার "দেউ" ক্ষেকটি গদ্ধপ্রবা মিল্লিড ক্রিয়া প্রস্তুত ক্রা তম। ইতাকে blending করে। ইতার উদ্দেশ্য এই যে, মিশ্রিত গদ্ধ মধুর, স্থায়ী ও প্রীতিকর হট্টরে। পরীক্ষার পর দেখা গিয়াছে যে, কতক-গুলি গন্ধত্রব্যের সহিত যে কোন গন্ধ মিলাইয়া দিলে এই মিশ্রিত গন্ধ বেশ স্থায়ী হয়। এইরূপ স্তবাকে "Fixative" করে। চন্দনের তেল. খনখন ও কন্তব বেশ ভাল fixative ও প্রায় অধিকাংশ "দেণ্টে" অল্পবিন্তর পরিমাণে থাকে।



# উদ্ভিদের খান্ত ও উহার গ্রহণ-প্রণালী

ভোমরা স্থান যে, আমরা চারিদিকে যে সকল গাছ-পালা, তক্রলতা নেখি, উহাদিগকে উদ্ধিদ বলে। উহারা সাধারণতঃ



মাটিতেই ক্ষয়ে। ইহাও তোমরা ক্ষান, আমরা সচরাচর যে সকল উদ্ভিদ দেখিতে পাই, বীঞ্চ হইতেই উহাদের উৎপত্তি হয় এবং উহাদের চারিটি প্রধান অংশ থাকে। যথা—(১) শিকড়, (২) কাও. (৩) পাতা, (৪) ফুল। ফুলই অবশেষে ফলে পরিণ্ড रुप्र এবং कर**लत भर**भारे वीस शास्त्र: स्मारेसस ফুল, ফল ও বীজ্ঞকে একটি অংশ বলিয়া ধরা হুইয়া থাকে। ইহাদের প্রথম তিনটি অংশকে উল্লিদের वर्षनेनीन जरम ও চতুর্থটিকে বংশবক্ষক जरम वरन। বীজ উৎপদ্ন করাই উদ্ধিদের প্রধান উদ্দেশ্য। কারণ, বীজ হইতেই উহাদের বংশ বাডে। ইহাও ভোমরা জান যে. বীজ হইতে অজুর; অজুরের যে অংশ মাটির দিকে যায় ভাহা হইতে শিক্ড এবং যে অংশ আকাশের দিকে উঠে, তাহা হইতে কাও: ক্ৰমে কাও হইতে ডালপালা, পাতা ও ফুল বাহির হয়। অবশেষে ফুল হইতে ফল ও বীজ পাওয়া হায়।

যদিও প্রাণী ও উদ্ভিদ্ তুইটি বিভিন্ন শ্রেণীভূজ, কিন্তু প্রাণীদিগের জায় উদ্ভিদেরও প্রাণ আছে। তোমরা জান, যাহাদের প্রাণ আছে, তাহাদিগকে প্রাণধারণের জন্ম নিংখাস-প্রখাদের কার্য ও খাছা গ্রহণ করিতেই হয়। খাস-প্রখাদ আমাদের কত প্রয়োজনীয়, তাহা তোমরা তুই এক মিনিট কাল

নি:খাস বন্ধ করিয়া থাকিলেই অনায়াসে ব্বিতে পারিবে। আমরা না খাইয়া আয় কিছুদিন বাঁচিয়া থাকিতে পারি; কিছ

শাস-প্রশাস ব্যতিরেকে আমরা এক মুহুর্ত্তও
বাচিয়া থাকিতে পারি না, বলিলেই চলে।
এইজন্ম খাস-প্রশাসের আর একটি নাম জীবন।
যতকণ আমর। খাস-প্রশাসের কাজ কবিতে
পারি ততকণই আমবা বাঁচিয়া থাকি ও
আমাদের শরীর গরম থাকে, উহা বন্ধ ইইয়া
যাইবামাত্র আমাদের শরীর শীতল হইয়া মায়
ও আমরা মরিয়া যাই, সেইজ্বল মৃত্যু হইলে
ইংরাজীতে বলে "Breathed his বা her last"
অর্থাৎ সে তাহার শেষ নিংখাস ত্যাগ করিয়াছে।

নিংখাদ-প্রখাদের ক্রিয়া কাহাকে বলে, ভোমরা জ্বান কি? ইহা ভোমবা নিশ্চমই জ্বান যে বাতাদ না থাকিলে খাদ-প্রখাদের কার্যা চলিতে পারে না। আমাদের চারিধাবেই সকল: সময়ে প্রচুর পরিমাণে বাতাদ রহিয়াছে, বলিতে গেলে আমরা বাতাদের মধ্যে ভুবিয়া আছি। এমন কি, একটি ছিপি বন্ধ-করা খালি লিশির ভিতরকার সমস্ত অংশই বাতাদ অধিকার করিয়া থাকে, ভোমাদের মনে আছে ত যে, শক্ত মাটির কুল কুল্ল কণাগুলির মাঝখানের ফাকের মধ্যেও বাতাদ চুকিয়া আছে। ইহা হইতেই তোমরা বাতাদের ব্যাপ্তি বৃথিতে পারিবে। আমরা দিবারাত্র—কি জ্বাগ্রত, কি নিজিত, সকল অবস্থায় আমরা নাদিকার বারা

বাতাস গ্রহণ করিয়া শরীরের মধ্যে চালনা করিয়া দিতেছি। এই বাতাদে প্রচর পরিমাণে অমুম্বান বাষ্প আছে: নি:খাসের দারা বাতাস হইতে অমুকান বাষ্ণ গ্রহণ করাই আমাদের উদ্দেশ্য। এই অয়জান বাপের কতক অংশ আমাদের **(मरहत गंठेन कार्या जार्ग ७ भंदीरदद উखार्शद** সৃষ্টি করে। অবশিষ্ট অংশ আমবা আমাদের শ্রীর হইতে বাহিব করিয়। দিই: কিন্তু উহা তাডা খাইয়া বাহির হইয়া আসিবাব সময় একাকী আসিতে পারে না. একটি বন্ধর সহিত মিলিয়া মিশিয়া চলিয়া আসে অর্থাৎ শরীরের ভিতরকার অঙ্গারের সহিত মিশ্রিত হইয়া যৌগিক অবস্থায় অকারক বাষ্পরূপে বাহির হইয়া আসে। বাতাসের অমুক্তান-বাষ্প গ্রহণ করা ও উহাব অকেকো অংশ অজাবক বাষ্পরূপে বাহির করিয়া দিবার নামই নি:খাস-প্রখাস ক্রিয়া। ইহা ছারা শরীরের উত্তাপের সৃষ্টি হয় বলিয়া ইহাকে দহন ক্রিয়াও रता।

প্রাণধারণের জব্ম প্রাণীদিগের স্থায় উদ্ধিদ-দিগকেও নিংখাস-প্রখাসের কার্যা করিতে হয় অৰ্থাৎ ভাচাদিগকেও বাডাস হইতে অয়ভান গ্ৰহণ ও উহাৰ অকেলো অংশ শৰীৰ হইতে অঙ্গারক বাষ্পরূপে বাহির করিয়া দিতে হয়। এই কথায় ভোমরা প্রথমেই হয় ত থব হাসিবে ও বলিবে উদ্ভিদের নাক কোথায়? আমাদের মত ভারাদের নি:খাস-প্রস্থাসের জন্ম একটি মাত্র যন্ত্র অর্থাৎ নাসিকা নাই . ভাহাদের নি:খাস প্রখাসের যন্ত্রপ্রতিও অণুবীক্ষণ যন্ত্রের সাহাষ্য ছাড়া দেখা যার না। তবে জানিয়া রাখ যে, উহাদের দেহের প্রতোক অংশ-শিকড, কাত্ত, পাতা, ফুল, ফল প্রভৃতি দিবারাত্র অবিশ্রাম্ভ ভাবে নি:খাস-প্রাখাদের কার্য্য করিতেছে; এমন কি. বীঞা ও কঁডিকেও এই কার্যা করিতে হয়। তোমাদের বাডীতে ই।ডিব মধ্যে যে সকল শুকনা বীজ থাকে, ভাহারাও নি:খাস প্রখাসের কার্যা করে।

উদ্ভিদেরা যে ভাহাদের সকল অংশ দিয়া বাতাস হইতে অম্বন্ধান বাষ্প গ্রহণ ও উহার অকেন্ধো অংশ শবীরের ভিতর হইতে অন্ধারক বাষ্পরপে বাহির করিয়া দিয়া থাকে অর্থাৎ ভাহাদের নিঃখাস প্রস্থাদের কার্যা করিয়া থাকে, ভাহা ছুইটি পরীক্ষা করিলে ভোমরা অনায়াদে বুঝিতে পারিবে। এই ছইটি পরীক্ষা করিবার পূর্বের তোমরা আনিয়া রাধ যে, বাতাদের অমজান-বাষ্প ছাড়া আগুন জনিতে পারে না এবং স্বচ্ছ ও নির্মাণ চুণের স্কুল অঞ্চারক বাম্পের সহিত মিশিলে উহার রং গ্রথের মত শাদা হইয়া যায়। তইটি বড় মুখওয়ালা বোডল লও: বে কোন গাছের কতকগুলি বীঞ্চ (ছোলাই ধর না কেন) জলে ভিজাইয়া একটি বোতলে রাখিয়া উচার মুখ শক্ত ছিপি দিয়া বন্ধ করিয়া দাও। অপরটিতে কতকগুলি ডিজা পাথরের কুচি রাধিয়া ঐরূপে শক্ত ছিপি দিয়াবন্ধ করিয়া দাও। একদিন পরে যে বোতলটিতে বীক দিয়াছিলে উহার ছিপি একটখানি ফাঁক করিয়া একটি দেশলাইএর কাঠি জালিয়া বোতলটির ভিতরে দিলে দেখিবে যে. দেশলাইএর কাঠিটি নিভিয়া যাইবে। কিন্তু অপর বোডলটিতে যাহাতে পাথরের কুচি ছিল, উহার ভিতরে একটি काना मिननारे अब काठि मिल, छेश निक्या गारेत না। ইহাতে ভোমরা বৃষিতে পারিলে যে, যে বোডলটিতে বীক রাথিয়াছিলে সেই বোডলটির মধ্যে অম্লান-বাষ্প নাই বলিয়াই দেশলাইএর কাঠিটি নিভিয়া গেল। ভিজা বীজগুলি ভাহাদের নি:বাস-প্রস্থাদের জন্ম বোডলের মধ্যের বাডাস চইতে তাহার অন্নজান বাষ্প সম্পূর্ণরূপে গ্রহণ করিয়া ফেলিয়াছে। পাধরের কুচিগুলির প্রাণ নাই বলিয়া ভাহাদের নিংখাস-প্রখাসের দরকার হয় নাই। দেইজ্য বোতদের ভিতরকার বাতাদের **অম্বজান-**বাপা কিছমাত্র নষ্ট হয় নাই। স্রভবাং কার্মিট নিভিয়া যায় নাই।

আবার ঐরপ ছইটি বোতদের একটিতে যে কোন গাছের কমেকটি ছলের কুঁড়ি রাখিয়া ছিপি বন্ধ করিয়া দাও। অপরটিতে পাথরের কুঁচিগুলি দাও। ছইটি বোতলকে অন্ধনার স্থানে একদিন রাখিয়া দাও। একদিন পরে যে বোতলটিতে ফুলের কুঁড়িগুলি দিয়াছিলে, অতি সাবধানে ভাহার ছিপি একটুখানি ছলিয়া খানিকটা স্বচ্চ ও নির্মাল চূলের অল ঢালিয়া দাও। দেখিবে যে, ঢালিবামাত্র চূলের অলের রং ছ্রের মত শাদা হইয়া ষাইবে। যে বোতলটিতে পাখরের কুচিগুলি রাখিয়াছিলে ভাহাতে চূলের অলের রং কিছুমাত্র বদ্লাইবে না ও উহা শাদা হইয়া ষাইবে না। তাহা হইলে ভোমরা দেখিতেছ যে, যে বোতলটিতে স্থলের কুঁড়ি রাখিয়াছিলে, সেই বোতলে অস্থারক-বাম্পের

+ 649 +++4

উংপত্তি হইয়াছে এবং দেই অলারক-বাষ্প ফ্লের কৃড়িগুলিই নিঃখাদের সহিত বাহির করিয়া দিয়াছে। উদ্ভিদেরও যে নিঃখাস-প্রখাস আছে, ও উহারা যে উহাদের যে কোন অংশ বারা উহা দম্পন্ন করিতে পারে, এখন তোমরা তাহা ব্বিতে পারিয়াছ। এই হুইটি পরীকা সম্বন্ধে তোমরা ব্বিতে পার যে, নিঃখাস-প্রখাদের সহিত যথন অম্বান-বাষ্প গ্রহণ ও অলারক-বাষ্প ত্যাগ করা হয়, তথন বীক্ষের বোতলটিতে চ্পের কল দিয়া অলারক বাষ্পা ত্যাগের বিষয় প্রথম পরীকা বারা ব্রান হইল না কেন? বিভীয় পরীকা করিবার সময় বোতল তুইটি অন্ধ্বার স্থানে রাধিতে বলিবার উদ্দেশ্য কি ? ইহা তোমাদিগকে পরে ব্রাইয়া দিব।

এখন উদ্ভিদের থাতের কথা ও তাহা গ্রহণের প্রণালী ভোমাদের সঙ্গে মোটামটি ভাবে আলোচনা করিব। উদ্ভিদের খাল্ডের কথা বলিতে গেলে. আমাদের প্রথমেট বীক্ষের কথা লটয়া আরম্ভ করিতে হইবে। বীঞ্ল হইতে যথন অন্ধর বাহির বয়, তথন অন্ধরের থাতা কোথা হইতে আসে? আমরা যেমন শিশুকালে নিভাস্ত অসহায় অবস্থায় থাকি ও নিজেদের আহার নিজেরা সংগ্রহ করিতে পারি না. মান্বের তথের উপরেই আমাদের নির্ভর করিতে হয়, অঙ্গুরের বেলাতেও ঠিক সেই কথা থাটে। গাছই অঙ্করের পিতামাতা এবং সেই পিতামাতা তাহাদের শিল্পর জন্ম বীজের মধ্যেই তাহার আবস্থকীর খান্ত-দ্রব্য সঞ্চিত করিয়া রাখে এবং যতদিন ঐ শিশুটি অর্থাৎ অস্থরটি বড় হইয়া নিজের আহার সামগ্রী সংগ্রহ করিয়া তাহা হইতে থাম্ম দ্রব্য প্রস্তুত করিতে না পাবে, ততদিন বীজের ভিতর সঞ্চিত খাছদ্রব্য-গুলি থাইয়াই সে বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। আমাদের উপরে বেমন ঈশরের অসীম অমুগ্রহ, উদ্ভিদের উপরেও তাঁহার সেইরূপ অসীম অহুগ্রহ আছে। তিনি আমাদেরও ষেমন ভালবাদেন, রক্ষণাবেকণ করেন, উদ্ভিদ্গণও তাঁহার কাছে সেইরূপ আদর-यद्भ भारेषा थाटक । कि लाबी, कि छेडिए, डांशाबरे ছারা স্ট ইইয়াছে। তোমরা ধেমন মামুষকে ভালবাদ, উদ্ভিদকেও ভালবাদিতে শিখিও। আমাদের বেলায় ছুধের বিল্লেষণ করিয়া যেমন আমাদের বিভিন্ন জাতীয় থাছের আবিষ্কার হইয়াছে, উল্লিখ্র বেলাভেও ঠিক সেইরূপ অস্করের জন্ম বীজে 🛪

খাছ সঞ্চিত খাকে, সেই খাছা বিশ্লেষণ করিয়া উদ্ভিদের ভিন্ন জাতীয় খাছা আবিদ্ধৃত হইয়াছে। উহা বারা দেখা গিয়াছে যে, প্রাণীদিগের জন্ম যে যে জাতীয় খাছোর দরকার হয়, উদ্ভিদেরও সেই সেই জাতীয় খাছোর আবশ্রক।

একটি গাছকে পোড়াইয়া ছাই করিয়া উহার জলীয় ও কঠিন অংশ (ছাই) বিশ্লেষণ করিয়া দেখা গিয়াছে যে, আমাদের ও অক্সাক্ত প্রাণীদিগেব শরীর যে সকল মৌলিক উপাদানে গঠিত, উদ্ভিদের শরীরও সেই সেই মৌলিক উপাদানে গঠিত হয়। আবার ঠিক আমাদেরই মত মৌলিক উপাদান-গুলির মধ্যে অকাব, জ্বলজান এবং অমুকানই তাহাদের বিশেষ দরকারী। ইহা ছাডা যবক্ষার-জান ও কতকগুলি ধাতব পদার্থের প্রয়োজন আছে। উহাদের মধ্যে লোহ, প্রক্রক, পত্রক ও লবনিব প্রধান। উদ্ভিদের শরীরে জলেব ভাগই বেশী। অকার, জলভান ও অয়ভানই তাহাদের নানাপ্রকার সংমিশ্রণের দ্বারা অবশিষ্ট ভাগ গঠিত করিয়াছে। আবার উদ্ভিদের কঠিন অংশে মোটামটি অকারের ভাগ অর্দ্ধেক: যবক্ষাবজ্ঞান শতকরা ২ ভাগ. ও অক্সাক্ত ধাত্র পদার্থের মৌলিকগুলির সমষ্টিকে ২ ভাগ ধরা যাইতে পারে।

আমাদের দেহের অভি. চর্ম, মাৎস, শিরা প্রভৃতি ষেমন বিভিন্ন মৌলিকের সমষ্টি দারা গঠিত হয়, উদ্ভিদের দেহের ভিন্ন ভিন্ন অংশগুলিও **শেইরপ এই সকল মৌলিকের সম**ষ্টি ছাবা গঠিত হইয়া থাকে। আমরা বেমন আমাদের থাল সামগ্রীগুলি ছারা আমাদের শরীরের মধ্যে মৌলক উপাদানগুলি সরবরাহ করিয়া থাকি, উদ্ভিদকেও ঠিক সেইরূপ খান্ত-সামগ্রীগুলি দারা ভাহার প্রয়োজনীয় মৌলিকগুলি শরীরের বিভিন্ন অংশ গঠনের অভা সংগ্রহ করিতে হয়। কিন্তু আমরা কিংবা অক্ত প্রাণীরা আমাদের দেহ গঠনের উপযোগী कांठ। त्योनिक উপानानश्री रायन विक्रि থাভাষার কি কঠিন, কি ভরল অবস্থায় শরীরের মধ্যে সরবরাহ করিয়া থাকি, উদ্ভিদগণ সেইরূপ भारत नाः উशानिगरक काँठा स्मीनिक छेभानान-গুলি কেবলমাত্র তরল কিংবা বাষ্ণীয় অবস্থায় শরীরের মধ্যে প্রথমে সরবরাহ করিতে হয়। তোমরা জান যে, উদ্ভিদই আমাদের খাত্ত-ভাগ্তার: কিছ উদ্ভিদের খাছ-ভাগুর বাতাস ও মাটি।

উহার। উহাদের প্রয়োজনীয় মৌলিক উপাদানভলির মধ্যে অলার, অম্লান, অললান ওববকারজান
প্রত্যক্ষ বা পরোক্ষভাবে বাতাস হইতে সংগ্রহ করে
এবং অবশিষ্ট ধাতব উপাদানগুলি মাটি হইতে
জলের সাহায়ে তরল অবস্থায় গ্রহণ করে। কোন
কোন উদ্ভিদ্ এক প্রকাব কীটাণুর সাহায়েয় বাতাস
হইতে যবকারজান গ্রহণ করিতে পারে। ঐ
কীটাণুগুলি উদ্ভিদের মূলে জন্মগ্রহণ করে এবং
বাতাস হইতে যবকারজান গ্রহণ করিয় মাটিতে
সরবরাহ করে। ঐ যবকারজান মাটিতে পৌছিয়া
ধাতব পদার্থের সহিত মিলিয়া যৌগিকরূপে তরল
অবস্থায় উদ্ভিদের দেহে প্রবেশ করে।

এখন মৌলিক উপাদানগুলির ছারা উদ্ভিদ ভাহার শরীরের ভিতরে প্রধানতঃ কোন জাভীয় থাছাত্রব্য প্রস্তুত করে, ভাহা মোটামুটি বলিভেছি। অকাৰ, জলজান ও অয়জানই উহার বিভিন্ন জাতীয় शाम छेरभामत्त्र श्रधान स्मीनिक छेभामान। ইহাদেরই বিভিন্ন প্রকারের সংমিশ্রণে চুই জাতীয় খাছ প্রস্তুত হয়, খেতদার ও তৈলজাতীয় খাছা। যদিও চুই জাতীয় খাজের উপাদানগুলি একই, কিন্তু তুই জাতীয় পাছেরই কার্যকারিতা সদক্ষে অনেক প্রভেদ আছে। এই চুই জাতীয় খাছ ছাড়া উদ্ভিদের শ্বীরে আব এক জাতীয় খাতা প্রস্তুত হয়, উহাকে অর্নার বলে। অর্নার প্রস্তুতের সময় উপবোক ভিনটি উপাদানকে যবক্ষারজ্ঞান ও অল্প পরিমাণে আবও কথেকটি ধাতব মৌলকের সাহাযা লইতে হয়। উহাদেৰ মধ্যে গন্ধক, প্রক্রক (Phosphorus) ও লৌহ প্রধান। এই তিন জাতীয় থাকা ছাড়া (कान कान উद्धिमक (यगन गन्नपुक উद्धिम, त्रक्रन, ধুনা, ধুপপ্রাদ উদ্ভিদ্ ও জাবকপ্রাদ উদ্ভিদের আরও ছই এক জাতীয় খাছের প্রয়োজন হয়। কিন্ত উপবোক তিন জাতীয় খাতাই সাধারণত: উদ্ভিদের প্রধান খাতা এবং ইহার উপরুই উহার জীবন নির্ভর কবে।

উদ্ভিদ্ উক্ত তিন কাভীয় পাছ নিক্ষের দেহের

মধ্যে প্রস্তুত করিয়া নিজের প্রাণধারণ ত করেই অধিকত্ত উহার শিশুর অন্ত বীজের মধ্যে ও প্রাণী-দিগেব জাক্ত উহার দেহের বিভিন্ন অংশে প্রচর পরিমাণে খাদ্য সঞ্চিত করিয়া রাখে। খেতসারের দ্বারাই উদ্ভিদের দেহের অধিকাংশ ভাগ গঠিত হয়। ইহা কোন কোন উদ্ভিদের বিভিন্ন অংশে প্রচুর পরিমাণে সঞ্চিত থাকে। যেমন চাউল (ধান হইতে প্রাপ্ত), গম, যব, ভুট্টা, আলু ইন্ড্যাদি। এই খেতসার হইতেই আবার উদ্ভিদ্-দেহে শর্করার উৎপত্তি হয় এবং কোন কোন উদ্ভিদে শর্করা প্রচর পৰিমাণে বিভয়ান থাকে। যেমন ইক, বীট, কিস্মিদ ইভাগি। তৈল জাতীয় খাছ কোন कान डेडिएनत वीरक श्रव পবিমাণে সঞ্চিত থাকে। বেমন তিল, সরিষা, বৈড়ি, মসিনা, নারিকেল, বাদাম ইতাদি। ময়দা বা আটা জলে ভিজাইলে আঠার মত যে পদার্থ বাহির হয়, ভাহাতে অল-সারের প্রাচ্যা আছে।

উদ্ভিদে স্কিত তিন জাতীয় খাছের পরিমাণ অফুসারে বিভিন্ন জাতীয় উদ্ভিদকে বিভিন্ন জাতীয় থাত্য-শশু হিসাবে ধরা হয়। যথা:--শেতসার জাতীয় বা শর্করা জাতীয় খাছা-শস্থা, তৈলপ্রদ খাছা শতাও অৱদারজাতীয় থাত্য-শতা। তোমাদের মনে আছে ত, আমাদের ঠিক এই তিন জাতীয় থাজেরই দরকার। আমাদের থাতা-তালিকায় আমরা আমিষ জাতীয় খাছ বলিয়াছি। অন্নসার ও আমিষ জাতীয় খাজ্যের একই উপাদান। এখন তোমরা আরও বিশদভাবে বঝিতে পারিলে যে, আমাদের তিন জাতীয় থালেব জন্মই আমর৷ উদ্ভিদের কাছে কত ঋণী। কারণ উদ্ভিদ এই তিন জাতীয় খাষ্ঠ ভাহার দেহে আমাদের জন্ম প্রচুর পরিমাণে সঞ্চিত করিয়। রাথে এবং আমরা উহা আহার করিয়াই জীবনধারণ করিতে পারি। এখানে ইহা আমরা অনায়াদে বলিতে পারি যে, আমরা—প্রাণীরা, খাস্ত ধ্বংস করি ও উদ্ভিদেরা খান্ত গঠন করে।



# অ্যাসিরিয়া

#### অস্থর

व्याविननियात किছ উखरत छ।इधिम नरमत পশ্চিম পারে (বর্ত্তমান কিলে শেরঘাটে গ্রামের জন্ম সহরের পত্তন নিকটে) প্রাচীনকালে অস্তর বলিয়া একটি সহর ছিল। कथन् अ কাহারা প্রথম এই সহরের পত্তন করে, তাহা লইয়া পণ্ডিতদের মধ্যে মতভেদ আছে। কেহ কেহ বলেন, খুটের জন্মের অস্ততঃপক্ষে ৩০০০ বৎস্বেরও পূর্বে একদল দেমিটিক লোক এই সহর স্থাপন করে। অবশ্র ভাহার। আসিবার পর্বের এখানে এক পাহাডিয়া স্থাতি বাস করিত। তাহাদের সঙ্গে সংমিশ্রণে ইতিহাস-প্রসিদ্ধ আাসিরিয় জাতির উত্তব হয়। বোধ হয় এই সেমিটিকজাতীয় লোকের। বাাবিল্নিয়া হইতে আসিয়া এখানে উপনিৰেশ স্থাপন করে (অবশ্র কোন কোন পণ্ডিভের মত যে. ভাহারা অভ্যন্ত হৈতে আসে)। আবার কেহ কেহ বলেন যে, প্রাগৈতিহাসিক যুগে প্রথমে এখানে শ্রমেরিয়ানরাই সহর স্থাপন করে। পরে সেমিটিক-জাতীয় লোকেরা আদিয়া প্রাধান্ত স্থাপন করে।

দে যাহাই হউক, আাদিরিয় ধর্ম ও সভাতা যে মূলত: ব্যাবিদনীয়, সে বিষয়ে কোনই সন্দেহ নাই। তাহাদের চরিত্রে কিন্তু বিশেষ পার্থকা লক্ষিত হয়। তাহারা অধিকতর সাহসী, কুর্মাঠ ও দৃচ্চেতা। তাহাদের শভাবেও এমন একটা হিংশ্রভাব দেখা যায় যাহা ব্যাবিদনীয়দের শভাবের সঙ্গে মোটেই বাপ বার না। পোষাক-পরিচ্ছদ ও চেহারায়ও অনেক প্রভেদ দেখা যায়।

অহর সহরই ভবিশ্বৎ আাদিরিয়া রাজ্যের প্রথম ।

কেন্দ্র ও রাজধানী। এখানকার দেবতার নামও ।

অহর । ইহাদের নাম হইতেই

সমগ্র দেশের ও দেশবাদীর নাম

হয় অহর (আাদিরিয়া)। ধীরে ধীরে অ্যাদিরিয়ের।



অস্ত্র (আাদিরিয়ার প্রধান্দেবতা) উত্তর দিকে অগ্রসর হইয়া টাইগ্রিস্ নদের পূর্বতীরস্থ দেশ অধিকার করিয়া বসে। এই দেশের চারিটি

**→** \*

প্রধান সহর—অহ্নর, কালা (Kalah), নিনেভ (Nineveh) ও আরবেলা (Arbela)।

পূর্বেই বলা ইইয়াছে যে, আাদিরিয়েরা শৌংগ্য,
বীর্ষ্যে ও কর্মপটুভার ব্যাবিশনীয়দের অপেকা শ্রেষ্ঠ
প্রাকৃতিক অবহা
কিন্তু ভাষাদের সমকক ছিল না।
ইহার কারণ, অনেকটা দেশের ফাবহাওয়া ও জ্মির





এম্বর দেবতাগণের চিহ্ন-পাথা

আপেকিক অন্তর্ধরতা। নদীমাত্ক ব্যাবিলনিয়া দমতলভূমি, অ্যাদিবিয়া কি এ অনেকটা আমাদের দেশের ছোটনাগপুব বিভাগের মত মালভূমি। জলের স্ববিধা বিশেষ না থাকাতে নদীর উপকণ্ঠ ছাড়া চাষবাদের উপযোগী জমিও বিশেষ ছিল না। কাজেই, আহার সংস্থানের জন্ত আ্যাদিরিয়েরা, অনেকটা শিকারের উপর নির্ভর করিতে বাধ্য হইত। আর সেকালে এদেশে সিংহ, বক্স যাঁড প্রভৃতি হিংল্ল জন্তর প্রাভৃত্তাব থাকাতে, ইহাদের সঙ্গে লড়াই করিয়া তাহাদিগকে বাঁচিয়া থাকিতে হইত। স্তরাং আমাদের দেশের পাহাড়িয়া জাতিদের মত ভাহারা চিরদিনই পরিশ্রমী ও সাহসী ছিল। গুর্থা, ভূটিয়াদের মত হিংল্ল স্থভাবও ভাহারা পাইয়াছিল।

## অ্যাদিরিয়ার অভ্যুখান

वारिननीयरम्य में क्षेत्रम पानितिय बाकारम्य

প্যটেদি (Patesi) অথবা পুরোহিতরাজ বলা হইত। তাঁহার। ছিলেন অম্বর-দেবের পুরোহিত। কথন যে প্যাটেসি রাজারা উছোর। প্রথম সাবু (Sabu) রাজা উপাধি ব্যবহার করিতে আরম্ভ করেন, তাহা বলা কঠিন। অহুর রাজ্যের প্রথম পুরোহিতরাজনের यटश 'উসপিয়া'র (Ushpia) নাম জান। পিয়াছে। নাম দেখিয়া মনে হয়, জিনি বোধ হয় সেমিটিক্লাতীয় ছিলেন না। তাঁহার পর কিকিয়া (Kikia) প্যাটেদি হইয়া নগরের প্রাচীর নির্মাণ আরম্ভ করেন। কিকিয়ার পর আরও অনেক ভিন্নছাতীয় পাাটেসি রাজা শাসন করেন। প্রথম সেমিটিক तामा (वाध इम्र 'मानिम-आधूम' (Shalim-Akhum)। তাঁহার পুত্র ছিলু-হুমা (Ilu-Shuma ব্যাবিলনের হামমুরাবি রাজবংশেব প্রতিষ্ঠাতা रम्-वातुत्र (Sumu-Abu) मत्न युक्त करत्रन्। ইলু-স্বমার পুত্র ইক-স্বম্ (Iru-Shum) রাজা হইয়া অম্বর সহরে একটি খাল কাটিয়া পানীয় ভল সরবরাহের স্থবন্দোবন্ত করেন। ধর্মেও তাঁহার অচলা ভক্তি ছিল। সহরে তিনি আদাব দেবের (Adab) মন্দির নির্মাণ করেন। জাঁচার সময হইতেই আ।সিরিয়া রাজ্যের প্রথম লিখিত ইতিহাস বিবরণ পাওয়া যায়।

হাম্মুরাবির সময় অহ্বের রাজা ছিলেন প্রথম সাম্সি-আদাদ্ (Shamsi-Adad I)। তিনি এন্সিল্ দেবের মন্দির পুনর্নির্দাণ করেন। এবদ সাদ্সি আদাদ তাহার নিজের বিবরণ হইতে জ্ঞানা মায় যে, তিনি পার্শ্ববন্ধী বাজাদের উপর প্রভুত্ত্বাপন করিয়াছিলেন। এই রাজারা তাঁহাকে নিয়-মিভরূপে কর দিতেন। তিনি সমগ্র মেনোপটেমিয়া জয় করিয়াছিলেন এবং ভ্রম্ধাসাগর প্রাপ্ত জ্ঞাসর হইয়া সেথানে নাকি নিজের বিজয়ত্ত্ত স্থাপনা কবিয়াছিলেন। সে যাহাই হউক, নিজে কিন্তু তিনি হাম্মুরাবির প্রাধান্ত খ্রীকার করিতেন, এবং তাঁহার রাজধানীতে একদল ব্যাবিলনীয় সৈক্ত ছিল।

ইহার পব অনেকদিন পর্যন্ত আাসিরিয়ার ইতিহাসে বিশেষ কোন উল্লেখযোগ্য ঘটনা ঘটে নাই। যথন কাস্সি-(ব্যাবিলনীয়রা কাস্ত্র বলিড) বংশীয় রাজা কারা-ইন্দাস্(Karaindash) ব্যাবিলনিয়ায় রাজ্য করিডে- ছিলেন তখন আাদিরিয়ার রাজ। ছিলেন অদিরবেল্ নিদেক্ (Asirbelnisheshu)। তাঁহাদের পর-স্পারের মধ্যে একটি দল্ধি হয়। ইহাতে বোঝা যায় বে, আাদিরিয়া আর ব্যাবিলনিয়ার অধীন নয় —সম্পূর্ণ স্বধীন।

ইহার পরের ২০০ বংসরের ইতিহাস আমাদের
সম্পূর্ণ অক্সাত। তাহার পরেই দেখিতে পাই মিশরের
আমিরিয়া ও
বিজয় সৈক্সদলের পদভারে পশ্চিম
ক্রিমান্যাট্র থখ্যা
ক্রিমান্যাট্র বিজয় সৈক্সদলের পদভারে পশ্চিম
ক্রেমিনিয়া ব্যারেলটাইনের সন্মিলিত
বাহিনী পরাজিত ও বিধবত হয়। ফলে সমগ্র দেশ
বিজয়ী ফারোওর পদানত হয়। গতিক দেখিয়া সম্রত্ত
রাজক্তবুল তাহার বশাতা খীকার করিলেন এবং
নিম্মিতরূপে কর দিতে প্রতিক্রত রহিলেন।
আ্যাসিরিয়ার রাজাও বোধ হয় ('অহ্বর-নাদিন্
আ্রিখ') তাহাকে সক্তুষ্ট করিবার জন্ত বহুমূল্য
উপ্টোকন পাঠাইলেন।

এইরূপে থথ মোসের হাত হইতে রেহাই পাইলেও এই সময়ে আারিরিয়ার ভাগ্যে ঘোর ছদ্দিন উপস্থিত হয়। কাংণ ইতিমধ্যে উত্তরদিক চইতে একদ**ল আর্যান্ধা**তি আসিয়া উত্তর মেসো-পটেমিয়ায় মিতালিরাজা (Mitanni) স্থাপন করে এবং আসিরিয়া রাজ্যের অনেকাংশ অধিকার করিয়াবসে। এমন কি, শৌসতর মিতারির ভাষিণতা (Shaushatar) নামে তাহাদের একজন বাজা "অর" দখল করিয়া দেখানকার ধনরত লঠন করিয়া লইয়া যান। তাবপর রাজা প্রথম স্থত্র্ব (Sutarna I) নিনেভ অধিকার করেন এবং সেধানকার দেবী ইষ্টারকে (ইন্ডার?) মিশরের রাজা তৃতীয় জ্ঞামেনহোটেপের নিকট পাঠান। রাজা তল্লভের (Dushratta = দশর্থ ?) সময়ও ইটার দেবীকে আর একবার মিশরে ষাইতে হয়।

ইহার অল্পদিন পরে ঘিতীয় অস্থরউবালিৎ
(Ashur-uballit) আাসিরিয়ার সিংহাসনে আরোহণ
ক্ষেম-উবালিৎ করেন। তিনি খুব পরাক্রমশালী
রাজা ছিলেন। ব্যাবিলনিয়ার
রাজা ঘিতীয় কারা-ইণ্ডাসের সজে তাঁহার কলা
খ্যালিতাৎ-সেকর' বিবাহ হয়। তাঁহাদের পুত্র
ছিতীয় কালাস্মান থার্কের (Kadeshman

Kharbe II) সিংহাসন-আরোহণের পরেই প্রজারা বিজোহ করিয়া তাঁহাকে হত্যাকরে। তথন অস্তর-

ভাাসিরিয়াও ত্বাল্লিং ব্যাবিলনিয়া আক্রমণ ব্যাবিলনিয়া করিয়া জয় করেন এবং দ্বিতীয় কুরিগল্জু (Kurigalzu II)নামে

তাঁহার আর এক দৈীহিত্তকৈ ব্যাবিদনের সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করেন। ব্যাবিদনিয়া অনেকটা অ্যাদিরিয়ার অধীন হইল।



যুদ্ধের দেবী---ইস্তার

এদিকে প্রজাবিক্তাহের ফলে মিতারির বাজ।
ছপ্রত্তের মৃত্যু হইলে ঐ দেশে অরাজকতা উপস্থিত
কিতারির পরাভব
হয়। এই স্থোগে অস্তর উবালিং
মিতারির শক্রদের সঙ্গে মিলিত
হইয়া ঐ রাজ্যের অনেকাংশ অধিকার করেন।
তিনি মিশরের রাজা চতুর্থ আামেনহোটেপের সঙ্গে
বজুহ স্থাপন করেন এবংপত্র বিনিম্ম করেন।

তাঁহার পুত্র এলিল্ নিরারি রাজা হইয়া ব্যাবি-লনের রাজা বিতীয় কুরিগল্জুর সলে যুক্ত করিয়া তাঁহাকে হারাইয়া দেন। ইহার ফলে ছই দেশের সীমানার পুননির্ণয় হয়।

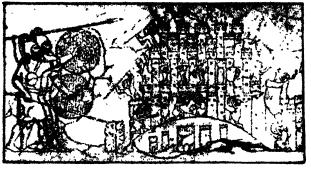
### প্রথম আসিরিয় সাম্রাজ্য

এরিল্ নিরারির পৌত্র প্রথম আদাদ্ নিরারি (Adad Nirari I) যথন রাজা হন, তথন হইতে

### 🕶 অ্যাসিবিহ্যা 🗠

আাদিবিষা সামাজোর পাতন হয়। তিনি চারিপাথেব বাজ্য জয় কবেন।
পাথেব বাজ্য জয় কবেন।
ক্রমণ পাষা
ব্যাবিলনের রাজা তৃতীয় কুরিগণ্জু
এবং পরে নাজি-মক্তাদের সংজ
যুদ্ধ করিয়া তাঁহাদের চুই জনকেই প্রান্ত করেন।

কবিয়া টুকুলটি নিনিব্বাঞ্ধানী আনকার কবেন।
নগবের প্রাচীব তিনি ভল কবেন
বাাবিলন বিজয় ধ আনেক নাগবিককে হতা।
করেন। ভারপর এখানকার মাড়ুকিব মন্দির
নুঠ করিয়া দেবমুর্ভি সহ নিজের দেশে প্রভাবের্জন



कर्त्रम । वाकाणांभरभव জন্ম উত্তব ও দক্ষিণ বাাবিলনিয়ায় হিনি আঃ[স্বির কণ্মচাৰা नियक करवन। निष्क "প্রনোধ ও আকাচেত উপাধি কবেন। সাত বংসা ব্যাবিলনীয়েবা 454 বিম্লোহ করে ও টুকুলাট নিনিবকৈ ভাডাইয়া দেয়। এদিকে স্বাসিরিয়াই তাহার পুত্র অহর

অহ্ব দেশেব দৈৱগণ হুৰ্গ আক্ৰমণ কৰিতেছে

তাহার পুত্র প্রথম শালমানেসাব (Shalmaneser I)
পিতাব মতই বীর ছিলেন। তিনি ইউফেটিস্
নদী পাব হইয়া সিরিয়াদেশের
প্রথম শালমানেসার উত্তরন্থিত মৃস্রি দেশ অধীন
করেন। তবে তাহার সর্ব্রাপেক্ষা বত কীন্তি মিতালি
রাজ্য জয়। শালমানেসাব তধু যোগ্ধাই ছিলেন না;
রাজ্য-শাসনেও তিনি বিশেষ কৃতির দেশাইয়াছেন।
তিনি তাহার রাজধানী, অক্সর হইতে নবনিম্বিত
কালাস্বরে (Kalah) স্থানাভরিত করেন।

তাঁহার মৃত্যার পর তাঁহার পুত্র প্রথম টুকুল্টি
নিনিব্ (Tukulti Ninib I) রাজা হন। এই রাজার
রাজ্যকালে আাসিরিয়া রাজ্যের
ক্ষমতা বিশেষ বৃদ্ধি পায়। টুকুল্টি
নিনিব্ উত্তর ও পশ্চিমাধিকে
অবস্থিত রাজাগুলির গলে যুদ্ধ করিয়া তাহানিগকে
পরাজিত ও বিধবত করেন। তাঁহার এই অভিযানের
কলে আন্দোনিয়া দেশের উত্তর-পশ্চিমে অবস্থিত
ফুদ্র নাইরিদেশের (Lands of Nairi) ৪০ জন
প্রাজা রাজাচাত হন।

ইহার পর তিনি ব্যাবিগনিয়া বিশ্বয়ে মন দেন। ব্যাবিলনের রাজা ঘিতীয় কাস্টিলিয়াস্কে পরাব্দিত



রাজ-অন্নচরেরা সিংহাসন বহিয়া লইয়:য়াইতেছে
নাজিরপাল বিজোহ করে। ইহার ফলে টুকুল্টি
নিনিব্ মৃত্যুমূবে পতিত হইয়াছিলেন।

\*

টুকুল্টি নিনিব্ যেমন অসাধারণ যোদ্ধা ছিলেন রাজ্ঞাও তিনি তেমনই বড় ছিলেন। অস্থর সহরে তিনি একটি বিশাল মন্দির ও সৌধ নির্মাণ করেন।



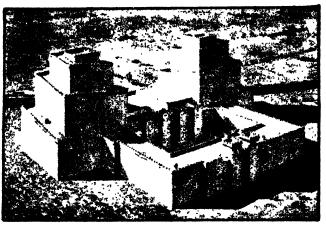
ব্যাবিলনের মার্ড ক দেবতা

हेकूलि निनिद्वत মৃত্যুর পর কতকগুলি অপদার্থ রাজা অহবের সিংহাসনে বসে। তাহাদের সময় আাসিরিয়া রাজশক্তির জ্ৰুত প্তন হইতে থাকে। এই স্থোগে ব্যাবিলনিয়া আন্তে আন্তে আদিবিয়াব অনেকাংশ জয় করে। রাজা অফুরদানের সময় (আফুমানিক খু: পু: ১১৬৭) इट्टेंट আবার অ্যাসিরিয়ার বাজশক্তির পুনর-ভাথান আবন্ত হয়।

অহন-বিশি-ঈশী (Ashur-rishi-ishi) রাজা হন।
অহন-বিশি-ঈশী একজন শক্তিশালী রাজা ছিলেন।
তিনি দক্ষিণ ও পূর্ববিদেক লুলুমলি ও কুতির
সক্ষে যুদ্ধ করিয়া তাঁহার আধিপতা বিভার
করেন। ইহার পর তিনি ব্যাবিসনরাজ প্রথম
নের্কাদ্েজারের (Nebuchadnezzar I) সক্ষে
যুদ্ধ করিয়া তাঁহাকে হারাইয়া দেন ও মেনোপটেমিয়া
পুনরুদ্ধার করেন। ধর্মসম্বদ্ধেও তিনি বিশেষ
সজাগ ছিলেন। রাজধানী অহরে তিনি অহ ও
আদাদ্ দেবের জন্ত একটি বিশাল যুখ্যমন্দির নির্মাণ
করিতে আরম্ভ করেন। মন্দিরটি শেষ করেন
তাঁহার পূত্র প্রথম টিগলাথ পিলেসার (Tighath
Pileser I = Tukulti-pal-esharra)।

প্রথম টিগলাথ্ পিলেসাবের সময় হইতে
আাসিরিয়ার ইতিহাসের সর্বাপেক। গৌরবময়
ব্রথম টিগলাথ
পিলেসার।
ব্য:প্র ১১১০১,
বি প্রায় অন্তমিত। তুর্দ্ধর্য
থেতাব (Khata = Hilfates) দিন

ফুরাইয়া আসিয়াছে। এদিকে নবীন আ্যাসিরিয়া আজ যৌবন-বলে বলীয়ান্। গুণু চাই একজন উপযুক্ত নেতা এই অদম্য শক্তিকে চালিত করিবার



অহ্র দেবতাদের যুগা মন্দির

তাঁহার পুত্র মৃতাভিলয়জুর পরে তাঁহার পৌত্র অস্ত। ঠিক সেই সময়েই অক্লান্তকৰ্মী, দৃঢ়প্রতিক্ত

টিশ্লাথ পিলেদার আাদিরিয়ার কর্ণধার ইইলেন।
তিনি প্রথমে মেদোপটেমিয়ার উত্তর-পশ্চিমে
অবস্থিত কতকগুলি হিটাইট্ বাজ্যু জয় কবেন।
ভারপর আবেনিয়া পার্কাত্য প্রদেশের দিকে
অগ্রসর হন।

এই তুর্গম পাকতিয় প্রদেশের আমশেষ বাধা অতিক্রম কৰিয়া একে একে তিনি অনেকগুলি রাজা-অলয় করেন। যাহারা বাধা দিতে চেষ্টা করিল, তাহাদেব রক্তে পাৰ্কতা নদী লাল হইয়া গেল। স্থানে স্থানে মতদেহের পাহাড় জমিতে লাগিল। গ্রাম নগর नुर्धन कविद्या, वाफी-धत जालाविद्या लात्कत मरन সম্বাস সৃষ্টি করিতে করিতে বিজয়ী বীর স্বাগ্রসব হইতে লাগিলেন। যাহাব। আহাসমর্পণ করিল ভাষাদের বন্দী কবিয়া আাসিবিয়ায় পাঠান হটল। যে বাজারা তাঁহার- আফুগতা স্বীকার করিল ভাহাদেব নিকট হইতে কব ও উপঢৌকন আদায় কবা হইল। এইভাবে তিনি প্রায় সমগ্র নাইরি দেশ (Lands of Nairi) জয় কবিলেন। তাবপর তাহার বিজয়-কাহিনী চিবস্মরণীয় করিবার জন্ম টাইগ্রিস নদের একটি উৎসের মুখে পাহাড়ের গায়ে তিনি তাহার প্রতিমূর্তি ও বিজয়-কাহিনী খোদিত কবেন।

এই সময়ে কয়েকদল আারামীয় সেমিটিক লোক (Aramæau) इंडे(क्विंग नमीव शृव शांत मथन করিয়া বসিয়াছিল। টিগু লাখু সিরিয়া ও পিলেদার ভাহাদিগকে বাধা দেন ফিনিশিয়া বিজয় এবং কতকদলকে নদীর অন্য পাবে ভাডাইয়া দেন। তারপর ইউফেটিস পাব হইয়া মুদ্রি (Musri) ও পিটক দেশ(Pitru)জয় করেন। এখানে তিনি আসিরীয় উপনিবেশ স্থাপন করেন। ইহাতেও তাহাব বিজয়লিন্দা পবিতৃপ্ত ২ইল না। ওরণ্টিদ (Orontes) নদা পার হইয়া অবশেষে তিনি ফিনিশিয়া দেশে উপস্থিত হইলেন। আর্ভাদ (Arvad) সহবে পোতারোহণ করিয়া তিনি ভূমধা-সাগরে একটি প্রকাণ্ড জলজন্ত শিকার করেন। এথানে তাঁহার কাছে মিশরের ফ্যারাওর দৃত উপচৌকন লইয়া আসে। ফ্যারাও নাকি তাঁহাকে একটি কুমীর ও জলহন্তী পাঠাইয়াছিলেন।

দেশে ফিরিয়া এবার তিনি বাাবিদ্যানিয়া বিজ্ঞানে দেন। প্রথমবার তাঁহার আক্রমণ বার্থ হয়,

ও পরান্ধিত হইনা তাঁহাকে হটিয়া আসিতে হয়।
আসিবলরা বাাবিলনরাজ মার্ডুক-নাদিন-আথি
(Marduk-nadin-akhi) আ্যাসিরিয়া
আক্রমণ করিয়া আদাব ও সালা
(Shala) দেবতার মুর্তি ব্যাবিলনে লইয়া যান।
ইহাতে না দমিঘা টিগলাথ পিলেসার আবার
ব্যবিলনিয়া আক্রমণ করেন। এবার তাঁহার কাছে
ব্যাবিলনরাজ সম্পূর্ণভাবে পরান্ধিত হন। ব্যাবিলন,
ওপিস্, সিপ্পার প্রভৃতি প্রধান সহরগুলি তিনি
অধিকার করেন। রাজধানীব ত্র্গপ্রাকার ভূমিশাৎ
করিয়া তবে তিনি দেশে ফিরেন।

এই যোদ্ধা রাজার দৃষ্টি সূব দিকেই ছিল। তিনি তাঁহার রাজধানী পুনরায় কালা হইতে অহুরে লইয়া আসেন এবং পুরাতন সহরটি আবার নৃতন कतिया गर्फन। देहात, जानान ७ त्वरनत मन्मिर्त्रत তিনি সংস্থার করেন। পুরাতন রাজাশাসন প্রাসাদগুলি ধ্বংসম্ভ পে পবিণত त्मखनि श्रनिर्माण करते । विराम হইয়াছিল। হইতে ফুন্দর ফুন্দর গাছ আনিয়া রাজধানীতে মনোরম উন্থান রচনা করেন। এইভাবে সহবের সৌন্দর্যা শতগুণে বর্দ্ধিত হইল। দেশের স্থানে স্থানে তিনি শস্থাগার স্থাপন করিয়াছিলেন। দুরদেশ হইতে ছাগল; ভেড়া হরিণ প্রভৃতি জীবজন্ব আনিয়া দেশের সমৃদ্ধি বৃদ্ধি করেন। প্রজাদের হ্রথ-স্বাচ্ছদ্যের দিকেও তাঁহার নন্ধর ছিল।

টিগলাথ্ পিলেসার খুব শিকার কবিতে ভালবাসিতেন। নিজের হাতে তিনি অসংখ্য সিংহ, হন্তী ও অক্তাক্স বস্তুজন্ধ শিকার করিয়াছিলেন।

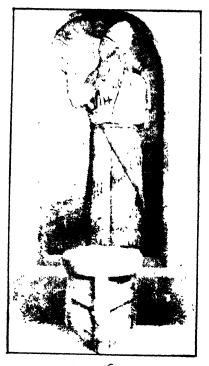
টিগলাথ পিলেসারের পরে তাঁহার পুত্র অহ্বর-বেল্কলা রাজা হন। অহুর বেল্কলা রাজধানী নিনেভ সহরে লইয়া যান। কিন্ত আ সিরিয়ার তিনি তাঁহার পরবর্ত্তী শক্তিহাস রাব্দারা টিগলাথ পিলেসারের অযোগ্য বংশধর। তাঁহাদের সময় রাজশক্তির আবার জ্রুত পতন আরম্ভ হয়। বিদেশী শক্তরা একে একে রাজ্যের বিভিন্ন অংশ অধিকার করিতে লাগিল। মনে হইল যেন অ্যাসিয়িয়ার গৌরবের দিন শেষ হইয়া গেল।

আবার আাদিরিয়ার পূর্বংশক্তির প্রকাশ পাইতে আরম্ভ করিল, তৃতীয় আদাদ নিরাবির সময় (১১১— ৮৮২) হইতে। আবার সে ইডম্ভড: চারিদিকে

## শিশু-ভারতী

দৃষ্টি সঞ্চালন কবিতে আরম্ভ করিল। প্রথমে ভাহার নজর পড়িল দক্ষিণ দিকে। আদাদ নিরারি বাাবিলনবাজ সামাস-মুদান্মিক্কে (Shamashmudammick)সম্পূর্ণরূপে পরাস্ত করেন। সামাদের প্ৰব্ৰী রাজা নৰু-স্ম্-ইস্মৃত পুনরভাষান (Nabu-Shum-Ishkun) তাঁহার সহিত যুদ্ধ কবেন। তিনিও ভীষণভাবে পরাজিত হন এবং কয়েকটি সহর অনুসিরিয়া শাংসিরিয়া ও রাজের হাতে সমর্পণ করিয়া সভি বাবিলনিয়া কবেন। আদাদ নিরারির পুত্র ঘিতায় টুকুল্টি নিনিব পশ্চিম ও উত্তর্দিকে অভিযান করেন। আর্শ্বেণীয় জার্মেনিয়া বিজম পাকাতা প্রদেশে ভানে হুদের (1. Van) পার্শবর্তী উরাট্ (Urartu) দেশের

তৃতীয় অহর নাজিরপালও খুব বড় ্যোদ্ধা ভূতীয় অহর নাজির পূর্বাদিকে অভিযান করেন। আর্মেণীয় পার্বতা দেশে তিনি নাকি অনেক রাজ্য ও জাতি জয় করেন এবং তাহার পিতার স্বায় তিনিও টিগলাথ্ পিলেদারের মৃর্ত্তির নিকট নিজের প্রতিমৃত্তি থোদিত করান। ছঃথের বিষয় নৃশংস্তাও তিনি বড কম্যাইতেন না। যেখানেই তিনি গিয়াছেন বাড়ী-ঘর লঠপাট করিয়া জালাইয়া পোডাইয়া নিবিচারে স্ত্রী-পুরুষ নৃশংসভাবে হত্যা করিয়া, লোকালয় শ্মশানে পরিণত কবিয়া মাহুষেব মনে একটা বিভীষিকার স্ষ্টি করিয়াছেন। মাহুষের জীবনের কোন। মূল্য তাঁহার কাছে ছিল না। উৎপীডিতের জান্দন-



অন্তর নাজ্বিপাল



রাজা ইসাবভান

সীমানা প্র্যান্ত তিনি অগ্নার হন। তাহার পুত্র রোল কোনদিন তাঁহার কানে পশে নাই। গৃহ-

### - আাসিবিয়া +

হারার টোখেন জল ডিনি উপেক্ষা করিয়াছেন। নিধ্যাতিতের হৃদয়ভেদী ধন্ধণ। তাঁহার বীর হৃদয়ে কোনরূপ ভাবাস্কর উপস্থিত করিতে পারে নাই।

তা থাক—উত্তর ও পূর্ব্ব বিজ্ঞারর পব তিনিপশ্চিমদিকে অভিখান করেন। প্রথমে তিনি
মেসোপটেমিয়ার আরামীয় রাজ্যকিবিলা ও কিনিশিলা
প্রতি ক্ষয় কবেন। পবে ইউফেটিদ
নদী পার হইয়া উত্তর দিবিয়া জয় কবিয়া লেবানন
পর্বত অভিক্রম করেন। এখানে তিনি টায়ায়
দিডন আভাদ প্রভৃতি ফিনিশীয় রাজ্যদমূহেব
রাজ্ঞাদেব নিকট হইতে কর আদায় করেন।

এই বিশাল সাম্রাক্যণাসনের পক্ষে রাজ্ঞ্যনী অহ্বর মোটেই উপযুক্ত ছিলেন না। কাজেই, অহর নাজিরপাল অধিকাংশ সময় কালা সহবেই অবস্থান কবিতেন। এই সহরের উন্নতিসাধন ও সৌন্ধাসম্পাদনের জন্ম তিনি বিশেষ গত্ত্ব লইয়াছিলেন। পুরাতন মন্দির ও প্রাসাদেন তিনি সংধ্যার করেন।
সহবে পরিজাব পানীয় জ্বল সরব্বীহের জন্ম একটি সাল কাটান। রাজ্ঞপথের পার্যে নানাবিধ মৃত্তি ও প্রত্বত্ত্ত স্থাপনা করেন। তাহা ছাড়া নিজ্বের বাসের জন্ম একটি স্থন্দর প্রাসাদ নির্মাণ করেন। এই প্রাসাদের বিলিফ্ চিত্রাবলী (বিশেষতঃ শিক্ষারের ছবিগুলি) থ্যই স্থন্দর।



শিকারের চিত্র

অস্ত্র নাজিরপালের পব তাঁহাব পুত্র তৃতীয়
শালমানেসাব রাজা হন। তিনি দীর্ঘকাল (খুঃ পঃ
৮৫৮—৮২৪) রাজ্বত্য করেন। শালমানেসার
পিতার মতই বীর যোগ্ধা ছিলেন,
তৃতীয় শালমানেসার
এবং তাঁহারই পদাক অন্তুসরণ
করেন। যুগ্ধই তাঁহার জীবনের মূলমন্ত্র ছিল।

বিশ্রাম বং শান্তি কাহাকে বলে তিনি জানিতেন না। তিনি নাকি ইউদ্দেটিস্ নদীর অপব পারে ২৪ বার অভিযান করেন।



শিকারের চত

কাবথেমিদের হিটাইট বাজার নিকট হইতে
তিনি কর আদাম কবেন। তারপব ওর্পিট্ নদী পার হইয়া এশিয়া মাইনরে দিবিয়া-পালেটাইন সাইলিসিয়া আক্রমণ কবেন। প্র-অভিযান বংসব তিনি সিরিয়া আক্রমণ করিয়া সিরিয়া পাালেটাইনের রাজাদের সম্মিলিত বাহিনী কর্করের যুদ্ধে (Karkar)



াশকারের চিত্র

পরান্ত কবেন। এই বাজাদের মধ্যে ভাষাস্কারের (Damasens) রাজা বিভীয় বেন্-হাদাদ্ ও ইত্রেলের রাজা আহাবেব (Ahab of Israel) নাম উল্লেখ-দোগা। মিশবের ভ্যারাও তাঁহাব বিরুদ্ধে সৈল্প পঠিইয়াছিলেন। এখানে বাধা পাইয়া ভিনি দেশে ফিরিয়া আসেন।

এইবার তিনি উত্তরদিকে অভিযান করেন। নাইবিদেশ জয় করিয়া টাইগ্রিদেব উৎপত্তি-স্থলে

পিতা-পিতামহেব মত নিজের মৃত্তি খোদিত করান। म कि न मि ट क ব্যাবিলন প্ৰাস্থ ভাঁহার প্রস্ত হ বিস্তার কবেন। এমন কি. পারভা উপসাগরের তীব্রস্থ ক্যালডিয়া(Chaldea) প্রদেশের শক্তিশালী সামস্থ বাজাদের নিকট ङ्केट्ट प আদান করিয়া-ছিলেন। পর্বাদিকে জ্ঞাগস পর্বাতে ব তিনি অভিযান কবেন।

দিবিয়ায় গমন কবেন এবং হামাণ (Hamath) আক্রমণ কবেন। এবাবও তিনি

পাঁচ বৎসব প্রে



শালমানেশাবের থোদিত

বেন্হাদাদ ও অক্সান্ত রাজাদের সন্মিলিত বাহিনীর কাছে বাধা পান। তৃতীয় বার অভিযান কবিয়াও বিশেষ হুবিধা কবিয়া উঠিতে পারেন নাই।

ইতিমধ্যে ডামাশ্বাস্ রাজ্যে বিপ্লব উপস্থিত হয়। হাজেল (Hazael) নামে একজন রাজকর্মচাবী বেন্থাদাদ্কে হত্যা করিয়া সিংহাসন অধিকাব করেন। কাজেই, সিরিয়া প্যালেটাইনের আজাদের বরুব ভালিয়া যায়। এতদিন শক্তিশালী ভামাত্মাস্রাজ্ঞাই অ্যাসিরিয়ার অগ্রসনের বাধা দিয়াছে। এবার যথন চতুর্থ বার সিরিয়া আক্রমণ করিয়া শালমানেনার ডামাস্কাসের রাজ্ঞা পাজিলুকে (Khazailu) পরাস্ত করেন (তিনি কিন্তু রাজধানী অধিকার করিতে পারেন নাই) তথন তাঁহাকে বাধা দিবার কেহই রহিল না। স্ততরাং দক্ষিণদিকে অগ্রসর হইয়া তিনি টায়ার, সিডন্ প্রভৃতি ফিনিশীয় রাজ্ঞার বাজাদেব নিকট হইতে কর আদায় করেন। ইত্রেলে ন্তন রাজা জেহ (Jehu) তাঁহার বশ্বতা শীকার করেন এবং নানাবিধ উপটোকন দেন।

জীবনেব শেষ কয় বংসর শালমানেসার বাজধানী কালার মন্দিব সংস্কাবে ও সৌন্দর্য্যবন্ধনে অতিবাহিত করেন।

শালমানেসাবের পর তাঁহার পুত্র" পঞ্চ সামসি আদাদ ও তাঁহাব পৌত্র চতুর্থ আদাদ নিরারি রাজা হন (৮১০-৭৮১)। আদাদ চতুর্থ আদাদ নিরারি নিবারিও খুব শক্তিশালী বাজা ছিলেন। ভামাস্কাদ অধিকার করিয়া তিনি ইহাকে করদ রাজ্যে পরিণত করেন। ভূমধ্যসাগরের তীববর্তী ফিনিশিয়া ও ফিলিষ্টিয়াদেশ (Philistia) তাঁহাব আহুগতা স্বীকার করে ও করপ্রদান করে। দক্ষিণে বাবিলন ত তাঁহার অফুগত ছিলই : এমন কি. চর্দ্ধর্য ক্যালভীয় রাজ্ঞারাও তাঁহাকে নিয়মিত কর দিতেন। উত্তবে নাইরি দেশেও তাঁহার প্রভত্ন বিস্তার করিয়াছিলেন। প্রকাদিকে জ্বাগ্রদ পর্বত অভিক্রম করিয়া তিনি নানাজাতীয় লোকের সঙ্গে যন্ধ করেন এবং ভাহাদিগকে পরাঞ্জিত করেন। ইহাদের মধ্যে "মাদাই"জাতি (Medes=মীড) উল্লেখযোগা।

আদাদ্ নিরারির পর আবার অ্যাসিরীয় শক্তির পতন আরম্ভ হয়। তাঁহার বংশধরের। তুর্বলি ও অপদার্থ চিল।



## বায়ু

বৈজ্ঞানিকের। বলেন, ছয় । ৪ মাইল উচ্চ পথান্ত বাতাদের উদ্ভাপ ক্রমণ:ই কমিতে কমিতে বরকের বহু ডিগ্রি নিমে চলিয়া যায়। পরে আরও পনের মাইলে নাকি

السالسا

HARADAN PERSONAN AND THE BOUNDANE OF THE STATE OF THE STA

ন্ত্র পার পর

ক্রমণ: ই পুদ্ধি ইইতে থাকে।

হয় মাইল উপরে মেঘ পাওছা

যায় না। অতি উচ্চে

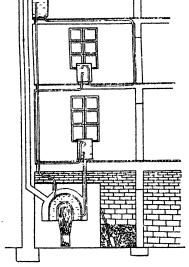
অবস্থিত উত্তপ্ত বায়্ত্তরে নক্ষরপিওগুলি

প্রবেশ করিলে জনিয়া উঠে। সেই জনস্থ

A STANDARD OF THE PROPERTY OF

पूर्वः

বাতাদের ভিতর দিয়া আমরা তিন রকমের উত্তাপ পাই। এক পাই গবম বাতাদ উর্দ্ধে উথিত হওয়ার ফলে, উত্তাপ নিম হইতে উর্দ্ধে সঞ্চারিত হয়। শীতের দেশে, নীচের তলায় কোনও ঘরে আগুন জালাইয়া, মেঝে ও প্রাচীবের ভিতর দিয়া নল চালাইয়া এইরপভাবে দোতলা ও তেতলা বাড়ীগুলি গরম রাধা হয়। দিতীয় উপায়ে পাই, উত্তপ্ত বায়ুকণা—তৎসংলগ্প অন্ত বায়ুকণায়



স্থোর তাপ চারিদিকে স্রলরেখায় প্রবাহিত হইতেছে

উত্তাপ প্রবাহিত করিলে। ইহা কণায় কণায় সংস্পর্শে হয়। তৃতীয় পাই, উত্তাপের নিজম গতির ফলে। ইহা সরল রেগায় চলে ও ইহার প্রবাহের জন্ত কোনও পদার্থকণার আবশ্যক করে না। বিশাল দৃষ্টে স্থোর উত্তাপ এই প্রকারেই প্রবাহিত হয়।

নল দিয়া নীচের তলা হইতে উপরে গ্রম বাতাস চালাইয়া বাড়ী গ্রম করা হইতেছে কিছু পরিবর্ত্তন পাওয়া যায় না। পরে উত্তাপের আমাদের উদ্ধেপুর বাগুমণ্ডল থাকান, ত্র্যার ভাঁত্র উত্তাপ হইতে আমরা থানিকটা রক্ষিত হই। ত্যোর এত গমনের সঙ্গে সঞ্চে আমাদের ধরণী ত্যার-শীতল হইয়া পডে না, ইচাও এই পুরু গাত্রাবরণের জ্যা।

অদৃত্য বাযুকে শৈতা প্রয়োগে দৃত্যমান্ তবল

কলের মত কবা হইয়াছে ও তাহা নানাবিধ

বৈজ্ঞানিক কাষাকলাপে বাবহৃত্য

বাযুক তালাং হইতেছে। ইং। অব্তাই দেশিতে

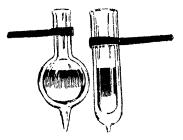
কবা দেশিতে উবিবা যায়। তবল

বাযুক ত সাড়া, আনাজ কবিলে পাব কি গ জল

লাপমান মন্ত্রৰ শূল আকে বনফ হন ও সেকিলেও

তাপমানে ২০০ অবৈ ফুটিতে পাকে। ফুটিস্থ জ্লোল
ভাপ হইতে ববফে নামিতে গাড়ী। ঠাপ্তাব প্রয়োজন,
প্রায় তাব ভবন শৈতে। বায় তবলীভূত হয়।

ভোমনা খনেকেই থাখোস ফ্লান্থ। Thermos flock)
দেখিয়া খাকিবে। এই বোজনগুলিব কাঁচেন ওবল
দেশুবান। আন, দেশুবাল চুইটিব
খাক্ষান বোজন ফানের ফাঁক বায়ুন্তা। বায়ুন্তা
ভাবে ও কাচেন ওবল প্রাচীবে উভাপের চলাচলের
প্রতিরোধ হয়। ভিত্তের প্রাচীরে যদি কপার



থান্যোস বেশ্বিক

লেলে দেওয়া হয়, তাহা হইলে সাবও স্থানতথিক ভিতৰে উভা পৰ প্ৰবেশ বন্ধ কৰা হয়। কপাব প্ৰলেপেন্দ আমানায় প্ৰভা আলোব মহ উভাপে ঠিকবিয়া বাহিব হইলা মানু। কইন্ধন হওয়ায়, এই নক্ষম বোভলে শীতল প্ৰাণ বহু ঘণ্টা অবধি উষ্ণ আৰু কিছুক্ষৰ অবধি বাখিং লাবা মায়। অভা কেন্দ্ৰ পাৰ্লে বাখা মায় না।

নীলাকাশ কবির আনন্দের বস্তু। আকাশের ঐ

ক্ষনর নীলিমা আমাদের এই বাছুর জন্তই। বাছু

সপ্পতিবে অচ্ছ নহে। স্বয়ালোকের নীলাংশ

বায়ুকণায় বেশী পরিমাণে চারিধারে বিচ্ছুরিত

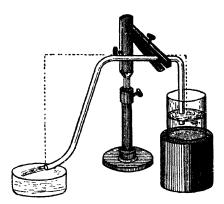
ইইয়া পড়ায় আমরা বাছুর বিশাল সমুস্রকে নীলাভ

দেখি।

"বায়ুর" পূর্বা-সংখ্যায় ভোমরা যে সাইফন কথাটি পড়িয়াছ, ভাহার একটি উদাহরণ পর প্রার ছবিতে দেওয়া গেল। একটি রবারের নল জলপূর্ণ করিয়া ভাহাব চুইটি মুখ চাপিয়া, একটি মুখ কোনও পাত্রে জলেব নীচে ভাল করিয়া ডবাইয়া থলিয়া লাও। ভাহার অন্ত মুখটি পূর্ব মুখেব নীচে ঝুলিয়া পড়িলে, त्मरें भूशि युनिया माछ। तमशित्व भारत्वत <del>ये</del>न নলেব ভিতর দিয়া বাহিরে পড়িতে থাকিবে। প্ডিবাৰ পৰের পাত্রের জ্বল নল বাহিয়া উপরে উঠিতেছে, ইই৷ আশ্চথা নহে কি ৷ এই আশ্চয় ব্যাপার, নলটিব ছুইটি মুখে বায়ুর বিভিন্ন চাপের জন্ম হয়। বড় হইথা বিজ্ঞান-শান্ত পাঠে ইহা আরও বিশদভাবে বৃথিতে পাবিবে। এইরপে পাতের গাতে নল না বদাইয়া দাইফন সংযোগে তাহাব ভিতরকার সমন্ত বা উপরিষ্ঠিত থানিকট। পাত্রে স্থিত তরল পদার্থ বাহিব করিয়া লওয়া যায়।

পর্কেই বলা হইয়াছে, বাযু একটি মিশ্র পদার্থ। অধাং অক্সিজেন ও নাইটোজেন মিলিয়া এমন একটি ভতীয় বস্তুর উদ্ভব করে বায়ৰ মিল পদাৰ্থেৰ নাই, যাহাব গুণাবলী অক্সিজেন ও নাইটোজেন হইতে সম্পূৰ্ণ বিভিন্ন গোগিক পদাৰ্থ হউতে হইলে, প্ৰাকৃতিক নিয়ম্সিদ যে সমন্ত বিশিষ্টতা থাকা প্রয়োজন, বায়ুতে তাহা নাই। ইহাতে অকিজেন ও নাইটোকেনের পরিমাণে, অবস্থামুখায়ী অল্লাধিক তাবতমা দর্বদাই ঘটিতেছে। যৌগিক পদার্থ হইলে ভাহা হইত না। মনীধী শীল (Scheele) ১৭৭২ সালে বায়ুতে এই তুইটি গালের অভিত প্রথমে উপলব্ধি করেন। ভাহারপর ক্যাভেতিশ(Cavendish) नीनश्रम्थ मनीयीगंग व्यष्टिनि (Priestley) ६ माडियमिरयत (Lavoisier) নানাদিক হইতে ইহার সভাতা প্রতিষ্ঠিত করেন। লাভয়সিয়েরই ফ্রা**জিটনতত্ত** উন্টাইয়। দাহক্রিয়ার প্রকৃত তথ্য বাহির করেন। ক্রমান্তরে পরীক্ষায় ১৮৪৬ সালে মনীযি বনসেন

(Bunsen)-কর্তৃক বায়ুমিশ্র পদার্থ বলিয়া সম্পূর্ণরূপে ' স্থ প্রভিষ্ঠিত হয়।

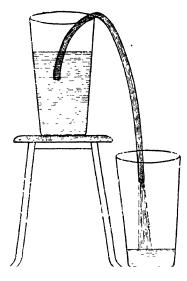


জলপূর্ণ নলের অন্ত মুখ দিয়া জল বাহির হুইতেডে পুরে অক্সিজেনের অস্তিষ্ট না জানা থাকায় দুখন ক্রিয়ার সভা ভথা জানা ছিল না। বয়েল (Boyle),



ষ্টাল (Stahl) প্রভৃতি পণ্ডিতগণ ভাবিতেন যে, দহে

পদার্থে ফ্রোঞ্জিইন (Phlogiston) নামক দহনশাল বস্তু আছে। কাঠাদির দাহে বা ধাতু প্রভৃতিব



क्षवश्रुर्व नत्वत्र ऋग भूथ पिया क्षव वाहित इटेटलहा ভূমীকরণে তাহারই নিগমন হয়, ইহাই সেকালের ফ্রোজিষ্টনত্ব।

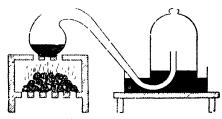
ভোমরা অঝি জেন ও নাইটো-জেনকে বাতাদ ংইতে কি করিয়া করিতে পৃথক পারা যায়, ইহা জানিতে নিশ্চয়ই



বাারণ বুনসেন কৌতৃহল বোধ করিতেছ। আত্সীকাচের দারা

ক্যাভেণ্ডিশ

হুৰ্যাতাপ কেন্দ্ৰীভূত করিয়া, তাহাতে পারদভন্ম প্রবশভাবে গরম করিয়া মনীধী প্রিষ্টলী তাহা হইতে অক্সিজেন নিগত করান। ল্যাভয়সিয়ে নিজের পরীক্ষায়, একটি বক্তগ্রীব বোতলে (retort) পারদ গরম করেন। বোতলের গলদেশ হাতীর ভঁড়ের ু্্যায় : সেহ' ব্ৰু গানিকটা আর একটি পারদপূর্ণ বাটিতে ড্বাইয়া মুখটি পারদের উপর জাগাইয়া রাখা হয়। ইহার মুখের উপর, সার একটি একম্থবদ্ধ বাতাদ্পূর্ণ পাত্র উবুড় করিয়া দেহ বড় বাটির পারার ভিতর থানিকটা ডুবাইয়া রাথা হয়; চারিদিকে বাহিব হইতে ভিতরে বা ভিতর হইতে বাহিরে চলাচল রহিত হয়। ছবিতে বাবস্বাটি হৃদয়ঙ্গম করিতে পারিবে। এখন বক্রগ্রীব বোতলটি উত্তপ্ত করিতে থাকিলে, তাহার ভিতরের ধীরে ধীরে বোতলের ভিতরে ও সেই উব্ড-করা পাত্রটির ভিতরের বায়ুর অক্রিজেনের সহিত সংযুক্ত হইতে থাকে ও পারদ ভস্মে পরিণত হয়। ফলে অফিজেনের অর্থানে ভিতরের কমহহতে থাকায়, সেই উবুড় করা পাত্রেব ভিতর পারদ প্রবেশ করিতে বাহির হইতে ভাহার ভিতর কতথানি পারদ উঠিল ভাহা হইতে ভিতরে কতথানি খলিজেন অওচিত হইল, ব্রিতে পারা যায়। এইরপে দিবারাত্রব্যাপী পরিশ্রমে সন্ধীক মনীধী ল্যাভয়দিয়ে কিছু পার্দ-ভন্ম প্রস্থত করেন ও উপরিউক্তভাবে কতপানি অন্তহিত হইল, ভাহা জানিয়া a[e] | এখন সেঠ



বোতলটি উত্তপ্ত কসিতে থাকিলে পারদ-ভন্ম ভগ্ন হইতে থাকে

পারদ ভত্ম আবার একটি অন্তর্ক্ষপ বক্রপ্রীব বোতলে বা শুগুবৎ নল সংগ্রু একটি পাত্রে উত্তপ্ত করা হয়। এইবার ইহার মুথ অত্য একটি পাত্রে পারদে ডুবাইয়া রাথা হয় ও একটি একমুথবদ্ধ নল পারদে

পূর্ণ করিয়া তাহার মুখ বাটির পারদে ডুবাইয়া সেই বক্রগ্রীব বোতলের মুখের উপর সংযুক্ত করিয়া, ন নলটিকে দণ্ডায়মান অবস্থায় রাথা হয়। বোতলটি উত্তপ্ত করিতে থাকিলে পারদ-ভন্ম ভগ্ন হইতে থাকে। মনীধী ল্যাভয়সিয়ে দেখিলেন যে, বাটর ও নলের দিয়া বুদ্দ কাটিয়া যে বায়বীয় পারদের ভিতর পদার্থ নলটিতে আদিয়া জমা হইল, তাহা অক্সিজেন ও আয় চনে যে পরিমাণ অক্সিজেন পারদ করণে অন্তর্হিত হটয়াছিল, সেই ভন্মের বিশ্লেষণে, ঠিক সেই পরিমাণ্ট বাহির ২০য়া আসিল। এইরূপ প্রক্রিয়ায় বাতাসে অক্সিজেন ও নাইটোজেন আছে ও কাহার কত পরিমাণ ভাহা মনীযী বাহির করেন ও কাহার সংযোগে ভস্ম হয়, সেই মৃশতত্ত্বে সন্ধান পান।

বাতাদে পারদ ভন্ম করিয়া তাগ ইইতে বা বেরিয়ম অক্সাইড নামক পদার্গ উত্তপ্ত করিয়া বাতাদের অক্সিজেনে বেরিয়ম পেরেংকাইড নামক পদার্গে পরিণত করিয়া, দেই পদার্গ লগুচাপবিশিষ্ট বাতাদে বা প্রবলভাবে সাধারণ বাতাদে প্রনরায় উত্তপ্ত করিয়া বা এবংবিধ কয়েকটি উপায়ে, যদি বাতাদের অক্সিজেন স্বত্তর করিয়া লওলা নায় তবে অক্সান্ত অনেক পদার্থ ইইতে আরও সচজভাবে অক্সিজেন পাওয়া যায়। তরলীভূত বাগু ইইতে অতি সাব্দানে তাপ প্রয়োগে প্রথমে নাইট্রোজেন ও পরে অক্সিজেন নির্গত করা যায়।

বাতাস হইতে অক্রিজেন উপরি উক্তবা অন্ত কোনও উপযোগা প্রান্দিয়া দারা বাহির কবিয়া ণইলে মোটামুটি নাহটো জেন থাকিয়া যায়। নিম্লিখিতভাবে ইহা ভোমাদিগকে দেখান খাইতে পারে। একটি একমুখবদ্ধ নল, একট পারদের ভিতর মুখ ডুবাইয়া দণ্ডায়মান একটি বক্র নলের সুথ পারদের নীচে উপরি উক্ত নলের মুখের নীচে ধর ও কৌশলে বক্র নধের ভিতর দিয়া উপরি উক্ত নগের ভিতর থানিকটা পাইরোগাালিক আাসিড ও কষ্টিক সোডা প্রবিষ্ট করাও। এখন বক্ত নলটি সরাইয়া পারদের ভিতর অঙ্গুলি প্রবেশ করাইয়া, উপরি উক্ত মুখ বন্ধ করিয়া ভাহাকে বাহিরে আন ও সেট নলটির অবস্থায় আলোড়ন করিয়া তাহার ভিতরের বায়র সহিত ঐ ছুইটি দ্রব্যের মিশ্রণ করাও। আবার পারদে মৃথ ডুবাইয়া পূর্কাত্তরপ দণ্ডায়মান

করাও। এখন দেখিবে, বাহির হইতে থানিকটা পারদ এই নলটির ভিতর উঠিয়া পড়িবে। নলটির অক্সিজেন ঐ রাসায়নিক জবাগুলির সহিত সংযুক্ত হওয়ায় ভিতরের চাপ কম হয় ও সেই কারণে বাহির হইতে পারদ ভিতরে প্রবেশ করে। পারদ ভিতরে আসায়, এখন নলের ভিতর পূর্ব আয়তনের মাত্র চার-পঞ্চমাংশ বায়বীয় পদার্থ রহিয়াছে, দেশা যায়। ইহা নাইটোজেন। এই পরীক্ষায় ভোমরা দেখিলে, বাতাদে মোটাম্টি চার পঞ্চমাংশ নাইটোজেন ও এক পঞ্চমাংশ স্বিশ্বিজন আছে।

কেমন, পরীক্ষা গুলি কৌতৃহল উদ্দীপক নহে কি ? বচ হইয়া রসায়নশাস্ত্র-পাঠে তোমরা এই বিষয়ে ও বহুবিধ বিষয়ে অনেক কণা শিগিতে পারিবে। বিজ্ঞান পরীক্ষাব উপর প্রতিষ্ঠিত, ইহা জানিয়া লও। পাচ ছয় মাইল পক বাতাদে নিমলিগিত বায়বীয় পদার্থসমহ, প্রায় নিমলিগিত শতকরা পরিমাণে পাওয়া যায়— নাইটোজেন ৭৭°১, মাজিজেন ২০°৭, মাগন ০°৯, কার্মন ডাই-অক্সাইড ০°০৩, জলীয় বাষ্পত্র ২ ও বাকীটুক্ গাংদেব পরিমাণ হিলিয়ম ইতাদি অক্সাক্স গাসা।

মোটামুটি হিসাব। জলীয় বাম্পের

পরিমানে সর্বন্ধাই পরিমতন ঘটিতেছে। আরও
উদ্ধে অব্যিজেনের পরিমাণ কমিতে ও ওজোন,
হিলিয়ম ও হাইড্রোজেনের গরিমাণ বাড়িতে থাকে।
অমিশিত অক্সিজেনে দাহাপদার্গের দাহ ভীবণ
জ্ঞানিত অক্সিজেন হইয়া যায়,
তাহা হইলে অতি জ্ঞাতবেরে
মার্মিরে, ক্ষুত্রম অগ্লিফার সমস্ত প্ডিয়া ছাই
হুয়া গাইবে। তাই বায় আমাদের পরম ভারো

ইহা একটি

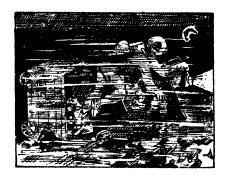
কেবলই অক্সিজেন নছে।

জলে বাতাস কিছু পরিমাণে দ্রবীভূত হইয়া থাকায় জলচর প্রাণীরাও জলের ভিতর তাহাদের প্রয়োজনমত বাতাস পায়। গাছপালাও নিশ্বাসের জন্ত অক্সিজেন গ্রহণ করে।

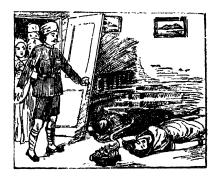
আজকাণ ডুবুরিয়া যাহাতে জলে বেশীক্ষণ কাজ নিখানের জন্ম করিতে পারে, সেইজন্ম নিশাস-প্রাথানের সৌক্যার্থে অক্সিজেনের থলি তাহাদের পোষাকের ভিতর লইয়া যায় ৷ উচ্চে বায়ু হাজাভাবে থাকায় ও নিশ্বাসে প্রচুর পরিমাণে বায়ুর প্রয়োজন হয় বিলয়া অতি উচ্চ পর্বাত আরোহণকারীরা সঙ্গে অক্সিজেন



প্রত আরোহণকারীরা সঙ্গে অক্সিজেন লইয়া যায় লইয়া যায়। তৃব-নৌকায় (submarine) প্রচুর পরিমাণে এমন রাসায়নিক পদার্থ লওয়া হয় যাহাতে ক্রমাণ্যে অক্সিজেন জন্মিতে ও কার্ম্বন-ডাই-অক্সাইড দ্বংস হইতে পারে।



ড়বুরিদের শরীরের ভিতর অক্সিজেন-পূর্ণপলি থাকে অক্সিজেন সামাদের জীবনস্বরূপ। আমরা থাঞা-থাতে এত বাছ বিচার করি, মন্দ জিনিধ বিষবৎ পরিত্যাগ করি, কিন্তু থাতের যাহা বিকৃত বায় শিরোমণি, সেই বাতাসের পবিত্রতা সম্বন্ধে আমরা কেন না সর্বদা সচেষ্ট থাকি প ঘরে দরজা জানালা বন্ধ করিয়া রাখিলে বা এত গোকের একত্র বাসে বা অগ্নিপ্রজালিত করিয়া



দরজাজানালাবন থরে থাকিলে অনেক সময় মরিয়া যাইতে হয়

রাখিলে অতি শীঘ্রই বায়ু বিক্লত হইয়া উঠে।

অক্সিজেনের পরিমাণ কমিয়া কার্কন-ডাই-অক্সাইড
ও বছবিধ অহিতকারী ক্রৈব পনার্থের পরিমাণ
বাড়িয়া উঠে। যদি বাতাদে ২০ ভাগ অক্সিজেন
ও •০০ ভাগ কার্কন ডাই-অক্সাইড আছে ধরা হয়
ভাহা হইলে নিখাদে নিগত বাতাদে ১৮ ভাগ
অক্সিজেন ৪'৫ ভাগ কার্কন-ডাই-অক্সাইড ও
জলীয়-বাম্প ভরপুর পাওয়া যায়। উপরি উক্ত
নানাবিদ কার্বণ ও বাম্পের পরিমাণ র্দ্ধিতে ইহা
জীবনরক্ষার অন্তপ্যোগী হয়। প্রতি মিনিটে প্রতি
লোকের জনা ৩০ ঘনফুট পরিক্ষার বায়ুর প্রয়োজন।

কার্কন ডাই অক্সাইড গ্যাস চুপের জলে প্রবিষ্ট করাইলে থড়ি ইৎপন্ন হয়। পরিধার চুপের জল বাতাসে রাখিলে যে সর পড়ে তাহা থড়ির পাতলা সর ও বাতাসের কার্কন-ডাই-অক্সাইডের জন্ত হয়। নল দিয়া চুপের জলের ভিতর নিখাস ফেলিয়া প্রশাসে যে কার্কন ডাই জন্মাইড আছে তাহা দেখান যায়। নিয়েটার প্রভৃতি চনসমাকীর্ণ বন্ধ স্থানের বায়ু অতি অহিতকারী। জনসমাকীর্ণতায় ও কলকারখানার ধ্যে নগরবায় গ্রামধায় অপেক্ষা অস্বাস্থাকর।

পরিশ্রম করিলে আমাদের শরীরের যে অঙ্গ বাবহৃত হয়, তাহার কণাসমূহ অকেজো হইয়া পড়ে। তাহাদিগকে দাহ করিয়া বাহির করিয়া দিতে অধিক পরিমাণে অক্সিজেনের প্রয়োক্তন হয়। আমাদের সেই অক্সিজেন-কুধা মিটাইবার জন্ত ঘন ঘন খাস গ্রহণ করি।

রোগীর অন্তিমকালে, খাস-প্রখাদের যথন কট দেখা যায়, অনেক সময় খাসের স্থবিধার জন্ম তাহাকে অক্সিজেন দেওয়া হয়।

আমাদের খাগ্য পরিপাক হওয়া ও শরীরে রক্তে পরিণত হওয়াও অক্সিজেনের ক্রিয়া। যদি কোনও কারণে সেই ক্রিয়া সমাকর্রপে না চলে, তাহা ১ইলে অমিমান্দা, বাত বহুম্কাদি রোগ জনিয়া যায়। এই সমস্ত রোগে অধুনাতন চিকিৎসকেরা এমন সকল ওয়াদির প্রোগ করিতেহেন, যাহা উপরি উক্ত অন্নিজেনের কিয়ার উন্নতি সাধন করিতে পারে ১

অক্সিজেন ও স্থাালোকে, মূত্র পুরীষ ও ক্লেদাদি দগ্ধ হুইয়া যাইতেছে, বিষের স্কৃষ্টি করিতেছে না।

দাহ অক্সিজেন সংযোগ। অনেক সমগ্ন তৈলাক্ত ন্যাকড়ার স্তৃপে আপনা হইতে আগুন লাগিয়া যায়। তৈল প্রসারিত হইয়া থাকায় আপন লাগা অন্ধিকেনি তৈলের উপর একসঙ্গে অক্সিজেন-ক্রিয়া হইতে থাকে।

ফলে, একসঙ্গে অনেকথানি তাপ উণ্ণুত হুইতে থাকে। নাাকড়ার স্কুপের ভিতর হুইতে বাহিরে যাইতে না পারায়, ক্রমে সেই তাপ এত জমা হুইয়া পড়ে যে, পরিশেষে তাহা অগ্নিরূপে প্রকাশিত হুইয়া দালিলন-ক্রিয়া বিশেষরূপে পরিবর্দ্ধিত ক্রিয়া দেয়।

পেটোল যেথানে রাথা হয় তথায় অগ্নি লইয়।
প্রবেশ করিতে নাই। কারণ, পেট্রোল গ্যাস
অভান্ত দহনশীল পদার্থ ইওয়ায় ও
পেট্রোল ফার্ডা ক্রিডার উথিত পেট্রোলগ্যাস ও অক্সিজেন ছইই সেই স্থানে
মিশ্রিত অবস্থায় বর্তমান থাকায়, ক্ষুদ্রতম অগ্নিকণায়
সমস্তটা তৎক্ষণাং ভীষণভাবে অলিয়া উঠে। ভোমরা
দহনশীল পদার্থ সম্বন্ধে সর্বাদা সাবধান থাকিবে।

বাতি জালিয়া তাহা একটি গ্লাস দিয়া চাকিয়া
দিলে নিভিয়া যায়। ভিতরের বায়ুর অক্সিজেন
পূড়িয়া যাওয়া তাহার কারণ।
নগের ভিতর বা অব্যবহৃতরূপে বা গভীর নলের
কৃপে অব্তরণ
ভিতর কার্মন ডাই-অক্সাইড ও
বহুবিধ পচা গ্লাস জ্বমা হইতে থাকে। মাত্ম্ব
নামাইলে অক্সিজেনের অভাবে মারা পড়ে। এইজন্য
ভাহাতে যথেষ্ট অক্সিজেন আছে কি না ভাহা, বাতি
নামাইয়া পুর্বেই দেখিয়া গওয়া হয়।



াবস্থবিষ্দ -- হ'গলি



ণ্ডনা - াসাসলি দ্বাপ



.হক্লা---খাইসলাও





কিল কিয়া - চাট্ট ছাপ

পৈলি-কাৰিব সাগৰ



,পাপোকাটাকেটল মাকাকো



## ভারতবর্ষ

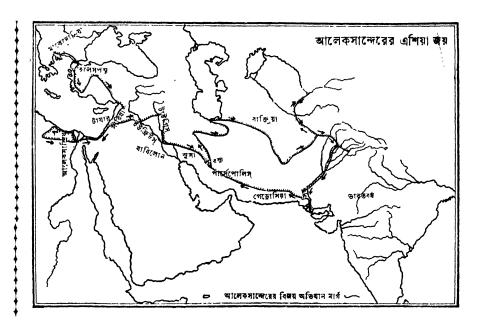
## আলেক্সান্দেরের জয়বাতা

ইউরোপের একখানি মানচিত্র খুলিলে एमिट भा**इ** (व. मिम्मिन भूतेत कार्प अक উপদ্বাপ আছে, ভাহার নাম গ্রীস। প্রার্চন-কালে গখন ইংল্যাণ্ড, জান্মানী দেশের লোকেরা সভাতার কিছুই জানিত না, তখন গ্রাস্দেশের লোকেরাই ইউরোপে সর্বাপেকাসমূদ্ধ ও উন্নত হিল। বর্ত্তমান ইউরোপীয় সভাতায় গ্রীকপ্রভাব ধুব বেশা। এই গ্রীদের অন্তৰ্গত মাকেদোনিয়া (Makedonia বা Macedonia) নামক (मर्म शृष्टेशुक्व ७०७ गरम जात्नक्मात्मत (Alexander) নামে এক মহাবার জন্মগ্রহণ করেন। ই হার পিতা ছিলেন মাকেদোনিয়ার রাকা ফিলিপ। বাল্যকালে প্রসিদ্ধ গ্রীক দার্শনিকি আরিস্ততল (Aristotle) ইচাব শিক্ষার জ্বল নিযুক্ত হন। লেখাপড়ায় পুর উন্নতি না হইলেও কৈশোর হইতেই আলেকসান্দারের বীরত্ব লক্ষিত হয়। ইহার্ট্র বয়স যথন কুড়ি বৎসর, তখন পিতাকে কৈছ হত্যা করে এবং ইনি সৈনিক দের সাহায্যে সিংহাসনে-আরোহণ করেন।

রাজ্ঞা হইবার মাত্র ছুই বংসর পরে খুউ পূর্বব ৩৩৪ অবেদ বাইশ বংসরের যুবক অংলেক্সান্দের বিজয়-অভিযানে হইলেন। ' ত্রিশ-চল্লিশ হাজার সৈন্য লইয়া ভিনি সমুদ্র - পার হইয়া এশিয়া-মাইনর নামক দেশে উপস্থিত হইলেন এবং সেখান-কার গ্রীক সহরগুলিকে মুক্ত করিয়া দিলেন। দেখান ছইতে তিনি সিরিয়া টু (Syria) ও ফিনিসিয়া (Phoenicia) দেশের অগ্রসর হইলেন। এই স্কল দেশ সে সময় দার্যবৃষ্ (গ্রীক্ Darius) নামক পার্স্থ সমাটের অধীন ছিল। সমাট ভীত হইয়া সাঠাজ্যের অনেকখানি অংশ আলেক-সান্দেরকে ছাড়িয়া দিতে 🗒 প্রস্তুত इहें(लन। কিন্তু আলেক্সান্দের অল্লে সন্তুষ্ট হইবার লোক ছিলেন মা: তিনি কোনও প্রস্তাবে সম্মত না হইয়া অগ্রস্ব হইতে লাগিলেন। ফিনিশিয়ার টায়ার (Tyre) - নামক স্থান জয় করিতে গ্রীকগনকে বিস্তব্ধ কম্ট পাইতে হইয়াছিল। এখানকার অধিবাসিগণ দহরের ফটক শহ্ম করিয়া দেওয়াতে সান্দারকে সহরের বাহিরে প্রায় সাত অপেক্ষা করিতে হইয়াছিল। গ্রীকৃগণ সহরে প্রবেশ করিয়া অধিবাদীদিগকে হত্যা করিতে লাগিল এবং

৩০,০০০ লোককে বন্দী করিয়া দাসরূপে বিক্রা করিল। এইরূপে সিরিয়া ও পালেষ্টাইন জন্ন করিয়া গৃষ্টপূর্বন ৩৩২-১ অকে আলেক্সান্দের মিশরদেশে (Egypt) প্রস্থান করিলেন এবং অল্ল সময়েই ঐ দেশ জন্ম করিয়া লইলেন। মিশরদেশের উত্তর উপকৃলে তিনি আলেক্সান্দ্রিয়া (Alexandria) নামে একটি নগর প্রতিষ্ঠা

করে। পারস্থা-সমাট দারয়ব্যায্ যুদ্ধক্ষেত্র হইতে পলায়ন করেন। বাবিলন প্রভৃতি নগর অধিকৃত হইল। গ্রীক্সেনা এখন অবাধে পারস্থাদেশের অভ্যস্তারে প্রবেশ করিয়া পের্দেশেরিটি ধ্বংস করিয়া ফেলিল। পারস্য সমাটের ধনরত্ন আলেক্সান্দেরের হস্তগত হইল। স্বন্ধর রাজপ্রাসাদিটিতে



কবিলেন। এই নগর কালে অত্যন্ত সমূদ্দ হইয়া উঠে এবং ভূমধ্যসাগরের একটি প্রধান বাণিজ্যকেন্দ্রে পরিণত হয়।

সারিয়াদেশেব মধ্য দিয়া আলেক্সান্দের মিশর হইতে ফিরিয়া আসেন। ৩৩১ খৃষ্ট পূর্ববান্দে সেপ্টেম্বর মাসে টাইগ্রিস নদী অভিক্রম করিয়া গ্রীক্সেনা পারস্ত-স্ত্রাটের সম্মুখীন হয় এবং অনতিবিলম্বে জয়লাভ আগুন লাগাইয়া দিয়া আলেক্সান্দের আপনার ধ্বংস্পিপাসা মিটাইলেন।

পারস্থ হইতে আলেকসান্দের শক্তিয়ার (Bakria বা Bactria)প্রভৃতি দেশ জয় করিয়া খৃষ্টপূর্ব্ব ৩২৭ অব্দে গ্রীমের প্রারম্ভে হিন্দুকুশ পর্বত অতিক্রম করিলেন । ধীরে ধীরে ভারতের উত্তর-পশ্চিম অঞ্চলের পার্বত্য প্রদেশগুলি জিত হইল। এইগুলির মধ্যে প্রধান ছিল অশাক— গ্রীক্গণ যাহাকে বলিত অস্কেনস্। এই দেশের রাজধানীর গ্রীক্ ঐতিহাসিকগণ নাম দিয়েছেন মস্সগ (Massaga); ইহার ভারতীয় নাম কি ছিল বলা যায় না। ইহার তুর্গ অভান্ত স্কুঢ় ও সুরক্ষিত ছিল, কিন্তু আলেক্সান্দের নয়দিনে ইহা অধিকার করিয়া লন। তুর্গ জয়েব পর আলেক্সান্দের ভারতবয় অধিকারের জন্য এই ৭,০০০ ভারতীয় সৈশুকে নিজের দলভুক্ত করিয়া লন। কিন্তু সৈশুকে নিজের দলভুক্ত করিয়া লন। কিন্তু সৈশুকে নিজের দলভুক্ত করিয়া লন। কিন্তু



আলেকসানের

করিতে অনিচ্ছুক গ্রহা পলায়ন করিতে চেষ্টা করে। আলেক্সান্দের এই সংবাদ জানিতে পারিয়া সংসা সৈত্যদূলকে আক্রমণ করেন। সৈত্যগণ প্রাণপণে যুদ্ধ করিল, কিন্তু আলেকসান্দেরের বিরাট সৈত্যদলের সন্মুখে বেশীক্ষণ দাঁড়াইতে পারিল না। অবশেষে তাহারা দেশের সন্মানের জন্ত বীরের মত যুদ্ধ করিতে করিতে প্রাণবিসজ্জন করিল। গ্রীক্ ঐতিহা স্কদের মধ্যে অনেকে আলেক্সান্দেরকে বিশ্বাস্ঘাতকতার জন্ম নিন্দা করিয়াছেন।

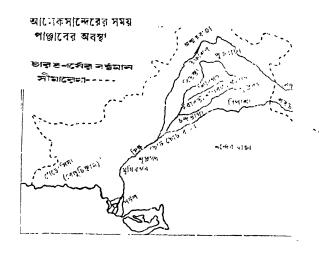
অশাকরাজ্য হইতে বন-জঙ্গল ভেদ করিয়া গ্রীকদল খুষ্টপূর্বব ৩২৬ অবেদর মাসে সিন্ধনদের তীরে বর্তমান আটকের নিকটবতী কোনও স্থানে আসিয়া উপস্থিত হইল। গ্রীক্গণ সিন্ধনদ পার হইতে না **চইটেই ভক্ষালার রাজা আন্তি আলেক্-**স্বীকার করিয়া দত বশ্যতা সান্দেরের পাঠাইলেন। আন্তির ব্যবহার দেখিয়া অ(লেকসান্দের ভাবিলেন যে ভারতব্যের সকল রাজাই বিনা যুদ্ধে পরাজয় করিয়া লইবে। এই মনে করিয়া কিলাম ও চেনাব নদীর মধাবতী ভূভাগের শাসকের নিকট দুত পাঠাইলেন যেন তিনি শীঘ্র উপটোকন লইয়া আলেকসানেরের সহিত দেখা করেন। পুরু (গ্রীক্ Poros) নামে এক ক্ষজ্রিযবীর তখন ঐ প্রদেশের রাজা ছিলেন। তিনি উত্তর পাঠাইলেন শে, তিনি শী**এট সৈ**তা লইয়া যুদ্ধের জয়া আলেক্সান্দেবের সহিত দেখা করিতে আসিবেন।

আলেক্সান্দেবের ঝিলাম (গ্রীক্ Hydaspes) নদার ভারে আসিয়া দেখিলেন থে. নদীর অপর পারে সৈতা লইয়া দাভাইয়া আছেন। তখন বধাকাল, নদীতে থৰ বক্যা আসিয়াছে। আলেকসান্দের অনেক ভেলাও নৌকা প্রস্তুত করাইয়া অতি কটেে নদী পার হইয়া খুষ্টপুর্বর ৩২৬ অদের জুলাই মাদে পুরুর হইলেন। পুরুর পদাতিকগণের অস্ত্র ছিল বধাও ধনুকাণ। ধনুকগুলি ৫।৬ ফুট ও তীর এক একটি ৩ গজ করিয়ালম্বা ছিল। গ্রীক ঐতিহাসিকগণ বলিয়াছেন ভারতীয় তীরনদাজদের লক্ষা অবার্থ ছিল এবং ভাহাদের তীর ঢাল বা বর্ম করিয়া শরীরে প্রবেশ করিত। পদাতিক ছাড়াপুরুর সৈত্যে ছিল অশ্বারোহী রণ-হক্তীও রথ। সমস্ত দিন ধরিয়া গ্রীকৃও



ভারতীয়দের মধ্যে যুদ্ধ হইল; ভারতীয় দৈল্যগণ প্রাণপণ যুদ্ধ করিয়াও জয়লাভ করিতে পারিল না। ৩,০০০ অখারোচী ও ১২,০০০ পদাতিক নিগত হইল, এবং প্রায় ১০,০০০ বন্দী ইউল। পুরু স্থাং

ছিল, তাহাদের মধ্যে প্রধান ছিল কঠগণ এ (Kathaioi)। গণরাজ্যকুলি একতা হইয়া আলেক্সান্দেরের বিকলে দাঁড়াইল, কিন্তু কিছুই ফল হইল না। আলেক্সান্দের সঙ্গল (Sangala) নামক স্থানে অবস্থিত



কঠগণের তুর্গ একে-বারে ভূমিসাৎ করিয়া দিলেন। খুষ্টপূর্নর ৩১৬ অব্দের সেপ্টেম্বর , বিয়াস মাদে (Hyphasis)नमीत উপস্থিত ভীরে হইয়া আলেক -সান্দের শুনিতে পাইলেন যে, পূৰ্বৰ নিকে মগধ সমাট বলস্থিয় লইয়া যুদ্ধের জন্ম করিছে-অপেকা ছেন।

যদা ক্রিতে কবিতে আহও হ ইয়া পডিয়া গেলেন গুজান অবস্থায় शीक रुख वर्का रुहेलन। পরে আলেক-সান্দের ভাহার স্থদীর্ঘ, বীরোচিত আকৃতি দেখিয়া মুগ্ধ ২ইয়া তাঁহাকে জিজাসা করিলেন, 'তুমি কিরূপ ব্যবহার 518 ?' পুরু সদর্পে উত্তর দিলেন, 'রাজার মত'। আলেক সান্দের বীরের আদর তাঁহার সহিত বন্ধর করিলেন ও তাঁহাকে তাঁহার রাজা ফিরাইয়া দিলেন।

সান্দের বিয়াস পার হইতে বাস্ত হইকোন কিন্তু তাহার সৈত্যগণ আর অগ্রসর হইতে অসমতে প্রকাশ করিল। আলেক্সান্দের

আলেক্সান্দের অতঃপর প্রায় বিনা বাধায় চেনাব (Akesines) ও রাভী (Hydraotes) অতিক্রম করিয়া র:ভী-বিয়াস দোআবে আসিয়া উপস্থিত চইলেন। এই প্রদেশে কতকগুলি গণরাক্ষ্য অবস্থিত





আলেকসান্দেরের মূদ্রা

তাংগদিগকে অনেক ধনরত্বের লোভ দেখা-ইলেন, যশের মহিমা স্মারণ করাইয়া দিলেন, কিন্তু কিছুতেই কোনও ফল হইল না। অগত্যা ভগ্নমনোরথ হইয়া পুর্বেকার পথ



医多分性剂性 的现代中期的四点

## · SINTERS CF -----

দিয়াই আলেক্সান্দের ফিরিভে করিলেন। পথে তিনি শিবি (Siboi). कृषक (Oxydrakai) अञ्चि हाउँ हाउँ গণরাজ্য জয় করিয়া মালব (Malloi) নামে একটি গণরাজ্য আক্রমণ করিলেন। নালব-গণ তথন যুদ্ধের জন্ম একেবারেই প্রস্তুত ছিল না; আলেক সান্দের হঠাৎ ভাহাদিগকে আক্রমণ করিয়া বহু সহস্র লোককে নিষ্ঠ্র-ভাবে হত্যা করিলেন এবং অনেককে বন্দী করিলেন। পরে সিন্ধুনদ ধরিয়া দক্ষিণে অগ্রসর হইবার পথে শাম্ব(Sambos)মৃষিক. (Mousikenos) প্রভৃতি রাজ্য জয় করিতে সমূদ্রীরে উপস্থিত দেখানে তিনি জাহাজে করিয়া একদল দৈল্পকে সমুদ্রপথে পাঠাইয়া দিলেন এবং বাকী দৈশ্য লইয়া স্বয়ং বেলুচিস্তান ও পারস্থের মধ্য দিয়া বাবিলন নগরে উপস্থিত



আলেক্সান্দেরের মৃদা

হইলেন। সেখানে অভিরিক্ত মৃত্যপানের ফলে ভাহার অস্থুথ হয় এবং খৃষ্টপূর্বি ৩২৩ অকে জুন্মাসে মাত্র ৩৩ বংসর বয়সে ভাহার মৃত্যু হয়।

আলেক সান্দের যে বীর ছিলেন তাহাতে সন্দেহ নাই। গ্রীস হইতে পাঞ্জাব পর্যান্ত সকল দেশ পরাজিত করিয়া এতবড় সাম্রাজ্যস্থি এ পর্যান্ত আর কেইই করেন নাই। বছবার তিনি সকল উপদেশ অগ্রাহ্য করিয়া বিপদের মধ্যে প্রবেশ করিয়াছিলেন। প্রাচীন ও আধুনিক সকল ঐতিহাসিকই তাহার অজস্র প্রশংসা করিয়াছেন,

তাঁহার পাঞ্চাব-জয়ে বিশেষ কোনও কুজিছ নাই; কারণ পাঞ্চাবে ঐ সময় কোনও বড়-রাজ্য ছিল না। মগধস্যাটের সহিত যুদ্ধ করিয়া জয়লাভ করিতে পারিলেই তাঁহার ভারত-জয় গরিমাময় হইত। কিন্তু তাঁহার দৈশুদল মগধরাজ্যের বিরাট বাহিনীর সম্মুখীন হইতে অসম্মত হওয়ায় তিনি ফিরিয়া যাইতে বাধা হইলেন।

ইউরোপে আলেক সান্দেরের নাম অতি আদরের সামগ্রী। প্রাচীনকাল হইছে তাঁহার নামে অনেক কাহিনী, কবিতা ও ইতিহাস রচিত হইয়াছে। কিন্তু প্রাচ্যের লোকে তাঁহাব বিজয়-অভিযান একেবারে ভুলিয়া গিয়াছে। পারস্যে তিনি মাত্র ধর্ম্ম গ্রন্থ-দাহাঁ রূপে পরিচিত ছিলেন। ভারতবর্ষের কোনও গ্রন্থে বা গল্পে তাঁহার নামগন্ধও নাই। ইহার কারণ এই যে, তাঁহার সামাজ্য একেবারেই স্থায়ী ছিল না। এমন কি, তাঁহাব মুহুার পূর্কেই পাঞ্জাব তাঁহার হস্তচ্যত হয়। আলেক ্লান্দেবের যুগে ভারতবাদীরা গ্রীক্দের নিকট হইতে কিছুই শেণে নাই।

আলেক্সান্দেরের অভিযান নিষ্ঠুব ঘটনা-বলীতে পরিপূর্ণ। তিনি তাহার গতিতে বিন্দুমাত্র বাধা সহ্য করিতে পারিতেন না; এই জন্য যে দেশ তাঁহাকে বিনাযুদ্ধে পথ ছাড়িয়া দিত, তাহাদের তিনি কোনও অপকার করিতেন না। কিন্তুযে দেশ তাঁহার সহিত যদ্ধ করিতে করিত, তাহাদের আর রক্ষা ছিল না। নগর পোড়াইয়া দেওয়া, অধিবাসীদেব বন্দী করা, দাসরূপে বিক্রয় করা, বালবুদ্ধবনিতা-নির্বিশেষে লোক হত্যা করা. এই সকল কাহিনীতে তাঁহার বিজয়-যাত্রার বিবরণ পরিপূর্ণ। ভারতবাসীদের চুর্ভাগ্য যে এরূপ নিষ্ঠর বিজেত্গণের হস্তে তাহাদের বার বার পড়িতে হইয়াছে।

#### 



## নয়নদেব

দাক্ষিণাতো দঙীর বন।
দণ্ডীর বনে জন্তুদেব এবং
সত্তাবতী নামে এক বাগ্রুণ
ও বাক্ষণীবাস করিতেন। তাহাদের ছেলে
পুণ্ডুলীক পিতামাতার প্রতি একেবারেই ভাল

বাবহার করিতেন না। পুওলীকের স্ত্রীও স্বামীর মত, সদ্ধল্পর ও পাঙ্গীর পাতি অতাভাতবাবিহার কবিতেন। বদ্ধ বাদ্ধণ ও বাহ্মণী পুত্র ও পুত্রবধর অনায় বাবহারের হাত হলতে রক্ষা পার্থার জনা তীর্গ নমণে বাইবার সমল করিলেন। পুণুলীকের স্ত্ৰীও স্বামীকে বলিলেন চল, আমরাও তীর্গদ্মণ করিয়া আসি। পুগুলীক ও তাংগর স্বী চলিলেন <u> গোডায় চড়িয়া আর জন্মদেব ও সতাবতী চলিলেন</u> পাযে হাটিয়া। সারাদিন পথ চলিয়া সন্ধার সময় এই ভীণ্যাত্রীর দল গাছের তলায় বা কোনও কটীরে আশ্রয় এছণ করিতেন। বৃদ্ধ জন্পুদেব ও সভাবতীকে পুত্র ও পুত্রবধুর ঘোড়ার সেবা করিতে ছটত। রান্ধণ ও বান্ধণী ভাবিলেন : এইরূপ তীর্যাতা অপেকা দণ্ডীর বনে থাকাই যে ছিল ভালো। কিন্তু দৈৰক্ৰমে বিধাতা তাহাদের প্রতি প্রসন্ন হইলেন।

সেকালে কুকুট স্বামী নামে একজন সাধুছিলেন। একদিন সন্ধার সময় এই যাত্রীর দল তাঁহার কুটীরের পাশে আসিয়া আশ্রয় লইলেন। নিবিড় বনের মধ্যে পাতার ছাউনি দেওয়া ছোট কুটারে সাধু কুকুট সামী ধ্যনমগ্ন। গাছের তলায় জন্তুদেব, সভাবতী এবং পুগুলীকের সী

ঘুমাইযা আছেন। একা পুগুলীক জাগিয়া আছেন। এমন সময় এক আশ্চমা গটনা পটিল। প্রজ্ঞানিক দেখিলেন, কোথা হুইন্ডে সাতটি অতি স্থান্ধী কুটি কামির কুটিবের চারিদিবা ও তাহাব আলে পাশের আবজ্জনা পরিষার করিতে সারস্থ করিলেন। তাহার দেখিতে অতি স্থান্ধী হুইলেও তাহাদের সকলেরই পরিবার কাপড়-চোপড় অতান্ধ মলিন। এ সাতটি স্ত্রীলোক বাহিবের আবজ্জনা পরিষার করিবার পর পর কুকুট স্বামীর কুটারে প্রবেশ করিয়া কিয়ংকাল পরেই আবার ফিরিয়া আদিলেন এইবার পুগুলীক আশুগা হুইয়া দেখিলেন দে, সাতটি রম্বাীর ব্যন ভূষণ অতি শুলু ও নির্মাণ ।

পুগুলীক ইহাতে আশ্চণা মনে করিয়া তাড়াতাড়ি যাইয়া ঐ স্ত্রীলোক কয়টির পায়ের তলায় লুটাইয়া পডিয়া জিজ্ঞানা করিলেন, আপনারা কে এবং কি জনাই বা এথানে আদিয়াছেন ?—জাঁহারা বলিলেন, —আমরা গঙ্গা, যমুনা সরস্থতী প্রভৃতি সাতটি নদী। প্রতিদিন শত শত পাপী আমাদের জলে স্থান করিয়া আমাদিগকে অপবিত্র করে: সেইজনা •

আমাদের দেহে মলিন বদন দেথিয়াছ। কুকুট স্থামীর পূণ্যস্পর্লে, আমাদের দেহ হইতে পাপের মলিনতা দূর হইয়াছে। তারপর বলিলেন, পৃণ্ডলীক, তোমার মত পাপী পৃথিবীতে দিতীয়াট নাই, তৃমি তোমার পিতামাতার প্রতিকার নাই; সাধা নাই নে, আমাদের এই সপ্ত নদীর পূণা জলেও সেই পাপ ধুইয়া ফেলিতে পারে। দেদিন হইতে পৃগুলীকের আশ্চাগ পরিবর্ত্তন হইল; পিতামাতার সেবায় সে আত্মমর্পণ করিল। পিতামাতার প্রতি পৃণ্ডলীকের অলোকিক ভক্তির কথা কমে দেশে দেশে ছডাইয়া পাড়তে লাগিল।

দেবতার আসন টলিল। ধাবকা হইতে ভগবান ছীক্ষণ পঞ্জীকের পিতৃমাতৃভক্তি পরীকা করিবার জ্য তাহার কুটাবে আসিণোন। ক্লফ বাহির হইতে ভাকিলেন, পঞ্জীক! আমি আসিগাছি, একবার বাহিরে এস, ভোমার সহিত্ত আমার কয়েকটা কণা আছে।

প ওলীক তথন পিতামাতার চরণ সেবা করিতে ছিলেন, তাড়াতাতি একথানা ইট বাহিরে দেলিয়া দিয়া কহিলেন—আপনি ওপানে দাড়ান। আমি একটু পরেই আদিতেছি। জীক্ষণ সেই ইটগানার উপর দাডাইয়া রহিলেন।

পিতামাতার দেবা শেষ করিয়া পুঞ্জীক বাহিরে আসিয়া কহিলেন, প্রভু আনার অপরাধ মাজনা করিবেন। 🕮 রুফ হাসিয়া কহিলেন বৎস। আমি তোমার এই অসাধারণ পিতৃমাতৃভক্তি দেখিয়া সন্তুষ্ট হইয়াছি, আজ হইতে আমি এখানেই গা কিব। আমাকে ত্মি বিঠোতা নামে অর্চনা এই পুণাস্থানে মহাপুক্ষ নয়নদেব বাস করিতেন। নয়নদেব দক্ষিণভারতের একজন শ্রেষ্ঠ পুক্ষ ছিলেন। নয়নদেবের পিতার নাম বিঠোতা এবং মাতার নাম রাগুমাই। বিঠোতা তাগি করিয়া একবার সন্নাদী হইয়া গিয়াছিলেন. পরে আসিয়া আবার ঘর-গৃহস্থালী করিতে আরম্ভ করায় তাঁহার জ্ঞাতি ও ব্রাহ্মণগণ বিরুদ্ধাচরণ করিতে থাকেন। এমন কি. তাঁহার জ্বোষ্ঠ পুত্র নিব্রতির উপনয়নে আসিয়াও তাঁহার৷ যোগ দেন নাই। সমাজচাত বিঠোভা ইক্রিয়াণি নদীর ধারে একটি নির্জন গ্রামে গিয়া বাস করিতে লাগিলেন।

পুরের। আলন্দি গ্রামেই পড়িয়া রহিলেন। নিরত্তি ব্রাহ্মণদের কাছে বলিলেন—আপনারা আমাদিগকে সমাজে গ্রহণ করুন, উপনয়ন ও मीका पिन। আলন্দির বান্ধণেরা বলিলেন ভোমার যদি পৈঠান গ্রামের ব্রাহ্মণদের কাছ ভয়ত্ত অনুমতি-পত্র আনিতে পার, তাহা হইলে আমরা তোমাদিগকে দীক্ষাদিব এবং সমাজে গ্রহণকরিব। বড ভাই **ছোট ভাই নয়নদেব এবং ভগিনী** মক্তাবাঈকে সঙ্গে লইয়া পৈঠানে আসিলেন। এথান-কার রাহ্মণগণ তাঁহাদিগকে বিদ্দুপ করিতে লাগিলেন এবং পথের কুকুর, শয়ার, গক, বিভাল সকলের কাছে মাথা নত করিয়া প্রণাম করিতে উপদেশ দিলেন। এমন সময় একটা মহিষ সেপথ দিয়া যাইতেছিল। বাঋণেরাবিদ্ধপ করিয়া মহিসটাকে নয়নদেব (জ্ঞান দেবতা) নাম দিখেন বলিলেন যে, আলন্দির এই ছেলেটিও নয়নদেব। ব্ৰাহ্মণদিগকে বলিলেন, ইণ্. নয়নদেব, আর মহিষও নয়নদেব। এই নয়নদেব যেমন মহিষের গায়ে হাত বুলাইয়া দিলেন হুইতে বেদমন্ত **উ**চ্চারিত অমনি মহিষের মুগ হুইল। এই আশ্চর্যা ঘটনায় বিশ্বিত হুইয়া পৈঠান গ্রামের রান্ধণেরা সালন্দির ব্রাহ্মণদের নিকট ইহাদের নানারপ সুখ্যাতি করিয়া ইহাদের পবিত্রতা সম্বন্ধে পত দিলেন। আগন্দির রামাণেরা এইবার নিত্রন্তি नग्नराम्य প্রভৃতি সকলকে উপন্যন ও দীক্ষা দিয়া সমাজে গ্রহণ করিলেন।

নয়নদেব এই ঘটনার পর হইতে সম্পূর্ণভাবে 
ধান ও ধারণায় প্রবৃত্ত হইলেন। তাহার কবিছশক্তিও ছিল অসাধারণ। মারাঠি ভাষায় তিনি 
গীতার এক অফ্রাদ করিয়াছিলেন। উপনিষদের 
অনেক অংশও নয়নদেব মারাঠিতে অফ্রাদ করিয়া 
ছিলেন। অল্লিনের মধ্যেই। কবি, ধার্মিক ও 
মহাপুরুষ বলিয়া দেশে দেশে নয়নদেবের নাম 
প্রচারিত ইইয়াছিল।

নয়নদেব যেমন কবিতা রচনা করিতেন, তেমনি উাহার ভগিনী মুক্তাবাঈও আভঙ্গ বা ছোট ছোট পত রচনা করিতেন। একবার নয়নদেব রাগ করিয়া ভগিনী মুক্তাবাঈকে, তাহার কুটারে প্রবেশ করিতে নিষেধ করিলেন। মুক্তাবাঈ একথানি কাগজে কয়েকটি আভঙ্গ লিখিয়া নয়নদেবের কুটারে কেলিয়া দিলেন। তাহাতে লেখা ছিল—

বেচ্ছাসূত্র। আলন্দি গ্রামে বিঠোভা দেবের মন্দিরের নিকট একটি গর্ভ খনন করিয়া তাহার মধো নয়নদেব প্রবেশ করিলেন। শিষোরা সেই গর্ভের উপরে মাটি চাপা দিল।

তাহার এই সমাধির উপর পরে সেধানে একটি
নিলির নিলিত হইয়াছিল। প্রতি বৎসর কার্ত্তিক
মাসে সেগানে এক মেলা বসে এবং নানাদেশের
যাত্রীরা অসিয়া নয়নদেবের মৃত্তি পূজা করেন। কবি
নামদেব নয়নদেবের এই ইচ্ছাস্ত্তার ককণ কাহিনীটি
এতি স্থানর ও স্থালিত ভাষায় বর্ণনা করিয়া
গিয়াছেন। দাক্ষিণাতা প্রদেশের মহাপ্রক্ষণ
গণের মধ্যে নয়নদেবের নাম চির ক্মরণীয় হইয়া
আছে।

### নয়নদেবের বাণী

বন্ধ । কে কোন্ক্লেজনাএছণ করিল, সে-কথা-লইয়া বিচার করিতেছ কেন্ মাহুষকে মাহুষ বলিয়াই চিনিও।

সদ্ভাব ও সংচিন্তা পরিপোষণ না করে, তাহার জীবনও তেমনি রুগা।

ঈশ্ববে যার ভক্তি নাই, সে কি মান্তব ?

শৃস্তীন মাঠ, জনহীন নগর, শুক্ষ হুদ, কুল ফল-হীন তক শেমন, তেমনি যে মাক্তয় মনের মধ্যে ক্ষমা করিবার মত ক্ষমতা অর্জন কর। মান্ত্র মাত্রের মধ্যেই দেবতা আছেন, এই রূপ জ্ঞান করিয়া মান্ত্রের প্রতি দরদী হুইয়া মান্তবের হুর্পলতাকে চির্দিন ক্ষমা করিবে।



বেঠাগ খাপাজ-- এক তালা

ধন-শান্তে-পুপেভরা আমাদের এই বস্তুপরা
ভারি মাবে আছে দেশ এক, সকল দেশের সেরা।
দে যে স্থা দিয়ে তৈরী, সে দেশ স্থৃতি দিয়ে ঘেরা।
এমন দেশটি কোথাও খুঁজে পাবে না কো ভূমি,
সকল দেশের রাণা সে যে আমার জন্মভূমি।
সে যে আমার জন্মভূমি, সে যে আমার জন্মভূমি।
চন্দ্র সূর্য্য গ্রহ ভারা কোথায় উজল এমন ধারা,
কোথায় এমন থেলে ভড়িৎ এমন কালো মেঘে,
সেখা পাথীব ডাকে ঘুমিয়ে, উঠি পাথীর ডাকে জেগে।

(ধুয়া**)** 

এমন সিংগ্নে নদী কাহাব, কোথায় এমন ধ্য পাহাড়, কোথায় এমন হরিৎ ক্ষেত্র সাকাশ-তলে মেশে, এমন ধানের উপব ডেউ থেলে যায় বাতাস কাহার দেশে। (ধুয়া)

পুপে পুপে ভরা শাখী, কুঞ্জে কুজে গাতে পাখী, গুঞ্জবিয়া আদে অলি পুজে পুজে ধেয়ে, তারা ফুলের উপর ঘ্মিয়ে পড়ে ফুলের মধু থেয়ে। (ধুয়া)

ভায়ের মায়ের এমন স্নেং কোথায় গেলে পাবে কেঠ, ওমা ভোমার চরণ চুটি বক্ষে আমার ধরি, আমার এই দেশেতেই জন্ম, যেন এই দেশেতেই মরি। (ধুয়া)

38.38

STATE OF THE PARTY

ধুয়া ব

|   | 2 | 302 | <b>.</b> | = | ( <del>**</del> | ٠. |
|---|---|-----|----------|---|-----------------|----|
| • |   | -   |          | - | ~               |    |

| ›+++++++++++ <b>িশশু-ভারতী</b> |  |   |                       |   |  |
|--------------------------------|--|---|-----------------------|---|--|
| >`                             | ર                                      | 0                                       | <b>૭</b> ॥            | >`                                      |  |
| II { সা সা-1                   | মা-† মা                                | মা-া মা                                 | মামা-1 I              | মা মা-া                                 |  |
| <b>ध</b> न •                   | ধা • না                                | পু • জ্প                                | ভ রা •                | আ মা •                                  |  |
|                                |  |   | 2                     | >                                       |  |
| ₹<br>} mt ami ati              | 0<br>and sold 4                        | © est est t l                           | , {মাগা-!             | মাধা- <b>া</b>                          |  |
| ামাগমা-পা<br>দের এই ∘          | পাপা-1 <sub>.</sub><br>ব <b>সু</b> ন্• |   | ু হুনা বা ব<br>ভারি • | मा त्या -                               |  |
| ८४३ व्या                       | 4 44 4                                 | 4 41 -                                  | O1 14                 | 11 4 1                                  |  |
| •                              | ٠                                      | >                                       | <b>ર</b>              | 0                                       |  |
| બા <b>બ</b> ધા - વા            | ধা পমা -গা                             |   | পা পদ্ণা -া           | না ধা-া                                 |  |
| স <b>্ছে</b> ৹ ∘               | দেশ এ০ ক                               | স্কৃপ্•                                 | দে শের্০ ৽            | সেরা •                                  |  |
| •                              | •                                      | <b>ນ</b> ້                              | >                     | •                                       |  |
| ৩<br>(++ জন\ ) ী               | ( 4 m t m ( T ·                        |   | ণা ণা-ধা              |   |  |
| (-(-(-/1)) } I                 | ११वावा⊥<br>• भार्य                     | य । । । । । । । । । । । । । । । । । । । | नाना-पाः<br>क्रिया•   | তৈ ৽ রি                                 |  |
| • • •                          | ण देश देश<br>इ.स.                      | 4 - 1                                   | 1.1 64                | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |  |
| •                              | <b>&gt;</b> ´                          | ર                                       | ٥                     | ٠                                       |  |
| ়মাপা-1                        | সা গা - <del>1</del>                   | মাপা-ধপা                                | মগা মা-া}             | -t-t-t I                                |  |
| সে দেশ্ •                      | শৃতি ৽                                 | निया ॰ ॰                                | বে ৽ রা •             | 0 0 0                                   |  |
| ,                              | _                                      |   | _                     | <b>5</b> ´                              |  |
| \$                             | <b>ર</b>                               | ·<br>-/-//                              | <b>9</b>              |   |  |
| ঞ*I { স <b>ি স</b> ি-1—        | স1-1 স1-1                              |   |                       |   |  |
| এম্ন •                         | দেশ ০ টি                               | কো থাও                                  | यु (अ                 | 71 64 •                                 |  |
| ર                              | ۰ .                                    | •                                       | <b>5</b> ´            | ২                                       |  |
| ' পা পধা-ণা                    | et et -1                               | -†-†-† } I                              | ণদ1ি দ1-1-            | ণা ধা-া                                 |  |
| না কো •                        | ভূমি •                                 |   | সকল •                 | দে শের ৽                                |  |
| . • (                          | J                                      |   |                       |   |  |
| 0                              | ٠                                      | 5                                       | ২                     | •                                       |  |
| পধা পা-1                       | মা গা-া I                              | মা মা-া                                 | মা-রারা               |   |  |
| রাণী •                         | সে যে ॰                                | আ মার                                   | জ ৽ না                | ভূমি ৽                                  |  |
|                                |  |   |                       | ی                                       |  |
| ٠                              | \$                                     | <b>ર</b>                                |                       |   |  |
| ॥ রু বা 1 I                    |  |   | রারা-1                | त्रा याः आ द<br>स्मार्यः                |  |
| শে থে •                        | আ মার •                                | জ • ন্ম                                 | ভূমি ৽                | ריו ניין                                |  |
| <b>s</b> ′                     | ર                                      | o                                       | ૭                     |   |  |
| I সা গা-া                      |  | মামা-া                                  |                       |   |  |
| আ মার •                        | জ • ন                                  |   |                       |   |  |
|                                |  |   |                       |   |  |

<sup>\*</sup> এই ধুয়া গানের পাঁচ কলির প্রত্যেকটির পরে গীত হইবে।

## <del>া সকীত</del> ও শিল্প∙

|                      | ર                    |                  | •                            | <b>5</b> *             |
|----------------------|----------------------|------------------|------------------------------|------------------------|
| II { मा - 1 मा       | মা - মা              | মামা-1           | মামা-  I                     | মামা 1                 |
| (১) চি৹ভূ            | ऋ ० गा               | ্য ছ •           | ভারা ৽                       | কো পায় •              |
| (২) এ মন •           | <b>সি • শ্ব</b>      | न मी ०           | কা হার                       | কো পায় •              |
| (৩) পু • স্পে        | প্ ০ স্পে            | ভ রা ৽ ৾         | শাখী -                       | কু ৽ ঞে                |
| (৪) ভাগের ৽          | মা শ্বে <b>র</b> ০   | এ মন ০           | নে হে •                      | কো পায় ৽              |
|                      |                      | ৩                | ۵                            | ş                      |
| মা গমা –পা           | পা পা -1             | পা পা -1 }       | { মামা-া                     | शंशा-ा.                |
| (४) 🕏 ञ ॰ न्         | এ মন ৽               | ধারা •           | কো থায় •                    | এ মন •                 |
| (২) এ মে॰ ন্         | ধৃ ০ এ               | পা হাড় •        | কো থায় •                    | এ মন ৽                 |
| (৩) ক •• ঞে          | গা ছে •              | পাখী •           | ∕33 • • S¶                   | রিয়া ০                |
| (৪) গো লে •          | পা বে ৽              | ८क इ०            | ও মা •                       | তোমার •                |
|                      |                      |                  |                              |                        |
|                      | ೨                    | 3                |                              |                        |
| ' ধ <b>স</b> ি ণা -া | ধা পমা -গা I         | মা ধা -1         | পা পদৰ্1 -গা                 | ণা ধা -1               |
| (১) থেত তো •         | ত্ত ডিৎ •            | ্ৰ মন •          | কা লো ৽                      | মে ঘে •                |
| (২) ৯০ বিং ০         | কে ০০ ত্র            | আ কাশ ০          | ত লৈ ০                       | মে শে •                |
| (৩) জা• সে 🦠         | অবি• •               | পুঞ্জে •         | পু ০ ০ - (ঞ্                 | ধে য়ে •               |
| (৪) চ০ রণ 🔹          | ড় টি∘ •             | र ०० (क          | আন মার •                     | ধরি ০                  |
|                      |                      |                  |                              |                        |
|                      | •                    | , ,              |                              |                        |
| (-1-1-1)} I          | -1 ধা ধা I           | ধৰ্মি 1-1 I      | વા વા -ધા I                  | পধা ধা পা              |
| (5)                  | o .স থা              | পা গী <b>র</b> ৽ | ut co ·                      | যুমি য়ে               |
| [2]                  | ~ তা <u>ম</u> প      | ধা নেব "         | উ পর ৽                       | ા ઉલ                   |
| [0] 0 0 0            | • তারা               | ফু পোর           | উ পর ০                       | ণু মি য়ে              |
| [8] •                | ৽ আ মার              | এই ০ ০ দে        | (ન <sup>ા</sup> (૭૦૦         | কু ৽ শা                |
| ٠                    | ۵`                   |                  |                              |                        |
| মাগা-1 I             | সাগা-া               | মাপা-ধণা         | মগামা-া (-া                  | পা পা পা) I            |
| ं ही हैं   दे]       | পাথীর •              | ড়াকে ০০         | त्या साना (ना<br>एक ० हर्न • | ণা শা শা) I<br>• সে পা |
| (২) শে যায় ৽        | বা তাস ৽             | কা হার ০ ০       | एम ० ८ <del>४</del> ०        | ॰ এ <b>ম</b> ন         |
| (৩) প ডে •           | ফুলের •              | म ४ ००           | শে ৽ য়ে ৽                   | ॰ এ শ্ল<br>৽ তারা      |
| [৪] যেন •            | ু তেন্দ্র<br>এই • দে | শে তে • •        | ম ৽ রি •                     | ু জাম র।               |
| fol et al            |                      | V. VV            | 4 - 14 -                     | " આ મુદ્રા             |

## I-t-t-1 II II &

- [>) • &
- [२] ००० क्ष
- (3) • •
- [8] • •





# তিৱত

তিব্বতের লোকের ব্যবসা-ব্যাণিজ্য করিতে গ্র ভালবাসে। এজন্ম প্রতি বংসর ভাগারা দলে দলে



তিকতের পথ আসিয়। মিলিয়'ছে। এখান ১৮(৩ বণিকেরা নাম।পথে বাণিজ্ঞা

স্থানে স্টান, সিকিম এবং

ভারতবর্গ, চীন ও মঙ্গোলিগাতে যাতায়াত

**प्**नगामि লইয়া অগ্রদর কয়। তিকাচীয়ের। কাশ্মীবের রাজ্যানী শ্রীনগর হলতে ভেডাব লোমের বিনিখয়ে চীনাদের নিকট হলতে ্একটি বাণিজ্ঞা-পথ লাডক হুইতে দক্ষিণ তিব্ৰতের । চা সংগ্রহ করে। ইহুটের চা সাইবাব রীতি অন্ত



রক্ষের । 312141 অ'মাদের মত চাবের স্হিত ছধুও চিনি মিশাইয়াচা থায় না। ভাষারা চায়েব স্চিত মাথন ও সোডা মিশাইয়া চা থায়। বাদা হটতে মঙ্গো-লিয়ার দিকে পথটি গিয়াছে, সেই পথ চাঙ্গ-তাঙ্গ (Chang Tang) দিয়া মঙ্গোলিয়ার রাজধানী উর্গাতে (Urga) পৌছিয়াছে। যাইয়া

পচ্চরের পিঠে ভেডার লোমের বোঝা

শিগাংসি ছইয়া লাসায় গিয়াছে। এইভাবে নানা এইভাবে তিন্ততে গুৱারোই পার্নতা প্রদেশের দিক দিয়া অজ্ঞান। গিরিপণে অনেক বাণিজ্ঞাপণ সহিত সাইবেরিয়ার সমতল ভূমির সংযোগ বাহির হইয়াছে। ফারিজোঞ্গ (Phari Jong) নামক হইয়াছে। ভারতের দিকে,

**हीरनंत्र** मिरक छ

#### - ভিবৰত ++++

মকোলিয়ার দিকে তিববতী বাবসায়ীরা থচ্চর ও গরুর পিঠে ভেডার লোমের বোঝা চাপাইয়া যাতায়াত করে। কোকোনোরে হুদের বণিকেরা তাহাদের বাণিজা দ্রবা লইয়া মিলিত

হইয়। ভিন্ন ভিন্ন পথে রওনা হয়। কোকো-নোর (Kokonor) হুদকে পূর্বে চীনারা পশ্চিম সাগর নাম দিয়াছিল। এখন ইহার নীল সাগর। ইহার জল লোন।। पञ्च তন্ধরা দির ভয়ে তিব্বতীয় বণিকেরণ এক সঞ্জে বাণিজা দ্বাদি লইয়া পথ চলাচল করে। শিমলা

কালিস্পোং। সিকিমের দক্ষিণ-পূর্কাদিকের পথে চ্ছি উপত্যকায় পৌছিতে হয়, সেথান হইতে ফারি (Phari), ভারপর ধীরে ধীরে লাসার দিকে পথ চশিয়াছে। তিব্বত ও ভারতের বেশীর



য়কের (ভিক্তী গরুর) পিঠে পশম বোঝাই দিয়া ভারতবর্ষে প্রেরিত হইতেছে

পাহাড তিবৰতের দিকে পথ গিয়াছে। কিন্তু ভারতবর্ষের

ब्बेटब स



লাসার সম্ভান্তবংশীয়া মহিলা-সিকিমের রাণীর চিত্র সহিত তিববতের শ্রেষ্ঠ বাণিজ্য-পথ

ব্যবসা বাণিজা এই লাসা কালিম্পোংএর হয়। ভবিষাতে আসামের দিক দিয়া একটি সহজ পথে তিঝতের সহিত বাণিজ্ঞা-বাবদা চলিতে পারে। ঘোড়ায় চড়িতে ও পাংডেব চডাই উৎগ্রাই ভাঙ্গিতে তিব্বতীযের। পূব্পিট্। ইহাদের মধ্যে একটি প্রবাদ আছে যে,---

পিঠে বোনা লয়ে উঠে পাহাডের গায় যোগ বলি ভাষ। চড়াই উৎরাই ভাঙ্গছে তিনি উচু পাহাড় গায় মান্তৰ বলি ভায়।

তোমরা মান্তবের পূর্ব-পুরুষ পড়িতে যাইয়া পণ্ডিত ডার্উইনের নাম শুনিয়াছ। তিনি মানুষের পূর্বপুরুষ বানর ছিল একথা নলিয়া-ছিলেন। তিববতীয়েরা তাহার একথার দেয়। তাহারা বলে যে তাহাদের পূর্বপুরুষ বানুর ছিল। একথায় ভাহারা শজা বোধ করে না। তাহাদের এই কিংবদস্তীমূলক ইকিহাদের কথা বৈজ্ঞানিকের। বিশ্বাস করেন না। তাঁহার। বলেন-তিব্বতীয়েরা মঙ্গোলিয় জাতির অন্তর্ভক্ত এবং অতি প্রাচীন কালে এশিয়ায় বাস করিত। সাধারণতঃ মনে হয় যে, ইহারা কতক অঞ্চল হইতে এবং কতক ব্ৰহ্মদেশ হইতে তিৰ্বতে



আসিয়াছিল। ভাষার দিক্দিয়া ব্রহ্মদেশবাসীদের সহিত তিববতীয়দের বেশ মিল আছে। চেহারার দিক্দিয়া তিববতীয় ও মঙ্গোলীয়দের মধ্যে কোনও জলাও দেখা যায়না। কেবল কথা বলিলে ভূই জাতির পার্থকা বোঝা লায়। মনে হয়, তিববতের প্রাচীন অধিবাদীরা যাগবের জীবন গাপন করিত। গ্রুক চরাইয়া, চমরী-গ্রুর পাল রাথিয়া, আজ এখানে, কাল ওখানে, এইরপভাবে চলাকেবা করিয়া ভাহারা দিন কাটাইত। বেথনও তিববতীয় ক্ষকদ্দের মধ্যে এদেশের আদিম অধিবাদীদের জনেকটা চালচলন দেখা যায়।

তিব্বতের অতি প্রাচীন ইতিহাস জানা নায় না। তিকভীয়দের অনেক লিখিত ইতিহাস আছে তবে ভাহাদের অধিকাংশই ধর্ম-বিষয়-প্রাচীন ইতিহাস সম্প্রকিত। 'নীল্থাতা' বা তেপ-ভার গোন পো (Tep-Ter Ngon-po) নামে তিববতীয়দের প্রাচীন ইতিহাসে একটি গ্ল আছে যে, ভারতবর্ষ হইতে গথন একজন সন্নাসী- সে অতি আদি যুগে তিব্বতে আদেন, তথন তিনি তিববতকে জলে নিমাজ্জত দেখিয়াছিলেন। দ্বিতীয় বার আসিয়া দেখিলেন, অনেক পাহাড জলের উপব মাথা তলিয়াছে। এ গুণিতে আরও লেখা আছে যে, সেকালে তিববত ছোট ছোট কয়েকটি প্রদেশে বিভক্ত ছিল। এ সব পোৱাণিক সগের কথা ছাডিয়া দিলে আমবা সপ্তম শতাক্ষাতে সোজ দেন গ্রাম-প্রো (Song tsen Gain Po) নামে একজন রাজার কথা জানিতে পারি। সোক্সেন গাম্পো তের বংসর বয়ুসে সিংহাসনে বুসেন এবং অনেক বংসর রাজত করেন। ইহার বিজয়ী ব্রহ্মদেশের কতকাংশ এবং পশ্চিম চীনদেশ করিয়াছিল। সোক দেন গাম্পো চীনদেশের এক রাজক্মারী ও নেপাণের এক রাজক্তাকে বিবাহ করেন। চীনারাজকুমারী এবং কমারী ইভারা ছইজনেই বৌদ্ধতলম্বী ছিলেন, তাহারা রাজাকে বৌদ্ধশ্যের প্রতি অনুরাগী করেন। এই সময়ে ভারতবর্ষ इंडेर. इ কতকঞ্জি বৌদ্ধগ্ৰন্থ আনীত হয়। তিববতে তথন কোন শিখিত ভাষা ছিল না। ভারতীয অক্ষরের আদর্শে এসময়ে অক্ষরের বাবহার ও লিখিত ভাষার প্রচলন হইল। এই রাজাই নানা স্থানে বৌদ্ধ বিহার নিমাণ করিতে আরম্ভ করেন।

রাজা শোন্ধ-শেন্পা রাজা মধ্যে আনেক বিধিববিষার প্রচলন করেন। তাঁহার শাসন-গুণে রাজ্য মধ্যে লেখা-পড়ার প্রচলন হইল, চোর-ডাকাতের প্রতি শান্তির বিধান হইল, ধর্ম ও সংশিক্ষা আরক্ত হইল। এক কধায় তিনিই প্রথমে তিরবতে নানাভাবে বাবস্থা ও বিধানের প্রবর্তন করেন।

সেকালে নেপাল, চীন কাশ্মীর প্রভৃতি প্রদেশ হুইতে বৌদ্ধদ্ব-প্রচারকেরা তিববতে আসিতেন। রাজা গাম্-পো, রাজহানী লাসায় পাল পাহাডের গায়ে একটি অতি স্থলর রাজপ্রাসাদ নিথাণ করেন। ব্রুমান সময়ে দালাই লামার পোটোলা নামক বাসভ্বন সেইখানেই অবস্থিত। তিক্তের ইতিহাসের পুরায় নুপতি সোক্ষ সেন্গাম্পোর ন্ম অমর হুইয়া রহিয়াছে। তিববছে

জন্ম হুহুগা গ্লাহ্যাছে। তিব্বেণ্ড দোল-দেন-গান্পা ইছাব পূজা হয়। নূপতি গাম্পোর পৌন চীনদেশ হুইতে তিব্বতে চায়ের প্রচলন করেন। ভিববতের লোকেরা প্রতিদিন কিশ হুইতে সত্তর পোলালা প্রাপ্ত চাপান করে। কমে জন্ম জ্যোতিষ্পাল, চিকিংসালাল, ধ্রাবিধ্যুক্ত হুইুগাদি সংস্কৃত ভাষা হুইতে তিব্বতী ভাষায় অন্দিত হুইুগাছিল। ভারতবর্ষ, চীন, নেপাল ও কাশ্মীর হুইতেই তিব্বতে শিক্ষাও সভাতার বিকাশ হুইুগাছিল। তির্বাতের রাজাদের মধ্যে সোল-স্বাম্পো, তি সঙ্গোদিংসেন্। Ti song De tesn), রাল-পাতান (Rul pa-chan) প্রান্ত প্রধান ছিলেন। মন্ত্রম শতান্ধীতে রাজা তি সোল দিংসেন্ তান্ত্রিক পণ্ডিত প্রস্কান্তরকে তিক্তে নিমন্ত্রণ করিয়া আনিয়াছিলেন।

ভারতের দে সকল পণ্ডিত তিন্ধতে যান, তাঁদের মধ্যে দীপস্কর, অতীশ বা শ্রীজ্ঞান ছিলেন, প্রধান। অতীশের বাড়ী ছিল ঢাকা জ্যোর অন্তর্গত বিক্রমপুর পর্বাধার বাজ্যান কার্যার বজ্জার অন্তর্গত বিক্রমপুর পর্বাধার বজ্জার অন্তর্গত বিক্রমপুর পর্বাধার বজ্জার আন্তর্গত কার্যার কার্যার কার্যার কার্যার কার্যার কার্যার কারত একটি গুহার বাস করিতেন। তাঁহার সেই গুহাটি আজ্র প্রবৃদ্ধিক আছে। চারিদিক স্থ্যাকরণে নালাপের বোপ-ঝাড়। এই স্থানটি সত্য সভাই মুনিদের আশ্রমের উপযোগা। তিন্ধতীয়দের উপর ভারতীয় পণ্ডিতগণের ধর্মের প্রভাব এখনও প্র্যাপ্ত মক্ষর্ম রহিয়াতে।

## +++++++ ভিব্নত

তিববতের রাজাদের প্রভাব লুপ্ত ইইবার পর দালাই লামা বা পুরোহিত রাজাদের প্রভাব আরম্ভ হয়। দেকালে লামাদের মধ্যে সো-নাম-গিয়াৎস্ত্ (Sonam-Gyatso) তিববতে অনেক ভাল কাজ করিয়াছেন। সো-নাম গিয়াৎস্ত শব্দের অর্থ

হুইতেছে 'জ্ঞান-সমূদ্রের রথ'। ইনি ভিববতের সতীদাহ প্রথা নিবারণ করেন।

পঞ্চম দালাই লামার সময় আলুমানিক ১৬২৬ গস্তাব্দে প্রথম ইউরোপীয় পর্যাটক ভিববতে করেন। এই ইউরোপীয় ভদ্ৰোকের নাম ফাদার এন্টোনিয়ো দি খানড়াডা (Pather Antonion die Andrada)। ইনি এক-জন খুষ্টধন্ম প্রচারক এবং জাতিতে পর্নগীজ জিলেন। সম্ভবতঃ ইনি লাসা কিংবা গিয়াংসিতে যাহতে পারেন নাই। ছিলেন, কিন্তু তিবৰতে যান নাই। ইউরোপীয়-দের মধ্যে অধীয়ার মধিবাদী জোহান্ গ্রুবার Johan (Truerher) এবং বেলজিয়মের অধিবাদী আলবাট ডরভিল (Albertd orville) ইংবার পিকিং হইতে কোকো হদের ধার দিয়া উত্তর



তিৰাতী কন্তী

তিব্বতের পথে লাসা যাইয়া পৌছিয়াছিলেন। ইহার পর একে একে অনেক ইউরোপীয় পর্যাটক তিব্বতে আসেন। সে দকলের মধ্যে (Sven I[edin) ভেন্ কেডিনের নাম বিশেষ প্রাসিদ্ধ। তাহার লেখা ('I'rans Himalaya) নামক বই পড়িলে হিমালয়ের নানাস্তানের বিশেষতঃ তিব্বত সহক্ষে অনেক কথা জানা যায়।

দালাই লামাদের প্রভাব ধথের প্রভাব। তাহার দলে তিক্সতের লোকেরা যুদ্ধ বিজ্ঞা একদ্ধপ ভূলিয়া গিয়াছিল। চীনসমাট্ ধত্মগুক দালাই লামার হইয়া শক্রর সহিত যুদ্ধ এবং দেশের শাসন বিধান করিতেন। এক সময়ে তিক্সতের উপর চীনাদেরই প্রভাব ছিল।

দালাই লামারা ধশ্মামুষ্ঠানের মধা দিয়াই জীবন কাটান। তাহাদের বিবাহ করিতে নাই, বিলাদ বাদনে জীবন কাটাইতে নাই। এই দব অনেক কিছু নিয়ম আছে। তবে থাওয়া দাওয়ার



ভেন্ হেডিন্

মাকোপোলো পাদির পর্বত পার হইয়।-

## **▶→•শিশু-ভারতী**-

সম্বন্ধে তেমন কোনও বাধা নাই। মাংস ই হারা

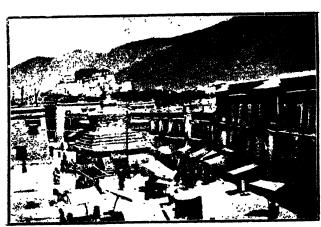
তিব্বতে স্ত্রীজাতির প্রতি বেশ দশান দেখান থান। কেননা, অত বড় শীতের দেশে শাক্সব্জী হয়। সেকালে কোনও অঞ্চলের স্দারের মৃত্যু



তিকাতের সম্রাস্ত মহিলা



তিকাতের নরনারী



লাদার বাজার

খাইয়। জীবন রক্ষা হয় না। দালাই লামাই দেশের ধর্মগুরু, দেবতা এবং রাজা, এইরূপ বলা যায়।

হইলে তাঁহার বিধবা ন্ত্ৰী কিংবা ₹**3**1 শাসনকায্য নিৰ্বাচ করিতেন। দেশের শাসনকায়ে স্থীলোক-দেরও বেশ হাত শ্বাছে।

লাদা ভিকতের রাজধানী। সংরে প্রবেশ করিবার মুখে স্তম্ভের গায়ে তিকতী চীনা-ভাষায় এবং ভাষায় খোদিত লিপি আছে। লাসা সহরের এই প্রস্তর স্তম্ভটি প্রায় হাজার বংসরের পুরাণো কিন্তু এথনও

্বেশ অটুট অবস্থায় আছে। লাসা সহরের হই দিকে চীনাদের ও তিকাতীয়দের দোকানের সারি।

নেপালীদের দোকানের সংখ্যাও বড় কম নাই।
সহরে পথঘাট অপরিষ্কার ও অপরিচ্ছর। লাসা
(Lhassa) তিক্ষতীয়দের কাছেই শুধু নংহ,
সমৃদ্র বৌদ্ধ অগতের লোকের কাছেই ভীর্বস্থান
বলিয়া, পরিচিত। ভাষাদের কাছে লাসা—
দেবতাদের বাসভূমি। সহরের চারিদিক ঘিরিয়া
থ্ব পুরাণো গাছের সারি, প্রাচীবের মত ঘিরিয়া
আছে। গাছের আড়ালা দিয়া দূর ইইতেই সাদা
সাদা উচু উচু বাড়ীগুলি চোঝে পড়ে। মঠ ও
বিধারের চূড়া অতি স্কলর দেখায়া। বৃদ্ধল
(Budha La) বা বৃদ্ধের পাহাড়ের উপর দালাই
লামার বিথাতে পোটালা প্রামাদ অব্হিত।

লাদা সহরের বাড়ী ঘরগুলি চার পাঁচ তলা চু। প্রায় দকল বাড়ীই দাদা চুণকাম করা।

कानामा छनि नान রঙে রঙাইয়া দেয়। বাহির হইতে বাডী-ঘরগুলি বেশ স্থান্যর দেখায়। কিন্দ ভিতরের ঘরগুলি নোংরা ও আবর্জনাপূর্ণ এবং বাদন কোসনে ভরা থাকে। লাসা তেমন বভ সহর নয়। বড় চাবিদিক জোর বি**রি**য়া চার পাঁচ মাইল হইতে পারে।

বটে। এই মন্দিরের মধ্যে বৃদ্ধদেবের এক অভি
বৃহদাকার মৃত্তি আছে। কথিত অংছে যে এই
মৃত্তিটি বৃদ্ধদেবের জীবিতকালে
সাল থাল-মন্দির মগধে নিশ্মিত হইয়াছিল।
তিব্বতীয়েরা এই মৃত্তির নাম দিয়াছে গোকেরি
শ্লোক—গোলা কথায় গোকে। এই মৃত্তিটি সোনা
কণা, দস্তা, লোহা, তামা, হীরা, পল্মরাগ, মৃক্তা
ইন্দ্রনীল প্রভৃতি মৃদাবান মণি দিয়া প্রস্তত। লাসায়
প্রায় সমৃদয় মঠেই নানা প্রেণীর দেবদেবীর মৃত্তিও
দেখিতে পাওয়া গায়।

িকাতীয়েরা চতুর-চালাক, সাংসী ও পরিশ্রমী। নাচ-গান ও আমোদপ্রমোদপ্রিয়। ইছারা



দালাই লামার রাজপ্রাসাদ- পোটালা-লাসা

সহরের বড় রাস্তাটি বেশ চওড়া এবং অনেকটা পরি-দার পরিচ্ছন্ন। কিন্তু গলিঘুঁজিগুলি অতান্ত নোংরা ঐ সব পথে চলিতে ঘুণা বোধ হয়। এখানকার বেশীর ভাগ বাড়ীই ইট ও পাথরে গড়া। কতক কতক মাটি দিয়াও তৈয়ারী হয়, কিন্তু বাহিরে এমন করিয়া চূণের প্রলেপ দেওয়া হয় যে মাটি কি ইট-পাথরে গড়া, তাহা বৃষিবার যো থাকে না।

ণাসা সহরে প্রায় তিন চারি শত বৌদ্ধ বিহার আছে। সে সকলের মধ্যে সাঙ্গ থাঙ্গ (Tsang khang) নামক প্রধান বৌদ্ধ মন্দির দেখিবার দেখিতে গেটে। পরিকার পরিচ্ছন্ন ণাকা: ইহাদের কৃষ্টিতে লেখে নাই। ইহারা মাথার চুল না কামা-ইয়া পিঠের দিকে বেণী ঝুলাইরা রাথে। পুরুষ-, দের চেয়ে মেয়েরা নেশী পরিশ্রমী। চাষ্বাস ঘর গৃহস্থানী সব ইহাদের হাতে।

তিকাতীয়দের শাসন বিধান সম্বন্ধে তুই একটি কথা বলিতেছি। চোর যে মূলোর জিনিষ চুরি করে, তাহার সাত শুণ পরিমাণ দশু দিতে হয়। এক টাকা চুরি করিলে সাত টাকা দিবার রীতি। তেরো বছরের ছেলে-মেয়েরা কোন অপরাধ

### ম্পিশু-ভারতী

করিলে তাংগদের কোন সাজা পাইতে হয় না।
কেহ যদি নিজের বাড়ীতে চোরকে লুকাইয়া রাথে
তাহা হইলে চোরের চেয়ে বেশী সাজা তাংকে
ভোগ করিতে হয় । খুনীকে হতবাজির সংকার
বায়, দরবারে অর্থদণ্ড এবং নিহত বাজির
পরিজনের সহিত শাভিস্থাপনের জন্মও কিছু অর্থদণ্ড
দিতে হয় ।

তিক্ষতিয়েরা সচবাচর মৃতদেহ দাং-করে না।
কিংবা কবর দেয় না। তাহারা মৃতদেহ কাটিয়া
টুকরা টুকরা করিখা উচু পাহাডের গায়ে ফেলিয়া
রাপে। সেগানে শত শত শক্তি গৃথিনী আসিয়া
মৃতদেহের মাসে পাইয়া নিঃশেষ করে। সময়
সময় লামাদের মৃতদেহ পোডান হুয়। কুয়
রোগগ্ত রোগিগানের মৃতদেহ পলিতে পুবিয়া
নদীতে দেলিয়া দেয়।

তিকাতে অনেক রকমের খেলার প্রচলন আছে।
মিঙ্গ মাঙ্গ (Ming Mangg) খেলা কতকটা দাবার
মত। পাশা পেলাও অভ্যান্ত অনেক খেলাও
আছে। এ সকল ছাড়া কুন্তি, পোলো, পোড় দৌড, নাচও অনেক প্রকারের আমোদ প্রমোদ মাছে। লামাদের নাচ দেখিবার মত্র বাট

তিকাতীয়ের। ধায়কায় লাইয়া পাকিতে হাতাও ভালবানে। পথ চলিতেছে আর সঙ্গে সঞ্জে ধ ম চক্র গুরিতেছে আর মুখ দিয়া উচ্চারিত হুইতেছে প্র মণিপলে হু। তিকাতের প্রধান প্রধান কয়েকটি মঠ ও শান বিহারের এখানে নাম করিলাম।

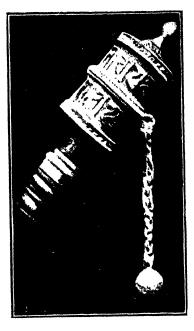
ডোঙ্গৎসি.

গানদেন

গয়াৎস্ত, ত্যাণিলাম্পো,

m

নিযুক্ত থাকিতে হয় কিন্তু তাশিলাম। ধর্মামুচানেই নিয়ত ব্রতী থাকেন। তাশিলাম্পোর মঠটিও



ধশুচক

দেশিবার মত। চারিদিকে উচু উচ় পাং।ছ মাণ তাল্যা দীড়াইয়া আছে, আর মাকাধানে

Tuim.

তাশিলাম্পোর মঠ বাড়ীগুলি
বিস্তৃত সমতনভূমিব উপর
শোভা পাইতেচে। এগান
হুইতে গিয়াংসির ছুগ বাড়ী দেখা যায়। তাশিলাম্পোতে চার পাচ
হাজার লোক বাস করে।

(Ganden) এই ডোঙ্গংসি মঠের এক প্রাচীন লামা বাঙ্গালী মমণকারী শরৎচন্দ্র দাসকে আশ্রয় দেওয়ার জন্ম প্রাণদণ্ডে দণ্ডিত হইয়াছিলেন। শিগাংসি (Shigatae) তিকাতের দ্বিতীয় প্রধান সহর। দালাই লামাকে নানাপ্রকার রাজকার্যো তিকাতের প্রত্যেক মঠের সঙ্গে লাইতেরী বা পাঠাগার গাতে এবং সব পূর্ণি অতি যদ্ধের সহিত রাথা হয়।

তিকাতে জ্ঞানীর আদর গুব বেশী। স্পণ্ডিত লামারা দেবতার ক্যায় সম্মানিত। দালাই লামার

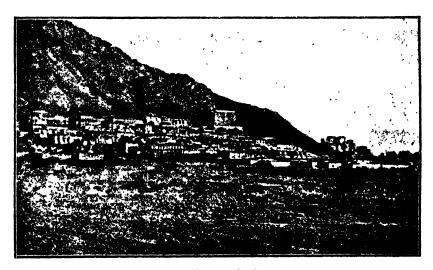


भागम मध्यानद्वत तृत्क , छछे छात्र (थल)

### ভিবৰত

সহিত একাদনে বসিতে পারেন। তিব্বতের ধনী বাক্তির চেয়েও জ্ঞানী বাক্তির সব্বত্ত আদর। তিব্বতের অতি সাগারণ লোকও জ্ঞানী বাক্তিকে 'পণ্ডিত মহাশয়' (Leaumn-in) বলিয়া সম্বোধন করেন।

তোমরা মানস দরোবরের নাম ভূগোলে পড়িয়াছ। কবিরা মানস সরোবরের সম্বন্ধে অনেক কথা লিখিয়া গিয়াছেন। হিন্দুর কাছে মানস সরোবর পুণাতীর্থ। স্কন্দ পুরাণের 'মানস খণ্ডে' মানস সরোবরের উৎপত্তির কারণ আছে। মানস সরোবরের ধুসর বলিয়া জলের বর্ণ সক্রদাই নীল। বেশী রোদ্র উঠিলে ঘোর নীল দেপায়। ছদটির পরিধি কেছ্র বলে পঞ্চাশ, কাহারও মতে আশী, আনার অস্তমতে একশত মাইল। কোন বিশিপ্ত ইউরোপীয় প্রাটকের মতে বহুমানে ইছার পরিধি আশী মাইল। সরোবরের চারিদিকে উচ্চ প্রত গাবে কয়েকটি মঠ আছে। যুণা, লামতলাং, সারলাং, কোশল বা গোসল, নিক্র 'জু', গোষা প্রভৃতি। এখানে রাজহংস নাই, পর নাই, পর নাই, পর নাই, মনারম বলিয়া কাবা বা পুরাণে যাছা কিছু ইছার



তাশিলাম্পো মঠ—তিপ্ৰত

নোলগোর তুলনা মিলেনা। ভেন্ হেডিন্ তাহার বিখ্যাত লমণ কাহিনীতে মনেস সরোবরের অতি স্থার বর্ণনা করিয়াছেন। আজকাল ভারতব্যের জনেক লমণকারী এখানে বেড়াইতে আসেন। চিত্রশিল্পী ও পর্যাটক ইন্তুক্ত প্রমোদকুমার চট্টোপাধ্যায় নিজে মানস সরোবরের দেখিয়া মানস সরোবরের এইরূপ বর্ণনা ক্রিয়াছেন—'চ চুদ্দিকে পর্যাত্তনকার বাল্র করুপ থাকে, এই নীলাভ মানস সরোবরের চারি-দিকেই সেইরূপ। বালির ভূপের বর্ণ লোহিতাভ

আন্তথ্যিক উপাদান বণিত, সে সকল কিছুই নাই। ছই চারিটি কৃদ্র কৃদ্র কাল হাঁদ সাধারণতঃ যাহাকে বালিহাঁদ বলে—কথনও হুদের তীরে, কথনও জলে আনাগোনা করিতেছে। আর নিকটে ছহ একটি মাছরাঙা পাণী জলের উপর ইতস্ততঃ ক্রতগতিতে আহার অবেষণে উড়িতেছে। জল অতীব শ্বছা।' তিবৰ তীয়দের কাছেও মানদ সরোবর পুণাতীর্থ বলিয়া বিবেচিত।

তোমাদের কাছে আমরা প্রথমেই বাঙ্গালী পর্য্যটক শরৎচক্র দাদের কথা বলিয়াছি। শরৎচক্র ১৮৪৯ পৃষ্টাব্দে চট্টগ্রামের বৈগুবংশে জন্মগ্রহণ

### , শিশু-ভারতা-

করেন। কলিকাতা প্রেসিডেন্সি কলেজ হইডে
শিক্ষালাভ করিয়া ১৮৭৪ খুষ্টান্দে দাৰ্জ্জিলিংয়ের
ভূটিয়া বোর্ডিং ক্লের প্রধান শিক্ষকের কান্ধ করেন।
দেখানে লামা গিয়েন গিয়াৎস্থর নিকট তিব্বতীয়
ভাষা অধ্যয়ন করেন। অবশেষে তাঁহার সাহায়ে
তিব্বত রাজসরকার হইতে অনেক পুঁথিপত্র সংগ্রহ্ম করিয়া আনিয়াছিলেন। তাঁহার লিখিত
তিব্বতীয় ভাষার অভিধান পণ্ডিতসমাজে বিশেষ
আদৃত। তিব্বতের লোকেরা তাঁহাকে কা— চি—
লামা বা কাশ্মীরী লামা বলিয়া সম্বোধন করিত।
তিনি তিব্বতীয় সভাতার আদিভূমি ইয়ালুক্স

প্রচার করিয়া তিকাতকে ভারতের অঙ্গীভূত করিয়াছিলেন তাঁহাদের জীবনচরিত লিথিয়া ইনি আমাদের জ্ঞানভাগুার সমূদ্ধ করিয়াছেন।

ভিক্তের সহরের পথে ও মঠের বাহিরে লামাদের ভিক্ষা করিতে দেখা যায়। তিক্ততীয়েরা বিনয়ী— কাহাকেও অভিবাদন করিতে হইলে জিহ্না বাহির করিয়া হাত বুকের দিকে আনিয়া শ্রদ্ধা প্রকাশ করে।

ইংরাজ রাজসরকার কয়েকবার তিক্সতে অভিযান প্রেরণ করেন। এগন ইংরাজের সঞ্তি তিক্সত সরকারের মিত্রভাব বিভ্যান।



লামা সন্ন্যাসী

(Yalung) নামক স্থানের নানা মঠ ও বিহার হইতে ভিববতীয়দের সম্বন্ধে অনেক কিছু নূতন তথা সংগ্রহ করিতে পারিয়াছিলেন। গভর্মেণ্ট তাঁহার সাহস দক্ষতা ও পাণ্ডিতা দেখিয়া রায়বাহাছর উপাধি দিয়া সম্মানিত করিয়াছিলেন। তিকাতে যাইয়া যে সকল ভারতীয় পণ্ডিত নিজ নিজ জান ১৯৫৫র্মর



ভিকাতী অভার্থনা

তিন্ধতের সৈঞ্চদশ নৃতন ভাবে গঠিত ইইতেছে, তিব্বতের শিক্ষা দীক্ষাও বাড়িয়া গিয়াছে। ক্লপকথার রহস্তপুরী তিব্বতের কথা এখন আর গোপন নাই—আমরা প্রতিদিনই নানাভাবে তাহার সম্বন্ধে অনেক বিষয় জানিতে পারিতেছি।



## দধীচির আত্মত্যাগ

পুবাণেব গল্প )

আমাদেব দেশে সে অতি প্রাচীনকালে দণীচি নামে এক ঋষি ছিলেন। তাঁহাব মত উদাব ও পবোপকাবী লোক সেকালে অতি কম ছিল। পবের কল্যাণ করাকেই তিনি তাঁহার জীবনেব একমাত্র ধর্ম বলিয়া মনে কবিতেন। এদিকে আবার দণীচি ঋষিব তপোবলও ছিল অসাধারণ। তাঁহাব তপোবল সহছে অনেক কিছু গল্ল আছে। অথক ঋষি ছিলেন দণীচির পিতা। এই অথকা মৃনি বেনেব ব্যবহারিক অংশগুলিকে পৃথক কবিয়া প্রচার করেন। এই অংশে শক্রনাশ করিবার উপযোগী যাগ-যজ্ঞ ও ক্রিয়াকর্শের বিধান আছে। দণীচি মৃনিব মাতা শান্তি ছিলেন কর্দম প্রজ্ঞাপতি নামে এক মহাঞ্বির কক্ষা।

দ্ধীচি পরম শিবভক্ত ছিলেন। ইংহার শিষ্য নন্দী শিবের একজন পার্শ্বচররূপে পবিগণিত হইয়া-ছিলেন। দেবতাবা পথ্যস্ত বিপদে পডিলে দ্ধীচি মুনির সাংযাথ্য গ্রহণ করিতেন।

একবার দেবতাদের রাজা ইন্দ্রপাত্তমিত্র ইত্যাদির সহিত বদিয়া আছেন, এমন সময়ে দেবগুরু বৃহস্পতির প্রতি উপযুক্ত হইলেন। ইন্দ্র, গুক বৃহস্পতির প্রতি উপযুক্ত সম্মান দেগাইলেন না, এমন কি, তাঁহাকে বদিবার আসন পর্যন্ত দিলেন না)। বৃহস্পতি ইন্দ্রের এই অহকার, এই অক্যায় অপমান নীরবে সম্ভ করিয়া ইন্দ্রের সভা ত্যাগ করিয়া চলিয়া আসিলেন। কিছুকাল পরে ইন্দ্র বুঝিডে পারিলেন যে, গুরুকে অপ্যান করিয়া কাজাটা ভাল কবেন নাই। অঞ্চল্প চিত্তে ইন্দ্র সংস্পতি দেবেব সন্ধানে বাহিব হইলেন, কিন্তু কোপাও ভাঁংার খোঁজ মিলিল না।

দেব গুরু যে দেব গুণেব প্রতি অস ছট ইট্টাছেন, দেবতাদেব শব্দ অফুরদেব একথা জানিতে বিলম্ব ইটল না, কাজেই তাহারা ফ্যোগ বৃঝিয়া তাহাদের গুরু শুক্রাচাথোব প্রামর্শে দেবতাদেব সঙ্গে যুদ্ধ করিতে আবস্ক কবিল। দেবতারা অফুরদের সঙ্গে পাবিয়া উঠিলেন না। প্রিশেষে তাঁহাবা ব্রহ্মাব শ্বণাপন্ন ইইলেন।

ত্রদ্ধা দেবভাদিগকে ভর্পনা কবিয়া বলিলেন—
তোমরা বহস্পতি দেবকে অপমান করিয়া অতাস্ক
অক্সায় করিয়াছ, কিন্তু অবশেষে দেবভাদের ছঃখে
ছঃখিত হইয়া তাহাদিগকে ইটা নামক ঋষির পুত্র
ত্রিশিবাব শবণাপন্ন হইতে বলিলেন। দেবভাগণেব
অক্সনম বিনয়ে ত্রিশিবার দমা হইল, তিনি তাহাদের
গুক্ত হইয়া তাহাদের উপকার করিতে স্বীকৃত
হইলেন। এইবার দেবভাবা গুরু ত্রিশিরার
সাহায়ে অস্ত্রদিগকে পবাজিত কবিতে পারিলেন।

ইন্দ্রের অপবাধে দেবতাদের আবার বিপদ্ ঘটিল কি ত্রিশিরা ঋষির মাতা ছিলেন অস্ত্রদের মেয়ে। এক্ষ্যু ত্রিশিরা ঋষি মাতামহকুলের লোকদের প্রতি স্নেহ্বশতঃ গোপনে ষ্ক্রণালা ইইতে অস্ব্যদিগকে যজের ভাগ দিতেন। ত্রিশিরার

#### শিশু-ভারতী

ছিল তিনটী মাথা। ত্রিশিরার এইরূপ ব্যবহারে ইল্রনেব একদিন তাঁহার তিনটি মাথাই কাটিয়া ফেলিলেন।

খ্টা মৃনি, পুত্র ত্রিশিবাব মৃত্যুতে ভয়ানক বাগিয়া গেলেন। ইন্দ্রকে যুদ্ধে নিহত কবিতে পারে ভীষণাকার অব্ধরের উৎপত্তি হইল। এই অব্ধরের নাম হইল রুত্র।

বৃত্র অংগে যাইয়া অসাধারণ পরাক্রমের সহিত দেবতাদেব সঙ্গে যুদ্ধ করিতে আরম্ভ করিল। দেবতাবা একে একে সকলেই পরাজিত হইলেন।

> দেবরাজ ইন্দ্র বুত্তের সহিত অনেক যুদ্ধ কবিয়াও জনী হইতে পারিলেন না, তাঁহাকে বুত্রের কাছে পরাজয় মানিয়া স্বৰ্গ ছাডিকা পাতালে গিয়া থাকিতে হইল। সক্দ দেবতাই পাতাৰো ষাইয়ালুকাইয়া রহি-লেন। হটা ঋষিব পুত্রহত্যাব প্রতিহিংসা এই ভাবে সাথ ক इडेन।

স্বৰ্গ হইতে পাডালে দেবভাদেব সিয়া অভি करहे मिन যাইতে लाशिल। যাঁহারা মন। (किনীব কুলু কুলু ধানি ভানিয়া, পারিজাতের মালা গলায় পরিয়া প্রম সানৰে দিনযাপন করিতেন, আজ তাঁহারা কোথায় কোন অন্ধকার পুৰীতে पिन কাটাইতেছেন ৷ এই ভাবে দীৰ্ঘ দিন--मीर्घ **माम**—मीर्घ वर्ष কাটিয়া গেল। পরি-শেষে দেবতারা ব্রহ্মার



ত্তামুনির যজে ভীষণাকার অহ্রের জন্ম

এইরপ একজন বীরের উৎপত্তি কামনা করিয়া তিনি ষজ্ঞ করিতে লাগিলেন। যজ্ঞে পূর্ণাছতি দিলে পর যজ্ঞাগ্রির দক্ষিণ অংশ হইতে এক অতি সহিত বৈকুঠধামে বিষ্ণুর নিকট ঘাইয়া কিভাবে বৃজাস্থরের নিকট পরান্ধিত হইয়া পাতালে বিতাড়িত হইয়াচেন এবং কিরুপ ক্লেশে তাঁহাদের দিন কাটিতেছে, সেই সব কথা বলিয়া ভাষার প্রতীকার চাহিলেন। বিষ্ণু তাঁহাদেব ছাথে ছাখিত হইয়া कहित्तन, मधीि मनित अखि बाता यमि विचक्या বজ্ঞ নির্মাণ করেন তাহা হইলে সেই বজ্ঞের প্রহারে বক্রাস্থবের প্রাণনাশ হইতে পারে।

দেবভারা বুত্রাম্ব বদেব উপায় জানিতে পারিয়া দ্ধীচি মনির আশ্রম আসিয়া উপস্থিত হইলেন। অতি ফুলৰ নিৰ্জ্বন তপোৰন। গাচে গাছে, লভায় লভাষ, সেই স্থানটিকে ছায়া-में एक ल ক বিয়া বাখিয়াছে। পাখীরা গাৰ গাহিতেছে। ভ্রমবেরা গঞ্জরণ-স্কৃতি গাহিষা গাহিষা ফুলে ফলে উডিয়া বেডাই-তেছে। হরিণ-হরিণী **ठक्क नग्रम धिनिक्** ওদিক চাহিয়া তথো-বনের বনে বনে ছটিয়া বেডাইতেছে। ময়ুব মযুৱী আতাম-প্রাক্ত পতিত শশু খুটিয়া খুটিয়া থাইতেছে। অদুরে —তপোবনের প্রান্ত-

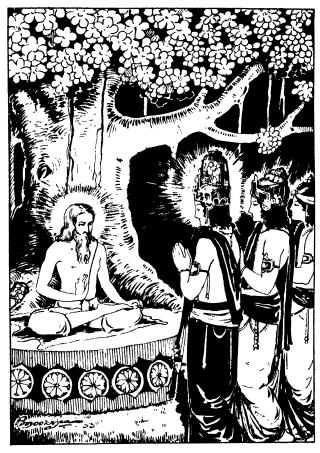
ভূমি চ্ছন করিয়া ननी इतिया हिन्या हिन्या एक। ঝষি দধীচি এমনি

তাঁহার নিকট আসিয়া

অপরার-কালে আশ্রম-ভরুমূলে বসিয়াছিলেন। সেই

দেবতাবা

আপনার দয়া ভিকা কবিবার জন্ম আজ আমরা আপনার নিকট আসিয়াছি। দ্ধীচি ফুলের মত ভ্রন্ত নিশ্বল প্রসন্ন হাসি হাসিয়া বলিলেন-জাপনারা যে জ্জুত আমরে নিকট জাসিয়াছেন তাহা আমি পাান দারা জানিতে পারিয়াছি। জীবের জন্ম হইলেই মৃত্যু



আমাৰ এই শ্ৰীৰ দিয়া যদি আপনাদের কোন উপকার করিতে পারি. দে যে আমাৰ প্রম সৌভাগ্যের বিষয়

একে একে দেবভারা ব্লিলেন—হে মহাপ্রাণ ঋষি, । । । আমার এই শরীর দিয়া যদি আপনাদের কোন

জাঁহাদের তুদ্দশার কথা নিবেদন করিতে লাগিলেন। হয়, একদিন না একদিন এ দেহের বিনাশ হইবেই।



সময়ে

- ※

উপকার করিতে পারি, সে যে আমার পরম সোভাগোর বিষয়। আমাব অস্থিদাবা থদি আপনাদের কল্যাণ হয়, তবে তাহাই হউক। এইরপ বলিয়া দ্ধীচি মুনি যোগাসনে বসিয়া যোগের সাহাযো দেহত্যাগ কবিলেন। তাহাব মৃত্যুতে চাবিদিকে আনন্দর্ধনি জাগিথা উঠিল। দেবতারা সেই প্রিত্র দেহের উপর পুস্পর্ষ্ট করিতেলাগিলেন।

এইভাবে পুণাবান ঋণি দেহত্যাগ করিলে পর তাহার অদ্বি ধারা বজু নিশ্বিত হইল। ইন্দ্র সেই বজু হাতে করিষা দেব-সৈক্তদের সহিত রক্তান্থবেব বিক্তমে যুদ্ধ করিতে চলিলেন। দেবতাও অহরে ভীষণ যুদ্ধ হইল। বৃদ্ধাহ্মর দেবতাদের সহিত যুদ্ধে পরাঞ্জিত ও নিহত ইইল। দুখীচির প্রাণদানের ফলে দেবতারা আবার স্বর্গ-রাজ্যে প্রতিষ্ঠিত ইইলেন।

পরের উপকারে দখীচির এই যে প্রাণদান, এই যে আত্মতাান, তাহ। ভারতের পৌরাণিক যুগের কাহিনীকে উজ্জ্বন করিয়া রাধিয়াছে। দখীচি দেবতাদের কল্যানে প্রাণদান করিয়া পৃথিবীর মাম্বকে তাাগের ভিতর দিয়া দেবতা করিবার দরন স্থকর এই এক মহৎ আদর্শ দেবাইয়া অমর হইয়া রহিয়াছেন।

## অক্বতজ্ঞ পুত্ৰ

(জাতকের গল্প)

ব্রহাণত যথন কাশীতে বাজ্ঞ করছিলেন, এ হ'চেছ সেই সময়েব কথা। তথন কাশীর কাছেই এক গ্ৰামে বশিষ্ঠক ব'লে একটি লোক থাকত। সে ছিল ভার বাপমায়েক একমাত্র ছেলে। বুডো বাপ-মাকে দেই দেখত। কিছুদিন বাদে তার মা মাবা গেলেন। বেঁচে রইলেন ভগু বুড়ো বাপ। বশিষ্ঠকের স্ত্রী কিন্তু বড়ো বাপকে একেবারে দেখতে পারত না! প্রায়ই বশিষ্ঠকের কাছে তাব বাপের নামে নানা রকম মিথো নালিশ করত আব বলত "দেখ, এ তো-বড়ো হ'মে গিয়েছে, অনেক রকম বোগেও ধরেছে। কিছতেই আর বেশী দিন বাঁচৰে না। ভবে আমবা এই বোঝা ব'য়ে মিছে কেন আব কট কবি ? ভার চেয়ে তুমি একে মেরে ফেল,-সব রকমে স্থবিধা হবে। নইলে সারাক্ষণ বুড়ো ভধু বদে বদে খাবে, বুঝলে ত " (চিত্র--:) এই একই কথ। ভন্তে ভন্তে শেষে বশিষ্ঠকেরও মনে ২তে লাগ্ল, ''তাইতো, এ তো মন্দ কথা নয়।" সে একদিন স্ত্রাব কথার উত্তরে বল্ল, "দেখ, বল্ছ যা সে তো ভাল কথা। কিন্তু একটা মানুষকে মেরে ফেলাত সংজ্ঞানয়। সেকি ক'রে ২বে?" তাব স্ত্রী বললে "গ:জ্ডা, উপায় আমি বলে দিচ্ছি। ভোমার বাপ ভো কাণে শোনেন না।

তাব সামনে যেয়ে সবাই যাতে গুন্তে পায় এমনি জোরে চেঁচিয়ে বল যে, তাঁব কাছ থেকে একজন যে টাকা ধার নিমেছিল, তা সে কিছুতেই দিছে



চিত্র :-- বুড়ে। শুধু বলে বলে খায়

না, তাই তাঁকেও সঙ্গে থেতে হবে! প্রদিন ভোবে উঠে হজন মিলে গাড়ীতে চলে যাবে। শ্বশানে গিয়ে তোমার বাপকে মেরে মাটিতে পুঁতে

#### ্ অকুত্ত পুত্ৰ ---

রেখো। তারপরে এমন ভাবে বাডী ফিরে গাড়ীতে বদে বইল। তার বাপ কিছুতেই আছ আদবে যেন ডাকাতে তোমার বাপকে মেরে তাকে নামাতে পারলে না। কি জ্বার করে.

ट्डांसारम्ब भवः ल्रिटे निरंबर्छ।" (चिक्-२) विभिन्ने छत्न वल्रान, "का, अथूव छान छेलाघ बर्टे!" अहे वर्रान रम सावात आर्था-कन कक कद्रान।

বশিষ্ঠকের একটি ছেলে ছিল। বয়স এগাব বংসব। কিন্ত জ্ঞানে আব বৃদ্ধিতে সে ছিল খুবই বড়। সে এসব প্রামর্শ শুনতে পেলে। ভনে ভাব্লে, আমার মাব বৃদ্ধিতে আমাব বাবা এত বড পাপ করতে যাচ্ছেন, আমি তাঁকে বাধা দিব। এই ঠিক কবে সে গিয়ে ভার ঠাকুর দাদাব পাশে বদে বুইল। (চিত্র—৩) ধাবার যথন সম্য এল তথন সবার আগে সে গিয়ে



চিত্র ২—তোমাব বাপকে মেরে মাটিতে পুঁতে রেখো

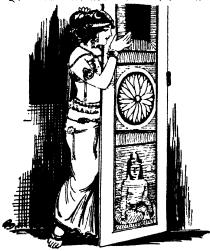


চিত্র ৩-ঠাকুর দাদার পাশে বদে রইল

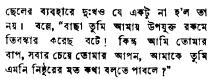
ছেলেকেও সঙ্গে নিয়ে সে চশ্ল। বশিষ্ঠকের স্ত্রী
জানালা দিয়ে হাসিম্থে দেখুতে লাগ্লো গরুর গাড়ী
বুড়ো শশুবকে নিয়ে শাশানের দিকে চলে যাছে।
(চিত্র—৪) এদিকে শাশানে নেমে বশিষ্ঠক যথন
গর্ভ যুঁডছে, তথন ছেলে যেন কিছুই জানে না
এমনি ভাব কবে গিয়ে বাপকে জিজ্ঞাসা করলে,
"বাবা এথানে গ্রু কেন যুঁড়ছ ?" ডখন বাবা,
বল্লে, "ভোমার সাকুদা কি না বুড়ো হয়েছেন,
কাজও কবতে পারেন না, দিনরাত অস্থে
ভোগেন, এও কট সয়ে বেঁচে থেকে ভো কোনো
লাভ নেই, ভাই ভাবছি যে তাকে এথানে
পুঁতে রেথে যাব।" কথা শুনে ছেলেটি আর

**- 米** 

কোনো কথা না বলে বাপেব হাত থেকে মাটি খুঁডবার যন্ত্রটি নিয়ে পাশেই আর একটা গুর্ত করতে



চিত্ৰ ৪—জানালা দিয়ে হাসিম্থে দেখতে লাগ্লো আরম্ভ কর্লে। বাপ যখন জিজাসা করলে, "তুমি গর্জ কেন করছ ?" (চিত্র—৫) তখন বল্লে, "বাবা



তথন সেই জানী ছেলেটি বাপকে ব্ৰিন্নে বল্তে লাগ্ল, "বাবা আমি নিষ্ঠুব নই! তুমি যে পাপ করতে যাচ্ছিলে, তা একবার কবা হয়ে গেলে আর ফেরবার পথ থাক্ত না। তাই বন্ধুর মতই আমি তোমায় এই পাপ কাল থেকে নিবৃত্ত করেছি। নিন্দোয়ী বাপ-মাকে যে অনথক ব্যথা দেয়, মৃত্যুব পরে সেনরক ভোগ করে। বাপ-মাকে প্রাধা ও সম্মান করলে মৃত্যুর পরে অ্বর্গলাভ নিশ্চিত।"

এই সব কথা ভনে বশিষ্ঠক নিজের তুর্কু দির্বীকথা মনে করে বড় লজ্জিত হ'ল। বললে "বাবা, তোমাব মার বৃদ্ধিতেই আমি এ রকম খারাপ কাজ কর্তে যাছিলাম।" ছেলে বলে, "বাবা, মাব পরামশেই তুমি এমন খাবাপ কাজ কর্তে প্রস্তুত্ত হয়েছিলে। যেদিন মা ভোমার সঙ্গে এ বিদ্ধে প্রামশ করছিলেন আমি দোবের আডালে থেকে তার সব ভনেছিলাম। যাই হোক ভগবানের কৃপায় ভোমাব চৈতক্ত ফিবিয়ে এনে ভোমাবে



চিত্র ৬—এমন সময় দেখতে পেলে যে তিন**জ**নেই ফিরে আস্চে

ভোমাব দেখে শিথছি। আমার বাপ যথন গুডো হবেন, তথন উাকে এই গর্ত্তের মধ্যে পুঁতে রাগব।" একথা শুনে বশিষ্ঠকের চেতনা হ'ল;



চিত্ৰ ৮—মাকে তু:খ দিয়ে কিছু শিক্ষা দিতে হবে

অপকর্ম হতে রক্ষা কর্তে পেবেছি! এখন বাবা, মাকে এমনভাবে শিক্ষা দিতে হবে যেন ভবিন্যতে তিনি এ বক্ষম কাল কথনো না করেন। নয়তো আজ যিনি একজনের অনিষ্ট কর্তে যাচ্ছেন, কাল যে তিনি তোমার অনিষ্ট করবেন না, তা কে বল্তে পারে ?" ভনে বশিষ্টক সম্ভষ্ট হয়ে বল্লে, "দে কথা ঠিক।" তাবপর তিনজন মিলে বাডী ফিরে

এল। বশিষ্ঠকেব স্থা দেখে জ্বলে পুড়ভে লাগুলো। (চিত্র—৬)

এদিকে বশিষ্ঠকের স্ত্ৰীর মনে আনন্দ আর ধরে না। সে चत्र (मात्र भूष्य मूट्ड পাষেদ রেঁধে দোরের কাছে বসে আছে। স্বামী আর ছেলে ফিরে এলে থেতে দেবে। এমন সময় দেখলে যে, তিন জনই আবার বাডী ফিরে (भरअङ আসচে ৷ তো দেভয়ানক চটে গেল। তারা এসে বাডীর দরজার কাছে পৌছতেই বশিষ্ঠককে ধরে থুব বকুনি দিতে আরম্ভ করলে। বশিষ্ঠক কোনো কথা না বলে গাড়ী থেকে তারপর নামলে। ক্লীকে বাড়ী থেকে বের করে দিয়ে বলে. আর কংনো আমি তোমার মুখ দেখতে চাইনা।" (চিত্র—৭ তাবপর তিন জন ফিরে এসে স্থান ক'রে পারেস থেলে। তাব শ্বী এক প্রতিবেশীর

বাড়ী রইলো।

এমনি ক'রে দিন যায়। একদিন বশিষ্ঠকের
ছেলে বাপকে বলে, "বাবা, এমনি করে তো মার

কিছু শিকা হচ্ছে না, ঠাকে ছ:খ দিয়ে শেখাতে হবে।" (চিজ্র—৮) তখন ছফ্কনে মিলে বৃদ্ধি করে সমস্ত গাঁয়ে রটিয়ে দিলে যে বশিষ্ঠকের বিয়ে। সেও ফুলের মালায় চন্দনে সেজে সারা গাঁ ঘুরে এল যেন



চিত্র ১--তৃমি গর্ভ কেন করছ ৄ

সভিা সভিা বিষে কর্তে বাচ্ছে। পাড়ার মেয়ের। বশিষ্ঠকের বিষের কথা নানা রক্ষ বং ফলিয়ে এনে ভার স্ত্রীকে বলুর্ভে লাগলো। (চিত্র—)

#### · শিশু-ভারতী

- ※

এই পৃথিবীতে 'সতীন কাঁটা' বলে একটা কথা আছে। মেয়েদের পক্ষে সে একটা অসহু বেদনা।



চিত্র ৯-পাড়ার মেয়েবা বং ফলিয়ে বল্তে লাগলো

তাদেব কাছে অসহ। বশিষ্ঠক আবাব বিৰাহ
কর্ছেন শুনে তাঁর স্ত্রী অভ্যন্ত বেদনা বোধ
কর্লে। কি উপায় কর্লে সে ভার বামীর এই
বিবাহ বন্ধ কর্তে পারে এই চিন্তা কর্তে



চিত্র : ০ — বাবা, এবার আমাকে ক্ষমা কব



চিত্ৰ ৭—ৰশিষ্ঠক তার স্থীকে বাড়ী থেকে বের করে দিলে নতজামূ হয়ে করজোড়ে তারা সব সম্ব করতে পারে কিন্তু সতীনেব বেদনা ক্ষমা চাইলো। (চিত্র—১১) সেই থেকে বশিষ্ঠকের

লাগ্লো। শেষে সে (तन न्यार्ड भावतम (य, ভাবই দোষে এইরূপ অঘটন ঘটুতে বদেছে। তখন সে তার জীবনেব ইভিহাস খুলে ভার কুত কাধ্যের জন্ম অমুভাপ করতে লাগলো। শেষে **অফু**তাপেব অসহা বেদনায় সে আৰু শ্বির থাকতে পার্লো না। ছুটে এসে ছেলের কাছে দু-হাত জ্বোড় করে বলে, "বাবা, এবার আমাকে ক্ষা কর। আর কখনও এমন পাপ কাজ আমি করব না।" (চিত্র — ১০) তথন ছেলে বাৰাকে ব'লে আবার মাকে ঘরে আনালে। সে খণ্ডর ও স্বামী সকলের কাছে নতজামু হয়ে করজোডে প্ৰীব স্বভাৰ ফিরে গেল। এতদিন মোহের ঘোরে এই ছনিয়ার মাৰে তাদেব আপনাদেবই স্থান মাত্র দেখে এত বড বিশাল পৃথিবীটাকে সঙীৰ্গ কবে ছেলের কৌশলে বশিষ্ঠকের স্ত্রী যেন নৃত্রন জীবন ফিবে পেলে। ছেলেব উপকেশ অন্ত্র্যারে বশিষ্ঠক আব তার স্থী অনেক সংকাঞ্চ

রেধেছিল। আন্ধ তার শিশু সম্ভানের কৌশলে তার মোহের ঘোর কেটে গেল! আজ দে দেখতে পেলে এই স্থন্দর धवनी लक नक कीरवत বাসভূমি। এখানে প্রতোক মান্তবের পাশে আবও কিছু স্থান পালি আছে। এই খালি স্থান টুকুকে আপন জনের करण ना (वस्थ यनि পরেব জ্ঞাত (ছা:ড দেওয়া যায়---আপনার ছেলের জন্ম জোগাড-কবা অন্নমৃষ্টি যদি অন্যের মূপে তুলে দেওয়া যায়-তা হ'লে প্রাণের মাঝে যে সম্ভোষ জনে ওঠে---এই জগতে বুঝি সে সম্ভোষেক তুলনা নেলে त्मिम खारन যেন নৃ তন স্থা বিধাতার রাজেব প্রেমের গান বেজে स्रो वह সন্দব ४वनी (यन कृतन कृतन ভবে উঠে স্বর্ণের শোভা ছডিয়ে দেয়। সমীরণ (धन जन उनामा व'रा এনে মাছুষের প্রাণকে সঞ্জীব করে' তোলে। চক্র সুর্যা গ্রহ ভারা



চক্র সূর্য। গ্রহ ভারা চিত্র ১১ — বশিষ্ঠকেব স্থী নতজ্ঞায় হয়ে সকলেব কাছে কমা চাইলো। নৃতন আলোক ছডিয়ে মাঞ্চধকে থেন ক্রন্থ করতে লাগ্লো। দেশে দেশে ভাদের ধর্মেব ও সবল কবে' ভোলে। আজ এগারো বছরের থান্ডি ছড়িয়ে পড়ল।



# ্বিশ্ব সাহত্য

الدالاد منهجان

1.7



#### বেদের কথা

#### ঋথেদ সংহিতার মন্ত্র

(১) অগ্নিস্তৃতি (১ম মণ্ডল। ১ম স্কু)

১। যজের আহ্বানকারী দেব পুরোহিত অগ্নির স্তৃতি করি, যিনি সকল সম্পদের শ্রেষ্ঠ দাতা।

- ২। প্রাচীনকালেব ঋষির। অগ্নির স্তুতি করিতেন, আধুনিক ২ ধিরাও তাঁহার স্তব করেন, তিনি অস্থ্য দেবতাগণকে এই যজ্ঞে আহ্বান করিয়া আস্থন।
- ৩। অগ্নির কুপায় মাকুষ প্রত্যুহ ধন এবং যশ ও পুত্রের সহিত সমৃদ্ধি পাইতে পারে।
- ৪। হে অগ্নি, আপনি যে যজ্ঞে বা পৃজ্ঞায় চারিদিকে ব্যাপিয়া থাকেন, সে যজ্ঞ দেবতাদেব নিকট পৌছায়।
- ৫। অগ্নি দেবতাদের আহ্বানকারী এবং তিনি অতিশয় জ্ঞানী; তিনি সভ্য এবং তাহার সর্ব্বাপেক্ষা বিচিত্র যশ। এই দেব অগ্নি অস্তা দেবতাদের লইয়া এই যজ্ঞে আগমন কর্মন।
- ৬। হে অগ্নি, আপনি <mark>আপনার</mark> উদ্দেশ্যে যজ্ঞকারীদের যে কল্যাণ করিতে

চাহেন; *হে ্দেব*দ্ভ, তাহা মাপনিই সভা কবিতে পারেন।

পাদ। হে মন্ধকাব-নিবারক অগ্নি, আমবা মনে ভক্তিব উপহার লইয়া প্রত্যত আপনাব নিকটে

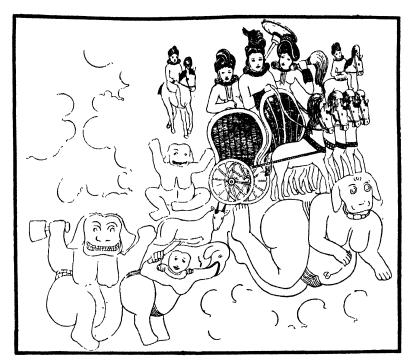
আসি, যেহেতৃ আপনি যজের রাজা ও ধর্মের দীপ্তিমান্ রক্ষকরূপে নিজ কুণ্ডে রৃদ্ধি পাইতেছেন।

৯। তে অগ্নি, পিতার নিকটে পুত্র বেমন অনায়াসে যাইতে পারে, সেইরূপ আপনার নিকটও যেন আমরা অসংস্কাচে আসিতে পাবি; আপনি আমাদেব কল্যাণের জক্ত আমাদের নিকটে থাকুন।

## (২) সূর্য্যের স্তুতি (১মঃ। ৫০ সূঃ)

- ১। যে সুহাদেব সকল প্রাণীকে জানেন তাঁহার কিবণগুলি তাঁহাকে উপরে লইয়া আসিতেছে, যাহাতে সকলে তাঁহাকে দেখিতে পায়।
- ২। যে সূর্যাদেব সকলকে দেখেন, তাঁহার আগমনে নক্ষত্র এবং কৃষ্ণবর্ণ রাত্রি-. গুলি চোরের মত পলাইয়া যায়।

- ৩। স্থাদেবের অগ্নিত্ল্য কিরণগুলি সকল মানুষের কাছে দেখা দিয়াছে।
- ৪। স্থাদেব, আপনি খুব শীঘণতি, সকলেই আপনাকে দেখিতে পায়, আপনি আলোক আনিয়া দেন, সমস্ত জগংকে আপনি আলোকিত ক্রেন।
- ৬। হে দীপ্তিশালী বরুণদেব, এই সূর্য্য-রূপ চক্ষুদারা আপনি গতিশীল প্রাণীদের ও মনুষ্যদের কর্ম দেখিয়া থাকেন।
- ৭ । সুর্যাদেব, সকল প্রাণীকে দেখিতে দেখিতে আপনি বিশাল আকাশে উদিত হন এবং দিন ও রাত্রির বিভাগ করিয়া দেন।



পুণার নিকটবর্তী ভাজা নামক স্থানেব প্রাচীন বৌদ্ধ বিহাবেব গাত্রে উৎকীণ মুর্দ্ধি অবলম্বনে শিল্পী শ্রীমূক্ত ক্ষীন্তনাথ সাহা কর্ত্বক অভিত। স্থাদেব ৪ অবের রথে চলিয়াছেন। তাঁহার তুই পার্ঘে তাহার তুই পত্তী, সংজ্ঞা ও ছায়া। অখিনীকুমারছা অবপুঠে আগে আগে চলিয়াছেন। নিয়ে অন্ধকারের দানবদানবীবা চাপা পড়িয়াছে। চিত্রেব অর্থ—ক্ষাদেব অন্ধকাব দ্র কবিয়া জগতে আলোক আনিয়া দিতেছেন।

- ৫। আপনি দেবতাদেব, মনুয়াদের, সকলেবই সম্মুখে উদিত হন, যাহাতে সকলে স্বৰ্গীয় জ্যোতিঃ দেখিতে পায়।
- ৮। সর্ব্বদর্শী আলোকের শিখাযুক্ত সুর্য্যদেব! সাতটি কপিলবর্ণ অখা আপনার বথ টানিয়া আনিতেছে।

\*

৯। স্থ্যদেব তাঁহার রথে, রথেরই ক্ছার
মত, সাতটি উজ্জ্বল অস্বা যোজনা করিয়াছেন। ভাহারা নিজে নিজেই রথে যুক্ত
ইইয়াছে, বাস্তবিক কাহাকেও রথে
যুতিয়া দিতে হয় নাই। দেই অস্বাগুলি
স্থাদেবকে টানিয়া আনিয়াছে।

১০। যে উপরের জ্যোতি:স্বরূপ সূর্য্য অন্ধকারকে ঢাকিয়া আলোক আনিয়া দিয়াছেন, দেবতাদের মধ্যে সেই শ্রেষ্ঠ দেবকে দেখিতে দেখিতে আমরা সকলের উপরের জ্যোতির্লোকে আসিয়াছি।

১১। তে মঞ্চলজ্যোতিঃ স্থাদেব, আজ উদিত হইয়া আকাশের উপরে উঠিয়া আমার হৃদ্রোগ # এবং পাঞ্রোগ ক দ্ব করিয়া দিন্।

১২। আমার শরীরের পীত বর্ণ শুক, সাবিকা ও হারিজা পাথীর উপরে সরাইয়া দিতেছি।

১৩। এই আদিত্য (সূর্য্য) তাঁহার সকল বল লইয়া উদিত হইয়াছেন। আমার শক্তকে ইনি আমার বশে আনিয়া দিয়াছেন, আমি যেন আমার শক্তর বশে না পড়ি।

## (৩) মরুৎদেব স্তুতি (১মঃ।৮৫ সূঃ)

১। যে অধের তায় শীজগতি, বিচিত্রকর্মা, রুজপুত্র মরুদ্গণ চলিবার সময় দ্রীলোকের মত অঙ্গে অলঙ্কার পরিধান
করেন, তাঁহারা স্বর্গ ও পৃথিবী বিস্তার
করিয়াছেন; এই বীরগণ যজ্ঞে উৎসাহের
সহিত সোমপান করেন।

২। তাঁহারা বলবান্ হইয়া মহিমান্বিত হইয়াছেন, রুজপুত্রগণ স্বর্গে স্থান অধিকার করিয়াছেন; নানাবর্ণের গাভীর (পৃথিবীর) এই সস্তানগুলি গান গাহিতে গাহিতে, ইন্দ্রের শক্তি উৎপাদন করিতে করিতে বিশিষ্ট শোভা ধারণ করিয়াছেন।

৩। যখন গাভীব সম্ভান মরুদ্গণ অলক্ষারে শোভিত হন, তখন তাঁহারা শরীরে দীপ্ত অস্ত্র-শস্ত্র ধারণ করেন। তাঁহারা সকল প্রতিদ্বন্দীকে দূব করিয়া দেন এবং ইহাদের পথের পিছনে পিছনে ঘৃতধারা (অর্থাৎ পুষ্টিকর বৃষ্টির ধারা) বহিতে থাকে।

৪।৫ যে বিশিষ্ট যোদ্ধাগুলি, স্থীয় বলৈ আচল বস্তুকেও বিচালিত করিতে করিতে তাঁহাদের দীপ্ত বল্লমের ছারা শোভা পান, মনের মত শীঘ্রগতি সেই বৃষযুপের মত মরুদ্ গণ যথন তাঁহাদের বথে বিচিত্রগাত্র অখা যোজনা করিয়া যুদ্ধে পর্বত চালনা করেন, তখন স্থ্যালোক হইতে বৃষ্টির ধারা পতিত হয় এবং তাঁহারা জলের মশকের মত পথিবী জলে ভিজাইয়া দেন।

৬। হে শীজগামী মক্দ্গণ, আপনাদের
শীজগামী অধাগুলি আপনাদিগকে এখানে
লইয়া আসুক। আপনারা বাছ মেলিয়া
আসুন। এই কুশের উপর বস্থন, আপনাদের
জন্ম বিস্তৃত আদন বিছাইয়াছি। মক্ল্ণণ,
মধুর সোমর্দ্য পান করিয়া মন্ত হইল।

৭। নিজ বলে বলী সেই মরুদ্গণ নিজ মহিমায় অর্গ আবোহণ করিয়াছেন, নিজেদের জন্ম অভি বিস্তৃত স্থান করিয়া লইয়াছেন। যখন বিষ্ণু সোমপানে মন্ত বলবান্ ইস্তেরে সাহায্য করিয়াছিলেন, তখন কার্যা শেষ হওয়ায় মরুদ্গণ পাধীর

বুকের অহ্থ, বুক্ধভৃফভানি। ক ষ্কুভের দোষ "ন্যাবা"। এই রোগে চোধ ও শরীরের অক্তান্ত
 ভাগ হরিক্রাবর্ণ হইয়া যায়।

মত উড়িয়া আসিয়া প্রিয় কুশাসনে বসিলেন।

- ৮। বীরের স্থায়, বেণযুক্ত যোজার স্থায়, যশের আকাজ্জায় চেষ্টাশীল ব্যক্তির স্থায়, মরুদ্গণ যুদ্ধে পুব যুদ্ধিয়াছেন। সকল প্রাণী মরুৎদের ভয়ে ভীত হয়, কারণ এই বীরগণের মুর্দ্তিতে রাজার স্থায় দীপ্তি আছে।
- ১। ছষ্টা সহস্রধারামুক্ত স্বর্ণময় স্থুন্দর ভাবে করা বক্স যখন গড়িলেন, ইন্দ্র বলবান্ বৃত্তের উপর প্রহার করিবার জন্ম উহা ধারণ করিলেন এবং তাহার দারা বৃত্তের সংহার করিয়া আবদ্ধ জলের (বৃষ্টির) স্রোভ ছাডিয়া দিলেন।
- ১০। দানশীল মরুদ্গণ সেই জলের ফোয়ারা জোরের সহিত তুলিয়া নীচে ফেলিয়া দিয়াছেন, অতি দৃঢ় পর্বত (মেখ) গুলিকে ভাঙ্গিয়া ফেলিয়াছেন; তাঁহারা সোমের নেশায় মন্ত হইয়া বাঁশি বাজাইতে বাজাইতে অভূত কাল করিয়াছেন।
- ১১। তাঁহারা জলের কোয়ারা কাত করিয়া ফেলিয়া দিয়াছেন এবং আমার জগ্য —তৃষ্ণার্ত্ত গোতম ঋষির জন্য—দেই জলধারা ঢালিয়া দিয়াছেন। বিচিত্র দীপ্তিযুক্ত মকদ্পণ আসিয়া কবির সাহায্য করিতেছেন —নিজেদের মহিমায় আমার কামনা পূর্ণ করিয়াছেন।
- ১২। হে মকদ্পণ, যে লোক আপনাদের সেবায় খুব পরিশ্রম করে, ভাহার জন্য
  ঘর্গ অস্তরীক্ষ ও পৃথিবী, এই তিন জগতের
  যে আশ্রয় ও সম্পদ্ আপনারা দিয়া থাকেন,
  ভাহা আপনাদের উদ্দেশ্যে যজ্ঞকারীকে দিন্,
  ভাহা আমাদিগকে দিন্। হে বীরগণ, বীরপুত্রযুক্ত ধনে আমাদের ধনী করুন।

- (৪) বিষ্ণুর স্তুতি (১মঃ। ১৫৪ সূঃ)
- ১। বিষ্ণু খ্ব দ্র পর্য ছ বিচরণ করিয়। এবং তিন রকমে পা ফেলিয়া পৃথিবীর সকল স্থান মাপিয়া লইয়াছেন এবং উপরে যেখানে দেবভারা বাস করেন সেই স্বর্গকেও থাম দিয়া সোজা করিয়া দিয়াছেন। এই বিষ্ণুর শক্তির পরিচয় দিব।
- ২। পর্বতবাসী, সকল স্থানে গতিশীল, ভয়ানক জন্তর (বাছের) মত শক্তিশালী বিষ্ণুর শক্তির জন্য লোকে উাহার প্রশংসা করে। যেথানে তিনি তাঁহার বড় বড় পা ফেলিয়াছেন, সেই তিন স্থানে সকল প্রাণীই বাস করে।
- ৩।৪। পর্বত, উচ্চস্থাননিবাসী, দ্র পর্যান্ত বিচরণশীল, বলবান বিষ্ণুর কাছে এই আবেগযুক্ত স্তুতি পৌছাইতে চাই, যিনি একা ভিনবার পা ফেলিয়া এই বিস্তৃত জগৎ মাপিয়া লইয়াছেন, যাঁহার মধুময় ক্ষয়হীন ভিন পা নিজ শক্তিতে ভরপুর হইয়া আছে, যিনি একা পৃথিবীকে, স্বর্গকে এবং সকল প্রাণীকে ভিন ভাবে ধারণ করিয়াছেন।
- ৫। সেই দ্র পর্যান্ত গতিশীল বিষ্ণুর প্রিয় স্থানে যাইতে চাই, যেখানে দেবতা-দের ভক্তেরা গিয়া আনন্দ অমুভব করেন, যে পরম পদে (সর্কোচ্চ স্থানে) বিষ্ণুর নিজের মত মধুর ফোয়ারা আছে।
- ৬। ইন্দ্র এবং বিষ্ণুর সেই সেই লোকে 
  যাইতে চাই, যেখানে বড় বড় শিংওয়ালা 
  চঞ্চল গরুগুলি আছে। সেই বিশালগতি 
  বলবান্ বিষ্ণুর পরমপদ নীচের দিকে দীপ্তি 
  পাঠাইয়া দিতেছে।



#### আগুন উত্তপ্ত হবার কারণ কি ?

খাবার তৈথী করবেন ব'লে ভোমার মাব আগুনের দবকাব ২'ল। তিনি কবলেন কি? কিছে কাঠ বা কয়লা সংগ্রহ



তরক্ষেব কোনও থোঁজ \পেল ?
নোটেই না। যদিও তার
কাণের পদায় বাযুমগুলে উত্থিত
কতক গুলো তবদ গিয়ে আঘাত

করলেন, তাতে একটু কেবোসিন তেল ঢেলে দিলেন আর তাবপব তাতে দেশলাইএব কাঠি জেলে আগুন লাগিয়ে দিলেন। কাঠ বা কয়লার উপবেব তেলটা প্রথমে দাউ দাউ ক'বে জলে উঠল, তাবপর আগুনটা কাঠ বা কয়লাতে গিয়ে লাগল, আর নিভিয়ে না দেওথা পয়্যন্ত জনতেই রইল। এই আগুনেব কাছে তুমি য়াও —থুব নিকটে নয়, তাহ'লে বিপদ ঘটবে—তোমাব দেহের আনাবৃত স্থানগুলিতে এক বিশেষ রকম অহপ্রিজনক অয়ুভূতি পাবে। আগুনের কাছে গেলে এইরপ অয়ুভূতি হওয়ার নাম উত্তাপ লাগা।

দিল, কিন্ধু দে তাব পবিবর্তে কতকগুলো শন্ধ তানতে পেল। সে জানে যে, কেউ যদি তাকে ডাকে তবে দে এই শাল করে—তাই দে ফিরে দাঁডাল। শন্ধটা একটা অমুভূতি, তাই একে পেতে হ'লে মামাদের অন্তত একটা কাণ থাকা দবকার। কিন্তু বাযুমগুলে যে তরক জন্ম পেয়ে আমারে কাণে শন্ধের অমুভূতি দিল—তার জন্মে আমার দিক থেকে কিছুরই আবশ্রক নেই, এক্ষেত্রে আমার কাণ কেন, আমি না থাকলেও তা বিভ্যান থাকতো।

এইখানে ভোমাদিগকে একটা বিষয় বুঝিয়ে বলি। বিষয়টা স্কা, ভোমরা ভাই বেশ মনোযোগ দিয়ে বোঝবার চেষ্টা কোরো। আমবা আমাদের ইন্দ্রিয় বা কিছু অফুভব করি, প্রকৃতির মধ্যে ঠিক দেইরূপ জিনিষ ঘটে না। প্রকৃতির মধ্যে যা ঘটে, ভা এক ব্যাপার, আর আমাদের সেই বিষয়ের অফুভৃতি হওয়া এক বড্রু ব্যাপার। মনে কর, ভোমার এক বঙ্কু আছে—ভার নাম অমল। ভাকে পথে দেশতে পেয়ে তুমি ভাকলে। "অমল"। দে ভোমাব দিকে ফিরল। ব্যাপার ঘটল এই যে, তুমি ভোমাব চতুদিকের বাভাসে কভকওলো ভ্রক ছড়িয়ে দিলে। কিছু অমন কি সে স্ব

এইসব চিস্কা ক'রে পণ্ডিতের। সিদ্ধান্ত করলেন যে,
পৃথিবীতে যা কিছু ঘটে তার ত্ইটা দিক আছে।
একটা হ'ল যা বাস্তবিক ঘটে সেইটা, ও অপরটা
হ'ল যা ঘটে তার মহন্ততি হওয়া। আগুনের
মম্পর্কে এই তক্টা বিশেষ ভাবে খাটে। আগুনের
যেটা অহন্ততির দিক, যাকে আমর। তাপ লাগা
বলি, সে বিষয়ে আমি তোমাদেব কিছু বলব না।
তাপ লাগার অহন্ততি তোমাদের সকলেরই আছে।
কিছু যেটা অহন্ততির ব্যাপার নয়—যা বহিজগতে প্রকৃতির মধ্যে ঘটে, সেখানে আগুন
বলতে কি বোঝায়, আর এই দিক্ দিয়ে
শীভলতা বা উদ্ধতার কি অর্থ, তা আমি এখানে
ভোমাদিগকে পরিকার ক'বেই বলব।

\*

জগতের মধ্যে কোনও জিনিষ্ট স্থির নেই। ভোমবা যদি জগতের যে কোনও বস্তুর সুম্মতম কণার (molecule) প্রতি লক্ষ্য কর, তাহ'লে এই কণাগুলিকে অসম্ভব অস্থিব অবস্থায় দেখতে পাবে। কণাগুলাব এই স্বাভাবিক অস্থিরত। বা আন্দোলনই প্রকারাস্করে গাওন নামে অভিহিত হয়। এই আন্দোলন বেশী হ'লে আগুন বেশী হয় আঁব কম হ'লে আঞানও কম হয়। কিছ আন্দোলনহীন অবস্থা কথনও হয় না। তোমর। বলতে পার যে, তবে কি সব জিনিষই গ্রম ৈ ভার উত্তব এই যে, উষ্ণ হওয়াটা ভোমার অন্তভতিব বিষয়---সেটা ভোমাৰ নিজেব বিশেষ অবস্থাৰ উপৰ নিউব কবে। এই ব্যক্তিগত ঘবস্থাটা (Personal factor) বাদ দা ও, তথন (দখবে যে, সব জিনিষ্ট সব সময়েই অগ্নিভাবাপর। সাধারণ ভাষায় একেই বলে থাকে সব জিনিযেই মাণ্ডন মাছে।

তাবে শীতলত। ও উফতাব কাবণ কি? আমাদের শ্বারের বা হকের উপরকার কণাগুলিও স্থিব ২'য়ে নেই। যে বস্তুর শীতলভাবাউফতা প্রীক্ষা ক'বছ, যদি তাব কণাগুলিব আন্দোলন ভোমার থকের কণাগুলিব আন্দোলনের সমভাবের হয়, তবে সে জিনিষ্টা ভোমার কাছে শতল বা উষ্ কিছুহ বোধ হবে না। কিন্তু যদি তার আন্দোলন ভোমাব অকের কণাগুলির আন্দোলনের তুলনায় ক্ম হয়, তাকে সামরাবলি শীতল বস্তু, আবে যদি বেশী হয় তবে তাহয় উষণ। বরফ শীতল, তার কারণ, বরফের কণাগুলিব আন্দোলন, আমাদেব হাতের কণাগুলির আন্দোলনের চেয়ে অনেক অল পরিমাণের, অপর পক্ষে ফুটন্ত জাল উফ, অথাৎ জলের এই অবস্থায় তার কণাগুলির আন্দোলনের বেগ আমাদের হাতের কণাগুলির স্বাভাবিক আন্দোলনের বেগের তলনায় অনেক বেশী। অভএব শীতলত। বা উষ্টা একটা আপেক্ষিক ব্যাপার মাত্র। আপ্রনের সভাকার কারণ (শীতগভা বা উফতার নয়) যা ভোমাদিপকে গোড়াতেই বলেছি, বস্তু-মাত্রের কণাগুলির অবিশ্রাপ্ত আন্দোলন।

সাধারণ অবস্থায় কণাগুলিব আন্দোলনের একট।
সাম্য অবস্থা থাকে। যদি কখনও কোনও কাবণে
এই সাম্য অবস্থা খেকে বস্তুটা চ্যুক্ত হয়, তবে সেই
বাহ্য কারণটা দরে গেলে বস্তুটা নিজে নিজেই
আবার সাম্য অবস্থায় ফিরে আনে। একটা

লোহাব টুকরাকে গ্রম কব, অর্থাৎ আগুন দিয়ে তার কণাগুলাকে উত্তেজিত কর। কিছুক্ষণ পরে দেখবে যে, সমস্ত লোহাব টুক্রাটা লাল হ'য়ে উঠেছে। এখন এই উত্তেজনাব কারণটাকে দ্র কর, অর্থাৎ আগুন থেকে লোহার টুক্রাটাকে সরিয়ে দাও। দেখবে, আবার যেমন সাধাবণ লোহা, তেমনি আছে।

কিছু তোমবা কাঠ বা কম্বলার কথা তুলে বলতে পাব-তথন কি হয়? আগুন নিভে গেলে তখন ত আব প্রেবকার কাঠ বা কয়লা ফিবে পাওয়া যায় না। শুৰ কতকগুলো ছাই পড়ে থাকে। এর উত্তব এই। আগুনে দিলে সব জিনিষের মতই কাঠ বা ক্যলাব ক্লাঞ্লোর আন্দোলন বাডতে থাকে এবং বাড়তে বাড়তে এমন একটা অবস্থায় পৌছায় যথন বাভাসের অমুক্তান (oxviren)-এর সঙ্গে মিশে এই কণাগুলির কার্কান-ডাই-অক্যাইডে (carbon-di-oxide)পরিণত হবার পক্ষে খুব স্থাবিধা হয়। কাঠ বা ক্য়লাব অন্নজানেব (oxygen) কণাব সংখ মিশে যৌগিক ভৈবী হবার সময় বয়লার আভান্তরিক শক্তি (internal energy) খুব কতকটা বাইরে বেবিয়ে আসে এবং বেরিয়ে এসে নিকটন্ত কণাণ্ডলিকে এতটা উত্তেজিত ক'বে দেয় যে, তা আবার অত্য অন্নজানের কণার সঙ্গে মিশে যায়। এমনভাবে খনববত নতুন শক্তি (energy) কয়লা থেকে বের হ'য়ে এসে শেষ প্রান্ত সমন্ত কাঠ বা কয়লাকে কাৰ্কন-ডাই-অক্সাইডে (carbon-dioxide) পরিণত ক'রে বাতাদের দক্ষে মিশিয়ে দেয়। শেষ পর্যান্ত কাঠ বা কয়লাব মধ্যে অকার (carbon) ছাড়া অন্ত যে সব অভৈব (inorganic) পদাৰ্থ থাকে. সেইগুলো ছাই আকারে অবশিষ্ট থেকে যায়। এইভাবে একটা কণার সঙ্গে আব একটা কলাব মেশাকে রাসায়নিক ক্রিয়া (Chemical action) বলে। কাঠ বা কয়লাব কণাগুলির উত্তেজিভ হবার সময় এই বাসাধনিক ক্রিয়া যদি কোনও উপায়ে নিরোধ কবা যায়, ভবে পর্ব্বোক্ত লোহাব টকবাটার মন্তই কাঠ ব। কয়লার স্বটাই ফিরে পাওয়া যেতে পাবে।

## ফলে আঁঠি হয় কেন ?

জীবনের সঙ্গে সম্পকিত হ'য়ে প্রকৃতির মধ্যে যে সব ব্যাপার ঘটতে দেখা যায় তাব মধ্যে গভীর উদেশ নিহিত থাকে। থামথেয়ালীভাবে কিছুই হয় না। ফলের মধ্যে যে অংশটা শক্ত আকাবে থাকে, যাকে সাধারণতঃ ফলেব আঁঠি বলা হয় সে সম্বন্ধেও ঐ কথাটা পূৰ্বভাবে প্ৰযোজা। বাস্তবিক পক্ষে প্রকৃতির কাছে ফলের আঠি অংশটার মূল্য তাৰ জন্ম সংশেব তলনায় অনেক বেশী। জীবনেৰ প্রধান উদ্দেশ নিজেকে বাহিয়ে বাখা। সেজ্যা সে এক অভিনৱ উপায় উদ্লাবন কবল। সে পুলা-রূপ ধারণ ক'বে নিজের চতুর্দিকে একটা কঠিন আববণ গড়ে নিল। এই আবরণের ভিতরে থেকে দে যতদিন ইচ্ছা নিজেকে মৃত্য থেকে সরিয়ে রাখতে সমর্থ হ'ল-সে মৃত্যুকে এড়িয়ে গেল। এইরপ উপায় উদ্ধাবন করার উদ্দেশ্য এই যে. মুখন আবার স্থবিধা হবে আববণ থেকে বেরিয়ে এসে পুনরায় পত্র-পুষ্প-শোভিত হ'য়ে উঠবে। মিশর দেশের কররে প্রাপ্ত ধানের গল্প তোমবা ভনেছ। এই ধানগুলি ৫০০০ হাজাব বংসব ধবে নিজেব মধ্যে সুশাভাবে জীবনকে বহন ক'বে এসেছিল. য়খন তার। আবাব উপযুক্ত প্রিমণ্ডল পেল. নিজেকে গাছরূপে প্রকাশ ক'বে দিল। এইজ্ঞাই গাছেব কাছে ফলের জাঠিটাব যত মূলা, ভাব অঞ্চ অংশের ততটা নয়। আঁঠিটাই ত তাকে অনাদি কাল ধবে বাঁচিয়ে রেখে এসেছে, আব অনন্ত কাল প্ৰয়ম্ভ ভাকে বাঁচিয়ে ৰাখ্বে।

গাছের অস্থান ছেড়ে অক্তর যাবাব শক্তি নাই।
অথচ তাকে তাব বাজকে দুবে পাঠাতে হবে। সে
আব এক উপায় উদ্ভাবন ক'বল। সে নিজের বাজ
আংশটা— যেটাকে সে মৃত্যুব গ্রাসহ'তে দ্রে রাথবাব
জক্তে কঠিন আবরণে আচ্ছাদিত ক'বে বেথেছে—
তার চতুর্দ্ধিকে স্থান্ত আববণ গড়ে নিল। পাথী,
পশু, মান্ত্য ইত্যাদি— যাদের সমনাগমনের শক্তি
আছে তাবা এই মিট অংশটার লোভে আরুট্ত হ'য়ে
ফলটা পেডে আহাব করল, আর সঙ্গে সঙ্গে সিদ্ধ
হ'ল। এগন তোমরা বোধ হয় স্পাইট ব্রুডেই
পাবছ যে, ফলেব মিট অংশটা শুধু মন্তাকে লোভ
দেখাবাব উদ্দেশ্যেই গাছ স্পষ্ট কবেছে।

বিশ্বপ্রকৃতির মণো জীবন ও মৃত্যুর ছক্ এইভাবে প্রতিনিষ্ডই চলচে। আপাতদৃষ্টিতে
আমরা মৃত্যুকেই জমী হ'তে দেখি। কিন্তু ভাল
ক'রে চেয়ে দেখ, দেখতে পাবে, জীবনের মত
কৌললী এমন আর নেই, মৃত্যুব মত সর্বাগ্রাদী
শক্তিকেও সে অনবরত নানান্ কৌশলে বিচিত্রভাবে এভিয়ে চলবার চেষ্টা কবছে—আর প্রতিবারেই সে ভার এই চেষ্টায় সফল হচ্ছে। জীবন
ও মৃত্যুব এই চিবন্তন স্বন্দের ভিতর দিয়ে জীবন
যে সব কৌশল আবিদ্ধার করেছে এই আঠির
আবিদ্ধার তাদের মধ্যে একটি অভি প্রধান বলা
যেতে পাবে।

## পদ্মপাতার আকার গোল কেন ? 🚶

ষে পরিমগুলের মধ্যে গাছ জন্ম নেয়, তাব নিজেব আকার ও আচরণের উপর সেই প্রিমণ্ডলের মত্যন্ত প্ৰভাব পড়ে। পদ্মপাতার ব্রাকাব আকাৰ পাৰার মূলেও ভার পরিবেটনের প্রভাষ वर्त्तमान । পুকুৰ किन्न। वक्त अक्टल हे भन्न अकन्नार उ দেখা যায়। পুকুরে যে জল থাকে তাব স্রোভ হয় না। পুকুবেব জ্ঞার কোনও বিশেষ দিকে পতি নেই—সৰ দিকে সমানভাবে ভার চলা ফেবা সম্ভব। এই অবস্থায় এই বকম জ্বলের ওপবে যে **শব পাতা জ্লা**য় ভার কোনও বিশেষ দিকে বাড়বাব চেষ্টা থাকে না। তাই দেখা গিয়েছে থে. এই সব পাতার সব দিকে সমান ভাবে জ্ঞালের প্রভাব পড়ে এবং সেইজ্বল্ল এরা সব দিকে সমান ভাবেই বাড়ভে থাকে। কোনও জিনিষ যদি সব দিকে সমানভাবে বাডতে পায়, তবে শেষ পৰ্যান্ত ভা বুভাকাবই হ'যে দাডায়। এখন নঝতে পার্চ, কি কাবণে পদ্মপাক। গোলাকার আরুতি পেয়ে থাকে। ভোমরা যদি এইবার লক্ষা কর, তবে দেখবে যে. যে সব উদ্ভিদ্ বন্ধ জলে জনায়, তাদের স্কলকাব পাতা সাধারণত: গোলাকাব হয়। অপর পকে যে সব উদ্ভিদ প্রোতের জলে জন্মায়, তা সব সময়েই লম্বাটে ধরণের আকার পাইয়া থাকে।



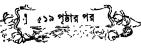
মঞ্জল গ্রহ



## মঙ্গল গ্ৰহ

গত শতাকীর জ্যোতি-र्नितरमता (कवल मुत्रवीरमङ সাহায়েই মঙ্গলকে পরীক্ষ'

করিতেন এবং মঙ্গলের উপরিভাগে খাহা যাহা দেখিতেন তাহা লিখিয়া কিংবা আঁকিয়া রাখিতেন। চকু দিয়া যাখা মঙ্গলের আলোকচিত্র (photograph) লওয়া ব্যক্তিবিশেষের যায় ভাছা দেখা



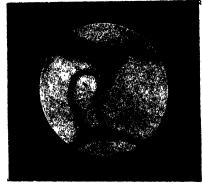
ছটবার সম্ভাবনা আছে। সইজগু ভিন্ন:ভিন্ন জ্যোতি-ব্বেবদের আঁকা ছবিঞ্চলতে

: সামঞ্জস্তের অভাব দেখিতে পাওয়া যায়। সম্প্রতি কয়েক বংসর হইতে

হইতেছে। আলোকচিত্র ব্যক্তিবিশেষের



১৯২৮ খৃঃ ১৪ই ভিসেম্বর মঙ্গলগ্রহকে যেরপ দেবা গিয়াছি গ তীক্ষতার উপর নির্ভর করে। ইহাতে ভুল

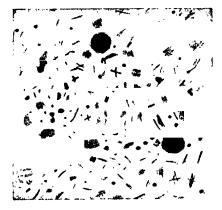


১৯৩০ খৃঃ ৮ই ফেব্রুয়ারী মঙ্গলকে বেমন দেখা গিয়াছিল বিভিন্ন প্রকৃতি কিংবা দৃষ্টির উপর নির্ভর করে না। আলোকচিত্র হইতে যভটুকু থবর জানা যায়, তাহা, মনে হয়, অনেকটা ভ্রমপ্রমাদ শৃষ্ঠ। ভিন্ন ভিন্ন ক্যোতির্বিদের।

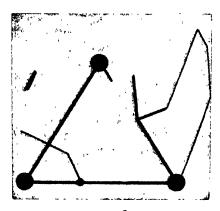
O+++-

বিভিন্ন আয়তনের দূরবীন দিয়া মঞ্চলকে দেখিয়াছেন। যে দূরবীনের বন্ধনশক্তি (magnifying power) একশত গুণ, তাহা দিয়া দেখিলে মঞ্চলকে পূর্ণচক্রের চেয়ে কিছু বড় দেখায়।

এবার মঙ্গলগ্রহের খালের কথা কিছু বিশদভাবে বলিব। আগেই বলিয়াছি যে.

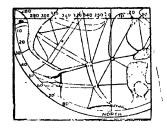


মঙ্গলে থালের চিহ্ন

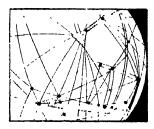


মঙ্গলে থালের চিছ্ জ্যোতির্বিদ শিয়াপারেলী সর্ব্বপ্রথমে খাল-গুলি দেখিতে পান। পরে পিকারিং,

লাওয়েল ইত্যাদি জ্যোতিষীরা অনেকগুলি থাল দেখিতে পান। কোন একটি থাল যে 'তুপুরুং' তাহাও কয়েকজন লক্ষ্য করিয়াছিলেন। থালগুলি মঙ্গলের মলিন- অংশ ও বালুকাময় ভূখও—এই উভয়ের উপর দিয়া গিয়াছে। কোন কোন থাল তিন-চারি হাজার মাইল লম্বা। ঋতু-



শিষাপারেলীর অন্ধিত মঙ্গলের নকা।
পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে খালগুলির রঙ্ও
বদলাইয়া যায়। প্রথমে লাওয়েল সাহেব
খালের বিষয় যাগা লিখিয়াছেন তাহাই
বলিব। তাঁহার মতে খালগুলি খুব সরু ও
সরল রেখার মত সোজা। খালগুলি লখা ও

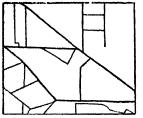


লাওয়েল অন্ধিত মঙ্গল

অবিচ্ছিন্ন (continuous)। প্রভ্যেক থালের সব জায়গা সমানভাবে চওড়া। খালগুলি ২০ মাইলের বেশি চওড়া হইবে না। খালগুলি কখনও কখনও গাঢ় সবুজ রঙের হয়, কখনও বা বিবর্ণ হইয়া পড়ে। মঙ্গলের গায়ে অনেকগুলি চোট চোট চায়াময় ক্ষেত্র

#### 

ইলৈখিতে পাওয়া যায়—বে-গুলির বাস ুভিনিমনে করিংড হে, এক একার অভি ১০০ মাইলের বেশি হইবে না। লাওয়েল বৃদ্ধিনান কীব ফলেব স্বরে। ডঃহাবাই

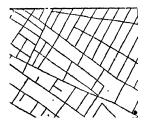






আরিজোনার (আমেরিকা) জল দেচনের থাল এনিন্জেনের থাল- ংলাও সাতের এইগুলির নাম ''মরস্তান'' (oasis) এই খাল দিয়াছিলেন। প্রত্যেক মর্মস্তানে কয়েকটি ক্রারনে উ

এই খালগুলি নির্মাণ করিয়াছে। স্বাভাবিক কারণে উৎপন্ন ফাটগুলি (cracks) দেখিতে



≖ন্ট্রিলের রাস্তা

করিয়া থাল মিশিযাছে। লাওয়েল সাহেব প্রায় ৪০০ খাল ও ২০০ মরতান দেখিতে পাইয়াছিলেন। ৪০০ খালের মধো থাল 'চুপুরু'। প্রত্যেক চুপুরু খালের গুটটি রেখা সমান্তরভাবে গিয়াছে এবং এই তুই রেখার মধ্যে ব্যবধান ১০০ হইতে ২০০ মাইল প্রাক্ত হইবে। অকাতা ঋতুপরিবর্তনের সঙ্গে অংশের স্থায় খালগুলির ও মরজানগুলির রঙ্বদলাইয়া যায়। লাওয়েল সাহেনের গ্রুব বিশ্বাস ছিল যে, খালগুলি জ্যামিতির সরল রেখার মত সোজা ও সমান। তিনি বলিতেন যে. কেবলমাত্র প্রাকৃতিক কারণে খালগুলি এত সোজা ও সমান হইতে পারে না।

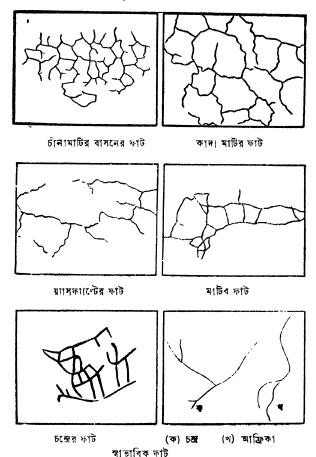


চীনামাটির বাটীর উপরে ফাটার চিচ্চ আঁকাবাঁক। হয়। সাগরতটে বা নদীর পাড়ে যে চিড়গুলি (clefts) দেখিতে পাওয়া যায়, সে-গুলির সবই আঁকাবাঁকা। ভোমরা অনেকেই চীনামাটির পাত্র ব্যবহার

### শ্ৰিক্ত ভাৰতী ++

যদি কোনও কারণে পাত্রটি ফাটিয়া যায়, তখন তাহার গায়ে আঁকাবাঁকা দাগই দেখিতে পাইবে। সহরের রাস্তাগুলি মামুষের হৈযারী। বেলুনে উঠিয়া অনেক

লাওয়েল সাকেব সেইজগুই মনে করিভেন যে. কোন বিচারশক্তিসম্পন্ন বৃদ্ধিমান প্রাণীই খালঞ্জি নির্মাণ করিয়াছে। এই খালগুলি তৈয়ার করিবার কি প্রয়োজন ছিল সে-



এক চমৎকার উপ্তব দিয়াছেন। মঙ্গলের গ্রাধকাংশ স্থানে জলকষ্ঠ মেক প্রদেশ বলিয়া প্রান্ত বড় বড় খাল ভৈয়ার করা চইয়াছে। গ্রীপ্সকালে মেরুর বরফ যখন গলিয়া যায, তথন বর্ফ গলা জল খালের ভিতর দিয়া আসিয়া তুট পাশের জমিকে চাষবাসের উপযোগা করে। এই সময় খাল-গুলির চুই ধারে শস্ত জনায় বলিয়াই ইহাদের, রঙ্গাট সবুজ দেখায়, পরে শীতকালে এইগুলি আবার বিবণ হট্যা যায়। আগেট বলিয়াছি যে প্রত্যেক মরগুনে ক্ষেক্টি করিয়া খাল মিশিয়াছে; সেইজগ্ৰই মুক্তানের ক্ষেত্রগুলি খবট উঠবর এবং এই প্রচুর সকল স্থলে পরিমাণে শশু জন্মায়। খালগুলি দিয়া জল

বিষয়ে লাওয়েল সাহেব

উ চু श्रेट नशां मिल्ला वा क निकालात ता खा-छिल तिथिवात यपि त्ञामात स्रुत्यांग इश्. তাহা হইলে দেখিতে পাইবে যে, এই রাস্তা-

যদি লাওয়েল সাহেবের অনুমান সভা হয তাহা হইলে যে প্রাণী এতগুলি লম্বা

চালাইবার জন্ম দমকল ও অস্থাক যন্ত্রপাতির নিশ্চয়ই আবিশ্যক হয়। গুলি জ্যামিতির সরল রেখার মতই সোজা।

#### さられるに -

তৈয়ার করিয়াছে এবং দমকল ও মঞার যন্ত্রপাতি আবিদার করিয়াছে.

কলিকাতার রাস্তা এরোপ্লেন হইতে যেমন দেখায়

ভাষার ইঞ্জিনিয়ারিং বিজা থাবই উ66দ(₹র હારા বিভাব্দিতে সে পৃথিনীর মানুষেৰ অপেকা কোনও অংশে হান হইতে পারে e111

মাঝে মাঝে মহলের গ্রীম্মগুলের (Tropics) উপর পরস্পর হুইতে বিচ্ছিন্ন কয়েকটি শাদা "ছোপ" (patch) দেখিতে

যায়। পাওয়া কোনটি ছোপের ব্যাস > 0 0 মাইলের বেশি হয়। তুই তিন মাস ধরিয়া এই ছোপগুলিকে একস্থানেই দেখিতে পাওয়া

এবং পরে এইগুলি যায় মিলাইয়া তুই ডিন মাস যায়। একস্থানে থাকে বলিয়া এই ছোপগুলি মেঘ হইতে পারে না। কারণ, মেঘ ভাসিয়া বেড়ায় এবং এক হলে শ্বিরভাবে থাকিতে বেশিক্ষণ পারে না।



বহু উৰ্দ্ধ হইতে হাইডপাক ও সাৰ্পেণ্টাইন যেমন দেখায় অনেক সময় গ্রীম্মকালেই গ্রীম্মগুলে এই দাগগুলি দেখিতে পাওয়া যায়। কেহ কেহ মনে করিতে পারেন যে. ' এই ছোপগুলি ठह পৰ্ববত শিথরের বরফ ভিন্ন আর কিছই নয়। পণ্ডিতের। পরীক্ষা দেখিয়াছেন যে, এই দাগগুলি উচ্চে অবস্থিত বরফ মঙ্গলের গায়ে সমতলভূমির



কোন এরোপ্লেন হইতে গৃহীত হাইডপার্ক ও তাহার গলি রাস্তাগুলি যেমন দেখায় সঙ্গেই সংলগ্ন। সেইজন্ম এই হইতে পারে না। বৰফ করিতে পার, ভবে ছোপগুলি

#### -- 1×2.036.

কি ॰ লাওয়েল্ সাহেব ইহার মজার উত্তর দিয়াছেন। তিনি লিথিয়াছেন বে, বে-সকল স্থলে তূলার চাম কিংবা শাদা কাপড়ে ঢাকা তামাকের চাম হয় কিংবা ডেজীর (Daisy) লায় কোন শাদা ফুলের বাগান আছে দেই দব জায়গা উপর হইতে শাদা দেখায়। মজলবাসীরা বোধ হয়: তূলার চাম কিংবা শাদা ফুলের বাগান করে। ফুল ঝরিয়া গেলে কিংবা তূলার চাম হইয়া গেলে এই ছোপগুলি মিলাইয়া

প্রমাণ না পাইয়া এ বিষয়ে কোনও অভিমত দিতে অনিচ্ছক।

পারিসের মিউডন্ মান্মন্দিরের (Meudon Observatory) জ্যোতির্বিদ্ আন্থানিয়াদি (Antoniadi) সাতেব বিকল্ধ মত অবলম্বন করিয়াছিলেন,। তাঁহার মতে থালগুলি অবিচিন্ন সরল রেখা নয়—এক একটি খাল কতকগুলি অস্পন্ট, অসমান ও পৃথক দাপের সমষ্টি মাত্র। দূর হইতে দাগগুলির মধ্যে কাঁক স্পন্ট দেখা যায় না বলিয়া

দাগ্ৰহলি মিলিয়া অনেকটা অবিছিন্ন বেখার মত দেখায। উত্তর অংমেরিকার ইয়ৰ্কস (Yerkes) মান ম নিদ রে র ক্লোভিবিদ অধ্যাপক বার্ণাডেরও মত কাহাই। কয়েক প্রার্ক বৎসব বৈ জ্ঞানি ক দেৱ মধ্যে কেছ কেছ আন্তানিবাদিব মতা-বলম্বী ছিলেন, কেই কেচ বা লাওয়েল-



কাপড়ে ঢাকা তামাকের চাব—পোর্ত্তোরিকো

যায। লাওয়েল সাহেবের অন্তুমানটি উপরে দিলাম। তোমরা নিশ্চয়ই "নানা মুনির নানা মত" এই প্রবাদ বাক্যটি শুনিয়া থাকিবে। জ্যোতিবীদের মধ্যে এই বাক্যটি অক্ষরে অক্ষবে ফলিয়া গিয়াছে। কোন কোন বৈজ্ঞানিক লাওয়েল সাহেবের অন্তুমানটি বাতুলের কয়না মাত্র বলিয়া অভিভিত করিয়াছেন।: বয়েকজন জ্যোতিবির্বাদ লাওয়েলের মত সভ্য বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন। অনেকে এই অন্তুমানের স্বপক্ষেবা বিক্তম্বে কোনও অকাট্য

মত ই সমর্থন কবিতেন। স্থাপিক
পিকারিং প্রভৃতি বৈজ্ঞানিকেরা মধ্য
পথাবলম্বা ছিলেন। –পিকারিং সাহেব
বলিভেন যে, যে সকল খাল অতি স্পষ্টভাবে দেখা যায়, সেগুলি অনেকটা সোজা
ও স্বিচিছ্ন। তাঁগার মতে কোন কোন
খাল প্রায় ১৫০ মাইল চওড়া। তিনি আরও
বলিয়াভেন যে, যে খালগুলি খুব লম্বা, সেগুলি শেষকালে বাঁকিয়া গিয়াছে। আন্তনিয়াদি
সাহেব বলিতেন যে, তিনি যে দূরবীন
বাবহার করিতেন, ভাগালাওয়েল সাহেবের

#### · 기루 이 의 -

দূরবীনের চেয়ে বড়ও উৎকৃষ্ট। সেজস্থ তিনি মঙ্গলের পিঠ আরও স্পৃষ্ট করিয়া দেখিতে এবং আরও ভাল করিয়া প্রীক্ষা করিতে পারিযাছিলেন। লাওয়েলের দূর-বীনের ব্যাস ২৪ ইঞ্ এবং আন্তনিয়াদির দূরবীনের ব্যাস ৩১ ইঞ্ ভিল। অধ্যাপক

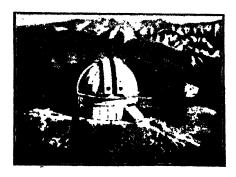


প্রফেসার ই, বার্ণার্ড
বার্ণার্ড যে দুরবীন ব্যবহার করিয়াছিলেন
ভাহার ব্যাস ৪০ ইঞ্ছিল। আজকাল
জ্যোতির্বিনেরা আবও বড় বড় দুরবীন
ব্যবহার করেন—ইহাদের মধ্যে একটির
ব্যাস ১০০ ইঞ্। আধুনিক বৈজ্ঞানিকদের
মত এই যে, যদিও খালগুলি অবিচ্ছিন্ন
সরল রেধার মত দেখায়, তবুও নিশ্চয় করিয়া
বলিতে পারা যায় না, এইগুলি সত্য সত্যই
অবিচ্ছিন্ন কি না—কারণ অনেকগুলি ছোট
ছোট দাগ কাছাকাচি থাকিলে দূর হইতে

অনেকটা অবিচ্ছিন্ন সরল রেখার মত দেখায। আন্তর্নিয়াদি সাহেবের মত যে সত্যা, ভাহাও বলা যায় না। সেজক্য এই খালগুলি কুত্রিম, কি অকৃত্রিম সে বিষয়ে নিশ্চয় করিয়া



৭২ টেলিক্ষোপ ভিক্টোরিয়া

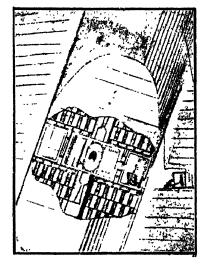


উইলসন পর্বতের উপর মান মন্দির এখনও কিছু বলা যায় না। আশা করা যায় যে, দূরবীন ও কোটোগ্রাফির আরও উন্নতি হইলে এ বিষয়ে নিম্পত্তি করা সম্ভব হুইবে।

#### ·শিশু-ভারতী

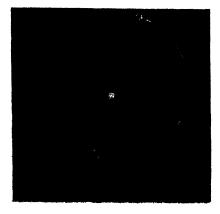
মবশ্য, মঙ্গলের জলবায়ু ও তাপক্রম যে জীবজন্ধবাদের উপযোগী, সে বিষয়ে এখন আর কোনই সন্দেহ নাই। কিন্তু বস্তুতঃ সেখানে কোনও জীব কিংবা কোনও বৃদ্ধিমান প্রাণী বাস করে কি না, সে বিষয়ে নিশ্চয় কবিয়া এখনও কিছু বলা কঠিন। এই ভস্ত কোন কোন বৈজ্ঞানিক চিন্তা করিতেছেন যদি কোন উপায় থাকে যাগতে পৃথিবীর মানুষ মঙ্গলের কাছাকাছি গিয়া জানিতে পারে সেগানে সভা সভাই কোন বৃদ্ধিমান প্রাণী বাস করে কি না, বা পৃথিবীর মত সেদেশে সে ধমালা নগর-নগরী .6 কি না। আমেরিকার ক্লার্ক বিশ্ববিভালয়ে (Clark University) পদার্থ-বিভার অধ্যাপক গডার্ড (Goddard) সাহেব চাঁদে একটি দ্রুতগামী রকেট (rocket) পাঠাইবার করিয়াছেন। সম্প্রতি বৈজ্ঞানিক রান্ডলফ (Randolph) সাহেব পৃথিবীর মানুষ যাহাতে মঙ্গলেব অতি নিকটে গিয়া মঙ্গলকে প্রীক্ষা করিয়া আমবার আসিতে পারে. ভাহার এক অভিনৰ স্থন্দর উপায় স্থিব করিয়াছেন। রানডলফ সাহেব বলেন যে, ক্রতগামী রকেট তৈয়ার করিতে হইবে। এমন কৌশলে এই রকেট নির্ণ্মিত যাহাতে শুন্মেও ইহার পতির বেগ অতি সহজেই বদলাইতে পারা যাইবে। খুব বেশি চাপের দ্বারা কভকগুলি (Gas) তরল করিয়া রকেটের এক শক্ত ইস্পাতের কামরার মধ্যে রাখিতে হইবে। ভাপ যাহার মধ্য দিয়া যাইতে কোন পদার্থ দারা ইস্পাতের কামরার চারিধার মুড়িয়া রাখিতে হইবে। ইচ্ছামত যে কোন দিকে কম বেশি যে কোন পরিমাণে গ্যাস বাহির করিবার উপায় রাখিতে হইবে। ধর, তোমার

রকেটটি পূর্বব দিকে ছুটিভেচে এবং জুমি
ইহার বেগ কিছু কমাইতে চাও। তুমি
পূর্ববিদিকে একটু গাাস বাহির করিয়া দাও।
গ্যাস পূর্ববিদিকে বাহির হইবার সময়
রকেটের উপর পশ্চিম-মুখো এক ধাকা
দিয়া যাইবে। ইহাতে রকেটের পূর্বিদিকের
গতির বেগ কিছু কমিয়া যাইবে। তুমি
যদি পূর্বদিকে অনেকটা গ্যাস বাহির



রান্ডল্ফ সাহেবের কল্পিত মঙ্গলের রকেট করিয়া দাও. তাহা হইলে পূৰ্বনদিক **২ইডে ভূমি রকেটের** গতি পশ্চিমাদকে পারিবে। এই ফিরাইতে রকে টটিকে এত বড় তৈরার করিতে হটবে যাহাতে তুই ভিনজন যাত্রী থাকিবার হটতে পারে, এবং তুই বৎসরের জন্ম রসদ ও নিঃখাস লইবার অন্লজানের ব্যবস্থা থাকিতে পারে। পৃথিবী যাহাতে আকর্ষণ শক্তি দিয়া রকেটটিকে টানিরা রাখিতে না পারে, সেজগু রকেটটিকে X.

অন্ততঃ প্রতি সেকেন্ডে সাত মাইল বেগ ভিসাবে পৃথিবীর পিঠ হইতে নিক্ষেপ করিতে হইবে। মঙ্গলের কাছাকাছি আসিলে রকেটের গতির বেগ ও মুখ এইভাবে বল্লাইতে হইবে, যাগাটে ইছা মঙ্গলের টাদ হইয়া মঙ্গলের চারিধারে খুরিতে আরম্ভ করে। মঙ্গলকে একবার প্রদক্ষিণ করিবার



পৃথিবী ও মঙ্গলের পরিভ্রমণ পথ

পর রকেটের গভির বেগ ও মৃথ সাবাব বদ্লাইয়া পৃথিবীর দিকে চালাইতে হইবে। রকেট্টির সঙ্গে একটি ছোট বেলুনও থাকিবে। যখন রকেটটি পৃথিবীর বায়-মগুলের মধ্যে আসিয়া পৌছিবে, তখন আবোহীরা রকেটটিকে ছাড়িয়া বেলুনের উপর উঠিয়া পরে অল্লে অল্লে পৃথিবীতে

নামিয়া আসিবে। এদিকে রকেটটি প্রতি দেকেণ্ডে সাত্র মাইল বেগ হিসাবে পুথিবীতে পড়িয়া চুরমার হইয়া ধাইবে। রান্ডল্ফ সাহেবের কল্পনাটি অতি মনোহর। অধ্যাপক গডার্ড সাঙ্গেব বলিয়ালেন যে, রান্ডল্ফ সাহেবের সকলটি বৈজ্ঞানিক হিসাবে নিভূল। এইরপ একটি রকেট তৈয়ার করা খুব শক্ত এবং অনেক টাকার আবশ্যক। মারুষ এইরপ একটি নিখুত, ক্রটিবিহীন রকেট তৈয়ার করিতে পারিবে, বলা যায় না। তোমাদের মধ্যে কেছ কি এই কপ একটি রকেটে চভিয়া মঙ্গলগ্রহের যাত্রী হইতে চাও শৃ ইংলডের রিডিং (Reading) বিশ্ববিভালয়ের পদার্থবিভার শিক্ষক টমসন (Thompson) সাতেব কেমন করিয়া মঙ্গলে ভড়িং-ত্রজ পাঠাই**ভে পারা শায় সে**ই বিষয়ে ১৯৩০ খৃঃ সাইন্টিফিক্ আমেরিকান (Scientific American) পত্ৰিকায এক স্থুন্দর প্রবন্ধ লিখিয়াছেন। জানি না মঙ্গলে এমন কোনও বৃদ্ধিমান জীব আছে কি না. যে উপযোগী যন্ত্ৰপারা এই ভডিং-ভরজ-গুলিকে ধরিতে পারিয়া ইহাদের সাঙ্গেতিক অর্থ বুঝিতে পারিবে। ১৯২৮ খঃ আন্দে পেল তেবি (Ensault-Pel Teri) লাজনোমি (L' Astronomie) পত্ৰিকায় এক প্ৰাহ হইতে অস্থ্য গ্রহে যাওয়া সম্ভব কি না. এই বিষয়ে বিশদভাবে আলোচনা করিয়াছেম (La possibilite des voyages interplanetaire) |



## পৃথিবীর ইতিহাস—অ্যাসিরিয়া

অ্যাসিরীয় শক্তির চরম বিকাশ— নৃতন সাম্রাজ্য

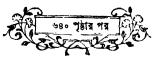
৭৪৬ খৃ: পুকে আদিরিয়ার রাজধানী কালাসহরে বিদ্রোহ উপস্থিত হয়। ইহার ফলে পঞ্চম অস্তরনিরারি রাজাচ্যুত

চতুর্ব টিগলাধ হন, এবং পর বংসর "পুলু" নামে পিলেসার একজন সাধাবণ বাক্তি রাজা ৭৪৪—৭২৭ খু: পু: হন। রাজা হইয়া তিনি টিগলাধ পিলেসার নাম গ্রহণ করেন। এই

ন্তন রাজঃ জ্যাসিরিয়ার স্কাপেক্ষা শক্তিশালী ও বিচক্ষণ নৃপতি। তিনিই প্রকৃত অ্যাসিরীয় সাম্রাজ্যের সাম্রাজ্ঞাসন প্রস্তী। তিনি যেমন অধিতীয় যোজা প্রতি ছিলেন রাজ্ঞাশাসনেও তেমনই

অসাধারণ কৃতিত্ব দেখাইয়াছেন।

এতদিন পর্যান্ত আদিরিয়ার রাজারা অন্তান্ত রাজা জয় করিয়া হয় পুঠন ও ধবংস করিয়াছেন, না হয় রাজাদের নিকট হইতে কর আদায় করিয়াছেন। টিগলাথ পিলেসার কিন্তু রাজ্য জয় করিয়া তাহা আাসিরিয়ার অন্তর্ভূত করিয়াছেন। শাসনের জন্তু আাসিরীয় কর্মচারী নিযুক্ত করিয়াছেন। দেশে শাসন শৃত্মলা রাথিবার জন্তু সেখানকার ফুর্দান্ত লোকদের আাসিরিয়ায়, অথবা সামাজ্যের অন্ত প্রান্তে নির্বাদিত করিয়াছেন, এবং রাজভক্ত আাসিরীয় ধারা তাহাদের স্থান পূর্ণ করিয়াছেন। অবস্তা, এই পত্না প্রথম অবলম্বন করেন অন্তর্মনাজিরপাল। তবে সে হই এক ক্ষেত্রে। চতুর্য টিগ্লাথ পিলেসারই এই উপায় সর্ব্যভোবে অবলম্বন করিয়া প্রথম প্রকৃত সাম্রাজ্য গঠন করেন।



নিজের প্রভাব বিভার করেন।
ব্যাবিলনরাজ নবনচ্ছার
(Nobonassar) সম্পূর্ণভাবে
তাঁহার আধিপতা স্বীকার করেন.

वाविनन छ উद्योष्ट्रे विक्रम তাঁহার আধিপতা স্বীকার করেন, এবং টিগালাথ পিলেসার নিজে "স্থনের আকাদের রাজা" উপাধি গ্রহণ করেন। ক্যাল্ডিয়ার (কালডু-

প্রথমে তিনি ব্যাবিলনিয়ায়

পারন্ত উপসাগরের তীরবন্তী প্রদেশ) রাজারাও তাঁহার বশুত। স্বীকার করেন। পূর্বাদিকে জাগ্রাস পর্ব্বতাবলীর পাহাড়ী স্বাতিদিগকে আক্রমণ করিয়া শক্তিহীন করেন। ইহার পর তিনি উত্তর-পশ্চিম দিকে ভাগিহদের তীরবর্ত্তী উরাট্ রাজ্য আক্রমণ করেন। অ্যাসিরীয়-শক্তির সাময়িক চুর্কলতার স্থযোগ লইয়া উরাটু রাজ্য বিশেষ শক্তিশালী হইয়া উঠিয়াছিল। উরাট্ট রাজ তৃতীয় সাড় রিযাস (Sardurius 111) নাইরি দেশের অক্সান্ত রাজাদের সঙ্গে মিলিয়া জাঁহাকে বাধা দিতে প্রস্তুত হইলেন। এমন কি, উত্তর সিরিয়ার কোন কোন রাজাও (বিশেষত: আর্পাদরাজ) তাঁহার সঙ্গে যোগ দিয়াছিলেন। এই মিলিত বাহিনীকে টিগলাথ পিলেসার সম্পূর্ণরূপে পরাস্ত করেন এবং তাঁহাদের সঙ্গ ভাঙ্কিয়া দেন। তারপর তিনি উরাটু রাজ্যের বিভিন্ন অংশ অধিকার করিয়া রাজধানী তুরুস্পের ( Turuspa ) সম্মুবে উপস্থিত হন। রাজধানী কিন্তু তিনি অধিকার করিতে পারিলেন না। টিগ্লাথ পিলেসার ভুরুস্পের সন্মধেনিজের মৃতি স্থাপনা করিয়া দেশে যিরিয়া আসেন



#### প্থিনীর ইতিহাস-আসিরিরা

এইবার তিনি সিরিয়া বিজয়ে মন দেন'। প্রথমে
তিনি আর্পাদ নগর আক্রেমন করেন। তিন বংসর
অবরোধের পর আর্পাদ আত্মমর্পণ
সিরিয়া-বিজয় করে। ভারপর তিনি ওর্টিস্ নদী
পর্যান্ত সমগ্র উত্তর সিরিয়া জয় করেন এবং আসিরীয়
সামাজ্যের অন্তর্ভূত করেন। এথানকার অনেক
লোককে ভিনি নাইরি দেশে নির্বাসিত করেন এবং
বাাবিলনিয়ার অধিবাসী আনিয়া ভাহাদের ফান পূর্ণ

করেন। এই সময়ে
সিরিয়ার অঞ্চান্ত রাজার।
তীহার অধীনতা স্বীকার
করেন এবং কর দেন।
ইহাদের মধ্যে ডামাস্বাস্,
হামাথ, কারকেমিস্,
টায়ার ও গোলাল রাজ্যের
রাজারা উল্লেখযোগ্য!
এমন কি, ইল্লেলের রাজা
মেনাহিম্(Menahim of
Samaria) পর্যান্ত তীহার
আয়ুগত্য স্বীকার করেন।

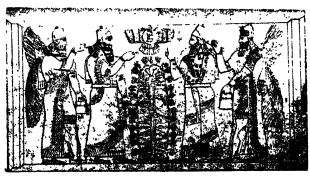
ইহার অৱদিন পরে মেনাহিমের মৃত্যু হয় এবং

তাঁহার পুত্র রাজা হন। কিন্তু তাঁহাকে হত্যা করিয়া তাঁহার দৈক্তাধাক্ষ পেকা (Pekah) রাজা হন এবং দিরিয়ার ডামান্বাদের

নুত্রন রাজা রেজিনের (Rezin) সঙ্গে মিতানি করেন।
এবার হুই বন্ধু একযোগে জুড়ার (Judah) রাজা
আহাজকে (Alaz) আক্রমণ করেন। এড়োম ও
ফিনিটাইনের রাজারাও তাহাদের সঙ্গে যোগ দেন।
নিরুপায় হুইয়া আহাজ টিগ্লাথ পিলেসারের শরণাপর
হন ও প্রচুর উপঢ়ৌকন প্রেরণ করেন। আসিরিয়া
রাজও ও এই চান। তিনি তৎক্ষণাথ তাহার পক্ষ
অবলঘন করেন ও ইজুল আক্রমন করিয়া পেকাকে
পরাক্ত করেন। পেকার প্রজার। তাহাকে হত্যা
করিয়া হোসিয়া (Hoshea) বলিয়া একজনকে রাজা
করে। হোসিয়া অবিলবে টিগ্লাথ পিলেসারের অধী
নতা বীকার করেন। মোয়াব, এডস্, আমন প্রভৃতি
রাজ্যের রাজারাও তাহাকে কর প্রদান করেন।

ইহার পর টিগ্লাথ পিলেসার ডামান্বাস আক্রমণ করেন ও রেজিনের সৈয়বাহিনী সম্পূর্ণরূপে পরাজিত ও বিধ্বত করেন। রেজিন প্লাইরা রাজধানীতে আশ্র গ্রহণ, করেন। টিগ্লাথ পিলেসার সিরিয়া রাজা বুঠপাট করিয়া ভামাঝাস্ ভামাঝাস্ অবরোধ করেন। শীজই রাজধানী আত্মসমর্পণ করে। সেথানকার অধিবাসীদের অক্সত্র পাঠান হয় এবং রেজিনকে হত্যা করা হয়।

টিগ্লাথ পিলেসার ভাহার প্রধান সেনাপভিকে টায়ার আক্রমণ করিতে পাঠাইয়। বয়ং বাাবিলনিয়ায় গমন করেন। টায়ার বক্সভা স্বীকার করে এবং



অসুর রাজাদের জীবনতর-পক্ষীরাজ দেবতা

প্রচুর ধনরত্ব দিয়া অব্যাহতি পার। এদিকে ক্যাল-ডিয়ার রাজারা বাবিশনিয়া অধিকার করিতে চেষ্টা করিতেছিলেন। উকিঞ্জির(Ukinzir) নামে ভাহাদের মধ্যে একজন সভা সভাই বাবিলনের সিংহাসন অধিকার করিয়াছিলেন। টিগ্লাথ পিলেসার আসি য়াই তাহাদিগকে ব্যবিশ্নিয়া হইতে তাডাইয়া দেন। এমন কি, তিনি ক্যাল্ডিয়া আক্রমণ করিয়া তাহাদিগকে বিশেষ শিক্ষা দেন। এই সময়ে মার্ডু ক হাবালিন্দন(Marduk-Habal-iddinor Merodach Baladan' নামে ক্যালডিয়ার বীটু ইয়াকিন রাজ্যের (Bit Yakin) রাজা তাহার বশুতা স্বীকার করেন। ধৃঃ পু: ৭২৭ বৎসরে টিগ্লাথ পিলেসারের মৃত্যু হইলে পঞ্চম শাল্মানেসার রাজা হন। ভিনি মোনে পাঁচ বর্ণার রাজত্ব করেন। তাঁহার (পঞ্ম শাল্মানেসারসময় টায়ার ও ইক্রেল বিজ্ঞাহ করে। <sup>৭২৭—৭২২</sup> ঝু: পু:) এই সময়ে মিশরের রাজা ছিলেন ইথিওপীয় শাবক। শাবক প্যালেষ্টাইনে পুনরায় মিশরের প্রভুদ্ধ স্থাপনা করিতে চেষ্টা করিতে লাগিলেন। ভাঁহার প্ররোচনার ও সাহাব্যের প্রতিশ্রুতি

#### ন্দিত্ত-ভারতা

পাইয়া টায়ার ও ইজেল আাদিরিয়ার বিরুদ্ধে বড়যন্ত্র করে। শাল্মানেদার তৎকলাৎ টায়ার আক্রমণ করেন। পাঁচ বৎসর অব্রোধের পরে টায়ার বগুতা স্বীকার

ব্যাবিলনের গিলগামেশ

করে। এদিকে ইজেল-রাজ গোসিয়া যদিও প্রথমে শাল্যানেসারের বস্ততা স্বীকার করেন, তবু গোপন তাবে মিশররাক শাবকের সকে বোগ দেন। কাজেই, আাদিরিয়ারাজ তাহাকে বলী ক্রিয়া কারাগৃহে নিকেপ করেন। তারপর তিনি ইজেলের রাজধানী ভামারিয়া অবরোধ করেন।

ভিন বৎসর অবরোধের পদ্ম ভাষাদ্বিয়া আত্মসমর্পন কর্মেন কিন্তু শালমানেসারের কাছে নম্মআাসিরিয়ার নৃতন রাজা সার্গনের
সার্গন (৭২২–৭-৫)কাছে। তিনি এখানকার সমস্ত
ইত্রেসরালোর
অধিবাসীদের (২৭,২৮০) অ্যাসিরিয়ারাজ্যের নানাস্থানে নির্বাসিত করেন
এবং অন্ত স্থানের লোক আনিয়া এখানে প্রতিষ্ঠিত
করেন। ইভ্রেলের শাসনের কন্ত নিক্সের কর্ম্মচারী
নিবক্ত করেন।

এখন কথা ইইতেছে, এই সাগন কে ? তিনি যেই ইউন, রাজবংশের কেছ নন। সে যাহা ইউক, সাগন একজন শক্তিশালী ও বিচক্ষণ নরপতি ছিলেন। তাহার সময় আসিরীয় সামাজ্যের বিশেষ বিভার ইয়। রাজ্যশাসনেও তিনি তাহার অসাধারণ প্রতিভার পরিচয় দিয়াছেন।

বীট্ ইয়াকিনের ব্লাজামার্ড ক চাবালান্দিন ইতিমধ্যে বাবিলনের সিংহাসন অধিকার করিয়াছিলেন। ভাহার ব্যাবিলনরাজ প্রধান সভায় ছিলেন এলামরাজ্ঞ মাতৃক হাবালান্দিন পুম্বানিগাস্ (Khumbanigash)। হুই বন্ধু মিলিয়া মেসোপটেমিয়া আক্রমন করেন। সার্গন বাবা দিতে আসিলে পরাজিত হুইয়া দেশে ফিরিয়া যাইতে বাধ্য হন। বাবিলনিয়ায় মার্ডুক হাবালান্দিনের ক্রমতা অপ্রতিহত বহিল।

এদিকে আনার মিশবরাজ শাবকের চক্রান্তে সিরিয়;
পালেষ্টাইনে বিদ্রোহ উপস্থিত হইল। ডামাস্কান্
আপাদ, হামাথ এমন কি
কিরেঃ পালেষ্টাইন স্থামারিয়াতেও বিদ্রোহর আঞ্চন
অলিয়া উঠিল। কিন্তু বিদ্রোহীদের
মধ্যে কোনরূপ একতা না থাকাতে তাহারা কৃতকার্যা
হইতে পারিল না। হামাধের রাজা যৌবিদ্বে

(Janbid) সাগন ককর নগরে
মিশর ও অবরোধ করেন। কর্কর আত্মসমর্পণ
করিলে যৌবিদকে নৃশংসভাবে হত্যা
কবেন জৌবস্ত ছাল ছাড়ান হয়। এবং এখানকার
মনেক অধিবাসীকে অ্যাসিরিয়ায় স্থানাপ্তরিস্ত করেন
ম্যাসিরীয় প্রস্কা দারা ভাহাদের শৃক্ত

নাদিনার প্রকা দারা তাহাদের শৃন্ত হান পূর্ণ করা হয়। তারণর সার্গন মিশররাকশাবকের সৈন্তবাহিনীর বিরুদ্ধে স্থগ্রসর হন। তুই সৈন্তদল মিশরের সীষান্তে রাফিয়াতে (Raphia)

### প্রথিনীর ইতিহাস-আসিরিয়া

যুদ্ধে শাৰক ভীৰণভাবে প্রস্পর স্কুথীন হয় পরাজিত হুইয়া ফিশরে প্লায়ন করেন।

এইবার সার্গন উত্তরদিকে নিজের ক্ষমতা জু-প্রতিষ্ঠিত করেন। উরাটুর রাজা প্রথম (Rusas I) বিশেষ শক্তিশালী উরাটুর পতন হুইয়া উঠিয়াছিলেন ও সমগ্র নাইরি-দেশে তাঁহার প্রভাব বিস্তার করিয়াছিলেন। সার্গন প্রথমে সিরিয়ার কুশাসের পক্ষীয় রাজাদের সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া তাহাদের পরাস্ত করেন। ৭১৭ খঃ পূর্ব তিনি কার্কেমিদের শেষ হিটাইট রাজাকে পরাস্ত

আাসিরিয়ায় লইয়া আসেন। সিরিয়ার হিটাইট রাজ্যের শেষ চিছ্লুপু **হ্টল। ইহার পর** সার্গন উবাটু রাজ্য আক্রমণ করেন ও প্রায় সমস্ত দেশ জয় করেন। কবিয়া ছাবধার রুশাস্ হতাশ হইয়া আতাহতা সাগনের সময়েই করেন। অ্যাসিরিয়ার সামাজা উত্তর দিকে সর্কাপেকা বেশী বিস্তৃত ঠ|হার এক হইয়াছিল। সেনাপতি টুরাস পরত অতি-ক্রম করিয়া ফ্রিজিয়াব রাজা মিডাসের (Mita of Muski) সক্ষে যুদ্ধ করিয়া তাঁহাকে প্রাক্তিত করিয়াছিলেন।

এইবার সার্গন বীট ইয়া-

কিনের মার্ডুক হাবালদিনের দিকে লক্ষা করিতে সমর্থ হুইলেন। গত ১২ বৎসর ধরিয়া বীট ইয়াকিন-রাজ ব্যাবিদ্নিয়ায় নিরুপদ্রবে রাজত্ব করিতেছিলেন এবং এলাম বাজের সলে প্রগাঢ় বন্ধুত স্থাপন করিয়া-ছিলেন এবং নানাস্থানে সাহায্যের জন্ত দুত প্রেরণ কিঃমাছিলেন। সার্গন তাঁহাব সৈত্যাহিনী ছইভাগ মার্ড্ক-ছাবালাদ্দি-প্রেরণ করেন এবং অন্যভাগ লইয়া নের ধ্যন बाविनात्वत्र मिटक अश्रमत स्म। মাডু ক হাবালাদিন রাজধানী হইতে পলাইয়া বীট ইয়াকিনে আশ্রয় গ্রহণ করেন। ব্যাবিশনের প্রো-হিতের। সাদরে সার্গানকে ত্রাণকর্তা বলিয়া অভার্থন। করের। ইছার পর সার্গন বীট ইয়াকিন আক্রমণ

করিয়া মার্ডুক হাবালাদিনের পৈতৃক রাজ্য অধিকার करत्रन ও তাঁহার রাজধানী धृणिসাৎ করেন। মাতু ক হাবালাদিন পলাইয়া যান।

সাৰ্গনের কীত্তিকাহিনী এইবার দেশ-বিদেশে ছড়াইয়া পড়িল। এমন কি, স্বুদুর সাইপ্রাস দ্বীপের সাত জন রাজা তাঁহাকে নানাবিধ উপঢ়োকন দেন। এতদিন পরে তিনি বিশ্রামলাভের স্থােগ পাইলেন। এই শান্তির অবসরে তিনি দার-সার্ফকিন্ (DurShar-) rukin) নামে একটি নৃতন রাজধানী প্রতিষ্ঠা কবেন। এই সহরে তিনি নিজের জনা যে প্রাসাদ নির্মাণ করেন সতাই তাহা অভুলনীয় ছিল। এই বিষয়ে পরে বলা



#### মাত্ৰমুখো বৃষ

হইবে। ৭০৫ খৃ: পৃঃ কাইমেরিয়ান নামে এক আর্যা-জাতীয় লোকদের সহিত যুদ্ধে সার্গনের মৃত্যু হয়। দার্গনের মৃত্যুর পর তাঁহার পুত্র দেনাকেরিব রাজা হন। তিনি রাজধানী পুনরায় নিনেভে সহরে লইয়া থান এবং সহন্বটিকে নতন করিয়া গড়েন। সেনাকে রিব প্রথমেই তাঁহাকে ব্যাবিশনিয়ার (904-653) (সিন্-জাকিরিব) বিজে† হ দমনে মল দিতে হয়। ব্যাবিশনের প্রোহিতের। শার্মনের পুতি অধুরক্ত ছিল। কিন্ত ভাঁহার মৃত্যুর পর সেনাকেরিব তাহাদের সহায়ভূভি वाविनन क ক্যালভিয়ার অভিযান হইতে বঞ্চিত হন। ভাহার। মাড় ক-জাফির-স্থম নামে একজন বাাবিলনীয়কে সিংহাসনে বসান। কিন্তু এই গোলমালের

#### স্থিত ভাৰতী

স্থােগে এলামরাজের সহায়ভার মার্ডুক-হাবালাদ্দিন আবার ব্যাবিশনের সিংহাসন অধিকার করেন। কাজেই, দেনাকেরিব ব্যাবিশ্নিয়ায় অভিযান করেন किरमत (Kish) निकटि अगाय ७ वाविगतनत সন্মিলিত বাহিনীন সহিত তাঁহার যুদ্ধ হয়। এই তবৈ প্রকৃত নেতা ছিলেন জুড়ার বাজ হেজুকিয়া (Hezekiah)। বিজ্ঞোহ প্রথমে উপস্থিত হয় আঞ্চালন **সেথনিকার আাসিরীয় পক্ষের রাজাকে** সহতে ৷ তাড়াইয়া দিড কা নামে একজন রাজ্য হয়। আবার একনের (Ekron) লোকেরা তাঁহাদের রাজা

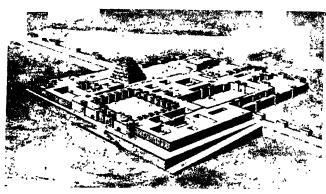
> পাদিকে (Padi) বন্দী করিয়া হেজ্কিয়ার নিকট পাঠান। এই কেরিবের সেনাকেরিব, ভাঁচার এথানকার

পাদি ছিলেন সেনা-বিশেষ অমুরক্ত ও আশ্রিত। কাজেই, সেনাকেরিব অবিলয়ে পশ্চিম দিকে মগ্রসর হন। তিনি প্রথম সিডন আঠ্রন্মণ কবেন। সেথানকার त्रांका भनायन करत्रन। এক বিশ্বস্ত লোককে বাকা করেন। এইবার

প্যালেষ্টাইনের অধিকাংশ রাজারা তাঁহার শরণাপ্র হন এবং উপঢ়ে।কন প্রদান করেন। তারপর সেনা-

কেরিব্আাস্থালন অধিকার করিয়া মিশরের সঞ্চিত এক্রনের দিকে অগ্রসর হন। এই *শহরে*র **দ**ল্লিকটে আণ্টাকতে (Altaku) মিশর বাহিনীর সহিত তাঁহার যুদ্ধ হয়। মিশরীয় সৈঞ্চেরা ভীষণভাবে পরাক্ষিত হয়। এক্রন ভাঁহার হস্তগত হয়। সেধানকার বিদ্রোহী নেতাদের শান্তি দিয়া তিনি পাদিকে সিংহাসনে পুন:প্রতিষ্ঠিত করেন। এবার জুডার বিরুদ্ধে তিনি অগ্রসর হন। একে একে এখানকার সমস্ত সহর তিনি অধিকার করেন। হেজ্কিয়া কিন্তু জেকজালেমে আশ্রয় লইয়া-ছিলেন। প্রথমে কিছুতেই তিনি আত্মসমর্শণ করিতে वाकी रन नारे। काटकरे, त्मनाटकवित् वाक्यांनी व्यवदर्शास करत्रन। वित्मस कारकत्र कक्क जीहारक আদিরিয়ায় .ফিরিতে হইয়াছিল বলিয়া ভিনি এক দল সৈনা এথানে রাখিয়া যান। অবশেষে হেজুকিয়া তাঁহার আধিপতা স্বীকার করেন এবং বিস্তর উপ-धोकन पिया जिहाहे भान।

धिमत्क त्मनात्कत्रिव् ७ त्वम् हेव्नित्क वाविनत्मन्न রাজা করিয়া গিয়াছিলেন। কিন্তু সৈ ছিল নিডাজ



সার্গানের রাজপ্রাসাদের ধ্বংশাবশেষের পুনরুদ্ধারের চেষ্টা

युष्क मार्फ क-शारीमाक्ति भन्नाक्षिष्ठ इन এवः कान ডিয়ায় প্লায়ন করেন। সেনাকেরিব ব্যাবিশন অধিকার করেন। ইহার পর তিনি কালডিয়া আক্রমণ করিয়া দেখানকার অধিকাংশ সহর अधिकात करतन । कित्रिवात ममग्र द्वल हेवनि नारम একজন বাাবিশনীয়কে সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করেন।

ইহার পরে সেনাকেরিব্জাাগ্রস পার্কতা দেশে কাদসি জাতির বিরুদ্ধে অভিযান করেন। ইহাদের

প্রধান সহর অধিকার করিয়া লঠ-জাগ্রাস্ পর্বত পাট করেন এবং আাসিরিয়ার অভিযান অধিবাসী আনিয়া এথানে প্রতিষ্ঠিত

তারপর তিনি জাাগ্রস পর্বত অতিক্রম কবেন করিয়া ইল্লিপ (Ellip) রাজ্য আক্রমণ করেন। এখানেও তিনি কয়ী হন। কিরিবার পথে তিনি মীড দের(Medes) নিকট হইতে কর আদায় করেন।

ইতিমধ্যে প্যালেষ্টাইনে বিদ্রোহ উপস্থিত হয়। বোধ হয়. মার্ড ক-হাবালান্দিনের প্ররোচনায় এবং

মিশর-রাজ শাবকের সাহায্যের পালেষ্টাইনের প্রতিশ্রতি পাইয়া প্যালেষ্টাইনের विद्वाह ममन অধিকাংশ সহরই তাঁহার বিরুদ্ধে ৰ্জুবন্ধ করে। ইহাতে সিডন ও টারারাও বোগ দৈয়।

## \*\*\*\*\* পৃথিৰাৰ ইতিহাস-আসিৰিকা

অপলার্থ। কান্তেই, রাজ্যে নানারকম গোলমাল উপস্থিত হয়। মার্জুক-হাবালাদিন আবার বীট্
বানিলন
হামিকেন কিরিয়া আসিয়া চক্রাস্ত
আরম্ভ করেন। স্কুতরাং আবার
সেনাকেরিব্কে বাাবিলনের ব্যাপারে হস্তক্ষেপ
করিতে হয়। তিনি তাঁহার পুত্র অস্তরদান-স্মকে
সংসক্তে পাঠান। ব্যাবিলনিয়ায় শান্তি স্থাপন
করিয়া অস্তরদান ক্যাল্ডিয়া আক্রমণ করেন।
মার্জুক হাবালাদ্দিন এলামরাজ্যে পলায়ন করেন।
বীট্ ইয়াকিনের অধিবাসীদিগকে আাসিরিয়ায়
পাঠান হয়। ক্যাল্ডিয়া হইতে কিরিয়া আসিয়া
বেল-ইবনিকে সিংহাসনচ্যত করিয়া অস্তরদান
ব্যাবিলনিয়ায় রাজা হন।

ক্ষেক বৎসর পরে সেনাকেরিব্ দক্ষিণ ইলামে অভিযান করেন। এখানে বীট্ইয়াকিনের অনেক লোক আশ্রয় সইয়াছিল। নৌ-বাছিনীর সাহায়ে এখানে উপস্থিত হইয়া তিনি ভাছাদিগকে সম্পূর্ণভাবে বিধ্বপ্ত করেন। এদিকে এই স্থযোগে এলাসরাজ খালু স্থ অভকিতভাবে বাাবিলনিয়া আক্রমণ করিয়া অস্তরনাদিনস্থাকে বন্দী করেন এবং নার্গল উসেজিব্ নামে একজন বাাবিলনিয়কে রাজা করেন। দক্ষিণ এলাম বিজয় সম্পূর্ণ করিয়া সেনা-কেরিব্ বাাবিলনে ফিরিয়া আসিয়া নার্গল উসেজিব্ ও এলামরাজের সেনাবাহিনীকে পরান্ত করেন এবং নার্গল উসেজিবকে আসিরিয়া লইয়া যান। মুসেজিক মার্জুক নামে এক ব্যক্তি বাাবিলনের সিংহাসন অধিকার করেন।

কিছুদিন পবে আবার সেনাকেরিব্ থাবিলন আক্রমণ করেন। মুসেজিব মার্ড ক এলামরাজ উমান বাবিলন বিজয় ও সেনামুর সাহায্যে তাঁহাকে বাধা দেন। আগিরীয়া সৈম্প্রার বিশেষ স্থবিধা করিতে পারে না। এই ভাবে মাসের পর মাস যুদ্ধ চলে। ইতিমধ্যে হঠাৎ উমান মেনামুর মৃত্যু হয়। তাঁহার মৃত্যুতে মুসেজিব হীনবল হইয়া পড়েন এবং ব্যাবিলন নগরে আশ্রম লন। সেনাকেরিব তথন রাজধানী অবরোধ করেন এবংক্ষেক মাস পরে উহা অধিকার করেন। মুসেজিব মাড়ককে আ্যামিরিয়ায় বল্দী করিয়া পাঠান হয়। সেনাকেরিব নিজে 'স্থমের ও আক্রাদের' রাজা হন। এইবার তিনি ব্যাবিলনবাসীদের উপর ভয়ানক প্রতিশোধ গ্রহণ করেন। মুরেকদিন ধরিয়া অবিরাম স্থঠগাট চলে.

অনেক লোককে হতা৷ করা হয় এবং অনেক মন্দির

ও অষ্টালিকা ধুলিসাৎ করা হয়, ব্যাবিদন আশানে পরিণত হয়। মাডু কদেবের মুর্দ্তি আাসিরিয়ার পাঠান হয়। এই সময়ে তিনি তাঁহার পুত্ত এছার-হাজ্জনকে (Essarhaddon) ব্যাবিদ্যার শাসন কর্ত্তা নিযুক্ত করেন।

সেনাকেরিবের পরিণাম অতীব শোচনীয়। তিনি যথন মন্দিরর উপাসনায় মর্য ছিলেন, তথন তাঁছার ছই পুত্র তাহাকে হত্যা করিয়া উরাটুতে পলাইয়া যায়।

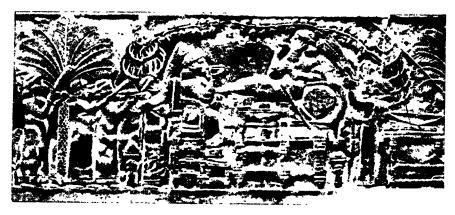
সেনাকেরিবের রাজধানী ছিল নিনেতে নগরে।
তিনি সংবটিকে সম্পূর্ণভাবে নৃতন করিয়া গড়েন।
রাজাশাসন রাস্তাঘাট,মন্দির-প্রাসাদহর্গ,প্রাকার
শবই তিনি সংকার করেন। নৃতন
মন্দির ও সৌধ তিনি জনেক নিশ্মাণ করেন। তবে
তাঁহার সর্বাপেক্ষা মহৎ কীতি তাঁহার নবনিশ্মিত
প্রাসাদ। এত স্কলর ও বিশাল প্রাসাদ সমগ্র
জ্যাসিরিয়ায় বোধ হয়, আর একটিও ছিল না।
ইহার চিত্রাবলী সত্যই মনোমগ্রকর।

সেনাকেরিবের মৃত্যুর পর তাহার চতুর্ব পুত্র এছারহাড্ডন পিতৃহস্তা ভাইদের পরাব্দিত করিয়া আাসিরিয়ার সিংহাসন অধিকার (Esarhaddon) করেন। এই নুডন রাজ্বাও খব বড যোদ্ধা ও শক্তিশালী নুপতি ছিলেন এড়া রহা ভড়ন (667-666) তবে তাঁহার বিশেষত্ব ছিল জাঁহার চরিত্রের কোমলতা ও হিংশ্রতার অভাব। আদিরিয়ান অক্তান্ত বীর রাজাদের জীবনী-পাঠে জানা যায়, ভাছার। যেন তাহাদের কঠোরতা ও নিশ্মতার জন্ম গৌরব বোধ করিতেন। যেখানে গিয়াছেন, লক লক লোককে গৃহহারা করিয়া, গ্রাম নগর জালাইয়া পোড়াইয়া, স্ত্রীপুরুষনিার্কশেষে নিশ্মসভাবে হত্যা করিয়া এই দব বীর রাজারা তাহাদের বীরছের পরিচয় দিয়াছেন। একমাত্র এছারহাড্ডনেই আমরা ইহার ব্যতিক্রম দেখিতে পাই।

রাজা হইয়া তিনি বাাবিলনের প্রতি বিশেষ করুণা প্রদর্শন করেন। তাহার অক্লান্ত চেষ্টা ও পরিশ্রমের ফলে ব্যাবিলন সহর পুনরার স্থাপিত হয়, ইহার সৌন্দর্যাও শতগুণে ব্যন্ধিত হয়, মার্ডুকের মুর্তি আবার ফিরাইয়া দেওয়া হয়।

এছারহাড্ডনকে অনেক বৃদ্ধ করিতে হইয়াছে। পূর্ব্বদিকে মিডিয়াদেশে তিনি অভিযান করিয়াছিলেন। উত্তরে তিনি কাইমেরিয়ানদের সঙ্গে বৃদ্ধ করিয়া ভাষাদিগকে পদ্ধান্ত করেন। এমন কি দক্ষিণ-পূর্কান্থিত আন্নর্বদেশেও তিনি অনেকদুর পর্যান্ত অগ্রসর হইয়া-ছিলেন। এদিকে ফিনিশিয়া দেশের সিডন রাজা বিদ্রোহ করিলে সেই বিদ্রোহ তিনি সহজেই দমন করেন। সিডন সহর তিনি ধ্বংস করেন এবং সেখানে নৃত্তন একটি সহবেব পত্তন করেন।

হিহাব পর পশ্চিমের সামন্তরাজারা <sup>®</sup>নানাবিধ উপটোকন লইয়া ঠাহাকে নজর দিতে আ**সেন**। ভাষার পূত্র অস্থ্যরানিপানিক (Ashur-banipal) আাদিরিয়ার ও আর এক পূত্রকে (সামাদ্ স্থাকিন) বাাবিলনিয়ার সিংহাদনে প্রভিষ্ঠিত করেন। এই স্থোগে ফারোও ভাষাকে কিন্তু আাদিরীয় সৈপ্তদের ভাড়াইয়া সমগ্র মিশরের উপর ভাষার আবিপত্য স্থাপন করেন। কাজেই, এছারহাড্ডন পূনরায় মিশরের দিকে অঞ্চলর হইগেন। পরে ভাষার মৃত্য হইল।



রাজা অস্ববানীপাল ও তাঁহার রাণী

ইছাদের মধ্যে সাই প্রাস দ্বীপের দশজন রাজা ও টায়ার আর্ভাদ, গাজা ও জুডার রাজাদের নাম উল্লেখযোগা এতদিন সিরিয়া পালেষ্টাইনে যত গোলমাল বাণিয়াছে তাহার মূলে ছিল মিশরের রাজাদের চক্রাস্ত। এইবার এছারহাড্ডন মিশরকে মিশর বিজয় কবিতে চলিলেন। বিনা আয়াসেই তিনি উত্তর মিশর অধিকার করেন। মিশররাজ তাহার্কা (Tharka) রাজধানী মেম্ফিসনগরে আশ্রয় গ্রহণ করেন। এছারহাড্ডন উহা অবরোধ করেন এবং বিশেষ চেষ্টার পর অধিকার করেন। তাহার্কা কিন্তু পলায়ন করিতে সমর্থ হন এবং থিব্স নগরে আশ্রয় লন। এছারহাড্ডন মেমফিসের রাজপ্রাসাদের ধনবত্ন আাসিরিয়ায় প্রেরণ করেন। স্থানে স্থানে স্মাসিরিয় সৈগুদের ঘাঁটি স্থাপন করেন। কিন্ত শাসনভার সামন্ত রাজাদের হাতেই অর্পণ করেন। ভাবপর তিনি দেশে ফিরিয়া যান। ইতিমধ্যে সেখানে নানাক্নপ গোলমাল উপস্থিত হইয়াছিল। কান্তেই, তিনি

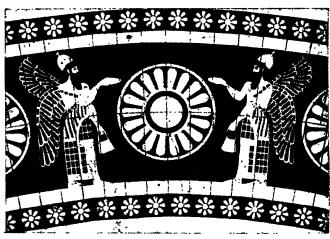
এছারহাড্ডনের মৃত্যুর পর তাহার পুত্র অস্তর বানিপালের উপর তাঁহার অসমাপ্ত কার্য্য সম্পন্ন করিবার ভার পড়ে। তিনি অতি অমুরব্যনিপাল সহজেই তাহাদিগকে মেমফিস ও (664-626) থিবিস হইতে বিভাডিত করেন এবং পুনরায় মিশরশাসনের ভার স্থানীয় সাম্প্র রাজাদের হাতে অপ্ণ করেন। ইহাদের একজনের নাম ছিল ্নেকো (মিশরের ভবিষ্যৎ উদ্ধারকর্ত্তা মিশর বিজয় স্তামেটিকের পিতা)। অম্বরবানিপাল আসিরিয়ায় প্রত্যাবর্ত্তন করিলেই আবার তাহার৷ ষড়যন্ত্র আরম্ভ করেন এবং তাঁহার ভাতৃপাত্র তহুতমন থিব স ও মেম্ফিস অধিকার করিয়া তথাকার অ্যাসি রিয় সৈম্মদিগকে ধবংস করেন। স্থতরাং বাধ্য হট্যা অস্তরবানীপালকে পুনরায় মিশরে অভিযান করিতে হয়। তিনি তহুতমনকে যুদ্ধে ভীষণভাবে পরাক্ষিত করিয়া তাড়াইয়া দিলেন এবং থিবস নগর সুঠন करतन । ইशात भन्न किहूमिन विभन्न हुशहाश थारक ।

#### -----পৃথিবীর ইতিহাস-আসিরিকা-

দেশে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়াই অস্কুরন।নিপালকে দক্ষিণদিকে নম্বন্ধ দিতে হয়। তাঁহার ভ্রান্তা স্থামাদ স্মুকিন (ব্যাবিলনরাজ) বিদ্রোহ ব্যাহিলন অধিকার করেন। এই বিস্তোহে এলামরাজ তাঁহার পক্ষ অবলম্বন করেন। গুধু তাহাই নহে, আাদিরিয়ার অস্থাস্ত অধীন দেশ হইতেও তিনি বিশেষ

সাহায্য পান। অসুত-বানিপাল সংসজ্যে ব্যাবিসনের দিকে ভ্রাসর হন এবং অল্ল অন্যাদেই রাজধানী অহিকাৰ 4(3) ভামাদ সুমূকি নের প্রাসাদে অগ্নিসংযোগ করা হইলে তিনি সেই আ হলে পুড়িয়া মরেন। এইবার বিজয়ী বীব এলাম বাচ্য আক্ষণ করেন। একে একে তিনি এলাম দেশের অনেক নগর অধিকার কবেন। অবশেষ রাজ ধানী স্থপা তাঁহার হস্তগত হয়। গভ কয়েক

বাহির হয়, তাগতে বিজঃ । অধ্বণাদ্ধের শক্ট টানিরাছিল এলামের তিন জন ভূতপুন রাজা ও বন্দী আরবরাজ। এক হিদাবে বিভয় উৎসৰ ইহাই হইল আাদিরীয় রাজশক্তির বিকাশ। ইহার অল্পনি পরেই তাহার ফুত প্তন আবস্ত হ্য। সুত্রাং যদিও ইহার প্র অনেক বৎস্র



অপ্তর রাজাদের রাজপ্রাসাদের গায়ে থোদিত কাককার্যা

বৎসব এলামের রাজারা বাব বাব তাগার বিকল্প বিদ্যোহ কার্রান্তেন, বার বার তিনি তাঁহাদের ক্ষম। করিয়াছেন। এইবার তিনি চির-এলাম রাজ্যের দানের মত এলামেব শ্কি লোপ করিতে বদ্ধপরিকর হন। কাজ্ফেই

স্থান পুঠন করিয়া তাহা সম্পূর্ণরূপে ধ্বংস করেন।
এলাম বিজ্ঞার পর বাাবিশনে দিরিমা আসিয়া
সেধানকার সিংহাসন অধিকার করেন। ইহাতেই
তিনি ক্ষান্ত হন না। আরবদেশীয় কোন কোন রাজা
তাঁহার বিরুদ্ধে আমাস-স্থম্কিনেন পক্ষে যোগ দিয়া
ছিলেন। তাঁহাদের বিরুদ্ধে অভিযান করিয়া তাঁহাদিগকে পরান্ত করেন এবং তাঁহাদের একজনকে
বলী করিয়া নিনেভেতে লইয়া আসেন। ইহাই
হইল মোটামুটি তাঁহার বিজ্ঞ-কাহিনী।

ব্যাবিধন বিজয়ের কয়েক বৎসর পরে অস্করবানিপাল নিনেভেতে বিশেষ সমারোৎসহকারে একটি বিজয় উৎসব পালন করেন। এই উপলক্ষে যে শোভাষাত্র। অধ্ববানিপাল রাজত্ব করিয়াছিলেন তথাপি
এটপানেই তাঁহার নিকট হইতে আমবা বিদায়
লটব। তবে এই কণা জানা বিশেষ দবকার যে,
অস্ববানিপালের নাম অমর হট্যা আছে তাঁহার
বিখ্যাত পুস্তকাগারের জন্তা। আসিবিয়াও বাাবিলনিয়ার বেখানে যে কোন পুরাতন গ্রন্থ তাঁহার
লোকেরা পাটয়াছে তৎক্ষণাৎ তাহার নকল করিয়া
নিনেতে লাইবেরীতে রাখা হট্রাছে। অস্করানি
পালের নিকট এইজনা ঐতিহাসিকেরা বিশেষ
ক্তজ্ঞ। আর একথাও ভূলিলে চলিবে না যে,
তাঁহার সময়েই আসিবায় আটের চন্ম পরিণতি
দেখিতে পাওয়া যায়।

#### অ্যাসিরিয়ার পত্ন

অস্ত্রবানিপালের মৃত্যু হ্ইতে না হইতেই আাসিরীয় সামাজ্যে ভাঙ্গন ধরে। তাঁহার জীবদ্দশতেই মিশর স্বাধীন হইয়াছিল। এইবার অন্যান্য স্থাপেও বিদ্যোহ

#### শিশু-ভারতী-

উপস্থিত হয়। অস্করবানিপালের উত্তরাধিকারিরা निভाञ्ज व्यथमार्थ हिन। जाहारमत्र ना हिन योगाजा ना हिन मामर्था। कार्क्ड, এर्क्ड এरक नाना शाम त्राधीन हरेएछ थाकि । এদিকে উত্তর দিক हरेएछ দলে দলে শক্ষাতীয় লোকেরা অ্যাদিরিয়ার প্রবেশ করিতে থাকে। তাহাদের আক্রমণ প্রতিহত করিতে কাঠারও সাধ্যে কুলাইল না। এমন কি, তাহারা সহর পর্যাস্ত অধিকার করিয়া করিয়াছিল। এদিকে মীডদের দেশে একটি में कि-শালী বাজা গডিয়া উঠিয়াছিল। এই মীডদের রাজা উভক্ষত্র (Kyaxares) ব্যাবিলনের ক্যালডীয় শাসন কর্তা নবু-পাম-উস্সর (Nabopolassar) নবপোলাসারের সঙ্গে যোগ দিয়া নিনেভে আক্রমণ করেন (৬০৬)। ছই বৎসর অবরোধের পর নিনেভে আত্মসমর্পণ করে। অ্যাসিরিয়ার শেষ রাজা সিন-সারিস্কন রাজপ্রাসাদে অগ্নিসংযোগ করিয়া প্রাণত্যাগ করেন (৬০৬) । বিক্ষেতারা নিনেতে লুঠপাট করিয়া অংগ্রিসংযোগ করিয়া সহরটিকে ধ্বংস করে। চির-দিনের মত বীর আাসিরীয়জাতি ধরাপন্ন হইতে लश्र इंडेन।

এখন মনে খতঃই এই প্রশ্ন জাগে. এত সত্তর এই বিশাল সাথ্রাজ্যের পতন হইল কেন ? কুডি বংসর পূর্বেও যে সাথ্রাজ্য লোকেব প্রাণে ভীতিব সঞ্চার কবিয়াছে, তাহাব অবসান হঠাৎ এই ভাবে হইল কেন ? আসল কথা এই যে, আ্যাসিরীয় সাথ্রাজ্যের পতন প্রক্রতপক্ষে আরম্ভ হইয়াছে অস্করবানিপালেব সময়, কিম্বা তাহাব পূর্ব হইতেই।অস্করবানিপালকে যে সব যুদ্ধ করিতে হইয়াছে তাহা প্রক্রতপক্ষে তাঁহার বিশাল সাথ্রাজ্য রক্ষার জনাই। ক্রমাগত ২০০।৩০০ বংসরের অবিশাম যুদ্ধ-বিগ্রহের ফলে ক্ষ্মে অ্যাসিরিয়া দেশের রাজা একটি বিশাল সাথ্রাজ্যের অধিপতি হইয়াছিলেন। এই সাথ্রাজ্য রক্ষা করা বিশেষ ফ্রেছ বাাপার ছিল। শক্তিশালী রণকুশল বুদ্ধিমান

নুপতির পক্ষে সম্ভব হইলেও বিলাদী অপদার্থ রাজাদের তাহা ক্ষমতার বাহিরে। অ্যাসিরিয়াতেও হইয়াছিল তাহাই। আরও একটি কথা মনে রাখা দরকার। ক্রমাগত যুদ্ধকরিয়া অ্যাসিরিয়ার যে লোকক্ষয় হইয়াছিল তাহা পুরণ করা অসম্ভব হইয়া পড়িয়াছিল। কাজেই,দেথা যায়, বীর অ্যাসিরীয় যোদ্ধার পরিবর্ত্তে দেনাকেরিব এছারছ্যাড্ডন প্রভৃতির দৈন্যবাহিনীতে বিদেশী সেনাই ছিল বেশী। এই সব দৈনাদের কাছে আদিরীয় সামাজ্যের কোন মুলাই ছিল না, ইহাতে তাঁহাদের গৌরবও কিছুমাত্র ছিল না। ভারপর চতুর্টিগেলাথ পিলেসারের হইতে সামাজ্য রক্ষার যে বন্দোবন্তের প্রচলন হইয়া-পরিণামে ভাহা হইতে বিষময়\ ফল ছিল, ভাহার ফলিয়াছিল। ক্রমাগত বিজিত আাসিরীয়া অথবা সামরাজ্যের স্থানাম্বরিত করিবার ফলে তাহাদের শূন্য স্থান অনেক সময় আসিরীয়দের দারা পূর্ণ করিতে হইয়াছে। ২৫০ বৎসরের উপন এই নীতি অমুসরণের ফলে ক্রমে ক্রমে খাঁটি বীর আাসিরীয়দের সংখ্যা হাস অবশেষে তাহারা একেবারে ধরাপৃষ্ঠ হইতে হয়। আর এই মিশ্রণের ফলে যে মিশ্রজাতির উদ্ভব হইয়াছিল, শক্তি, সামর্থা ও সাহসে তাহারা মোটেই নিভরবোগা ছিল না। তা ছাডা আাদিরীয় সমাটের প্রতি ভাষাদের কোন বন্ধনই ছিল না। আর সিংহাসন প্রজাদের ভক্তিও ভালবাসাও উপর প্রতিষ্ঠিত নয়, তাহার স্থায়িত্ব কতদিন ৭ যে সামাজ্য গড়িয়া উঠিয়াছে লক্ষ লক্ষ হতভাগ্যের বক্ষো-শোণিতে, যাহার একপ্রান্ত হইতে অন্য প্রান্ত পর্যান্ত নির্যাতিত নরনারীর ক্রন্সনরোল আকাশে বাতাদে নিয়ত ধ্বনিত হইয়াছে, যার গৃহে গৃহে ভগবানের কাছে সমাটের বিরুদ্ধে অভিযোগ উঠিয়াছে—সে সাম্রাজ্য যে একদিন আর্ত্তের পুঞ্জীভৃত তাদের ঘরের মত ভাঙ্গিয়া পড়িবে. তাহা আর আশ্চর্যাকি 🔊



## উদ্ভিদের দেহ গঠন

উট্টিদের দেহ কি কি উপাদানে গঠিত ও উহার দেহের ভিতরে ঐ উপাদানগুলি সরবরাঃ করিয়া কি কি খাগু

প্রস্তুত্ত করে, তাহা তোমাদিগকে বলিয়াছি। এথন তোমরা জিল্পান করিতে পার, দেহ গঠন করিবার জনা উদ্ভিদ তাহার শরীরের কোন অংশ দ্বারা কাচা উপাদানগুলি শরীরের মধ্যে সরবরাহ করে ও উহ্ কোথায় কিরূপে বিভিন্ন জাতীয় থাছাদ্রবো পরিণত হয়। উদ্ভিদের মুখই বা কোথায়, তাহার শরীবের ভিতর থাছা প্রস্তুত করিবার রান্না দ্বরই বা কোথায়; আগুনই বা কোথা হইতে আদে, রান্নাই বা কে করে পু আগে উদ্ভিদের মুখের কথা বলিতেছি।

তোমরা অতি সাবধানে শিক্ত ভদ্ধ যদি একটি চার৷ গাছ তুলিয়া আনিয়া উহার শিকড়টি জলে ধুইয়া দেখ দেখিতে পাইবে যে, দিকড়ের অগ্রভাগের একটু, উপরেই শিকড়ের গায়ে চুলের মতসরু সরু অনেকগুলি শিকড় আছে. উহাদিগকে কৈশিক তোমরা ভাল করিয়া লক্ষ্য করিলে দেখিতে পাইবে যে. জলে ধোওয়া সত্ত্বেও কৈশিক মূলগুলির অগ্রভাগে মাটির খবুছোট ছোট কণা লাগিয়া আছে, মাটির কণার সহিত ইহাদের এত অবিচ্ছেম্ম বন্ধুত। এই কৈশিক মৃগ-গুলি এক একটি ছোট ছোট থলিবিশেষ। ইহা এক প্রকার খন অমরুদে (Carbonic Acid) সর্বাদা পূর্ণ থাকে। তোমরা জান যে, মাটিতে সকল সময়েই জল আছে, এমন কি, মাটির এক ক্ষুদ্র কণার চারিধারে সকল সময়েই জলের একটি আবরণ থাকে

এখানে প্রথমেই তোমাদিগকে তরল পদার্থের একটি স্বাভাবিক গুণের কথা বলা প্রয়োজন: যদি তুইটি তরল

পদার্থ পাশাপাশি থাকে, এবং তাহাদের দেওয়াল যদি পাতলা ঝিল্লিবিশিষ্ট হয়, তাহা হইলে পরস্পর পরস্পরকে টানিয়া লইতে পারে। তরে অপেক্ষাকৃত তর্ন পদার্থ অপেক্ষাকৃত খন পদার্থেরমধ্যে ক্রতগতিতে যাইয়া মিশ্রিত হয়। আবার ঘন পদার্থ থব মন্দ গতিতে তরল পদার্থের সহিত আসিয়া মিলিড হয়। ইহাকে চন্মান্তর্কাহ বলে। এই কারণে কৈশিক মূলের ভিতরে যে ঘন রস আছে, ঐ ঘন রস মাটির কণাগুলির সহিত যে জল লাগিয়া আছে, ঐ জলকে ভিতরে টানিয়া লইতে পারে। যেমন খানিকটা শক্ত 🖦 একটা বাটতে রাখিয়া বাটিটিতে জন রাখিলে ঐ জলের সহিত গুড়ের উপাদানগুলি মিশ্রিত হইয়া যায়. দেইরূপ মাটির কণাগুলির সহিত যে জল লাগিয়া থাকে ঐ জলের সহিত মাটির উপাদানে যে সকল ধাতব পদার্থ থাকে, ঐ সকল ধাতব পদার্থের কতক পরিমাণে শাটির জলের সহিত মিশ্রিত হইয়া থাকে। তোমাদিগকে পূর্ব্বেই বলিয়াছি যে, কৈশিক মলের ভিতরে ঘন অন্নরস আছে। কিন্তু মাটির জল অত ঘন নহে। তাহা হইলে ভোমরা বুঝিতে পারিতেছ যে, মাটির কণার সহিত যে জল আছে উহা ক্রত গতিতে কৈশিক মূলের খন রসের সহিত মিলিত হইতেছে এবং সঙ্গে সঙ্গে কৈশিক মূলের খন রসও মাটির রুসের সহিত মন্দ-গতিতে মিলিত হইতেছে। কৈলিক মূলের ঘন অন্নরস

# শিশুভারতী + ++++

মাটির রদের গৃহিত মিলিভ ইইয়া মাটির বে সকল উপাদান, তাহাদিগকে আরও তরল করিয়া দিন্ডেছে। এইরপে মাটি হইতে উদ্ভিদের দেহ গঠনের উপথোগী মৌলিক ধাত্তর পদার্থের উপাদান গুলি তরল অবস্থায় উদ্ভিদের শরীরে প্রবেশ করিতেছে। তাহা হইলে এখন আমরা কৈশিক মূলগুলিকে অনাহাসেই উদ্ভিদের মুখ বলিতে পারি।

উদ্দিদের দেহ বিভিন্ন প্রকারের অসংথা কোষেব ~ ধারা গঠিত। এক স্তর কোষের উপর অপর একটি স্তর সাজানো। কোষগুলি মিলিত হুট্যা লম্বা লম্বা নালিকার সৃষ্টি ইইয়াছে। এক কোন হুইতে অপর কোষে গুখন মাটির রস চম্মান্তর্কাহ প্রক্রিয়া গুণে উঠিতে থাকে তথন শিকভের মধ্যে একটি চাপের সৃষ্টি হয় এবং ক্র চাপের প্রভাবে শিকড়ের মধ্যন্ত নালী দিয়া উপরে উঠিয়া কাণ্ডে এবং কাণ্ড হঠতে পাতার বোটায় ও বোটা হছতে পাতায় চলিয়া যায়। এইরূপে মৌলিক উপাদানগুলি পাতায় আসিয়া জ্বা হয়। এই পাতাই উদিদের রানামর এবং পাতাতেই মোলিক উপাদান গুলি বিভিন্ন জাতীয় খাখাদুবো পরিণত হয়। কৈশিক মল বে মাটির রস টানিয়। লইতে পাবে ও ঐ রস কাণ্ডেব ভিতর দিয়া পাতায় যাইতে পারে তাহা তোমরা নিয়-লিখিত তুইটি পরীক্ষার দারা অনায়াদে বুঝিতে পারিবে। একটি মলা সংগ্রহ কর। ছুরি দিয়া মূলাটির ভিতরে শাঁদ করিয়া বাহির করিয়াকেল। পরে মধভোগের

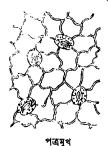


কৈশিক মূল মাটির রস টানে – ইহার পরীক্ষা ঐ ফাপা অংশের অর্জেকটা ঘন লবণ জল দারা। পূর্ণ কর। এখন লবণ জলপূর্ণ ম্লার খোলাটিকে এব টি
জলপূর্ণ মানের ভিতরে হাখিয়া দাও। মানের
জলের উচ্চতা যেন ম্লার খোলের জলের উচ্চতা
অপেক্ষা বেশী না হয়। ছই এক দিন পরে দেখিবে
যে, ম্লার খোলের উচ্চতা আনেক বাড়িয়া
গিয়াছে। মানের জলের স্বাদ লইলে দেখিবে
যে, উহা লোনা হইয়া গিয়াছে। এই পরীক্ষার বারা
রবিতে পারিলে যে, কৈশিক মুলের রস মাটির রস
গ্রহণ করে এবং ইছাও ব্বিলে যে, কৈশিক মুলের
জয়রস ছধিক শক্তিশালী হইলে উহা মাটির জলকে
অধিক পরিমাণে গ্রহণ করিতে পারে।

বে কোন গাছের একটি ছোট ভাল কাটিয়া কান।
উঠার ছুই ধার কাটিয়া এক ফুট লম্বা একটি টুকরা
লও। ঐ টুক্রাটির মাঝামাঝি স্থানের কত্কটা
মংশের ছাল ছুরি দিয়া তুলিয়া ফেল. যেন শাদা
কাঠ বাহির হুইয়া পড়ে। এখন ঐ টুক্রাটা একটা
ফলপুন গানে বসাইয়া দাও। গানের জলে লাল
কালি মিশাইয়া দাও। কিছুক্ষণ পরে দেখিবে যে,
গানের লাল জল ছাল তোলা মংশের শাদা কাঠেব
উপর দিয়া উপরে উঠিতেছে। এই পরীক্ষা হুইতে
বুঝা গেল যে, কাণ্ডের ভিতর দিয়া শিকড় ১ইতে
রুগ উপরে উঠে এবং তাহাতে কাণ্ডের উপরের
চালের কোন সাহাগ্যের দরকার হয় না।

পাতাতেই উদ্বিদের সকল জাতীয় থাগ, মৃথা:— খেতসার, তৈল ও অন্নারজাতীয় থাগ প্রস্তুত হয়। পাতার নীচের পিঠে অসংথা ছিদ্র আছে; ঐ ছিদ্র-গুলির নাম প্রমুথ। ঐ ছিদ্রের ভিতর দিয়া বাতাদ হুইতে কার্ননিক এসিড গাাস পাতার মধাে। প্রবেশ করে। পাতাকেও তাহা হুইলে আমরা উদ্বিদের মুথ

বলিতে পারি। তবে
প্রভেদ এই যে, এই
মূখ দিয়া খাজের
মৌলিক উপাদান
বার্গায় আকারে
উদ্বিদের শরীরে প্রবেশ
করে। আর অপর
মুখটা দিয়া ভরণ
অবস্থায় প্রবেশ করে।
আভাগিত কোরে।



দার। নির্মিত। ঐ কোষগুলির মধ্যে শিক্ড ইইতে জল

## উদ্ভিদের দেহ গ্রাইন

ও ধাতৰ পদাৰ্থ আসিয়া জম্য হইতে থাকে। পাতার कामखनित मध्य बात्र इंडी भगर्थ शाक, उँशामत নাম প্রাণপদার্থ ও পত্রহরিৎ। পত্রহরিৎকে আমরা উদ্দিদ্ধ থাতা প্রস্তাতর পাচক বলিয়া ধরিয়া লইতে পারি। কারণ, পত্রহরিৎ প্রাণপদার্থের সুর্যাকিরণ হটতে শক্তি অর্থাৎ আগুন সংগ্রহ কবিয়া সেই শক্তির ধার। কার্কানিক এসিড গ্যাস এবং জলকে ভালিয়া চরিয়া উহা হইতে খেওদার প্রস্তুত করে। খেতসার প্রস্ত হতবার সময় পাড়া হটতে কতক অমুকান বাষ্প বাহির হট্যা যায়। ভাষা হট্লে ভোমরা ব্যাতে পারিলে যে শ্বেডসার গ্রস্তুতের জন্ম পত্রহারৎ, প্রাণপদার্থ এবং সূর্যাকিরণের প্রয়োজন হয়। অভ এব পাতার যে সকল কোষে প্রাণপদার্থ ও পার্করিৎ এক দঙ্গে বর্ত্তমান থাকে, কেবল সেই সকল কোষেই খেতসার প্রস্তুত হুইতে পারে। পত্রহরিৎ কেবল উদ্দিরে পাতায় ও অন্ত সবুদ্ধ অংশে বন্তমান থাকে। ত্মতরাং পাতাই শ্বেড্যার প্রস্তুতের কারখানা।

খেতদার জন্মশঃ রাসায়নিক প্রক্রিয়ার শকবাতে পরিণত হট্যা উদ্দিদের বিভিন্ন অংশে চলিয়া যায়। অনুসার উহিদের যে স্থানে প্রাণপদার্থ আছে দেই স্থানেই প্রস্বত হইতে পারে। তবে পাতাতেই অধিক পরিমাণে অন্নসার প্রস্তুত হুইয়া থাকে। ইহার জন্ম সাক্ষাৎ ভাবে স্থাকিরণের প্রয়োজন হয় না। স্তরাং সন্নদার থাত উদ্দিদ রাজিতেও প্রস্তুত করিতে পারে। অনুসার এবং প্রান্পরার্থ ভাঙ্গিয়া তৈলজাতীয় খাল্ডে পরিণত হয়। তাহা হইলে উদ্বিদের পাতাতেই সকল প্রকারের থাত অধিক পরিমাণে প্রস্তুত হট্যা থাকে। স্কুত্রাং এই পাতাতেই আমাদের যাবতীয় থাগুদ্বোর কার্থানা সকল পৃথিবীর ৰ্লিলেও অভাক্তি হয় না। "The leaf is the factory of the food of the world."

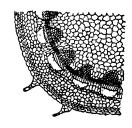
পাতাম থাত প্রস্তুত হুইয়া কাণ্ডের কোষ নালিকার ভিতর দিয়া উহা উদ্ভিদের সকল অংশেপরিচালিত হয় এখন ভোমরা প্রথম ছুইটা পরীক্ষার পর যে ছুইটি প্রশ্ন করিয়াছিলে, তাগার উত্তর দিতেছি। তোমবা এখন বুঝিতে পারিয়াছ যে, দিনের বেলার স্থাের আলোকেই পাতাতে উদ্ভিদের খাত প্রস্তুত হয় এবং খাত প্রস্তুত ছুইবার সময় পাতা হুইতে অমুজান বাপা বাহির ছুইয়া যায়। এই সময় পাতা ক কার্গ্যে অধিক বাস্তু থাকে বলিয়া উহার নিঃখাস-প্রশাসের কার্য্য গ্র মন্দ গতিতে সম্পন্ন হইয়া থাকে। সেইজন্ত প্রাথাদের সহিত carbon dioxide খুব অর পরিমাণে বাহির হয়। পাতাকে রাজে পাত প্রস্তুহ করিতে হয় না বলিয়া উহার নিংখাদ-প্রাথাদের কার্যা রানে থব ক্রত গতিতে হয়। এই নিমিত রাজেই carbon dioxide অধিক পরিমাণে বাহির হয়। সেইজন্ত প্রাথাদের সহিত যে







কোষের ভিতরকার হক্ষ হক্ষ নালিকা Carbon dioxide বাহির হয়, তাহার পরীকার সময় বোতৰ হুটীকে অন্ধকারময় হানে রাধিতে বলিয়া-



ছিলাম। আমাদের
ঠাকুরমাদের পল্লে
আছে থে, দিনের
বেলায় গাছতলায়
থাকা খুব স্বাস্থ্যকর
কিন্তু রাত্রে উহ।
বিবের মত তাাগ
করা দরকাব।
কেন, বলাত প্রার্থাত
দিনের বেলায় থাত

গাচের কোষ

প্রস্তাব সময় পাতা হইতে অন্তল্পন বাহির হইতেছে। উহা আমাদের নি:খাসের জন্ম খুব উপকারী, আর carbon dioxide বিষাক্ত।

এমন অনেক উদ্ভিদ আছে, যাহাদের পাতা সর্গ নয়, অহ্য রঙ-বিশিষ্ট। তোমরা বলিতে পার, ঐ সকল পাতায় ত পত্রহরিৎ থাকে না, তাহা হইলে ঐ সকল পাতায় উদ্ভিদের খাত কিরূপে প্রস্তুত হয় ? এই সকল পাতায় অহ্য রঙের রস অধিক পরিমাণে সঞ্চিত থাকে বলিয়াই পাতার সর্ভ রঙকে ঢাকিয়ারাখে। এই সকল পাতাডেও পত্রহরিৎ আছে এবং উহাদের মধাও উদ্ভিদের খাত প্রস্তুত হইতেছে। অবশ্র, এমন অনেক রঙিন পাতার উদ্ভিদ আছে, যাহাদের পাতায় পত্রহিৎ আদে না। ইহারাইচাদের জন্তু থাত প্রস্তুত ক্রিতে পারে না, ইহারাইচাদের জন্তু থাত প্রস্তুত ক্রিতে পারে না, ইহারাক্ষা পাছ হইতে খাত চরি ক্রিয়াথাকে।

উদ্ধিদের জীবনধারণের জন্ম জলের প্রয়োজনীয়তাও কত বেশী, তাহা তোমরা ব্যিতে পারিয়াছ। ইহা না থাকিলে কৈশিক মূলগুলি তরল অবস্থায় থাতের উপাদানগুলি গ্রহণ করিয়া উদ্বিদের শরীরে পাঠাইতে পারিত না। ইহা ছাড়া পাতার ও কাণ্ডের কোষের ভিতর যে প্রাণপদার্থ আছে উহা প্রচুর বাতিরেকে সঞ্জীবিত থাকিতে পারে না। ইহা ছাড়া কোষগুলিও শক্ত ও টান থাকিতে পারে না। কোষ-গুলির মধ্যে প্রচর পরিমাণে জল না থাকিলে গাছ নিৰ্জীব হইয়া পড়ে—ডালপালা মুসড়াইয়া যায়। এই জন্ম আমাদের মতই পানীয় হিসাবেও উদ্ভিদের জলের প্রয়োজন আছে। কৈশিক মূল হইতে নানা প্রকারের উপাদানের সহিত জল পাতার কোষগুলির আসিয়া জমা হয়। কিন্তু কোষগুলির মধ্যে উহা বেশীক্ষণ থাকিতে পারে না। উপাদনগুলিকে কোষ গুলির মধ্যে রাথিয়াই উহাকে সরিয়া পড়িতে হয়। কারণ, এক এক ফোঁটা জলের স্হিত খুব অল পরিমাণ খাজের উপাদান আসে ৷ এইরূপে অনবরত জল পাতার কোষের মধ্যে না আদিলে থাছের উপা-দানও ক্য আসিবে। সেই কারণে জলের গতি অকু রাপিবার জন্য জ্বলকে অনবরত বাহিরে চলিয়া যাইতে হুইবে। কোষগুলির জলধারণ শক্তির একটি সীমা আছে। পাতার মধো অনেক ছিদ্র আছে: ঐ সকল ছিদ্র বাতাসে পূর্ণ থাকে এবং বাতাসের সাহাযোই কোষের ভিতরে জল গুকাইয়া যায় ও বাঙ্গাকারে বাহির হট্য। যায়। এইরূপে মাটি ইইতে যে শিকড দিয়া স্থাণ্ডে ও কাণ্ড দিয়া পাতায় আসিতেছে, উহ। অনবরত পাতা হইতে বাষ্পাকারে বাহির হইয়া যাইতেছে। যথন মাটিতে প্রচুর পরিমাণে জল থাকে, তথন পাতা হইতে যে পরিমাণ গতিতে জল বাষ্পাকারে বাহির হইয়া যায়, ঐ পরিমাণ গতিতে জল মাটি হইতে কৈশিক মলের সাহায্যে তৎক্ষণাৎ পাতার কোষের মধ্যে আদিয়া পড়ে। উদ্ধিদেব খান্ত প্রস্তুত ও জীবন ধাৰণের জন্ম যে প্রিমাণ জলের প্ৰয়োজন তাহা অপেকা অনেক অধিক পরিমাণে জল উদ্ভিদের শরীরে প্রবেশ করে ও বাস্পাকারে বাহির হইয়া যায়। কিন্ত যথন গ্রীত্মের মাটি শুষ্ক হইয়া যায়. কিয়া কোনও কারণে শিকড়ের সহিত মাটির সম্বন্ধ কতকটা বিচ্ছিয় হঠমা যায়, তথন পাতা হইতে যে পরিমাণ ৰাপ্পাকারে বাহির হইয়া যায়, সেই পরিমাণ জল মাটী চইতে পাতায় আসিয়। পৌছিতে পারে না। ফলে গাছ

শুকাইয়া যায় এবং জলাশুবে মরিয়া থায়। জল যে কেবল বাস্পাকারেই বৃক্ষ হইতে বাহির হইয়া যায় তাহা নহে, অর্দ্ধরণেও বাহির হইয়া যায়।

অনেক সময় রাসায়নিক পরীক্ষা করিয়া দেখা যায় যে. যে যে উপাদানে উদ্ভিদের দেহ গঠিত অর্থাৎ যে বে উপাদান উদ্ভিদের খান্ত প্রস্তুতের জন্য প্রয়োজন, তাহা পরীক্ষিত মাটিজে প্রচর পরিমাণে বর্ত্তমান আছে কিছ তথাপি উত্তিদ উহা গ্রহণ করিতে পারে না। কারণ, উদ্ভিদের প্রয়োজনীয় উপাদানগুলি দহিত উহাদের গ্রহণের উপযোগী গণিত অবস্থায় नाहे। विश्वविद्यार्गत वह व्यक्तमहात्मत करण काना গিয়াছে যে, উদ্ভিদের পুষ্টি ও বৃদ্ধির জন্য মাটি হইতে যে সকল উপাদানের দরকার তাহা মাটিতে √প্রচুর পরিমাণে আছে। কিন্তু উহাদের কয়েকটি কোন√কারণ বশত: উদ্বিদ সহজে ও শীঘ্র গ্রহণ করিতে পারে না। সেই জনা কোন কোন উপাদান উদ্ভিদ মাটা হইতে কম লইতে পারে, তাহার বহু পরীকা হইয়াছে। ইহা বিভিন্ন প্রকারের উদ্ভিদ ও প্রকার মাটির প্রকৃতির তারতমোবউপর নির্ভর করে দেখা গিয়াছে, মাটি সাধারণতঃ যবক্ষারজান, ফক্রাস উদ্দের প্রয়োজন ও পটাশ (ক্ষার) পরিমিত মাত্রায় সরবরাহ করিতে পারে না । এইঞ্জুই আমাদের খাত্যশস্ত ও অন্যান্য যে সকল গাছ-পালা আমরা রোপণ করি উহাদের থাতের জন্য মাটিতে সার প্রয়োগের দ্বারা ঐ তিনটি উপাদান দিয়া উহাদের প্রয়োজন মিটাইতে হয়। প্রধানত: উপরি উক্ত তিনটি উপাদানের সংমিশ্রণে যাবতীয় রাসায়নিক সার প্রস্তুত হইয়া থাকে।

এই অত্যাবশুক তিনটি উপাদান মোটাম্ট কি কি কাজে লাগে, তাহা তোমরা মনে করিয়া রাধ। কারণ, তাহা হইলে তোমাদের বাগানের গাছপালার কথন কি উপাদানের দরুকার, ডোমরা অনায়াসে বুঝিতে পারিবে এবং তোমাদিগকে জমিতে সার প্রয়োগের প্রয়োজনীয়তার কথা যথন বলিব, তখন তোমাদের তাহা বুঝিবার কট হইবে না।

যবক্ষারজান (Nitrogen)—উদ্ভিদের শরীর গঠনের জনা বিশেব প্রয়োজনীয়। ইহার দারা উদ্ভিদ বৃদ্ধিলাভ করে এবং কাণ্ড ও পাতাগুলি সভেজ হয়। এই উপাদানের অভাব হইলে উদ্ভিদ্ কৃদ্রকায়, বিবর্গ (হল্দে) ও হর্মল হইয়া পড়ে।

প্রস্কারক (Phosphorous acid)—উদ্ভিদ্ধে দৃঢ় ও বলশানী হইতে হইলে এই উপাদানের বিশেষ প্রয়োজন।

পজক (Potassium) – উদ্ভিদের দেছগঠনে ইহা বিশেষ কার্যাকরী। ফল ও ম্লের জনা ইহা খুবই সারবান।

উপরি উক্ত তিনটি উপাদান ছাড়া গাছের খান্তের জন্য কথনও কথনও জমিতে চূপ প্রয়োগ করিতে হয়।
ইহাও উদ্ভিদের পকে উপকারী। ইহার প্রভাবে
মাটিতে বর্ত্তমান জৈবিক পদার্গগুলি সহজে পচিয়া যায়।
অমুধুক্ত মাটিতে ইহার প্রয়োগ একান্ত দরকার।
মাটিতে যে সকল কটাণু বর্ত্তমান থাকিয়া উদ্ভিদের
থাজন্তব্য প্রস্তুত্ত করে, সেই সকল কটাণ্ অমুযুক্ত

বাসস্থান, অভ্যাস, কচি খাছাপ্রভৃতি বিষয়ে উদ্ভিদেরা অনেকটা আমাদের মত। বিভিন্ন প্রকাবের উদ্ভিদের বিভিন্ন রকমের বাসস্থান, আবহা ওয়া, খান্ত প্রভৃতির দরকার হয় অর্থাৎ একই স্থানে একই জমিতে সকল প্রকার উদ্ভিদ বৰ্দ্ধিত হইতে আমাদের মধ্যে শীতপ্রধান দেশের লোকদিগকে যদি গ্রীয় প্রধান দেশে আসিয়া থাকিতে হয়. হটলে তাহাবা সাধারণত: ক্বম ও তুর্বল হইয়া পড়ে, সেইক্রপ শীতপ্রধান দেশের উদ্বিদ গ্রীষ্মপ্রধান দেশে দম্পূর্ণ পুষ্টিলাভ করিতে পারে না। আবার ঠিক আমাদের মত উদ্ধিদের মধ্যে বড় লোক ও গরীব লোক আছে। আমাদের কোন বড়লোকের ছেলেকে যদি বাধ্য হইয়া ভাহার প্রাদাদের ও প্রচর আহার্যোর পরিবর্ত্তে দরিদ্রের ঘরে বাস করিয়া দরিদ্রের মত ডাল ভাত থাইতে হয়, স্বভাবত:ই তাহার নিজেক হইয়া যাইবার সজ্ঞাবন থাকে। সেইরূপ কোনও কোনও উদ্ভিদের জন্য তাহার বাসস্থান পরিষ্কার পরিচ্ছন্ন হওয়া ও মাটিতে প্রচর পরিমাণে খাল্পের উপাদান থাকা প্রয়োজন। উহার পরিবর্তে উহাদিগকে যদি জঙ্গণ স্থানে ও "দরিদ্র" মাটিতে বাস করিতে হয়, উহারা

সবল ও স্কৃত্থাকে না। ইছা তোমরা জান যে, ভিন্ন ভিন্ন ঋতৃতে ভিন্ন ভিন্ন উদ্ভিদের জন্ম হয় ও উহার। সেই ঋতৃতেই কেবল পৃষ্ট ও বন্ধিত হইতে পারে বংসরের সকল সময়েই ধান বা পাট উংপন্ন করা ঘাইতে পারে না। কিন্তু ঈশরের অলুগ্রাহে প্রাণীদিগের উপকারের জন্ম সকল প্রকার জমি, আবহাওয়া ইত্যাদির উপযোগী বিভিন্ন প্রকার উদ্ভিদের সৃষ্টি হইয়াছে।

এখন ভোমাদিগকে নিম্নিখিত বিষয়গুলি মনে রাখিতে বলি—

- >। উদ্ভিদের প্রাণ মাছে; আমাদের স্থায়ই উহাদের নিঃশাস-প্রশাস ও পাতের প্রয়োজন হয়।
- ২ উদ্বিদের জীবনধারণের জন্ম বাতাস, ঋল ও আলো (তাপের) প্রয়োজন।
- ত। উদ্ভিদ মাটি হ্ইতে যে সকল খাথের উপাদান সংগ্রহ করে, তাহার জনা মাটি গুব নরম ও আলগা পাকা ও মাটিতে রসের (জলের) প্রাচুর্গা থাকা দরকার
- ৪। পাতাতেই উদ্ভিদের প্রধান থাগ্য স্থোর আলোকের সাহাযো প্রস্তুত হয়। সেইজনা আওতায় বা ছায়া যুক্ত জায়গায় উহাদের থাগ্য প্রস্তুত করিতে বাাঘাত হয়।
- ৫। শিক্ড দিয়াই উঙিদ মাটী হইতে তরল

  অবস্থায় থাছের উপাদান সংগ্রহ করে।

  সেইজয়্প

  শিক্ডগুলি যাহাতে অক্ষত অবস্থায় থাকে সেই দিকে

  দৃষ্টি রাথিতে হইবে।
- ৬। গ্রীমের দিনে বা মাটা উত্তপ্ত চ্ইলে মাটাতে জল প্রয়োগের প্রয়োজন হয়।
- ৭। উদ্ভিদেব আকৃতি ও অবস্থা দেথিয়া মাটীতে রাসায়নিক সার প্রয়োগের ব্যবস্থা করিতে হয়।
- ৮। মাটীতে লবণের অংশ বেশী থাকিলে উদ্ভিদ ও মাটীর রস অধিক লবণাক্ত হইয়া যায়; উদ্ভিদ প্রয়োজন অনুসারে তাহার অপেক্ষাকৃত তরল রসের মারা মাটীর রস ক্রত গতিতে টানিয়া লইতে পারে না
  - ৯। রাত্তে শাস-প্রখাসের ক্রিয়া অধিক হয়।



# সেকালের মাছ

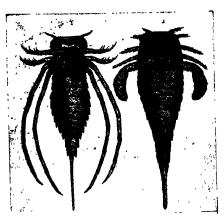
গেকালের কওকগুলি জীবজন্তু কথা পুলের তোমাদের কাছে বলা হুইয়াছে। তাহারা এখন আর বেশীর ভাগই পৃথিবীতে বাচিয়া নাই। ধাহারা বাচিয়া আছে, তাহাদেরও প্রের আকার-প্রকার সম্পূর্ণকপ বদ্লাইয়া গিয়াছে।

এমনভাবে বদলাইয়া গিয়াছে যে. তাহাদের সহিত তাহাদের পূর্ব-পুক্ষের কোন ও মিল নাই। পৃথিৱী নানাগুগে নানারূপ স্তরে বিভক্ত হইয়া অবশেষে বর্তমান আকার ধারণ করিয়াছে, দেকধা তোমরা জান। এক এক যুগে এক এক স্তর্বিভাবে এক এক জাতীয় প্রাণীর উদ্ভব হইয়াছিল। পণ্ডিতেরা পৃথিবীর এই সব যুগবিভাগের নানারূপ নাম দিয়াছেন। একটি দ্গেব নাম সিল্রিয়াস বা मिल्डिय । आठीन जिल्हान मिल्डाम (Siluras) नात्य এক জাতি ছিল। তাহারা যে অঞ্জলে বাস করিত তাহাব নাম ছিল সিলুবির। ঐ অঞ্চলের মাটির নীচে যে মৃত্তিক। স্তর পাওবা গিয়াছে তাহার খনজ প্রায় ২০,০০০ দিট। এই স্তরের মাটির মত মাটি যে যে স্থানে পাওয়া গিয়াছে তাহাদেরই নাম দেওয়া হইয়াছে निनुतिय युश (The Silurian age) । ज्ञाबिदानना এযুগের মাটির উপর ও নীচের ছুইটি নাম দিয়াছেন। একটির নাম দিয়াছেন উর্দ্ধ বা উপরের স্তর(Unper Silurian) आत बक्ति नाम नियाहन निम छव (Lower Silurian) বা ওডোভিদিয়ান (Ordovician) ।এই সিশুরিয়ান স্তর গড়িতে লাগিয়াছিল প্রায় ত্ৰত, ০০০০০ বংসর আর এই সিলুরিনান স্পের অভিষ ছিল ৪০,০০০,০০০ বংসর !

তোমাদেব কাছে টিলোবিট (Trilohites)-জাতীয় প্রাণীর কণা পূর্বে বলা হইয়াডে। জামরা সিপুরিয়ান দ্গের স্তরে জনেক প্রকার

জনজ প্রাণীর অভি ও কল্পালের চি উভরিপটেরি৬ পাই। এযুগের গুরুটা চুণা পাথরে (Lime stone) গঠিত। এসময়কাব প্রাণীদের আকার ছিল নান। অন্তত রকমেন। এক এক রকম প্রাণী ছিল তাহাদিগকে বলিত ইউরিপটেরিড (Eurypterid) বা টেবিগোটাস (Pterygotus), ষ্টাইলোনারাম (Stylonurous) এইরূপ। এক একটির আকার ছিল চার পাচ ঘিট। আর আটটি করিয়া থাকিত পা। টেরিগোটাদের কম্বাল-চিচ্চ হইতে দেখা বায় যে, উহার। সাত ফিট পর্যান্ত লম্বা হইত। এসময়েই আমরা মাছের দেখা পাই। প্রণিজগতে একটা নৃতন যুগের ও নৃতন শীৰনেব আবিভাব হইল। প্রাণিদেহে 'মেরুদণ্ডের' সৃষ্টি এসময় হইতেই হয়। তোমরা সিলুরিয় বুগের কথা বিশেষ করিয়া মনে तांबिटव এই कन्न त्य. এই সময় इटेट उरे 'सिक्न छी' প্রাণীর উৎপত্তি হইয়াছিল। এজনা স্ষ্টির মধ্যে একটা পরিবর্ত্তন আদিল। মেরুদণ্ডী প্রাণীরা ক্রমে ক্রমে অসাধারণ উন্নতি লাভ করিতে

মাছের কর্ম লাগিল, আর যে সব প্রাণীর মেকদণ্ড নাই তাহারা আন্তে আন্তে লোপ পাইতে লাগিল। নানারকমের অস্কৃত আকারের মাছ আমরা এবুগের উর্দ্ধ হুরে দেখিতে পাই। একটির নাম গিণা-



(২) ষ্টিলোনার: দ (২) ইউরিপটেরাস (লাস্পিস্ (Cipalaspis)। :ইহালের মুখট। ছু? মত, চোথ ডুইটি ছিল মাপার মধেখানে।



**সিপালা**সপিস

আর এক রকমের মাছ ছিল তার মাথ ট।
বাকানো এবং শরীরটা গোলগাল; ইংকে বলিত
টেংগাস্পিস্ (Pteraspis)। এই
টেরাস্পিস্ টেরাস্পিসের অন্তরপ ড্রিপানাস্পিস্
ডিপানাস্পিস্ (Drepanaspis)। উত্তর
জাঝেনির একটি পাহাড়ের কোলে ড্রিপানাস্পিসের
কলানিছ পাওয়া গিয়াছে।

সিলুরিয়ান বুগের পরের রুগের নাম ডিভোনিয়ান (Devonian)। এ যুগের মাছেরাই ছিল প্রধান প্রাণী। ভূতত্ত্ববিদেরা ইংলাাণ্ডের বর্ত্তনান ডিভনসায়ারে

মাটির নীচে যে অতি পুরাণ লাল পাথরে গঠিত স্তর-বিজ্ঞানের পরিচয় পাইয়াছেন, তাহারই নাম দিয়াছেন

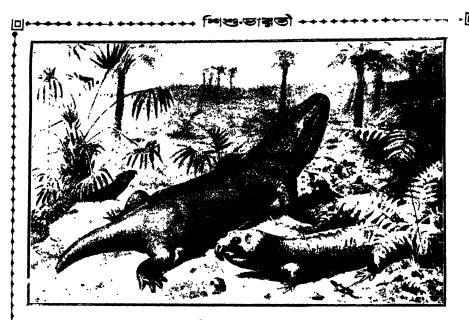


ডিপোনাস্পিস্
ডিভোনিয়ান যুগ। এ যুগের পরিনাণ **হইবে**৪৫,০•০,০০০ বংসর। আর ইহা গড়িয়া উঠিতে
লাগিয়াছিল ৩৩৹,০০০,০০০ বংসর।

ডিভোনিয়ান সূগে মাছের বাশ অংসাধারণরূপে বৃদ্ধি পাইয়াছিল। তাহাদের আঞ্তি প্রকৃতির মধ্যেও অনেক কিছু পরিবর্তন ঘটিয়াছিল।

তেরিকণ স্কান্ত (I'm), দাত এ সকলের স্টে হল্যা আকারের অনেকটা বলল হইল। হাঙ্গরের জায় তীবন প্রানীর আবিখান হলন, তাহাদের তীক্ষ বড় বড় দাত, প্রকাশ্ত আকার হল দিকে বড় বড় কানকো, খাল্যল এ স্বের উদ্ব হইল। ঐ তরে টেরিক্লীস্ (I'midhths) নামে এক অস্কুত রক্ষের মাছের কঙ্কাল চিক্ত দেখা যায়। ইহাদের শ্রীরটা কচ্চপের আবর্বের মত একটা কঠিন আব্রুণী দিয়া ঢাকা ছিল।

পেকালের একটি রাক্ষ্যে মাছের নাম কক্ষিথাস (('oco-ten-)। এই মাছের আকার ছিল ২০।২৫
কিট্লম্য। এ বাছ আর নাই,
কক্ষ্যাস্তবে ইহার বংশধরেবা ভিন্ন ভিন্ন
আকারের আছে। উংদিগকে উভচর জীব (Amphibians) বলা ঘাইতে পারে। ইহাদের আকার স্বীস্প জাতীয় প্রাণীর অমুক্রপ—বেমন



ষ্টিগোকেদেলস্



*লেবিন্দ্রো*ডো**ণ্টস** 

#### अकादमक जाड

কার্কোনিদারাস্ (Carboniferous) যথের তর পুথিবীর সব জায়গাতেই পেথিতে পাওয়া যায়।

পুথিবার স্ব জায়গাতেই পেথিতে পাওয়া যায়।

কোণাও জন্ন পরিমাণে, কোপাও
কাবোনিকারাস জনেকটা স্থান জুড়িয়া। এই ভাবে
সর্বাতই কার্বোনিকারাস্ গুগের স্তর-বিভাসের চিহ্ন
দেখিতে পাই। এ যুগের স্তর-বিভাসের মধ্যে
আমরা ছইটি প্রধান বিশেষহ দেখিয়া থাকি।
(১) প্রবালের মত প্রাণীব বারা গঠিত সামুক্তিক স্তর,
(২) বেলে পাথর এবং শ্রেট পাথরে গঠিত স্তরবিভাস। এই শ্রেণীর স্তর বেশীর ভাগ হদের
জলের মধ্যে কিংবা পুক্র বা দীবির অগভীর জলের
নীচে পাওয়া যায়। এ যুগের গুরের মধ্যেই পাথুরে
করলাও লোহার স্তর পাওয়া গিয়াছে। মানুষের
সভাতার ও উরতির ইতিহাসে কারোনিকারাস গ্র

এ সন্থে প্রাণিজগতে অনেক কিছু পরিবন্তন হট্যাছিল। এ গুগের স্তর-বিভাসের মধ্যে যে সকল প্রাণীর কন্ধাল চিচ্চ পাওয়া গিয়াছে প্রেনিটোডোটিশ নে সকলের মধ্যে লেরিন্দ্রো-ডোটেস-এর (Labry inthrodonts) নাম উল্লেখ-যোগ্য। এ সময়ে উভয়চর জীবের প্রধান্ত ইইয়াছিল। ডিভোনিয়ান গগে যেমন মাচ, জুরাসিক্ (Jurasic) গুগে যেমন সরীস্পের, তেমনি এই সময়ে উভচর জীবেরাই পৃথিবীতে প্রাধান্ত শাভ করে।

লেরিন্দোডোন্টসদের দাতের গঠন ছিল বিচিত্র রকমের। ইহারাই স্টির,প্রথম উভচর জীব। জবে ও স্থলে উভয় স্থানেই ইহার। বাস করিত। ইহাদের শরীর ছিল লম্বা, অঙ্গ-প্রতাঙ্গ ছিল প্রস্থা। ইহাদের আকার সচরাচর আট দিউ ইইত। দেখিতে অনেকটা কুমীরের মত ছিল। লেরিন্দোডোন্টসরা নদীতে বাস করিত এবং বোধ হয় মাচ থাইয়া বাচিত।

এই অঙ্গারজনক স্তরে, উদ্ভিদজগতে এক নৃতন
যুগের সৃষ্টি হুইয়াছিল তথন পৃথিবীর জনেকটা
স্থান জুড়িয়া নিবিড় বন ছিল। সেই বনে আকাশ
ছোঁয়া তক্তশ্রেণী শাখা-প্রশাখায় বেড়িয়া চারিদিক
অক্ষকার করিয়া থাকিত। এই সব বিকৃত বনভূমিই
লক্ষ্পটো বংসর পরে ধ্বংসগীলার মধ্য দিয়া পাথুরে

কয়লার স্টি করিয়াছে। বর্তমান দুগে পাপুরে কয়লার প্রয়োজনীয়তা যে কভ বেশী, তাহাত



ক ক ষ্টিয়াস

তোমরা প্রতিদিনই দেখিতে পাইতেছ। কাপোনি-ফারাস বা অঙ্গারজনক যুগের অস্তিত্ব ছিল ৮০,০০০,০০০ বৎসর, আর ইহার আরম্ভ হয় ২৮৫,০০০,০০০ বংসর পুরু হইতে।

এই অঙ্গারজনক স্তরের পর বজী কালের নাম পার মিয়ান (Permian) যুগ। এ সময়ের স্তর্রবিভাগ মধ্যে লাল বেলে পাথর এবং চুণা পাথরই বেশীর ভাগ দেখা ষায়। অঙ্গারজনক স্তরে যে সকল প্রাণী জীবিত ছিল এ সময়েও তাংরা বিভমান ছিল। উভয়চর জীবের সংখ্যা এ সময়ে থুব বাড়িয়া গিয়াছিল। এ সময়ের শেষের দিকে টিলোবিউদের বংশ লোপ পায়। আর ভাহাদের সামান্ত কঙ্কাল-চিক্তও দেখা যায় না।

পৃথিবীর ইভিহাসে এ সময়ে একটা পরিবর্ত্তন
দেখা গিরাছিল। সে পরিবর্ত্তন শুধু প্রাকৃতিক
জগতে নয়, জীব-জগতেও বটে। বয়া, ভূমিকম্প
এবং আয়েয়গিরির গলিত ধাতুনিঃস্রাবে অনেক বড়
বড় দেশ ঢাকা পড়িয়়া গিয়াছিল। অনেক ভৃথপ্তের
আকারের পরিবর্ত্তন হইয়াছিল। আয়েয়গিরির
ধাতুনিঃস্রাবে অনেক স্থান একেবারে ধ্বংস
হইয়াছিল। এই ভাবে বহু প্রাণী নির্দিনের জয়্ম
পৃথিবীর বুক হইতে লুপ্ত হইয়া গিয়াছিল। এক য়য়
আর মাসে। এই ধ্বংসের পর আবার নৃতন
জগতের স্পষ্ট ইইল, ভাহাতে আবার নৃতন
জগতের স্পষ্ট ইইল, ভাহাতে আবার নৃতন
জগিবের আবির্ভাব দেখা গেল।

# 

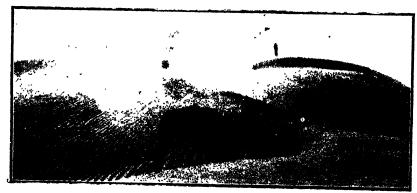


### আরব

এসিয়ার দক্ষিণ পশ্চিমাংশে আরব উপরীপ। আরব দেশের পরিমাণ ফল ১, ০০০, ০০০ বর্গ ফাইল। লোকসংখা প্রায়

किए मुखाब भव स्पिटिस स्थापन মৰ্ত্তানও আছে। ভাবে অনেক পাহাড়ও আরবের সমৃদ্রতট প্র্যাস্ত চলিয়া গিয়াছে। এক দিকে

লক্ষ। ইহার দৈর্ঘা প্রায় ১,৫০০ মাইল এবং প্রস্থ প্রায় ৭০০ মাইল। সীমাও সাধারণ থোফ্রিকার সাহারা মরভূমির সঙ্গে আরব দেশের অনেকটা সাদৃগ্র আছে। সমুদ্রতট্যেথা হইতে ইহার উচ্চতা সাগর, অপর দিকে পাহাড়, এই চইটি প্রাক্ত তিক সীমার ভিতর অনেকটা স্থান ছুড়িয়া বালুকা-পূর্ণ মালভূমি অবস্থিত। আরবকে মক্ষভূমির দেশ বলিলেই ইহার প্রকৃত বর্ণনা হুইল, এইরূপ বলা ঘাইতে পারে।



### আরবের মকভূমি

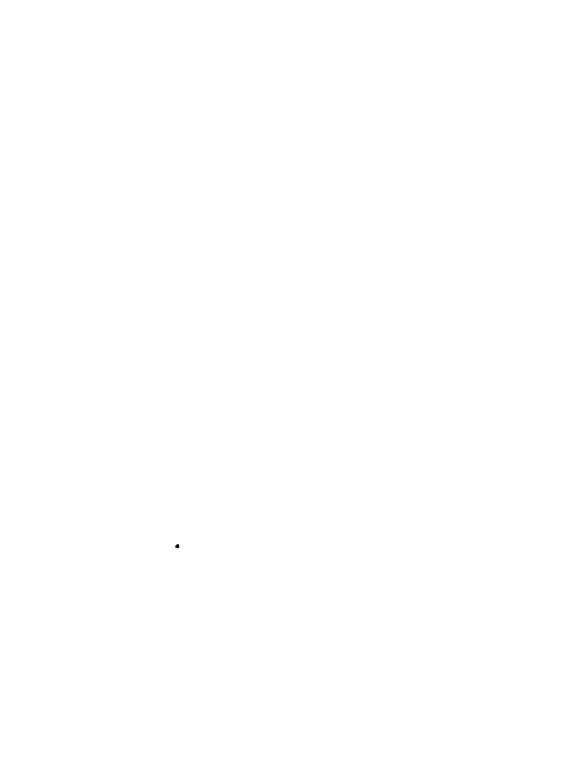
প্রায় ৩,০০০ হাজাব ফিট্। এদেশের মধান্থিত ভূ-ভাগের চারিদিক বেড়িয়া অনেক মরু-ভূমি। এ সকল মরুভূমির বুকে অনেক

একদিন আরবের মরুভূমির বৃকে অনুতের নির্ম্ব বহাইয়া দিয়া এক মহাপুরুষের জন্ম হইয়াছিন, তাঁহার নাম হজরত মুহুলদ। এই মহাপুরুষের প্রবর্তিত ইদ্লাম

Σ¥



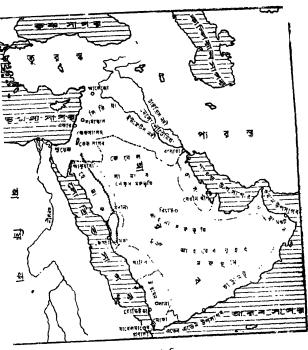
1142-



धर्म পृथिवीत नानारम्य বিস্তত রহিয়াছে। অতীত কালে আরব দেশে অনেক বড বড বিদান वाक्तित बना श्रेशिशि। জাচাদের রচিত রসায়ন. গণিত জ্যোতিবিজ্ঞান. বিষয়ক এবং ভুগোল পৃথিবীর আজ জানী লোকেরা আদর করিতেছেন। মুসলমান भवा এएएएनत लाक-দিগকে এক ধর্ম ও এক-জাতি করিয়া দিয়াছে। बारहेब फिक फिशा - 9-দেশের শাসননীতি এক পৃথিবী জুড়িয়া ন্য ছ | যথন মহাসমর বাধিয়া-ছিল, তথন তুকীরা আরবের পশ্চিম দিক এবং পূৰ্ম্ব দিক আপনা-দের অধীনে আনিয়া-ছিল। আবার দক্ষিণ-প্ৰকৃদিকের প্রদেশটা ইংরাজ-রাজের কর্ত্তরা-ধীন থাকিয়াও স্বাধীন

ছিল। এডেনের নাম তোমরা জান। এডেন বন্দর টি হয়া জাহাজ বিলাত যায়। এই এডেন বন্দরটি আরব দেশের দক্ষিণ-পশ্চিমদিকে অবস্থিত। এডেন বন্দর উংরাজের অধীন। আরবের মধ্যস্থিত দেশ-গুলি সেক্ উপাধিধারী আরবদের হাতে। ই হার সেক্, আমীর ও ইমাম এইসব উপাধিতে পরিচিত। লোহিত সাগরের পূর্কপারে ছোট হেজাজ (Hedjux) রাজ্য। হেজাজ প্রদেশের লোকসংখ্য প্রায় দশণক হইবে। হেজাজ ধোড়শ শতাকীতে তুরকের হাতে আসে. এবং ১৯১৬ খুঠানের

হেলাল নালা নতেত্ব মাস পর্যান্ত তুকী সামাজ্যের অন্তর্ভুক ছিল। মহাসমরের প্রথম হই বংসর ভুকীরা আরবদের উপর ভয়ানক অভাগের ও উ: পীড়ন করিতে থাকে এমন কি, মুসলমানদের পূণা-তীর্থ মকানগরীর উপরও যথন গোলাবর্ধণ করিতে ভালার ইতত্তঃ করে নাই, তথন হেলাজের



### আরবের মানচিত্র

লোকেরা তুকীর বিক্ষাক বিদ্রোহ করিয়া এক নৃতন সাধীন রাজ্যের প্রতিষ্ঠা করিল। চজরত মৃহত্মদের বংশধর মকার প্রধানতম বাক্তি এল্ হোসেন ইবন্ আলি (El Hussein Ibn Ali) এই বিদ্রোহের নেতা ছিলেন। এই নবগঠিত রাজ্যের স্বাধীনতা মিত্রশক্তি স্থীকার করিয়া লইলেন। তুরস্কের সহিত মৃদ্ধ করিবার সময় ইংরাজ-রাজ হেজাজের অধিবাসিগণকে অর্থ দিয়া, অস্ত্র দিয়া এবং নানার্কপে সাহায্য করিয়া এই স্বাধীনতা-মৃদ্ধে জয়ী হইবার পক্ষে সহায় হইয়াছিলেন। আন্তর্জাতিক সন্মেলন (League of Nations) এই নৃতন রাজ্যের সীমা নির্কেশ করিয়া দিয়াছেন। মুসলমানদের হইটি প্রধান তীর্থ মকা ও মদিনা, হেজাজ রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত।

আধব গ্রীমপ্রধান দেশ। চারিদিকে বন্ধুর পর্বত। কি উচ্চভূমি, কি মালভূমি, কি নিমভূমি সমুদয়ই অন্তর্ম্বর। মাঝে মাঝে থেকুর গাছের গারি দেখিতে

## শিশুভারতী 🗝

পাওয়া যায়। এই খেজুর গাছ এবং স্থানে স্থানে নারিকেল গাছট এদেশের উদ্বিদের আববের জলবায় সর্জন্তীর পরিচায়ক। এদেশে এমন ও শক্তমম্পনি আনক জায়গা আছে যেথানে বংসরে একবারের বেনী বৃষ্টি হয়না। বনভূমি অতি বিরল। কোশের পর জোশ চলিয়া গেলেও কোথাও তেমন স্ফালির দন্ন গিলবেনা। মারে মাবে চই একটা পেছর গাছ দেখিতে পাওয়া যায়। চারিদিকে ধূ-ধূপূ

মাথে নীচু জমিতে একপ্রকার সাময়িক থাসের মত উদ্ভিদের ওন হয়। গরু, বাছুর, উট প্রভৃতি গুহপালিত জন্তরা তাহা থাইয়া বাঁচে।



আরবের সেক্



থেজুর গাছে থেজুর ফলিয়াছে



ব্যু

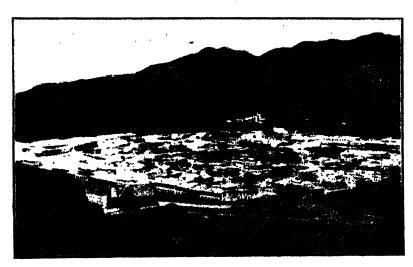
বালুকারাশি। স্থানে স্থানে ছই একটা মর্নভানও দেখা যায় গোচারং ভূমি বলিয়া এখানে কিছু নাই, মাঝে থেজুর এথানকার ধ্বধান থায়। তা ছাড় যব, গম, ভূটা তরমুদ্দ এসকলও জন্মে

ফল অনেক রকমের হয় ৷ কোথা ও কোথা ও আবার

গৃহপালিত জীবজন্তর মধ্যে গক, বোড়া, ভেড়া, ধান, তামাক, কনি প্রভৃতিরও চাষবাস হইয়। থাকে। উট, গাধা, থচনে প্রভৃতি প্রধান। আরবদেশীয়



আরবের নারিকেল কুঞ্চ



এডেন বন্দর

—তা ছাড়া, কেবলই বিশাল মকভূমির দেশ।

আরবের দক্ষিণ-পশ্চিম অংশই কৃষিকার্য্যের উপযোগী । অর্থের খ্যাতি পৃথিবীর সর্বাত্র প্রচলিত। এইরূপ ক্ষত-গামী অব পৃথিবীতে নাই। বঞ্চপভদের মধ্যে

### শিশু-ভাৰতী

সিংহ, ব্যান্ত, হায়েনা বা তরক্ষু, শৃগাল প্রভৃতি হিংল্র জন্ম প্রধান। মরগুনের কাছে অনেক অষ্ট্রীচ পाथी (नशा याग्र। थनिक जुना जित्र मध्या शक्तक, লবণ, পেট্রোলিয়ম এ সকল প্রচুর পরিমাণে মিলে।

ধ্বংস হইবার পর একদল ইছদি আরবদেশে আসিয়া বসবাস করিতে থাকে। ভাহারা আরবদেশের লোকের কাছে দর্বপ্রথমে একেশ্বরবাদের কথা প্রচার করিয়া



আরবের মাওরা পুক্ষ আরবদেশের প্রাচীন ইতিহাস ভাল করিয়া জানা যায়না। হজরত নুহথাদের জ্মের পুর্বের আরেবের



আরবের হামুমী ও কাথিরী পুরুষ লোকেরা পৌত্তলিক ছিল, তাহারা নানা দেব দেবীর পুঞ্জা করিত। ৭০ খৃষ্টাব্দে জেরুজালেম Jerusalem



ছিল। এইভাবে খৃষ্টধর্মের মূলতত্ত্ব আরবে প্রচারিত হইয়াছিল। হজরত মুহম্মদের অসাধারণ প্রতিভাবলে একেশ্বরণাদের মূলমন্ত্র আরবের সব্বত্র প্রচারিত ২ইয়া তথাকার অধিবাসীদিগকে এক ধন্ম, এক নীতি, এক শিক্ষা ও আদশে উন্নত করিয়া এক অসাধারণ শক্তি-শালী জাতিতে পরিণত করিল। তাহার পর হজরত মুহমদের উত্তরাধিকারী থলিদারা

ইভিহাস একে একে সিরিয়া, মিশর ও উত্তব আণিকা জয় করেন এবং স্পেনদেশ স্বাধিকার করিয়া এক মুদলমান দামাজ্যের প্রতিষ্ঠা করেন। ১২৫৮ খুট্টাব্দে থলিফাদেব পতন ঘটে। পঞ্চদশ শতাকীতে স্পেন সাত্র'কা আরবদের হস্তচাত হয়। বোডশ শতাকীতে হেলাজ এবং জেমেন প্রদেশ (আরবের দক্ষিণ-পশ্চিমস্থিত হেজাজ ও এডেনের মধ্যবন্তী দেশ) তুকীদের হাতে আদে। আরবের অভাভ প্রদেশের উপরও স্থলতানের প্রভাব বিস্তৃত হয়, তবে সেটা নামমাত্র বলা যাইতে পারে।

#### ভাৰৰ

১৯২৫ খৃষ্টাব্দে ছেন্সাব্দের স্থলতান এল্ছোনে সিংহাসন ভ্যাগ করিতে বাধ্য হন। সে সময়ে নেজি-দের স্থলতান আজিজ ইবন্ সাউদ্ হেজিজের স্থলতান হইলেন। তাঁহার রাজধানী হইল রিয়াধ (Riyodh)। ইবন্ সাউদের অধিকারভুক্ত সব দেশ ক্যাটিকেই ইউরোপীয় শক্তিসমূহ স্বাধীন দেশ বলিয়া মানিয়া লইয়াভেন।

তোমরা আরবা উপস্থাদের গল্প পড়িয়া থাক। আলাদীনের আশ্চর্যা প্রদীপের কথা, আলিবাবা ও চল্লিশজন দস্তার গল্প প্রায় সকলেই জান। আরবা



ওমানী পুরুষ

উপভাসের গল্প আবার এক হাজার এক রাত্রির গল্প ( The thousand and one nights ) এ নামেও পরিচিত। আরব্য উপক্তাস আরব সাহিত্যের গৌরব। আজকাল পণ্ডিতেরা আরব্য উপভাসের এই গল্পগুলির উৎপত্তির মূল ইতিহাস কোণায়, তাহার অমুসন্ধান করিতে গিয়া আরব্য উপক্তাস জানিতে পারিয়াছেন যে, ইহার অনেক গল্প সংস্কৃত হুইতে পারসিক সাহিত্যে অন্দিত হুইয়াছিল, আরবদেশের লোকেরা আবার উহার উপর রং ক্লাইয়া আপনাদের ভাবাকে সমুদ্ধ করিয়াছে। ইউরোপে আরবা উপস্থাদের প্রথম প্রাচার হয় অষ্টাদশ শতান্ধীর প্রথম ভাগে। আরবা উপস্থাদের ফরাদী অম্থবাদ করেন আন্টোইন্গেলাগু (Antoin (Falland)। ১৮৪০ খুট্টান্দে ভাক্তার লেন সাহেব (I)r. E. W. I,ane) ইহার ইংরাজী অম্থবাদ প্রকাশ করেন। এই অম্থাদ প্রকাশ করিবার জন্ম ভাক্তার লেন্ কাইরো সহরের আরব অধিবাদীদের সঙ্গে অনেকদিন কাটাইয়া-ছিলেন।

আরব্য উপভাদের সৃষ্টি ইতিহাস এইরূপ:---



কোয়ারা ও এলবিনো পুরুষ
সেকালে শাহরিয়ার নামে এক স্থলতান ছিলেন,
তিনি প্রতিদিন রাজিতে এক একটি বিবাহ
করিতেন এবং পরের দিন প্রাতঃকালে ভাহার প্রাণদণ্ড করিতেন। এই ভাবে স্থনেক মহিলার প্রাণ
দিতে হইল। স্থলেমে স্থলতানের প্রধান উদ্ধীরের
কন্তঃ শাহারজাদীর সহিত স্থলতানের বিবাহ হইল।
শাহারজাদী বিবাহের রাজিতে স্থলতানকে একটি
গল্প বলিতে আরম্ভ করিলেন কিন্তু সে রাজিতে আর
ভাহা শেষ হইল না। শাহারজাদী গল্পটি এমন
স্থানে স্থালিয়া ছাড়িয়া দিলেন যে, স্থলভান
উহার শেষ পর্যান্ত শুনিবার ক্ষ্ম ভাঁহাকে

অমুরোধ করিলেন। কিন্তু গল্প আরু দেব হইল না।
এই ভাবে গল্প লোক প্রভাগে শাহারজাদীর প্রাণদণ্ড
দিনের পর দিন পিছাইয়া যাইতে লাগিল। গল



মক্তৃমির বেছ্ইন গুনিতে গুনিতে ক্রমে স্থলতান শাহারজাদীকে ভাল-বাসিয়া কেলিলেন, তাঁহার আর প্রাণদণ্ড হুইল না।

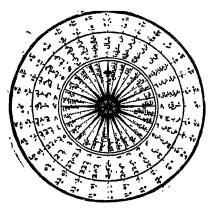


চুলকাটা মাথা ] চুল কাটাইবার প্রথা [ চুলগুদ্ধ মাথা পৃথিবীর প্রায় সব ভাষাতেই আরব্য উপস্থাসের অন্তবাদ হইয়াছে। বাঙ্গালা ভাষায়ও ইহার অনেক সংশ্বরণ আছে।

ভারত মহাসাগরের সে অংশটুকু, আরবদেশ ভারতবর্ধ এবং বেলুচিছানের মধ্যে প্রবেশ করিয়াছে তাহারই নাম আরব সাগর। আরব সাগর লোহিত সাগর (Red sea) এবং পারস্ত উপসাগর (Persian gulf) আরব সাগরেরই ছইটি শাখা। স্থ্যেক থাল খননের পর হইতে আরবদেশের বাণিজ্য আবার অনেকটা বাড়িয়া উঠিয়াছে।

আরবদেশের লোকেরা সাধারণ তাবে আরব
বিলয়া পরিচিত, দেশের নাম ও জাতির নাম এক।
কিন্তু ইহারা অনেক জাতি ও শ্রেণীতে বিভক্ত।
আরবেরা দেখিতে একহারা,
নাজবুত গড়ন, গায়ের রং বাদ্দি,
এবং মুথ, চোথ, নাক সবই বেশ মানানসই। ইহারা
কর্মাঠ, বৃদ্ধিমান, শিষ্টাচারী এবং প্রতিহিংসাপরাম্ধ।
অতিথি-অভাগতদিগকে সেবা ও যত্ন করা আরবজাতির স্বাভাবিক রীতি। তোমরা অনেকেই হয়ত
ববীক্ষনাথের এই কবিতাটি পড়িয়াছ—

ইহার চেয়ে হতেম যদি আরব বেছইন
চরণতলে বিশাল মরু দিগস্থে নিলীন।
এই বেছইনরা আরবের লোক। হর্দান্ত,
সাহলী, দক্ষ্য এবং গাধাবর জাতি বলিয়া ইহারা
পরিচিত। ইহারা সারা বংসর গৃহপালিত পশুপক্ষীও স্ত্রী-পুত্র লইয়া আজ এখানে, কাল
দেখানে, এই ভাবে উাবুতে তাবুতেই বাস



আরবদেশীয় কম্পাস করে। আরবেরা পূর্বে ব্যবসা-বাণিজ্ঞা করিত এখন আর তাহাদের ব্যবসা-বাণিজ্ঞা বলিয়া

কিছু নাই। ভাহাদের ব্যবসা-বাণিজা বর্ত্তমান সময়ে ইউরোপীয় বণিক্দের হাতে আসিয়া পড়িয়াছে।

আরবেরা অতি প্রাচীনকালে গ্রহ-নক্ষত্তের পূজা এবং বিবিধ দেবদেবীর আরাধনা করিত। মুসলমান ধর্ম আরবদিগকে নুতন মান্তব গড়িয়া তুলিয়াছে।



উট্রচালিত জলোতোলন যন্ত্র আরব দেশে স্থন্নি ও শিয়াএই ছুইটি প্রধান মুসলমান সম্প্রদায় ব্যতীত ওহাবি নামেও একটি সম্প্রদায় আছে। অষ্টাদশ শতাব্দীর শেষভাগে এই সম্প্রদায়ের

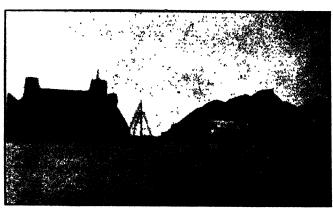
রাধীয় শক্তির উপরও
ইহাদের প্রভাব বিস্তৃত
হইয়া পড়িয়াছিল।
আরবী ভাষা পৃথিবীর মধ্যে একটি শ্রেষ্ঠ
ভাষা। এই ভাষা
শব্দ-সম্পদে উচ্চারণ
সোঠবে, কোমলতায়
এবং কবিত্বপূর্ণ ভাবে
ক্রন্থর্যাশালী। ইস্লাম
ধর্মের প্রচারের সবল
সঙ্গের প্রচারের সবল
সঙ্গের প্রচারের সবল

স্মষ্টি হয় এবং কিছু-দিনের জন্ত দেশের

মাত্র লিখিত ভাষারূপে পরিগণিত হইয়াছে। এক সময়ে ইহা দক্ষিণ স্পোন, সিসিলি দীপ, পূর্ব্ব এবং উত্তর আফ্রিকায় লিখিত ও ক্থিত ভাষা রূপে ব্যবহৃত হইত; এখনও কোন কোন স্থানে ছইয়া থাকে। যেধানে ইন্লাম ধর্ম প্রচারিত হইয়াছে, সেখানে ইহা শিক্ষিত সমাজের ভাষারূপে আদর পাইয়াচে।

হজরত মুহম্মদের গুভ আবিভাবে আরব সাহিত্য অতি ক্রুত উরতিলাভ করিয়াছে। মুহম্মদ বেভাবে জীবন যাপন করিতেন, যে সমুদ্য

থারব সাহিত্য উপদেশ দিতেন, সে সমুদয় পুণ্যবাণী তাঁহার শিশ্য মহাত্মা আবুবেকর স্যত্মে লিখিয়া রাথিয়াছিলেন। হজরত মুহম্মদ পরলোক করিলে পর আবৃবেকর প্রথম থালিফ বা লাসনকর্তা হইয়াছিলেন। তৃতীয় থালিফ ওথ্মান বা ওস্মান ইস্লাম ধর্মের পবিত্রতম গ্রন্থ কোরাণ সরিফ প্রকাশ করেন। মধা-যুগের বেশীর ভাগ ভূগোলই আরব-দের লিখিত। অষ্টম শতাব্দী পর্যান্ত আরবদেশে অনেক প্রসিদ্ধ ঐতিহাসিকদের জন্ম হইয়াছে। চিকিৎসা বিষয়ে এবং রুসায়ন বিজ্ঞানে আরবেরা এক সময়ে অত্যন্ত ক্লতিত্ব **দেখাইয়াছিলেন**। তাঁহারাই ইউরোপে বীজগণিতের প্রচলন করেন। বোগদাদ এবং করদোরায় (Cordora) মানমন্দির প্রতিষ্ঠা করিয়া আরবেরা গ্রহ-নক্ষত্র বিষয়ে বিশেষ-ভাবে আলোচনা করিতেন,এখনও তাঁহাদের রচিত জ্যোতিবিজ্ঞান বিষয়ক গ্রন্থসমূহ পৃথিবীর পণ্ডিত-সমাজের কাছে আদর পাইয়া আসিতেছে।



মস্বট

উপভাস, দৈত্যদানা, ভ্তপ্রেতের ও যাত্রিভার কৌতৃকজনক কাহিনী আরবদের বারা ইউরোপে প্রচারিত হইয়াছে। প্রতি বংসর পৃথিবীর নানা স্থান হইতে হাজারে হাজারে মুসলমান 'হজ' করিবার জন্ম হজরত মুহন্দদের জন্মভূমি মকানগরীতে গমন কবেন। মকা ও মদিনা এই সহর হুইটি আরব দেশের পশ্চিমভাগে অবস্থিত। মদিনা সহরে হুজরত মুহন্দের সমাধি-মন্দিব অবস্থিত। মকা ও মদিনা এ হুইটি সহরই হেজাজরাজ্য মধ্যে অবস্থিত। মকাবাতীরা সমুদ্রপথে জিদ্দা (Jidda) বন্দর হইয়া মকা বাইয়া পৌছেন।

আরব দেশে হেজাজ, তেহামা, ইমেন্, নেজ্দ এই কয়টি প্রধান ভাগে বিভক্ত। নেজ্দ আরবের বিস্তুত সক্ষুমির মধ্যে অবস্থিত। এথানকার সমন্ত্রান জগদিখাতে ও বত কুপদারা শোভিত এবং স্থাই জলদান। পরিপুর্ণ। আরবের লোকদের সমাধিভূমি মদি নাতে তীর্থযাত্রা করিয়া থাকে। এখন অধিকাংশ তীর্থ-যাত্রী রেলপণে মদিনায় গমন করিয়া থাকেন।

মকা একটি বালুকাময় উপত্যকার মধ্যে অবস্থিত
ইহার চারিদিকে অনেকগুলি ছোট ছোট পাহাড়
আছে। এথানকার অধিকাংশ বাড়ী প্রস্তরনির্দিত
এবং রান্তাঘাট বেশ প্রশস্ত। যাত্রীদের থাকিবার
জন্ম অনেক বাড়ী পাওয়া যায়। মান করিবার জন্ম
এথানে অনেক গুলি হাম্মাম বা স্লানাগার আছে।
এথানে ধান্দ্রিক যাত্রীগণেব দেখিবার উপযুক্ত অনেক
গুলি স্থান আছে। তাহার মধ্যে কাবানামক পরম
পর্বিত্র স্থানই বিশেষ উল্লেখযোগা। এই কাবায়



আরবেরা উদ্ভেব পিঠে চড়িয়া মরুভূমি পার ১ইতেছে

কাছে উট্ট অভান্ত জীব। ইহাবা ইহার পিঠে চড়িয়া মকভূমি উত্তীণ হয়। এজন্ম উট্টকে মকভূমির জাহাজ বলে। উট্টের ছধ, উট্টের মাংস ইহাদের অভান্ত প্রিয়। এদেশের সকলের চেয়ে উচ্চ পাহাড়ের উচ্চ চা হইভেছে, ৯,০০০ ইইভে ১০,০০০ ফিট।

জিদ্দা, মকা, মদিনা, মোচা, মন্ধট, রিয়াদ
. (নেজদের রাজধানী) এই কয়টি হইতেছে আবাব
দেশের প্রধান সহর ও বন্দর। জিদ্দা মকার বন্দর
কেননা, এই পথেই মকা-াত্রী মুদলমানেরা খাতায়াত
করেন। প্রতিবংদর লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ লোক হজরত
মুহস্পদেশ্ব জন্মভূমি মকানগ্রীতে এবং তাঁহার

সংগ-আসওমাদ নামক একট ক্বফ শিলা আছে—
যাত্রিগণ উহাকে চুছন বা স্পর্শ করিয়া কাবাব
চতুর্দিকে পরিভ্রমণ করেন। এই ক্বফ শিলার
উপরে কত ভক্তের অঞ্ধারা পতিত ইইতেছে—কত
পবিত্র স্থতি, ধর্মপ্রাণ মুসলমান তার্থ-যাত্রীর প্রাণে
আনন্দধারা বর্ষণ করে। ইহা ভিন্ন এখানে জম্জম্
নামক একটি কৃপ আছে। ইহার জ্বল অতি
পবিত্র ।

আরবদেশে রষ্টি প্রায় হয় না। লোহিত দাগরের তীরবর্তী হানে অতান্ত গ্রীয় অমূভূত হয়। আবার মুক্তুমি অঞ্জে দিনের বেলা যেমন গ্রম বোধ হয়, রাত্রিতে তেমনি অতাধিক শীত প্রিয়া গাকে।



# মালী বানর

(জাত্কের গল্প)

৬৬৩ পৃষ্ঠার পর

দে অনেক দিনের কথা। এক্ষদত ছিলেন বারাণদীর রাজা। এক্দিন কি জানি কি উপলক্ষে রাজা জোড়া এক উংদবের

খোষণা হলো ৷ ঢাক ঢোল আর বাশী ভেঁপু বাজিয়ে



লোকজনেরা উৎসবের কথা সকলকে জানিয়ে দিলো হৈ চৈ চীৎকার করে রাঞার লোকজনেরা উৎসবের কণা সকলকে জানিয়ে দিলো। উৎস্বের আনন্দে সকলের মন মেতে উঠ,লো। রাজধানীর শভ সব লোক দলে দলে চল্লো নগায়

ছাড়িগে—মাঠের শেষে গেপানে মেলা বসৈছে সে মেলায় যোগ দিতে। সকলে এক সাথে মিলে আনন্দ করবার এহ একটি দিন এসেছে, সেট। প্রাণ ভবে ভোগ করে নিতেইবে—সবাব মনে এমনি একটা ভাব জেগে উঠেছে! রঙ বেরঙের পোষাক পরে ছেলে বুড়ো, পুক্ষ নারী সকলে হাস্তে হাস্তে গল্ল কব্তে করতে নদীব সোতের মত ছুটে চলেছে বিশাল বিশ্বত সেই পোল্বরের মধ্যে সেই মেলাব জায়গায়।

এত সানন্দ, এত হাসি, এত গান-বাজনার মধ্যে কিন্তু একটি লোকের মধ্যে শুবু হাসি নেই, সে বেচারা বিষয় মনে চুপ করে বসে আছে। সে হচ্চে রাজার বাগানের মালী। সব কাজেই অবসর আছে, কিন্তু তার কাজেব অবসর কোথায়— ছুটি কোথায় 
 একদিন বাগানের গাছগুলিতে জল না দিলে বে, সব শুকিয়ে যাবে— মরে যাবে! মালী বেচারীর মনটা উৎসবে যোগ দিবার জন্তু বাাকুল হয়ে উঠেছিল। তারই সামনে রাজ্যের সব লোক ছুটে চলেছে, কিন্তু তার যে কোনো উপায়ই নেই, তাই মুখ্যানা মলিন করে কি ক্রা যায় বসে বসে সেই কথাই

### ++++ শিশুভ-ভারত<u>ী</u>

ভাব্ছিল। অনেকক্ষণ ভাব্তে ভাব্তে হঠাৎ একটা কথা তার মনে এল। তাই তো রাজার বাগানে যে একদল বানর রয়েছে। ইতারা ফলের দিনে পাকা মিষ্টি



সে বেচার। বিষয় মনে চুপ করে ভাবছে ফল, নয়তো অন্ত সময়ে গাছের কচি কচি নরম পাতা আর ফুল এই সব থেয়ে মহা আননেদ দিন কাটায়।



তার। স্থকেট রাজী হ'য়ে গেল
মালী তাদের কর্মনো কিছু বলে না। রাজাও কোন
আপত্তি করেন না। এই উপকারের বদলে নিশ্চয়ই

তার একটুকু কাজ এরা করে দেবে ৷ এদের <sup>†</sup> একদিনের কাজের ভার দিয়ে গেলে কেমন হয়! মালীর মুখে এইবার অরে অরে হাসি কুটে উঠলো। বানরদের কাছে গিয়ে তাদের রাজাকে ডেকে বল্লে-ভাই, আৰু রাজ্যের স্বাই মিলে আনন্দ বৈরিয়েছে; ভোমরাযদি এই একটি দিন আ<mark>মার</mark> হয়ে গাছগুলিতে জল দিয়ে দাও তে৷ আমিও পিয়ে এদের সঙ্গে জুট্তে পারি।" বানরের। মালীর দয়ায় স্থথে রয়েছে, তারা সহজেই রাজী হয়ে (शन। थुनी इरा मानी त्मरक खरक हनत्ना उँ९मरव যোগ দিবাব জন্ম সেই মেলার দিকে। যাবার সময় সে আবার বানরদের ডেকে বলে গেল,—"দেখ ভাই, কাজ যেন ঠিক মত হয়। ভূল কোরো ∖না যেন !" বানরেরা বল্লে—সে কি বন্ধু ! তা কি হয়, আমরা ঠিক তোমার কাজ করে রাখব। মালী খুব পুদী হয়ে চলে গেল।

বিকেল বেলা জল দেবার সময় হলো। বানরেরা জল দেবার জন্ম দলে দলেচামড়ার তৈয়ারী থলেভরে কাঁধে করে বাগানে এসে হাজির হলো। ভাল করে



দেখ ভাই, কাজ যেন ঠিক মত হয়
কাজ ক'রতে হবে তো ৷ বানরদের রাজা সকলকে
ডেকে বল্লে—দেখ, জল নষ্ট করা তো হবে না ৷

আমাদের এক কাজ করতে হবে। কাজেই.

না কেন, উপযুক্ত জ্ঞানের অভাবে ভারা যে কাঞ প্রত্যেকটি গাছের গোড়া খুঁড়ে শিকড় ভুলে নিয়ে করে বদে, তার ফলে সংসারে লাভের চেয়ে ক্ষতিই

দেখতে হবে কোন্-টাতে কতটা জলের দরকার। তবেই তে ঠিকমত জল দেওয়া হবে ৷ অন্ত বানরেরাও **एडरव बन्**रम—हैं।, এ ঠিক কথা। তথন সবাই মিলে মহা উৎসাহে কাজ স্থক করে দিল। এক একটা করে গাছ তোলে, আর শিকড় দেখে তাতে জল ঢালে। এমনি করে তাদের বাগানের সব গাছে জল দেওয়া শেষ হলো! এভাবে জল দেওয়ার ফলে গাছগুলির যা দশা হলো তাত বোঝাই যায়। মালী বেচারা দিরে এদে বাগানের অবস্থা দেখে একে-বারে হতভম্ব হয়ে গেল। কিন্তু আর ত এর প্রতিকার নাই।

সংসারে এম্নিই হয়ে থাকে। জ্ঞানের পরিধি যদি আমাদের বিভূত না হয়, ভাহ'লে যে কাজই আমরা করতে চাই না কেন,



তথন স্বাই মিলে মহা উৎসাহে কাজ স্থক করে দিলে

তাতে সাফল্য লাভ করা একটু কঠিন হয়ে ७८र्छ। पूर्व यात्रा, त्कारना ब्लान यारमत्र रुग्ननि, यख বড় মহৎ অভিপ্রায় নিয়েই তারা কাজ আরম্ভ করুক্

राय थारक (वभी। ञ्चा वार वार कानवृक्ष ज्या , তাদের উপরে একটা দায়িত্বপূর্ণ কাজের দিও না।

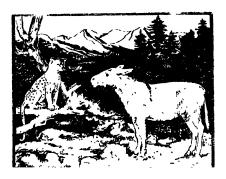
# শিশুভান্তী

# নেকড়ে বাঘ ও গাধা

ভিবৰতের গল্প

িত্তিব্যত দেশের গল্প ও কাহিনী বেশীর ভাগই ভারতবর্ষের সংস্কৃত সাহিত্তার অনুবাদ। যে সকল ক্লপকণা প্রচলিত আচে, ভাহার সহিত্ত ভারতবর্ষের প্রচলিত ক্লপকণার আশ্চর্যাক্রণ ঐক্য রহিয়াছে।]

সে স্ভাকালের কথা—তথন পশু-পক্ষীরাও মান্ত্রের মত কথা বলিতে পারিত। একদিন এক পাহাড়ের গায়ে, এক নেকড়ে বাবের সঙ্গে মস্ত বড় একটা গাধার দেখা হইল। গাধাটিকে দেখিয়া, ভাহাকে মারিয়া খাইয়া ফেলিপার লোভটা যদিও নেকড়ে বাবের মনে বেশ ভাল করিয়াই জাগিয়া উঠিয়াছিল, তবু কি জানি কেন, গাধার সেহ বিকট



নেকড়ে বাথের সঙ্গে গাধার দেখা হইল

চীৎকার শুনিয়। ও বেশ সাহস দেখিয়। নেকড়ে বাঘ গাধার সঙ্গে বন্ধুত্ব করিল। কথা রইল যে, নেকড়ে যথন শিকারের গোঁজে বাহির হইবে, গাধা তথন দিবে, তাহার গুহা-ঘরে পাহারা। স্মাপদে-বিপদে উভয়ে উভয়কে সাহায্য করিবে।

একদিন নেকড়ে শিকারের থোঁজে বাছির হইয়াছে, তাহার বিকট চীৎকারে, বনের ক্ষন্তরা স্ব ভয়ে ভয়ে এদিকে ওদিকে ছুটাছুটি করিতেছে, হঠাৎ একটা বড় রকমের চমরী বাঁড় একটা পাহাড়ের কোল হইতে নীচে খডের মধ্যে পড়িয়া গেল। বেচারা নেকড়ে বাদের ভয়ে পলাইতে যাইয়া এই ভাবে প্রাণ হারাইল। গাধা দেখিল, এই একটা মস্ত স্থযোগ; সে ভাড়াভাড়ি চমরী গরুটার কাছে যাইয়া দিয়া নারা গায়ে রক্ত মাথাইল এবং নিজেপ জিহ্বাটাও করিয়া ফেলিল একেবারে রক্তে রাঙা। নেকড়ে ফিরিয়া আসিলে খুব চীৎকার করিয়া বলিল, বন্ধু, এ পথ দিয়ে চমরী



চমরী যাঁড় থড়ের মধ্যে পড়িয়া গেল

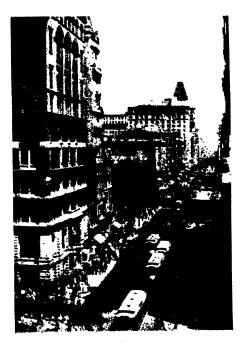
ষাঁড়টা যাচ্ছিণ, আমি থেরে ফেলেছি। ছহাতে নেকড়ে পুব খুদি হইয়া বলিল—ঠিক কণা— তুমি দাবাদ জোয়ান বটে। আমরা ছইজনেই ছই-জনকে আপদে-বিপদে ও শিকারের ব্যাপারে সাহায্য ক্রিব।

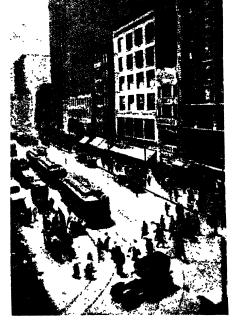
একদিন গাধা অনেক দ্রে একটা দ্র পাহাড়ের কোলে মস্ত বড় মাঠ,—েনেখানে চরিতে গেল। সে ত মাঠ নয়—যেন সব্জী বাগান, এমনি সবুজ স্থলর ঘাসে সে মাঠটি ভরা। সেথানে আর অন্ত কোন জন্ত জানোয়ার ছিল না। কাজেই, গাধা বেশ পেটভরিয়া ঘাস থাইয়া টীৎকার করিতে স্থক করিয়া দিল, ভার ভয় হইয়াছিল, কি জানি বাপু, এখানে একা পড়িয়া আছি—যদি বাঘ-ভালুক আসিয়া হানা দেয় তাহা হইলে বে প্রাণ হারাইতে হইবে। নেকড়ে বাঘ দূর হইতে গাধার ডাক শুনিয়া ভাবিল—নিশ্চয়ই

# পৃথিবীর ছয়টি বড় নগর



লওন

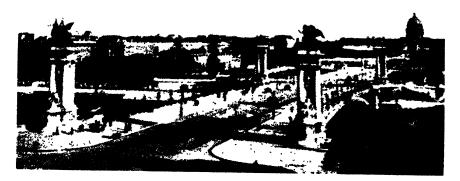




নিউইয়ৰ্ক শিকাগো



বার্লিন



প্যারিস



টে।কিয়ো

### ++++শিবিক ও চাম্বা-+++

তাহার বন্ধ কেনা বিপদে পড়িয়াছে; তাই সে ভাড়াতাড়ি দেখানে ছুটিয়া আদিল। নেকড়ে আদিয়া বলিল—বন্ধু! তোমার কি কোন বিপদ ঘটিয়াছিল ? গাধা খাড় উঁচু করিয়া বলিল—বিপদ



যদি ধাব ভালুক আসিয়া হানা দেয়
কামার কিরুপে বিপদ হইবে ? কামি পেট ভরিয়া
বাস থাইয়া আনন্দে চীৎকার করিতেছিলাম।
নেকড়ে বাঘ বলিল—ভাই নাকি? কামি কিন্তু
ভাবিয়াছিলাম অক্সরূপ।

আর একদিন গাধা অমনি ভাবে একাকী মাঠে চরিতেছে, এমন সময়ে একদশ নেকভে আসিয়া ভাষাকে আফ্রমণ করিল। গাধা বিপদে পড়িয়া গুব জোড়ে ভাকিতে লাগিল- কি দ্ব আজ আর ভাষাব বন্ধু নেকড়ে বাঘ ভাষাকে সাধান্য করিতে ছুটিয়। আসিল না। সে ভাক শুনিয়া মনে ভাবিয়াছিল, বুঝি ভাষার বন্ধু পেট ছরিয়া খাইয়া মনের আনন্দে



নেকড়ে গাঘের দল গাধাকে ছিড়িয়া ফেলিল
চীৎকার করিতেছে। নেকড়ে বাঘের দল অসহায়
গাধাকে টুক্রা টুক্রা করিয়া ছিড়িয়া ফেলিল।
ঘরে ফিরিয়া নেকড়ে দেখিল—বদ্ধ তাহার তথনও
ঘরে কিরে নাই। গুঁজিতে যাইয়া দেখিল—তাহাকে
নেকড়ের দল মারিয়া ফেলিয়াছে। নির্কোধ ও মিথ্যা
অংকারী বাজির এইরূপ গাজাই ভূগিতে হয়।

# শি-রিঙ্গ ও চাম্বা

মনেক দিন সাগে এক গানে পাণাশি বাড়ীতে হ্'জন গোক বাস করতো। একজনের নাম ছিল শিবিদ্দ সে ছিল খুব ধনী, একজারে সার অভ্যাচারী— আর একজনের নাম ছিল চাম্বা। চাম্বা ছিল অভি গরীব। কিন্তু মান্তুদ্টি ছিল বড় ভাল –সে সাধামত লোকের উপকার কবিতে এতটকু কম্বর করত না।

একবার ছটো চড়াই পাখী এসে চামবার খরের দরজার উপর্টায় বাসা বাধলো ক্রমে ভাদের বাচচা হ'ল। একদিন বড় চড়াই ছটি খাবার ক্রোগাড়ে বাইরে চলে গেছে, দৈবাৎ একটি ছোট বাচচা বাসাথেকে পড়ে গেল ঠিক চাম্বার দরজার চৌকাঠের উপরে। সেই আঘাতে বাচচা পাখীটির একটি প। ভেঙে গেল। বাড়ী ফিরে এসে চাম্বা বাচচাটিকে এই অবস্থায় দেখতে পেয়ে ভারু ভাঙা পাটি বেশ যরু করে সভো দিয়ে বেঁধে, বাসার মাঝখানে রেবে এল।

এই সে চড়াহ পাণাট, এ কি দ্ব সভিচাৰ ভিটে পাখী নয়, ছলবেশে একজন দেবতা। চাশ্বা বে চারা কি করে জানবে ? চড়াই পাখী তার ঠোটে করে কতক গুলি বীজ নিয়ে এসে চাশ্বাৰ কাছে দিয়ে বৃশ্লে— ভোমাকে যে দানাগুলি দিলাম, এগুলো ভোমার বাগানে পুঁছে দিও। তুমি আমার যে উপকার করেছ, এ তারই পুরকার। এই বলেই পাখীটি ফুডুৎ করে উড়ে পালালো।

চাম্বা ভাব লো, এ কি রকম । চড়াই পাথীও কথা বলে। মাম্য অক্তজ্ঞ হয়, উপকারীর অপমান করে, কিন্তু ছোট পাথীটির বুকের মধো বাসা করে আছে, অসীয় ক্ষত্ততা। সে দিল তার সাধায়ত উপকারের উপহার। এই বলে চড়াইমের দেংয়া সেই দানা কয়টি সে মাটিতে পুঁতে দিল।

ক্ষেক মাস পরে একদিন চাম্বা ধরের এদিক ওদিক বেড়াতে গিরে দেখতে পেল, সেই বীঙ্ক হ'তে কতকগুলি অভি স্থলর বড় বড় গাছ জ্লেছে। উত্তল শ্রামল ওাদের পাতা—আর পাতার শাবে শাবে ডালে ডালে ফলেছে—মণি-মুকা, হীরা জহরৎ আর মোহর। চাম্বা গাছের ডাল হ'তে সব



পাধীটি ফুড়ুৎ করে উড়ে পালালো
মণি, মুক্তা, হীরা, জহরৎ তুলে নিয়ে গেল রাজধানী
লাসা সহরে। সেধানে অনেক টাকায় সব বিক্রী
করে বাড়ী ফিরে এল। দেখুতে দেখুতে যেথানে
ছিল ভাঙা কুঁড়ে, সেধানে হলো মন্ত বড় পাথরের
বাড়ী।

চাম্বার প্রতিবেশী শি-রিঙ্গ, চাম্বার এতটা ঐশর্যা ও সম্পদ দেখে বিশ্বিত হ'য়ে গেল। সে ভাবলো এ কি কোন যাত্মন্ত পেল দ নইলে এত বড়লোক হ'য়ে গেল কি করে—বাপারটা জানতে হয়ত।

একদিন সে চাম্বার বাড়ী বেড়াতে এসে জিজেন করনো, ভাই বল দেখি কি ভাবে তুমি কঠাও এত বড় ধনী হ'লে ? সরল মন চাম্বার—সে শি-রিঙ্গকে সব কথা খুলে বল্লো! শি-রিঙ্গি সব শুনে মনে মনে ভাব্লো, হায়রে, আমার বাড়ীতে যদি একটা অমন ধরণের চড়াই এসে বাসা বাঁধ্তো!

Ş

সভিসভিটি ভাই হলো। শি-রিক্সের বাড়ীভেও একদিন এক জোড়া চড়াই এসে বাসা বাধ্লে.। ভাদের বাচা হলো। যেমনটি হয়েছিল – চাম্বার বাড়ীভে, এখানেও ভেমনি হলো। একদিন একটি বাচা মাটিভে পড়ে পা ভাঙ্গলো। শি-রিঙ্গ যত্ন করে স্ভো দিয়ে পা বেঁধে বাচা পাথীটিকে বাসায় ভূলে রাধ্লো। একদিন বড় চড়াই পাখীট ঠোটে করে কতক-গুলি দানা নিয়ে এসে শি-রিক্লকে বল্লে—ভূমি আমার যে উপকার করেছ, এই নেও ভার প্রতিদান। এই দানা কয়টি ভোমার বাগানে পুঁতে দিও।

শি রিকের মনে আর আনন্দ ধরে না! সে খুব যত্র করে মাটি তৈরী করে ঐ বীজ কয়টি পুঁতে জিল। ভোরের বেলা শি-রিক বাগানে গেল দেখুতে কড-গুলো মণি-মাণিক, মুক্তা-মোহর ফলেছে। কিন্তু কাছে গিয়ে সে ভয়ে ও বিশ্বয়ে থম্কে দাঁড়ালো। কোথায় মণি-মাণিকা ৷ তার বদলে সেথানে দাঁড়িয়ে আছে একটা ভয়ত্বর মূর্ত্তি ৷ রাক্ষদের মত তার মুথ মূলোর মত তার দাঁত, সিংহের কেশরের মত তার মাপার চুল, পরণে তার চমুরী গরুর ছাল, চন্দ্র-কর্যোর মত বড়বড় গোলগোল চকু ছটো। ছাডের মধ্যে এক ভাড়া কাগজ। এই লোকটা ভাঙা গলায় বললে, আমি পূর্ব্ব জন্মে ছিলাম তোমার মহাজন। তুমি সেকালে তোমার ঋণের কড়ি শোধ করনি, তাই এবার সেই ঋণ শোধের ব্যবস্থা করতে এসেছি। একথা বলে সে তার সব কাগজ-পত্তর नाम्तन धराला! भि-त्रिक प्रश्राला, কথা দত্য-এতটুকু মিছেনয়-কাজেই. বাড়ীঘর, গরু বাছুর, লোকজন, টাকাকডি সৰ হারাতে হলো। শি-রিঙ্গ কোথায় হবে মস্ত বড় ধনী, তার বদশে হলো कि ना একেবাবে দীন ভিগারী।

9

চাম্বার এপন সোণার সংসার। ধন-রত্বে মাণ্
মাণিকো পরিপূর্ব ভার ভাগুর। সে একবার দেশ
বেড়াতে যাবে ঠিক কবে একটা মন্ত বড় পলিতে
সোণার শুঁড়ো ভরে এনে শি রিম্নকে বল্লো—
ভাই, আমি দেশ লমণে বেক্ছি, কবে ফিরবো, ভা
ত এপন আর ঠিক করে বলতে পারি না, তাই
ভোমার কাছে এই থলি-ভরা সোণার শুঁড়োগুলি
রেধে গোলাম। শি-রিশ বললো—এ আর ভেমন
কি কঠিন কাল্ল—এই না বলে সে থলিটি ভুলে
ঘরের মধ্যে রেধে দিলো।

শি রিকের এ সময় অতি-বড় দারিন্তা অবস্থা।
তার থাওয়া-পরাই চলে না। তারপর, হাতের কাছে
এত গুলো সোণা পেয়ে আর লোভ সংবরণ করতে
পারলো না—ধীরে ধীরে সবচীই থরচ করে
ফেলুলো। সোণার ওঁড়োর এক রম্ভিও আর ধনিতে
রইল না। কি আর করে—বালি দিয়ে চাম্ডার
থলি পুরে রাখ্লো।

কম্বেক বছর নানা দেশ বিদেশ ঘূরে, চাম্বা দেশে ফিরে এনে শি-রিকের কাছে তার সোণার থলি ফিরে চাইলো। শি-রিক একটি কথাও না বলে চাম্বাকে

### শিবিক ও ভাম্মা

ভার থলি ফিরিয়ে দিল। চাম্বা ভার সোনা ঠিক মত আছে কিনা, তা দেখবার অস্ত বেমন থলি খুল্লো, অমনি সে আশ্চার্য হয়ে গেল। কেথার সোনা! সোনার বদলে রয়েছে থলি-ভরতি বালি! চাম্বা বল্লো--একি! আমার সোনা কোথায় ?



সোনা বদ্লে বালি হয়ে গেছে এমনটাই ত হয়েছে! সোনার বদ্লে বালি হয়ে গেছে, কি কর্ব বল, আমি তা কিছু জানি না।

চাম্বা আর কি করে? দে দেই বাণি-ভরা থলেটি বাড়ী নিয়ে এল।

2

চাম্বা প্রামে একটি পাঠশালা কর্লো। দেশের ছোট ছোট ছেলে-মেয়েরা যাতে বিনা পয়লায় ভাল ভাবে লেখা পড়া শিখ্তে পারে, এই হলো তার উদ্দেশ্য।

শি-রিক মনে কর্লো, তার ত আর টাকা কড়ি নেই, এহলো মস্ত বড় স্থবিধা, সে তার ছেলেটিকে চাম্বার পাঠশালায় লেখা-পড়া শিথ্বার জক্ত পাঠিয়ে দিলো।

দেশে বদে থাক্লে ত আর টাকা-কড়ি হয় না; কাজেই, শি-রিঙ্গও অর্থোপার্জ্জনের জন্ত দূরদেশে যাওয়া হির কর্লো। যাবার সময় তার ছেলেটিকে রেখে গেল চাম্বার হেপাজতে।

শি-রিক চলে যাবার পর, চাম্বা একটি বানরকে পোষ মানিয়ে তাকে বল্তে শিখালো— শুধু এ কয়টি কথা—বাবা, আমি বানর হয়ে গেছি! বাবা, আমি বানর হয়ে গেছি! শি-রিক্ত কিছু দিন পরে বাড়ী ফিরে এল, এবং চাম্বার পাঠশালায় দেখ্তে গেল—তার ছেলের এখন কিরপ অবস্থা দাঁড়িয়েছে, সে কি রকম লেখাপড়া শিখেছে, এই-সব। কিন্তু পাঠশালার কোন শ্রেণীতেই সে তার ছেলেকে দেখ্তে পেল না। দেখ্তে পেল বস্বার আসনে একটা বানর বসে রয়েছে।

চাম্বার সঙ্গে দেখা হ'তেই সে জিজ্ঞাস। কর্লো— ভাই, আমার ছেলের পড়াগুনা কি রকম হচ্ছে ?

চাম্বা তাড়াতাড়ি বানরটিকে নিয়ে এসে শিরিকের কাছে হাজির করলো।



বাবা, আমি বানর হয়ে গেছি

শি-রিঙ্গ রেগে বললো—এ কি ? আমার ছেলে কোথায় বল ? আমার ছেলেকে এনে দাও।

তথন বানরটা কিচি মিচি করে বলে উঠ্লো "বাবা আমি বানর হয়ে গেছি! বাবা, আমি বানর হয়ে গেছি!

শি-রিজ রেগে হৈ রৈ করতে লাগ্লো। চাম্বাকে মেরে ফেলে আর কি । কিন্ত চাম্বার কোন ভাবান্তর হলো না—দে শুধু হাস্তে লাগ্লো। শি-রিজ থানিককল পরে বুঝতে পারলো—বন্ধু চাম্বা সেই সোনার থলের বালি হওয়ার দিব্য এ প্রতিশোধ নিয়েছে। তথন সে নিজের ফাট বুঝ তে পেরে চাম্বাকে বিনয় করে বল্লো—ভাই, আমি ভোষার লোনা শুধ্রে ভূমি আমার হেলেকে ফিরিয়ে দিও।

ठाम्बा *द्राम* बन्दन- ध दबन कथा !



# বায়

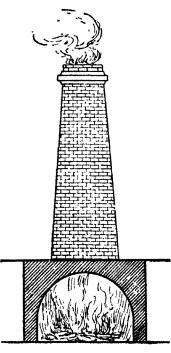
চিমনির কি কাজ, জান গ ভোমাদের বলা ১ইয়াছে, আ'কে চিম্নি বাতাস গরম হইয়া উদ্বেভিঠিতে থাকে। কাজেই, স্টু হয় ও নতন বাতাদ পাইয়া আগুন আরও জনিতে পাকে। উদ্ধে প্রবাহমান বায়, কার্কন-ডাই-অকাইড ও ধমের গতি চিমনির খারা স্থানির্দিষ্ট হওয়ায় আগুনের দাহ আরও ফুন্ররূপে সংগাধিত হয়। ল্যাম্পে চিমনিও ঠিক ভাহাই করে। ঠিকমভ চিম্মন লাগাইলে ও দীপ নিথার ভলায় বায়-প্রবেশের পরিষার রাখিলে, শিখা পরিষার ও ধুমবিহীন হয়।

তথন ভোমরা বুঝিতে পারি-তেজ, কেন বাতাস পাইলে আগুন আরও ভালরপে জলিয়া উঠে। হাপার দিয়া আগুন আরও ভালরপে জালান হয়। তবে প্রবল বাতাসে অবস্থাই ক্ষীণ শিক্ষা প্রবল বাতাসে নিকাপিত হইয়া শান নিধাব যায়। তাহা নিকাপন অন্ত কারণে হয়। দাহক্রিয়ার

অগ্নিরূপে আবিভাব হইবার



একটিবায়ু-প্রবাহ সে উত্তাপ ক্ষম হট্যা



কল-কার্থানার চিম্নি

জন্ত পদার্থদিগকে তাহাদের আপন আপন স্বতাবাহ্নারী বিভিন্ন পরিমাণে উত্তপ্ত হইতে হয়। যদি প্রবল বাতাদে যায় ত'হা হইলে দাহে প্রতিব্ বন্ধক উপস্থিত হইয়া পড়ে।

বায়ু হইতে এই রক্ষে নানা ক্রিয়ায় যদি অক্টিজেন ধ্বংস **৯ট্যা যাইত ও তাহা আর**্ কোনপ্রকারে সৃষ্ট না ইউত. তাহা হুইলে এত দিনে কোন-कारण कौनवः न लुख हहेशा यहिंछ, স্টির গতি অচল হইয়াপড়িত। কিন্তু প্রাকৃতিক নিয়মে, ক্লোরো কিল (chlorophyll) নামক গাছপালার সবুজ অক্সিডেনেব পাতার ভিতর পুনর্জন্ম যে পদার্থটি আছে তাহা সূর্যাধ্যোক-সাহায্যে কার্কাণ-ডাই-অফ্রাইডকে রাসায়নিক ক্রিয়ায় ভাঙ্গিয়া অক্সিজেনের মুক্তিসাধন করে ও কার্কাননামক অঙ্গার জাতীয় পদার্থটিকে রাসায়-নিক ক্রিয়ায় নিজের পুষ্টি-সাধনার্থে গ্রহণ করে। কার্কন নানাবিধ গৌগিক পদার্থরূপে বৃক্ষগতে ও তথা হইতে অন্ত নানাবিধ যৌগিক পদার্থরূপে

প্রাণিজগতে যায়, তথা হইতে কার্মন-ডাই-জন্মাইড ও কার্মন-ডাই-জন্মাইড হইতে আবার চক্রবৎ বৃক্ষগতে নিরিয়া যায়। দলে কোন প্রার্থি



বাতাস পাইলে অভিন আলিয়া ওঠে
নিঃশেষে ক্ষয় হইয়। সায় না। নাইটোজেন অক্সিজেনকে ফিকা করিয়া আমাদের নিঃখাদের উপধোগী করিয়া দেয়।

'থাকাশের বিভাব প্রভাবে রাসায়নিক ক্রিয়ায়
বা ভাসের স্বল পরিমাণ অক্সিজেন ও নাইট্রোজেনের
কথন কথন কিছু সংযোগ হয়।
নাইট্রোজেন ও বৃষ্টিজলে তাহা ধরণীভলে পতিত
ভাষার কল হইয়া মৃত্তিকার ক্ষারাদির সহিত
সংস্ক হইয়া বৃক্ষাদির পাত্যরূপে পরিণ্ড হয়।

কথিকং নাইট্রোজেন এক প্রকার কাঁটাণ্ দারা সীম ও ছোলা জাতীয় ওলাদির দেকে সরাসরি সংযুক্ত হইয়া ভাছাদের পৃষ্টিশাধন করে। বৃক্ষদেহে ও বৃক্ষদেহ হইতে প্রাণিদেহে নানাবিধ যৌগিক পদার্থরূপে নাইট্রোজেন বিরাজ করে। আবার বৃক্ষ ও প্রাণিদেহের ধ্বংসে পুনরায় বাতাসে ফিরিয়া আসে। এইরপে নাইট্রোজেনও চক্রবং ঘ্রিতে থাকে। আমাদের শরীরের মাংসাদি এই নাইট্রো-জেনের নানাবিধ যৌগিক পদার্থের মিশ্রণ। মাচ মাংস, ছানা, দাইল প্রভৃতি ও ক্লেত্রেব সার্রপে ব্যবহৃত অনেক বস্তু ইহাদিগকে প্রোটন বা নাইটোজেনীয় প্রার্থ বহা হয়।



RIGTA

অক্রিজনের সংশ্র সংশ্র

আমাদের

গৌগক

নিতাসঙ্গী।

পদার্থ

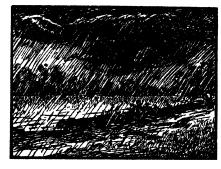
পাপর

এবিড়ালেয় বালি, চৃণ হইতে আর্ও করিয়া যোগিক পদার্থ আমাদের দিতীয় জীবন জল প্রায়. বভবিধ পদার্থে এই অক্সিজেন থৌগিক ভাবে বর্ত্তমান। প্রকেট বলা হর্মাছে যে, বাতাদে জলীয় বাষ্প থাকে। এই বান্ধ আসে নানাবিধ স্থান ১ইতে। নদ. नमी, मध्यात छन উविशा कार्छ বাতানে জনীর বাম্প ইত্যাদি বিবিধ দাঞ্চ পদার্থ পুড়িয়া, এমন কি, আমাদের প্রশাস হইতে এই জলীয় বাস্পের স্ষ্টি হয় ও ভাহা বাভাসে প্রবেশ করে। একটি পরিষ্কার আয়নার উপর নি:খাস ফেলিলে. নি:শাসে জলীয় বাম্পের বিভামানতা দেখা गাইবে। কতথানি ভুল বাতাসে পাকিতে পারে. বাতাদের উত্তাপের উপর নিভর করে। গ্রীম-কালে অনেকথানি জল তাহার ভিতর পারে। বাডাদে যতথানি জল থাকিতে

### স্থিত ভাৰতী

বাতাসে অবস্থিত জলের পরিমাণ তাহার যত কাছাকাছি হইতে থাকে, তত মন্দীভূত বেগে বাতাসে জল পোবত হইতে বা বাজ্যীভূত হইতে সমর্থ হয়। ইং। ঠিক ষেমন তোমাদের পেট ভরিবার কাছাকাছি হইলে হয়। এই জগুই গ্রীয়ে ক্রতগতিতে বন্ধাদি শুদ্ধ হয়, বর্ষায় হয় না। বাতাসে জলের পরিমাণ যতই বাড়িতে থাকে ততই একটা কি রক্ম শুমোটের সৃষ্টি হয়, কারণ নিঃখাসে আমরা ততটা অক্সিজেন পাই না। বাতাসে যতথানি জল থাকিতে পারে তাহার মাত্র শতকরা ৭০ ভাগ থাকিলেই শরীরের জগু স্বিধাকর।

বাতাসে হয় তো এখন তত জল নাই; কিন্তু যদি ইহা ক্রমশঃই ঠাণ্ডা করিতে করিতে এমন অবস্থায় আনা যায়. যে অবস্থায় তাহাতে এখন যাহা জল আছে, তাহাও তাহার পক্ষে বেশী, তাহা হইলে সেই বেশী জল্টা বাতাস নানা ভাবে ফেলিয়া দেয়।



বায়ুতে ভাসমান ধৃম ও ধৃলিকণার উপর যে শিশির পতিত হয়, তাহা ধৃম ও ধৃলিকণার সহিত একটা অসক্ত ন্তরের মত হয়। ইহাকে আমরা কুয়াণা বলি।

তোমরা দেখিয়া থাকিবে, কোনও পাত্রে বরফ রাখিলে পাত্রের বাহিরের গাত্র বহিয়া জ্বণারা গড়াইতে থাকে। ইহাও উপরি উক্ত কারণে হয়।

জনীয় বাশ থাকায় আরও একটি লাভ হয়। আমাদের ধরণী শীজ শীতণ হট্যা যাইতে পায় না। ইহা তাপরশির প্রতিরোধক। বাতাসে ইহা যদি হঠাৎ লুপ্ত হইয়া যায়, ভাছা হইলে দিবাবসানে ধরণীতল বরফবৎ ঠাপ্তা হইয়া পড়িবে। তোমরা দেখিয়া থাকিবে, আকালে মেদ থাকিলে রাত্রে ডড শীত বোধ হয় না।

গত দিনের স্থানীয় বাত।সের উত্তাপ, বাতাসের
চাপ, বৃষ্টির পরিমাণ ও বাতাসে বান্দের পরিমাণ,
প্রতিদিন খবরের কাগজে লেখা থাকে। তোমাদের
বৃষিবার স্থবিধার জন্ত মেট্রোলজিকেল রিপোর্ট
১৯৩২ খৃঃ, ১৭ই ডিসেছর প্রাতে ৮ ঘটিকার সময়
এলাহাবাদ সহরের আব্হাওয়ার বিবরণ নিমে
লিখিয়া দিলাম।

বাারোমিটার (সংশোধিত) ..... ২৯ ৭৯৪
বাারর উত্তাপ .... ৩০%
" আর্জা .... ৬৩%
" গতি পশ্চিম, দক্ষিণ-পশ্চিম
সর্বেলিয় তাপক্রম (গৃহের মধ্যে) ... ৪৪০ ফাঃ
মধ্য তাপক্রম (গৃহের মধ্যে) ... ৪৪০ ফাঃ
বাহ ৪৯৭৭ ফাঃ

বাতাসে আরও থে কয়েক প্রকার গ্যাস আছে তাহার ভিতর আর্গন, ওজোন ও অ্যামোনিয়া কথঞ্জিৎ পরিমাণে উল্লেখযোগ্য।

মনীনী র্যাম্সে (Ramsay) তাঁচার বিশ্ববিথাত প্রিশ্রমের ফলে বাতাসে আর্গন, হিলিয়ম প্রভৃতি



মনীৰী র্যাদ্দে গ্যাদের সন্ধান পান। এই গ্যাসগুলিকে কোনও রাসায়-নিক ক্রিয়ায় কাজ করাইতে পারা যায় নাই। ইহাদের

সমষ্টি পরিমাণ বাতাদে, শতকরা একভাগেরও কম। ওজান বোধ হয় অক্সিজেন হইতে অশনি প্রপাতে উৎপন্ন হয়। অফ্রবিধ কারণেও ইহা সন্ত হয়। পার্কতা



মনীধী ল্যাভয়সিয়ে (Lavoisier)

ইহারা উভয়েই বায়ুকে অক্সিজেন ও নাইট্রোজেনের মিগনে উৎপন্ন মিশু পদার্থ ব্লিয়া প্রমাণ করেন। প্রদেশে, দেবদাক-খনবনে ও সামৃত্রিক বাতাসে ইহা নাকি দামার পরিমাণে পাওয়া যায়। বীকাণু-ধ্বংদের কাজে বৈজ্ঞানিকেরা ইহা প্রস্ত কৰিয়া বাৰহার

আমেনিয়া নাইটোজেনীয় পদার্থের পচনে ও অভ নানাবিধ কারণে জন্মে। বৈজ্ঞানিকেরা ইছা নানাবিধ উপায়ে প্রস্তুত করিয়া বহুপ্রকারের কার্য্যে বাবহার করেন। মাথা ধরিলে যে শ্বেলিং সন্টের আজাণ मिश्रा हय. कांश्राद शस्त्र এই क्यांत्मिनिया वर्खमान। বাতাদে সহজ্ঞ সহজ্ঞীবাণু ও বীজাণু ঘুরিয়া বেড়াইতেছে। তাহারা নানারপ কার্য্য করে। কোন জাতীয় জীবাণু হগ্ধ বিকৃত করিয়া বাভাসে দীবাণু দধিতে পরিণত করে, কোন জাতীয় জীবাণু ইকু, তাল বা ধর্জার রস মছে পরিণত করে,

(कान काछीप कीवान मुख्याह वा कीवान निर्मण

পদাৰ্থ পটাইয়া আমোনিয়া ও কোন জাতীয় জীবাণু তাহা হইতে নাইটি ক আাগিড ইত্যাদি প্ৰস্তুত করে। আবার রোগ-বীজাণু সমূহ নানাবিধ রোগের সৃষ্টি করে। বছজাতীয় বীজাণু মৃত্ তাপে ও ঞ্জীয় বাস্পে বৃদ্ধি পায়। বধায় সেই কারণে এত ছাতা পড়ে। প্রচণ্ড শীতে বছ জাতীয় জীবাণ নষ্ট ংগ্যা যায়।

জনবতল স্থানে বায়ুতে যে অস্বাস্থাকর ভাব থাকে, তাহা বভপরিমাণে দেহপাত বীশাণু সমাকীণতার

পলি ও নানাবিধ জৈব ও অজৈব পদার্থ বায়তে



मनौरी भीन (Scheele)

প্রভূত পরিমাণে বৃত্তমান। জানালার ফাকে যুরে যে রৌদরেখা প্রবেশ করে, ভাগতে দেখিতে পাইবে এই জাতীয় কণিকাগুলি অননরত পুরিয়া বেড়াই-তেছে। এই কণিকাগুলি হইতে রৌদ্রে বিচ্ছুরিত হওয়ায় আমরা রৌদ্রেখাটিকে দেখিতে পাই: বা পরিষ্কৃত ৰায় তে রৌদ্রের রেখা দৃষ্টিগোচর হয় না।

বাতাদের ও বাতাদে বর্তমান বছবিধ গ্যাদের গুণা-বলীর কথা তোমাদের কিঞিৎ বলা হইল। বাতাস व्याभारमञ्ज्ञ कौरन । जाहे तुकि, धनी-मन्निज निर्कित्नरम्, এ রত্নে আমরা অধিকারী। বুঝিয়া দেখ, বৈজ্ঞানিকেরা কতনা পরিশ্রমে, কতনা গবেষণায় এই সব ও আরও বহু তথা বাহির করিয়াছেন। তোমরা ঘদি তাঁহাদের পদাক অমুসরণ কর, তাহা হইলে ভোমরাও ধয় হইবে ও তোমাদের মাতৃভূমি ক্লতার্থ হইবে।

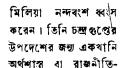


## ভারতবর্ষ চন্দ্রগুপ্ত মৌর্যা

্গ্রাক্ ঐতিহাসিকগণ বলিয়াছেন গে, আলেক্ সান্দের যথন পাঞ্জাব-জয়ে ব্যাপৃত ভিলেন, তথন

চন্দ্রগুপ্ত নামে এক যুবক তাঁহার সহিত দেখা করিয়া তাঁহাকে মগধের দিকে অপ্রসর হুইতে প্রাচিত করেন। পরে কোনো কারণে আলেকসান্দের হাঁহার উপর কুন্ধ হুওয়ায় তিনি গীক-শিবির হুইতে পলাইয়া আসিতে বাধ্য হন। সংস্কৃত ও পালিগভ হুইতে আরও জানা বায়ে সে, তিনি চাণকা-নামে হুক্ষনীলাবাসী এক প্রাক্ষণের সাহায্যে মগধের নন্দ্রাজকে ছলেবলেকৌশলে প্রাক্ষিত করেন এবং প্রায় খুইপূর্বব ৩২৫ আকে সিংহাসনে আরোহণ করেন।

চাণক্য সম্বন্ধে অনেক গল্প প্রচলিত আছে, তৈামরাও বাধ হয় কিছু কিছু শুনিয়াছ। তিনি নাকি অত্যস্ত রাগী লোক ছিলেন এবং একবার নন্দরাজ্ঞ কর্ত্তক অপমানিত হইযা প্রতিজ্ঞা করেন ধে, যেরূপে হউক, নন্দবংশের উচ্চেদ সাধন করিবেন। এই সময়ে ভাগাক্রমে তাঁগার চক্দ্রগুপ্তের সহিত দেগা হয়, এবং :ছ'জনে



সংক্রান্ত পুস্তক রচনা করেন। 'কৌটিলীয় অৰ্থশান্ত্ৰ' ৰা কেটিলা প্ৰণীত অৰ্থশাস্ত্ৰ নামে খ্যাত। সংস্কৃত ভাষায় 'অর্থশাস্থ' মানে রাজনীতি বা Politics হাজকাল খনেকে Economics অর্থে 'অর্থনামে' শক্ষের ব্যবহার করেন। Economics-এর সংক্ত নাম 'বার্লা'। ইহাতে কিরুপে রাজ্যশাসন করা উচিত, ভাগার বিস্তৃত বিবরণ দেওয়া গুইয়াছে। এ ধবণের বই ভারতব্যে খুবই কম, সেইজস্য ঐতিহাসিকদের নিকট বইথানির থবই আদর। অনেক পণ্ডিত কিন্তু মনে করেন যে, বইখানি চাণকোর লেখা নয়, অস্তা কেহ কোটিলোর নাম দিয়া আরও চার পাঁচ শভ বৎসর পরে বইখানি লিখিয়াছিল। এ সন্ধান্ধ অনেক বাদামুবাদ হওয়া সত্ত্বেও এখনও কিছু স্থির হয় নাই।

'মৃদ্রারাক্ষস' নামে একখানি সংস্কৃত নাটক আছে। ইহার লেখক বিশাখদত্ত



বোধ হয় খৃষ্টীয় চতুর্থ কি পঞ্চম শতকের লোক। নন্দরাজের রাক্ষস নামে এক প্রভুতক্ত মন্ত্রী ছিল। নন্দের সিংহাসনচাত হওয়ার পর রাক্ষস নানা প্রকারে চক্রকুগুন্তের অনিস্ট করিতে চেন্টা করে। কিন্তু তাপর পক্ষে চাণকা কিরপে ধর্তুতার সহিত তাপর সকল চেন্টা বিদল করিয়া দেন, নাটকটিতে অতি স্থানর ভাবে ইচা বির্তু হইয়াছে। পড়িয়া মনে হয় দে, চাণকা নিজের উদ্দেশ্য সিদ্ধির জন্ম যে কোন উপায় অবলম্বন কবিতে দিশা করিতেন না।

তোমতা বোধ হয় শুনিয়াছ যে, চন্দ্রগুপ্ত ন-দরাজের পুত্র ছিলেন, ভাঁহার মাতা ছিলেন, নন্দের দাসী মুরা: মুবার পুত্র বলিয়া চদ্ৰুগুপ্তেৰ মোধা। কিন্ত -12 কোনো পুরাতন গ্রান্ত এ কথার নাই। প্রাচীন বৌদ্ধগ্রন্থে দেখিতে পাওয়া যায় যে, হিমালয়ের পাদদেশে মৌর্যা নামে একটি গণরাজা ছিল, চন্দ্রপ্র সেই রাজ্যের লোক ছিলেন এবং জাতিতে ক্ষত্রিয় ছিলেন। এইজন্স মনে হয় যে, চক্দগুপ্ত শুদ্র ছিলেন না, বরং উচ্চ জাতির ক্ষ ত্রিয়ই ছিলেন। মাজকাল বড বড ঐতিহাসিকগণ আর মুরার গল্প বিশ্বাস করেন না এবং চক্রগুপ্তকে ক্ষতিয় বলিয়া মনে করেন।

চন্দ্রগুপ্তের মত শক্তিশালী সমাট ভারতে বিরল। তিনি পাঞ্জাব হইতে গ্রীক্দিগকে বিতাড়িত করিয়া সমস্ত উত্তর-ভারত করিয়ালন। এমনকি, মনে হয় দাক্ষিণাত্যেরও অনেকথানি ভাঁগার সামাজ্যভক্ত ছিল। কিন্তু কীত্তি ছিল গ্রীকদিগকে পরাস্ত পর ভাঁহার আলেক্সান্দেরের মৃত্যুর সেনাপতিদের মধ্যে সামাজ্য লইয়া বিরোধ উপস্থিত হয়। ফলে সেলিউকস্ সেনাপতি পশ্চিম এশিয়া জয় করিয়া লন। আলেক্সান্দেরের মত তাঁহারও ভারত- জ্যের ইচ্ছা ইইল। তিনি কতদুর অগ্রেসর হইয়াছিলেন বলা শায় না, ভবে মনে হয় মে, চন্দ্রগুপ্ত তাঁহাকে বিশেষ স্থবিধা করিতে দেন নাই ৷ আশ্চর্যোর বিষয় গে, যে ঐতিহাসিকগণ আলেক্সান্তেরে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বিজ্ঞাের কথাও শঙ্মুখে প্রশংসা করিয়াছেন, ভাঁগারা সেলিউকস-চন্দ্রগুপ্তের যুদ্ধ একেবারে নীরব। বেশ্ব হয়, বিশেষরাপে সেলিউকসকে পরাজিত করেন, এই জ্ব্যুই গ্রাক ঐতিহাসিকগণ লড্ডায় এই সম্বন্ধে কিছু লিপিবদ্ধ করিয়া যান নাট। যুদ্ধের পর সেলিউকস্ চত্ত-গুপুকে আকগানিস্থান প্রদেশ দান এবং ইছার বদকো মানে ৫০০ রণগজ সপ্ত্ৰট থাকিতে বাধ্য হন। সমাটের মধো বন্ধৰ ভাপন হইল এবং বোধ হয় সেলিউক্সের ক সাতেক কবেন। পাঞ্জাবে এখনো চন্দ্রগুপ্তের এই বারওকাহিনী গীত হইয়া থাকে।

জৈনপ্রশ্নে দেখিতে পাওয়া সায় যে,
চঞ্জুপ্ত জৈনধশ্মের অনুগত ছিলেন।
তাঁহার বাজ্ঞাংর শেষভাগে নাকি উত্তরভারতে দারুণ তুভিক্ষ উপন্তিত হয়, সেইজ্ঞা
ভিনি জৈন নেতা ভদ্রবাহুর সহিত রাজ্যা
ছাড়িয়া দাক্ষিণাভ্যে প্রস্থান করেন এবং
মহীশ্রের অন্তর্গত প্রবণ-বেলগোলা নামক
স্থানে প্রাণ্ডাগ করেন। জৈনদের মতে
না থাইয়ামরা থ্ব পুণ্যের কাজ।

সেলিউকস্ পরাজিত হইবার পর চন্দ্রগুপ্তের সভায় মেগাছেনীস্ নামে এক গ্রাক্
দূত পাঠান। তিনি সম্ভবতঃ তুই তিন বার
ভারতবর্ষে আসেন এবং চন্দ্রগুপ্তের সভায়
অনেকদিন বাস করেন। দেশে ফিরিয়া
তিনি 'ইণ্ডিকা' নামে একখানি পুস্তক
রচনা করেন। তুর্ভাগোর বিষয়, সে পুস্তকখানি এখন আর পাওয়া যায় না।
আরিআন্, সট্টাবো প্রভৃতি পরবর্তী

### শিশু-ভারতী

ইউরোপীয় ঐতিহাসিকগণ নিজেদের গ্রন্থে हिन। প্রাচীরের পাশে বাহিরের দিকে ৪০ মেগাস্তেনীসের 'ইঞ্জিকা' হইতে অনেক কথা হাত লম্বা ও ৩০ হাত গভীর একটি পরিখা



পাটলিপুত্রের ধ্বংসাবশেষ। মৌহ্য রাজপ্রাসাদের কার্চ্চ ঞের সমূথ-দুখ্য

। নিজেদের প্রস্থে উন্ধৃত করিয়া গিয়াছেন। সংক্রোস্থ সকল কাজ দেখিত ও শিল্পীদের

স্তরাং ভাঁহাদের গ্রন্থ হইতে মেগাস্থেনীস-বর্ণিত ভারতবর্ষের কথা কিছু কিছু জানা যায়।

মেগান্থেনীস চন্দ্ৰ-গুলোর রাজধানী পাটলিপুত্রের • যে বৰ্ণনা করিয়াছেন তাহা পডিয়া বোঝা যায় যে, নগরটি কভ বুহৎ ছিল। নগরটি প্রায় ৯ মাইল লম্বা ও দেড় মাইল চওডা ছিল। নগরটি ঘিরিয়া একটি কাঠের প্রাচীর

ছিল, ভাহাতে ৫৭০টি চূড়া ও ৬৪টি ফটক



মোর্য্য রাজপ্রাসাদের পার্থ-দৃশ্য 🙌 বেতন ধার্য্য করিয়া দিত। বিতীয় বোর্ডের

किंग।

গিয়া

সাক্রমণ

পারিত না।

প্রণালাও

চগৎকার

ছিল.

বোর্ডে

সেখানে

করিতে

অতি

ছিল।

এক একটি

পাঁচ জন

ড ড: এবং শক্রগণও শীল্প নগর

নগরের শাসন-

•ানাদিকে দৃষ্টি রাখি-বার জন্ম ছয়টি প্রবিদ্ধ-কারিণী সভা (বোর্ট)

করিয়াসভা ছিল।

প্রথম বোর্ডটি শিল্প\_

নগরের সকল জঞ্জাল

#### खात्राटक्च टक्ट्रा-छान्छन्न

কাজ ছিল :বিদেশী লোকের স্থবিধা- হইতে শুক্ষ আদায় করিত এবং দোকান-অস্থবিধার দিকে লক্ষ্য রাখা। বিদেশী- দারেরা যাহাতে কম ওজন দিয়া না ঠকায়,

म्त्र यश्च कतिरम চিকিৎসার বন্দোবস্ত করা হইত, আর মৃত্যু घिटल ভাহার সম্পত্তি আত্মীয়দের নিকট পাঠাইয়া দেওয়া হইত। তৃতীয় বোর্ড জ্ঞানু হার হিসাব রাখিত। এবং যাহাতে কোনও জন্ম বামূড়া লুকানো না থাকে তাহার দিকে লকা রাথিত আজ-কাল দশবৎসর অস্তর লোকসংখ্যা গ্ৰনা (census) করা হয়।



বেলে পাথরের পালিশ-করা স্কন্তনেণী দেখা ঘাইতেছে

সেকালে কিন্তু ইহার জন্ম স্থায়ী বন্দোবস্ত ছিল। সে দিকে দৃষ্টি রাখিত। পঞ্চম বোর্ড শিক্ষজাত চতুর্থ বোর্ড ব্যবসা-বাণিজ্যের স্থবিধা করিয়া ত্রুবা বিক্রয়ের তন্ত্রাবধান করিত, পুরানে।



পালিশ-করা বেলে পাথর

**मिए** नियुक्त थाकिछ, विश्वरागत निक्षे

জিনিস নৃতন বলিয়া
বিক্রেয় করিলে শাস্তি
দিত । যঠ বোর্ড
বিক্রীত জবোর মূল্য
হইতে শুল্ক আদায়
করিত। কেহ যদি
শুল্ক এড়াইতে চেম্টা
করিত, তাহা হইলে
তাহার প্রাণদণ্ড
হইত।

তোমরা দেখিতেছ
যে, চন্দ্রগুপ্তের সময়
পাটলিপুত্রের শাসনপ্রণালীর সহিত
বর্তুমান ক্রেণারেশান

বা মিউনিসিপ্যালিটীর শাসনপ্রণালীর কিছু

কিছু মিল দেখা যায়। তবে একটি কথা মনে রাখিতে চইবে গে, নর্দুমান মিউনিসি-প্যালিটার সভ্যগণকে নগরবাসীরা নির্বাচন করেন। পুরাকালে সভাগণ কিরপে নিযুক্ত হইত জানা যায় না, তবে খুব সম্ভব রাজাই ভাহাদিগকে নিযুক্ত করিছেন।

রাজ। নিজে প্রজাদের স্থ-সাচ্ছন্দোর দিকে দৃষ্টি রাখিতেন। সমস্ত দিনই তিনি রাজকার্য্যে বাস্ত থাকিতেন, কথনো মঞ্জীদের সহিত আলোচনা করিতেন, কখনো বা চবদের নিকট 33.60 রাজ্যের প্রর শুনিতেন। তিনি নিতাও भन्नकात ना পড়িলে প্রাসাদের বাহিরে আসিতেন না। প্রাসাদে জাকজমকের সীমা ছিল না। রাজাপোনার পালীতে চডিয়া বেডাইতেন সোনা-রূপার থালার খাইতেন। রুমণীর দল বকা হুহুৱা স্থান্ত ভাহাকে ঘিরিয়া থাকিত। এ সব সংখ্র কিন্তু তাঁহার জাবন প্রথের ছিল না। স্বর্গে তিনি আশিক্ষায় ভাত প্রাণনাদোর থাকিতেন, এমন কি, রাত্রিবেলায় এক ঘর ২ইতে অহা-ঘরে শ্যাপ্রিক্তন ক্রিছেন। বভুমান পাটনা সহবেব দক্ষিণ দিকে কুমরাহার নামে একটি স্থান 71175 এখানে মৌগা-সমাটদের স্তম্ভবক্ত প্রাসাদেব কিছু ভগা-বৰেষ দেখিতে পাওয়া যায়। উপরে তাহার ক্ষেক্টি ছবি দেখ।

চন্দ্রপ্রের সৈঞ্চল ক্ষতি বিরাট ছিল।
ভাষাতে ছিল ৬০০,০০০ পদাতিক, ৩০,০০০
অধারোহী ও ৯,০০০ রণগজ। সেনার
এক একটি বিভাগের ভ্রাবধানের জন্ম
এক একটি বোড ছিল। সৈঞ্চদল যাহাতে
সর্বদা কার্যাক্ষম পাকে ভাষার বিশেষ চেটা
কবা হইত।

মেগাছেনীস্ কম্মানুযায়ী ভারতের লোকদের ৭টি বিভাগ করিয়াছেন:—(১) পণ্ডিতগণ—ব্রাহ্মণ ও প্রামণ বাু বৌদ্ধভিক্ষু-

গণ এই দলের অন্তভুক্তি। ইহারা লেখা-পড়া ধর্ম ও দর্শন চর্চা লইয়া থাকিতেন, গ্রন্থ কোনো কাব্রু করিতে চইত না। (২) কুষিজীবিগণ— ইহারা গ্রামেই দরকার না হইলে সহরে আসিত না। রাজা কর স্বরূপ ইহাদের নিকট হইতে উৎপন্ন শক্তের এক-চতুর্থাংশ লইতেন। (৩) মেষ-পালকগণ--- ইহারা ভাব ফেলিয়া দেশে দেশে ঘুরিয়া বেডাইত এবং বন্য-জন্তু শীকার কবিত। (৪) শিল্পজাবিগণ—যেমন ছুভোর, কামার ভাটা প্রভৃতি। (৫) সৈনিকগণ। (৬) বাজকীয় চরগণ--কোনো দেশে কি ভইতেছে গোঁজ লইয়া ইগারা রাজার নিকট নিবৌদন করিত। (৭) বাজ্ঞাবর্গ-এই দল চইট্ড বাজকর্মাচারিগণ নিকাচিত মেগাস্তেনাস আবো বলিয়াছেন যে, এট ভাগগুলিৰ মধ্যে প্রস্পুবের স্ঠিভ বিবাহ ১ই৬ না এবং কোনো লোক নিজের কাজ ছাভিয়া অত্য কাজভ করিতে পারিত না।

দেশের আইন বড় কঠোব ছিল। সামাত্য সামাত্য অপরাধের জন্ম হাত-পা ফেলা হইত। অল্ল কার(ণ প্রাণদণ্ডও দেওয়া হইত। একটি উদাহবণ দিই কেছ যদি রাজার কোনো মন্ত্রীকে আহত করিত, তাহা হইলে ভাহাব বধের ভকুম হইত। বোধ হয় এই কার্ণে দেশে চুরি-ডাকাতি ও জাল-জুয়াচুরী খুব কম **অর্ক্চি**ত জিনিসপত্র অবস্থায ফেলিয়া রাখিয়া লোকে বাড়ীর বাহিরে যাইত। সম্পত্তি বন্ধক প্রভতি মামলা মোকদমা প্রায় হইতই না। মেগা-স্থেনীস্ উচ্চকঠে ভারতীয়দের প্রশংসা করিয়াছেন।

লোকে বেশ সুখে স্বচ্ছনেদ বাস করিত বলিয়া মনে হয়। যুদ্ধের সময় যাহাতে কৃষির কোনরূপ অনিষ্ট না হয় তাহার বিশেষ চেষ্টা করা হইত সৈঞ্গণ শস্ত-

## আমাদের দেশ-ভারতবর

ক্ষেত্রের উপর দিয়া চলিতে বাধ্য হইলে কৃষককে নইট্ শস্তের মূল্য দেওয়া হইত। দেশে দাসত প্রথা ছিল না। গ্রীসদেশে দাসদের জন্ম অভান্ত কঠিন নিযুম ছিল বলিয়া ভারতে এই প্রথা নাই গ্রীক ঐতিহাসিকগণ বারবার করিয়াছেন। বেশ-ভূষার দিকে লোকের খব দপ্তি ছিল। ভাল দেখাইবে বলিয়া তাহাবা সোনার গয়না ও মদলিনের ফুলতোলা কাপড় পবিও। নগরে মাঝে মাকে খুব উৎসব হইত, ভাহার একটি অঙ্গ ছিল ঘাঁড়েব লডাই। মেগান্তে নাসের বিবরণ পড়িয়া মনে হয় গে, নাগরিকদের বেশ সহজ ছিল। ভারতীয়দের খাওয়া-দাওযার নিয়ম কিন্তু মেগান্তেনীসের ভাল লাগে নাই। তিনি বলিযাছেন যে. গাওয়ার কোনো বাধা সময় ছিল না এবং খাওয়াব সম্য ভাহারা একলা খাইত। এই চুইটা গুণ আমাদের এখনো অনেক পরিমাণে আছে, না গ

গ্রীক ঐতিহাসিকগণ কিন্তু সন্ধান কয়েকটি অবিশাস্ত কণা লিখিয়া ভারতবর্ষে নাকি এক প্রকার গিয়াছেন। লোক থাকিত তাহাদের কান এত বড ছিল যে, তাহারা কানের উপরেই শুইয়া থাকিত। আর এক রকম লোকের নাকি তিনটি করিয়া চোথ থাকিত, এক রকম পিঁপড়া ছিলু তাহারা নাকি মাটী হইতে সোনা খুঁডিয়া বাহির করিত, ইত্যাদি অনেক হাস্তকর কথা দেখিতে পাওয়া যায়। বলাবাললা, এই স্ব কথা ভোমরা হাসিয়া উড়াইয়া দিবে। ভারতের লোকেরা নাকি লিখিতে পড়িতে পারিত না, লোকে টাকা লইয়া শোধ না করিলে নাকি হাকিমের কাছে কোনও বিচার হইত না। মেগাম্বেনীস এই সব কথা কতদুর লিখিয়া গিয়াছিলেন, বলা শক্ত।

কারণ, তাঁহার বই আর পাওয়া যায় না। বে সব পরবর্তী ঐতিহাসিক তাঁহার আছের সাহায্য লইয়া নিজেরা এছ লিথিয়াছেন, তাঁহারা অনেক কথা কল্পনায় রঞ্জীন করিয়া লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন।

মেগান্তেনীস যে প্রজাদের স্থপ-সাচ্ছন্দোর উল্লেখ করিয়াছেন, চন্দ্রগুপ্তের কঠোর ও স্থব্যবন্থিত শাসন ভাহার একটি প্রধান কারণ, তাহাতে সন্দেহ নাই। ইহা হইতে বোঝা যায় যে, তিনি কেবল দেশ জয় করিয়াই ক্ষান্ত হন নাই, দেশের শাসনের দিকেও তাঁহার প্রথর দৃষ্টি ছিল। তখন-কার দিনে দ্ব দেশে শীখ যাভাযাতেব কোনও উপায় ছিল না তৎসংগ্ৰে তিনি যেরপে পারিদ্শিতার স্থিত ভাঁচার বিশাল সাত্রাজ্ঞাসন করিতেন, তাহাতে উাগ্র প্রশংসানাকরিয়া থাকিতে পারা যায় না। চন্দ্রগুপ্তের পব তাঁহার পুত্র বিন্দুসার প্রায় খুষ্টপূর্নর ৩০০ অকে সিংহাসন লাভ করেন। ত্রীক ঐতিহাসিকগণ ভাহার নাম দিবাছেন Amitrochades বা অমিত্রখাদ (শক্তজ্যী)। একবাব তিনি সীরিয়ায় প্রাক রাজা আন্তওকদ্ সোতেরের •িকট কিছু ফল, আঙরের মদ একজন গ্রীকপণ্ডিত ঢাহিয়া পাঠাইয়াছিলেন। অন্তিওকস ফল ও মদ সানন্দে পাঠাইয়া দিলেন, কিন্তু স্কে সঙ্গে বলিয়া পাঠাইলেন যে, গ্রীকগণ কোন্ড পণ্ডিত বিক্রেয় ক্রাপাপ ব্লিয়া মনে করে। বিন্দুসাবের রাজতে রাজ্যের

বিন্দুসাবের রাজত্বে রাজ্যের সর্ব্বত্র আশাস্থ্যি উপস্থিত হয়। একবার ওক্ষশিলায় বিদ্রোহ হওয়ায় বিন্দুসার তাহার পুত্র অশোককে এ প্রদেশের শাসক করিয়া পাঠান। অশোক অতি সহজেই প্রজাদিগকে শাস্ত করেন। পরে তিনি আবার উচ্জ্যিনীর শাসকরূপে প্রেরিভ হন। প্রায় খৃষ্টপুব্ব ২৭৪ অন্দে বিন্দুসারের মৃত্যু হয়।



# যুদ্ধে শব্দ-বিজ্ঞানের ব্রাবহার

বিগত মহাযুদ্ধের সময় লণ্ডনে রাত্রে উড়োজাহাজেব খুব উপদ্রব হহত। সে সময়কার

কথা মনে পড়িলে এখনও মনে আতঙ্ক হয়। রাত্রে লোকে গাঢ় নিদ্রায় অভিভূত, সমস্ত

भरुद्र हें नक्षि नारे। श्ठां९ উড়োशस्त्र भी শুনা গেল এবং সঙ্গে সঙ্গেই আক্ষোটকের শব্প এবং বাড়ীনর ভাঙ্কার কড়্কড় भक्त। हानिक्टिक टेह-टेह পড़िया रशन। नांधांत्रन লোকেরা কি করিবে, খির করিতে না পারিয়া বাতিবাস্ত হইয়া চারিদিকে পলাইতে লাগিল। মুহুর্তের মধ্যে বালকের ক্রন্সনে, মাতার চীৎকার এবং মুমূর্র আত্তমরে সহর ভরিয়া গেল। অক্তদিকে দৈক্সবিভাগের কণ্মচারীরা শক্রর উডো-জাহাজ ধ্বংস করিবার জন্ম ব্যস্ত . হইয়া পড়িলেন। চারিদিকে টেলিফোনে (Telephone) উড়োজাহাজের গতিবিধির উপর থবর পাঠান হইল। অবস্থা বৰ্ণনাতীত। আমাদের পরম সৌভাগ্য, ভারতবর্ষে এইরূপ শত্রুর উপদ্রব হওয়ার সম্ভাবনা খুব কম। কারণ, একদিকে হিমালয়ের উচ্চ চূড়া এবং অক্সদিকে বিশাল সমুদ্র ভারতবর্ধকে রক্ষা করিতেছে।

যুদ্ধের সময় যাহাতে উড়োজাহাজের চালকেরা লোকালয় চিনিতে না পারে, সেইজ্ঞা সে সময় রাত্রে রাস্তায় বা বড় বড় কারথানায় আলো আলাইবার ত্রুম ছিল না। সমস্ত সহর অল্পকারে শক্ষিত অবস্থায় চুপটি করিয়া বসিয়া অনেক সময় রাত্রি কাটাইত। রাত্রে ভাল দেখিতে না পাওয়ায় গোলাবর্ষণকারীর লক্ষা ভ্রষ্ট হইজ এবং শক্রর উড়োজাহাজ্পকে ধ্বংস করাও কঠিন হইয়া উঠিত, কারণ, কিছুই দেখা যাইত না। সময় সময় খুব শক্তিশালী সন্ধানী বাতির

(Search light) দারা আকাশ-পথে অন্নেইণ করা হইত। কিন্তু তাহাতেও এক ভয়ের

কারণ ছিল, সেহেতু সন্ধানী-বাতির ঘারা শক্রদেরও স্থান নির্দেশ করিবার স্থাবিগা হইয়া যাইত। কাজে কাজেই, সন্ধানী বাতি ব্যবহার করা বন্ধ করিতে হইল এবং কেবল উপরকার গো গো শল অনুসরণ করিয়া তাহাদের সাময়িক স্থিতি বুঝিয়া নিম হইতে ধ্বংসকারী গোলা ছোড়া হইত। কিন্তু শল ভেদ করিয়া উড়োজাহাজের থবর লওয়া বা উর্দ্ধে তাহার স্থান



>নং চিত্র — উড়োজাহাজ উর্দ্ধে শব্দ করিতেছে
নির্ণয় করা অভিশয় কঠিন। >নং চিত্রে উর্দ্ধে
উড়োজাহাজ শব্দ করিতেছে এবং সেই শব্দ কি প্রকারে
গাঁকাবাকা পথে নীচে নামিয়া আদে, ভাহাই শব্দের
পথ-নির্দ্দেশক রেখা : নারা দেখান ইইয়াছে। এই
রেখাগুলি টানিবার সময় পূর্বোক্ত কথাগুলি, শুরণ

## □+++++ ++ সুজে শক বিজ্ঞানের ব্যরহার +++++

রাখা হইমাছে যথা, উপর হইতে নীচে নামিলে তাপ ক্রমশ: রৃদ্ধি পাওয়ায় শব্দের গতিবেগও বাড়ে এবং সেই কারণ শব্দের পথ নিদ্দেশক রেখার গতি আঁকিয়া বাঁকিয়া যায়। একথা পুর্কেই বুঝান হটয়াছে।

আরপ্ত একটি কথা বুঝিতে ংইবে। শক্ষ যদি বায়ুপ্রবাহের দিকে হয়, তাহা হইলে শক্ষের গতিবেগ
বাড়িবে এবং বায়ু বিপরীত হইলে শক্ষের গতিবেগ
কমিয়া যাইবে। মনে কর, শক্ষের গতিবেগ ১২০০
কিট এবং যেদিকে শক্ষ বিস্তার করিতেছে সেই
দিকেই বায়ু সেকেণ্ডে ২০ কিট অগ্রসর হইভেছে।
ভাহা হইলে শক্ষের গতিবেগ সেই দিকে ১২০০ কিট
হইল। কিন্তু বিপরীত

দিকে ১১৮০ ফিট
মাত্র হইবে। দিতীয়
কথা, তাপের স্থায়
উপরে উঠিলে বায়র
বেগ কমে না বরং
বৃদ্ধি পায়। ২নং চিত্রে
বায়ুর বেগ কেমন
উচ্চতা হিসাবে বাড়িতেছে, তাহাই দেখান
হুইয়ুছে।

তথন ভাবিয়া দেপ,
বায়ু এবং তাপের
ভতিবৃদ্ধি হও্থায়
শব্দের পথ কতই
ভাটিল হইয়া উঠিবে।
বায়ুর বেগ কুখন কি

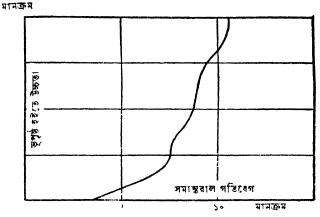
পাকে তাহা নির্দারণ করা বড়ই কঠিন। কাজে কাজেই, শকভেদ করিয়া উড়োজাহাজ ধ্বংস করা অভিশয় কঠিন ব্যাপার।

১মং চিত্রে আমরা দেখিতেছি যে পূধিবীর উপর যে দিক হইতে শক্ষ আদিতেছে উড়োজাহান্ধ মোটেই সেই দিকে অবস্থান করে না। শব্দের আঁকা-বাঁকা জাটল পথ দেখিলেই তোমরা ইহা বৃঝিতে পারিবে। পূথিবীর উপর শব্দের পথ অনুসরণ করিলে শব্দকর বারীর উচ্চতা অতি অল্প মনে হইবে। কিন্তু শব্দের পথ প্রদর্শক রেথার পিছু পিছু গেলে আমরা শব্দকারী উড়োজাহাজকে ধরিতে পারিব। অতএব গোলাবর্ষণ-কারীদের নিকট শব্দের পথপ্রদর্শক ম্যাপ থাকিলে তাহারা অনায়াদে শক্ষর উড়োজাহাজকে লক্ষ্য করিয়া ধবংশ করিয়া নিব্দেরা নির্বিদ্ধে ঘুমাইতে পারিবে।

ভোমরা হয়ত মনে করিডেছ যে, এই প্রকার

উড়োজাছাজের সংস্থিতি বাহির কারতে যত সময় লাগিবে সেই সময়ের মধাে সেই উড়োজাহাজ অম্বত্ত পলাইয়া গাইবে। বাস্তবিক পক্ষে মোটেই সময় লাগে না সকল প্রকার উপদেশের নলা (Chart) তৈয়ার থাকে। পৃথিবীর উপর শক্ষের পদের দিক্নিণ্ম করিয়া এবং চাট দেখিয়া ওৎক্ষণাং গোলাবর্ষণকারী (artilley man) কে টেলিফোনের হারা জানাইয়া থাকেন এবং সকল কাজ খুবই ভাড়াভাড়ি স্থসম্পন্ন হুইয়া থাকে।

তোমরা জান, সমুদ্র গভে পাহাড় পাকিলে জাহাজের পক্ষে কভ বিপজনক বিশেষভ: রাত্রে



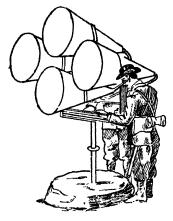
২নং চিত্র—বায়ুর বেগ উচ্চতা হিসাবে বাড়িতেছে

এবং ক্যাসার সময়। সেইজন্ত সেই সমুদ্রে নিময় ছোট ছোট পাহাড়ের উপর আলোক-স্তম্ব (Light House) তৈয়ার করা হ্ইয়াছে। সেথানে রাজে রেল-এঞ্জিনের সার্চ্চ লাইটের মতন আলো ছড়াইয়া নিকটবর্ত্তী জাহাজকে সুতর্ক করা হয়। এইরূপ



তনং চিত্ৰ—ফগ হর্ণের শন্ধ-রেথা
আলো প্রায় > নাইল পর্যান্ত দেখিতে পাওয়া
বায়। কিন্তু ঘন ক্রাদার সময় আলোক সেই
ক্রাদা ভেদ করিতে পারে না। তথন ক্রাদাভেনী (Fog Horn) ঘারা সতর্ক করিয়া দেওয়া

হয়। এঞ্জিন দ্বারা কারখানার 'ভেণ'র মতন খুব কোল্লে ভেরী বাজান হয় এবং সেই গভীর শক্ষ দশ বারো মাইল পর্যান্ত সচরাচর শুনিতে পাওয়া যায়। কিন্তু বায়ুর বেগ পাকিলে শক্ষের পণ কি ভাবে বায়ুর গাতর দিকে এবং তাঁহার বিপরীতে থাকিয়া দাকিয়া যায়, ভাহাহ কনং চিত্রে দেখান হইয়াছে। এই



চনং চিত্র—শক্তাহিক হর্ণ
রেগা টানিবার নিয়ম পূর্বেই বিশ্বভাবে ব্লিয়াছি।
দেখ, শক্ষের পথপ্রদর্শক রেখা বায়র অন্তর্কুল দিকে
কেমন বু'কিয়া পড়িয়াছে। সকল রেখা গুলি
উপরে ভেরী হইতে যাতা করিয়া নিয়ে পৃথিবীর
উপন পৌছিতেই পারে না বরং কোনও এক উচ্চ
স্থান হইতে প্রতিধ্বনি দিরিয়া উপরে উঠিয়া যায়।

বে সুকল স্থানে শব্দের রেখা মোটেই পৌছিতে পারে না, সে সকল স্থানে জাহাজ থাকিলে মোটেই শক্ত ভনিতে পাইবে না। জাহাজ শক্ষের ছায়ার (sound shadow) মধ্যে অবহান করিলে তাহার পক্ষে বড়ই বিপজনক। এই সকল কারণে আজনকাণ (Signalling by Fog Horn) অথবা কুয়াসা ভেরীর কথা বৈজ্ঞানিকেরা বিশেষভাবে ভাগোচনা কারতেভেন।

আমরা এথানে যুদ্ধ এবং শাস্তির সময় শক্ষবিজ্ঞানের ব্যবহার বৃঝাইলাম। এইরূপে আমরা
প্রকৃতির নিয়মগুলিকে আমাদের ধ্বংস বা রক্ষা
করিবার কাজে লাগাইতে পারি।

৪নং চিত্রে দেখ, ছইজন সৈনিক উড়োভারাছের সংস্থিতি নির্ণয়কায়ী যন্ত্র ব্যবহার করিতেছেন। 🍁 ই যথ উদ্ধে স্থান নির্ণয় করিবার ছইটি হর্ণ (Horn) বাবহার করা হয় এবং সৈনিকের দক্ষিণে কিংবা বামে শক হটতেছে কিনা জানিবার জন্ম পাশাপাশি চুইটি চোং লাগান থাকে। প্রত্যেক চোং ২ইতে একটি নল ডাক্তারদের ষ্টেথিসকোপের স্থায় প্রতোক প্রবেশ করান হয়। হণ গুলি উপরে নীচে এবং এদিকে ওদিকে পুরাইয়া উঞ্জোজাহাজের সংস্থিতি নিণয় করা হয়। বিগত মহাধুদ্ধের সময় এইরূপ যথু বাবহার করা ১ইত। এখন এই যথের আরও উন্নতি চইখাছে এবং অতি অৱ সময়ের মধ্যে সকল কাজ স্থস্পর হুইয়া থাকে। ভুবোজাহাজের গতিবিদি দুর হুইতে জানিবার জন্তও এক প্রকার যন্ত্র বাবহার করা হইয়। থাকে। তাথাকে (Hydrophone) করে। তাথার বিবরণ আমরা অন্য সময়ে বলিব।



# দর্শনের কথা

তোমরা অনেকেই হয়তো আবু হোসেনের গল্প
ভনেছ। বোপাদের থলিদা ছিলেন হারন আর রশীদ
— তাঁর মতন নাম করা রাজা ছনিয়ায় থুব কয়ই
হয়েছেন। প্রজাদের সভিয়েলার অবহা কি রকম,
তা নিজের চোথে দেখবার জক্স তিনি ছয়বেশে
কথনো ভিথারী, কথনো সওদাগর এইরপ নানা
বিভিন্ন সাজে খুরে বেড়াতেন। সঙ্গে গোক-লয়র
আমীর-ওমরাহ কেউ থাকত না, কেবল উজীর
জাদর তাঁর সঙ্গে সঙ্গে থাকতেন। এমনি করে
খুরে খুরে অনেক সময় তিনি কত বিপদে
পড়েছেন, অনেক সময় গুব মজার ব্যাপারও হয়েছে।
তারই একটি গল্প শোন।

আবু হোসেন ছিলেন বোগ্লাদের এক ধনী সওদাগরের ছেলে। বাপ অনেক টাকা-পয়সা রেখে গিয়েছিলেন। কাজেই, তাঁর আর ভাবনা কি ? বন্ধ-বান্ধব নিয়ে আমোদ-আহলাদে দিন কাটান। व्यवस्थार कोए अक्तिन (श्यांन क्'न होका-भयना ফুরিয়ে এনেছে, এমন ক'রে আর বেশী দিন চলবে না। বন্ধুর দলও তথন কোথায় থগে পড়ল-হোসেনও ভাব্লেন, যাক বাঁচা গেল। হোসেনের किञ्च लाकस्रमारक थाहेरह भूर व्यानम त्वाध इ'छ। তিনি তাই ঠিক করলেন যে, এখন অবস্থা থারাপ ব**লে তো আর** আগের মন্ত দেদার হ-হাতে টাকা খরচ ক'রে ভোজ দেওয়া চলবে না—রোজ সন্ধ্যায় যার সঙ্গে প্রথম দেখা হবে তাকেই থেতে নেমন্তর করবেন। বোগ্লাদের বড় বাজারের কাছে একটি পুল ছিল—রোজ সন্ধায় সেথানে গিয়ে হোসেন দাঁড়াতেন, যার সঙ্গে প্রথম দেখা হ'ত, তাকেই বাড়ীতে ডেকে আনতেন।

अभित्क विरम्भी अ**शिक शिक्ष शांत्रन, आ**करत्रत्र শঙ্গে ঘুবছেন, এমন দময় প্রবের উপর হোসেনের সঙ্গে তাঁর দেখা। হোসেনতো অমনি তাঁদের রাভিরে থাওয়ার নেমন্তর করলেন, থলিফাও রাজী হয়ে তাঁর সঙ্গে চল্লেন। থাওয়া-দাওয়ার সময় গলে গলে হোসেন তার জীবনের সব কথা পলিফাকে অবশেগে কথায় কথায় খলিফার জীবন যে কি রকম. टा (मथ उ তার বড় ইচ্ছাকরে। একদিনের জ্বন্থ থশিকা হ'তে পার্লেও তার জীবনে আর কোনো খেদ থাকত ন।। হোদেনের খোলাখুলি হাসিখুসী ব্যবহার থলিফার খুব ভালো লেগেছিল ভিনি ঠিক করলেন যে, তাঁর ইচ্ছা পূর্ণ করবেন। কৌশল ক'বে হোদেনের সরবভের মধ্যে ভিনি একটা ওষুধ মিলিয়ে দিলেন, থেয়েই খুমে ছোসেন চলে পড়লেন।

হোদেনের যথন ঘুম ভাঙলো, তথন বেলা জনেক হয়েছে, কিন্তু চোথ মেলে তিনি একেবারে অবাক্। রোজ ঘুম ভেঙে ঘরের পরিচিত পুরানো আসবাব-পভর চোথে পড়ে, কিন্তু আজ যে সব সোনায় রূপোয় বাধানো ঝক্রকে আসবাব, এ সব এল কোথা থেকে ? ভালো ক'রে চোথ রগড়ে আবার তাকিয়ে দেখেন যে, ভুলভো হয়নি, সন্তিটি সমস্ত আস-বাবপত্র এমন দামী আর ঝক্রকে যে, জীবনে কোনোদিন তিনি তেমন জিনিস দেখেন নি। আর শোবার ঘরেরই বা হ'ল কি ? মার্কোল পাথরে বাধানো, চারিদিকে কিং-থাপের পদা, খরের কোণায় কোলার ফোরা। পালঙ্ক হাতীর দাতের, তাতে মথ্যনের গদি—বিলাসের যে এত উপকরণ আছে, সে কথা হোসেন কোনো-দিন ভাবতেও পারেন নি।

থানিকক্ষণ পরে একটু একটু বিখাদ হ'ল যে, এ সব স্ভিচ, কেবলমাত্র স্বল্প নয়। তথনও কি ৮০ কোথার ? একজন বাদী উত্তর দিলে, কেন, জাহাণনা তে! প্রাসাদেই রয়েছেন ! বোপ্পাদের খলিফা শাহানশাহ বাদশাহ বলে সকলে তথন তাঁকে অভি-বাদন কর্ল। হোসেন আরো আশ্রুগ হয়ে

আবু হোসেন ভাবছেন, কোন্টি স্বপ্ন আর কোন্টি সভ্য

হোসেন কিছুই বুঝতে পারছেন না; ভাবছেন যে,
এক রাজিরে হ'ল কি ? উঠতে যেতেই বাদীরা
সোনার বাটিতে ক'রে জল নিয়ে এল, কেউ চামর
দিয়ে বাডাস করতে লাগল; জিজ্ঞেস কর্ল,
জাহাপনার রাজিরে ঘুম ভালো হয়েছে তো?
হোসেনের আরো আশ্র্যা লাগল—ভাব্লেন যে,
জাহাপনা বলে কারে! জিজ্ঞেস কর্লেন—আমি

জিজাসা কর্লেন—
থলিফা বল্ছ কাকে 
কাল রাভিরে আমি
নিজের বাড়ীতে গুমোলাম— তখন ছিলাম
বোগ্দাদের সন্তদাগর
আবু ছোসেন, আর
আজ ভোরে বৃদ্ধ ভেঙে
দেখি যে, বোগ্দাদের
থলিফা হয়ে গেছি!
আমি কি জেগে জেগে
স্থা দেখছি 
?

বাদীরা উত্তর দিল

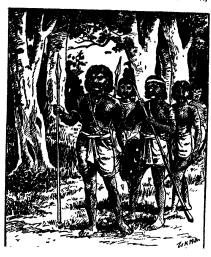
— জাহাপনা বলুছেন
কি ? আরু হোদেন
কে ? আরু আপনিই বা
সওদাগর হ'তে থাবেন
কেন ? বোগদাদের
থলিফা আপনি—
আপনি তো চিরদিন
এই প্রাসাদেই থাকেন।
আরু হোসেন্টেই
আপনি বোধ হয় স্বপ্রে
দেখেছেন।

হোসেনের তথন
মনে হ'ল ধে, হবেই বা
—সত্যই বোধ হয়,
তিনি বোপাদের
থলিফা—আবু হোসেনের কথাই তিনি
বংগে দেখেছেন।

গরের শেষ বোধ হয় তোমরা জানো। ছই এক
দিন পরে হারন আর রশীদের হুকুমে আবার
হোসেনকে তার নিজের বাড়ীতে রেথে আসা হ'ল
—সেথানে জেগে তথন তাঁর ধাঁধা লাগল, যে,
কোন্টি স্থা আর কোন্ট সত্য। এ রক্ষ
ছই-তিন বার প্রাসাদ থেকে বাড়ী, বাড়ী
থেকে প্রাসাদে নেওয়ার ফলে হোসেনের মনে

তথন সত্য সতাই সন্দেহ হ'ল যে, তিনি কি ? সভিটে তিনি সওদাগর আবু হোসেন, না, বোণ্ণাদের থলিফা হারন আর রশীদ ? শেষে থলিফা যথন তার সমস্ত ব্যাপারটি বলেন, তথন তার সন্দেহ যুচ্ল – নিজের সব্বন্ধে নিজেরই অনিশ্চয়তা দূর হ'ল।

আবু হোদেনের ফুর্গতির কথা ভেবে তোমরা হয় তো হাস্ছ। কিন্তু বেচারী করবেই বা কি ? তোমরা যদি তাঁর অবস্থায় পড়তে, তবে তোমরাই বা কি করতে ? ধর, রোজ সকালে উঠে তোমরা দেথ ফুর্যা উঠেছে—বাড়ীতে তোমাদের জ্বস্তু থাবার তৈরী.



জন্ধলের মধ্যে বাবরী-চুল লাঠিওয়ালের। গুরে বেড়াচেও
পড়া করে স্কুলে যেতে হবে। কোনোদিন উঠে যদি
দেখ যে, স্থা ড্রু-ড়ুর বা ওঠেই নি, তবে কি
ভাব্বে ? তার পরে যদি ঘুম ভেঙে দেখ যে, জনমন্ত্র্যাণীন প্রকাণ্ড জন্মলের মধ্যে রয়েছো, দেখানে
বাবরী-চুল লাঠিয়ালের। ঘুরে বেড়াচ্ছে, তবে
কি ভাব, বলতো ? তথনো কি তোমাদের
নিজেদেরকে স্কুলের ছেলে বলেই মনে হবে,
না, ভাব্বে যে, তোমরা ডাকাতের দলের সন্ধার ?

রোজ রাজিরে আমরা সকলেই স্বপ্ন দেখি—স্বথে কেউ হয় রাজা, কেউ হয় গুণী, কেউ হয় সঞ্চদাগর। কত অসম্ভব ঘটনা ঘটে তার মধ্যে, কতদিন কেটে বায় !—হয় তো স্বপ্ন দেখ্লে যে, সাত বছরই কেটে গেল। কিন্তু ভোৱে জেগে তখুনি মনে পড়ে যে, সাত বছর কেমন ক'রে কাটবে, সন্তিটে তো মোটে কাল রান্তিরে ঘুমোতে গেছি। তথন থেকে ১২ ঘণ্টা মোটে হয়েছে। কোন্টা সন্তিয়, কোন্টা মিথাা তা ঠিক কর কি ক'রে? যতক্ষণ স্থপ্প দেখি, ততক্ষণ তো মনে হয় থে, তাই সন্তিয়—সেটা যে স্থপ, সে-কথা কথনো ভাব তেই পারি না। তেমনি, যথন জেগে থাকি, তথন জেগে থাকাটাই মনে হয় সন্তিয়, কিন্তু সেটাও ঘুমের স্বপ্পের মতন, আর একটি স্থপ্প নয় তা জানবে কি ক'রে? স্বপ্পের সঙ্গে জেগে থাকার মিল নেই, কিন্তু কেবল তাপেকে কোন্টি সন্তিয়, কোন্ট মিথাা তা ঠিক করা চলে না।

সভিচ্মিথা। ঠিক কিন্তু আমরা করি। আর ঘটনাব সঙ্গে ঘটনার মিল থেকেই আমরা তা ঠিক করি। স্বপ্লেব সঙ্গেষে কেবল জেগে থাকার মিল নেই, তানয়। তা যদি হ'ত, তবে স্বপ্ন আর জেগে থাকার মধ্যে সভাি মিথাা ঠিক করা যেতই না। স্থাের স্কেও স্থাের মিল নেই ব'লে আমরা বলি তাকে মিথ্যা — আর জেগে থাকার সমস্ত ঘটনার মধোই মিল আছে ব'লে তাকে বলি স্তা। স্বপ্নে আমরা দেখি যে, আজ হয়েছি বাজা, কাল হয় তো ডাকাতের সন্দার। আজ গেছি চীনে, কাল গেলাম আরবে—এমনি দমস্ত ঘটনার ছড়াছক্তি, আব তাদের একটির সঙ্গে আর একটিকে খাপ খাওয়ানো যায়না কিন্তু জেগে থেকে আজ যদি ঘরে টেবিল চেয়ার দেখে পাক। ভবে কালও ঠিক তাই দেখবে, আর যদি দেখতে না পাও, তথনি তার কারণ থঁজে পাবে। মা এপে হয় তো বলবেন যে, খর ধুতে হবে ব'লে টেবিলটাকে সরিয়ে রাখা হয়েছে। এমন যদি হ'ত যে, রাভিরের পর রাভিরে রোজ একই স্বপ্ন দেখাছ --- আজ দেখ্লে যে, তুমি বিলেড বেড়াতে ধাবে ব'লে জাহাজে চড়েছ, কাল দেখুলে যে, জাহাজ সমুদ্রের বুকে চলেছে, পর পর এমনি করে (पथ्ह (य, चंग्रेना ठिक नाकाता यखन चाँग्रह,---তাহ'লে তথন সভ্যি সন্দেহ হবে যে, কোন্টা गिकानात्र,-- मिरानद्र (वना क्लर्श शाका, ना, द्राखिद्र স্বপ্ন দেখা। আবু হোসেনের কপালে দিনের বেলায়ই এ ব্ৰহ্ম গোল ঘটেছিল।

তোমর। এসব বিষয়ে কোনোদিন ভেবেছ কি না, জানিনে—কিন্ত যদি ভাব তে ত্বরু কর তবে দেখবে যে, ব্যাপারটা মোটেই সহজ্ব নয়। এমান ভাবে দেখতে গেলে এর মধ্যে যে কোনো গোল আছে, বা কোন গোল থাক্তে পারে, তা কথনো মনেই হয় না, কিন্তু সতিয় সতিয় যে বাাপারটা খুবই গোলমেলে একটু ভাবলেই দেখা যায়। সতিয়ই যদি বাাপারটা নেহাংই সহজ্ব হবে, তবে আমরা ভূল করি কেমন করে ? যতক্ষণ আমাদের কোনো বিষয়ে ভূল থাকে ততক্ষণ যে ভূল করেছি, সেকথা মনেই হয় না—যথন ভূল ভেঙে যায়, তথান প্রথম জানতে পারি যে, ভূল হয়েছিল। তোমাদের ফাষ্টার মশাইরা আঁক ক্ষতে দেন, নানা রকম পড়া তৈরী করতে দেন। সে-স্ব করতে তোমাদের অনেক সময় অনেক ভূলও হয়ে থাকে, কিন্তু তাকে ভূল বলে জেনে কি কেউ কথনো মাষ্টারের কাছে নিয়ে আসে? তোমরা ভাবো যে, অঙ্ক ঠিক হয়ে গেছে, শেষে মাষ্টার মশারের বকুনি ভবনই হয় তো প্রথম ভূল ধরতে পার।

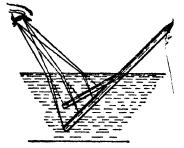


...বকুনি শুনে হয় তো ভূল ধরতে পার
স্বপ্নে আময়া যা দেখি, স্বপ্নের মধ্যে তার বাতবতা
নিয়ে কোনো সন্দেহই মনে আসে না— স্বপ্নের চেয়ারে
বসে স্বপ্নের টেবিলে আময়া নিশ্চিন্ত মনে পড়ালেখা
করি, স্বপ্নের রেলগাড়ীতে ক'রে স্বপ্নের নদ-নদীপাহাড় পার হয়ে যাই। জেগে থাকার বেলাও তেমনি



বুনো মোষ শিং বাগিয়ে বসে আছে

জেলে থাকা সম্বন্ধ কোনে। সন্দেহ সাধারণতঃ মনে থাকে না, কিন্তু মাঝে মাঝে এমন ভূল ক'রে বসি যে, তথন আরু মাগেকার মত নিশ্চিত্ত থাকা বার না। সন্ধার অন্ধকারে চল্তে চল্তে গাছের গুঁড়ি দেখে বনে হয় যে, বুনো মোষ শিং বাগিয়ে বসে আছে, গাছের আনাচে-কানাচে আক্ষলারে একশোটা ভূত নানাভাবে এসে ভয় দেখায়। কেবল এতেই কিন্তু শেষ নয়—সম্পূর্ণ জাগ্রত অবস্থায় ও দিনে-চুপুরে আমরা নানা রকম চোখের ধাধা দেখি। মরুভূমিতে মরীচিকার কথা ভোমরা ওনেছ—ধৃ-ধ্-করা বালির মধ্যে দেখানে মনে হয় যে, দীবিতেজল টলমল করছে। ঘরোরা বাাপারই না হয় দেখা যাক্। একটা পেন্দিল যদি তলে ভূবিয়ে রাখ, তবে দেখ্বে যে, পেন্দিলটা



জলের মধাে পেন্সিলটা খেন ভৈঙে গৈছে যেন বৈকে গেছে—যদি হাত দিয়ে হল নাড়াও, তবে সঙ্গে দক্ষে দেখবে যে, জলের মধ্যে পেন্সিলটা একবার ভেঙ্গে যাচে, একবার জোড় লাগছে। তাই বলে সভিয় সভিটে কি পেন্সিলটা বাকা প সভিয় সতি কি পেন্সিলটা একবার ভাঙে, একবার জোড় লাগে প হাত দিয়ে ছুলেই মনে হয় যে, পেন্সিল ঠিক সোজাই আছে. মোটেই ভাঙেনি, কিয় চোখে ত স্পষ্ট দেখ্তে পাচ্ছি যে, পেন্সিলটা ভাঙা, জলের মধ্যে বেঁকে গেছে।

এই সব নানা কারণে আমরা যা দেখি, যা ভাবি, সে-সব সম্বন্ধে সত্যি-মিথ্যা বিচারের কথা ওঠে। ঘটনার সঙ্গে ঘটনার মিল দিয়ে অনেকে সে বিচার চায়, তা আমরা দেখেছি। জলের মধ্যে বাঁক। পেন্সিল দেখতে পাই, কিন্তু পেন্সিল ছুলে পরে তা মনে হয় না, ছৌওয়ার সঙ্গে দেখার র্থাকে না। তার পরে যথন পেশিলটা ক'রে নি. ভথন ভাকে বাকা মনে হয় না—জনের মধ্যে ছুঁয়ে যামনে হয়েছিল বাইরে এনে ছুমে এবং দেখেও তাই মনে হয়। তাই এ সমন্ত মিল দেখে বলি যে, পেন্সিলটা দেখাই হ'ল ভূল—আসলে বাঁকা নয়। তারপরে পেন্সিলটা বাঁকা কোনে ঠিক নেই--্যদি জলের এ-ধার

পেশিলটার দিকে তাকাই, তবে মনে হয় বে, তা ডাইনে বাঁকা, কিন্তু ঘুরে গিয়ে অন্ত দিক থেকে তাকালে মনে হয় বে, তা নয়—পেশিলটা বাদিকে বাঁকা। এমনি, আমাদের জায়গা বাদলের সঙ্গে পেশিলটাও নানাদিকে বেক্তে থাকে— একটার সঙ্গে আর একটার কোন মিল থাকে না।

মিল দেখেই কি তাহলে আমরা সত্তি: মিথাা ঠিক করি ? তা বলেও কিন্তু নিস্তার নেই, কারণ, তথন নতুন নতুন নানা প্রশ্ন ওঠে। কোনো জিনিষের সঙ্গে যে অন্ত কোনো জিনিহ থাপ থাচ্ছে, তা জানা যায় কি করে ? আর কেই বা তা জানে ? আমি আজ ভোৱে উঠে দেখলাম যে, মেঘ করেছে, পূর্বে আকাশে পূর্ণার দেখা নেই। কাল যে পূর্বা উঠেছিল সে-কথা মনে রইল কি ক'রে ? আর যে-আমি কাল পূর্বা ওঠা দেখেছিলাম, দে-অামির সঙ্গে আজ সকালকাব আমির কি সংস্ক ? অপে তো দেখেছি যে, কথনো আমি রাজা, কগনো আমি জাহাজের কাপ্তেন সেই সব "আমির" সঙ্গেই বা আমার আজ সকালকার জেগে থাকা আমির কি সংস্ক ?

এ-সব আলোচনা পবে আর একদিন করা যাবে -- আজকে কেবল আর একটা মৃশ্বিলের কথা বলব। স্ত্রি-মিথা সম্বন্ধে সন্দেহ না হ'লে মিল দেখার কথাই ওঠে না, অন্ত ঘটনার সঙ্গে কোনোঘটনার মিল আছে कि ना, त्म विषयः। भाषात्रा किছ ভাবিই ना । धन्न, আজ যে টেবিলে কাগজ বেখে লিগছি, এ টেবিল যে সত্যি সভাি টেবিল, তা জানতে আমাদের কালকের কথা মনে করার কোনো দরকার হয় না-কাল কি দেখেছি না দেখেছি, সে-স্ব ক্র্যা থেয়ালই করি না। তা ছাড়া দন্দেহ যদি ওঠেও, তবু কেবলমাত্র এক জিনিষের সঙ্গে অন্ত জিনিষের খাপ খাওয়াকেই কি আমরা সভাি মিথাা বলি ৪ সভাি মিথাা আমরা ঠিক করি তাই দিয়ে, কিন্তু সত্যি-মিথ্যার মানে থাপ খাওয়া বানাথাওয়ান্য। সভািবলৈ জিনিষ্টাথাপ থায় থাপ থায় বলে তা সজি। নয়। টেবিলটা টেবিল বলেই রোজ আমরা তাকে দেখি, রোজ আমরা তাকে দেখি বলেই তা সভাি সভাি টেবিল নয়।

অনেকে আবার ভাই বলে যে, ও-সব থাপ থাওয়া-না-থাওয়া কাজের কথা নয়। আসলে আমাদের মনটা হচ্ছে আয়নার মত—ভাতে বাইরের জিনিষের ছায়া পড়ে বলেই আমরা জানতে পাই। সে ছায়া যথন ঠিক ছায়া, তথন আমাদের জানাকে বলি সন্তিয়—তা

নইলে বৃলি ভূল। ভোমরাও হয় তো প্রথমে এমনি ক'রেই ভাবো। জ্বিনিবগুলি রয়েছে বাইরে, আমরা ভাদের বিষয় চিস্তা করি, আমাদের চিন্তা বধন জিনিবের সঙ্গে মেলে, তথনই ডা ঠিক হয়।

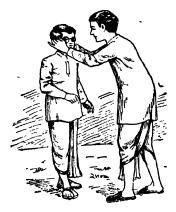
ব্যাপারটা যদি এত সহজ হ'ত, তবে তা নিয়ে মাথা ঘামানোর কোনো অর্থ ই হ'ত না। কিন্তু আনাদের মন যদি আয়নার মতনই হয়, তবে ভুল সম্ভব হয় কি ক'বে ? হয় জিনিধের ছায়া তাতে পড়ে, নইলে পড়ে না. কিন্তু সত্যি-মিথাার কথা ওঠে কেমন ক'রে গ তা ছাডা সত্যি-মিথ্যা কোনো রকম ক'রে সম্ভব হলেও আমরা তার কথা জানব কেমন ক'রে ? আমাদের মনে রয়েছে ছায়া—আমরা সেই ছায়াকেই জানি, কিন্তু তাহ'লে সে ছায়া জিনিবের ঠিক ছায়া কি না, সে-কথা ঠিক হবে কেমন ক'রে ? আর বদি বল যে জিনিষগুলি জানি বলেই চায়া ঠিক না ভল তা বঝতে পারি, তবে আর তার ছায়ার দরকার কি ? জিনিষগুলিই যদি জানি, তবে মনের মধ্যে তাদের ছায়ার তো কথাই ওঠে না-মনও তা'হলে আয়নাব মতন নয়, তাতে ছবি পড়তে পারে না। বরং বলতে পার যে, মনট। কাঁচের মতন —তার মধ্য দিয়ে সব পরিষার দেখা যায়। তা বললে কিন্তু ভূল ক'বে হয় সে-কথা আর বোঝানো যায় না। কাঁচ যদি পরিকার হয়, তবে তাব মধ্য দিয়ে আমবা किनिय (पिथ. ना (पथरिक (शत्न विन य (कारना 🖝 নিষ নেই — কিন্তু ভলেব তো কোনো কথা ওঠেন।।

এগন যদি বল যে, কাঁচও তে। নান। রকম হয়—
কোনোটার মধ্য দিয়ে সব জিনিষকে বড় দেখায়,
কোনোটার মধ্য দিয়ে সব জােট দেখায়; রঙীন
কাচের মধ্য দিয়ে সব জিনিষকে রঙীন দেখায়। তার
পরে আবার এক রকম কাঁচ আছে যে, তার ঠিক
মধ্য দিয়ে তাকালে জিনিষটাকে ঠিক দেখা যায়—
একটু এদিক ওদিক হ'লেই নানাভাবে বেকেচুরে
যায়। মনটাও হচ্ছে তেমনি কাঁচ—ভার ঠিক মধ্য
দিয়ে তাকালে জিনিষ ঠিক জানি। তা নইলেই
নানা রকম ভূল হয়।

এ কথা বলেও কিন্তু নিস্তার নেই ! আমরা ইচ্ছে কর্লে কাঁচ সরিয়ে ফেলতে পারি, তাই একবার এমনি ক'রে দেখে, আবার কাঁচের মধ্য দিয়ে দেখে বলি বে, এ কাঁচটার মধ্য দিয়ে দেখলে সব দিনিষ বড় দেখার বা রঞ্জীন লাগে। কিন্তু কাঁচ যদি না সরানো যার ? ধর, একেবারে ছেলেবেলার তোমাদের চোখে

### শিশু-ভারতী

রঙীন এক চণমা এমন ক'রে এঁটে দিলাম বে, সে চণমা কোনে। দিন থোলা যাবে না .. এমন কি চণমা রয়েছে দে-কথাও ভোমধা জান্তে পাবে না। ভাহলে কেমন ক'রে বুঝুবে যে. জিনিসগুলি স্তি। স্তি।



ভোষাদের চোথে রঙীন চশ্মা এঁটে দিলাম রঙীন নব—রঙীন চশ্মাব জন্ম তাদের রঙীন দেখাছে প তাহালে তোমরা চিবদিনই ভাব্বে যে, পৃথিবাতে বৃথি দব জি.নবই একরছা, কেবল কোনে। রঙ একট বেশা উজ্জন, কোনোটা একট কম। মন নিয়ে হয়েছে পেই অবহা। মনকে সরিয়ে ত আর আমরা জিনিব জানতে পারি না। কাজেই, মনকে বাদ দিয়ে জিনিযগুলি আসলে কি রকম সে-কথা ভাবা যায় না। রঙীন কাচই বল, আর ছোট-বড় করা কাচই বল, কিছুরই সঙ্গে তাই মনকে ডুলনা বরা যায় না। কাজেই আগেকার মুক্তিল থেকেই যায়। যদি জিনিবকেই আমনা জানি, তবে মনে তাদের ছায়ার কোনো দরকার নেই, কিন্তু ভাতে ভূল কেমন ক'রে হয়, সে-কথা বোঝা অসম্ভব হয়ে পড়ে। আর যদি মনে ছায়াই পড়ে, তবে জিনিব যে কিছু আছে, সে-কথা জানতে পাই না। কাজেই ছায়া ঠিক কি বেঠিক, সে কথা জিজাসার অর্থ থাকে না।

তোমাদের এ কথা গুলি বুঝতে বেশ কষ্ট হয়েছে,
না? কিন্তু প্রথম প্রথম এ রকম একটু কটিন
লাগলেও ক্রমে দেখ্বে যে, দর্শন জিনিবটারও রস
আছে। আমরা রোজ যা করি, যা ভাবি,
সেই প্রতিদিনের জিনিধের মধো এত রহস্ত
থাক্তে পারে তা মনে ক'রে তোমাদের অস্কৃত
লাগছে, না? কিন্তু এ রহস্ত যেমন অন্তুত, তার
উত্তর গুলি আরো বেশী অন্তুত লাগবে। নানা মুনির
নানা মত। তাদেব উত্তরগুলি জান্লে দেখ্বে যে,
মানুবের মনের মত মজার জিনিব পৃথিবীতে আর
কিন্তু নাই।





# थ्यात्न ७ भृत्य

মহাপ্ৰজাপতি গৌত্মী

বৃদ্ধদেব ও বৌদ্ধধর্মের নাম ক্রামিখ্যাত। এই বৃদ্ধদেবের বিমাতা ও মহারাজ ওদ্ধোদনের অন্ততমা পত্নীর নাম ছিল মহাপ্রজাপতি গৌতমী। দেবদহনগরে মহাস্তপ্প বৃদ্ধবংশে তাহার জন্ম। তারপর বড় হইবার সঙ্গে স

তাঁহার জন্ম। তারপর বড়হইবার সঙ্গে সঙ্গে তিনি শাক্যবংশের রাজাস্তঃপুরে রাণীহইয়া প্রবেশ করিলেন।

পুত্র সিজার্গ গখন তপজার বলে বুজ্পের হইয়।
দেশে ফিরিলেন, তখন সমস্ত রাজ্যে এক অপুকা ধর্ম
চঞ্চলতা দেখা দিল, শত শত লোক তাহার শিশুভ লইয়া ভিকু হইতে লাগিল। মহারাজ গুজাধন তত-দিনে প্রলোকে চলিয়া গিয়াছেন। রাণী গোত্মীর কাছে জাগ্র যেন শৃক্ত মনে হইতেছিল। বুজ্পেবের এই নৃতন ধর্মে তাঁহার মন মুগ্ধ হইয়া গেল। তিনি ইছ্ছা করিলেন, এই ধর্মে ভিকুণী ব্রত অবলম্বন ক্রিয়া তাঁহার শোকসক্তপ্ত শৃক্ত মন পূর্ণ করিবেন।

বুদ্ধদেব তথন কপিলাবস্ততে। মহাপ্রজাপতি সসম্ভ্রমে পুত্রের কাছে আসিয়া মনের অভিপ্রায় জানাইলেন। কিন্তু বুদ্ধ বলিলেন, স্বীলোকের ভিক্ষুত্রত লইবার অধিকার বা দরকার কিছুই নাই। আপনি যে এই শুভকাজের ইচ্ছা প্রকাশ করিয়াছেন, ইহাতেই যথেষ্ট হইয়াছে।

গোতমী শুনিয়া একেবারে মন্মাহত হইলেন।
ক্ষুত্রমনে বাড়ী ফিরিয়া গেলেন, কিন্তু মনের সঙ্কল
ছাড়িলেন না। তিনি নিজের একরাশ মাধার চুল

কাটিয়া ফেলিলেন এবং ভিক্ষুণীদের মত বেশভূষা ধারণ করিলেন। কিছুদিন পরে বুদ্ধদেব কপিলা-

বস্ব ছাড়িয়া বৈশালী নগরে গমন করিলেন। গৌতমী উপায়ন্তর না দেখিয়া বৈশালীতে

তীছার অনুসরণ করিতে মনস্থ কারলেন। শাকাবংশের আরও অনেক মাহলা তাছার সঙ্গ লইলেন।
পায়ে হাটিয়া অনেক কেশে অনেক দিনের শেষে
তাঁছারা আবার আসিয়া বৃদ্ধেন চরণে শরণ লইবার
বাসনা জানাইলেন।

বুদ্ধদেব তখনও অনিজ্ঞক। তাঁগার প্রধান শিশ্য আনন্দ এই পুরমহিলাদের ঐকান্তিক ধ্যাপিপাস। দেখিয়া মুগ্ন হঠলেন। তিনি আবার এই প্রদক উথা-পন করিয়া বৃদ্ধদেবের নিকট নিবেদন করিলেন-জী লোক সন্নাস ধন্ম গ্রহণ করিলে কি তাহাব ফললাভে সমর্থ হয় নাণ ডাহার। কি অহ'ৎ হইবার অধিকারিণী নতে ৪ বন্ধদেব উত্তর করিলেন-তাহারা অধিকারিণী এ কথা সত্য। তখন আনন্দ বলিলেন, তবে কেন মহাপ্রজ্ञাপতিকে সঙ্গভুক্ত করা হইভেছে 7 1 আপনার মাতৃ-বিয়োগের পর ভগবন্! তিনি चीय खग्रद्ध मित्रा आश्रनात्क भागन-शानन कतिया-ছেন, তিনি প্রভুর পরম ভক্ত. পরম উপকারিণী এ-অধিকার ২ইতে সোবকা, তাঁহাকে হয় পু আর তার সঙ্গে যে-রাখা কি উচিত সকল পুরমহিলা আধিয়াছেন, অনভাত পদ বজে ইহাদের কোমল চরণগুলি একেবারে ক্ষত-বিক্ষত। প্রচণ্ড রৌদ্র মাধায় ৰছিয়। ইছাদের ক্ষীণতত্ব মালন হুইয়া গিয়াছে। ইছাদের ধ্ব-পিপাদা ত পুরুবের চেয়ে কম নয়, তবে ইছাদের ভিক্ণীর অধিকার দিলে ক্ষতি কি ৪

জ্ঞানেক বাদান্তবাদের পব বৃদ্ধদেব বলিলোন— সদি ইছারা আটটি অবশুপালনীয় নিয়ম গ্রহণ করিতে স্বীকার করেন, তাগা হুইলে উচা সম্ভব হুইতে পারে। সেই জ্ঞাটটি অফুশাসন এইরপঃ-

- ১। ভিক্লদিগকে শ্রদাও ভক্তি করিবে।
- ৩। যে স্থানে ভিক্নাই সেধানে ভিক্ণীরা ব্যা-যাপন করিবেন না।
- ৩। ভিক্ষ্পক্তের অন্মাতি লইয়া প্রত্যেক পক্ষে ভিক্ষণীর। উপবাস এবং ধধাামুগ্রান করিবেন।
- ৪। প্রত্যেক বংশর পাপের প্রায়ন্চিত্তের জন্ত বতপালন করিবেন।
- ৫। উভয় সৃত্য হইছে "মানত" শাসন গ্রাহণ
   করিবেন।
- ৬। হুই বৎসর অধায়নের পর উপসম্পদ উভয় সক্ষ হুইতে দীক্ষাণাভ করিবেন।
- ৭। শ্রমণদের নিক্লা ও তাহাদের প্রতি পরুষ বাক্য প্রয়োগ করিবেন না।
- ৮। ভিক্ষরা তাহাদের দোষ বলিয়া দিয়া ভাহাদিগকে সংপ্রে রক্ষা করিবেন, ভিক্ষণীরা

ভিক্দের সহয়ে কোনরূপ আলোচনা করিতে পারিবেন না।

মহাপ্রজাপতি এই ধর্মশাসন গ্রহণ করিয়া বৃদ্ধের প্রথমা শিয়ারুপে দীক্ষিতা হইলেন এবং তাঁহার সহ-গামিনী পাঁচ শত শাকামহিলাকে লইয়া ভিক্ষুত্ৰত গ্রহণ করিয়া প্রথম ভিক্ষণীসঙ্গ প্রতিষ্ঠা করিলেন। এই ভাবে স্ত্রীলোকেরা বৌদ্ধধর্মে প্রবেশ লাভ করি-ৰেন। ডিক্ষণী হটয়। মহাপ্ৰস্থাপতি ইছার প্রত্যেকটি নিয়ম পালন করিয়াছিলেন। বৃদ্ধদেব মহাপ্রজাপতির প্রতি যে উপদেশ দিয়াছিলেন, তাহা হইতে বঝিতে পারা যায়, কিরূপ কঠোরতার ভিতর দিয়া মহাপ্রজা-পতির জীবন যাপন করিতে হইয়াছিল। ত্রু পরি-হার, অৱেতে সম্ভষ্ট থাকা, বুণা আমোদ-প্রমোদ হইতে দুরে থাকিয়া নির্জ্জনে ধ্যান-ধারণা, ধশ্মসাধন করা, আলস্ত ত্যাগ করিয়া শ্রমশীল ছওয়া, অতিমান পরিত্যাগ করিয়া সুশীলা, বিনয়ী ও নম হওয়া, সকলের সহিত সহাবে সন্তোষের সহিত জীবনধারণ করা, বৌদ্ধ-ভপস্থিনীর অবশ্র কর্ত্তব্য । পতি এইরূপ ভাবে জীবন যাপন করিয়া আছ তৈয় মর্গাদা লাভ কবেন।

মহা প্রজাপতির এইরূপ অসামান্ত শক্তির বিকাশ হইয়াছিল নে, ভিক্ষুগণ প্রান্ত উহাতে বিস্মিত হইয়া-ছিলেন। ধীনে ধীরে ভিক্ষণীসজ্মের সমস্ত ভার তাঁহার উপব ন্তন্ত ইইয়াছিল। এমন কি, ভিক্ষুসক্ষপ্ত তাহার নিকট হইতে উপদেশ গ্রহণ করিতে কুন্তিত হইতেন না।

### বিশাখা

বিশাখা ছিলেন বুদ্ধদেবের সমসাময়িক। অঙ্গ-রাজ্যে ভদ্রানগরে ধনপ্তয় নামক এক শ্রেক্টাব ঘরে 
তাহার জন্ম। তাঁহার মাতার নাম স্থমনা দেবী।
বিশাখার বয়স যথন ধোল বৎসর, তথন একবার 
ভগবান বৃদ্ধ তাঁহার ভিন্দুসভা সঙ্গে লইয়া ভদ্রানগবে 
ভভাগমন করিলেন। বিশাখার পিতামহ বুদ্ধের একজন পর্ম ভক্ত ছিলেন। তিনি বিশাখাকে ভগবান্
বুদ্ধের ধ্যোপদেশ ভনিবার জন্ত প্রেরণ কবিলেন।
সেই অমৃতময়ী বাণী ভনিয়া অবধি বিশাখার প্রাণে 
ধর্মাত্রাগের স্কার হইল।

তারপর ধীরে ধীরে বৎসর কাটিয়া গেল। বিশাখা বড় হইলেন। প্রাবন্তিপুরের এক সন্ত্রান্ত পরিবারে পূর্ণবর্দ্ধনের সঙ্গে তাহার বিবাহ হইয়া গেল।

শশুরগৃহে আসিয়া বিশাপা দেখিলেন, ভাহাদের
পরিবার নাগা সয়াসীদের উপাসক। বুদ্ধের যাহারা
উপাসক, তাহার। নাগা সয়াসীদের আচার-ব্যবহারকে
বড়ই অপ্রক্ষার চক্ষে দেখিয়া থাকেন। কাজেই
বিশাধার মন কুরু হইয়া গেল। বধু যাহাতে শশুরকুলের ধর্মান্টান মানিয়া লয়, বিশাধার আমী ও
শশুরশাশুড়ীর তাহাই ইচ্ছা। কিন্তু বিশাধা ভাহা

কোনোমতেই পারিলেন না। তিনি মনে মনে স্থির করিলেন, তাঁহার স্বামীর পরিবারকে তিনি বৌদ্ধ-ধর্মে অন্ধ্রপ্রাণিত করিবেন।

বান্তবিক ভাষাই হইল। তাঁহার একান্ত চেটার বলে ডিনি ক্রমে ক্রমে বোর্ভিক্স্নের হারা মহা-ধর্মের বাণী ভনাইয়া বভর ও হামীর হানয়কে বৌদ্ধ-ধর্মের দিকে আরুষ্ট করাইলেন। অবশেষে সমস্ত পরিবারটিই বৃদ্ধের উপাসক হইয়া পড়িল।

একদিন স্বয়ং বৃদ্ধদেব ও ভিক্ষুসভ্যকে বিশাখা নিজ প্রাসাদে নিমন্ত্রণ করিলেন। মহাযত্তসহকারে তাঁহাদের অভার্থনা শেষ করিয়া বিশাখা বদ্ধদেবের নিকটে গিয়া প্রার্থনা করিলেন, "প্রভু, যতদিন আমি বাঁচিব, আমি যেন ভিক্লদিগকে শীতবস্ত যোগাইবার অধিকার পাই: যাঁহার। আমার অতিথি হইবেন এবং যাঁহার৷ পরিব্রজনে বিদেশে যাইবেন, তাঁহাদের সকলেরই থাত আমি যোগাইব: পীড়িত ভিক্ষদিগের এবং পীড়িতের সেধাকারীদের সকল ঔষধ পত্রের ব্যবস্থাও আমি করিব.; এবং সমস্ত ভিক্রর প্রতিদিনের অরবত্তের লইতে চাই। আপনি আমার এই প্রার্থনা পূর্ণ করুন।

এই দিন হইতে ভিকুসজ্বের পরিপালনের অধিকাংশ দায়িত্ব বিশাধার উপর হাত হইল। ইহার পর বিশাধা একদিন ভিকুদিগের বাসন্থান দেখিতে গেলেন। গিয়া দেখেন, সেধানে মামুষ বাস করিতে পারে না, একেবারে কাঁটাবনে পরিপূর্ণ। তিনি অমনি তাঁহাদের জন্ম একটি মুন্দর অট্টালিকা নিন্মাণ করাইয়া দিলেন। বুদ্ধদেবের অমুমতি লইয়া ভিক্রগণ সেইখানে বাস করিতে লাগিলেন।

বিশাখা অভ্যন্ত ধনবতী ছিলেন। কিন্তু তাঁহার ধনরাশি তিনি এইভাবে পরের কল্যাণের জন্ত বিলাইয়া দিতে লাগিলেন। তাঁহার একথানি অমূল্য অলকার ছিল, তাহার নাম মহালতা। সে সময়ে সমস্ত রাজ্যে তিনটি মহিলা ব্যতীত আর কাহারে। র্জ অলম্বার ছিল না। কিন্তু বিশাখা মনে করিলেন, এ অলম্বার লইয়া তাঁহার কি হইবে ? তিনি ঐ মহালতা বিক্রের করিয়া নরকোটি এক লক্ষ মূতা। পাইলেন ও সেই মূতা বুদ্দের চরণে অর্পণ করিলেন। বুদ্দের নির্দেশ অমুসারে তারপর সেই টাকার একটি স্থাতল বৌদ্ধবিহার নির্শ্বিত হইল।

এইরপ অসাধারণ দান ও বৃদ্ধভক্তির সঙ্গে সঙ্গে বিশাধার চরিত্রে আর একটি গুণ ছিল — প্রতিভা। এই প্রতিভার কাছে ভিক্ষুণণ পর্যান্ত সমন্ত্রমে প্রদান না করিয়া পারেন নাই। ভিক্ষুণণ বধনই কোনও সমস্তার সমূধীন হইতেন, তথনই এই নারীর কাছে উপদেশ লইতেন। তাঁহার জ্ঞান ও বিচার বৃদ্ধির প্রতি তাঁহাদের এত অগাধ বিখাস ছিল যে, তাঁহার ইছছামুসারে ভিক্ষুসক্তের নিয়মাবলী প্রান্ত সমন্ত্রে সময়ে পরিবন্তিত হইয়া গিয়াছে।

কিন্তু একটি আশ্চর্যোর বিদয় এই যে, এমন ধর্ম-প্রাণ ও বৃদ্ধদেবের একান্ত অন্থরক এবং ভিক্স্নান্তবর উপদেশদারী ইইয়াও বিশাখা নিজে ভিক্স্নীরত গ্রহণ করেন নাই এবং স্বয়ং বৃদ্ধদেবও কথনও তাহাকে ইহা গ্রহণ করিতে বলেন নাই। ইহার কারণও অবগ্র ছিল। ভগবান বৃদ্ধ বৃরিয়াছিলেন, সকল নারীর স্থান এক ক্ষেত্রে হয় না। যাহার যেদিকে শক্তি ও প্রেরণা, ভাহার স্থান সেইদিকেই। বিশাখা যদি পৃথিবীর সকল সম্পদ ছাড়িয়া ভিক্ষ্ণীহন, ভাহা ইইলে বিশাখার পক্ষে লাভ লোকসান বিশেষ কিছুই নাই, কারণ, ভিনি সংসারে থাকিয়াও সন্নাসিনী, অথচ পৃথিবীর পক্ষে ভাহাতে ক্তি হইবে অনেকথানি, কারণ, পৃথিবীর জনসাধারণ ভাহার অকাতর মুক্তহন্তের দান হইতে বঞ্চিত হইবে /

তাই বুদ্ধদেব বিশাখার হান নির্দেশ করিলেন সংসারের মাঝখানে, এবং সেইখানে থাকিয়াই তিনি নিজের জীবন সার্থক ও অনোর জীবন কৃতার্থ করিয়া পরলোকে গমন করিয়াছেন।



ইংরাজী ভাষার উৎপত্তি

একথা তোমরা সকলেই জান থে, আমাদের হিন্দু-জাতির মত ইংরাজ কাতিরও উৎপত্তি আহিঃ বংশ হইতে :

অনেকের মতে পুবাকালে আয়োরা মধ্য এশিয়ায় বাস করিত। কালক্রমে ভাগদের দল পুষ্ট হওয়ায় ভাগারা ঐ সর্কার্ণ স্থান পরিত্যাগ করিয়া বিভিন্ন দেশে যাতা করে। ভাগদের একদল ভারতবংগ আই(স---উগরাই ভারতীয় হিন্দু বা আর্যাজাতি। কিন্তু ভারতবর্ষে আসিবার পূর্বের ঐ দল আবার চুই ভাগে বিভক্ত **হইয়া** একটি ভাগ পাবস্থাভিমুখে যাত্রা করে এবং ভাহারা ইরানীয়ান (পারসিক) নামে অভিহিত হয়। আযাদের মধ্যে যাহারা ইউরোপে যাত্রা করে, তাহারা সাধারণত: তিন দলে বিভক্ত ২ইয়া পড়ে। একটি দল প্রাচীন গ্রীসদেশে যাইয়া উপনিবেশ স্থাপন করে, তাহারাই বিখ্যাত গ্রীকজাতি। আর একটি দল ইটালীতে উপস্থিত হয়—তাহারা রোমান বা রে।মক নামে বিখ্যাত। কিন্তু তৃতীয় দলটি গ্রাস্বাইটালী দেশের দিকে না যাইয়া বর্ত্তমানে আমরা যাহাকে জার্মাণী বলি, সেই দেশে উপনিবেশ স্থাপন —উহারাই হৃদ্ধ টিউটন জাতি।

টিউটন জাতি আবার কাল ক্রমে নানা দলে বিভক্ত ইইয়া পড়ে। তন্মধো যাহা-দিগকে Angle (এঙ্গল)

জাতি ও Saxon (স্যাক্সন্) জাতি বলা হয় তাহারা খৃষ্ঠীয় পঞ্চম শতাব্দীতে সমুদ্রপারস্থিত বিশ্বাসার করিছে থাকে। এই এঙ্গল (Angle) জাতির নাম অন্ধ্রসারে বিটানিয়ার নাম পরিবর্ত্তিও ইইয়া ইংল্যাণ্ড অর্থাৎ এঙ্গল্দের দেশ (Angles' land—land of the Angles) নামে পরিচিত হয় এবং আজ পর্যান্ত এ দেশের নাম ইংল্যাণ্ড রহিয়া গিয়াছে।

পূর্বের যাহা বলিয়াছি তাহা হইতে তোমরা বোধ হয় বুঝিতে পারিয়াছ যে, হিল্দু জাতি এক সময় একই দেশে বাস করিত। যথন তাহারা একদেশে অর্থাৎ মধ্য এশিয়ায় বাস করিত তখন তাহাদের ভাষাও ছিল এক। উহার নাম প্রাচীন আর্যাভাষা। অধুনা ঐ ভাষা বিলুপ্ত ( অনেকে আমাদের বেদের ভাষাকে প্রাচীন আর্যাভাষা বলিয়া পরিচিত করিতে চাহেন)। এখন কিন্তু ইংরাজী ভাষার সঙ্গে সংস্কৃত ভাষার বা বাঙ্গালা ভাষার সাদৃশ্য

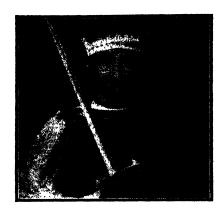
কিছুই বৃঝিবার উপায় নাই; যদিও এই ছইটি ভাষা প্রাচীন আর্যাভাষা হইতেই আসিয়াছে। উভয় ভাষাই কালক্রমে অনেক নৃতন কথার আমদানী করিয়াছে। তবে উভয় ভাষাতেই এখন গোটা কয়েক কথা আছে যাহার মূল উৎপত্তি এক। যেমনঃ—

সংস্কৃত ইংরাজী গো (গৌ) Cow ভাতৃ Brother (পারসী—বিরদার) গম ধাতু ( যাওয়া) Come father (Latin Pater) পিত মাত mother 73 tooth (Latin-dent) উপরের দৃষ্টাস্ত হুইতে লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, সংস্কৃত ভ, গ, ধ ইংরাজীতে ব, গ, দ অথবা ভ, সংস্কৃত ব, ভ, গ ইংরাজীতে প, ট, ক এৰং সংস্কৃত প, ট, ক ইংরাজীতে ফু ত (th)' হ প্রভৃতিতে পরিবর্ত্তিত ভইয়াছে। কেন এমন চইল ? ইহার উত্তর এই যে. সময়ের পরিবর্তনে এবং স্থানবিশেষে, শব্দেরও পরিবর্ত্তন সাধিত পশ্চিমবঙ্গের হয়। লোকেরা যেমন 'ভাত' উচ্চারণ করিতে পারে, পূর্ববঙ্গের অশিক্ষিত লোকেরা কিন্তু তেমন পারে না, তাহারা 'ভাত'কে 'বাত'। দেশকালপাত্রভেদে এইরূপ রণের পরিবর্তন লক্ষিত হয়। আমরা বলি হিন্দুস্থানীরা বলে 'লছমী'। যে স্থানকে আমরা বলি 'দেবঘর' হিন্দুস্থানীরা বলে 'দেওঘর'। এখন তোমরা বোধ হয় সহছেই বুঝিবে, আদিকালে ইংরাজী এবং সংস্ত একই ভাষা অথবা এক ভাষার অস্তৰ্ভুক্ত থাকিলেও কালক্ৰমে উভয় ভাষাতে বছল পরিবর্ত্তন আসিয়া তাহা-দিগকে একেবারে পৃথক করিয়া দিয়াছে। এমন ভাবে পৃথক্ করিয়া দিয়াছে যে, উহ:-দিগকে এক মায়ের পেটের বোন বলিয়া মনে হয় না।

এখন আমরা ইংরাজী ভাষাতে যে সমস্ত পরিবর্ত্তন হইয়াছে তাহারই কিছু আলোচনা করিব। ভাষার পরিবর্ত্তনের একটি কারণ আমরা আলোচনা করিয়াছি কিয়ন ভাগ্য একটি কারণ আছে যাহা ইংরাজী ভাষার উপর আধিপতা করিয়াছে। সেটি হইতেছে নানাজাতির সংমিঞাণ । প্রাচীন একলস (Angles) এবং স্থাক্সন (Saxon) জাভি ইংল্যাণ্ড দেশ অধিকার করিয়া ঐ দেশের আদিম অধিবাদী কেলটিক (Celtic) জাতিকে একপ্রকার নিয়াল কেলিলেও ভাগাদের ভাষা হইতে কিছু কিছ কথা গ্রহণ করিতে বাধ্য হইয়াছিল। পরে ঐ (1)季月 জাতি খুফীন ধর্মগ্রহণ করে। আমাদের যেমন মন্ত্র-ভন্ত তখনকার দিনে খুষ্টান ভাষাতে লেখা. মধু-ভন্ত ও প্রার্থনা মন্ত্র ল্যাটিন ভাষায় লিখিত হটত এবং যাহারা খুটান হইত তাহাদিগকে ল্যাটিন ভাষায় প্রার্থনা করিতে হইত এবং সমস্ত ধর্ম-কশ্ম ল্যাটন ভাষায় রচিত মল্ল-তল্পের সাহায্যে সম্পর করিতে হইত। স্বতরাং খুষ্ঠান হইবার পরে ইংরাজ জাতি ল্যাটিন ভাষা বাধ্য হয় এবং এই ল্যাটিন শব্দ ইংরাজী ভাষাতে আমদানী তারপর ডেনমার্কবাসী আসিয়া ইংল্যাণ্ডের প্রায় অদ্ধংশ গ্রাস তাহাদের সঙ্গে মিশিবার ইংরাজ জাতি ডেনিস্ ( Danish ) হইতে অনেক কথাই হিছেদের ভাষাতে গ্রহণ করে। ইহার পরে ইংরাজী ভাষায় গুরুতর পরিবত্তন সাধিত হয়। এই গুরু পরিবর্তনের মূল কারণ নম্নি (Norman) কাভিদের দারা ইংল্যাণ্ড আক্র-মণ ও অধিকার। ১০৬৬ খুষ্ট'ব্দে ফ্রান্সের অন্তৰ্গত নম্যতি (Normandy) হইতে

া।

আসিয়া বিজ্ঞানী উইলিয়াম (William the Conqueror) ইংল্যাণ্ডের সিংহাসন অধিকার করিয়া বসেন। তাঁহার সঙ্গে যে দল আসিল তাহারা সকলেই ফরাসী—ইংরাজী



বিজয়ী উইলিয়ম

কথা তাহারা বলিতে পারিত না, কাজেই ভাষা প্রচলন তাহারা নিজের इंश्नार् আমরা যেমন করিল। আমাদের দেশে ইংরাজ-অধিকারের পর **छ** उई ए ভাষার আলোচনা করিতে বাধ্য হইয়াছি. এবং ঐ ভাষা শিক্ষা না করিলে পাইবার কোন আশাই থাকে না, দেইরূপ ইংল্যাণ্ডেও একদিন ফরাসী ভাষা শিক্ষা না পাইবার কোন উচ্চ রাজাকার্যা উপায়ই ছিল না। ব্যাপার এমন দ।ড়াইল যে, বিভালয়ে পড়াশুনা, আদালতের রাজ-কার্য্য প্রভৃতিতে ফরাসী ভাষার চল্ডি হইয়াগেল। অবস্থা এইরূপ থাকিলে ত্লিয়া ভাষা আবার দাঁডাইতে পারিত কি না কে জানে ? কিন্ত দৈবের ঘটনা অন্যরূপ। যভদিন ইংল্যাণ্ডের ফরাসী রাজগণ নর্ম্যাণ্ডির (Nor-রাখিয়া কার্যা mandy) সঙ্গে সম্পর্ক

চালাইতে পারিতেন ডডদিন পর্যান্ত ফরাসী ভাষা ইংল্যাণ্ডে আধিপতা বিস্তার একদিন আসিল যখন কিন্ত শীভাই এমন নম্যাণ্ডি তাঁহাদের হস্তচ্যত হইয়া গেল। তখন হইতেই তাঁহারা ইংল্যাণ্ডকেই নিজে-মাতৃভূমি বলিয়া গ্ৰহণ সংখ্যা বেশী ছিল ভাঁহাদের ইংরাজনের সভিত বিবাহ ও সর্ববপ্রকার আদান-প্রদান সামাজিক আচার ব্যবহারে চালাইতে হইল। এইরূপে বাধ্য ইংরাক্তা ভাষা তাঁহাদের গ্রহণ করিতে হইল। কালক্রমে নিজেদের মাতৃভাষা ভূলিয়া গিয়া ইংরাজী ভাষাকেই তাঁহারা মাতৃভাষা বলিয়া গ্রহণ করিলেন। ইংরাজী ভাষার ইতিহাসে ইহা একটি স্মারণীয় দিন। স্কল-কলেজে এবং বিচারালয়ে রাজদরবারে **टे**श्वाकी হইল ৷ ভাষার প্রচলন के कियार श ফরাসী ভাষ৷ হইতে ভাষায় বহু কথার আমনানী হইয়া গিয়াছে। ফরাসী ভাষা আবার মূলতঃ ল্যাটিন হইতেই আগত স্বতরাং এই ফরাসী আমরা লাটিন কর্থা বলিয়াই ধরিয়া লইতে পারি। কোমও ভাল ইংরাজী অভিধান আলোচনা করিলে প্ৰায় অৰ্দ্ধেক কথাঞ্জি পাইবে যে. ল্যাটিন, নাহয় ফরাসী ভাষা আমদানী হইয়াছে। কিন্তু এখন আর এই কথাগুলি ল্যাটিন বা ফরাসী সহজে ধরিবার উপায় নাই। ইংরাজেরা ঐকথাগুলি সম্পূর্ণ নিজেদের করিয়া লইয়াছে এবং প্রকৃত ইংরাজী কথার মতই উহাদের উচ্চারণ করা হয়।

খৃষ্টীয় পঞ্চদশ শতাকীতে যথন ইংল্যাণ্ডে প্রাচান গ্রীক্ ও ল্যাটিন ভাষার আলোচনা আরম্ভ হয়, তথন হইতে আজ পর্যান্ত অনেক নূতন ল্যাটিন ও গ্রীক্ কথা ইংরাজী ভাষাতে স্থান পাইয়াছে। ইহাদের অধিকাংশই

## -ইংরাজী ভাষার উৎপত্তি

বৈজ্ঞানিক পরিভাষা (Scientific terms) ষধা:—কোটোগ্রাফি (Photography), রেডিওলজি (Radiology) প্রভৃতি।

ব্যবসায়-বাণিজ্যের খাতিরে ইংরাজ জাতিকে বহু দেশে যাতায়াত করিতে

হইয়াছে এবং ঐ সকল দেশের ভাষা হইতে কিছু কিছ কথা ইংরাজী ভাষাতে আসিয়া আভায় পাইয়াছে। যেমন Rickshaw, tea, rice. Pundit. jungle ইত্যাদি। এখন কথা হইতেছে, যদিও ইংরাজী ভাষার অদ্বে কৈরও অধিক বিদেশ # ব্ৰ হইতে আমদানী, তবুও আমরা ঐ ভাষার অভ্য ন্ব্ৰাম দেই না কেন? কথার ইহার কারণ. বল্ল আমদানী হইলেও বলি যাহাকে আমরা প্রকাশ-রীতি (Mode of Expression) অর্থাৎ ব্যাক্রণ (Grammar). একরূপ ভাহা খাঁটা ইংরাজীই রহিয়া গিয়াছে। স্তরাং বিদেশী কথা ব্যবহার করিলেও ইংরাজী ভাষা মূলত: ভাষাই রহিয়া গিয়াছে।

আমি যদি বলি 'ঐ চেয়ারখানা টেবিলের উপর রাখ' তবে কেছ মনে করিতে পারিবে না আমি বাঙ্গালা ভিন্ন অন্য ভাষায় কথা বলিতেছি—যদিও আমার এই বাক্যে'চেয়ার' ও 'টেবিল' এই ইংরাজী শব্দ স্থান পাইয়াছে। কেননা, আমি বাঙ্গালা ব্যাকরণ অনুসারেই আমার বাক্যটি বলিয়াছি।
নানাদেশ হইতে কথার আমদানী না করিলে
আজকাল আর চলে না। কোন জাতি বা
কোন ভাষা আজকাল আর কুপমভূকের
মত নিজের সঙ্কীর্ণ গণ্ডীর মধ্যে থাকিতে



ডেন-শিবিরে বীণাবাদক-বেশে রাজা আলফ্রেড

চাহে না। স্বাতির মত ভাষাও বিস্তার লাভ করিতে চাহে। নানান্ধান্তির সহিত আদান-প্রদানে এই বিস্তার লাভের স্থবিধা হয়।

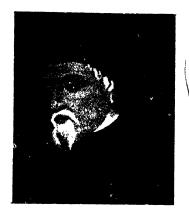
আমরা ইংরাজী ভাষার উৎপত্তি এবং ঐ ভাষার উপর অহাত্য বিদেশী ভাষার প্রভাবের কথা বলিয়াছি। এইবার ইংরাজী ভাষা কিরূপে প্রাসিদ্ধ লাভ করিল এবং
কিরূপে সরল প্রাঞ্জল হইল, তাহারই
আলোচনা করিব। সংস্কৃত ভাষাতে যেমন
বিভক্তির ছাড়াছড়ি দেখিতে পাও, আদিম
ইংরাজী ভাষাও ঐরূপ বিভক্তিবছল ছিল,
এবং সংস্কৃতের মত উহা শিক্ষা করাও একরূপ ছ্রুহ ব্যাপার বলিয়া পরিগণিত হইত।
রালা আল্ফেড (Alfred)-এর সমরের
ইংরাজী তোমরা বৃঝিতেই পারিবে না।



আলফ্রেড

প্রধান কারণ, সময়ের পরিবর্ত্তনের সঙ্গে ভাষারও পরিবর্ত্তন হয়। সংস্কৃত ভাষা জীবিত থাকিলে তাহাতেও এইরূপ পরিবর্তন ঘটিত। ফরাসী জাতিরা যথন ইংলাজী ভাষাকে মাতৃভাষা বলিয়া গ্রহণ করিল, তথন ইংরাজী শিখিবার পক্ষে এই বিভক্তিগুলি হইল তাহাদের প্রধান অন্তরায়, স্বতরাং এই সময়ে কিছু কিছু বিভক্তি উঠিয়া গেল। এইরূপে একট্ একট্ করিয়া আজ ইংরাজী ভাষাতে বিভক্তি লোপ পাইয়াছে। শুধু'ঙ, এবং বছবচনে প্রকাশ করিবার ৪ ভিন্ন স্বত্যান বিভক্তি নাই।

চতুর্দ্দশ শতাকীর ইংরাজী ভাষা আলোচনা করিলে আমরা তিনটি কথিত ভাষা (dialects) দেখিতে পাই।. Southern English dialect, Northern English dialect এবং Midland English dialect এই তিন্টির মধ্যে Midland English dialectই কালক্রমে সাহিত্যিক ভাষা (Literary English) হইয়া দাঁড়ায়। ইহার প্রধান কারণ, ইংল্যান্ডের ছইটি



চসার

প্রাচীন বিশ্ববিভালয় অক্সফোর্ড (Oxford) কেম্ব্রিজ (Cambridge) ইংলাতেওর রাজধানী লওন সহরে এই ভাষার চলন ছিল। রাজধানীর ভাষা বলিয়া বড় বড় লেখকেরা এই ভাষাতেই কাব্য লিখিতেন। ইংল্যাণ্ডের বিখ্যাত কবি চসার (Chaucer) এই ভাষাতেই তাঁহার কবিতা-গুলি রচনা করেন। চসার-এর পর হইডে সমস্ত ইংরাজ লেখকেরাই এই ভাষার প্রধান্য স্থাকার कात्रन । বে কারণে কলিকাতার ভাষা লিখিত বাঙ্গালা বলিয়া পরিগণিত হইয়াছে. সেই কারণে এই Midland dialect ইংল্যাণ্ডের লিখিড ভাষা অর্থাৎ সাহিত্যিক ভাষা ( Literary English) इडेग्रा मांखाडेग्राइक ।



# হজরত মুহম্মদ

পৃথিবীর নানা দেশে ধে-সকল
ধর্মমত প্রচলিত, তাহাদের মধ্যে
ইস্লাম ধর্ম একটি শ্রেষ্ঠ ধর্ম।
আমাদের ভারতবর্ষ প্রধানতঃ হিন্দু ও মুসলমানের দেশ। এই ধ্যমতের প্রতিষ্ঠাতার
নাম হজরত মুহল্মন। মহাপুরুষ হজরত মুহল্মন
আরবদেশের মকা নগরীতে কোরাইশ বংশে জন্মগ্রহণ করেন। ইংগার পিতার নাম ছিল—মহাত্মা
আবহুলাহ। আর পিতামহ ছিলেন—মহাত্মতব
আবহুলাহ। আর পিতামহ ছিলেন—মহাত্মতব
আবহুল মুত্লিব। মুহ্মাদের মাতা আমেনা বিবি
রূপবতী ও বুদ্ধিমতী ও গুণশালিনী মহিলা ছিলেন।
৫৭০ খুষ্টান্দেব ২০শে এপ্রিল ১৭ই রবিউল আউমাল
সোমবার মহ্মাদের জন্ম হইয়াছিল।

মুহুনাদের জনাগ্রহণের পুরেই তাঁহার পিতার মৃত্যু চারি মাস. হইয়াছিল। হজরতের বয়স যথন সে সময়ে আমেনা বিবি প্ৰলোক গমন করেন। মাতা-পিতৃহীন মুধ্মদের লালনপালনের ভার পড়িল তাঁহার বুদ্ধ পিতামহ আবছল মুত্তলিবের উপর। আবহুলার পিতার স্ক্রক্রিষ্ঠ স্তান ছিলেন বলিয়া আবচন মুত্তনিবের ভিনি পিতা ছিলেন। তাহার অকালমৃত্যুতে আবহল মুত্তলিব পাইয়াছিলেন। ঐরপ অতান্ত আখাত প্রাণে নিদারুণ শোকের সময় হজরতকে পাইয়া শোকের ভিতরও মহাপ্রাণ মুন্তলিবের প্রাণে শাস্তি আসিয়া-মুহন্মদের পবিত্র ছিল। তিনি শিশু আবহুলার প্রতিচ্ছায়া দেখিয়া সাখনা লাভ করিলেন। তিনি পরিজনদিগকে বলিতেন, "তোমবা মুহম্মদকে স্বয়ে প্রতি-পালন করিও। এই স্থানর শিশুই

ি আমার বংশের সক্সপ্রেষ্ঠ সম্পদ ইইবে i শক্ত হুদিন পরে প্রতিপালক পিতামহ আবল্লাহ
মত্তলিবেরও মৃত্যু হইল। মৃত্যুকালে স্নেহপরায়ণ
পিতামহ তাঁহাকে স্বীয় জোষ্ঠ পুত্র আবু তালেবের
হত্তে সমপণ করিয়া যান। স্নেহপরায়ণ আবু-তালেব
তাঁহাকে এমনই যাই কবিতেন যে, মুহ্মাদ একদিনের
জন্ত পিতামাতার কণা স্মরণ করিয়া তুঃথ প্রকাশ
বা অঞ্বিস্থান করেন নাই।

আবু-তালেবের আশ্রমে মৃহ্মদের বাল্যজীবন অতিবাহিত হইল। কৈলোবে পদার্পণ করিয়াই তিনি বাণিজ্য উপলক্ষে দিরিয়া দেশে গমন করেন। এ-সময়ে তাঁহার বয়স চতুর্জশ বংসরের বেশী ছিল না, কারেই, দেশী ভাষা ভিন্ন বিদেশী ভাষা কিছুই জানিতেন না, এজন্ম সিরিয়া গমন তাঁহার পক্ষেতেমন প্রীতিজনক হয় নাই। সিরিয়াতেই কিশোর মৃহ্মদ পৃষ্টানদের সংস্থাে আসিয়াছিলেন।

কোন বিভাগরে স্থমদের শিক্ষা লাভ হয় নাই। তাঁহার জন্ম সময়ে আরবদেশের লোকেরা লিখিতে পড়িতে জানিতেন। সুহম্মদ শিথিতে পারিতেন না। কিন্তু স্বাভাবিক জ্ঞান ও প্রতিভা এবং প্রকৃতির অভিনব বৈচিত্র ও সৃষ্টি রহস্তের ভিতর দিয়া তাঁহার মন ও প্রাণ্ড বিক্রিক উঠিয়াছিল। সেই শৈশব-

কালেই ভাঁহার চিন্তালীলভা, সতানিষ্ঠা ও কর্ত্তবাপরারণভার জন্ত সর্ব্বর উাহার স্থমণ ঘোষিত হইয়াছিল। উাহার কার্যা, বাক্য ও বিশ্বস্তভার জন্ত
সাধারণের কাছে তিনি আমিন নামক গৌরবাহিত
উপাধি লাভ করিয়াছিলেন। যেমন মুহ্মদের বয়স
বৃদ্ধি পাইতে লাগিল তেমনি এই নবীন যুবকের
সৌন্দর্যা, জীবিকার্জনের পরিশ্রমে অন্থর্যকি এবং
জ্যোভির্মার তেজোদীপ্ত বদনমগুলের প্রভায় মকার
লোকেরা ভাঁহার প্রতি একান্ত অন্থ্রাগী হইয়া
পডিয়াছিলেন।

দে-সময়ে মকায় খাদিজা নামে এক বিপুল ঐখর্য্য-শালিনী বিধবা বাস করিতেন। তিনি বছসংখ্যক কর্মচারী নিযুক্ত করিয়া নানা দেশ বিদেশের সহিত বাণিজ্ঞা ব্যবসায় করিতেন। থাদিজার বিখন্ত কার্যাধ্যকের প্রয়োজন হই যাছিল, তিনি লোকের মুথে মুহম্মদের সাধুতা ও সতঃবাদিতার বহু ভুখাতি শুনিয়া তাঁহাকে কার্যাধ্যকের পদে নিযুক্ত করিয়া একদল লোকের সহিত সিরিয়ায় প্রেরণ করেন। সেখানে তিনি আপন কর্ত্তব্য কশ্ম অতিশয় বিশ্বস্ততার সহিত সম্পাদন করিয়াছিলেন। থাদিজা মহন্মদের নির্মাল চরিত ও কর্ত্তবানিষ্ঠায় মুগ্ধা হইলেন। তাহার হৃদয়ে হত্তরতের প্রতি অসীম শ্রন্ধার সঞ্চার হুইল। এই শ্রদ্ধা ক্রমে অনুরাগে পরিণত হুইল। থাদিজা অতি গুণবতী রমণী ছিলেন। তৎকালে মৃহস্মদ পাঁচিশ বৎসরের যুবক। থাদিজার বয়স চল্লিশ বর্ষেরও অধিক হইয়াছিল। থাদিজা এই দরিদ্র ও সহায়-সম্পদ্ধীন যুবকের পরিণয়প্রার্থিনী ইইলেন। হজরতের মত দরিদ্রের পক্ষে সম্পদশালিনী রমণী লাভ একাম্ভ ত্বৰ্লিভ ছিল। স্বতরাং, আবু-তালেব আনন্দের সহিত থাদিজার প্রস্তাব অন্তুমোদন করিলেন। ৫৯৫ খৃষ্টাব্দে গুভলগে, গুভক্ষণে সৌ-ভাগাবতী থাদিজার সহিত মুহম্মদের मम्भाषिত इरेल। এरे विवाद प्रदेखनिरे अथी इरेग्नाहितन । यछिनन शानिका कीविछा हितन, তত্তদিন একদিনের জক্তও তাঁহাদের প্রেম শিথিল হয় নাই। খাদিজার গভে ইমাম হোসাইনের জননী, হজরত কাতেমা বিবি জন্মগ্রহণ করেন। থাদিজা হজরতের সহিত পরিণীতা হইয়া পচিব বৎসর কাল জীবিতা ছিলেন। তাঁহার জীবিতকালে আর দিভীয় দারপরিগ্রহ করেন নাই।

সংসার সম্বন্ধে নিশ্চিত্ত হইয়া মূহখন আধ্যাত্মিক উন্নতি সাধনার জভ মনোযোগী ইইলেন। এই

বিশাল সৃষ্টির অস্তারালে কোন অজ্ঞাত শক্তি কাৰ করিতেছে, কাছার ইঙ্গিতে মানুষের এই স্থা-ছ:খ বিপদ-সম্পদ. কে এই অনন্ত বিশ্বস্থাণ্ডের নায়ক এই সকলের তন্ত্রাহুসদ্ধানে তিনি নিয়োগ করিলেন। মকার অনভিদূরে হেরা নামক একটি পর্বান্ত আছে, তিনি সেই পর্বতের নিৰ্জ্জন শুহায় বসিয়া কেবল ক্রিতেন। এইরূপ ধ্যাননিরত ভাবে তাঁহার পঞ্চদশ বংসর অতিবাহিত হইয়াছিল। তাঁহার নিকট সতোর জ্যোতি: বিভাসিত হইল। একদিন তিনি একাগ্রমনে ধানমগ্র থাকিতে থাকিতে সর্বপ্রথম প্রত্যাদেশ (অহী) লাভ করিলেন। এই नभरम मुरुषान একদা थानिकारक वनिरामन. পরমেশবের অনির্কাচনীয় রূপা লাভ করিয়াছি, আমার সমস্ত সংশয়-অন্ধকার দূর হইয়াছে। আমার মানদ-নয়নে এক অপরূপ আলোক উদ্রাসিত হইয়াছে। কাবা মন্দিরের দেবমৃত্তি সকল নিজ্জীব পদার্থ মাত্র। পরমেশ্বরই মহুয়োর একমাত্র উপাস্থ। তিনি মহান. জীবস্ত ও সতাম্বরপ। প্রমেশ্বই সমস্ত বিশ্বের তিনি এক ভিন্ন ছুই নহেন। একমাত্র নিয়ন্তা। (লায় ইলাহা ইল্লাহ) এক ঈশ্বর ভিন্ন কাহারও আরাধনা করিতে নাই।"

এই মহাসত্য লাভের পর তিনি মন্ত্য্য মাত্রকেই এই সতালাভের অধিকারী করিবার জন্ত ব্যাকুল হইয়া পড়িলেন। মৃহন্মদ একের্যরবাদ প্রচারের জন্ত মনোযোগী হইলেন। তৎপ্রবিত্তিত এই নবধর্মের নাম —ইস্লাম ধর্ম্ম। হজরত মৃহমদের প্রচারিত একে শ্বরবাদ ধর্মে ব্রীলোকদের মধ্যে সর্বপ্রথম থাদিজা বিবি, এবং বালকদের মধ্যে আবৃ-তালেবের ঘাদশবর্ধ-বয়য় প্র আলী এবং পুরুষদেব মধ্যে আবৃ-বাকর সর্বপ্রথম দীক্ষিত হইয়াছিলেন। হজরত আবৃ-বাকর কোরাইশ সম্প্রদায়ের মধ্যে স্বনামধ্যাত ও বিশেষ সম্মানিত ব্যক্তি ছিলেন। কিন্তু তিন বংসর কাল ধর্ম্ম-প্রচারের পরও মকা-নগরীতে তাঁহার শিয়া-সংখ্যা চল্লিশ জনের বেশি হয় নাই।

তিন বৎসরের পর শিশ্ব-সংখ্যা চল্লিশে পরিণত
হইলে মহাথা আবু-বাকর দিদ্দিক তাঁহাকে প্রকাপ্তভাবে আরববাসীদের সমক্ষে ধর্মমত প্রচার
কারতে উত্তেজিত করিতে লাগিলেন। তাঁহার
অস্তরোধ উপেক্ষা করিতে না পারিয়া মূহ্মদ
সর্বজন সমক্ষে শীয় ধর্মমত ঘোষণা করিবার
কল্প আরবদেশের শ্রেষ্ঠ ভন্পনায় কারা
মন্দিরে গমন করিলেন। আর-বাকর প্রথম

একেশ্বরবাদের শ্রেষ্ঠত্ব বর্ণনা করিলেন, তারপর পৌত্তলিক ধন্মের নিন্দা করিতে লাগিলেন। দে-সময়ে আরব
দেশের লোকেরা নানা কুসংস্কারে অন্ধ ছিল, ঈশ্বর
কি, তাহা জানিত মা. তাহারা নানা দেবদেবীর মূর্ত্তি
পূজা কলিত। কাজেই, উগ্রস্থভাব আরবগণ তাহাদের
ধন্মের নিন্দা শুনিয়া বিধন্মীদিগকে দমন করিবার জন্ম
তাহাদিগকে অতি নিয়ুরভাবে প্রথম করিতে আরও
করিল। চারিদিক হইতে আসিয়া লোক জড হইতে
লাগিল। কাবা মন্দিব মুহ্মদের দলস্ত সকলেব

আর্ত্তনাদে মধারত হট্যা ইঠিল। দয়াদ্র চিক্ত ভাগক প্রিবারের (# ( T 4 ) দৌভাহয়া আদিয়া ভাঁচ। দিগকে শক্র-বর্ণ ইট্রেড বক্ষাকরিল। সেদিন ইংগ (पर भाषाया मा भारत মুহ্মান ও তাঁহার অগুচ্র-शर्पात कीत्र तकाहे অসম্ভব ১ইয়া প্ডিডা প্রকার্মান্ডাবে ধরার্মান্ডাবের এইকপ অন্থ উভামে ঘটিলেও মুহুগ্রদ ও শাহার নিযাগণ এক দিনের জনাও **जात्या**रमार 54 3151 এই ঘটনার কিছকাল প্রে ক্রোরা প্ৰধ্য নবে†ৎসাতে ধন্মপ্রচার করিতে আগন্ত করিলেন। শিধা-সংখ্যা ও JA 3/4'9 বাডিতে লাগিল।

এদিকে কে|বাইশগণ প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হটয়| ইসলামী

দলেব প্রতি ভীষণ শক্তা কবিতে লাগিল। তাহা দেব কাছে অলসংথাক ইসলামগণের নিয়াতনেব পবিসীমা বহিল না। সে সময়ে মকাব প্রতিপত্তিশালী বাক্তি উলিগাব বেলাল নামে এক ক্রীতনাস ছিল। বেলাল ইস্লাম ধর্ম গ্রহণ কবায় তাহার নিয়াতনেব অবধি ছিল না। নানারূপ মমামুষিক মন্ত্রণা সহিয়াও বেলাল ইসলাম ধর্ম পবিতাগে করে নাই। অবশেষ মহামুক্তব আবু বাকব তাহাকে ক্রয় কবিয়া মুক্ত কবিয়া দেন। সেই ইইতে বেলাল স্বাধীন হাবে ধর্মা। চরণ করিয়া গিয়াছে। হজ্ঞবন্ড মুহ্মাদ মুগ্যোদশ বংসর কাল মকায় বাস করিয়া ইস্লাম্ধ্য় প্রচার কবেন, কিন্তু ভাইাতে আরবদের মনে এই নৃত্য ধন্ম সম্বন্ধে কোনকাপ ধারণা জন্মিল না, তবে ভাহাব ধর্মপ্রচারের ফলে মকাব অনেকে ইসলাম ধন্ম গ্রহণ করেন এবং মকাব বাহিবেও কোন কোন স্থানে ইস্লাম ধন্ম গৃহীত হইয়াছিল। হজ্ঞবত মুহ্মাদ দেখিলেন যে, অন্যোদশ বংস্ব কাল মকায় ধন্মপ্রচার কবিয়াও সাক্ষালাভ করিতে পাবিথেন না, এবং বিক্দবাদী



কাবা

কোরাইশদের উৎপীড়ন সফ করা অসন্থব চইয়া উঠিতেছে, কেনা তিনি শিষ্যুবন্দস্য মদিনায় আশ্রেয় গ্রহণ করিতে অভিলাধী হৃদ্দেন। মদিনাবাদীরাও পুরুষ হুইতেই তাহার পাহাল লাভেব জনা একান্ত আগ্রহাতিই ছিলেন। হুজবতের আদেশ অনুসার তাহার শিষ্যাগ ক্ষমণ: মকার মায়া ভাগে করিয়া মদিনায় প্রস্থান করিলেন। একে একে সকল মুদ্দমান চালয়া গেলে স্কাশ্যে হজরত ৬২২ খুটাপের জুলাই (৮ই ববিউল আও্যাল) মানের বৃহস্পতিবার রাজিকালে

মদিনাভিম্থে যাত্রা করেন। এই সময় হইতেই হিজরীসনের গণনা আরম্ভ হয়।

হজরত মদিনাব প্রাস্তভাগে কোষা নামক স্থানে তিন দিবস বিশ্রাম করিয়া যোড়শ তারিখে শুক্রবার দিন মদিনায় প্রবেশ কনিলেন। মদিনা নগরবাসীবা প্রত্যেকে নিজ বাসগৃহের সম্মুখে দপ্তায়মান হইয়া তাঁহাকে অভার্থনা করিয়া নিজ নিজ গৃহে লইয়া যাইবার জনা আগ্রহ প্রকাশ করিয়াছিলেন। হজরত হাসিমুখে সকলকে কহিলেন, "আমার বাহন এই উট যেস্থানে দাড়াইবে, আমি শেই স্থানে অবস্থিতি

জমকহীন মন্জেদের অফুটান ক্রিয়াদিও বিনা
আড়ম্বরে নির্কাহ হইতে লাগিল। এই মন্জেদের
একাংশ নিরাশ্রয় লোকদের জনা নিরূপিত হইল।
হজরত সর্বাদা এই মন্জেদে উপাসনা করিতেন এবং
সময় সময় ধর্মোপদেশ প্রদান করিতেন।

হজরতের অদাধারণ মহন্বপ্রভাবে ধীরে ধীরে ইস্লামের শক্তি স্থাতিষ্টিত হইতে লাগিল। বহু লোক আগ্রহের সহিত তাঁহার শিশ্বত গ্রহণ করিয়া তাঁহার ধর্মমত প্রচার কবিতে লাগিল। হজরত এ সময়ে মদিনাব অঞ্চরক্ত শিশ্ব গণের দাহায়ে একটি



মদিন। হল্পব্নত সুহশ্মদ মকা হইতে আসিয়া এই স্থানে আশ্রয় প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। তাঁহার সমাধিস্থান বলিয়া এই স্থান প্রাসিদ্ধ

করিব।" অবশেষে ঠাহার বাহন আবু আইউবের গৃহহাবে গিয়া বদিয়া পড়িগ। আবু আইউব মহা আনন্দেব সহিত উটের পিঠ হইতে সমস্ত জিনিধ-প্রাদি নামাইয়া সীয় গৃহে আনয়ন করিলেন।

এই মদিনা হইতেই তাঁহার প্রবর্তিত ধন্ম দেশবিদেশে প্রচাবিত হইতে আরম্ভ হইল। এখানেই
তিনি স্থিলিতভাবে উপাসনার জন্য মস্জেদ নিশ্মাণ
ক্বিতে প্রবৃত্ত হইলেন। এই মস্জেদ নিশ্মাণ-কার্য্যে
তিনি স্বয়ং যোগদান করিয়াছিলেন। ইস্পাম জগতের
সর্ক্রপ্রথম ধন্মমন্দির নয়নরজন কার্ক্কার্গো সৌন্দ্যান
শালী হইল না। মস্জেদের প্রাচীর ইইক ও কর্দ্যে
এবং ছাত খর্জ্জুর-পত্রে নিশ্বিত হইল। এই জাঁক-

ধ্যম্প্রলী সঠন ক বিয়া উক্ত ধৰ্মমঞ্জীকে শক্তিসম্পন্ন করিয়াভলি-লেন। এই ধর্মওলীর সহায়তায় তিনি ইস্লায় প্রচারে এতী হন তাঁহার ধশ্মেৎসাহ, সাম্য এবং উদ্দীপনাপণ বাগিছো, অলোকিক ধৈধা ও সহিষ্ণতার কণা ক্রমশঃ আরুর দেশের সর্বত্র ব্যাপ্ত পডিল। আরব দেশের নানা গান ১ইতে বহুলোক আরুষ্ট কইয়া শিষ্যত্ব ভাঁহার কবে । ক্ষতগতিতে আরব দেশের নানা স্থানে ইস-লাম ধর্ম স্প্রতিষ্ঠিত হয়।

এদিকে দেশে দংশা মৃহ্মাদের নাম ও যশঃ এবং ইস্লাম ধর্ম যতই প্রাসার লাভ করিতে লাগিল, ততই তাঁহার জন্মভূমি মকার অধিবাসী কোরাইশ সম্প্রাদায় তাঁহার প্রতি বিদ্বেষভাষাপন্ন হইয়া উঠিতে লাগিল।

হজরত মুহম্মদ পাঁচ বংশর কাশ মদিনার থাকিবার পর শিশুদের সহিত মকাদর্শনে গমন করেন। এই সময়ে কোরাইশদের সহিত তাঁহাব এক সদ্ধি হয়। এই সদ্ধি ইতিহাসে 'হোদরবিয়া'র সদ্ধি নামে থাতি হইরাছে। মুহমদের সর্বত্তেই তক্ত ও প্রচারক আবু-বাকর বলিয়াছেন. "হোদরবিয়া'র সদ্ধি স্থাপন জ্বনা ইসলাম ধর্মের যেরপ প্রচার হয়, আর কিছুতেই. সেরপ হয় নাই।" এ সময়ে মকাবাসী অসংধ্য নরনারী ইসলাম ধর্ম গ্রহণ করে। এই সন্ধির পর বৎসর তিনি পুনরায় মকা দর্শনের ক্ষন্ত গমন করেন। এইবার মকার সমস্ত নরনারীকে ইস্লাম ধর্মে দীক্ষিত করিয়াছিলেন। মকায় ইস্লাম ধর্ম প্রতিষ্ঠিত ইইবার পর শীম্বই আরবদেশের সর্বত্তে ইস্লাম ধর্ম প্রতিষ্ঠালাত করিয়াছিল।

ইস্লাম ধর্মের প্রতিপত্তি ও প্রতিষ্ঠা দিন দিন বৃদ্ধি পাইতে দেখিয়া অনেকেই তাঁহার বিরুদ্ধাচরণ করিতে আরম্ভ করে। এজনা হজরত মুহম্মদের আদেশে মুসল-মানগণকে তেজিশবার যুদ্ধযাত্রা করিতে হইয়াছিল। বাহিনীর নিকট কোরাইশরা মন্তক অবনত করিতে
বাধ্য হয় শত্রুভাচরণ পরিত্যাগ করে! তিনি
তরবারি দ্রে নিক্ষেপ করিয়া প্রেম ও করুণার ঘারা
তাহাদিগকে ইস্লাম ধর্মে দীক্ষিত কবিয়াছিলেন।
হজরত মকায় প্রবেশ করিলে পর মকার নেতারা
দণ্ডের ভয়ে ব্যাকুলচিত্তে তাঁহার নিকট আদিয়া
দাড়াইঘাছিল। তিনি তাহাদিগকে জিজ্ঞানা করিলোন—তোমরা কি ভাবিতেছ ? তাহারা উত্তর
করিল—হেক্মতাশীল পিতার পুত্র, আপনি আমাদের
উপর ক্ষমতা লাভ করিয়াছেন। মুহ্মদ বিশেলন—



মকা

তন্মধ্যে তের বার কোরাইশ্দের বিরুদ্ধে, ছয় বার ইছদীদের বিরুদ্ধে, তুইবার গৃষ্টানের বিরুদ্ধে এবং বারো বার বারোটি বিভিন্ন সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে এবং বারো করিতে হইয়াছিল। ইস্লাম ও মুসলমানদের বিরুদ্ধে কোরাইশ ও ইছদীদের শক্রতাই ছিল সকলের চেয়ে বেশি। তাহারা ইস্লাম ও মুসলমানদের নাম বাহাতে পৃথিবীর বুক হইতে লুপ্ত হইয়া যায়, সেজনাই বজ্ধ-পরিকর হইয়াছিল। হজরত মুহম্মদ ও মুসলমানগণ আত্মরক্ষার জনাই যুদ্ধ করিতে প্রান্ত হইয়াছিলেন। মুসলমানগণ যে তেত্তিশ্বার বুদ্ধ্যাতা করিয়াছিলেন, ভাহার মধ্যে মুহ্মদ পনেরবার তাঁহাদের সঙ্গীছিলেন।

মুহ্ম্মদ শেষ বার বার হাজার সৈনাদলে পরিবৃত হইয়া মক্তা নগরীতে প্রবেশ করেন। তাঁহার বিপুল "প্রাচীনকালে মহাত্মা ইউসফ, উৎপীড়নকারীদিগকে কমা করিয়া যে কথা বলিয়াছিলেন, আমি তোমাদিগকে দেই কথাই বলিভেছি। তোমাদিগকে তিরস্কার করিব না, ঈশ্বর পরম দয়ালু, তিনি তোমাদের সমস্ত অপরাধ মার্জ্জনা করিবেন। তোমরা স্বাধীন, ইচ্ছা করিলে চলিয়া বাইতে পার।" মৃহম্মদের এইরপ সৌজনা ও স্বাবহারে মুগ্ধ হইয়া সমস্ত মকাবাসী ইস্লামধর্ম গ্রহণ করিয়াছিল।

কিছুকাল মকানগরীতে অবস্থানের পর হজরত পুনরায় মদিনায় গমন করিলেন। দ্র হুইতে মদিনা দেখিয়া তিনি মহানন্দে চীংকার করিয়া বলিয়াছিলেন —"জগদীখরই মহৎ, তিনি সর্কশক্তিমান, এক ঈশ্বর ভিন্ন আর উপাস্থ নাই। তিনি তাঁহার সামান্দ দাসেব সহায় হইয়া পাপ ছিন্নভিন্ন করিব। ধ্যুত্বাপন করিয়াছেন। চল, এখন আমরা ঘরে ঘরে বসিয়া তাঁহার উপাসন। করি।"

এইবার মদিনায় পৌ্চিবার পর হইতেই জাহার শ্রীর জ্বলি ১ইয়া পড়িতে লাগিল। যোবনে ভাষণ উংপীতন ও লাঞ্চনা ভোগ কবিয়া এবং প্রৌচ বয়দে অন্নেরত অশাতি ও যত্র বিগ্রাম্থে নিরত থাকার দকণ ভাঁচার শরীর ও মন ভাঙ্গিয়া গিংছিল। সহসা এক দিন বাজিতে তাহার ভীষণ শিবংপীড়া উপস্থিত হইল কিছতেই সে বেদনাব উপশ্য হইল না। দিবস তিনি জর স্নোগে শ্যাশায়ী হুইয়া প্ডিলেন। এতকাপে পীডিত অবস্থায়েও হড়বত মসজেদে যাইয়া মুসলমানদিগকে উপদেশ দিয়াছিলেন। তাহার শেষ উপদেশ দেমন প্রাণম্পনী তেমনি শিক্ষাপ্রদ। তিনি বলিয়াছিলেন—"তে মদল্মানগণ। তোমরা চিরকাল এক চাবন্ধ চুচ্যা থাকিও ৷ ভোমরা প্রত্যেক করিও এবং বিপদে প্রাক্তে স্থান ও প্রেম পরস্পর পরস্পরের সহায়তা করিও। ঈশ্বরের উপাসনা পাৰ্থনা ও সংকাৰ্যোট মানব চিবসৌভাগাবান হটতে পাবে। এতথাতীত মাত্রধ নরকগানী হয়।"

ক্রমে শেষের সে দিন আসিগ। ৬০২ প্টালের ৮ই জুন সোমবার ১২ই রবিউল আওউয়াল মালে হঞ্বত এই অনিতাধাম তাগে করিলেন।

মৃত্যুকালে তাঁহার বয়স ৬০ বংসর ছইয়াছিল।
তিন দিন, তিন রাজি সেই পবিজ শবদেহ কবরস্থ
করা হইল না। দূর দুরাস্থর হইতে দলে দলে মুসলমানেরা আমিষা অন্যেষ্ট ক্রিয়ায় যোগদান করিল।
তিন দিবস পরে হজরতের পবিজ শব মস্কেদের
সংলগ্র পলা আয়েসা বিবির গৃহে সমাহিত ইইল।

হজরত মহম্মদের পুণাজীব-পর্মেশ্বরের সেবা ও মানবজাতির কল্যাণের জন্ম উৎস্থীরত হইয়াছিল। মহশাদ আত্মীয় স্বজনে স্নেহশীল ও বন্ধবান্ধবে প্রীতি-মান ছিলেন, তিনি দাস-দাসীর সঙ্গে অতি সম্বাবহার করিতেন। তাঁথাব তিরো ভাবের পর আনস নামে একজন ভতা বলিয়াছিলেন. – আমি দশ বংসর কাল মহাপুক্ষের অধীনে কাজ করিয়াছি, তিনি একদিনের জন্মও আমাকে কটু কথা বলেন নাই। ৰালক বালিকারা তাঁহার অভান্থ 50 পথিমধ্যে সময় দৈ ভোইয়া অনেক বালক-বালিকাদিগকে মাদর করিতে দেখা খাইত। তিনি জীবনে কাহাকেও প্রহার করেন নাই।

অভিসম্পাত বা কটুবাকা এক দিনের জন্যও তাঁহার বসনা কলুবিত করে নাই।

হজরত মুহত্মদ পীাড়তেব সেবা করিতেন। শ্বাধার দেখিলেই বহন করিয়া সমাধিস্থানে লইয়া যাইতেন. জী হৃদাসের গৃহে সানন্দে ভোজন করিভেন, স্বহস্তে জীর্ণবন্ধ সংস্থাব করিয়া প্রিধান করি:তন্ সময় স্বয়ং গাভী দোগন করিতেন। তিনি সৌজ্লোর আধাব ছিলেন। কাহাবও স্থিত সাক্ষাৎকালে হস্ত-মদন করিবাব সময় তিনি কখনও প্রথমে হয় পরিতাগি করিতেন না। কেইই তাঁহার আয় মক্ত হল বীর-জদয় ও সভানিষ্ছিল না। ভিনি আপ্রিতকে করিতে সাতিশয় তৎপর ছিলেন। তিনি অতান্ত মিষ্টভাষী ও প্রিয়বাদী ছিলেন। "সতাং ক্ষাং, প্রিয়ং ক্রয়াং, মা ক্রবাৎ সতামপ্রিয়ম" \এই নীতি তিনি অক্ষরে অক্ষরে প্রতিপালন করিতেন। তিনি শোকার্তকে সাম্বনা ও দবিদ্রকে উৎসাহ প্রদান জন্ম অতি দীনংীন বাজির গঙেও অক্টিত চিত্ৰে গমন করিতেন। ভাহাদের অনেকে প্রথমধ্যে ধার্যা ভাহাদেব জঃথকা'হনী নিবেদন করিত। গরীব তংথীর জনা তাহার হার সক্ষদা মুক্ত থাকিত। অনেক গ্রহীন নিরাশ্য বাজি তাঁহার গ্রে করিত। তিনি মাগারে প্রবৃত্ इडेवांत आकार्य পর্মেশ্বরে আশীর্বাদ ভিক্ষা ও আহারাত্ম কাঁহার নিকট ক্রজ্জা জ্ঞাপন করিতেন। জাঁহার জীবনে একদিনের জনাও ত নিয়মের বাতায় হয় নাট। তিনি প্রবল শত্রুকেও অক্টিচ্চিত্তে ক্ষমা করিতেন। হজরত মহমদ কোন প্রকাব বিলাসিতার প্রশ্র দিতেন না। ঠাহার ভোজাও পরিক্ষদ অতি সামান্ত ছিল। এক এক দিন ভাঁচাকে অন্নাভাবে অনাহারে পাকিতে হইত। অনেক সময় কেবল খজ্জ র ও ঞ্চল তাঁথার ক্ষান্ত্রতি করিত। কোন কোন রাতিতে তৈলাভাবে তাহার গংখ সন্ধাদীপ জলিত না। পরমেশ্বর তাঁহার নিকট পৃথিবীর ধনভাগ্ডার খুলিয়া পিয়াছিলেন, কিন্তু তিনি প্রত্যাখ্যান করেন।

আপ্রপ্রতিষ্ঠা ও আত্মন্থ মৃৎশাদের জীবনের উদ্দেশ্য ছিল না। একমাত্র অদিভীয় পরমেশ্বরের উদাসনায় প্রতিষ্ঠা, পাপে আকণ্ঠ নিমজ্জিত আরব ফাজের উদার এবং বভাগিভিক্ত আরব জাতির ঐক্যবন্ধন মৃহশাদের প্রতি কার্যের মৃত্যুদ্ধ ভাগিব স্কল জীবন; তিনি শীয় মৃত্যুদ্ধ সিদ্ধিলাত করিয়াছিলেন। হজরত মৃহশাদ স্প্রের নিকট হইতে যে সমৃদ্ধ প্রত্যাদেশ

### ইংকত মৃহয়দ

প্রাপ্ত ছইয়াছিলেন, তাহাই কোরাণ শবীফ নামে বিখ্যাত মুসলমানদের ধণ্ঞছ। এই গ্রন্থ আরবী ভাষায় লিখিত।

হছরত মুহম্মদের মৃত্যুর পব তাঁহার শিয়েরা

এসিয়া, ইউরোপের স্পেন এবং আফ্রিকা ও অন্যান্য দেশের এক জাতির পর আর এক জাতিকে পরাজিত করিয়া পূর্ব্বে ভারতবর্ষ এবং পশ্চিমে আটলান্টিক মহাসাগরের কুলপণ্যস্ত মুসলমান রাজা বিস্তার করেন।

### হজরত মূহমাদের বাণী

আলাহ ্বাতীত উপাত নাই, মৃহত্মদ আলাব প্রেরিত। (লা ইলাহা ইলা-লাহ্ মৃহত্মদ্-র্রস্ল-লাহ্)

জগণীখবই মহৎ, তিনি সর্বাশক্তিমান্। এক ঈশ্বর ভিন্ন আর উপাগু নাই। তিনিই পালনকর্ত্তা, তিনিই সংহারকর্তা, এবং হিনিই মহৎ ও মহীয়ান।

তোমবা একে অপরের ভ্রাতা ইসলামধন্মাবলম্বী-মাত্রেই এক ভ্রাতমণ্ডলীব লোক

জ্ঞানিগণকে স্থান করিলে, স্থানার প্রতিও স্থানপ্রদর্শন করা হয়।

মুদলমানের অকপটতার প্রমাণ এই যে, দে (তাহার) কর্ত্তা বাতীত অন্ত কিচুতেই মনোযোগ প্রদান করে না।

প্রাতে ও সন্ধায় ঈশ্ববের উপাসনা করিবে এবং সমস্ত দিন ভোমাদের কণ্ম ওবাবসায়ে লিপ্ত পাকিবে।

যে নিজের জন্মও পরিশ্য করে না বা অপনেরও বোন কাম্যাসম্পাদন করে না, সে ঈশ্বনের অনুগ্রান্ত লাভ কবিতে পালিবে না।

যাহাবা সাধুহাবে জীবিক। উপাৰ্জন করে, তাহারা ঈশ্ববেব প্রিয়।

বমণীগণকে স্থান ও অনুগ্রহ প্রদর্শন করিবে।

ঈশ্বর এইরূপ বলিয়াছেন—যাহারা বিপৎপাতে অধীর হয় না এবং অনায়কারীকে ক্ষমা করে, নিশ্চয়ই তাহারা সদগুণের অস্কুঠানকারী।

যে বাজি কথা বলিবান সময় মিথা কথা বলে,
প্রতিজ্ঞা কবিয়া প্রতিজ্ঞা ভঙ্গ করে এবং তাহার
নিকটকোন দ্রনা গড়িত রাখিলে তাহা আঅসাং
করে, সে আমার কেহই নহে—ববং প্রকৃত পক্ষে
দে [আমার] বিক্লাচারী।

দক্ষিণ হস্ত যাহা প্রদান করে, বাম হস্ত জানিতে পারে না, এরূপ দান্ট সর্কোৎকৃষ্ট।

যে ভিক্ষানা করিয়া শীয় পতিশ্রমণন অর্থ দারা জীবিকানিকাহে করে, ঈশ্বর ভাহার প্রতি প্রদর।

যাহানা গচ্চিত দ্রবা আত্মসাং করে না, কণা বলিয়া তাহাব অনাথাচরণ করে না এবং অঙ্গীকার করিয়া তাহা রক্ষা করে, ভাহারাই বিশ্বাসী [ অর্ণাৎ প্রকৃত মুসলমান ]।

শক্রকে যেক্ষমা কবিতে পাবে ঈশ্ববু ভাহার প্রতি প্রসন্নহন।

প্রতিবেশীর প্রতি আপনার বন্ধুর মত ব্যবহার করিবে ও আত্মীয়ের ভায় দেবা করিবে।

এক ভিন্ন দিতীয় ঈশ্ব নাই। হজারত মৃহ্মাদ সেই স্তাধ্যাপ্রদর্শক।

929



### গ্রীম্মকালে ঘাম হয় কেন ?

আমাদের শরীরের ভিতর ভৌতিক (pllysical) ও রাসায়নিক নানানু রকম বাংপার সর্বাদাই চলছে। এই বাংপার-

গুলি ঠিকভাবে চল্ভে হ'লে একটা বিশেষ তাপের প্রয়োজন। স্বাভাবিক অবস্থায় আমাদের শরীরে যে তাপ বর্ত্তমান থাকে ভা এই সব ভৌতিক ও রাসায়নিক বাাপারগুলি চলবার পক্ষে ঠিক উপযুক্ত। কোনও আগন্তক কারণে আমাদের শরীরের এই স্বাভাবিক তাপ যদি বেশী হ'য়ে থায়, তখন আমাদের গায়ের চামড়া বা স্বকের লক্ষ্ণ লক্ষ্য ছিদ্রু দিয়ে জলীয় পদার্থ বিরিয়ে এসে তাড়াতাড়ি বাঙ্গে পরিণত হবার চেষ্টা করে—কলে, আমাদের গা স্বাবার ঠাণ্ডা হ'য়ে স্বাভাবিক অবস্থা কিরে পায়। এ'কেই আমরা সাধারণত: বলি ঘাম হওয়া।

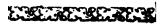
আমাদের শরীরে অসংখ্য মাংসপেশী আছে তা তোমরা জান। এই মাংসপেশীগুলিই মন্তিক্ষের একটা বিশেষ স্থানের ছারা। পরিচালিত হয়ে আমাদের শরীরের স্বাভাবিক তাপকে বর্তুমান রাখে। এই বিশেষ স্থানটির নাম দেওয়া যাইতে পারে মন্তিক্ষের "উত্তাপ পরিচালক কেন্দ্র" বা ছোট করে "উত্তাপ কেন্দ্র"। যদি কোন কারণে বাইরে ঠাণ্ডা বেশী থাকে তবে ঠাণ্ডা হ্বার সাধারণ নিয়মাহুসারে আমাদের শরীর থেকে খুব অনেকটা উত্তাপ বাইরে বেরিয়ে বায়, আর সঙ্গে শ্ব আমাদের রক্তের তাপনাত্র। কমে যায়। এই শীতশতাপ্রাপ্ত রক্ত যথন মন্তিক্ষের মধ্যে গিয়ে "উত্তাপ কেন্দ্রে" পৌছায় তথন স্বৈথি মন্তিক্ষ সাডা দিয়ে উঠে—"কোথাও গণ্ড-

গোল হয়েছে।" আর মন্তিকের দৃতরূপী বে অসংথা স্নায়্মগুলী আছে তাদের দিয়ে সে মাংস-পেশীদের আদেশ দিয়ে গাঠায়

ষে, "তোমরা আরও বেশী ক'রে উত্তাপ তৈরী কর"। এখন শরীরের কলকজা যদি সব ভাল অবস্থায় থাকে, তবে অলকালের মধ্যেই শরীরের স্থাভাবিক তাপমাত্রা ফিরে আসে।

অন্তপক্ষে, বাইরে যদি থব গরম থাকে, (যেমন আমাদের দেশে গ্রীম্বকালে দেখতে পাওয়া যায়) তথনও আমাদের শরীরকে তার স্বাভাবিক তাপনারায় ফিরিয়া আন্বার হুপ্তে মন্তিক্ষের তাপকেক্ষের ক্ষেক্টা উপায় আছে। প্রথমতঃ সে আমাদের মাংসপেশীদের হুকুম দেয় বে, "ভোমরা বেশী সক্রিয় হো'য়ো না—যথাসম্ভব চুপ ক'রে থাকবে।" তারাও প্রভুহুক্ত ভূতোর মত বেশী নততে চড়তে চায় না।

সেই জন্তেই গ্রীমকালে আমাদের শারীরিক পরিশ্রম করতে ভেতর থেকেই অনিচ্ছা দেখা যায়। কাজে কাজেই, আমাদের শরীরের ভাপও অকারণ বাড়তে পায় না। ভাছাড়া গরমের সময় প্রাণিমাত্রই খুব বেশী বেশী বাতাস ভাড়াডাড়ি ক'রে নিঃখাস নিয়ে ছেড়ে দেয়। এতে ক'রেও রক্তের ভাপ কমে যেতে সাহাযা পায়। কুকুর শ্রেণীর মধ্যে এই ব্যাপারটা খুবই বেশী দেখতে পাওয়া যায়। একটু গরম পড়লেই ভারা মস্ত বড় জিহবা বার ক'রে হাঁপাতে আরম্ভ করে। এই হাঁপানি হ'ল ভাদের শরীরকে ঠাঙা রাথবার একটা আশ্রহাঁ উপায় মাত্র। এ ছাঙা



শরীরকে নিজে নিজেই ঠাণ্ডা রাখবার আর একটা অভিনব উপায় প্রাণীদের শরীরের মধ্যাই আছে। আমাদের ছকের নীচে অসংখা কুদ্র কুদ্র গ্লাণ্ড মাছে। এদের নাম স্বেদপ্রহী বা sweat gl nd। তাদের কাজ হ'ল রক্ত থেকে জলীয় ভাগটাকে আলাদা ক'রে আমাদের চামড়ার নীচে জমা ক'রে দেওয়া। রক্তের তাপমাত্রা অধিক হলেই মন্তিক্বের "তাপকেল্ল" এই স্বেদগ্রহীগুলিকে উত্তেজিত ক'রে দেয়—তথন এরা প্রোদ্যে নিজের কাজ করতে থাকে। আর আমরা বেদম বামতে আরম্ভ কবি।

পাবীদের কিন্তু এই স্বেদগ্রন্থিলি নেই। সেই জ্বন্থ গ্রম বেশী পড়লে গ্রমের দেশের পাবীও যথাসভব ঠাণ্ডা যায়গায় আশ্রয় নেরার চেটা করে। তারাও তথন অন্ত প্রাণীদের মত চুপ্চাপ্ পাকতে চার আর বেশী বেশা নিংখাস নিয়ে ইণগারার চেটা করে। এতেও সব অবস্থায় তাদের স্থিধা হল না। তাই, প্রকৃতি তাদের জন্তু অন্ত রকম বাবহা ক'রে দিয়েছেন ভাদের কৃস্কুসের সঙ্গে সংসুক্ত হ'য়ে আলাদা একটা বাতাসের ঘর আছে। এই ঘরের দেওয়াল, বক্ত গ্রম হ'য়ে উঠলেই ঘামতে আরম্ভ করে। তপন কৃস্কুসের বাতাস এই ঘরের মধ্যে এসে এই ঘাসকে বাজ্পে পরিণত ক'রে ভিতর্টা ঠাণ্ডা করে দেয়।

### থুব যথন গরম পড়ে তথন তোমাদের কি করা উচিত १

- ১। অনাবশুক পবিশ্রম করে রক্তের তাপমাত্রা বাডতে না দেওয়া উচিত।
- ২। অবাধ ভাবে দাম হবার জ্বন্থে আানাদের অকের ছিদ্ওলি খুব পরিকার রাধা উচিত।
- ৩। খুব আঁট-সাঁট বা এমন সব জ্ঞামা-কাপড় বা পোষাক পরা উচিত নয় যাতে করে আমাদের শরীরের উত্তাপ বের হ'তে অস্থবিধা হয়।
- ৪। সেই সব খান্ত আহাব করা উচিত, যাতে
   করে আমাদের রক্তের তাপমাত্রা কম থাকে।

## জন্ধ-জানোয়ারেরা চিস্তা করতে পারে কি ?

এই প্রশ্নের উত্তর দেওয়ার পূর্বে চিন্তা করা এই কথাটায় আমরা কি বৃকি, তাহা স্পষ্ট হওয়া দরকার। প্রক্রতির সম্পর্কে এসে আমাদের মন যে সাড়া দিয়ে ওঠে তার নাম "অহত্তি"। এইরপ একাধিক অহত্তি নিয়ে তাদের মধ্যে স্থম্ম স্থাপন করার নাম "চিস্বা"। আমরা সাধারণতঃ অহত্তি আর চিস্তার মধ্যে ভূল ক'রে বসি।

পরের হংথ দেখে আমাদের মনে একরকম ভাব হয়। এই ভাবটার নাম আমর। বলি, করুণা। করুণা একটা অম্মভৃতি। কিন্তু যথন আমি বলি, ''আমার মনে করুণার সকার হয়েছে,'' তথন তাকে আর অন্তভৃতির লগে চলে না, কারণ তথন ''কামি'' অন্তভৃতিরে সঙ্গে ''করণা'' অন্তভৃতিরে এক 'ক'রে দেওয়া হ'ল। এখন তা হ'য়ে উঠল ''চিস্তা''। জন্ম-জানোয়ারের মধ্যে এই অন্তভৃতি নাাপারটাই। প্রচরভাবে পাওয়া যায়। একাধিক অন্তভৃতিকে তারা যে এক ক'রে দিয়ে একটা চিন্তা তৈরী করেছে—এমন সাধারণতঃ দেখা যায়না।

किन्न जीव। (य छाउँ। विषयात गरमा मनन स्थानन ক'রে কথনও চিন্তা ক'বতে পারে না, এমন নয়। কথনও কথনও, বিশেষ ক'রে উচ্চ শ্রেণীর প্রাণীর। এমন শব কাজ ক'বে বসে, যাব পিছনে তাদের চিন্তা আছে, এ না স্বীকার করাল চলে না। কুকুরের, বোড়াব বা বানবের সম্বন্ধে এমন অনেক গল্লই প্রসিদ্ধ আছে--যা থেকে বোঝা যায় যে, তাদের সামান্ত চিম্বা করবার শক্তি আছে। কিম পাথীবাও যে কথনও কখনও চিম্বা কবার দৃষ্টান্ত দেখায়, তা বড় অদ্বত। আমি উপকথার শুকপাথীর কথা বলছি না। উপকথার গুক ত মাসুষেব চেয়ে ঢের বেশী চিন্তা ক'রতে পারত। আমি যে গল্প তোমাদের বলছি, তা উপকণার নয়-স্ত্যিকাবের। একটা কাকের গল-এই কাকটা ৫ পর্যান্ত গুণতে শিখেছিল। কেউ তাকে শেখায়নি, সে আপনা-আপনিই শিথেছিল। কাকটা আমেরিকার একটা গীর্জার ডোমে (dome) বাসা বেধেছিল । গীর্জান রক্ষক থথনই গীজ্ঞায় ঢুকে কাকটাকে মারবার উদ্দেশ্যে ডোমে ওঠবার চেষ্টা ক'রত, তথন সে নিকটম্ব একটা গাছে গিয়ে বস্ত। যতক্ষণ প্রান্ত সে লোকটা গীর্জ্জা থেকে বেরিয়ে না আসত, তওক্ষণ সে নিজের বাদায় আর যেত না। গীৰ্জাবক্ষক বুদ্ধি করে একজন সাধী নিয়ে ঢুকে নিজে বেরিয়ে এল। কাক শুধু বের হতে দেখে গাছেই বদে রইল। যথন দিতীয়টিও বেরিয়ে এল, তথন উড়ে নিজের বাসায়

## ++ শিশু-ভারতী+

গেল। এমনি করে ৩।৪।৫ জন লোক পর্যান্ত নিয়ে গীজ্জা-রক্ষক তাকে ধরবার চেষ্টা কর্ল। কিন্তু কাক যতক্ষণ সব লোক না বেরিয়ে এল ততক্ষণ বাসায় গেল না। অবশেষে ছয়জন লোক একসঙ্গে গীজ্জায় ঢুকল, আর এক এক ক'রে বেরিয়ে আস্তে লাগল। কাক গাছে বসে কিন্তু গুণ্ছে। যথন ৫ জন লোক বেরিয়ে এল, তথন সে নির্কিবাদে উদ্ভে গিয়ে বাসায় বসল। এবারে কিন্তু যঠ লোকটিকে গুণ্তে পারেনি। এই কাকটা পশুপক্ষীদের ভিতর চিন্তা করায় অনেক দূর এগিয়েছিণ, নগতেই হবে।

### চুল পাকে কেন?

পাকা চুলের অর্থ সাদা হ'য়ে যা ওয়া বা সাদা দেখানো। কোনো জিনিষের ওপর সূর্যোর আলো প'ড়ে যদি তার সবটাই প্রতিফলিত হ'য়ে কিরে আদে তবেই সেই জিনিষ্টা সাদা দেখায়। সম্দের জল ত নীল, কিন্তু সেই জলই যখন ফেনা হ'য়ে দেখা দেয় তথন পরিষ্কার সাদা ছু'য়ে যায়। বোতলের মধ্যে যুখন পোড়া ওয়াটার থাকে তখন তা জলের মৃত্ বর্ণ-হীন থাকে —কন্তু কাচের গেলাসে ঢাললেই সেটা ফেনায় ফেনায় ভ'রে ওঠে ও কেখন সাদা দেখায়। তোমরা অনেকেই ত জলে সাবান ওলে, দাঁপা কাঠির মুখে দেই জল নিয়ে বড়বড় বুলুদ তৈরী করতে জান। কেমন চমৎকার চক্চকে সাদ। বলের মত দেখতে হয়—না ১ সাদা কেন হয় বলতে পার ১ রুদ্ধের আরশিব মত পালিশ-করা দেওয়াল থেকে দ্ব আলো প্রতিফ্লিত হ'য়ে ফিরে আদে ব'লে তাই সাদা দেখায়। অবশ্ৰ বুদুদের দেয়াল খুব পাতলা হ'লে নানানুরং দেখতে পাওয়া যায়--সে অবভা গ্র কথা৷ এখন সমুদের ফেনা বা সোডা ওয়াটারের ফেনার দিকে লক্ষা করলেই দেখতে পাবে যে, তখন জল দিয়ে হাজার হাজার ছোট ছোট বুধুদ তৈরী হয়েছে। এই বুদ্তুলি চক্ককে দেয়ালে ধাকা লেগে আলোর স্বটাই তোমাদের কাছে ফিরে व्यामार्थ। এই कानाई (कना माना (प्रथाय।

তোমরা ণিণি বা রজনীগন্ধা ফুল অনেকেই

দেখেছ ? কেমন চমৎকার সাদা সাদা পাপড়ি দিয়ে তৈরী এই ফুলগুলি ৷ এদের এই রকম সাদা হওয়ার মুলেও, অনেকটা দাদা ২ওয়ার যে কারণ, সেই কারণই বর্ত্তমান। এদের পাপড়িতে হাজার হাজার কুদ্র কুদ্র বুদ্ধুদের মন্ত পালিশ করা ঘর তৈয়ারী করা আছে। ফেনার বৃদ্ধ যেমন চোখে দেখতে পা ওয়া ষায়, এ অবশ্য তেমন পাওয়া যায় না -- অণুবীকণ দিয়ে দেখলে তবেই ধরা পড়ে। তোমরা যদি এই পাপড়িগুলি জোর ক'রে টিপে এই ঘরগুলির দেয়াল ভেক্সে ফেল, তবে এর আলো ফিরিয়ে দেবার শক্তি কনে যায়। সেই জনাই রজনীগন্ধার পাপড়ি টিপ্রেট বিবর্ণ হয়ে পড়ে। আমাদের চুলও যথন সাদা হবার উপক্রম করে, তথনও তার মধ্যে এমনত ছোট ছোট বাতাস ভত্তি কুঠুৱী (cell) তৈরী হ'তে দেখু ছে পাওয়া যায়। স্বাভাবিক স্মবস্থায় কুঠুরীওলিব জায়গায় চলের অনেল যে রং সেটা বভ্রমান থাকে। সাদা হবার সময় এই রঞ্জক পদার্থের (pigment) কণাগুলি পূর্ব্বকথিত ছোট ছোট গ্যাস-ভরা কোষ (cell) গুলি দিয়ে ক্রমে ক্রমে অপস্থাবিত হতে থাকে। এই কোষগুলির দেওয়ালে আলোব সবটাই প্রতিফলিত হ'গে ফিলে আসাতে চুল সাদ। দেখায়।

তাই মানুষের চুল ধ্থন সাদা হ'তে আরম্ভ ২য়, তথন তার অর্থ এই যে, প্রথম অবস্থায় যে চুল তার রঞ্জক পদার্থ (pigment) নিজেব ভিতর নিয়ে উঠত এখন সে আর ভাপাচেছ না। ভার বদলে গাাস-ভরা কোষ নিয়ে তাকে উঠে আসতে হচ্ছে। কথনও কথনও আবার এমনও দেখতে পাওয়া যায় গে, ফ্যাপোগাইট (phagocyte) বলে এক রকময়ামি-বার মত বিচরণশাল জীব চুলের গোড়া দিয়ে উঠে চলের রঞ্জক পদার্থ নষ্ট ক'রে ফেলে। ভোমরা কেউ দেখেছ কি না জানি না, কিন্তু কথনও কথনও এমন দেখতে পাওয়া যায় যে, কাকর কারুর এক রাত্রির মধ্যেই মাথার সব চুল সাদা হ'য়ে গেছে। একেত্রে অবশ্য রঞ্জক পদার্থ-(pigment) স্বটা নষ্ট হতে সময় পায় না। বাাপার হয় এই যে, রঞ্জ পদার্যগুলির ওপর এই গ্যাদ-ভর্ত্তি দেশগুলির একটা আবরণ এসে যায়। ফলে চুল সাদা দেখায়।





# ভারতের স্থাপত্য

( शाहीन काल )

শিল্প-কলা' একথা বলিলেই যে কেবল ছবি মাঁকা বৃন্ধায়, তাহা নহে। তবে শিল্প-কলাকে সাধারণতঃ চুই ভাগে ভাগ কবা যাইতে পারে। একটিকে 'চারু শিল্প' অর্থাৎ স্থাপতা, ভাস্কর্যা ও চিক্কলা এবং অপরটিকে 'কারুশিল্প'—যেমন কাঠেব, পিওলের ও কাপড় প্রভৃতি নানা জিনিযের বিলেব কথা উপর কাককালা ও শিল্প-নৈপুণা দেখানো। আমরা ভোমাদের কাডে প্রথমতঃ আমাদের দেশের স্থাপতা অর্থাৎ ঘর-বাড়ী বা বাপ্ত শিল্পের কথা বলিব।

কোন্দেশ কিরপে সভা ও উন্নত, আমরা ভাষাদের ঘর-বাড়ী ও তাষাদের তৈয়ারী বিবিধ শিল্পকলার ভিতর দিয়াই তাষাব পরিচয় পাই। গ্রীস্, মিশর, বাবিলন প্রভৃতি দেশের প্রাচীন সভাতার খবর এই ভাবে তাহাদের শিল্প-কলার ভিতর দিয়াই আমরা পাইয়াছি। তাষার মধ্যে বাস্ত শিল্পের (স্থাপত্যের) নক্সাই হইল প্রধান পরিচয়। কেননা, প্রথমে নিশ্মিত হয় ঘর, তারপর আসে আসবাব-পত্র, তারপর ছবি টাল্লাইয়া সেই ঘর-বাড়ীর শোভা বর্দ্ধন করা হুইয়া থাকে। সব ঘব-বাড়াটেই যে সেকালের বা একালের মান্তুষের। নানারূপ চিত্রের দ্বারা শ্রীসম্পন্ন করিয়া হোলে, হাহা নহে। যেমন হেমন ভাবে হৈয়াবা-করা বেবাড়ীতে বাস করা হয়, সে-বাড়ীতে শিল্পের শ্রী স্পর্শ করিছে পারে না। ভাই এইরূপ বাড়াকে খাব চারু বা কারু শিল্পের কোঠায় কেলা যায় না।

সোভাগকেনে ভারতব্য পুথিবীর মধ্যে একটি অভি-প্রাচীন সভাদেশ, তাই বহু প্রাচান যগ হইতে আমাদের দেশের লোকেরা ভাগদের নিজম্ব স্থাপতা উট, কাঠ, পাথৱের কাজ, আজ প্যাস্ত নিদর্শন স্বরূপ রাখিয়া দিয়া গিঁয়াছে। ভাই ছয়শত বংদর মুঘল-সামাজ্যের ও দেউশত বংদর কাল ইংরাজ সরকারের অধীনেও ভারত-শিল্পবলার প্রাণ-শক্তি মরে নাই। জঙ্গলী ভারতের প্রাচীন কাফীরা যেমন তেমন করিয়া স্থাপত্য-কার্ম্ভি বাসা বাঁধিয়া বাস করে কিন্তু সভা ভারতে যে জঙ্গলী ছিল না, তার পরিচয় সমাট অশোকের তৈয়ারী ইট-পাথরের ইমারত এবং তারও পূর্বেকার

## শিশু-ভারতী

পাটলিপুরের (পাটনা) 'শ চস্তরেন্তর'— চন্দ্রগুপ্তের প্রাসাদের ভগাবশেষ হইতে যথেষ্ট পরিচয় পাওযা যায। ইউরোপীয়

লোকদেব কথা জানিতে পারা যায়। স্পেনদেশের প্রাচীন গুহাবাসীদের আঁকা ছবি দেখিলে মনে হয় যে, পে খুব আদিযুগ



মোহেন্-জো-দাড়োতে আবিষ্কত বাধানে। প্রক'রণী ও বাটা

ঐতিহাসিকেরা ভারত্বদে স্থানের পুকে পাণর বা ইটের হৈয়ারী কিছুই ছিল না কাফ্টিদেশ মধোও কাক শিল্পের অল্পবিস্তর বলিয়া এভদিন প্রচার করিয়া আসিতে-ছিলেন। কিন্তু বিধাতা ভারতের সভাগের প্রাচানত্ব প্রমাণ করিবার জ্ঞাই অশোকের বভ প্রেব তৈয়ারী মোহেন্-জা-मार्डाट ७ भाषार्त्त १ स्थनरमत शरत हेट्-পাণবেৰ ৰাডা-ঘরের খিডি প্রভৃতি অতি প্রাচান শিল্পানদশন সব জগতের লোকের চক্ষুর সম্মুখে মুক্ত করিয়া ধরিয়াছেন-আর এই আবিষারের জন্ম আমাদের বাঙ্গলারই এক স্থপতান, স্বগীব রাখালদাস বন্দো-পাধাায় মহাশয়ের অসাধারণ কৃতিৰ ও দেশ-প্রীতি চিরকালের জন্ম ইতিহাসের বুকে লিখিত থাকিবে। মোহেন্-জো-দাড়ো ও হারাপ্লার বিস্তৃত বিধরণ সার জন্ মার্শেকের প্রকাশিত প্রস্তুরে বইয়েতে কাছে: 'শিশু-ভারতী'তেও <u> এবিষয়ে</u> বিশদভাবে অনেক কথা বলা হহয়াছে।

প্রাগৈতিহাসিক যুগে আমাদের দেশেও পৃথিবীর অভাভ জায়গার মত গুলাবাদী

**১ইটেই মামুষের মনে** শিল্পানুরাগ জাগিয়া ছিল –কেবল বিকাশেব গ্ৰাপেক্ষায ট্দ্মগ হ ইয়া ছিল। সভাতা-বিস্তারের সঙ্গে সঙ্গেই উংবি পরিণতি 35(3 কাবি মু হটল ৷ এখনো যে√সব (मन १भमायू १ 5 देश আফে, সভাভাব বিস্থাৰ এখনও খে-সব দেশে হ্য নাই এমন আফি কার

কারিগবি দেখা গায়। কিন্তু বাস্তু শিল্পের



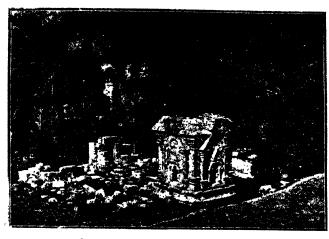
স্থগীয় রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায়

প্রসার দেশ সভাতার উন্নত স্তরে না গেলে কখনও উন্নতি লাভ করে না।

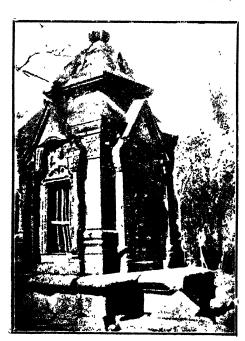
### ভারতের স্থাপভ্য

ভারতের প্রাচীন স্থাপত্যের বিধয় আলো- মুঘল-মুগের স্থাপত্য-কলা। এ-সম্বন্ধে পরে

চনা করিতে হইলে আমাদের দেশের প্রাচীন ইতিহাসের বিষয় জানা বিশেষ দরকার। এক এক যুগে স্থাপতা এক একটি বিশেষ সাদৰ্শে গডিযা 🗸 উঠিয়াছিল। প্রধানতঃ ভাঙাব ছুট্টি ধাবা অমেবা দেখিতে পাই। একটি **ॐर ५८**७ প্রাচীন ভারতীয় (উত্তর ও দক্ষিণ ভাবটের ) স্থাপতা এবং অপবটি



কাশ্মীর নারাস্থানের প্রাচীন গান্ধার ধরণের মন্দির



কাশীর পায়ারের প্রাচীন গান্ধরি ধরণের মন্দির

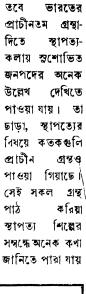
আমৱা বিশেষভাবে গালোচনা করিব। গ্রীক্রীর আলেকসান্দের গ্রীস দেশ হইতে সদলবলে আসিয়া যখন কাশ্মীর ও উত্তর পাঞ্জাব জয় করিয়াছিলেন, তখন তাঁহার অন্নচর-দের মধ্যে যাঁহাবা এই সব প্রদেশে (কাশ্মীৰ জঞ্জে) স্থানীভাবে বসবাস কবিয়াছিলেন ভাঁগাদেব গড়া কিছ স্থাপতাও শিল্লের প্রিচ্য তঞ্জাললার প্রাচীন ভ্যাবশেষের মধ্যে পাওয়া গিয়াছে। এই ত্রীক প্রভাব বা প্রেরণার বলেই ভাবতের শিল্পপ্রাণ জাগিয়া উঠিয়াছিল বলিয়া একদল ইউরেপীয় ঐতিহাসিক গবেষণা করিয়া থাকেন। কিন্তু সম্প্রতি ভাবতের অতি কার্ত্তি মোহেন-জো দাড়োর আবিন্ধারের পর সে-কথা কেহ আর বলিবেন না—বলিলেও কেই-বা বিশাস করিবে গ এ-সম্বন্ধে ততীয় সংখ্যা শিশ্ব-ভারতীতে বিশদভাবে আলোচিত হইয়াছে। সমুসন্ধিৎসু

## ম্পিত্ত-ভাৰতী

পাঠক তৃতীয় সংখ্যার ১৮৯ পৃষ্ঠা হইতে বৈদিক বা পৌরাণিক যুগের ভারতীয় ১৯৬ পৃষ্ঠা দেখুন।

স্থাপত্যের কোন নিদর্শনই পাওয়া, যায় না।

অজন্তাৰ চৈতা ওখাৰ অভান্তৰ

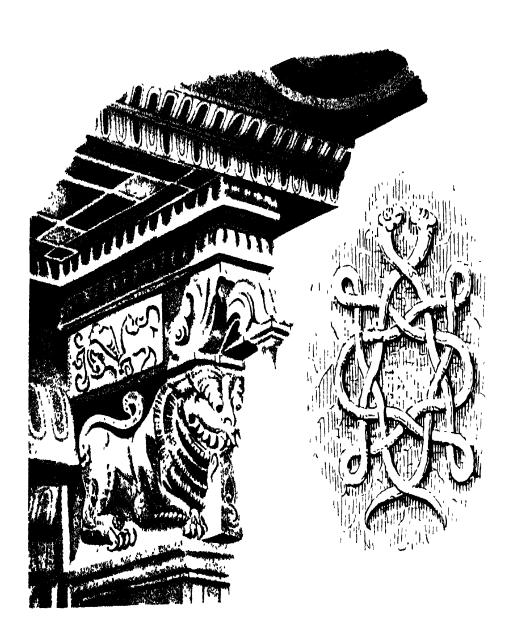




অজ্ঞ বিহার গুহাব ভিত্রকার অলিন্দ (বাবান্দা)



পাহাডেব গা কেটে তৈবী ইলোবাব গুছা-মন্দির



'काराई द्राद्धार

### +++ভারতের স্থাপত্য-

ভারতীয় প্রাচীন যুগের স্থাপতাকে মোটামৃটি নিম্নলিখিত প্রকারে ভাগ কবিতে পারি।

- ! (১) উত্তর ভারত (২) দক্ষিণ ভারত
- (৩) সিংচলীয়
- ১। বৌর (৪) ব্রহ্ম
  - (৫) গ্ৰহীপ, বালি, শ্যাম ও ক স্বোজ
- २। ट्रेजन
- ৩। উত্তর হিন্দু (২) উদ্ধান (২) বঙ্গীয় (৩) উত্তর ভারত
- ৪। তামিলি বাজাবিড
- ে। কাল্টারা

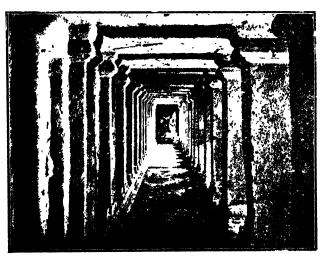
এখানে প্রত্যেক প্রকার স্থাপত্যের সভন্ত বর্ণনা সম্ভবপর নঠে। পরবতী প্রবন্ধ সকলে এ-বিষয়ে ফেমে ক্রমে বিশেষভাবে প্রচানধাপ্রচাচ কাত্তি ছাড়া প্রাচীম আলোচিত হইবে।



যোগামারা ওই।

পূৰ্বেই বলিয়াটি যে নৃত্ন আবিষ্কৃত ্চল্লত্থ ৬ অপোকের সোহেন-জো-দাডোর প্রাচীন ভারতের স্থাপত্যের নিদর্শন পাটলিপুত্রের

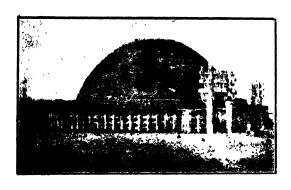
> (পাটনার) গুল্পর প্রাসাদ এবং তাগর পৌত্র সমাট অশোকেব সামলে রচিত तोक केंद्रिश्रल এখনও বিরাজিত গাছে। প্রাচান যগে ভাৰতে উচ-কাঠেব ঘর-বা গাই তৈযারী হইত। এই ইট এখনকার কালের সাধারণ ইটের দ্বিগুণ লম্বা বা চৌড়া (চওড়া)



केटनातात देकनाम छन्। भन्तित्व भनिन

## শিশু-ভারতী

ছিল। ডাক্তাব স্পুনার সাহেব প্রত্নতত্ত সে পালিস মলিন হয় নাই। ঠিকু এই-বিভাগ হইতে খনন করিয়া চক্রগুপুর ভাবে পালিস, গয়া জেলার অতি প্রাচীন



দাঁচী ভূপ

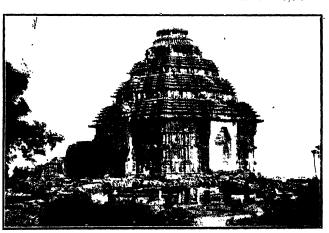
প্রাসাদটি মাটির নাচ হইতে উদ্ধাব করিয়া-ছেন: তাহাতে ঐরপে বড ইট দেখিতে

পাওয়া যায়। ডাকোর স্প্ৰার অনুসান করেন যে, পাটলি-পুত্রের এই শতস্তম্ভ প্রাসাদটি সমসাম্যিক কোনও পাবস্থ নুপতির প্রাসাদের অনুকরণে নিশ্মিত হইয়াছিল। এই কপ মিল বা সামঞ্জন্ম সব দেশেই দেখিতে পাওয়া যায়। প্রাচীন গ্ৰীক স্থাপতা ভাস্কর্যো মিশরীয (Egypt) শিলের

চক্রপ্তবের প্রাসাদের স্তম্ভসমূহ উজ্জল দপর্ণের রেলিংএর মাঝধানের পাথরগুলিকে ''স্চ'' মত পালিস করা ছিল। এখন পর্যান্তও

বরাবর গুঙার পাণরের দেয়ালে দেখিতে পাওয়া যাব। চন্দ্র গ্রেথর প্রাসাদের স্তন্তের ভগাব শেধ ৯০ ফট মাটির নাচ হইতে থঁড়িয়া বাহির কবা ইইয়াছে। খঃ পুঃ ২৫০ বৎসর পূর্বেকার অনোকের কীতিৰ মধো সীচার বিরাট ইষ্টক নির্দ্মিত বৌদ্ধ স্থপ ও প্রস্থর-নিৰ্দিয়ত বেলিং ্েগ্ৰণ্ডার চাবটিভে

বৌদ্ধধের্মের নানা বিষয় ও জাতকের গল্প খোদাই কবিয়া অন্তিত আছে।



क्गात्रक्त मिन्द-डेडिया

ছায়া সন্ধান করিলেই বেশ ধরা পড়ে। চারিপাশের বেফীনী বা রেলিংকে 'বেদিকা', আর স্তুপের পাশের রেলিঙের মধ্যে যে

#### ভারতের স্থাপ**ভ**▶+++

মিছিল যাইবার পথ আছে, ভাহাকে 'মেধী' বা 'মেধ' বলে।

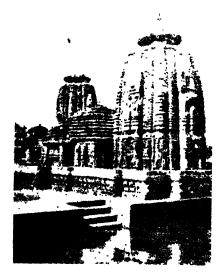
বলিভে পারেন না। কৌদ্ধস্থপ ছাড়া জৈন স্থপটি অন্ধ গোলাকাব-বা হিন্দুস্ত প দেখিতে পাওয়া যায়না।

ভাবে মাটি হইতে বাহির 5ইয়া থাকে। অনেকটা **জ**লবুদ্বদের 40 আকারে। নির্বনা-ণের পর বুদ্ধের মত মহাপুরুষদেব অস্থ্র এইরপ আকাশের গদ্ধ বিধাৰে বা জলবুদুদের মত আকারের আগা-বেৰ নীচে রাখাব প্রেগা ভারতবদে ঠিক কত কাল হইতে প্রবৃত্তিত ছিল, তাহা কেহই

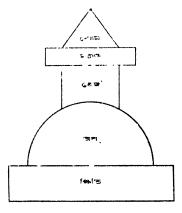


পুরীর মন্দির—উড়িয়া

অনেকে অনুমান করেন যে, বৌদ্ধযুগের পুকেব হিন্দুরা মৃতব্যক্তিব অস্থি এইরূপ মাটির



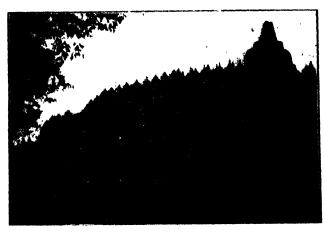
ভূবেনেশ্বর মন্দির—উড়িয়া।



ক্তুপের মধ্যে রাখিতেন, কিন্তু সেগুলিকে স্থায়ী করার বিশেষ প্রয়োজন তাঁহারা

### শিশু-ভারতী ++++

বোধ করেন নাই। বৌদ্ধপুয়ে সবং অনিতা- প্রতি অনুশাসনলিপি লিপিবদ্ধ করিয়া-প্রতিপাদক, তাই বৃদ্ধদেবের জাবিত্র বিলোল । চিলেন। সেই সময় ধর্মাশোক পদব্যক্তে



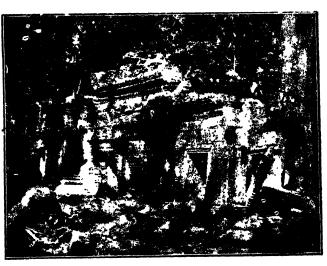
न्त्रत्वहत्त्व गिक्त - गर्द्भाश

বৃদ্ধদেশের জন্মশান লিপনী বন, বুদ্ধ-গয়া. সার্মাগ প্রভৃতি 지까-(फरनत हरनान्नरार्भ পবিত্র ত্থাকেত-প্রদক্ষিণ হঃ লি কবিয়া আসিয়া-ছিলেন। প্রথমে অশোক ভাহার বাজধানী গাটলি-श्रुव (পাটনা) ছাড়িখা গ**ঙ্গা** পাৰ ১ইয়া মছংফরপুর, <u>.</u>وو: D091119

ভাহার প্রবন্তী দুই শৃতাব্দীকাল পায়ুহু কোন বৈশালাতে আসেন। তাহাব সেখানকাব

দেখিতে कोंडि পাওয়া যায় না। কলিঞ্চ-বিজয়ের রাজচ,কবভী পর অশোক যখন জীব-হিংসা প্রবৃত্তি ভাগ ক রিয়া বুদ্ধদেবের প্রচার দযাধন্য করিতে সারস্ত করিলেন, সেই সময়ে তিনি ভারতের T নানাস্তানে নিশ্মাণ করিয়া-ছিলেন এবং (সই স্ব স্থয়ের উপর সেই সময়কার

প্রকার স্থায়ী বৌদ্ধ-



ক্ষোজের ঈশ্বপুৰ মন্দিৰ—ক্ষোডিয়া

প্রচলিত অক্ষবে দয়াধর্ম সম্বন্ধে প্রজাদের শুভাগমন-সূচক প্রাচীন স্থাপত্যের ভগ্নাবেশেষ

## ++++ ভারতের স্থাপতা ·++

এখনও দেখিতে পাওয়া যায়। সিংসমৃত্তি-ক্ষোদিত স্তম্ভ ও স্তৃপগুলিতে তাঁহার তীর্থ-ভ্রমণ-পথের পরিচয় এখনও নানা স্থানে দেখিতে পাই। কুশীনগবে-—যেখানে

বৃদ্ধদৈবের পরি-নিকৰিণ হইয়াছিল, সেখানেও অশো-কের শুভাগমন-স্থ্যুত্তি-স্তক শোভিত **₹** দেখিতে পাওয়া যায়। এই স্তম্ভের ভাঁহার গায়ে সেখানে হ্যাসার খবর লেখা আছে। ভিনি ভারপরে কনকম্নির স্থূপের কার্চে অপর একটি স্তম্ভ রচনা করান। কনকমুনি গৌতম বদ্ধের প্ৰব্ৰী বুন্ধ ৷ অ,শাক বাজার এই বৌদ্ধ-

ভাগ পরিক্রমার ইতিহাস নেপাল

জায়গার স্তম্ভগাত্তে

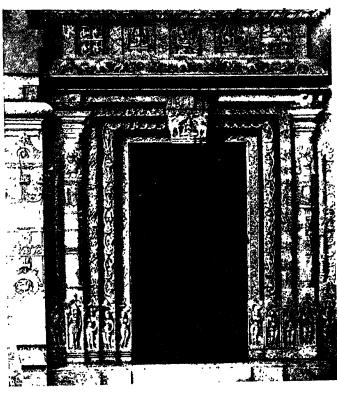
লিখিত - আছে।

শ্রাবস্থি সকল

€ प्रहें ह

স্ত পের

স্ইয়াছিল তাহা এখন বোঝা পুবই কফ্টকর বাাপার। সমাট অশোক তাহার দয়াধর্ম প্রচারের জভা যে সব 'লাট' বা স্তম্ভ ভারত-ব্যের নানাস্থানে ভৈয়ারী কবিয়াছিলেন,



धात्र अग्राफ (क्रमाग्र माकुन्धित्र कामी विष्यंषदत्र मन्दि-- (वाष्य

ভা ছাড়া ভাঁহার অনেকগুলি ঘোষণালিপি গুহা বা স্ত্পের সম্মুথে প্রায়ই দেখিতে পাওয়া যায়। দিল্লী, এলাহাবাদ (প্রয়াগ), কালে গুহার সম্মুথে, সাঁচীতে, কেনরী গুহার এইরূপ ঘোষণালিপি দেখা যায়। দিল্লীর লোহনির্ম্মিত বিরাট 'লাট', এলাহাবাদের বিরাট স্কম্ম দে করা

তাহাব একটি তালিকা যথাসম্ভব-রূপে দেওয়া গেল।

১—দিল্লীর তোপ্রা স্তম্ত্র—দিল্লীর
নিকটবন্তী ফিরোজাবাদের ভগ্নাবশেষের
মধ্যে পাওয়া যায়। ১৩৫৬ খৃষ্টাব্দে অম্বালা
প্রদেশের তোপ্রা হইতে ফিরোজ শাহ
তোগলক এটিকে ফিরোজাবাদে আনেন।

## শিশু-ভারতী

२—मिल्लो मोतां छ छ—मीतां व्हेर् ফিরোজ শাহ তোগলক দিল্লীতে আনেন রাজ্যে সাঁচী স্তুপের তোরণদ্বার সম্মুখে।

৩ —এলাহাবাদ স্তম্ভ--এলাহাবাদ প্রাচীন তুর্গে অবস্থিত।

৪---লৌরিয় অরায়াজ স্কল্প —ভোটিয়ার भरश কেশরীর স্থূপের উত্তর-পশ্চিমে আছে।

৫—নন্দ্ৰগড় স্তম্ভ — ঢাম্পারণ জেলাব মধ্যে সাছে।

৬--রামপুরওয়া স্তম্ভ--



এশাহাবাদ স্তম্ভ

লৌরিয় স্তস্ত

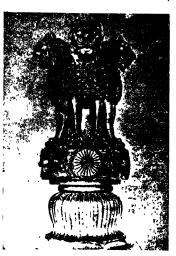
৭--সাঁচী স্তম্ভ-মধ্যভারতে

৮-नीजानि उष्ड-वन्त्री अपराम নীতালি গ্রামে আছে।

৯-কেসিস্তি স্তম্ভ--বন্তী প্রদেশের ্ত মাইল দক্ষিণ-পূর্বের অবস্থিত।

১০--- সারনাথ স্তম্ভ- সারনাথের যাত্র-ঘরে রক্ষিত আছে।

অশোকের গামলের স্তন্তের মত কানাডা



সারনাথ স্তন্তের সিংহচ্ডা

পুরওয়া গ্রামে আছে।

চম্পারণ জেলার উত্তর-পূর্ব্ধ কোণে রাম- প্রদেশে জৈম-স্তম্ভ দেখিতে পাওয়া যায় এগুলিব গঠন একট বেশী সৃক্ষা ধরণেব।



## পৃথিবীর ইতিহাস—ব্যাবিলনিয়া

(মধাযুগ ও নবীন সামাজ্য)

হাম্মুরাবির বংশধরের পরে ব্যাবিলনিয়ার রাজপক্তি এক বিদেশী রাজবংশেব হস্তগত হয়। ৬১২ পৃষ্ঠার পর

ভাগদের প্রভিষ্ঠ করা ব্যাবিলন রাজের শক্তিতে কুলাইল না। অভিসহজেই এই বিদেশী শঞ

(কাদ্স্)-জাতীয়। এই রাজারা ছিলেন কাদ্সি এমন কি, হাম্মুরাবির পুত্র সাম্ভ ইলুনার (Samsu-Huna)সময় হইতেই ব্যাবিলনীয় সামাজ্যের ভাঙ্গন ধরে। দক্ষিণ পারস্ত উপদাগরের উপকৃলস্থিত ভূখণ্ডে ইলুমা হলু (Iluma-Ilu) নামে এক রাজা সাম্স্র ইলুনাকে পরাজিত করিয়া একটি স্বাধীন রাজ্য স্থাপন ফরেন। সাম্ম ইলুনার পুত্র আবেওও (Abeshu) তাঁহাকে দমন করিতে সমর্থ হুইলেন ন।। স্থতরাং এই রাজবংশের এগারো জন রাজা দক্ষিণ-

দেশে স্বাধীনভাবে রাজত্ব করিতে থাকেন।

আবেশুর পৌলু আম্মি জাতুগার (Ammi-zaduga) বাজতের সময় ব্যাবিশনের প্রভাব এলামে বিস্তুত হয় :

আমমি জাতুগা এলামরাজকে किंदि दिए पत्र नाविनन পরাজিত করেন, এবং এলাম অধিকার করদ রাজারূপে পরিগণিত হয়।

তবে ব্যাবিশনের ক্রত পতন রোধ করা সম্ভবহয় নাই। সামস্থ ইলুনার সমর হইতেই কাস্সি জাতি বার বার ব্যাবিলন আক্রমণ করিতে আরম্ভ করে। দক্ষিণ ও शृक्षिक हहेरल बाजाल इहेश वाविनन दाका हीनवन হইয়া পড়ে। ইহার ফলে সাম্স্র দিভানের (Samsuditana) সময় যখন উত্তর সিরিয়া এবং এসিয়া মাইনর হইতে হিটাইটেরা ব্যাবিশন আক্রমণ করে তথন

রাজধানী ব্যাবিশন অধিকার এখানকার অধিষ্ঠাত্তী দেবতা মার্ডকে নিজেদের (দলে লইয়া যায় ১৯২৬ খুঃ পুঃ)। বোধ হয় ইহার অৱদিন পরে কাস্সিজাতি ভাচাদের স্ভার গণ্ডাসের (Gandash) নেতৃত্বাধীনে ব্যাবিদন অধিকার করে।

পুরের বলা হচয়াছে, এই কাদ্দিজাতি আর্থা-বংশোচ্ত। ভাহারা আদিয়া প্রথমে উত্তর ব্যালিলিয়ায়

রাজ্য স্থাপন করে। তবে অনেক-কা**দ্**দিজাতির দিন পর্যান্ত দক্ষিণ দিকে তাহারা ব্যবিস্থানিয়া অধিকার বিস্তার করিতে পারে

নাই। দেখানে সমুদ্রকুলের রাজারা পূর্বের মত স্বাধীন ভাবের রাজত্ব করিতে থাকেন। প্রায় ১০০ বংসর পরে (:৮শ শতাকীতে) কাস্সিবংশীয় রাজা সম্গ্র ব্যাবিলনিয়ার উপর তাঁহার আধিপত্য বিস্তার করিতে স্মূপ্ত্ন: সমুদ্রকুলের শেষ রাজ্য ইয়া-গ্যামিল (Ra-gamil) এলাম আক্রমণ করেন। তখন উলাম বুরিয়াস (Ulam Buriash) নামে এক কাস্সিস্দার উাহাকে পরাস্ত করিয়া দক্ষিণ ব্যাবিসনিয়া অধিকার করেন। কিছুদিন পরে চুইটি রাজ্য মিলিয়া এক অথও ব্যাবিশ্নিয়া রাজ্য গঠিত হয়।

যদিও কাসসিকাতি সভাতার পরিমাপে ব্যাবিলনীয়-দের অনেক পিছনে পড়িয়াছিল তবু অনেকদিন পর্যন্ত ভাষারা নিজেদের স্বাভজ্ঞা বজায় রাপিয়াছিল। বিজি-ভের সভাভা ভাষারা প্রথমে গ্রহণ করে নাই। স্বান্তে আন্তে ক্রনাগত সংমিশ্রণের ফলে অবশেষে এই বিদেশী বিজেভারা প্রাপ্রিভাবে ব্যাবিদনীয়দের রীতিনীতি গ্রহণ করিয়াছিল।

কাস্সি রাজাদের সময় চইটেই বাাবিলনিয়ার সহিত আাসিরিয়ার দীর্মকালস্থায়ী প্রতিভ্নিতা আরম্ভ হয়।

হায়সুরাবির সময় আাসিরিয়া ছিল
আাসিরিয়ার ধার্যানিকা
ব্যাবিলনি সামাজ্যের অস্তর্গত দেশ

কিন্তু কাস্সিজাতি যখন ব্যাবিলনিয়া অধিকার করে,
তখন দক্ষিণ রাজ্যের আভাস্তরিক গোলগোগের স্থবিধা
লইয়া আ্যাসিরিয়া ব্যাবিলনের অধানতা-পাশ হইতে
মুক্ত হয়। খুঃ পুঃ পঞ্চদশ শতাক্ষীতে ব্যাবিলন-রাজ্য করো-ইন্দাসের সঙ্গে অমুর্রাজ অক্সর বেল্নিশেশুর
স্থি হয়। এই সঞ্জি অমুসারে তই রাজ্যের মধ্যে
সীমানিলীত হয়।

মিশরে যখন ভূতীয় ও চতুর্থ অ্যামেনহোটেপ রাজ্জ করিতেছিলেন, ভখন ব্যাবিলনিয়া, মিভারি আাদিরিয়ার রাজারা তাঁহাদের টেল-এশ্ আমাণায় সঙ্গে বন্ধুত্ব স্থাপনের জন্ম উদ্গ্রীব ঞাধ চিঠি-প্রাদি ছিলেন। ব্যাবিখনের রাজকলা-দিগকে ক্যারাওর হারেমে পাঠান ইইড। প্রতিদানে ফারোকরা পাঠাইতেন সোনা। এই সময়ের অবস্থা মিশরে টেল্-এল্-আমার্ণায় (Tell-el-Amarna)প্রাপ্ত চিঠি-পত্তদিতে জানিতে পার। যায়। চতুর্থ অ্যামেন-ट्यारिट अब निक्रें वाविनन-बाज वृर्गावृतियाम्ब (Burnaburiash) পত্তে জানা যায় বে, অ্যাসিরিয়ার রাজা অস্তর-উবাল্লিৎ ব্যাবিশনিয়ার বিরুদ্ধে চক্রান্ত করিতেছিলেন এবং মিশররাজ তাঁচাকে উৎসাঠিত ও প্রবে:চিত করিতেছিলেন। কাজেই, বুর্ণাবৃদ্ধিয়াস্ ফ্যারাওর বিক্দে অভিযোগ জানাইভেছিলেন যে, তাঁহার এ কাজ স্থায়সঙ্গত নতে; কারণ, অ্যাসিরিয়া वाधिननद्रारकद्र अधीनक मामस द्राका।

বুর্গাবৃত্তিয়াসের পুত্র কারা ইন্দাস (Kara-indash)
অন্তর উবাল্লিতের কন্তাকে বিবাহ করেন। তাঁহাদের
পুত্র কাদাস্মান থার্গে (Kadashআাসিবিয়ার প্রভাব বিস্তার হয়।
ইহাতে দেশে বিদ্রোহ উপস্থিত হয় এবং কাদাস্মান্
থার্কে আভতায়ীর হস্তে প্রাণ হারান। বিদ্রোহীরা
এক সাধারণ ব্যক্তিকে সিংহাসনে প্রভিত্তিত করে।

আাদিরিয়ারাজ অন্তর উবালিৎ এই স্থোগে ব্যাবিগনে
নিজের প্রভূষ বিস্তার করিতে চেষ্টিত হন। তিনি
হঠাৎ দৈয়-সামস্ত লইয়া ব্যাবিগনে উপস্থিত হইয়া
বিজ্ঞোহ দমন করেন এবং তাঁহার দৌহিত্র
করিগলজকে রাজা করেন।

কুরিগল্জুকিত আাদিরিয়ার সজে সভাব বজায় রাখিলেননা। মেদোপটেমিয়ার অধিকার লইয়া

গ্ৰিগল্জ হুইরাজ্যের স্থার্থের সংশ্বর্ধ উপস্থিত হয়। কাজেই, অহর উবালিতের মৃত্যুর কিছুদিন পরে ক্রিগল্জুর সঙ্গে আাসিরিয়া-রাজ প্রথম আদাদ্ নিরারির বৃদ্ধ আরস্ত হয়। এই বৃদ্ধে আদাদ্ নিরারি হারিয়া যান এবং ক্রিগল্জুনিজের স্বিধামত হুই রাজ্যের সীমানা নির্ণয় করেন। এদিকে এলামরাজ খুর্নাটিলা (Khurbatila) ব্যাবিলন আজ্মণ করেন। ক্রিগল্জু তাঁহাকে পরান্ত ও বদ্দী করেন এবং এলাম আক্রমণ করিয়া রাজধানী স্ক্রা

অ্যাসিয়ারাজ প্রথম শালমানেসারের সময় মেসো-পটেমিয়। সম্পুণকণে অ্যাসিরিয়ার অভ্তুক্তি হয়। স্থতরাং ব্যাবিলনের সঞ্জে সংঘর্ষ

কুজাই ব্যাপ্তানের পরে সংবর্ধ টুকুলটি নিনেবের অনিবার্থ ইইয়া পড়ে। ভাঁহার বাবিল্য জয় উত্তরাধিকারী টুকু-ল্টি নিনেব (অথবা,

টুকুল্টি এন্থটা) ব্যাবিগনরাজ ক্যাষ্টিগিয়াসকে (১২৪৯-১১৪২) পরাজিত ও বন্দী করিয়া আাসিরিয়ায় প্রেরণ করেন এবং ব্যাবিগন অধিকার করিয়া নিজে ব্যাবিগনিয়ার রাজা হন। ব্যাবিগনের ধনরত্ব লুঠন করিয়া আাসিরিয়ায় পাঠান হয়—এমন কি, মার্ডুকদেবের মৃত্তিটিও বাদ যায় নাই। টুকুল্টি নিনেব সাত বৎসর ব্যাবিগনিয়ায় রাজ ৬ করেন।

তিনি এন্গিল্-নাদিন্-স্থম নামে এলামরাজ একজন আংসিরীয়কে শাসনকর্তা কিদিন পুক্রতাদের অথবা উপরাফ নিস্কু করেন। আক্ষমণ উচ্চার শাসনেয় সময় এলামরাজ

কিদিনখুক্ততাস্ (Kidin Khutrutssh) ব্যাবিদনিয়া আক্রমণ করিয়া দার-ইলু ও নিশ্পুর লুগুন করেন। ইহার ফলে এন্লিল্-নাদিন-স্থাকে সরাইয়া তাঁছার জারগায় কাদাসমান খার্কে নামক এক জন ব্যাবিল্-নীয়কে (কাস্সিজাতীয়) উপরাজ নিযুক্ত করা হয়। কাদাসমান খার্কের পর পরাজহন আদাদ-স্থা-ইছীন। তাঁহার সময় কিদিন খুক্ততাস্ প্রনায় ব্যাবিল্নিয়া আক্রমণ করিয়া লুঠগাই করেন। এইবার তিনি আইসিন (Isin) পর্যান্ত অপ্রস্ক হইয়াছিলেন।

## ++++প্রথিনীর ইতিহাস্-ন্যাবিলন ++++

व्यामितियाय हेकून् हि निरनरवत्र বিক্তম তাঁহার পুত্র অন্তর-নাদিন-(অথবা নাদির)

আপ্লি বিদ্রোহ করেন। ব্যাবিল-আদাদ-সম-উপ্তৰ নিয়ার আমীব প্রমার হিলাপ 🐯 এই विष्मारक यागमान करत्र अवश्रमके स्रायाल ব্যাবিলনিয়া আাসিরিয়ার অধীনতা-পাৰ চচতে মুক্ত হয়। তাহারা আদানস্থ-উস্তর্কে ব্যাবিলনের সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করে।

আদাদ-স্থম- উন্তর ৩০ বংসর রাজত্ব করেন ( >>8>->>>) গুঃ পুঃ। ১>১১ গুঃ পর্কে ভারের সহিত আাসিরিয়ারাজ দিতীয় নেলিশি (এনশিশ) কুত্র উন্মরের যুদ্ধ হয়। পাকের আাদিরিয়া এই যুদ্ধে ব্যাবিলনীয়েরা জয়লাভ **ड**,ग করে; কিন্তু আদাদ্-স্থম-উস্থর ও বেল্-কুত্র উন্থর উভয়েষ্ঠ প্রাণ হারান। আদাদের পুত্র দ্বিতীয় মেলিশিপাক (Melishipak II) ও তাঁচার পুত্র মার্ডুক-আপাল-ইদ্দান (Mardukapal-iddina) অবিলম্বে আাদিরিয়া করেন। কোন কোন পণ্ডিতের মতে মেলিাশপাক আাসিরিয়া অধিকার করিয়া মাউক আপাল হদ্দীনকে রাজা করেন। প্রায় ৩০ বৎসর অ্যাসিরিয়া वार्षिकानशात्र अशीय शास्त्र । अरम्भात्र ১১৮० गः পূর্বে অমুর্বান মাড্ক-আপাল ইদ্দীনের অযোগ্য উত্তরাধিকারী জামাম-সম-ইদ্যানেব ইদ্ধীনকৈ পরাজিত করিয়া পর্কর আন্সিরিয়া স্থাধীন 4(34) পরেই এলামরাজ স্তক্র ইহার আংলদিন নান্ধৃত্তি ব্যাবিলনিয়া আক্রমণ করেন। বৃদ্ধে জামামা-**সিন্পার** 

কাসসিবংশীয় শেষ রাজা। कामित दाखवश्रां व्यवमात्नत कि कूपिन शृत्व বাাবিল্নিয়ার অন্তর্গত আইসিন ( Isin ) সহরে এক নতন রাজৰংশ স্বাধীন ভাবে রাজ্য কাস্নিবংশের পতন, করিতে আরম্ভ করে। এই বংশেব আইসিন রাজবংশ ্রাজা নেবু কুরুর-উন্মর অথবা নেবুকান্ডেজার শেষ কাস্সিরাজা এনলিল-নাদিন

আথিকে পরাঞ্জিত করিয়া সমগ্র ব্যাবিশনিয়ার উপর

नुर्भन करत्रन। कामामा-स्म-इफीरनत्र भन्न अन्निम

নাদিন-আখি রাজা হন (১১৭৩-১১৬৯)।

হারান। এলামরাজ

স্থম-ইদ্দীন প্রাণ

নিজের আধিপত্য বিস্তার করেন। তিনি খুব পরা-क्रमगानी त्राका ছिल्मन। दुर्वन काममिवःनीय त्राकात्मत्र সময় এগামের রাজা হক্তক নান্-নেৰ্কা(জ্ঞার থুন্তি ব্যাবিশন অধিকার করিয়া দেখানকার অধিষ্ঠাত্রী দেবতা মাড়্কিকে এলামে লইয়া গিয়াছিলেন। নেবুকান্তেজের এই অপমানের প্রতিকার করিতে দ্রপ্রতিজ্ঞ হইলেন। এলামের রাজাকে পরাজিত করিয়া তিনি মার্ডকদেবকে ব্যাবিলন লইয়া আসিয়া পুন:প্রতিষ্ঠা করেন। • त्नवकारककात ७४ वर्गावनिवात त्रांका हित्नन ना । यात्राप्तरहिमशा ७ पन्धिमाना (मित्रिशा-प्राामके हिन) তাঁচার প্রভুগ্ব বিস্তার করিয়াছিলেন। আবাসির্যার সঙ্গে ভিনি বিশেষ স্থবিধা করিয়া উঠিতে পারেন নাই। কারণ, তিনি যখন ঐ দেশ আক্রমণ করেন, তথন আাসিরিয়া-রাজ অন্তর-রিশ্-ঈশী তাঁহাকে পরাঞ্চিত করেন।

বিয়ার রাজা, তখন ব্যাবিলনরাজ মার্ড-নাদিন-আথি তাঁহার অনুপশ্বিতির স্থযোগ শইয়া আাসি-রিয়া আক্রমণ করেন প্রথম টিগলাণ একালাটির দেবতা পিলেসাবেৰ (Adad) & MMIR (Shala) বাবিলন অধিকার প্রতিমৃতি শইমা বান। এই অপমানের প্রতিশোধ কহতে টিগ্লাথ পিলেনার ভূলিলেন না। প্ৰিচ্মদেশ **013**5 করিয়া তিনি উত্তর ব্যাবিশনিয়া অধিকার করেন। ব্যাবিল্ম সম্প্র তাহার হস্তগত হয়, এবং িজেকে স্থের ও আঞ্চাদের রাজা বলিয়া ঘোষণা করেন। তাঁহার পুত্র অহুর বেল্কলার রাজত্বের সময় ব্যাবিস্ন

দিগিজয়ী প্রথম টিগ্লাথ পিলেসার যখন অ্যাসি-

এই সময়ে ব্যাবিশ্নিয়ার ভাগো ভীষণ ছুংগাগ উপস্থিত হয়। স্কুটু (Sutu) নামে এক আরামীয় সেমিটিক (Aramaean) আভি আরামায় সেমিটক-আরব দেশ চইতে ঝডের মত ্দর আগগমন ও বাবিলনিয়ায় আসিয়া সমগ্র ব্যাবিলন দেশ আভান্তৰিক গোলযোগ ছাইয়া ফেলে। ভাছাদের অভ্যা-**ठारत्रत्र करण मम्बा (मर्ग এक है।** 

অ্যাসিরিয়ার সঙ্গে বন্ধুত্ব বজায় রাখে। অ্যাসিরিয়রাজ

ব্যাবিগনরাজের কন্তাকে বিবাহ করেন।

\* ঐতিহাসিক কিং (King) বলেন যে, এলামীয়েরা কিছুদিন বাংবিলন সহর অধিকার করিয়া থাকে। আইসিনের রাজ্ঞা এনলিল-নাদিন-আবি (Entil-nadin-akhi) তাহাদের তাড়াইয়া দিয়া বাাবিলন নিজের অধিকার্ড্ড করেন। তাঁহার পরবর্তী রাজা নেবুকাালেজের (নেবুকান্নেজার) এলামীদের পশ্চাকাবন করিয়া ভীষণ ভাবে প্রাজিত করেন এবং পশ্চিম এলামের কাস্সিকাভিদের দমন করেন গ

----

তিনিই

সন্ত্রাসের স্পষ্ট হয়। ইহারা প্রাম-নগর লুগ্রুন করিয়া, বাড়ীবর জালাইয়া, মন্দির দেবমুন্তি ভালিয়া দেশে ভীষণ জরাজকতা স্পষ্ট করে। এই গোলঘোগের সময় আইসিন রাজবংশের পতন হয় এবং পর পর তিনটি রাজবংশ অরকালের জল্প রাজ্য করে। আইসিন রাজাদের ঠিক পরেই যে ভিন জন রাজাবাাবিলনের সিংহাসনে আবোধন করেন, তাঁহারা আনেন পারভোপনাগরের উপকূল (Sen-Land) হইতে। তাঁহাদের পরে আর এক বংশের ভিন জন রাজাবাাবিলনিয়ায় রাজ্য করেন। বোধ হয় ইহারাও বিদেশী। ইহাদের পর আপ্লু-উল্লের (Anaplu-usur) নামে একজন এলামদেশীয় লোক রাজাহন।

এলামীয়দের যে কাহার। তাড়ায়, তাহা আমরা ঠিক জানি না। তবে ইহার পর যে রাজবংশের কথা আমরা ভানিতে পাই তাহা

कालकोष वाजवःभ ক্যাল্ডীয় (Chaldaean) বলিয়া বিখ্যাত। ইহাবা কোন জাতীয় এবং কোখা হইতে षानिन, ভাষারও সঠিক খবর আমাদের জানা নাই। তবে এইটুকু মাত্র বলা যায় যে, দক্ষিণের কোন দেশ চইতে আসিয়া ভাষারা প্রথমে পারস্থোপসাগরের উপকৃষ্ঠিত ভূভাগে বসবাস করিতে আরম্ভ করে। देशका नानामाण विख्क हिना धक धक मानव, এবং তাহাদের অধিকৃত দেশের ভিন্ন ভিন্ন নাম ছিল--যথা ৰীটু ইয়াকিন (Bit Iakin), ৰীট আদিনি (Bit-Adini), वीष्ट-भाकृत्र Bit-Dakuri), वीष्ट-नाश्चि Bit Saalli প্ৰভৃতি। এই সৰ দল আন্তে আছে সম্প্ৰ ব্যাবিশ্বিয়া ছাহয়। ফেলে। প্রত্যেক দলের আধি-পতির চরম লক্ষা হইল ব্যাবিলনের সিংহাদন অধিকার। এতদিন বাাবিলনিয়ার প্রভুত লইয়া এশান ও ক্যাদিরিয়ার মধ্যে প্রতিষ্কিতা চলিতেছিল। এখন হহতে काल्डोराबा के भरतब आयी रहेग।

ব্যাবিদনে কাল্ডীয় রাজবংশের প্রথম হাজা বোদ হয় নবু-মুকিম্-আপ্ দি (Nabu-mukin-apli)। তাঁচার পরবর্তী সময়ের ইভিহাসের সাহায়ে মেনিন্ত্ত। তবে অ্যাদিরিয়ার ইভিহাসের সাহায়ে মেনিন্ত্ত। তবে অ্যাদিরিয়ার ইভিহাসের সাহায়ে মেনিন্ত্তী আলাদ নিরারির সময় ব্যাবিলনের রাজা ছিলেন সামান্ মুদা আক (Shamash-mudammiu) তিনি আলাদ নিরারির সম্প্রেক্ত কুল করেন। তাঁচার মৃত্যুন্ত পর অ্যাদিরিয়ারাজের সাহায়ে নবু স্ম্-ইস্ন্রাজা হন।

ত্তীয় অনুরনাসিরপালের সময় ব্যাবিলনরাজ নবু-আপুনু-ইদ্ধীনের (Nabu-aplu-iddina) সঙ্গে বেনোপটেমিয়ার প্রতৃত্ব লইয়া তাঁহার যুক্তহয়। এই

বুজে নবু-আপ্লু ইন্দীন চারিয়া যান, এবং মেলোপটে-আ।মিরিয়ার প্রভ্ত আন্দোন্ত্র (থু: পুঃ৮৭৯)। নবু আপ্লু-

ইন্দীন ০১ বংসর রাজ্য করেন।
তাঁহার সূত্যার পর (গু: পু: ৮৫৪) তাঁহার গ্রন্থ প্রের
মধ্যে বিবাদ উপস্থিত হয়। পিতার ইচ্ছা অনুসারে
মার্ডুক-শ্রুম-ইন্দীন পাইঘাছিলেন স্থিক।
মার মার্ডুক-বেল্-উসাতি পাইঘাছিলেন দক্ষিণ
ব্যাবিলনিয়া ও ক্যাল্ডীয়া। ব্যাবিলনএক মার্ডুকশ্রুম্নীন স্থবিধা করিতে ন। পারায় অ্যাসিরিয়ারাজ
তৃতীয় শালমানেসারের শ্রণপির হন। শালমানেসার
মার্ডুক-বেল্ উসাভিকে হারাহ্যা দেন এবং ব্যাবিলনিমার প্রধান প্রধান সহর্মজনি অধিকার ক্রিয়া
নিজেকে ব্যাবিলমার রাজাধিরাজ বলিয়া ব্যাবিলয়ের ব্যাবিলয়ের সালায়ার ক্রের প্রেন, এবং মার্ডুক-শ্রুম্নীন্ কর্মরাজাধ্রনপ রাক্ষ্য
শাসন করিতে থাকেন। প্রমন কি, ক্যাল্ডীয়ার ক্রে
রাজারা পর্যান্থ তাঁহার ব্যাহা বীকার করে।

ষষ্ঠ সাম্দি আদাদ্ যথন আাসিরিয়ার রাজা, তথন মার্ডুক-বালাৎস্-ইক্বি নামে একজন ক্যাল্ডীয় রাজাদের আদাদ্ নিবারি এলাম ও কাল্ডীয় রাজাদের সাহায়ে বাবিলানায়র রাজা কন। উহার সরবভী রাজা বৌ-আদি-ইদীনের (Ha'u-akhi-iddina) সঙ্গে আাসিরিয়ারাজ চতুর্থ আদাদ্ নিরারির বুদ্ধ হয়। এই যুদ্ধে বৌ-আদি-ইদীন পরাজিত ও বলী হন। আদাদ্ নিরারি বাবিলনে রাজাধিরাজ (Supreme Sovereign)-দেবতার উদ্দেশে যক্ত করেন। প্রায় ৫০ বংসর বাবিলানিয়া আ্যাসার্যার অধীন প্রদেশরূপে লাসিত

আদাদ নিরারির মৃত্যুর পর অ্যাসিরিয়ার স্বাজ-শক্তির পতন আরম্ভ হয়। সেই স্থোগে ক্যাল্ডীয়েরা ব্যাবিশনে পুনরাম স্বাধীনভাবে রাজ্য করিতে থাকে। অটম শতাকীর মধ্য ভাগে বিতীয় নবু-সুম-ইজুন बाका रुन। डांश्व नमस्य वाविनतन कोछाछोत्रक लानभान घटि । जाशात छखताधिकाती नवनकार द (Nobonassar) ममरत्र अत्यात वित्यव উন্নতি হয় নাই। এই সময়ে আাদিরিয়ার রাজ্ঞী হন অবিভীয় যোদা চতুৰ্ঘ টিগ-চতুৰ্থ টিগলাধ লাথ পিলেসার। তিনি বাাবিলনে পিলেসারের অভিযান করেন এবং নবনচ্ছার वराविनमित्र। सप्त কাঁহার আধিপত্য স্বীকার করেন। টিগলাথ শিলেসার আভাদের ক্রমের নিজেকে क (ब्रन । খোমণা অধিপত্তি বলিয়া

## প্রথিনীর ইতি গ্রস-ন্যানিলন

নবনজারের মৃত্যুর পর বাবিগনিয়ার বিশেষ অরাজ-কতা উপস্থিত হয়। কাল্ডেই, টিগ্লাল পিলেসার রাজা উকিঞ্জিরকে (Ukinzir) সিংহাসনচ্যুত করিয়া স্বচন্তে রাজ্যরশ্মি গ্রহণ করেন। বাাবিলনের ইতিহাসে তিনি পুলু (Pulu) নামে পরিচিত । তাঁহার উত্তরাধি কারী পঞ্চম শালমানেসারও ব্যাবিলনিয়ার রাজা হন। অ্যাসিরিয়ার বিপ্লবের ফলে যগন সার্গন রাজা হন, সেই স্থবোগে ক্যাল্ডীয় মার্ডুক-আপ্লু-ইন্দীন (মার্ডু

হাবালাদীন অথবা মেরোডাক মাড়ক খাপলু বালাদান) এলামরাজ খুমকগাসের कॅफीन। मार्गत्वव माशाया बाविनात्व मिःशमन बाविलन अधिकात অধিকার করেন। এই সময়কার ইতিহাস আসিরিয়ার ইতিহাসেই বিশদরূপে আলো-চিত হইয়াছে। স্থতরাং এখানে কেবলমাত প্রধান ষ্টনাগুলি বণিত হইবে। প্রথমে সাগনের ব্যাবিশন क्षिकारतन (ठहे। विकन द्या সাগণের বাবিল মাডুক-আপ্লু-ইদ্দীন ৭২১ হইতে অবিকার। ৭১০ পাঠ্যস্ত এলামের আল্লয়ে নিবিবয়ে রাজ্য করেন। তারপর সার্গন আসিয়া তাঁহাকে বাাবিলনিয়া ও ক্যাল্ডীয়া হইতে ভাডাইয়া (मन। यार्फ् क-वाश्वा-इक्षीन अनाम व्याख्य नन। সার্গনকে ব্যাবিলনের পুরোহিতেরা ত্রাণকভান্তরপ গ্রহণ করে, এবং তিনি নিজেকে "ব্যাবিদনের শাসন-কর্ডা" বলিয়া বোদণা করেন। ৭০৫ খৃঃ পৃঃ প্যান্ত এইভাবেই চলে।

সার্গনের মৃত্যুর পর সেরাকেরিবের রাজত্বের সময় প্রথম হুই বৎসর কোনরূপ গোল্যোগ ঘটে নাই। তারপর ব্যাবিশনে বিদ্রোহ উপ-সেপ্লাকেরিব ও ন্তিভ হয় এবং ভাহার স্থায়ে মাড় ক-আপলু-যাড় ক-আপ্লু-ইদীন এলার্মের সাহাষো ব্যাবিদনের সিংহাসন অধিকার করেন। কিন্তু তিনি বেশীদিন বাল্লত করিতে সমর্থ হন নাই। এক বৎসরের মধ্যে সেরকোরব ভাঁচাকে ব্যাবিল্লিয়া চইতে ভাড়াইয়া निया दिल्हेंवनि नाम्य এक वाक्तिक वाविनानद সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করেন। মার্ডুক আবার এলামে আশ্রয় গ্রহণ করেন। কিন্তু এখানেই সব গোলযোগের অবসান হয় নাই। সেলাকেরিব যথন প্যালেষ্টাইনের विद्याह प्रयत्न वाख शास्त्रम्, त्रहे स्रायात विम् हेवनि বাধা চটয়া এলাম ও মাড় কি-আপ্লু ইন্দীনের সংল যোগ দিয়া আসিরিয়ারাজের বিরুদ্ধাচরণ করিতে আরম্ভ করেন। সেরাকেরিব অবিলয়ে আসিয়া সমগ্র দেশ
অধিকার করেন ও মাড় ক-আপ লু-ইদ্দীনকে ক্যাল্ডীয়া হইতে তাড়াইয়া দেন। প্রত্যাবর্তন করিবার
অহর নাদিন স্থম
লইয়া বান। মাড় ক অবগ্র আবার এলাঘে আশ্রয় লন। ব্যাবিলনে সেরাকেরিবের
প্র অহ্র-নাদিন স্থমকে রাজা করাহয় (৬৯৯-৬৯৪)।

পাঁচ বৎসর পরে সেরাকেরিব আবার দক্ষিণ দেশে অভিযান করেন। এবার ভিনি এলাম আক্রমণ করেন আশ্রৈত ক্যাল্ডীরদের শান্তি বিধান করিতে। এই অবসরে এলামরাজ ব্যাবিলনিয়া আক্রমণ করিয়া অস্ত্রনাদিন স্বাক্রেব বন্দী করিয়া এলামে লইয়া যান। নাগল উপ্লেজ্ব ব্যাবিলনের রাজা হন। সেরাকেরিব এলামের পছাব। প্রভাবর্ত্তন করিয়া উাহাকে পরাজিত ও বন্দী করেন। কিন্তু যথন ভিনি পুনরায় এলামে অভিযান করেন তথন ক্যাল্ডীয় মুসেজিব মার্ডুক এলামরাজের সহায়ভায় ব্যাবিশনের সিংহাসন অধিকার করেন। ৬৯২ খৃষ্টাব্দে সেরাকেরিব তাহাকে দমন করিতেটেটা করেন কিন্তু তাহার প্রশ্বাস ব্যব্ধ হয়। ছই বৎসর পরে এলামরাজ উত্থান মেনাস্থ হঠাৎ সর্যাস রোগ আক্রান্ত হওয়াতে মুসেজিব মাডু ক এলামের সাহায়া

স্থোগে সেলাকেরিব ব্যাবিলন অধিকার করিয়া সহর্টি ধ্বংস করেন। মাড্কিকে বন্দী করিয়া আাদিরিয়ায় পাঠান হয়। (সন্নাকেরিবের মৃত্যুর পর ওসারহ্যাড়নে বাঞা ইইয়া ব্যাবিশনের পুনঃপ্রতিষ্ঠা করেন। তাহার জীবদ্দায় ব্যাবিলনের রাজা চন ভাঁচার এলারহাডেন এক পুত্র স্থামাস্-স্থম-উকিন। আাসিরিয়ার রাজা হন আর এক পুত্র ভাতরবানিপাল। অবশ্য ব্যাবিদন আাসিরিয়ার অনুগত থাকে। কয়েক বৎসর পর স্তামাস্-স্ম-উকিন্বিজ্ঞাত করেন এবং আ্যাসিবিয়ার শক্তদের সঙ্গে যোগ দেন। অস্থরবানি পাল কঠোর হল্তে এই বিদ্রোহ অহ্রবানিপাল प्रमान करत्रमा ७८१ इट्टेंट ७२७ बु: शृ: भवाञ्च ভिनि च्यामितिया ও वार्विमनियाय

नांशियन धारम

রাজত্ব করেন।

হইতে বঞ্চিত হন এবং এই

নবীন বাাবিলন সাম্রাজ্য

অস্ত্রবানিপালের মৃত্যুব সলে সলে অ্যাসিরিয়ার রাজশক্তির ফ্রত পতন আরম্ভ হয়। শকদের আক্রমণে সাম্রাজ্য বিধবন্ত চইতে থাকে। এই অবসরে ৬২ ৫ পৃঃখুঃ
নবপোলান্তার
নবপোলান্তার (Nabopolassar)
নামে একজন ক্যাল্ডীয় নিজেকে
ব্যাবিলনের স্বাধীন রাজ্য বলিয়। ঘোষণা করেন তবে
প্রথমে তাঁহার ক্ষমতা ব্যাবিলন ও বোরসিপ্পার
(Borsippa) মধ্যে সামাবদ্ধ ছিল। অন্তান্ত বাাবিলনীর সহর আ্যাসিরিয়ার অধীনেই ছিল। অন্তর্যানিলার সহর আ্যাসিরিয়ার অধীনেই ছিল। অন্তর্যানিলার পহল
স্থাসিরিয়ার স্বাধ্যাভাষ বাালিকার পহল
ক্রমাছিল।ইহারা ইতিহাসে মীদ্ (Medeu)
নামে থ্যাত। নবপোলান্তার ইহাদেব সহিত যোগ
দেন। ভাহার পুত্রের সক্ষেমীদ্রাজকন্তার বিবাহ হয়।
৬০৬ থঃ পুক্ষে নিনেতের প্তনের পর অ্যাসিরিয়া

নেবুক্যাক্রেজারকে (নেবুক্যাডনেশ্রিক বিশ্ব জার) ঐ প্রদেশগুলি ঠালার হাত হহতে কাড়িয়া লইতে পাঠান। ৬০৪ খাঃ পুরে কাকেমিশের নিকট ছুই দলে যুদ্ধ হয়। নেকো পরাক্রাকেমিশের নিকট ছুই দলে যুদ্ধ হয়। নেকো পরাক্রাকেমিশের নেবুক্যাক্রেজার সিরিয়া প্যালেষ্টাইন ও ব্যাবিলন সামাজ্যভূক্ত করেন। এই সময়ে নবপোলাস্থারের মৃত্যু হুইলে ঠালাকে রাজ্ধানীতে প্রভাগেমন করিতে হয়।

সামাজ্য মীদ্রা ও ব্যাবিদ্নরাজ ভাগাভাগি করিয়া শন।

ইতিমধ্যে আদিরিয়ার পশ্চিমপ্রদেশগুলি মিশররাজ

নেকো অধিকার করিয়াছেন। নবপোলাস্থার প্র

এদিকে প্যালষ্টাইনে জুড়া (Judah) যদিও প্রথমে বাাবিলন সমাটের প্রভুত্ব স্থাকার করে এবং কর দিতে প্রতিশ্রত হয় কিন্তু দিন পরে ক্ষেতালেম অধিকার স্বাধীনতা লাভের জন্ম চেষ্টা করে। ইহাব ফলে যে বিংগ্রাহ উপস্থিত হয় নেবুকাান্দ্রেমার ভাহা সহজেই দমন করিয়া জেকজালেম অধিকার করেন।

নের্কান্তেছার যে শুধু বড যোদ্ধা ছিলেন, তাহা
নছে। শান্তিকার্যোও ঠাহার ক্লভিছ কম ছিল না।
পুরাতন মন্দির ও রাজপ্রাসাদগুলির তিনি
সংঝার করেন। অনেক নৃতন মন্দির ও প্রাসাদ ভিনি নির্মাণ করেন। ঠাহার পিতার প্রাসাদীর
ভিনি আনেক পরিবর্জন সাধন করেন; এবং ইচারে
ধিলান দেওয়াভিন্তি এত উচু করেন যে, সেকালে
লোকে ইছাকে শুন্তোভান (Hanging Garden)
বলিভ। পৃথিবীয় সপ্তমাশ্চ্যের মধ্যে ইহা একটি। ব্যাবিলনের বিখ্যাত এসাগিলা মন্দির ও বোরসিপ্পার এজিদা মন্দির তিনি নৃতন করিয়া নির্দাণ করেন। তাঁহার প্রাসাদ ও নিন্মাখের মন্দিনের মধ্যে তিনি বিখ্যাত ইস্তার গেট (Ishtar Gate) স্থাপন করেন।

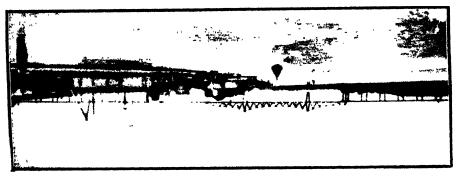
নেবুকান্তেজারের মৃত্যুর পর রাজা হন তাঁহার পুত্র আমেল মাড়ুক (Amel Marduk)। তিনি ছিলেন ফেন্ডাচারী ও পাপাশয়। মোটে ছই বৎসর রাজত্বের পর ঠাহাকে সিংহাসন্চাত করিয়া হত্যা করা হয়। তাঁহার ছলে রাজা হন তাঁহার ভগিনীপতি নাগল সার-উম্পর অথবা নেরিয়িসার (Neriglissar)। তিনি পাঁচ বৎসর রাজত্ব করেন এবং তাঁহার পরে তাঁহার নাবালক পুত্রলাবাসি মাড়ুক্তে রাজা করা হয়। কিন্ধু নয় মাস পরে তাঁহাকে সরাইয়া বাাবিলনের পুরোহিতেরা নবনীদাস (Nabonidas) নামে একজন বাাবিলনীয়কে সিংহাসনে বসায় (এবং পুট য়ঃ।

নবনীদাস মোটেই রাজা হহবার উপযুক্ত ছিলেন না। কিন্ত অনেক মন্দির ও প্রাসাদ তিনি সংস্কার করেন। তাহাদের লুপ্ত ইতিহাস সংগ্রহ করিবাব জ্ঞাতিনি আপ্রাণ পরিশ্রম করেন। নানাভানের ধ্বংসাবশেষ তিনি খনন করেন, দেশের প্রাচীন বাাবিলনিয়াব পত্তন ইতিহাসের মাল-মললা সংগ্রহ করিবার জন্ম। এদিকে প্রথমে মীদেরা ও পরে পারসাকেরা একে একে তাঁহার সামাজ্যের নানা অংশ কাডিয়া লইতে লাগিল। ইতিমধো পার্সাকদের বাজা মীদ্দিগকে হারাইয়া মীদ্ সামাজ্য অধিকার করেন। লিডিয়ার রাজা ক্রাশাসকে (Crosus) হারাইয়া তাহার রাজ্য পাহস্ত সামাজ্যের অন্তর্ভ করেন। ইহার পয় আসিল ব্যাধিগনের পালা। ৫৩৯ খঃ প্রের ভিনি আাসিরিয়ার শাসনকর্তা গোব্রিয়াসকে ব্যাবিলন বিজয়ে পাঠান। তাঁহাকে বাধা দিতে নবনীদাস প্রত্র বেলশান্তারকে (Belchazzar) পাঠান আর দেশের যেখানে যত দেবমৃত্তি ছিল সব বাাবিলনে সংগ্রহ করিয়া আনিলেন — আশা. তাঁচাদের দয়ায় রক্ষা পাইবেন। কিন্তু এত করিয়াও কিছু হইল না। ওপিসের যুদ্ধ বেল্শাফার হারিয়া যান। এইবার বিনা ৰাধায় গোবিয়াস ব্যাবিলন অধিকার করেন। পর বংসর সাইরাস স্বয়ং ব্যাবিলনে আগমন করেন এবং এখানকার পুরোহিতেরা তাঁচাকে তাণকতা বলিয়া গ্রহণ করে। প্রথম কাজ হইল বিজিন্ন মন্দিরের দেবমৃতি গুলিকে যথাস্থানে প্রেরণ করা। এইথানে স্বাধীন ব্যাবিল-নিয়ার ইতিহাস শেষ হটল। ব্যাবিশনিয়া পারস্ত সামাজোর অন্তর্ত হইল।

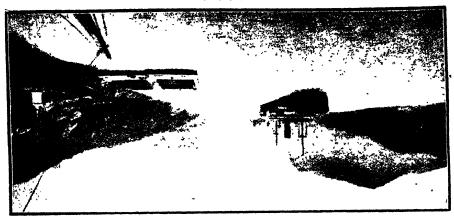
# লাঙ আঙ্গে নীয়ৰ মুচিপ্ৰাণ্ড



न्यत्याक न्यानि-त्वासिक मानारमन महिल क्याना मानान्त्र भाषा कार्यक महिल करित इह



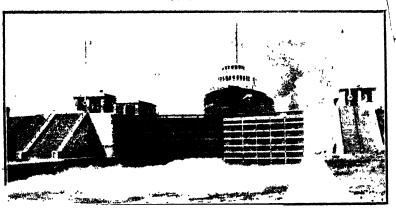
किन थीन-डेख्य भागरत्त्र महिल विन्के माभवाद भागप्त क्रियोर्



नामाया थान



'ভাষ**ল্লান্'ছের খ**া



भिक्तिगारनर भाज





চীনের বিখ্যাত থাল-তীরে কাশিং নামক স্থানের তিনটি বিখ্যাত প্রাগোট-



## জীমূতবাহন

হিমালয় প্রদেশে বিভাগর নামে এক জাতি ছিল। তাহারা সঙ্গীত-বিভায় ও নৃত্যকণায় বিশেষ নিপুণ বলিয়া বিখ্যাত। এই

গণের এক রাজা ছিলেন, তাঁচার নাম ভীমৃতকেতু।
জীমৃতবাংন তাঁহার একমাত্র পত্র। জীমৃতবাংন বড
হইলে, ভীমৃতকেতু পুত্রকে সিংহাসন দিয়া বনগমন
করিবার ইচ্ছা প্রকাশ করিলেন। জীমৃতবাংনও
মুজিগণের উপর রাজ্যভার দিয়া পিতাও মাতার সেবা
করিবার জক্স বনে চলিয়া গেলেন।

জীমতবাহন পিতা ও মাতাকে প্রত্যক্ষ দেবতার স্থায় মনে করিতেন। কিসে তাঁহারা স্থা স্বচ্ছলে থাকিতে পারেন, কিসে তাঁহারা শান্তি পান, জীমূত-বাহনের সর্বদা এই চিস্তাই ছিল। এই জন্ম তিনি সতত পিতা ও মাতার কাছেই থাকিতেন। কিন্তু জীমূতবাহনের বন্ধু আত্রেয়ীর ইহা ভাল লাগিত না। সেমনে করিত, রাজকুমার বিষয়-স্থে মত হটয়া शिकित्वन, मर्कामा आत्यान-आञ्चारम काम काठाँ हरवन, তাহা না হইয়া অনবরত শিতামাতার দেবায় রত थाकिल कीरानद्र सूर्य कि इहेन! धरे क्रम आखिशी জীয়তবাহনকে নানারকম পরামশ দিত। কিন্তু খাহা রাজকুমারের কানে চুকিলেও প্রাণে সাডা দিত না। এক্দিন জীমতকেতু, পত্ৰ জীমূতবাহনকে বলিলেন, বংগ। অনেক দিন হইতে এই প্রদেশে আমরা রহিয়াছি: কাজেই এখানে আর তেমন যজ্ঞকাষ্ঠ, কুশ, ফুলফুল ইত্যাদি পাওয়া যায় না। উড়িধান, কলমূল প্রায়ই শেষ হইয়া আদিয়াছে। অতএব এগান চইতে মলয় পর্বতে গিয়া আমাদের থাকিবার উপযুক্ত কোনো হান খুঁজিয়া বাহির কর। পিতার এই কথা শুনিয়া জীয়ত-

বাহন বন্ধু আত্রেয়ীকে দলে লইয়া মলয় পর্বতের দিকে চলিয়া গেলেন।

কিছু দূর যাইতেই তাঁচারা একটি অতি স্বন্ধর পার্কতা দুগু দেখিতে পাইলেন। জীমুতবাহন এইরূপ রমণীয় প্রদেশে তাঁচাদের থাকিবার মত হান আয়েষণ করিতে লাগিলেন। ক্রমে ক্রমে করিলেন। এই সময়ে জীমুতবাহন বাণার মধুর বলারের সহিত নারীক্ষের এক স্থালিত সঙ্গীত শুনিতে পাইলেন। সঙ্গীতের শক্ষ অন্থরণ করিয়া তাঁচারাছই বন্ধুতে এক দেব-মন্দিরের নিকট পৌছিয়া দেখিলেন, এক নারী ভাবে বিভোর হইয়া বীণার স্থ্রের সহিত নিজের স্থার ক্রেরা বিণাই অব্যান করিতেছেন। নিকটে এক দাসা দাভাইয়া আছে।

জীমুতবাহন বলিলেন, বন্ধু, এই অবস্থায় ঐ নারীয় নিকটবন্তী হওয়া উচিত নহে। যেহেতু আমরা এখন তথায় পৌছিলে তাঁহার দেব-বন্ধনায় ব্যাঘাত হইতে পারে। আল্রেমীর ইহা ভাল লাগিল না। তথাশি বন্ধুর কথায় সম্মত হইয়া উভয়ে এক তমাল বৃক্ষের আড়ালে দাঁড়াইয়া দেব-দর্শনের প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন।

জ্মীমূতবাহন সহসা শুনিতে পাইলেন, দাসী বলিয়া উঠিল, রাজকুমারী। এই পাষাণী দেবীর সম্মূথে বীণা

....

### শিশু-ভারতী

ৰাজাইয়া তব গান করায় লাভ কি ? এত দিন এত পূজা করিলেন, এত বীণা বাজাইলেন, এত তবগান করিলেন, কিন্তু নিৰ্দ্না দেবী প্রসন্না ইইলেন না! নিজ্ঞাব পাষাণ দেবতার প্রাণ আছে কি ? এই বলিয়া দাসী জরাকুমারীর হাত হইতে বীণা কাড়িয়া লইল।



এক নারী দেবতার স্তবগান করিতেছেন

রাজকুমারী বলিলেন, চভুরিকা, ভগবতী গোগীর নিন্দা করিয়োনা। গত রাত্রে দেবী আমায় অপে বর দিয়াছেন যে, বিভাধর-বাজ জীমূতবাহন তোমার পাণিগ্রহণ করিবেন।

চত্রিকার মুথ হাসিতে উজ্জন চইয়া উঠিল। এমন সময়ে আলেয়ী বৃদ্ধ হাত ধরিয়া তথায় উপস্থিত হুটলেন ও হাসিতে হাসিতে বলিলেন, রাজকুমারি, এই লউন, আপনার দেবীর-দেওয়া 'বর'।

নাজ কুমারী মল ঘবতী আঁথির কোণে এক বার
আমুত্রাগনকে দেখিয়া লইলেন। লজ্জা আসিয়া
তাঁহার চক্ষুপল্লব চাশিয়াধরিল। তিনি ধীর বরে
বলিলেন, চ হুরিকা, চল, আমরা এখান হইতে অভ্নত কোথাও যাই। চতুরিকা রাজকুমারীর এই কথার
অর্থ বুরিতে পারিল। অপুর্বং এক আননন্দ তাহার
মুথথানিতে হাসির ঝিলিক থেলিয়া গেল।

এই মলয় পর্বতের রাজা বিখাবস্থ পিতামাতার দেবাপরায়ন জীম তবাহনের স্থন্দর রূপ দেখিয়া তাঁহার স্ঠিত আপ্নার ক্লামলয়বতীর বিবাহ দিবার ইচ্ছা করিয়াছিলেন। একদিন তিনি মধ্যাক্ত ভোজনের পর অস্ত:পুরে বিশাম করিতেছেন, সহসা ক্যার বিবাহের কথা তাঁহার মনে জাগিয়া উঠিল। তিনি পুত্ৰ মিত্ৰাৰস্কুকে ডাকিয়া বণিলেন, বংস, মলয়বতীৰ বিবাহের ত আর দেরী করা চলে না। বিভ'ধরের রাজা জামুতকেতৃ তাঁহার স্ত্রীর দহিত তপস্থা করি-বার জন্ম এই মল্ম পর্বতে আসিয়াছেন। তাঁহাদের পুত্র জীম ভ্রাহনও জাঁহাদের সহিত এখানে আসিয়া-ছেন। জীম তবাহন হারপ হালর গুরাপুক্ষ-তারপার এতবড বিভাগর-রাজের পুত্র সে: পরোপকার তার জীবনের ব্রত্ত- সকলের উপর, শক্তিশালী যুদ্ধনিপুর্ণ বীর। আমার মনে হয়, এই জীমুভবাহন আমার মলয়বতীর উপযুক্ত বর। অতএব ভূমি একবার বিভাধর-রাজ জীমৃতকেত্র নিকটে গিয়া আমার এই প্রস্তাব তাঁহাকে জানাও। মিতাবস সানকে পিঙার কথা স্বীকার কনিলেন।

মলয়বতী থেদিন জীমৃতবাহনকে দেখিয়াডেন, সেই দিন হইতে অনবরত জীমুতবাহনের চিন্তা করেন। শয়নে স্বপনে জাগরণে সর্বদাই জীমতবাহনের স্কলর মুখচ্ছবি মনে পড়ে। বেলা শেষ হইয়া আসিয়াছে। এমন সময় মলয়বতী তাঁহার দাসী চত্রিকাকে বলিলেন, চতুরিকা, চন্দন-লভাকুঞ্জে যে চন্দ্রমণি শিলা আছে, চল, আজ সেইখানে বসিয়াভোমার সঙ্গে মনের কথাবলিব। দাসী খুসি হইয়া রাজক্সার সহিত চন্দন-লভাকুঞ্জে উপস্থিত হইল এবং উভয়েই সেই শিলার উপর বিদল। মলয়বতী চত্রিকাকে মনের কথা খুলিয়া বলিলেন। দাদী হাসিতে হাসিতে বলিন, রাজকলা, ইহার জল ভাবিয়োনা। দেবীর বরে তোমার সহিত তোমার বাঞ্চিতের শীঘুই মিলন হটবে। এইরূপ কথাবার্তা হইতেছে, এমন সময়ে আত্তেমীর সহিত গল করিতে করিতে কীমৃতবাহন সেই চলন-শতাকুঞ্জের দিকে আসিতেছেন দেখিয়া চতুরিকা সখী মলয়বভীর সহিত অংশাক-বাটিকার দিকে চৰিয়া

ছই বন্ধূ লতাকুঞ্জে প্রবেশ করিয়া চল্রমণি শিলার উপর বদিলেন। জীমুতবাহন বদিলেন, বন্ধ্ গতরাত্তে অংগ্র দেখিয়াছিলাম, এই চন্দ্রন-লতাকুঞ্জে এই চন্দ্রমণি

## জীমুভবাহন

শিশার উপরে এক দেবী বৃদিয়া আছেন। তিনি কোনো কারণে ক্রুদ্ধ হইয়া আমাকে অভিশাপ দিকেছেন ও কানিতেছেন। বন্ধু, বলিব কি, আমি আমার অন্তরের পটে বেন তাঁহাকে এখনো দেখিতে পাইতেছি। এই বৃদিয়া জীমুতবাহন নানাবর্ণের গেরুমাটি দিয়া সেই চক্রমণি শিশার উপবে এক নারী-চিত্র অক্টিত করিলেন।

আত্রেয়ী আশ্চণা হইয়া বলিলেন, দেবী-মন্দিরে তুমি যে-দেবীকে দেখিয়াছিলে, তাঁহার মুগভাব ও বেশ-বিভাগের সহিত ভোমার আঁকা এই চিত্রের যে আশ্চাারণে মিল রহিয়াছে, বন্ধু। এই বলিয়া আত্রেয়ী হাসিতে হাসিতে জীমুভবাহনের মুগের দিকে চাহিল। জীমতবাহনও আত্রেয়ীর দিকে চাহিয়া হাসিতেন।

বেলা প্রায় শেষ ইটয়া আদিয়াছে। মিত্রাবস্থ পিতার আদেশে মলয়বতীর সহিত বিবাহের কথাবার্ত্ত। কহিবার জঞ্জ জীমূতবাতনের অবেষণে সেটদিকে আদিতে লাগিলেন। মিত্রাবস্থকে দেখিয়া আত্রেয়ী কদলীপতা দিয়া সেট পাগরে আঁকা ভবিগানি ঢাকিয়া কেলিল। মিত্রাবস্থ জামূতবাতনকে যথোচিত সমাদর করিয়া বলিলেন, আমার পিতা বিধাবস্থ সিদ্ধরাক বংশের প্রাণস্বরূপ তাতার কন্তা মলয়বতীকে আপনার হতে সমর্পন করিতে ইচ্ছা করেন। অনুগ্রুত পূর্বক আলনি আমার পিতার এত বাসনা পূর্ব ককন।

আত্রেয়ী মিত্রাবস্থকে বলিল, এ সম্বন্ধ অতিশয় গৌরবের, কিন্তু সংগার সম্মতি কি শোভন হইবে ? আপনি ই'হার পিতামাতার নিকট এই প্রস্তাব করুন, আমার বিশ্বাস, তাঁহারা এই প্রাঘা সম্বন্ধ স্থীকার করিবেন। এই কথা শুনিয়া মিত্রাবস্থ্ যথোচিত সভিবাদন করিয়া তথা হইতে প্রস্তান করিলেন।

ছই বন্তে নান। কথা হইল। পুর্বরাতির দেখা স্বনের সহিত আজ্কার এই ব্যাপারের আশ্চর্যা মিলনে বিধাতার শুভ সঙ্কেত অন্তব করিয়া তুই বন্ধ্ অভ্যন্ত আনন্দিত হইলেন এবং নানা কৌতুককর গল্প করিতে করিতে লভাকুঞ্জ হইতে বাহির হইয়া গেলেন।

চকুরিকা দণী মদমবতীর সহিত বাহির ছইয়া
চকুমণি শিদার উপর কলাপাতাম-ঢাকা দেই ছবি
দেখিতে লাগিল। মদমবতী শিলাতলে আপনারই ছবি
দেখিয়া লজ্জিত ও প্রদার হইয়া উঠিলেন। এই সময়ে
এক দানী আদিয়া রাজকুমারীকে বলিল, মহারাজ
আপনাকে শীত্র প্রাসাদে আহ্বান করিয়াছেন। ইহা

ভনিষা রাজকুমারী রাজ-প্রাসাদের দিকে অপ্রসর হইজেন। সেই রাত্তিতেই মহাসমারোহে মলয়বতীর সহিত জীমূতবাহনের বিবাহ হইয়াগেল।

একদিন জীম্ভবাহন, মিত্রাবহার সহিত সমুদ্রতীরে জমণ করিতেছিলেন; সমুদ্রে কোয়ার আসিবার সময় ছইয়াছে। সমুদ্রতীরে বেখানে কোয়ারের সময় ছল আদে, সে-পথ ছাড়িয়া দিয়া পর্বতিশিগরের নিকটম্থ রাস্তা দিয়া চলিতে চলিতে জীম্ভবাহন মিত্রাবহ্নক বিললেন, দেগ, শরতের খেত মেথে মলয় প্রতের চ্ছা হিম্পিরির শোভা ধারণ করিয়াছে।

মিতাবকু বলিলেন, ইহা মলয় পর্কভের চূড়া নহে
--ইহা নাগগণের অভিযাশি।

ইহা শুনিয়া জীমূতবাহন আশচ্বা হইয়া ব্লিলেন, এককালে এত নাগের মৃত্যু হইল কিরুপে ?

মিআবস্থ বলিলেন, কোনো সময়ে গক্ত কুপিত হইয়া সমন্ত স্প্কি নাশ করিবার ইচ্ছা করিয়াছিলেন তাগতে নাগরাক বাস্থকী এই নিয়ম করেন যে, গক্তের খান্তের ক্ষন্ত প্রতিদিন এক নাগ, নাগলোক হইতে সমুদ্রতটে বাইবে। সেই দিন হইতে প্রতিদিন এক একটি নাগ এখানে আদে ও গক্ত সেই নাগটিকে ধাইয়া ফেলে। স্প্গণের সেই অন্থিরাশি পুঞ্জিত হটয়া পরতের মত দেখাইতেত্ব।

এই কথা শুনিয়া নাগগণের ছঃথে জীমুওবাংন অত্যস্ত আকুল হইয়া উঠিলেন এবং কিরূপে নাগ-কুলের এই বিপদ দূর করা যায়, তাহার চিস্তায় মগ্র হইলেন।

এই সময়ে স্থানল আসিয়া মিত্রাবস্থকে প্রাসাদে ফিরিবার জক্ত রাজার আদেশ জানাইল। মিত্রাবস্থ, জামু ভবাহনকে লইয়া রাজপ্রাসাদে ফিরিবার ইড্ছাকরিশেন, কিন্তু জামু ভবাহন বলিলেন, আমি সমুদ্রভটে একটু বেড়াইয়া এখনি রাজপ্রাসাদে ফিরিব। এই কথা গুনিয়া মিত্রাবস্থ স্থানকের সহিত চলিয়া আসিলেন।

জীমূ ত বাছল সমুদ্রের তটে আসিয়া গুনিতে পাইলেন কে যেন আর্ত্তরে বলিতেছে—হা পুত্র শত্তাচ্ছ গু আমি আজ তোমার এই দশা কেমন করিয়া দেখিব ? ইহা গুনিয়া জীমূতবাহন চকিত হইয়া উঠিলেন। ঐ শব্দ কোনো নারী কঠ হইতে বাহির হইতেছে অন্ত-মান করিয়া তিনি ঐ শব্দের অনুসরণ করিয়া চলিতে লাগিলেন। জীমূতবাহন একটু অগ্রসর হইয়া দেখি-

### ম্পিত-ভারতী

লেন, অদ্বে লোহিত বস্ত্র হতে লইয়া এক রাজপুরুষ আর তাহার নিকটে এক যুবা ও তাহার বৃদ্ধা মাতা দাঁড়াইয়া আছে। রাজপুরুষ বলিতেছে, শঝচুড়, গরুড়ের ভক্ষার্থ বিধাশিলায় যাইবার জন্তু নাগরাজ বাসুকি আজ ভোমায় আদেশ করিয়াচেন—এই লও তোমার বধ্য বেশ।

শহ্মচুড় সেই গোহিত বস্ত্র রাজপুরুষের হাত হইতে লইয়া বলিল, মহারাজের আদেশ শিরোধার্য হইল। নাগরাজকে বলিবেন অমি এখনি বধাবেশ পরিধান করিয়া বধাশিলায় শয়ন করিব।

রাজপুরুষ চলিয়া গেলে শঙাচুড় মাতাকে নানারপে আখাস দিতে লাগিল। কিন্তু পুত্রশোক-সন্তাবনায় মাতার হৃদয়ে আখাস স্থান পাইল না, রন্ধা মুদ্ভিত হুইয়া পড়িল।

এই শোকদৃগু দেখিয়া জীমূতবাহনের প্রাণ কাতর হুইয়া উঠিল। তিনি শঙ্চুড়কে রক্ষা করিবার জন্ম তাহার দিকে যাইতে লাগিলেন।

এই সময়ে বৃদ্ধার সংজ্ঞা ফিরিয়া আসিল। সে আকুল হইয়া বলিতে লাগিল, বাছা, নাগরাজ বাস্থকি যথন ভোমাকে আজ গরুড়ের থাজরপে যাইবার জন্ত আদেশ করিয়াছেন, তখন এই পৃথিবীতে এমন শক্তি-শালীকে আছে, যে ভোমায় বাঁচাইবে!

—আমি বাঁচাইব বৃদ্ধা—বলিতে বলিতে জীমুতবাইন তথায় পৌচিলেন, এবং বলিলেন, আমি বিদ্যাণরপুত্র, আমি তোমার পুত্রকে রক্ষা করিব। বৃদ্ধা প্রসন্ন ইয়া তাহাকে আলীকাদ করিল।

জীমৃতবাহন শঙাচ্ডেম্ব নিকট সেই বধাচিচ লোহিত বস্তু ছইথানি প্রাথনা করিলেন। বৃদ্ধা বলিল, এ কি কথা বলিতেছ, পুত্র! আমার পুত্রের পরিবর্ত্তে তুমি আপনার প্রাণ বিসজ্জন দিতে চাহিতেছ! কে তুমি মহাপুরুষ ৪

শৃষ্ট্ এই আশ্চর্যা ব্যাপার দেখিয়া অভিশয় বিশ্বিত হইল। তাহার নিজের তুচ্ছ প্রাণ বাঁচাইতে এত বড় একটা প্রাণ নই হইবে ভাবিয়া শৃষ্ট্ট্ড বধ্য-চিহ্ন সেই রক্ত বস্তু ফুইগানি দিতে অসম্মত হইল।

জীমৃতবাহন বলিলেন, শৃত্যান্ত, কেন র্থা কাতর
হইতেছ ? জামি পরোপকারের জন্মই এইরপ মহৎ
কার্যে উন্মত হইয়াছি। এইরপ স্থোগ সচরাচর
ঘটেনা। এ বিষয়ে তুমি আমাকে বাধা দিও না।
তুমি স্কেন্টেভে মাতার সহিত ঘরে ফিরিয়া বাও
এবং ঠে বধাহিত বজা গুইখানি আমায় প্রদান কর।

শৃত্যকু জীমুত্বাহনের কোন কথায় ভূলিল না এদিকে গরুড়ের জাসিবার সময় হইয়াছে ভাবিয়াসে মাতাকে সঙ্গে লইয়া গোকর্ণেখর দেবকে প্রণাম ও প্রদক্ষিণ করিয়া আসিবার জন্ত চলিয়া গেল।

বিজ্ঞাধর বংশের নিয়ম এই যে, বিবাহের পর দশ রাত্রি পর্যান্ত জামাতা ও বধু লোহিত বস্ত্র পরিয়া থাকেন। এইজ্ঞ মহারাণী প্রতিদিন বর ও ক্ঞার জন্ম লোহিত বস্ত্র পাঠাইয়া দিতেন। রাজা মিত্রাবস্থর কর্মচারী বস্থভন্ত এই সময়ে ছইখানি লোহিত বস্ত আনিয়া জীমূতবাহনকে প্রদানকরিল। জীমূতবাহনের আনন্দের সীমা নাই। জাঁহার ইচ্ছা পূর্ণ হইয়াছে। তিনি ভাবিলেন মলয়বতীর সহিত বিবাহ আজ তাঁহার সার্পক হইল। জীয়তবাহন পুলকিত হইয়া মহারাণীর প্রদত্ত বস্ত্র ছুইথানি গ্রহণ করিয়া বলিলেন, ভন্তর, মহারাণীকে আমার প্রণাম জানাইবেন। তাঁহার মঙ্গল-আশীর্কাদ আমাকে আজ জয়ী করিবে ৷ এই বলিয়া জীমৃতবাহন সমুচিত আদর করিয়াবস্থভদকে বিদায় দিলেন। বস্তুভদ চলিয়া গেলে জীযুতবাহন লোহিত বস্তু তুইখানি পরিধান করিয়া সেই বধ্য-শিলার উপর শয়ন করিয়া রহিলেন।



গরুড় ভাহার মন্তকে চঞ্ বারা আঘাত করিল

বধাবেশধারী বাজি শিলাতলে শয়ন করিয়া রহিয়াছে দেখিয়া কুধিত গক্ষ জ ক্ত গক্ষে আদিয়া তাহার মন্তকে চক্ষর আৰাত করিল। রক্তবর্গ বঙ্গে আছোদিত ব্যক্তি একটু কাতর শক্ষও করিল না, দেখিয়া গক্ষ্ বিশ্বিত হইষা ভাবিতেছে, এমন সময়ে সহসা বধ্যের উপরে পুশার্ষ্ট হইতে লাগিল এবং মর্গে নানার্গ বাছাধানি হইতে লাগিল। ইহা দেখিয়া গক্ষ্যের বিশ্বয়ের মাত্রা আরও বাড়িয়া গেল।

জীমূতবাহন ভাবিতে লাগিলেন, শজাচ্ডের প্রাণ রক্ষা করিয়া আমার জীবন আজ সার্থক হইল। গক্ষণ জীমূতবাহনকে দেখিয়া মনে করিল, এই বাক্তিইনাগগণের রক্ষাকর্তা শ্রেগুনাগ। মনে ইইতেছে আমার সর্প ভক্ষণের অভিলাষ এই ব্যক্তিই পূর্ণ করিবে; এইরূপ দিস্তা করিয়া গক্ড তাহার নথ দিয়া বধাকে তুলিয়া লইয়া মশ্য পর্বভের শিগরে চলিয়া গেল।

স্গ। প্রায় অন্ত হয়। তথাপি জীম্তবাহন সমৃত্ত চইতে দিরিয়া আসিলেন না দেখিয়া, মহারাজ বিখাবহু অভিশয় চিন্তিত হইলেন, এবং স্থাননক বিলেন, দেগ স্থান আমি শুনিয়াছি, গরুড় যে স্থানে বসিয়া নাগ ভক্ষণ করে, জীম্তবাহন সেই স্থানে বেড়াইতে গিয়াছেন। তুমি একটু জানিয়া আইস ত, জীম্তবাহন লমণ শেষ করিয়া ফিরিয়া আসিয়াছেন কি না।

স্থনন্দ জীমৃতকেতুর নিকট গিয়া জীমৃতবাচনের সংব'দ জিজ্ঞাসা করিল। জীমৃতকেতু বলিলেন, কুমারের সংবাদ ত আমরা জানি না।

সহসং মলঘ্ৰতীর দক্ষিণ নয়ন স্পানিত হইয়া উঠিল। বৃদ্ধা জননী আকৃল বেদনায় কাতর হইয়া বিলাপ করিতে লাগিলেন। সকলেই জীমৃতবাহনের কোনো বিপদ ঘটিয়াছে বলিয়া মর্মাহত হইয়া রহিলেন। এমন সময়ে হঠাৎ তাঁহাদের সন্মুখে থানিকটা মাংসের সহিত এক শিরোমণি আকাশ হইতে পডিল। জীমৃতবাহনের মাতা পুত্রের শিরোমণি চিনিতে পারিলেন ও হাহাকার করিতে করিতে মৃদ্ধিতা ইইয়া পড়িলেন।

এই সময়ে শৃঙ্কাচ্ছ নাগ কাঁদিতে কাঁদিতে সেই দিকেই আসিতেছিল। জীমৃতকেতু শৃঙ্কাচ্ডকে রোদনের কারণ জিজ্ঞাসা করিয়া জানিতে পারিলেন যে, নাগরাজ বাস্থকি আজ তাহাকে গরুড়ের ভক্ষা- কশে বধাশিলায় যাইবার জন্ত আদেশ দিয়াছিলেন।
মাতার করুণ ক্রন্দনে তথায় এক মহাকুভব বিভাধর
পুত্র আসিয়া মাতাকে অভয় দিল। এই সময়ে আমরা
গোকর্শের দেবতাকে প্রণাম ও প্রদক্ষিণ করিতে
গমন করি। ইতিমধ্যে ঐ বিভাধর-পুত্র আমাকে
রক্ষা করিবার জন্ত বধাবেশে সজ্জিত হইয়া বধাশিলায়
শয়ন করিয়াছিলেন এবং গরুড় আদিয়া বধাশিলার
উপরে তাঁহার ভক্ষা রহিয়াছে মনে করিয়া নথ খারা
ঐ বিভাধরের বক্ষ বিদীর্ণ করেন ও তাঁহাকে ভক্ষণ
করিবার জন্ত এই দিকেই উড়িয়া গিয়াছেন; আমি
রক্তধারা অনুসরণ করিয়া দোভিতেছি— যদি কোনোরূপে গরুড়ের ভক্ষাস্থানে পৌছিয়া উক্ত মহানুভব
বিভাধরের প্রাণক্ষা করিতে পারি।



মাতা পুত্রের শিরোমণি চিনিতে পারিলেন

জীমৃতকেতৃ ব্ঝিলেন, সেই মহাপ্রাণ বিভাধর আর কেহ নহে, সে আমার বংশের তুগাল, নয়নের মণি জীমৃতবাহন। এই বলিয়া তিনি রোদন করিতে লাগিলেন; তাহার রোদনে তাহার বৃদ্ধা স্ত্রী ও প্রবধু মলয়বতী কাঁদিয়া কাঁদিয়া মৃচ্ছিতা হইয়া পড়িলেন। মলয় পর্বতে আজ হৃঃথের তরঙ্গ বহিতে লাগিল।

#### শিশু-ভারতী

শঋ্চুড় কপালে করাবাত করিয়া বলিল, আমি কি অধম। হতভাগা আমার জীবনের বিনিময়ে এত বড় একটা জ্বন্ধ ঘটিয়া পেল। একটি জীবনের জস্তু তিনটি মহামূল্য প্রাণ ধাইতে বিসাহছে। এইরূপ অফুশোচনা করিয়া শঋ্চুড় বলিল, দেখুন বিস্থাধররাজ। গরুড় যে বিস্থাধরের বক্ষ বিদীর্ণ করিয়া লইয়া গিয়াছেন, তিনি জীমৃতবাহন না হইয়া অস্তু বিস্থাধরও হুইতে পারেন। অত এব যাহা জানা নাই ভাহার জন্তু পোক না করিয়া এই রক্তধারা জম্বরণ করিয়া দেখাই যাক্ না, গরুড় কোথায় সেই বিভাধরকে ভক্ষণ করিবার জন্তু লইয়া গিয়াছে।

এদিকে গরুড় জীয়তবাহনকে লইয়া মনম প্রতের শিগরে উপস্থিত হইয়াছে। গরুড ভাবি-তেছে—এনন আশ্চ্যা ব্যাপার ত কথনো দেখি নাই। এত দিন এত নাগ তক্ষণ করিয়াছি কিন্তু এমন ধৈগাশীল ত আর কাহাকেও দেখিনাই। আমার চঞ্চর প্রহারে হিমালয়ের উচ্চ চ্ড়া পর্যন্ত ভগ্ন হইয়া যায় কিন্তু ইহার মন্তকে চঞ্ প্রহার করিয়া ব্রিয়াছি, ইহা ইন্দ্রদেবের বন্ধ অপেক্ষাও স্কঠিন। দেহে প্রক্রমাংসের আমানও অন্ধ্যরূপ, তবে কি এ নাগ নহে—পরোপকার প্রতধারী কোনো মহাপুরুষ। এইরূপ চিন্তা করিতে করিতে গরুড় আহারে বিরত হইয়া জিল্ঞানা করিল, কে তুমি মহাপুরুষ ও

জীমৃতবাহন জতি ধীর স্বরে বলিলেন. মহাশ্র, আমার সায়শিরায় এখনও রক্ত বহমান রহিয়াছে, দেহে এখনও অপ্যাপ্ত মাংস রহিয়াছে—তবে আপনি ভোজনে বিরত হইলেন কেন ?

গরুড় ইহা শুনিয়া বিশ্বিত হইয়াবলিল, ফে মহাপ্রাণ আমার উত্তরোত্তর বিশ্বয় বাডিতেছে; আমি জানিতে চাই, তুমি কে?

গক্ষডের এই কথা শুনিয়া জীমৃতবাহন বলিলেন, আমি যখন বধাবেশে বধাশিলায় পড়িয়াছিলাম, তখন আপনার জানা উচিত, আমি আপনার ভক্ষা। ইহা ভিন্ন আঞ্জামার আর অক্স কোনো পরিচয় নাই।

গক্ত বলিল, তোমার পরিচয় আমার এখনি জানা বিশেষ প্রয়োজন। আমার মনে হয়, তুমি কোনো মহাপুক্ষ। নাগবংশের উদ্ধারের জ্ঞা এইরপে আঅপ্রাণ বিসর্জ্জনে উন্থত হইয়াছ। নাগের এত ধৈর্য আমি কথনও দেখি নাই।

—নিশ্চয়ই দেব ! এ ব্যক্তি অভি প্রার্থপর মহাপুরুষ । আনার প্রাণ রক্ষার জক্ত ইনি এইরূপ ছক্র কাজ করিয়াছেন। আমি শশ্চুড় নাগ।
নাগরাজের আদেশে এই দেখুন বধ্যবস্ত্র পরিয়া আমি
আপনার নিকট আসিয়াছি। এখনো ইঁহাকে ত্যাগ
করিয়া আমাকে ভক্ষণ করুন। এই কথা বলিতে
বলিতে শশ্চত তথায় উপস্থিত হইল।

গৰুড় বিষম ধাৰায় পড়িয়া গেল। উভয়ের নিকটেই বধাচিছ। ভবে নাগ কে ৭ এইরূপ ভাবিয়া বলিল, আমি জানি না, তোমাদের মধ্যে কে আজ আমার ভকা।

এই সময় শভাচ্ছ বলিল, আমিই নাগ! এই দেখুন আমার খোলস, এই দেখুন আমার ছি-জিহ্লা, এই দেখুন আমার ছি-জিহ্লা, এই দেখুন আমার ফণা। যিনি বধাবেশে আপনার পদতলে পড়িয়া আডেন, তাঁহার গায়ে কি খোলস দেখিতে পাইতেছেন ? ইনি বিভাধর-মাজ জীন্ত-কেতৃর পুত্র মহাপ্রাণ জীন্তবাহন।

শ্ভাকৃত্তের এই কথায় গরুত্তের চৈতক্স হইল। গরুত ভাবিতে লাগিল—সতাই ত, এই একটা সাধারণ চিচ্না দেখিয়া গুধু বধাচিগু দেখিয়াই আমি এতবড় একটা মহাপ্রাণ বধ করিলাম। হায় ৷ হায়। এ আমি কি করিলাম !

এই সময়ে উচৈচ: যরে কাঁদিতে কাঁদিতে বদ জীয়তকে তু, তাঁহার পন্নীও কুত্মকোমলা মলয়বতী তথায় উপন্তিত চইলেন।

জীয়তবাহন পিতা, মাতা ও পত্নী তথায় উপস্থিত হইয়াছেন জানিয়া শৃঙ্কাত্তকে ধীরপ্বরে বলিলেন, বন্ধু, রক্তবর্ণ উত্তরীয় থানি দিয়া আমার সর্পাঙ্গ ঢাকিয়া দাও। নচেৎ আমার ক্ষত বিক্ষত দেং দেখিয়া ইঠারা মহিত্ত হইয়া পড়িবেন।

এই শোকদৃত্য দেখিয়া গরুড় মন্মাণত হইল।
তাহার মুখ দিয়া কোনো কথা বাহির হইল না।
আকুল নেত্রে এই শোকদৃত্য দেখিতে দেখিতে অশুজল
ফেলিতে লাগিল—আর বলিতে লাগিল, ভ্রমবশে
আজ যে মহা অপরাধ করিয়া ফেলিয়াছি এই পাপের
প্রায়শ্চিত্ত কিরণে করিব প

গরুড়ের এই কথা শুনিয়া জীয়্তবাহন ধীরে ধীরে বলিলেন, সভাই ড, জীব-হিংসা পাপের প্রায়ন্চিত্ত নাই। আমি জানি না, পালনকর্তা বিষ্ণুর বাহন ও পরম বৈষ্ণুব হইয়া এ আপনি কি করিয়া থাকেন! নাগকুলের সহিত শক্রুতা হয় ত আপনার আছে কিন্তু জানেন না কি, শাস্তি দিয়া শক্রুতার প্রতিশোধ ক্ষমা। ক্ষমা ঘারাই শক্রু মিত্র হয়া থাকে।

মুমুর্জীমৃতবাহনের কথায় গরড়ের জ্ঞাননেত্র খুলিয়া গেল। তাইত বিভাধর-রাজের পুত্ত এ কি न्डन कथा छनाईन! विनि এত वड़ कथा विनिट्ड পারেন, তিনি ত সামাল্প পুরুষ নন। পদতলে পতিত বিস্থাধর-পুত্র অবশুই কোনো মহাপুরুষ হইবেন, এই-রূপ চিস্তা করিয়া গ্রুড় অভিশয় বিচ্লিত হুইয়া উঠিল। গৰুড় চিস্তা করিতে লাগিল, পৃথিবীর পৃষ্ঠ হইতে এতবড় একটা মহাপ্রাণ অসময়ে চলিয়াযাইবে, আর তাহার কারণ হইব আমি, ইহা ত হইতেই পারে না; আমি যেরূপে পারি ইহার জীবনরক্ষা করিব। কিন্ত আমার চণ প্রহারে জীমুতবাহন এত ছুর্বল হইয়া পড়িয়াছে যে, আমার এখানে ফিরিয়া আসিতে ষ্তটা সময় লাগিবে, ততক্ষণ ইচার প্রাণ হয় ত না থাকিতে পারে। কিরপে জীমৃতবাহনের প্রাণরকা করিতে পারি, এইরূপ চিন্তায় কাতর হুইয়া গ্রুড মঙ্গলময়



रेक्सानव ... अपुष्ठ वर्गन कतिरामन বিধাতার উপর জীমৃতবাহনের প্রাণরক্ষার ভার দিয়া

অমৃত আনয়নের জন্ত স্বর্গের দিকে উড়িয়া গেল যাইবার সময় গর্ভ সকলকে আখাস দিয়াগেল আমি শীঘ্রই অমৃত লইয়া ফিরিয়া আসিব। আপনারা কিছুমাত্র ভীত হইবেন না।

গৰুড় স্বৰ্গে গ্ৰন করিয়া ইক্তদেবের নিকট তাঁহার প্রাণের আবেগ জানাইল। ইহার মধ্যেই স্বর্গে এই অবদানের সাভা পড়িয়া গিয়াছিল। ইক্রদেব গরুছের অমুরোধে আকাশে প্রকাশমান হইরা অমৃত বর্ষণ করিলেন। অমৃতের স্পর্শে জীমৃতবাহন সোজা হইয়া বদিলেন। তাঁহার সকদেহ ক্রম্ব ও স্বল হইয়া द्धितिम ।

হঠাৎ স্বৰ্ণাভায় দিক আলোকিত করিয়া গ্রুড দেই স্থানে উপস্থিত হইয়া দেখিল, জীমূতবাহন নিরা-ময় ১ইয়া উঠিয়া বসিয়াছেন। এই দুখা দেখিয়া গ্ৰুড় অতিশয় সুখী হইলেন, তাঁহার চইচকু দিয়া আনন্দের অশ্ৰন্ত কারিতে লাগিল।

এতক্ষণ শভাচ্চ কোন কথা বলে নাই! সে একপার্বে দাডাইয়া এই স্বর্গদৃশ্য দেখিতেছিল। এইবার দে অগ্রদর হইয়া জামৃতবাচনের দল্পে নতজাতু হইয়া বলিল, দেব, তোমার অপাথিব করুণায় নাগবংশ বাঁচিয়া গেল। কিন্তু যতদিন ঐ অস্থিরাশি বিস্তমান থাকিবে, ভতদিন নাগবংশের ও ডৎসহ মহাত্রা গরুডের এই কশন্ধকাহিনীযে স্গর্কে মাথা তলিয়া মঙ্গলময় বিধা ভার নিকট অন্থোগ করিতে থাকিবে।

শহাচুড়ের এই কথার রহস্ত গরুড় ব্ঝিতে পারিয়া ইন্দুদেবের নিকট অমৃত-বর্ধার প্রার্থনা জানাইছেন। প্রার্থনার সঙ্গে সঙ্গে বিন্দ্বিন্দু ধারে অমৃত্বর্ষণ হইতে লাগিল। সেই অমূত বারিবর্ধণে অন্থিশেষ স্প্রণ দেহ ধারণ করিয়া বেগে সমুদ্র-গর্ভে প্রবেশ করিতে লাগিল। এই দৃশ্য দেখিয়া গরুড়ের প্রাণ অপুর্ব পুনকে পূর্ণ হট্যা উঠিন। জগতে পরার্থপরতার ख्य कडेल ।

এই গল্লটি মহারাজ হর্বর্দ্ধন-লিখিত নাগানন্দ পুস্তক হইতে সংক্ৰিত চইয়াছে।



## দেশ-বিদেশের জাতীয় সঙ্গীত

#### ভাৰতবৰ্ষ

ভারতবর্ষ, জাপান, গ্রীস, ইটালী, পর্ত্তাল, জাম্মেনী, সাবিয়া ও মণ্টিনেগ্রো এই কংটি দেশের জাতীয় সঙ্গীত এখানে দেওয়া গেল। জাপান, গ্রীস, ইটালি, পর্ত্তাল ও জার্মেনীর জাতীয় সঙ্গাত কবি শ্রীকালিন দাস র'য় বি. এ. কবিশেথর কর্তৃক অন্দিত। সাবিয়ার জাতীর সঙ্গীতিরি অহ্বাদ করিয়াছেন স্বর্গায়া প্রিয়ন্ধদা দেবী বি, এ। মণ্টিনেগ্রোর জাতীয় সঙ্গীতের অহ্বাদ স্বর্গীয় কবি সতে শ্রুন্থ দত্তের কৃত্ত।



স্বগীয় ছিজেন্দ্রলাল রায়

বেদিন স্থনীল জলধি হইতে উঠিলে জননি!
ভারতবর্ষ!
উঠিল বিশ্বে সে কি কলরব, সে কি মা ভক্তি,
সে কি মা হয়!
সেদিন ভোমার প্রভায় ধরায় প্রভাত ১ইল
গভীব রাত্রি;
বন্দিল সবে ''জয় মা জননি! জগন্তারিণি!
জগন্ধাত্রি!'
ধন্ম হইল ধরণী ভোমার চরণ-কমল
করিয়া স্পার্শ!
গাইল ''জয় মা জগনোহিনি! জগভ্জননি!
ভারতবর্ষ!''
সদাস্থান-সিক্ত-বসনা চিক্র সিন্ধ-

শীকরলিপ :

আনন দীপ্ত:

ললাটে গরিমা, বিমল হাস্থে অমল কমল-

## ++++++ কেশ বিদেশের জাতীয় সঙ্গীত খ

উপরে গগন ঘেরিয়া নৃত্য করিছে, তপন তারকা চন্দ্র ; মস্ত্রমৃগ্ধ, চরণে ফেনিল জলধি গরজে জলদ-মন্দ্র । ধতা হইল ধরণী তোমার চরণ-কমল করিয়া স্পার্শ ; গাইল "জয় মাজগ্রোহিনী । জগডভননি ! ভারতবর্ষ ।" দুঠায়ে পড়িবে পিক-কলরবে, চুম্বে ভোমার চরণপ্রাস্ত ; উপরে, জলদ হানিয়া বজ্ঞ করিয়া প্রলয়-সলিল বৃষ্টি---চরণে ভোমার, কুঞ্জকানন কুম্বম-গন্ধ করিছে স্ফ্রিটি। ধন্ম হউল ধরণী ভোমাব চরণ-কমল করিয়া স্পর্শ ; গাইল "জয় মা জগন্মোহিনি! জগভ্জননি! ভারতবদ।"

শাঁদে শুল তুমাব-কিরীট; সাগব-উমি ঘেরিয়া জ্বলা; বক্ষে তুলিছে মুক্তাব হার পঞ্চ সিন্দু যম্না গঙ্গা, কথন মা তুমি ভীগণ দাঁপ্ত তপ্ত মক্তর উধর দৃশ্যো, হাসিয়া কথন শ্রামল শস্মে, ছড়ায়ে পড়িছ নিগিল বিশে! পঞ্চ ইল ধরণী তোমার চরণ-কমল করিয়া স্পান্ধ; গাঁইল ''জ্যুমা জগুলোহিনি! জগুল্জননি! ভারত্বম!"

জননি, তোমার বক্ষে শান্তি, করে ভোমার ঘডয়-উক্তি, কঙ্গে ভোমার বিতর অল, চরণে ভোমার বিতব মুক্তি; জননি, ভোমার সন্থান তরে কত না বেদনা কত না হয়; —জগৎপালিনি! জগতারিণি! জগত্জননি! ভাবতবয়!

উপরে পবন প্রবল সননে শৃয়ে গরজি অবিশ্রান্ত, ধতা হইল ধরণী ভোমার চরণ-কমল করিয়া স্পূর্ণ; গাইল "জয় মা জগনোহিনি! জগজজননি! ভারতবধ!"

## শিশু-ভারতী গ্রীস

শাণিত উদ্ধল তীক্ষ্ণারের
ত্রুক্তয় তববারি,
তা দেখে তোমায় চিনিতে না রয় বাকা।
দৃষ্টি তোমার খর জ্ঞালাময়
বোমেলোকসঞ্চারী—
বিভাহসম্ কেমনে রাখিবে ঢাকি ?



স্থপ্ন দেখিতে অতীত যুগের
গৌরব-মহিমার।
সম্মল ছিল তাই সান্থনা তরে,
প্রাচীন গ্রীসের বীর অবদান
স্মরি হায় বার বার
বাণিতে তাই অশ্রুষ অক্ষরে।

বিশ্ববিজয়া বাবেরা শায়িত ধবণীর তলে যথা. উপ্তিত ত্মি সেগা কন্ধাল ভেদি'; চির শৌযোর মৃত্তি স্বাগত ন্মি ভোমা, স্বাধীনতা! যুগে যুগে রচি ভোমার জন্য বেদী। অজ্ঞাত বাসে নীরেবে গোপনে লভভায় মিথমাণ, রহ ব্যথাহত স্তুদ্নি প্রভীক্ষায়, একদিন আসে বীর সেবকেব আশাভরা আহ্বান, হয় পুন ৩ব আলোকে উদয় ভায়। করেছিলে হায় সেই প্রতীক্ষা, কত রাত কত দিন---মগু রহিয়া গভীর স্তর্কভায়, ভয়ম্দিত চিরলাঞ্চিত চকিত তিমির-লীন গোলামির ঘুমে অসাড় হইয়া হায় !

শুধু প্রতীক্ষা আশার আশার আসিবে অকস্মাৎ মুক্তির ডাক কবে কোন্ শুভ খনে বন্দিদশার সন্ধ্যাপ্রভাতে করিছে অঞ্চপাত নিরাশার কভু হাতে হাত ঘর্ষণে।

## দেশ বিদেশের জাতীর সঙ্গীত

'অন্ধকারায় বন্দিদশায় কতকাল র'ব আর, বলি বার বার জানায়েছ বেদনায় কানায়েছ তাঁরে আবেদন সকরণ. শুধু শৃঙ্গল-ঝনঝনি আর কোলাহল হাহাকার, উত্তরে তুমি শুনিয়াছ হায় হায়।

উদ্ধে পাঠায়ে অশ্রপ্লাবিত কাতর দৃষ্টি ক্ষীণ, তোমার জীর্ণ কন্থার পরে ঝরিয়াছে কতদিন ফেঁটোয় ফেঁটোয় গ্রীসের বুকের খুন। —কেনোটাস

#### জাপাস

ষত দিনে এই বালুকার কণা চেউয়ে চেউয়ে প্রতিহত, মেঘে-ঘেবা উচু <u>শৈলচূডায</u> নাহি হয় প্ৰিণত,

যত দিনে এই শিশিবের কণা সোণালী ফুলেব পরে জেমে বেড়ে বেড়ে বিরাট প্রদের আয়তন নাহি পরে.

ভ্রুছিন ধবি মোদেব রাজার তোক জয়-জয়কার, নুত্ৰ হৰ্ষ হর্ষের পরে জমুক জীবনে তার।





## শিশু-ভারতী জার্ফোনী

বজ্ঞ গর্ম্জে বিদারে ব্যোমের বক্ষ হৃত্বারি উঠে খর তরক্ষ কনঝনে অসি লক্ষ ; অবাধ রাইন ধারা— তাহার স্বাধীন গৌরব এবে রক্ষা করিবে ক্ষা'রা প



শঙ্কা কিসের ? বিশাস কর

হে মোর
সন্তান তব গরিমারকী

আশাস লভ তুমি।
প্রতি সন্তান নির্ভীকপ্রাণ

অটল সত্যব্রত,
ভোমার রাইন ধারার পাহারা—
দিবে তারা অবিরত।

শুনেছে বজ্রবাণী,
পুত্রেরা তব নেত্রে তাদের
বিজ্ঞালির চমকানি।
বক্ষে তাদের বিরাজে দীপ্ত
স্বদেশ-সেবার ত্রত,
সিন্ধুর' পরে চির অতন্দ্র
পাহারায় র'বে রত।

অবাধ রাইন নদী
সংগ্রে ছবি প্রতিবিশ্বিত
তব বুকে নিরবধি।
অনিমেশ চোথে বীরগণ ঢায়
তোমা পানে প্রেমভবে
অমোঘ শপণ করে তার। তব
গ্রিমা রক্ষা তরে।

সাধীন রাইন ধারা
সামরা থাকিতে তব স্বাধীনতা
হরণ করিবে কা'রা ?
যতদিন র'বে শিরায় শিরায
বাঁরের শোণিত, আর
যতদিন হাতে রহিবে শক্তি
ধরিবারে হাতিয়ার,
জেনে রেখ তুমি একটিও বাহু
যতদিন র'বে দেশে
করিবে না তব ওট কলু্ষিত
কোন' হুষ্মন এসে।

প্রতি তরক্ষে প্রতিধ্বনিত
শোন এই বারবাণী,
পত পত রবে রণকেতু দেয়
প্রতি বীরে হাতচানি।
স্বাধীন রাইন নদী
আমরা তোমার প্রহরী রক্ষী
চিরকাল নিরবধি।

--- নেকেন বার্জার

## দেশ-বিদেশের জাতীর সক্ষত পর্তু গাল

জয়তু পর্ত্ত গাল, তোল তোল পুন প্রাচীন গর্কে গরিমাদীপ্ত ভাল। সস্তান তব সিন্ধুলহরে বিজয়োদ্ধত বীর অমর গরিমা বন্দিছে তোমা সাহসোয়ত শির। জয়তু পর্ত্ত্বাল শোন কোন বাণী আসিছে ভেদিয়া শ্বতির সপ্রজাল ? তব মৃত বীর কুতা পুত্রেরা করে আশাস দান, পবিচালনাব বাণী শোন অই. কর জয়-অভিগান। (কোরাস) ধব ধব হাতিয়াব স্থলে জলে বণে সম বিক্রেম্ কিসেব শঙ্কা আর গ ধর হাতিযাব, খোল তলোয়াব, দেশেব সুক্তি চাই. কামানেৰ মুখে তেজে-ভৱা বুকে শৌর্য্যের গান গাই। উডাও ভোমাব হাজেয় কেতন আলো করি আশ্যানে শোন, ইউরোপ গজ্জিয়া কয সারা তুনিয়ার কানে। স্বাধীন প্রকুগাল পরাজয়-লাজে কখনো করেনি কলুষিত তাব ভাল। চুম্বন করে সিন্ধু তোমার সুন্দর উপকুল, ক্ষেত্-ভরক্ষে দোলায় ভোমারে জননীর সমতুল। তব ধরাবেষ্টিত পাণি দিয়াছে জগতে নব নব দেশ---

(কোরাস্) ধর ধর হাতিয়ার
স্থলে জলে রণে সম বিক্রমে,
কিসের শক্ষা আর 
ধব হাতিয়ার, খোল তলোয়ার
দেশের মুক্তি চাই
কামানেব মুখে তেজে ভরা বুকে
শৌর্যার গাথা গাই।



পাও তপনের জয়
তার অনাময়া পরশনে তব
ভবিস্তু তেজোময়।
বাহির হইতে বিপ্লব আদে
আক্রমণের বেশে,
প্রতিহত হোক, নূতন জীবন
সূচনা করিয়া দেশে।

অঁতুল বিভব আনি।

## শিশু-ভারতী

উধার অরুণ কিরণের ধারা
নবজাবনের তীরে,
জননার স্নেং-চুম্বন সম
ঝরুক তোমার শিবে।
জরুপ্রাণিত হোক তায় নব
সাহসে দেশের লোক,
নিশ্মম স্বে শক্তির যত
আঘাত বার্থ হোক।

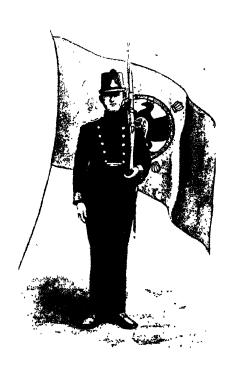
ধারা (কোরাস্) ধর ধর হাতিয়ার
নবজ্ঞাবনের তীরে, স্থলে জলে রণে সম বিক্রমে

কিসের শঙ্কা আর ?
কিনের শঙ্কা আর ?
কিনের শার আর র্কি চাই,
সাহসে দেশের লোক, কামানের মুখে তেজে-ভরা বুকে

বত শোহ্যেরি গাথা গাই।
আঘাত বার্থ হোক।
—মেণ্ডোনকা

## ই টালি

সমাধি-শায়িত মৃত বীর যত গজ্জিয়া উঠে এই গজ্জিয়া উঠে সহাদের দল—কই ভরবারি কই ১



নিদ্রিত অসিগুলি
জেগে উঠে ভায় রুদ্র জালায বান বান নাদ ভুলি'। শিবে ভাঁহাদের জোতিব বলয় উজ্জল তেজে ভায়, বাজে ইটালিব বিজয় মধ্র

এস এস য় হ বার ।

এস নির্ভীক্ সাথেব পথিক
গোরবে উ চু শির।
উড়াও কেতনমালা—
ছড়াও বক্তিজালা
চালাও কুপাণ বাজাও বিষাণ
শক্ত করিব জয়,
এসএস নির্ভয়!

ইটালি মাতার অমোঘ নিদেশ— অফ্য কাতারো নয়।

চালাও খড়া বল,
জালাও সমরানল,
বহ্লি-ঝলকে অসির ফলকে
যাক্ অরি রসাভল।
• — মার্কেন্টিনি

## দেশ-বিদেশের জাতীর সঞ্চীত

## সাৰিশ্বা

সবে মিলে উঠে পড়ো. এক সাথে হও জড়ো, একাগ্র অন্তর, চলে গেছে অন্ধ রাতি, এলো আলোকের যাত্রী. অরুণ কিরণে দীপ্ত স্তব্ধ দিগন্তর। ডাকে স্বাধীনতা, "মা" দে অবনতা, রক্ত পভাকা ওড়ে, তুমি কি থাকিবে পড়ে' ? পীড়ন যে করিছে তোমারে. ধরো' ভূমি ধারাল কুপাণ, সগায় হবেন ভগবান। চল হে সমরে, ভয় কি, কে মবে. দম' ছঃশাসনে, দেশ যে তোমাবে চায়. যথা তাপ আনো ছায়, যুগে যুগে বদো দবে স্বর্ণ-সিংহাদনে। দেশের আহ্বান, হও আগুয়ান, জায় শীবৰ করে, অভয় মল্লবরে, রণ-ক্ষেত্রে যাত্রী ২ও সবে, এ সমৰ মহোৎসবে, সাব্যি স্বয়ং ভগবান, ব্রাভ্য, হও আগুয়ান ॥



## মন্তিলেগো

"দেশের পরে কিসের মাথা ?" স্থায় কেও ? বল্ গে ওরে,— বাধা যে মন দেশের সনে গানের প্রাণের লক্ষ ডোরে।

টানে আমার রক্ত টানে
মুক্ত হাওয়ার মুক্তি পানে,
তুঃখ স্থাথের তীব্র মধুর
মোন স্মৃতি টান্ছে মোরে।
চোখ-জুড়ানো আকাশ পাণার,—
পাহাড দে কাতারে কাতার,—

সাঁভার দিয়ে হুদয় ফেবে
ভারেই থিরে জনম ভ'বে।
এই থানে যে সোনার আলো,
বাইবে থালি আঁধার কালো,
কোই চলে জীবন-ধারা
আপন বেগে আপন জোরে।
কুলের গন্ধ প্রেমের স্মৃতি
সোনার স্বপন পুণা গীতি
স্পিন্ধ ছায়া মায়ের মায়া
দেশের মায়ার মৃত্তি ধরে।
—রাজা নিকোলাস



## ছাপাখানার কথা

আজ হইতে পাঁচ শত বৎসর পূর্বের বালক-বালিকারা আজকালকার মত এমন স্থলর বই দেখিতেও পাইত না। কিন্তু সেই সময়ে পডিবার জন্তুই পাওয়া ঘাইত না, ইফা সম্পূৰ্ণ সত্য নহে। দেই সময়ে অতি সামান্তই পুস্তক পাওয়া যাইত এবং প্রত্যেক বালকের জন্ম পুস্তক-প্রাপ্তি, হংসীর স্বর্ণ-ডিম্ব প্রস্ব করার মত একরূপ অসম্ভব ব্যাপার ছিল। ইহার কারণ এই যে. ঐ সময়ে হাতে বঁহ লেখা হইত এবং কয়েক মাসের পরিশ্রমে একখানি বই লেখা হইত। এই জন্ম সকলের পড়িবার উপযুক্ত বই পাওয়া ক্রিন ব্যাপার ছিল। রাজা-মহারাজ অথবা বছ বছ ধনীর বাড়ীতে ছই চারিখানি বই পাওয়া যাইত। বড বড় অধ্যাপক পণ্ডিতগণের বাড়ীভেও এইরপ হাতের লেখা বহ থাকিত। কিন্তু জনসাধা-রণের বাডীতে পুস্তক পাওয়া একটা আন্চর্যাজনক ব্যাপারট ছিল। ফ্কীরের বোলায় মোহর হয় ত পাওয়া যাইত, গরীবের ঘরে হয় ত মতির মালার সন্ধান মিলিত, কিন্তু জনসাধারণের বাড়ীতে কোনো বট পাওয়া একরূপ অসম্ভব ব্যাপারের মৃত্ই গণ্য इंडेल ।

বন্ধদিন হইতেই পোকের মনে জাগিতেছিল, হাতের লেখা বই কিরকমে অয় সময়ের মধ্যে পিথিয়া লওয়া যাইতে পারে অথবা, অল্প কোনো উপায়ে এই কাজটি অয় পরিশ্রমে ও অয় সময়ে সম্পন্ন করিতে পারা যায়। এজল্প অনেকে অনেক চেষ্টাও করিয়াছিল কিন্তু কোনো চেষ্টাই ফলবতী হয় নাই। কেহ পোড়া মাটার উপর অক্ষর খুদিবার চেষ্টা করিয়াছিল, কেহ বা কাঠের উপর অক্ষর খুদিবা তাহার একটা ছাপ লইয়া কাজ চালাইতে চাহিয়াছিল; কিন্তু প্রথাকাক বাপারেই এজন্ম অনেক অম্বিধা ভোগ

করিতে হইয়াছে। এখন ইহা সপ্রমাণ ইইয়াছে যে, কাঠের উপরে অকর খুদিয়া চাপিবার প্রথা প্রথমে চীনদেশের অধিবাদীরাই আবিদ্ধার করিয়াছিল। অষ্টম শতান্দীর প্রারম্ভেই এই মুদ্রণ প্রথাব আবিদ্ধার ইইয়াছিল। কেচ কেহ বলেন, চীনদেশের বৌদ্ধ ভিক্ষুগণই এইরূপে ছাপিবার প্রথা আবিদ্ধার করেন। কিন্তু অনেকে ইহা স্বীকার করেন না। বাস্তবিক বৌদ্ধ ভিক্ষুগণ কর্তুক এই মহোপকারী প্রথা আবিদ্ধত ইইয়াছিল কি না, তাহার বিশেষ প্রমাণ নাই। কিন্তু ইহা সত্য যে, বৌদ্ধ ভিক্ষুগণ এইরূপে ছাপিবার প্রথা বহুদিন প্রয়ম্ভ গোপন করিয়া রাথিয়াছিলেন। তাঁহারা এক কাঠের টুক্রায় মন্ত্র (Charm), প্রার্থনা ও স্ত্র ছাপিয়া

চীনাভাষায় ছাপার প্রথম নমুনা

নিকাণ প্রাপ্তির অত্যন্ত হণত উপায় আবিকার করিয়াছিলেন। জাপানীদের গাথায় লিখিত আছে যে, ৭৭০ খৃষ্টাব্দে ১০ শক্ষ্মন্ত ছাপা ইইয়াছিল। কাগজের লখা বা চতুকোণ টুক্রায় কালো বা লাল অক্ষরে ছাপা এইরূপ বহু মন্ত্র এখনো পাওয়া যায়। ইহার একখানি লগুনের বাছ্যরে রক্ষিত আছে। এই মন্ত্রে চীনা ভাষার প্রায় একশত অক্ষর ছাপা আছে। এখানে এইরূপে ছাপা এক মন্ত্রের প্রতিলিপি দেওয়া হইল। এই মন্ত্র

#### ভাপাখানার কথা

পাওয়া গিয়াছিল। এখন তাহা লণ্ডনেব যাহ্যরে বহিয়াছে।

ভূকিস্তানের একটি নৌদ্ধ-গুহায় কাইফলকে 
চালা ১৬ ফিট লম্ব! এইদ্ধল একটা কাগজেব 
বাজিল একটা চোক্ষার মধ্যে চীনা ভাষায় হীবকশ্ব পাওয়া গিষাছে। ইচা ৮৬৮ স্বষ্টাকে ঢাপা 
হইয়াছিল এবং ইহার উপরে বৃদ্ধনেরের ছবিও 
চালা খাড়ে।

কৈন্ধ টাট নামক এক চীনা-সদাৰ মুদ্দক্ৰাৰ বহন্ত সক্ষমধাৰ বেশৰ গোচনী ভূত কৰেন। ই'হাৰ জীবিতকালেই চীনেৰ গাপা সকল প্ৰথমতঃ কাঠেৰ ছীচে ছাপে হইতে আৰক্ত হয়। অৱ সমযেৰ মধ্যেই এইকলে ছাপিবাৰ কৌশলেৰ বহল প্ৰচাৰ হইয়া-পিয়াছিল এবং ঐ সময়েৰ মুদ্দি হল্প লগাপা সকলের মুদ্দদ এখনও প্ৰান্ত মুদ্দিশিয়েৰ দৃষ্টিতে অভিস্কলৰ বলিয়া অন্থমিত হয়।

বাঠেব ছাঁচে ছাপাৰ ইছাই প্ৰাথমিক ইডি-হাস। পথাৰ এক দেশ শ্ৰাকীৰ মধাভাৱে চীন-দেশে প্রথম প্রথম অক্ষাবের জন্ত প্রথম প্রথম জাচ তেষাবী কবিষা ভাগিবাৰ কৌশল আবিষ্কত হয়। পথ্য এই সকল ছাচু মাটিব তৈয়ানী কৰা ছষ্ট্ৰত। •াহার পারে বাজের তৈয়ারি হইতে আরম্ভ হয়। বাঠেনও এইনপভাচ প্রস্ত হইত। এইরূপ নতন পাকিষাতেও অনেক বই ছাপা ছইয়াছিল। সেই সময়ে নতুন আবিধাব প্রক্রিয়াব দাব। বাজ চলিলেও পুৰাত্ৰ কাঠেৰ ছাঁচে বছল প্রচলন ছিল। কেন না, চীনের আক্র লাপাপ তা এই কাঠেব ছাচই বিশেষ উপযক্ত ছিল। ইহা একদিকে যেমন স্বল ছিল, অপব দিকে ভাপাও প্ৰিয়াৰ হইছে। ইউৰোপে মদুণশিল্পের ইতিহাস এইরপ:-- ্থেমবা জাম্মেনী দেশেৰ নাম অৰ্জুই শুনিয়াত। কয়েক বৰ্ষ প্ৰেন এই দেশের বাজা কাইস্ব মহাসম্বের আয়োজন কবিয়া সমস্ত সভাজগৎকে ওত্তপ্রাত কবিয়া-ছিলেন। পাচশত বৎসন প্রাক্তা এই দেশে এক শিল্পী বাস করিতেন, ঠাছার নাম ছিল ওটেনবার্গ। এই শিল্পীৰ শিল্পালায় ছোট ছোট মণিমুক্তা, হীবা ও অক্সাক্ত মলাবান জহবৎ কাটাৰ কাজ হইতা হীরা, পালা, মবকত প্রভৃতি বছমূলা রক্ক কাটিয়। স্থলন্দ্রশে গঠন কনিতে এই দিল্লী গুটেনবার্গ বড়ই নিপুণ ছিলেন। বড় বড় আগীব-ওমবাহগণের নিকটে এই নিল্লীব নিল্লটনপুণোর প্রশংস। ইইড়া এই জন্ম ভিনি সাধারণের নিব ই অভিশয় যশস্থী বলিয়া গরিগণিত ইইসাছিলেন।

একদিন ওটেনবার্গ উছোব শিল্পপালাগ বৃদ্ধি।
আছেন, বেলা ছাতীয় প্রচন অতিকান্ত হইমছে।
প্রতিদিনের কাজ প্রায় শেষ হইম। আসিয়াছে;
গুরু প্রিশ্যে ইছোব দেহ-মন রুম্মে ছাইম।
পড়িয়াছে; একটু বিশাম ক্রিয়ারুম্মে দেহ-মন
স্বল ক্রিয়া লইবার ইছোর ইছোর হাহার আহ প্রতিবার
ইচ্ছা হইল। বাজিল প্রবিরা তাম বাহির ক্রিন্
বাব সময় ইছোর নিজেব হাতে এক জোড়া তাম
প্রস্তুত ক্রিবার ইচ্ছা হইবা। এইরূপ ইচ্ছা হইবা
মারে তিনি কাঠের একটি ছোট টুক্রা তুলিয়া



ছাপাথানার প্রথম আবিষ্কাবক ওটেননার্গ

লইয়া তাছার উপবে করেকটা দেখা টানিয়া দিলেন এবং ঐ বেখা বাদ দিয়া বাকি অংশেব কাঠ কাটিয়া কেলিলেন এবং উছাতে কালি লাগাইয়া কাগজেব উপব ব্যাইয়া দিলেন। একটু পবে ঐ কাঠেব টুকবা উঠাইয়া দেখিশেন যে, কাগজেব উপব বেখা-চিঞ্চ পড়িয়াছে বটে, কিন্তু তাছা অতান্ত হাল্কা রকমের হইয়াছে,



শুটেনবার্গের প্রতিঘন্দী লরেন্স জন্মন্ কাউষ্টাব কালি লাগাইয়া দিয়া তাষ্ঠা একথানি কাগজেব উপর বসাইয়া দিলেন। এইবার কালি পাতলা ছিল বলিয়া ছবির বেখা এবং শব্দের অক্ষরগুলি

ছড়াইয়া গিষাছিল। এই কারণে তিনি গাঢ় কালি তৈয়ারি করিবার জনা কাজলের তেল মিলাইয়া ছাপিবার উপযুক্ত নৃতন কালি শ্রস্তুত কবিলেন। এই কালি ছাঁচের উপর লাগাইয়া ছাপার অক্ষরগুলিও পরিকার হইল এবং চিত্রও স্কল্প হইল। এই শ্রেকারে ছাঁচের দারা ছাপায় সময় অতি কম লাগিল এবং এক সময়ে অনেক-গুলি বই ছাপা হওয়ায় মৃদ্রণ-শিলের ইতিহাসে এক নবষগের স্চনা হইল।

এই সময়ে ছালেম নগরেব এক ওলন্দান্ধ বণিকও কাঠেব ছীচে ছাপার কাজ আবস্ত করিয়াছিলেন। ইছাব নাম লবেন্স জন্সন্ কাউষ্টাব ছিল। ডিনি সাবান, মোমনাভি, তেল, বার্নিশ আদি বিক্রয় কবিতেন। ইহা ছাড়া তাহার একটি छो। অভিথিশালাও ছিল। ডাচ দেব ইচ্ছা ছিল হাই।-দের দেশবাসী কাউষ্টাব এই অমুপম শিল্পকলার আবিদ্ধাৰক বলিয়:গৌৰৰ প্ৰাপ্ত হন। স্প্ৰদশ শ হাক্ষীতে এইজনা বিশেষ আনেদাকনেৰ স্ক্ৰপাত হয়। **আ**লোলনেৰ সময়ে ডাচৰা মুদ্গ-শিং**র**ৰ আবিষ্ণত্ত। প্রমাণ করিবার জন। ১৬৩৫ খুষ্টাকে কাউষ্টাবের এক মন্তিও নিম্মাণ করে। কিযু পরিশেষে শুটেনবার্গট এই আবিদ্ধানের গৌৰবে গৌরবালিত হইয়াছেন। কেনন। খটেনলাগ্রই প্রথমে পুথক পুথক অক্ষণ নিক্ষাণ করিয়৷ এবং হাছা মিলিত কবিষ। ছাপিবার প্রণালী উদ্ধাবন কবেন। গুটেনবার্গ ভাঁহাব ছই বন্ধুব সহাযতায কাঠেব পূথক পূথক ছাঁচ তৈয়ারী করিয়া কয়েক মাসের পবিশ্রমে ৬০ প্রচাব একখানি বই ছাপেন। ইছাৰ পৰে তিনি বাইবেল ছাপিবাৰ করেন। একদিন-তিনি যখন একটি কাঠের ছুঁগচ তৈয়ালী করিলেন, তখন হঠাৎ জাহার হইতে ছবিখানি পড়িয়। যাওয়ায় সমস্ত ছাঁচটি খাবাপ হটয়। গেল। এই ঘটনায় তিনি কাঠের পথক পূথক আক্ষর হৈত্যারি করিয়৷ ছাপিবার চেষ্টা করেন, কিছ ছাপিবার সময় কালি লাগিয়। ঐ অব্দব গাবাপ হইয়া যাইতেছে দেখিয়া কাঠের ভাঁচে ভাপার বদলে কোনো পাতুর সাহাযে। ছাশা যাইতে পারে কি না, তাহাই চিস্তা করিতে লাগিলেন। কয়েক বৎসরের চেষ্টা ও পরিশ্রমের পর তিনি বুঝিতে পারিলেন যে, যদি অক্রের পুথক পুথক ছাঁচ নির্ম্মাণ করা যায় এবং সেই ছাঁচে

অক্ষর তৈয়ারী করিয়। ছাপা যায়, তবে ছাপার বিশেষ প্রবিধা হইতে পারে। এক একটি অক্ষর যদি পুথক পুথক তৈয়ারি হয়, তাছ। হইলে কোনো হুবটনা ঘটিলে সামান্ত হুই-চারটি অক্ষরই খাবাপ হইবে। কাজেই, খারাপ অক্ষরগুলি বদলাইয়। দিয়। আবার ছাপা চলিতে পারিবে। ইহাতে একটি অক্ষর অনেকবার কাজে লাগানো ঘাইতে পারিবে। ইছার পব ভাঁছার এক স্হচব ভাঁছার ম হাছ্যায়ী ছাপার কাজ সম্পন্ন করেন।

প্রথমে তিনি কাঠের কয়েকটি লখা টুকরাক মাথায উকা দিয়া ঘধিয়া এক একটি অক্ষর প্রস্তুত করেন এবং তাহা গলিত রাঙে ডুবাইয়া বাগিয়া তাহাব ভাঁচ প্রস্তুত করিয়া লন। ছাঁচ তৈয়ারি হুইবার পর

The pattern vist series of grings of the pattern of grinds of the pattern of grings of the pattern of grinds of the pattern of grinds of the pattern of grinds of the patte

Man lell am bruch der geloho für um berd der Ruchter am oge upf um me e de gove der gere und gewon har geper vor de engel der left am der verelt finde ut der forman der left eine der left und der forman der left eine left ei

কাঠের ছাঁচে ছাপা বইএর এক প্রা

তাহাতে গলিত সীস।
ভরিয়া দিয়া বড় শীঘ ও
সহজে সেইরূপ শত শত
অক্ষর প্রস্তুত করিয়া
লইলেন। ধাতুর অক্ষর
প্রস্তুত করিয়া ছাপিবার

অবিশ্রাম চেষ্টার ও অপূর্দ্য থৈয়ে।ব ফলে গুটেনবার্গ বাইবেলের প্রথম সংস্করণ ছাপা শেষ করেন।

১৪৪০ ও ১৪৫০ খৃষ্টান্দেশ মধ্যে এইজপে এক একটি আলাদা অক্ষণ হৈয়ানী কবিষা ছাপান কৌশল আবিষ্কত হয়। গুটেননার্গ ১১৪৫ খুটান্দে জাঁহার ছাপানানা ষ্টাপনার্গ হইতে মেস্ক (Mainz) নামক স্থানে লইখা যান। সক্ষপ্রথমে মেস্প হইটে পোপ নিকোল। পঞ্চানের এক আজ্ঞাপত ছাপা হয়। এই আজ্ঞাপত ১৪৫৪ খুটান্দে ছাপা ইইয়াছিল। এই আজ্ঞাপত মুদ্দি হইনান পুর্বেই ইচান অনেক প্রতিলিপি ছাতে লেখা ইইয়াছিল। কেননা এই আজ্ঞাপত ১৪৫১ খুটান্দে ভূবদেন মহিত মুদ্দে ক্লাভানের জন্ম দেওয়া ইইয়াছিল এনং গোধা বলিয়াছিলেন যে, বাছাবা এই মুদ্দের জনা সাহায়।

framibs finis. Sich mittis if ad operael erane recebute efter unit luper eosmaledado io athan fili i irropia de. X Off abimelech forcegie duse i elsapel chola filius phua parui abimelech vir de elachar que habitante i fanir mons ephraim: er indicaute elrapel vigine er ends anis: mortuulog eft ac fepulcus in fanir. Apire fuccelle iair galaadices qui iudicauit ifrabel

প্রথম বাইবেল ছাপাব প্র

দান কবিবে ভাষাবা সমস্ত পাপ হইতে মৃক্তি লাভ করিবে।

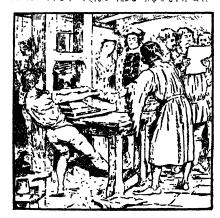
গুটেনবার্গ এই আক্তাপত্র জাঁচাব নেজ্বিত ছাপাগানায় মুজিত কবেন। তিনি অতিশয় উদার প্রকৃতিব লোক ডিলেন। অন্তান্ত আবিদ্ধাবকগণের মত তাঁহার বাবসায় বৃদ্ধি ছিল ন।। এই জনা এই আবিদ্ধাব দার। তাঁহাব তেমন আপিক লাভ হয় নাই। স্থতবাং তিনি বিসম অর্থসন্ধটে পভিষা পরিশেষে মেঞ্জের পাদ্বীব নিকট হইতে পেন্সন্

plan de plantiste de la constante proposition de la constante de la constante

ছাপাখানায় আলাদা আলাদ। অক্সরে ছাপার প্রথম নমুন।

কাজ প্রথমে ষ্টাস্বার্গে হয়। তারণর পাচ বৎসরের । লইতে বাধা হইয়াছিলেন। এই সময়ে অর্থাৎ

১৪৬৫ খুষ্টান্দে জাঁহার ঢাপাখানা হটতে বাইবেল ছা**পা শেব হয়। এই বাইবেল ছাপাব কাজে জন** ফাউষ্ট এবং পিটার শোকাব তাঁহাব সাহায়। করেন। এই বাইবেলের প্রত্যেক প্রতায় ৪২ লাইন আছে। **এইछाना इंशास्त्र ४२ श्रास्त्र नाईएनल ५ नएल।** अञ्चल हाभाव को अल हाल इंग्रेंग माल डेंग्रे বোপে ছভাইম। পড়িমাছিল এবং ৩৫ বংসবের भरभाष्टे देशात निर्माय উन्नानि भारत কিম এই ছাপাব কাজেব প্রথম অবস্থ। হইতে প্রায় ৮০ বৎসব প্রয়ান্ত কার্মের ভারতেই পরুক ভারা इंडेट ७ छिल । इंडार कार्य अहे छिल (य. के भगर्य অক্ষ্ণ প্রস্তুত কবিবার জন্স যে গাতুর বাবহার হইত তাহাকে এখনকাৰ মত শক্ত করিবাৰ উপায় লোকে জানিতন।। এই জন্য অক্ষরগুলি শীঘুই ঘ্রিয়া যাইত এবং বড় বড় অঞ্চরে এখন। এইকপ অঞ্চরে কোনে। বইয়ের একারিক সংস্করণ ভাপ। অসম্ভব ১ইত। যদি কোনো বইগের চাছিদ। অধিক ছইত তাহা হটলে পুনরায় অক্ষণ তৈয়ারি করিয়া ছাপিতে হইত। ইহাতে গ্রচও পড়িত বেশী এবং



ক্যাক্টনেৰ ছাপাখানা

গণ্যও লাগিত অনেক। কাঠেন ভাঁচে অক্ষর কাটা কঠিন বাজ হটলেও এবং ইছাতে সময় বেলী লাগিলেও ইছাতে এক স্থানিধা ছিল যে, একবার ছাঁচ তৈয়াবি হটলে ভাছাতে অনেক বাব ছাপার কাক্ষ চলিত।

সক্ষপ্রথম উইলিয়ন কাক্সটন (William Caxton) ইংলওে এই মুদ্রণ-শিলের প্রচাব করেন।

ক্যাক্সটন ল্ডনের এক বাবসায়ীর দোকানে কাজ করিতেন। ১৪৪১ খুষ্টাব্দে তিনি বেলজিয়মেব ত্রাসেল্স নগরে গিয়া বাস করেন এবং সেখানকার লোল্যাণ্ড ( Lowland ) কাউন্সিলের গভর্ণরের যখন তিনি গুটেনবার্গের পদে নিযক্ত হন। আবিদ্ধত মুৰ্ণ-কলাৰ তথা অবগত ছইলেন, তখন তিনি কোলন নগবে অবস্থান করিতেছিলেন। रम्थारन िश्न **এই मुक्त** नक्ना निका करवन अवर পূবে তথা হঠতে আসিয়া রাসেল্স নগরে আপনাব এক মুদ্রাযন্ত্র স্থাপন করিয়া সেখানে ১৪৭৪ পৃষ্টাব্দে টায়েব ইতিহাস মদিত কবেন। ১৪৭৬ খুটাকে তিনি আপুনার দেশে ফিবিয়া আসেন এবং ঐ বংসবেট ওয়েইমিন্টাবে আপনাব ছাপাথান প্রতিষ্ঠিত করেন। ট্রয়েব ইতিহাস ইংবাজী ভাগাব প্রথম মাদিত প্রত্তক।

ইংলণ্ডে আসিয়া ক্যাক্সটন ১৪৭৭ খুষ্টাধ্বের ১৮ই
মাজ আল বিভাসের ছারা ফ্রামী ভাষা হইতে
অনুদিত Dictes অথবা 'বৃদ্ধিমানের বচন' ইংবাজী
ভাষায় প্রকাশ করেন। ইহার পর তিনি মৃত্রঞ্চ থেলা ( Game & Play of Chess ) প্রকাশিত করেন। এখন পর্যাস্ত ক্যাক্সটন মৃত্যগুলি বহঁ

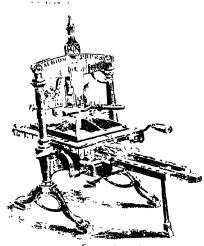


প্রথম সভবঞ্চ খেলার ঘর

প্রকাশিত করিয়াছিলেন, তাহাতে ছবি দেওয়া ছিল না। ১৪৮১ খুষ্টান্দে তিনি কাঠের ভক্তাব উপব ছবি খুদিয়া তাহা আপনাব পুস্তকে ভাপিতে আরম্ভ করেন।

এই প্রকাবে মুদ্রণ-শিল্পের আবিকার হইলে
নূতন নূতন স্থান্দর এক্ষর ঢালাই সম্বন্ধেও উরতি
হইতে লাগিল। ইংলণ্ডে অস্ট্রান্দ শতাব্দীতে
উইলিয়ম ক্যাস্থান্ধ জন বেম্বর উইল নামক

তইজন প্রসিদ্ধ অক্র-শিল্পী জন্মগ্রহণ কাসলন যে সকল অক্ষর প্রস্তুত কবেন, তাহা সকলেব আদরণীয় হইয়াছিল। তাঁহার নিৰ্মিত অব্ব ডচ অব্দরের অমুরূপ হইলেও তাহা অপেকা স্তব্দর চিল। তাঁখাব নিশ্মিত অক্ষরে মুদ্রিত পুস্তক দেখিয়াই লোকে উৎফুল হইয়া উঠিত। কেননা, সেই অকর ইংবাজ লেখকগণের মধে। যাছাদেব হাতেব লেখা স্থানৰ হুইত, জাঁহাদেব একবেৰ মত স্তদ্প ছিল। বেশ্বর উইল যে অক্ষর নিশ্বাণ कतिशां कितन ।।। एमछ इछेत्नात् म्याप्तक চইয়াছিল। কেননা, ঐ অক্ষর ঐ সমূদে স্কল অক্সর ১ইতে প্রকাশ বোমান অক্সেপ ছিল। ১৮৮১ अक्षेट्रक উर्वे लियग मित्र (William Marris) আন্তেলডে ব নিকট টেম্ম নদীৰ তীৰে কামিসকোট মাানাব হাউম (Kelmscott Manor House) নামক স্থানে ইভিাব মুদ্রায়ন্ত্র স্থাগন কৰেন এবং নুখন নুখন বক্ষােন চাবি প্ৰকাৰ অক্ষর কৈয়ার করেন। এইকাপে নতন নতন



অক্ষর নিক্সিত হট্যা এই মুদ্ধকলার বিশেষরপে

্এলবিষ্ণ হা ও েপ্রস্

ইচাব প্রে বার্পায় মুগের আবস্ত হয়। কিন্তু ইচাতে অক্ষরের কোনো বিশেষ উৎক্ষ সাধিত চয় নাই। ওটেনবার্গের সময়ে মেকপ ছাপার কল নিন্দিত চহত, প্রায় সেই প্রকাব চন্ত-চালিত ছাপান বানা অজে প্রয়ন্তিও প্রচলিত ছিল। অস্তাদিশ শতাব্দীব শেষভাগে চাল্প ষ্টান্ছোপ লোছনিমিত ছাপাৰ কল প্ৰস্তুত কৰিলেন। এই নমুনার এলবিয়ন প্ৰেম' আন্তুত্ত ব্যৱহৃতি ছে; ইছাই আন্তুকালকার অতি স্থান্দৰ হস্তালিত ছাপাৰ কল বলিয়া প্ৰাপদ।

১৭৮० श्रष्टीतम निकलम् भारत्व नाष्ट्रित শক্তিতে ছাপাখান। চালাইবাব সম্বল্প করেন। কিন্তু তিনি আপনাৰ মনোমত কল প্ৰস্থত কৰিছে পাৰেন নাই। কিছদিন প্ৰে ফেড বিক কুনিণ নামক এক ভাষাণশিল্পী তুইটি নতন মেশিন প্রস্কুত কবেন এবং ১৮১৪ খণ্টাব্দে বাপোব শক্তিতে চালিত, ইংলণ্ডের শ্রেষ্ঠ সংবাদপ্র "টাইম্ম" ছাপাথানার এই তুইটি মেশিল সংস্থাপিত কৰেন। এই মেশিনে ঘণ্টায ১১০০ খানা কাগজ ছাপা চটতে লাগিল। প্রথমে ক্লিপেৰ মেশিনে কাগজেৰ এক প্ৰহি ভাপা ১৯৩, ক্ষিত্রহার পরে যুদ্ধ-শিয়ে আবে। আনেক নতন নতন আবিষ্কাৰ ছইয়াছে এবং যথ-শিলেও অনেক উলতি হঠমাছে। ব্রম্ভ সম্যে স্থান্থ লেখাপ্ডা জানা লোকেও এই ছাপাখানাৰ গ্ৰন্থ জ্ঞানলাত কবিতে পাবিতেছে ৷ কলতঃ ছাপাখানাৰ প্ৰসাদে জগতে জ্ঞানবিস্তাবের পঞ্চে যথা স্থর উপস্থিত হইয়াছে ধলা যাইতে পাৰে। প্ৰত্যেক সহকে এখন ছাপা-थोन। ८५४। १। हे८७८७ । ८० थारन नामाञ्चलात মংবাদ-প্র, প্রকাদিও মাদ্র ১ইয়া জনস্থাব্রেব জ্ঞানবিস্থানের পক্ষে অত্যার স্থান হট্যাছে।



বৈত্যতিক শক্তিতে প্রিচালিত খাধানক মুদারত্ত্ব বৈত্যতিক শক্তিব আদিশারে ইঙাব অভূতপূধ্য পরিবন্ধন ইউগাছে। আজকাল বৈত্যতিক শক্তিত প্রিচালিত ভাপার বছ বছ মেশিনের দ্বাবা কয়েক পটার মধ্যে ক্ষেক লক্ষ্পুস্তক মুদ্দিত ইইয়া জ্ঞান-বিস্তার বিধ্যে অপূক্ষ স্তুয়োগ ও অভিন্ন পদ্ধ। আনিয়া দিয়াছে।



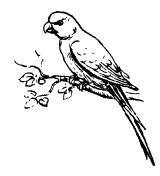
# পাখীর ছড়া



টুনটুনি জাল বুনি পাতা-চাকা আডালে বংগ থাকে; উডে যায হাত্যানি বাডালে।



বূল-বূল ঝুঁটি নাচেড আডে আডে চাম, লেঞ্চ নেডে শিস্ দিযে কি যে গান গাম গ



ঠোট লাল টিয়া পাখী ফাকি দেয কাকে গ ঘাত নেডে ডাক ছেডে ফেটে পড়ে জাঁকে।



कांक ला तर्छ व्लाप बालत (ठारभर भरत प्लारल ; मझ ना कथा भयना कारता— वायना प्ल दत दवारल !

# পাথীর ছড়া



জ্ঞান বদে নক মাম)
দেজ ঠাং জুলে
২ঠাথোগে ধৰে মাছ
এক চোলা খালে।



দিনকানা পাচচ দেখ কোটবেতে বঙ্গে, চাকা মুখে বাকা সোঁঠে কাব মন ভোৱে ৮



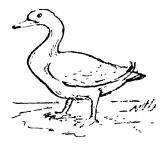
জপবের শৃষ্ আকে বাস আম গাছে, বিম্বাহে বাদ তাব ভাবি দ্বিশারে



চিল সে তো দিল্ খুলে আকাশেতে ওড়ে, চোথ তবু মাটিপানে ভাগাড়েতে ধোরে।

চুক চাক ভাক ভাজে ভাতারে সে খেড়ে থাকিতে সে পারেনাক' সোবগোল ভেডে।

# শ্ভি-ভারতী



জীয় চলে দলে দলে সেগ্ৰে চলে মাজ: দিন শোষে দিছে যাগ দেশ কাৰ গালা: শ



বুট কথা কও'' দাকে পাণী ব্য না দেন সাভা, মই ডাক চাডে তত লাজে যে হ'ন সাবা!



কুত ভাকে কোকিলেব ভাবে যাস মঠি, বছ চলে জল নিং সোক সক্রায়ের



জভাক বিভাগ কৰে। উ<sup>\*</sup>চুমালিৰ সং ভুট্ফটে ভাৰ শৰ: গান গায় ক'মেটে



বিভিন্ন কোলেপ্র আন্ড্ ভয়ে ভয়ে কেবে, জাল ফেলে পাচে কেই ফেলে কান্দ্র পেড়ে!



ইক্ ঠাক্ কাঠ ঠোকে কাঠ-ঠোকা পাখী কবে গে আপন কাজ গেছে গুছে থাকি!

# পাখীর ছড়া



কাকাত্যা দাড়ে বংগ গালে হাত দিয়ে, চোখ মুদে ভাবে বংগ "থাকি কিবা নিযে"



মাছবাজা রতে সেজে জল ছুঁরে ওড়ে, কাপ দেখে মাচ যদি কাতে ভার ঘোবে!



िकन् कित्न कारता नरड सिन् सिना तनरह, किरड हरता कन्नीरङ बारन बारन स्थरह " সবুজ পোনাস ভানা মেলে
নমা দিনে ভিজে ভিজে
মুখুব নাচে অবহেল চেট ভূলিয়ে প্রাণে কি যে।







ফাল্প প্রণিয়া। চল্পকে বাছ ফম্পুর্ণ গ্রাস কবিষাতে। পুর্ণিয়ার সন্ধ্যা ঠিক অমাবস্থারি মত



মধুব শুনাইল। নদীয়ার পূর্ব, পশ্চিম, উত্তর, দক্ষিণ সমস্ত দিক নীতে সেই স্থাব উথিত চইয়।

গেল। এই ছবিবোল শক বছ

দেখাইতেছে। খোর কালো বঙ্গে সমস্ত জগৎ যেন নাকিষা ফেলিয়াছে। নদীয়ার দক্ষিণে গঙ্গার উপর সেই কালো ছায়; পডিয়াছে। হাজার হাজার লোকের ভিড়। সকলেই ছুটিতেছে গঙ্গার দিকে; চন্দ্রগ্রহণের পর গঙ্গামান কবিলে পাপ-ছাপ দূরে যায়--শত ব্রাহ্মণ ভোজনে, ভূমি দানে যে পুণা না ১য, চক্দ্রগ্রহণের পর গঙ্গামানের সেই শুভ ফল।

नियाद छेलात खाँधात, ठाविमाद खाँधात, গঙ্গাব দেউয়েও আঁধাব—স্ক্রাসী স্ক্নাশী আঁথেব। এই সময়ে সহসাশত শভ শভাবাজিয়া উঠিল। হঠাৎ একদিক হইতে পূৰ্ণচন্ত্ৰেৰ সোনার জ্যোতিঃ স্থাটিয়া উঠিল—যেন কেছ পাতিলা এক-খানি সোনাৰ পাত দিয়া আকাশ মডিয়া ফেলিল। সেই আলে। স্বর্গে মর্তে গঙ্গাজনে দোনার জুই কুলেব নত যেন দেবকলাব। মুঠা মুঠা ছভাইয়া দিলেন। চাবিদিকে শঙ্খাব্যনিতে যে বিপুল শব্ধ ছইল, ভাষ। থাকাশ-পাতাল পুর্ণ করিয়া দিঙাওল কাপাইয়া ভুলিল। দেখিতে দেখিতে চন্দ্র স্বপ্রকাশ হইলেন। কোন বিধাত। তিমির খাববণ ভেদ করিয়া এমন স্থলণ সোনাব গোলক আকালের পুর্বাদিকটায় মেযেদের কপালের সিন্দূবের টিপের ন্তায় প্রাইয়। দিলেন। যখন চক্রদের মুক্ত হইলেন, তখন চাবিদিকে হরিবেগল শব্দে জগৎ পূর্ণ হইয়। বাপিয়। শাবে পাবে সেই স্থব উপিত হইয়। নাবদেব বীণাব মহ, শিবেৰ ভ্যকৰ মহ, বিশ্ববাধী। সকলকে স্তৰ্ভ হয় কৰিল।

চক্র আকাশে মৃক্ত হওয়াব সঙ্গে সংক্র জগরাথ
মিশোব বাটাতে শীখ বাজিয়া উঠিল। সেই
হবিবোল শক্র শুনতে শুনতে, দেই শীবেল শক্রেব
শুওলাই, শুওকাণে নদীযাতে রাক্ষণকুলে একটি
দেবলিও জন্ম লইলেন। তাঁহাকে নদীযাযাসীবা
আদ্ব কবিয়া কত নাম দিয়াডেন,—সে আদ্বেব
অন্ত নাই,—সে নামেব অক্রবন্ত তালিক। ইইতে
কয়াট বলিব। কেহ্ নাম বাথিলেন নদেবটাদ,
কেহ্ বলিলেন গোবাচাদ, কেহ্ বলিলেন নিমাইটাদ,
আবাব কেহ্ বাথিলেন গোবাক্সটাদ। টাদের
ভড়াছডি। তাঁহার জন্মে নদীয়া সার্থক হইল,
এই জন্ত প্রবাসীবা। নিজেব নাম রাথিলেন
'নদেবাসী'—নগ্রবাসী।

১৪০৭ শকে ১২ই দাস্ত্রন রাত্তিতে চক্তর্থাইণের সময় চৈ গ্রেল জ্ম হয়। বাঙ্গালা দেশে কোটি লোক জ্মিতেছে, মবিতেছে, কিন্তু এই প্রাক্ষণবালকের মত এপর্যান্ত একটি ছেলেও এদেশে জ্যুনেন নাই। লঙ্গ ক্ষাত্র বিশ্বাস, এই বালক শ্বয়ং ভগবান। কেন একটি দরিদ্র প্রাক্ষণবালককে শত শত লোক ভগবান বলিয়া মানিয়া লইল ? তাঁচার কি ক্ষাতা ছিল যে উডিয়ার

#### CEEDICK?

মহাসমাট প্রভাপক্ত উভার পা ছ ইবার লোভে দান-হীন বেশে উপন্ধিত —দেই সময়ের সকলের চাইতে পণ্ডিত বাস্থদেব শার্কভৌম, ভারতী গোঁদাই প্রভৃতি জ্বগদগুরু তাঁহার নিকট শিষ্যের স্থায় করজোড়ে স্তব পাঠ করিতেন ? কি গুণে জগাই-মাধাই এর মত চর্দ্ত পাर७, ভীলপছ নরোজীর স্থায় দহা, বারমুখী ও ইন্দিরা দেবীর ভায় চন্টা স্ত্রীলোক এই ব্রাহ্মণ ছেলেটির পদধলি মাথায় লইয়াপবিলে হইয়াগিয়াছিল। এত হড সৌভাগ্য বাঙ্গলাদেশের যে, বাঙ্গলার আজিনায় স্বঃং ভগৰান কিংবা তাঁহারই প্রতিনিধি একজন আসিয়া আমাদিগের মাধায় অসীম গৌরবের কিরীট পরাইয়া গিয়াছেন। আমাদের দেশের উত্তরে হিমালয়ের অনপ্ত মহিমা, দক্ষিণে বঙ্গোপদাগরের বিরাট নীলিমা, किन्द्र भाषात्मत्र मर्व्यारणका वर्ष शोद्रत्वत्र रिश्वर ८ हे (य. নদেরটাদের বেশে ভিনি এদেশে আসিয়া আমাদের পল্লীতে পল্লাতে, হাটে-মাঠে-বাটে, দীন্থীনের মধ্যে দীনহীন বেশে, কাঙ্গালের ঠাকুর কাঙ্গালের বেশে বেড়াইয়াছিলেন,---আমাদের পুরুপুরুষদের কর্ণে অমৃতের মত হরিনাম বিতরণ করিয়াছিলেন। তাঁচার কি বড বড কামান অস্ত্ৰশস্ত্ৰ, জলবান, ব্যোম্বান ছিল? किছू नय, किছू नया जाहात कि मधु इस झाना हिल, যাহাতে লোকে মুহ্তে তাঁহার বশীভূত হইত? কিছু নয়, কিছু নয়। তবে তিনি জগৎ বশ করিলেন কিরপে গ তাঁহার মধের কথার লোভে, রূপ-সনাতনের মত সমাটের প্রধান মন্ত্রীরা পথের ধলা গায়ে মাহিয়া স্ক্রি ছাডিয়া কাঙ্গাল চইয়াছেন কেন? কল্সীর কাণা মারিয়া দস্তারা কাঁদিতে কাঁদিতে ভূমিতে লটাইয়া পড়িয়া অফুতাপে কাঁদিয়া ভাসাইয়াছে কেন্ প্ৰয়ং কাজী দারুণ রোষের অর্দ্ধব্যক্ত ক্রকটি থামাইয়া ফৌজ विषाय कविश निटक निकार जानिश जानत जानिकन जिक्का कतिया किलान तकन १ कि खाल कि रान অম্বটন ঘটাইয়া এই দ্রিজ রাধ্বণ-কুমার এই সক্প অসাধ্য সাধন করিয়াছিলেন। তাঁহার দেগছিল ক্ষীণ, তাহার মূর্দ্র ছিল নারীজন-কোমল--না খাইয়া তিনি অন্তি-শাসার হইয়াছিলেন, তাঁচার হাতে অন্ত্রণার কিছুই ছিল না, তব কি গুণে তিনি কগৎ বশ করিয়াছিলেন দে কেবল ছটি অকরের বলে। সে ছটি অকরের কথা मकलाई ভानक्रां कार्य---

> "গর্কাশাস্ত্রবীজ হরি-নাম ছি-জক্ষর। আদি অন্তুনাহি যার বেদে অগোচর॥"

হৈতভাদেব ভাঁহার প্রকৃত নাম নয়। ভাঁহার প্রকৃত নাম বিশ্বস্তর। ই হার পিড়কুলের উপাধি ছিল মিশ্র। কগরাথ মিশ্রের পিতামহ মধকর মিশ্র উডিয়ার বালার অভ্যানারে যাঞ্পর হটতে একেবারে দীর্ঘ প্রস্থান করিয়া জীহটের অন্তর্গত ঢাকা দক্ষিণ নামক গ্রামে আসিয়া বাস করেন। মধকর মিলের প্রছয়ের নাম উপেক্ত ও জগরাথ মিশ্র। এই জগরাণ মিশ্রই হৈতজ্ঞদেবের পিতা। জগরাধ মিশ্র তাঁহার পাঠ সমাপ্ত করিবার জন্ম নবন্ধীপে আসিয়াছিলেন। চৈতক্সদেবের পি ভামহ মধু কর মিশ্রের সহিত নীলাম্বর চক্রবর্তী নামক আবে একটি বিশিষ্ট বোহ্মণ ও আসিয়াছিলেন। এই নীলাম্বরের ক্সা শ্রীদেবীকে জগরাথ মিশ্র বিবাহ করেন এবং নবদীপেই ঘর-বাড়ী করিয়া বাদ করেন। গঙ্গার উপকলে নদীয়ার দক্ষিণ প্রান্তে জগরাথ মিশ্রের পাঁচখানি স্বন্ধর খোডো ঘর ছিল। এই স্থানে भंडीरमवे व कार्डेडि क्ला कत्या। खाइादा मकरलेडे অপোগগু অবস্থায় মৃত্যমুখে পতিত হয়। চৈতক্তদেবের একটি বড ভাই ছিল। তাঁহার নাম বিষরপ। বিশ্বরূপ ছিলেন পিতাম তার স্নেহের চুলাল। দেখিতেও ছিলেন যেমন সুত্রী, তেমনি ছিলেন বৃদ্ধিমান ও মেধাবী। অধায়নের দিকে তাঁহার খুব অফুরাগ ছিল। তিনি একবার যাহা পড়িতেন ভাষাই তাঁহার কণ্ঠস্থ ইইয়া যাইত। এই বালক শান্তিপুরের অবৈভাচার্য্যের নিকট বেদাস্তাদি পাঠ করিয়া খোল ২ৎসর ব্যুসেই খুব বিচক্ষণতা দেখাইয়াছিখেন। এই সময়ে তাঁথার বিবাহের কথা ঠিক হইয়া গেল। এদিকে যথন শুভ ব্যাপারের বাছভাগু বাজিতেছিল, তথন যোল বংসর বয়স্থ वानक विश्वक्रभ भगावेश र का भाव इदेश (श्रात्म । ভদব্ধি কেচ ভাঁচার সন্ধান পাইলেন এইরপ শোনা গায়--তিনি সল্লাস গ্রহণ করিয়া 'শঙ্করাণাপুরী' উপাধি লইয়া তপ্সার জ্ঞা বনবাণী इडेशाहित्यम् ।

বিশ্বরূপের অন্তর্ভানের পর ভগরাথ মিশ্র পঞ্ বৎসরের শিশু বিশ্বস্তরের পড়াশুনা বন্ধ করিয়া দিলেন। পাছে লেখা পড়া শিখিয়া এই প্রএটিও ঘরবাড়ী ছাড়িয়া সরাাদী চইয়া যায়। কিন্তু লেখাপড়া ছাড়িয়া পাঁচ-বৎসরের শিশু একটি দঃ তে পরিপত ছইল, কাহারো কলাবাগানে পাকাকলা চুরি করা, গঙ্গানান করিতে যে সমস্ত বার্ধান যাইডেন তাঁহানের চাদর ও কাপড় জলে ভিজাইয়া লুকাইয়া রাখা, কোন কোন ব্যক্ষণ চোধ বৃদ্ধিয়া ধ্যান-ধারণা করিবার সময় তাঁহাদের শিবলিক চুরি করিয়। লওয়া, গঞ্চালানার্থিনী বালিকাদের এলোচুলে ওক্ডার বীচি নিক্ষেপ করা এবং কোন্ কোন্টিকে 'বিবাহ কবিব' এই ভয় দেখানো—ইত্যাদিরপ তৎক্রং নানা অভ্যাচার পাড়াপড়শীদেব অসহ হইয়া উঠিল। • •

নিনাই পাঠ করেন ও অতি অল বয়সে সর্বাশান্ত্র পণ্ডিত বলিয়া নবন্ধীপের স্থাসমাজে পরিচিত হন। বাস্থাদেব দত্ত নামক এক অর্থানালী ব্যক্তির বাটাতে সতের বৎসর বয়সে তিনি টোল স্থাপনকবেন। এই টোলে তিনি ব্যাক্ষরণের একথানি

টিপ্লনী প্রক্ষত করেন। এই টিপ্লনীথানির নাম 'বিভাসাগর টিপ্লনী'। ইহা সেই সময়ে বঙ্গদেশের সমস্ত টোলের ছাত্রেব। পড়িত। পাঠনেবে বিশ্বস্তব্যের উপাধি হইয়াছিল---'ৰিস্থাসাগর', ভিনি আব একটি উপাধিও পাইয়াছিলেন কিশ্ব কাশ্মীরী নামক এক অদ্বিতীয় পণ্ডিত নবদীপে আগমন প্রক্রক 'ঘদং দেছিং' বলিয়া তথাকার পণ্ডিত মণ্ডলীকে তর্কদ্দে আহ্বান কবেন। চৈত্রসদেব ভর্কযদ্ধে বড় বড় পঞ্জিতদিগকে হারাইয়া দিতেন: সূত্ৰাং অধ্যাপকেরা কেশ্ব কাশ্মীবীকে ইহাবই নিৰুট পাঠाইয়। দিলেন পণ্ডিত অজাতশাশ বালকের

পণ্ডিত অজ্ঞাতশ্মশ্য বালকের
নিকট পবাভূত হুইয়। প্লায়ন
করিলেন। নবদ্বীপেন সমস্ত
পণ্ডিত সেই দিনে একএ হুইয়া
চৈতন্তদেবের উপাধি দিলেন
—'বাদীসিংহ'। স্কৃতরাং
চৈতন্তদেবের গৃহস্বাশ্রমের পূর।
নাম—শ্রীবিশ্বস্তব মিশ্র, বিস্থাসাগর, বাদীসিংহ। বঙ্গদেশের
প্রাণের গোরার এই নামটি
কিছু অদ্বৃত শুনায় না কি ?

এই সময়ে চৈতজ্ঞদেবের পিতার মৃত্যু হয়। তৎপুর্বের চৈতজ্ঞ লক্ষীদেবীকে বিবাছ কৈরিয়াছিলেন। পিতার মৃত্যুর পর চৈতজ্ঞদেব পূর্ববক্ষে গিগ্না-

ছিলেন। সেই সময় লক্ষীদেবী সর্পদংশনে প্রাণ-ত্যাগ করেন। লক্ষীদেবীর মৃত্যুতে তিনি যে আঘাত পাইলেন, তাহাতে তাঁহার সমস্ত চরিত্র



বিশ্বস্তর রাশ্ধণের পূজার স্থল লইয়া পলাইতেছেন

প্রতিবেশীদের অন্তুরোধ উপবোধে বাধ্য হইয়া জগরাধ মিশ্র পুত্রকে টোলে পাঠাইলেন। বিষ্ণুদাস অ্বদর্শন ও গঙ্গাদাস এই তিন পণ্ডিতের টোলে



শ্রীটেডক্সদেবের গৃহত্যাগ

ও মনের ভাব বদলাইয়া গেল। দেই ছাস্তপ্রিছাস নিরত **চঞ্চল ও** উৎসাহী যুবকেন চিত্তে একটা অকালগান্তীৰ্য্য দেখা দিল। তিনি মাতার নিকট বিদায় লইয়া পিত্রপিও প্রদান করিবার জন্ম গ্রায় গমন করিলেন। পথে ঈশ্বরপুরীর সঙ্গে মিলন হইল। ইতিপুর্বে চৈতনাদেব ধর্মেব কথা ঠাট্ট। করিয়া উডাইয়া দিতেন এবং তাহ। লইয়া প্রিয় বয়স্থ গদাধরকে কতই নাবিদ্রপ করিতেন। ঈশ্বরপ্রীব গভীব ভক্তিমূলক শ্লোকগুলি হইতে বাকরণের ভুল বাহির কবিতেন। কিন্তু এবার ঈশ্বপুরীকে দেখিয়া তাঁহার চক্ষ হইতে ঘন ঘন অক পড়িতে লাগিল। বদ্ধ বৈষ্ণবের পায়ে পড়িয়া তিনি কোমলপ্রাণা নারীর নাায় কাদিতে লাগিলেন এবং যখন কুমাবছট্ট ভাগি কবিয়া চলিলেন, তখন **ঈশ্বপু**রীব **জন্মস্থানে**ব মাটি কোচায় বাধিয়া লইলেন এবং বলিলেন—'এই মাটি আমাৰ নিকট স্বৰ্গ হইতে পবিত্র এবং প্রাণ ১ইতে প্রিয়।'--বলিতে বলিতে তাহার চকু হইতে অজম বাবিবিন্দু পতিত **২ই**তে লাগিল এবং তিনি ধাানীব মত উদাসভাবে আকাৰের দিকে চাছিয়া দাঁডাইয়া রহিলেন।

ইছার প্র গ্যায় বিষ্ণুপাদপ্রদর্শন। সে এক অপুর্ব্ব কথা। চাবিদিক ২ইতে শত শত পুষ্পমাল্য পাদপদ্মের উপর পড়িতেতে। কত পট্টবন্ধ, কভ অলকাৰ যাতীৰা সেই পাদপৰে निट्र प কবিতেছে। পাণ্ডাবা মন্ত্র পডিয়া বলিতেছে---'এই পানপুষ্ম ছইতে গঙ্গা আসিয়াছেন। ইহা দাবা বলিবাজাব দুপ চুণ্ হুইয়াছে—এই পাদপুর ভাঁহাব মস্তক শোভা করিয়াছে। যোগীঋশিবা এই পাদ-পদ্মের আভাস পাইয়া কতার্থাইন। ছে বিশ্ব-বাসী, পভোমাদের ছঃগের সাম্বনা আব কোথাও নাই--- শুধু এইপানে। দর্শন কব, ভব-বন্ধন মোচন ছইয়া যাইবে'। এই স্তব পাঠ শুনিতে শুনিতে লছনে লছরে চৈতনের অঞ কপোলে গড়াইয়া পড়িতে লাগিল। পাণপামে নিবেদিত শত শত স্কুলমালা হইতেও সেই অশুর মালা প্রিত্র পাণ্ডারা দেখিল, এক দেবতুলা আক্রতি প্রম-স্কুদর্শন যুবক কাদিতে কাদিতে সেই পাদপ্রের উপর অঞ্চান হইয়া পডিয়াছেন। ভদবন্ধায় সঙ্গীরা ভাঁছাকে ধরিয়া বাসাবাড়ীতে লইয়া আসিল চৈত্র হওয়াব পরে তিনি বলিলেন—'তোমবা ফিবিয়া যাও. আমি আমার প্রাণনাথকে দেখিয়াটি। আমি বুন্দাবন চলিলাম। আমি আর ঘরে ফিরিব না। বছ চেষ্টায় তাঁহারা তাঁহাকে বাডীতে ফিরাইয়া

লইয়া আসিলেন। তখন শচীদেবী তাঁহার প্রিয় পুত্রকে যেরূপ দেখিলেন, তাহাতে তাঁহাব মুখ শুকাইয়া গেল। সেই আমলকী দ্বাবা পরিষ্কৃত অনীর্ঘ কেশবান্ধী কোপায় গিয়াছে-তাহা জটায় পরিণত। গলা হইতে হরিনামেব মালা চি ডিয়া গিয়াছে। অতি স্থদৰ্শন ক্লম্ভকেলি ধৃতিতে দে কোঁচা নাই---ছিল্লভিল হইয়া ভাষা কোমবে জভানো। সন্ধাঞ্জিক তিনি ছাডিয়া দিয়াছেন। বাড়ীতে শালগ্রাম পঞ্চা পান না—ভাছাতে জ্রাইপ নাই। দিবারাত 'কৃষ্ণ' 'কৃষ্ণ' বলিয়। কাদিতেছেন: ঘবের এককোণায় বসিয়া আবেগভরে চক্ষর জল ফেলিতেছেন। শহ ডাকেও উত্তব নাই। কখনও কখনও আকাশের দিকে চাছিয়া—'কে এল'. 'কে এল' বলিয়া ছু'ছাত প্রসারণপ্রর্কক পাগলেব नाग काॅमिटल्ड न जर लिय रक् गमांश्टर गना জভাইয়া ধরিয়া বলিতেছেন—আমি দেখিয়াছি। কি দেখিয়াছি শুনিবে ? গদাধৰ সাগ্ৰছে শুনিতে চাহিত। কিন্তু চৈতল্ভেব আর নাকক্ষুত্তি হইত ম। কাদিতে কাদিতে গদাধবের কোলে অজ্ঞান **ছট্যা পড়িতেন। সকলে বলিল—'শচী, ভোমাব** ছেলে পাগল হইয়াছে।' একটিমাত্র ছেলে— স্বামিপুত্রহীনার চুদ্দা দেখিয়া লোকে অভান্ত কষ্ট বোধ করিত। এদিকে ইছার পর্বেই দেবী চৈতনোর ইচ্ছার বিরুদ্ধে ঔাহার আবে এক বিবাছ দিয়াছিলেন। সেই স্ত্রীর নাম বিফাপ্রায়। বিষ্ণপ্রিয়াকে দেখিলে হয়ত ছেলেব মতিগতি ফিবিতে পারে, এইজনা শচীদেবী তাঁহাকে পুলেব পাৰে বসাইয়া বাখিতেন।

"---আনিয়া প্রভুর নিকটে বসায়।
দৃষ্টিপাত করিয়াও প্রভু নাছি চায়।
কোথা রুফ কোথা রুফ বলে অফুক্রণ।
দিবানিশি প্লোক পড়ি করয়ে ক্রুন্সন।"

সকলেই যথন ঠিক করিল যে, চৈতন।দেশ
পাগল হইয়াছেন। তথন শচীদেবী উপায়ান্তর না
পাইয়া কবিরাজ ডাকিলেন। কবিরাজ আসিয়া
শিবাদি ত্বত বাবস্থা কবিয়া দিয়া গেলেন। শচী
শ্রীবাসকে ডাকিয়া পাঠাইলেন। ইনি প্রবীণ ও
নবন্ধীপের মধ্যে অতি বিশিষ্ট বাজিন। চৈতনা
ঘবের কোণে বসিয়া কাঁদিতেছিলেন। শ্রীবাদ
মরে ছুকিয়া দরজা বন্ধ করিয়া দিলেন। তুই ধন্টা
পরে তিনি বাহির হইলে শচীদেবী দেখিলেন—
বৃদ্ধ বাদ্ধণের চকু জলে টলমল করিতেছে। শ্রীবাদ
শচীদেবীকে বলিলেন—'কাহাকে তোমরা পাগল

#### শিশু-ভারতী

বলিষাত ? আজ বাঁহাকে দেখিলান, সে-রূপ জগতে আব কেছ দেখেনাই। এ যে তুক, প্রজ্ঞান ছইতেও বছ! ইছাব পাদপ্রেন অকপনারে কানিয়া পুরী আজ বনা, ছইল! তোমার ঘরে কে আসিয়াছেন জান , কিব জ্বাং নীঘ্রই তাহা জানিবে। ইছার উপার কোন আনারি কবিও না। কাদিতে কাদিতে প্রীবাস্ চলিয়া গেলেন ভারেব ছইতে শ্রীবাস্ চলিয়া গেলেন ভারেব ছইতে শ্রীবাস্ চলিয়া বেজি বোজ সামাজে গোল বাজিয়া দিছিল। যে দিছিলয়

নাচিতেছেন। তাঁছাৰ গানে ও নর্ত্তনে ধরা টলমল কবিতেছে। অলনেত্রে ভক্তগণ ূসমন্ত ভূলিয়া চৈতন্য-মূপপল্লেণাভা নিরীক্ষণ করিতেছে। রাজ্রি ক তাবে প্রভাত ছইও ভাছা তাছারা জানিত না; সকণোদ্য দেখিয়া ভাছারা মুবলিয়া উঠিত—'এত নাম্ম বাজি পোছাইয়া গেলা' এই তাবোক্সকের দল ক্রমশঃ বাজিয়া ,চলিল, এবং খেদিন কাজী নদীযার চাদকে কীর্ত্তন করিছে নিষেধ করিয়া দিলেন, স্যেদন চৈতন্ত শত শত, গছত্র সহত্র, লক্ষ লক্ষ লোক লইয়া কীর্ত্তন করিতে বাছির ছইলেন।

সে কি অপূর্ব্ব অভিযান । নদীয়া
সেদিন বৈকুণ্ঠ । লক্ষ্য কলা । হত্তে
মণাল, শত শত মৃদক্ষ । সহস্র
সহস্র কবভাল । যেদিকে
হেলিয়া তুলিয়া চেত্র কাচিতে
নাচিতে কাদিতে কাচিতে
চলিয়া যাইতেন, সেইদিকে
প্রমভিলান । ভিড কবিসা
দশন কবিবাব জ্ঞা দাডাইতে
লাগিলেন । কাজী ও উচিব সে অপ্রমপ্র্যন্তি দেখিয়া বিশিত্ত ও বিযুগ্ধ হট্যাতিলেন।

ঈশ্বরপূর্ব। মাঝে মাঝে আ্রিল্ডেন। শুচীদেবীব তর ছইত। একদিন শুচীদেবী কাদিতে লাগিলেন। চৈততা মাথেব ছাত ধরিমা সাস্থন। দিকেন। মৃত্ ক্ষবে শুচীদেবী বলিকেন—'তুমি কোন স্বাাসীব সঙ্গে বেশীক্ষণ কথা বলিকে আমার প্রাণ কাশিব। উঠে। বাবা আমাব নিকট প্রতিজ্ঞা কৰ—তুমি সরাাসীদেব সঙ্গে মিশিবেন।।

অংকাণ্ডাগ্য ছিলেন এই
সংকীপ্তনেব প্রধান নেও।
শচীদেনী বলিলেন—'কে উহাকে
অংকত বলে। উনি দৈতা।
আমাব চাদের মত এক ছেলেকে
ঘবের বাহির করিয়। দিয়া

থনের একনাত্ত সাঁঝের শলুতেছেলেটিকে ধরিয়া-ছেন। ইহাকেও বাহির না কবিয়া ছাড়িবেন না। কিন্তু চৈওক্তকে সন্ন্যাস গ্রহণ করিতে হইল। নবন্বীপের ভট্টাচার্য্য পণ্ডিতেবা ভারতবর্ধের সর্ব্ধ-

হবিসংকীৰ্ত্তনে হাবোনাত চৈত্ৰসদেন

মনোছরশালী কীর্ত্তনে বাঙ্গলা মুগ্র হুইয়া গিয়াছে, সেই কীর্ত্তনের জন্মস্থান জীগ্রেষ আজিনায়। সাবারাত্তি খোল-করভাল বাজিল্লছে। ২০০০ জন অস্তব্যক্ত লইয়া চৈত্ত্তদেব সেই আজিনায় \*

প্রধান পণ্ডিত ছিলেন। তাঁহাদের যেমন ছিল বিস্তা, তেমন ছিল দর্প ও অহস্কার। তাঁহারা দর্শন শাস্ত্রের ওক্যুক্তি লইয়া বিচার করিয়া বলিলেন---"কোন শাস্তে এ तक्य लिए ना (य, अश्वाक वाकाहेश রাস্তায় রাস্তায় ভগবানের নাম লইতে হইবে। এই ছে'ড়া কাহাকে ভাকে ? আমরাই তো ভগবান---(সাহঃং। এইরূপ উপদ্রব করিয়া এই লোক খলি ष्पामात्मब बात्व युगाहेत्छ मित्व न। গোডের সমাটের নিকট লিখিয়া মিছিল বন্ধ করিতে হইবে।" তাঁহারা হৈডক্সকে প্রহার করিবেন এমন ভয়ও দেখাইলেন। চৈতনা ভাবিলেন - 'গছার মথে ইছার! ছরিনাম শুনিবে না। আমি সন্ন্যাসী চইব এবং ছয়াবে ছয়াবে তাঁধার নাম গাভিব। যে আমাকে প্রহার করিতে আসিয়াছে তাহার নিকট নাম ভিকা क्रांकित ।"

চৈতন্য মাতার নিকট অনুমতি চাহিলেন। মাতা যথন অনুমতি দিতে কিছুতেই বীক্বত চইলেন না, তথন চৈতন্ত্ৰের বলিলেন—'মা, তুমি সেই দেশের মেয়ে— যেথানে কৌশল্যা রামকে বনবাসের মাজ্ঞা দিয়াছিলেন। এদেশ ধর্মশীলা ত্যাগলীলা নারীর দেশ। তুমি পুত্রস্থেহের নিগড়ে আবদ্ধ চইয়া প্রক্ষত সত্য দৃষ্টিভূলিয়া যাইবে ?" শচাদেবী অতীব ধর্মশীলা ছিলেন। পুত্রের এই উল্লেখনে তাঁচার উন্নত প্রকৃতি জাগিয়া উঠিল। তিনি প্রাণ্-প্রিয় পুত্রকে বিদাম দিলেন; কিছু শোকে ম্বাদেশ দিন উপবাসী রহিলেন।

সন্ধাসের পর চৈতন্যদেব যে সকল
আন্ত লীলা করিয়াছিলেন, সমস্ত
ভার চবর্ধ পর্যাটন করিয়া জাবিড,তৈলঙ্গ,
তামিল, কর্ণাট, বোষাই প্রভৃতি প্রেদেশে
মবে মবে বে-ভাবে নাম বিতরণ করিয়াছিলেন, সে ইতিহাস মর্ণাক্ষরে লিখি ।
ভাঁহার অন্তর গোবিন্দ পুআ্লপুঝ্রন্প
তাহা বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। কোপায়



"প্রিয় ছরিনাম খুমিব বিদেশে ঘাবে দ্বারে ভিগারীর বেশে। নিজে পায়ে ধরি ভজাইব, ছরি, ছবিনামে পাপী খুচাইবে ক্লেশে

\*

ছিলিরাম ভীর্থ, কোথায় সভাবাই, লক্ষ্মীবাই, বারম্থী ছব্বী নারী, কোথায় পছ, ভীল পছ ও নরোজী প্রভৃতি দক্ষা! এই সমস্ত পাপনিরত নর-নারীকে তিনি সেই মন্ধ্রে বশীভূত কবিরাছিলেন—যে মন্ধ্রে ওঝারা কালসপকে বশীভূত কবে। তিনি আনক স্থলেই কোন বক্তৃতা কবেন নাই। তিনি যাহা রুঝাইতে চাহিতেন, তাহা লোকেরা তাহাস মুখ্র দেখিরাই বৃঝিতে পারিত। তিনি মেদিকে চাহিয়া হরিনাম করিতেন, সেইদিকে হরিব রূপ ঝলমন কবিয়া উঠিত। সকলে তাহা দেখিতে পাইত। প্রের স্থাবিত বক্ত তা করিয়া বঝাইতে হয়ন।।

চক্রের শীতল জেনাৎসা বৃষাইবার জন্মও কোন বাগ্মীর প্রয়োজন হয় না—নদীয়ার দোনার মাসুদটি ছিলেন সেইরূপ। তিনি নিজের মুখে ভগবানেব রূপ যে-ভাবে আঁকিয়া দেখাইতেন, সে রূপ আব কেহ দেখেন নাই।

১৪৫৫ শকে শুক্লপন্ধীয় আঘাত মাদের সপ্তমী তিথিতে রবিবার দিন পুরীধামে উভাগর অপুর্ব লীলার শেষভয়। তিনি কিঞ্চিদদিক ৪৮ বংসব কাল জগতে লীলা কবিয়াভিলেন। এই লীলার কথা জগত কোন কালেও বিশ্বত ছইবেন।।

# टेंडिक्स दिवस वानी

জাতি, কুল, ধন ও ক্রিয়া এ স্কল কিছুই নছে। প্রেম বাতীত ঈশ্বরকে লাভ কৰাযায় না।

অস্পৃশু বলিয়া কিছু বা কেছ নাই। মানুষের মধ্যে উচ্চ নীচ নাই। মানুষমাত্রেই ঈশ্বরের অংন।

ভক্তিও বিশ্বাস ছল ভ বস্তু। কোটি কোটি কল্মনিষ্ঠ ব্যক্তির মধ্যে একজন জ্ঞানী পাওয়া যায় কিনা সন্দেহ। জ্ঞানিগণের মধ্যে ভক্তের সংখা। আরও কম। যাহার ভক্তিও বিশ্বাস আছে তিনিই ইশ্বরকে উপলব্ধি কবিতে পারেন। ভক্তি মুক্তির প্র।

আমি ভাল হই, আর মন্দ হই, পাপী হই, বা পুণাবান্ হই তাহাতে কি ? যিনি জগৎস্তাই।, তাহার কাছে সকলেই সমান, সকলেই তাহার দয়। ও মেহের পাতা।

মান্ত্র্য বাহিরের শান্তি শান্তি করিয়া বাক্ল হন, কিন্তু সে জানে না যে, শান্তি তাহার অন্তর মধ্যেই বাস্ করিতেছে। থেখানে সংঘম, যেখানে ত্যাগ, থেখানে গ্রন্তি ও বিশাস আছে, সেথানেই শান্তি বাস করে।

জোধ দমন মহতের প্রকৃত লক্ষ্ণ। পাপীকে আলিঙ্গন কবিতে পাবার মধ্যে জ্নয়ের মহাত্মুঙ্বতা প্রকাশ পাইয়া থাকে।

পৃথিবীর ধন মান, পদগোরব, ক্ষণস্থারী। পৃথিবীতে থতদিন বাদ করিবে ততদিন ভক্তি, সেবা, ধল্মপরায়ণতা ও শিক্ষার দ্বাব। জীবনকে মণির ক্যায় উজ্জ্বল করিবে।

সে আমাকে মারিয়াছে—অপমান করিয়াছে,

সেই জন্মই কি তাঁহাকে ভালনাসিব না 🕍 ভাল-নাসাব কাছে ছোট-নড, উচ্চ-নীচ ভেদ নাই 🕽

'মেৰেছ কলসীৰ কাণা, তা বলে কি প্ৰেম দিব না •ু'

ঈশবেৰ শক্তিৰ ঠাত জীবেৰ সংচয় শক্তি নাই তিনি যাহা কৰান বা বলান, জাবি ভাষাই অসুসৰণ কৰে।

কীর্ক্তনের দ্বার। তাঁহার মহিমা প্রচার হয়। শব্দ রক্ষা অক্ষয় অমর শব্দ-ব্রহ্ম কীর্ত্তনে প্রচারিত তাঁহার নাম আকাশে বাতানে হডাইয়া দেয়, তাহা শুনিয়া কোট কোট জীব মুক্তিলাভ করে।

মান্ধ্য মান্ধ্যমের ভাই। সেখানে প্রস্পারের প্রতিম্বণা আসিবে কেন গ

ঈর্মর হক্ত বাক্তি শ্রেষ্ঠ হইবেও আপনাকে তৃণাধম মনে কবিবেন—সুক্তের স্থায় তুই প্রকারে সহিক্ষ্তা আচবণ কবিবেন। কাটিলেও রক্ষ যেমন নীরবে সহাকরে এবং গুকাইয়া গেলেও কাহারও নিকট এক গগুষ জল চাহে না, বরং রঙ্গি-বাহাা সহিষাও আপন ছায়া দানে অপনাকে রক্ষা করে, এইরপ নিরভিমানী হওয়াই সাধকের কর্ত্বা।

ধন, জন, কবিত্বশক্তি এ-সকল কিছুই কামনা করিও না! কামনা বাতীত যে ভক্তি, ভাহাই হইতেছে অহৈতৃকী ভক্তি।

ঈশবের নাম শুনিলেই থাঁহার হৃদয়ে আনন্দ হয়, শরীর রোমাঞ্চিত হয়, তিনিই প্রাকৃত ভঙ্ক।



# আফগানিস্থান

আফগানিস্থান এশিধান মানে।
একটি ডোখ দেশ। বান্যাবাণিজ্ঞা, ধন-সম্পানের দিব বিধা
আফগানিস্থান বড় নতে -পাকং ।
ভজ্ঞই ইহার এত খণ্ডি । 'আবপার্ডি
আমবা এখন গেনেশ্রে বৃত্তি, আপো্ডি কিক তাহাকে
ব্রাহেত না অস্ত্র



ক লওনে এক শজদুহ থাকি:

প্রধান প্রদ

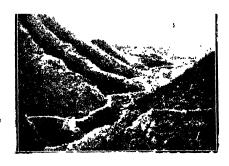
খ'ফগ'

হল ২৭%

আম্দৰ বৰাবৰ

ગ અચ

12日 日本17年 中十十日17 কাশ্যাৰ প্ৰবের ALLESTE STEELS ११९ केश्स्राक असम ধৰ ম্যান স্বাৰ্থ ডি ক্ৰিয়ার ও এশিধাৰ हो (भनतरभ अन्दार्गत क्रम क्रियान भाक नाम लाभाग निर्वापन अञ्चलकर्भ शाकाम. किना भागभागिषा १८० भाग किनान ८५ छ। কবিনাতে। ইংবাজ আনগানিস্তানের সভিত মিলত। বাহিবার (৮%) স্বান্নই ক্রিয়াছেন: (कनना, निर्मान था कमनक निष्मत थाक शामिष्ठाटनक খাইবাৰ গিবিগ্ৰ বাতীত অত দিক দিয়া আমিবাব প্র কোথাস ৪ চাবিদিক মিলিয়া তুর্গা প্রতিত, সেই পर्याट इत भना भिगा अथ । का एक ई, चाईनान जिनिश्व পৃথিনীৰ মুখে। একটি তুগম গিৰিগণ বুলিখা গ্ৰিচিত। প্রে আক্রাণিস্থানের বাজা বা আমীর আফ-গ্যানিস্থানের ধর্মময় (७८) जन । ३०२२ व्हारक ম্যাস্থ্য গঠিত হয় ৫ ব্যবস্থাপক সভাবও সৃষ্টি হয়, দেশের লোবদের রাজাশাসন ব্যাপারে অনেকটা অধিকাব জ্ঞো। ব্জা মুখণা-সভাব সভাপতিকাপে কাজ করিতেন। ১৯২২



গ্ৰাভুতে পাৰ্কিক ভাষাৰ শক্ত বেশীৰ ভাগ বাৰভাৰ হয়। ইভাদেৰ পৃথকাদি আবেৰী ভবপে লেখা। দেশেৰ স্বাঞ্জি উচ্চ ইংবাজী বিভালৱ আছে। প্ৰাথমিক শিক্ষা আফগানিভানে বাৰাভায়লক— ইচ্চ শিক্ষাও স্টেল্প। বাজ্যানী কাবলে বৰ্ত্মানে ভ্ৰটি কলেজ ও একটি স্থানিভা শিক্ষাৰ জন্য কলেজ বহিষাতে।

# শিশু-ভারতী

আফগানিস্থানের রাজ্যানী কানুলের জোক भिश्वा ३६०,०००। क्लाइट्य (Kandahar) লোক সংখ্যা আলুমানিক ১০,০০০ ছিবাটেব

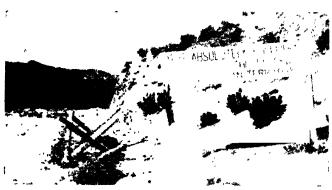
প্রধান ফুসল হইতেছে গুম, যুব, ধান, ভুট্টা, ভাষাক, ইক্ষ ও ত্লা

আক্লানিস্থানের ইতিহাস খুবই প্রাচীন। এক

গোয়াল

স্থয়ে—বৈদিক কালে এদেশের নদীর ভীরে বৈদিক ঋষিরা বাস করিতেন --- যজ্ঞ করিতেন এবং স্তব ও স্থোতা রচনা কবিতেন । আধা শ্বিরা তগৎ-**ন্ত**লেমান পৰ্বতিউপতাকায় বাস কবিষাছিলেন, এমন কণা খাজকাল অনেক ব্ছ ব্ছ প্রিতেরা**ই**ু বলিয়া থাকেন। সে সময়ে বোচ (উত্তৰ-

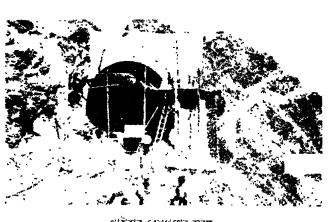
श्रीका भीगां । श्रीप्रकार



খাৰ ভৰ্ষ ও আফগানিস্বানেৰ স্বামাচিক

>২০,০০০ ৷ প্রোস্থা আফগানিস্তানের লোকসংখ্য - শহলীক ফেল্ম্ম, গান্ধার, জেলোমার) তসর **এঞ্**লে ছটতে প্রায় আশী লক্ষ (৮,০০০,০০০), প্রিমাণ-ফল - খবিরা বাস কবিরেন্ট - এটেলক্স।কারের ভারত তুইলক প্রতাল্লিশ (১৯৫,০০০) হাজার বর্গ মাইল। সংক্রমনবারেও আফ্রানিস্থান, সিস্তান ও বেলুচি-

আফগানিসানের ভ-ভাগ বিভিন্ন বক-মের। কোথাও বরফে: চাকা উচ্চ পর্বভয়েণ। কোথাও মালভূমি, কোথাও আঁকাবাকা পাহাডিয়া নদীৰ তীবে তীরে ছুর্গম অধিতাক। প্রদেশ। আনার কোন কোন উপতাকাভূমি বেশ স্থজনা স্থাননা ও শশ্তশামলা। সাধারণ ভাবে ধলিতে গেলে দেশটা অমুকার ও শিলাকীর্ণ ভূমিতে পরিপূর্ণ।



খাইবাব বেলপথের স্বরঙ্গ

জলবায়ু—উচ্চ পার্বত। প্রদেশে অতিশ্য শীতল আর নিম্ভাগে অভাস্ত গ্রম। অধিতাক। প্রদেশে নানাজাতীয় ফল প্রচ্ব পরিমাণে জন্মে। এখানকাব

স্তানে আর্যাসভাত। বিদ্যমান ছিল। মৌর্যা রাজার। যখন মগধে রাজত্ব করিতেন, তথন হিরাট প্র্যান্ত তাঁছাদের রাজত্ব বিস্তাব লাভ করে। কাবল নগরে

# আফ্রগানিস্থান





আমাৰ হাবিবুলা

भिन्दसानी (याका



থাকগান প্ৰিব্ৰি

# <sup>2</sup>াশু-ভারতী

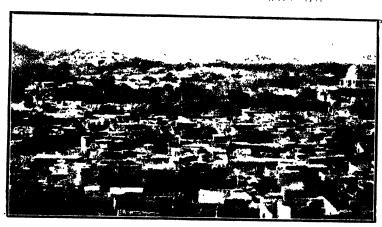


গিলজাই গোদ্ধা

সীমান্ত প্রদেশের এই সকল অদিরামী অভান্ত স্থাহর্য ও সুদ্ধনিপুণ। ইহাদের দেশপ্রীতি অভীন প্রশংসনীয় । ইহার। সমস্ত দিন পরিশ্রম কবিতে গাবে।



नाका ई-मातः



কাবুল সহ্প

# আফগানিস্থান

হিন্দু জাতীয় রাজাবা বাজান্ত করিতেন। দশম শতালী পর্যান্ত আফগানিস্থানে বৌদ্ধ ও জবপুল্ল মতের বছ লোক বাস কলিত। কার্লের আনে-পাশে এখনও বৌদ্ধসভাতার বছ নিদর্শন আছে। আফগানিস্থানের উত্তবে বাসিমান্ নামক পর্বাতের আনে অনেকগুলি বঙ্গ বছ বৃদ্ধমুভি ক্লোদিত আছে। সেকলে কার্ল নদীকে বলিত 'কুডা'। কুক্ম উপতাকা—ক্রমু, 'গোবল'—গোভী পেশোমার প্রমপুর বা পুমাপুর, গান্ধার এই সর নানা দেশ ও নদনদী 'ছিল।



স্থাসীব দোন্ত মুহম্মদ , প্রাচ্নিকাল হইতে থালেকসান্দাবেব মুষ্পুয় স্থান্ত্যানিস্থান নান্য বিদেশীয় জাতি



স্। সূজ। কর্ত্তৃক আক্রাপ্ত হইয়াছে। ১৭৩৮ গৃষ্টাব্দে পারসিকেরা আফগানিস্থান জয় করে এবং অনেক

দিন পর্যান্ত উহাদের অধিকারে থাকে। ১৮২৫ খৃষ্টাব্দে দোক্ত মুছ্মদ নামে একজন ক্ষমতাশালী আফগান সন্ধাৰ আফগানিকানেৰ আমীব হন। কাবুলেৰ আমীব সা ক্ষজা পলায়ন করিয়া ভাবেংবর্গে আফেন। ১৮৩৯ খৃষ্টাব্দে ব্রিটিশ-বাজনক্তি কাবুল আফ্রমণ কবিয়া সা ক্ষাকে সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত কবেন।



আমীৰ শেব আলী

ছই বংসব পরে একদল আদ্পান বিদ্যোভ কবিয়া কয়েকজন নিটিশ বাজকলাগেরীকে হতা। কবে। পর-বংসর ইংবাজ কাবুল হাডিল। আসেন। ক্রমধ্যে ভারতবাই ইইতে নুতন গৈঞ্জল আসিল। আবার করেল আজ্মণ কবিয়া অধিকার করে। সা স্তজা হতাকারীদের হাতে প্রাণ হারতিল আবার দেন স্থানি হারতিল আরীর হইলেন। ১৮৬০ পৃষ্টাকে বার্তির আনি হাতিল একা করিয়া চলিয়া পরে বিবজ্বাচরণ করার করেল আবার ইংবাজের সহিত মুদ্ধ বার্তিক বিলিয়া পরে বিবজ্বাচরণ করার করেল আবার ইংবাজের সহিত মুদ্ধ বার্তিক বিলিশ্বসন্ত আদ্পানিস্থানে প্রবেশ করে, আমীর ভুকীস্তানে পলাইয়া প্রেল্ন। ইয়াকুল সাঁ। ১৮৭৯ খৃষ্টাকে ইংবাজের স্থিত স্ক্রিক ইংবাজের স্থিত স্ক্রিক করিয়া

১৯১৯ গৃষ্টাব্দে আমাস্কল্লা কার্বলের আমীর ছইলেন। আমাস্কলা ইউবোপীয়দেন আদর্শে দেশমস্যে শিক্ষা সমাজ ও ধর্মসঙ্গন্ধে সংস্কার করিতে প্রবৃত্ত স্কুলেন। দেশের লোকেরা ভাষা ভালভাবে দেখিল না.





সীমান্ত প্রদেশের মোমন্দ

মীম। ত্বে একজন মালিক



আফগান সৈক্তদ্প



কাজেই, তাঁহাকে বাধা হইয়া সিংহাসন ভাড়িতে ইইল। আমান্তর্য ১৯২৯ খুইাকে সিংহাসন ভাগা করিলে পর তাঁহান লাভ। ইনায়ুভউল্লা আমীৰ হইলেন। ইনায়ুভউল্লা দেশেৰ সন্ধট সম্মে ভাল করিয়া শাসনদও পবিচালনা কবিতে গাবিলেন না। এই স্থযোগে ৰাজা-ই সাবে। নামে একজন বিদোহী ইনায়ুভউল্লাবে সিংহাসন-চুল্ভ কবিয়া হবিবুলা গাভা নাম লইয়া কাৰুলেব সিংহাসনে সসিলেন। ১৯২৯ খুইাকে আবার এক



ভূতপূদ আমাৰ আমায়ুৰা খা

বিজ্ঞাহ উপস্থিত হইল। আনায়গ্লার ভূতপুকা সেনাপতি নাদিব গাঁ কাবলে আসিলেন এবং বিজ্ঞাহ দমন করিলেন। দেশেব লোকেবা উহাকে রাজ। বলিষা গ্রহণ কবিল। নাদীব গাঁ। আমীব হইলেন। দেশে শাস্তি আসিল। হবিবুলা বিজ্ঞোহের জন্ত ধরা পৃতিষা প্রাণন্তে দৃত্তিত হইলেন। নাদির গাঁ কাবলেব শাসন, শিক্ষা, বেলপপ, বাবসায় বাণিজ্য স্বাদিকে উন্নতিৰ জন্ত মনোযোগী হইয়া রাজ্য শাসন কবিতেছেন। ভাবতবংশৰ সৃষ্ঠিত আফগানিস্তানের তুইটি পথ দিয়া বাবসা ও বাণিজা হইয়া আসিবেছে— একটি হাইবার পাসের পপে, অক্টটি হিবাট, মাবন্ (Merve) হইয়া তুকাস্তানের ভিতর দিয়া। বাণিজাদেবাদি ঘোড়া ও দটের পিঠে বোঝাই কবিয়া লইয়া যাওবা হয়।

আনগানিভান পাকত। প্রদেশ এবং নান। কৃদ ক্ষুট্পতাকায় বিভক্ত। আনগানিভানের নানা



বর্তমান আমীর নাদির খাঁ। (থেছিনে)

াংশের লোকের। নানা বিভিন্ন উপতাকার বাস্করে।
গিলজাই আদগান, ইউস্থানজাই আদগান, হাজারা
আদগান, তুর্বাণী আদগান, বোমন্দ আদগান—
এইরপ নানাবংশের আদগান আছে। ইছার।
মাইসী, অকাস্তক্ষী এবং দেশপ্রেমিক। আদ্বানেরা মুস্লমানগ্রাবল্ধী।

এনেশের পুরুষ ও নারী দেখিতে হুঞী, স্বল এবং সাহসী। ইছারা নানাদেশে ব্যবসায়-বাণিজ্ঞের জন্ম থাতায়াত করে।



# সরীস্থপের যুগ

্দকালের মাজন্দ যে স্বীক্ষাপের ছিল কথা নয় ৷ কিছান্দ্র যেন্দর

৬৬৭ পৃষ্ঠার পর

দাহনোজাব কথান গাক Deinos

স্বীক্ষা চিল হাং বং আবাবে তেমন বছ ছিল না। স্মবের সঙ্গে সংগ্লে সে স্কলের মেমন বংশ লোগ গাইতে আবিল, ক্ষেণ্ডের আকার-প্রকারেও তেমনি মানারূপ গ্রিবজন দেখা দিল। এই সে প্রিক্তন, হাহা বে গ্রানা বংসারে হয় নাই, লক্ষ্ণ বংসার প্রে ঘটিনাভিল সে-কথা প্রেক্টিবলা হত্যাতে।



#### いばいけたける

পেই প্রার্চান স্বান্স্পনের কালে যদি তুমি কোন গভীব বনের ভিতর দিয়া বেডাইতে যাইতে, তাহা হইলে সকলের আগে ভোমার চোথে পড়িত বড বড পাযের দাগ। সেই পাসের দাগ ধরিয়া যদি প্রশাচলিতে স্ক্রু করিছে, তাহা হইলে দেখিতে পাইতে, ডিনোসোর বাডাইনোধোর (Dinosour)

'অৰ্থ ভ্যানক (terrible), আৰু কেৰু এৰ্থ সৰ্বা-**ग**र्भ। धक क्यांत ज्यांनक कराक्या । ध्यांत (स-त्र ব্যু পাবের চিক্ল ১৯৫৬তে (Brontosaur) নামক 🛅 জাতীয় প্রাণাব। কর্বাস্থ্য ব্রাণ্টোলোবের শ্বাদে প্রিমান্টা এইবার শোন। ইছানের শ্রীর লয়াম হই ৬ পাম পায় ৮০ কিট, ওছনে প্রায় সাচে পাচন মৃণ। আকার হটলেট যে, তাহার প্রকৃতি বা স্বভারটা ভযক্ষৰ হইবে, এমন কথা কিন্তু সত্য নয়। প্ৰেচনেৰ প। 'ছ'টোব উপৰ ভব কৰিম। ইহাৰা অনামামে বনের সকলের চেয়ে উঁচ গাড়ের জালের পাতা থাইতে পাবিত বটে, কিন্তু কাহারও কোনক্র অনিষ্ট করিবাব শক্তি ইছাদেব বড় একটা ছিল ন।। লমা গলা এবং ছোট একটি মাণাৰ ভিতরে যে বৃদ্ধি বা চিস্তাশক্তি বলিখা কিছু ছিল, সে কথা জানতত্ত্ববিদ্পণ্ডিতেব। মনে কবেন না। অনেক ভোট ছোট চাৰাক জন্ধবাও ইছাদিগকে আক্ৰণ ক্রিতে কোন্রপ ভর ক্রিত না। এইভাবে ইহাদের স্থিত তুলনায় অনেক ছোট ছোট প্রাণীর হাতেও ইহাদের প্রাণ দিতে ১ইরাছে। স্তবতঃ, ইছাবা জলজ উদ্ভিদ পাইতেই বেশী ভালবাসিত। অনেক জলাভূমির নীচে মাটিণ ভিতর হইতেই এই জাতীয় প্রাণীর কঙ্কাল পাওয়া গিয়াছে।

# সরীস্থেশর ব্র

এই জাতীয় আর একটি রহদাকার জীব ছিল—
তাহাদের নাম আটলান্টোনোর (Atlantosaur)।
আট্লান্টোনোর ইহারা আমেরিকা অঞ্চলেই বেশীর
ভাগ বাস করিত। ইহাদের দেহের
পরিমাণও প্রায় আশী ফিট দীর্ঘ ছিল। শবীর লম্বা

থাকিত। লম্বায় ইহারা ২০ ফিট্পরিমাণ ছইত এবং খাড়া ছইলে ১২ ফিট্উচ্চ ছইত। পেছনের পা ছ'গানার উপর ভব দিয়া দাড়াইলে ইহাদের ভীষণাকার মৃতি দেখিয়া অন্তান্ত জীব-জন্তরা ভয় পাইত। সেকালে এক প্রকারের





উজ্ঞীনমান সনীস্থপ সন্নীস্থপ ছিল তাহাবা উজিতে পারিত। উজিতে পানিত বলিয়া ইহাদিগকে পানী বলিয়া ভূল ক্রিও

তিনটি শিং-ওয়ালা ডাইনোসোর ১ইলে কি হুইবে ? তাহার ছোট মাথাটিতে মগজ বলিয়া কোন জিনিষ ছিল কিনা সন্দেহ, শরীরেব

ভূলনায় ইছাদেন মগজ বাডে নাই। ডিনোসোন জাতীয় অন্ত কোন প্রাণী আকারে অপেক্ষাক্লত ছোট ছইলেও যদি এই বৃহদাকান আট্লোটেটাসোরকে আক্রমণ কবিত, তাহা হুইলে ইছান আত্মনক্ষা কবিতে প্র্যাপ্ত না। ইশ্বন ইহানিগকে আকারে প্রতি বৃহৎ করিলেও ছোট ছোট প্রাণীদের দ্যাপ উপর তাহাদিগের জীবনটা রাখিয়া দিয়াছিলেন।

লিসিওসোব

এই সব স্বীস্পক্ষাতীয় প্রাণীবা নিবীহ ছিল বলিয়া

সে-কালের অপবাপর সরীক্ষপেরাও যে নিরীছ ছিল, তাহা নহে। ইহাদের মধ্যে নানাজাতীয় স্বীক্ষপ ছিল। এক জাতীয় ডিনোসোরেরা মাংসাণী ছিল। তাহাদের বড় বড় তীক্ষ দাত, বড় বড় মাধা, চতুরতা এবং ফ্রতগমনে দক্ষতার জন্ত, অন্তান্ত প্রাণীরা ইহাদিগকে ভয় করিয়া চলিত। ইহাদের কাহারো কাহাবো মাধার উপর আবার লম্বা এবং সৃদ্ধ বা তীক্ষ্ শিং

ইজ্জীরমান স্থাস্থল না। তোম্বা বাছ্ব দেখিয়াছ, ইছাদিগকে বৃহদাকাবের বাছ্ব বলিলেই ভাল বৃষিতে পারিবে।

ষ্টিণোসোব বলিয়া আব এক প্রকাবের প্রাণী ছিল; তাছাদের আকাব ছিল অতি আছত সক্ষের। ইহাদেব গায়ে একট, কঠিন আবরণী ছিল। চারটি ছিল ষ্টিগোসোরের পা। সামনেব পা হু'টিব চেয়ে



#### শিশু-ভারতী

পেছনের পা ছু'টি ছিল বেশী লম্বা। ইহাদের শরী-ছলোনোর হেরের চামড়া বড় বড় কঠিন হাড়েব আবরণী দিয়া ঢাকা থাকিলেও বিরাট শরীর লইয়া ইহার। শকের আক্রমণ হইতে আত্মবক্ষা ইক্থিওসোর আকারে বড় কম ছিল না। ইহারা দৈর্ঘো হইত প্রায় ৪০ ফিট লম্বা। স্মৃতি বড় বড় তীক্ষ দাঁত, বড় বড়

চক্ষু দেখিলে কাহাব না ভয় হইত। ইহারা সাঁতার

हेक्'बड:मात्र

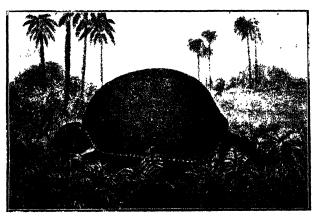
দিতে পারিত। ইক-থিওগোর প্রকৃতপক্ষে কিন্তু সরীস্পঙ্গাতীয় প্রাণী;ইহাদিগকে মাছ বলিম। ভুল করিও না যেন। আছো, এই স্ব প্রাণীরা কত দিন প্রর্কো বাচিয়া ছিল বল ত ? দে অভি স্ত্যিকালেব 本料--->00,000,000 इडेएड २००, ००० ००० वदमत चार्ल। हेर्नाए থখন সমুদ্রের জলের অতল ৩লে ডুবিয়া ছিল তখন এই সকল প্রাণ্ডি আনন্দে সমুদ্রের বুকে বিচৰণ কবিত।

করিতে পাবিত'না। মাণার দিকে হাড়ের আবরণী সেকালের মিপটোডন নামেও এক অছুত জাতীর

এবং লেজের দিকের
হাড়েন আবন্দী
অপেক্ষাক্ত ছৌট
ছিল। কিন্তু পিঠের
উপরের ঐ আববদী
ছিল খুব বড বড়।
ইংল্যাণ্ডের স্থইনডোন্
(Swindon) অঞ্চলে
এ-জাতীয় প্রাণীর
কন্ধাল অনেক পাওয়া
গিয়াছে।

দেকালের সমুজের
মধ্যে যে সকল সরীস্থপ বাস করিত
ভাহাদেব মধ্যে ইক্থিওসোর Ichthyo-

saur) এবং লম্বা গলাওলা লিসিওসোরি (Plesiosauri) নাম করা খাইতে পারে। সেকালে যদি তুমি একথানা ছোট নোকায় করিয়া সমুদ্রে যাইতে, তাহা হইলে ইহারা নোকাখানা উণ্টাইয়া ফেলিয়া অতি সহজেই তোমার প্রাণনাশ করিতে পারিত।



গ্নিপটোডন প্রাণী ছিল।

ইক্থিওসোরদেন চেয়ে লিসিওসোরি আকারে অনেক ছোট ছিল। কিন্তু চওড়ায় ছিল অনেকথানি ২ড়। অষ্ট্রেলিয়া, নিউজিল্যাও, গ্রেট ব্রিটেন ও উত্তর

# সরীস্থপের মুগ

মেক প্রদেশে এ-স্কল প্রাণীব কন্ধাল-চিহ্ন পাওয়া যায়। এটি ব্রিটেনের ওয়ারউইক্সায়ারের অস্তর্গত (Harbury) নামক স্থানে ইক্থিওসোর এবং লিসিওসোরিব কন্ধাল মাটির নীচ হইতে পাওয়া গিয়াছে। আমেবিক। নৃক্তবাজ্যের কলোরাডো (Colorado) নামক স্থানে সে-কালের স্বীস্থপ-আতীয় ব্রহদাকার প্রাণী-

:দের অনেক কল্পাচিক আবিষ্কত হইয়াছে। টাক্সনিক। অঞ্চলে ও ডিলোসোর-জাতীয় অনেব প্রাণীৰ প্রস্তবে পরিগত কন্ধাল-চিক্ পাওয়া পিয়াছে। সেখানে এক-থানি চল্লিশ ফিট্লম্ গলাব হাড় পাওয়া গিয়াছে। ঐ হাড হই-তেই অফুয়ান কবিতে পাব, ছিনোসোনজাতীয় যে প্রাণীব গ্রাব হাড়ই এতবড লগা, ভাহার সাবা শবীবটাব পরিমাণ কণ্ড বভ ছিল। মধা-

কার স্বীস্পের অস্থি আবিদ্ধান করিয়াছিলেন। ইহার মধ্যে একটি জ্জ্মার হাড লম্বায় ৪ স্ট ৩ ইঞ্চি পায়ের ছইটি হাড় লম্বায় ২ স্কুট ৮ ইঞ্চি করিয়া, গাম্নের পায়েব উপরেব দিকের হাড় লম্বায় ৩ স্কুট, একটি পান্দরেব হাড় ২০ ইঞ্চি। এই জন্তুটির আকার ছিল প্রায় ত্রিশ হাত। ১৯১৯ খুটান্দে ধে



ডাইনোসোরের পাথরে পরিণত ডিম

এনিয়াব অস্তর্ভুক্ত মঙ্গোলিয়। অঞ্চলের মাটিব নীচ ২ইতে ডিনোপোব-জাতীয় প্রাণীব প্রস্তবে পবিণত ২৫টি ডিম পাওবা গিয়াছে। ইহার পূর্বে পৃথিবীর কোন দেশ হইতে ডিনোপোর-জাতীয় প্রাণীর ডিম পাওবা যায় নাই। এই ডিমগুলিব ব্যস্ত প্রায় দশ্**লক্ষ** বংস্ত।

ভারতবর্ষরও কোন কোন স্থানে নানাজাতীয়
সবীস্পেব ক্লাল-চিক্স পাওয়া গিয়াছে। ১৯১৯
স্থানৈ ভাক্তার সি, এ, নাট্লি নামে একজন
ভূতত্ত্বিদ্ পণ্ডিত জ্বলপুবের কাছাকাছি বড়
সিমলা নামক পাহাডে ডিনোসোর বা ভাইনো-সোর জাতীয় অতিকার স্বীস্পের অন্থি আবিদাব
করিয়াছিলেন। বর্ত্তমান সময়ে ছোট সিমলা
নামক পাহাড়ে খুঁডিতে যাইয়া ভূতত্ত্বিদ্ ডাক্তাব
সি, এ, মাট্লিও তাঁহার সঙ্গী ভারতীয় ভূতত্ত্ব
জরিপ বিভাগের শ্রীযুক্ত মণীজনাণ ঘোষ বি,
এস-সি. লেগুন) এ, আর, সি, এস কয়েকটি অতি-

জ্ঞানোয়।বেব হাড পাওয়া গিয়াছিল, সেইটির আকার ছিল প্রায় চল্লিশ হাড। বর্ত্তমান সময়ে যে জ্ঞানোযারের অস্থি পাওয়া গিয়াছে ডাহাব নাম দেওয়া হইয়াছে টাইটানোস্রাস্। এই জন্তুর আক্রতি অনেকটা গোসাপের মত ছিল।

নানাদিকের অবস্থা ও পরীক্ষা দারা পণ্ডিতেবা
অহ্মান করেন যে, স্রীক্ষপ যুগেই পাধীর জন্ম
হইয়াছিল। অনেকে বলেন, পাধীর
পাধীর জন্ম
ক্রমকাল তাহারও অনেক আগে।
ফেকালে পাধী ও স্বীক্ষপের মধ্যে অনেকটা
সামঞ্জন্ম ছিল। বর্ত্তমান কালে পাধীর মাধা ও
লেজের সহিত স্রীক্ষপদের ঐক্য নাই। সে-কালের
ভিন্ন ভালতীয় স্বীক্ষপেরা এইভাবে একটির
পর একটি প্রায় স্কলেই বিলুপ্ত হইয়া গিয়াছে।
সময়ের সঙ্গে পক্রেতির পরিবর্ত্তনের সহিত
সামঞ্জন্ম ক্লা করিতেনা পারিয়াই ভাহারা প্রাণ
হাবাইয়াছে।







# ভ্রমণ ও আবিষ্কার

ি মাহ্বদ তাভার প্রথম স্থান্টির পদ হইতেই অজ্ঞাতেব সন্ধানে বাস্তা থাই। কিছু তাভার চন্দেব বা জ্ঞানেব অগোচর, তাহাই সে চায় দর্শনের দ্বারা এবং অভিজ্ঞতার দ্বারা জ্ঞানিতে। মহাসিদ্ধ-পেরা অজ্ঞাত স্থলভূমির কোথায় কোন্ অজ্ঞানা দেশ আছে, সমুদ্রের অতশ তলে কোন্ মহাদেশ
অন্ধনাবে ভ্রিয়া আছে, কোথায় উত্তর ও দক্ষিণ মেকর বর্ষের দেশ, কোথায় আফ্রিকাব সাহারা
মর ভূমিতে লুপুনগরী, হিমালয়ের গৌরীশক্ষরের চূড়ায় প্রকৃতির কি বিচিত্র লীলা চলিতেছে, প্রশিষাব
গভীর গহন জঙ্গলে কোন্ কোন্ হিংল জন্ত আছে, কোন্ দেশে কোন্ জাতীয় লোকেব বাস, কোথায়
কোন্ নৃতন জগৎ - এ সমুদ্র জ্ঞানিবার জন্ত মাহ্বর আবহ্নান কাল চইতেই চেষ্টা করিতেছে। আমরা
কির সব সংবাদ জ্ঞানি না। যাহা আমরা জ্ঞানিতে পাবি মাই—জ্ঞানিবার উপায়ত নাই, তাহা মহামানবগণ নিজ্ঞ জীবন বিপর করিয়া, নৃতন নৃতন দেশও প্রকৃতির বিচিত্র বহন্ত ও অজ্ঞাতেব তথা
আবিদ্ধার করিয়া আমাদিগকে জ্ঞাইয়া দিতেছেন এবং ভাহাদের কৌত্হলোদীপক বিবণ লিখিয়া
গিয়াছেন। আমরা একে একে তাহাদের গেই বিল্য়কব ল্মণ ও আবিদ্ধান-কাহ্নী প্রকাশ কবিব।

# মার্কো পোলো

১২৯৫ খুষ্টাব্দে ভেনিসের রাজ্পপে একদিন ধোট একটি দলকে দেখা গেল। তিনজন মাত্র লোক। তিনজনের ছুইজন হৃদ্ধ, লমণ-ক্লান্ত, তৃতীয় জনেরই বয়স একচল্লিণ বৎসর কিন্তু দেহ তথ্য জনির এবং ঋজা।

ভেনিসের অধিবাসীরা কেছই তাঁছাদেব চিনিতে পারে নাই। না পানার জন্য ভাছাদের দোষও দেওয়া যায় না। কাবণ, এই তিনজন লোক—নিকোলো (Micolo Polo), মাফেও পোলো (Maffeo Polo)ও মার্কো পোলো (Marco Polo) প্রায় চব্বিশ বংসব পূর্কে তাঁছাদের মাতৃত্ম ভেনিস ত্যাগ করিয়া চলিয়া যান। তাবপর এই তাঁছাদের পুনরাগ্যন।

আপনার প্রিয় স্বজনেরাও তাঁহাদেব চিনিতে পারেন নাই। তাঁহার। ভাবিয়াছিলেন যে, মধ্য এশিয়ার বর্দর মাম্থনের হাতে পোলোব। হয় ত বছদিন প্রাণ হাবাইয়াছে। কাজেই, পোলোরা ভিনজন সকলকে নিমন্ত্রণ করিয়া প্রচুব পরিমাণে খাওয়াইলেন ও অবশেষে আপনাদের আন্তর্ অমূলাধন-বন্ধ, মৃথি, মৃত্রা, চুণি, হীরা ইতাদি দেখাইকেন, তথন সকলে আদ্র্যাহইয়া গেল।

কিছুদিন ধরিয়া কেবল পোলোদের ও তাঁহাদের অন্তুত ভ্রমণেব আশ্চর্গ্য আশ্চর্গ্য গলই চলিতে
লাগিল। কি আশ্চর্গা, এক রকম নাকি জিনিব
আছে, যাহা খনি হইতে খুঁজিয়া বাহির করিয়া
পরে তাহা জালাইতে হয়। এক রকম জানোয়ার
আছে তাহাদের কপালের উপর একটা শিং
আছে। সাপের নাকি পা আর থাবা হয়।
পোলোরা এতদিন পর্যান্ত যাহা ইউরোপবাসীরা
জানিত না, এমন বহু জিনিবের কথা বণিয়াছিলেন,

# ভ্ৰমণ ও আবিষ্ণার ↦

কয়লা, কেরোসিন, পেট্রোলিয়াম, গগুর ইত্যাদির কথা কেই-বা আগে জানিত ? এনিয়ার পার্কতা ডেঙার নাম ওতিস্ পোলি (Ovis Poli)। ইহার নাম প্রথম আবিক্ষণ্ড। পোলোদের নাম অনুসারেই হইয়াছে।

ইছবি তিন বংসৰ পৰে জেনোয়াবাসীদের সঙ্গে জলযুদ্ধে মার্কো পোলো বলী হন। তাঁহাৰ বলী অবস্থায় লোকেল। তাঁহার নিকট অমণের গল্প ভনিতে আসিতেন। বাব বাব কবিয়া একই গল্প বলিতে বলিতে ক্লাস্ত হইয়া মার্কো পোলো যে লোকজন পেরণ করা হয়, নিকোলা পোলো ও মাফেও পোলো তাহার মধো ভিলেন। তাঁহারা রাজসভার যথাসময়ে পৌছেন। পবে পুনরায় কুব্লা গাঁ চীনদেশে একণত খুষ্টধর্ম প্রচারক প্রেরণ করিবার জভা, পোপের নিকট অমুবোধ জানাইয়া তাঁহাদিগকে প্রেরণ করেন।

১২৭১ খঃ অন্ধে তাঁছার। পুনবায় চীন অভি-মূথে যাত্রা কপেন কিছু ছুজীগাবশতঃ পোপ এক-শত প্রচাবক সংগ্রহ কবিতে পাবেন নাই।পাবিলে পৃথিবীব ইতিহাস হয়ত অন্তক্ষপ হইত।। এবাব



পোলোদের দেশতাাগ

একথানি বই লিখিবেন স্থিব করিলেন। আধিকর্ত্ত।
হিসাবে মার্কো পোলোর স্থান বোধ হয়
কলম্বাসেরই নীচে, এবং এই খ্যাতি তাঁহার
বলী অবস্থায় রচিত অম্লা ভ্রমণকাহিনীর
উপরেই সংস্থাপিত। বলী না হইলে বোধ হয়
এই অপূর্ব্ব কাহিনী রচিতই হইত না। এখন
এই দীর্ঘ চবিবশ বৎসরের নিক্লিট্ট ব্যক্তিরা
এতকাল কি করিতেছিলেন, তাহাই বলা যাক্।

১২৬৩ থৃঃ অন্দে উত্তর চীনের সম্রাট চেঙ্গিস্ খার পোত্র কুব্লা খাঁর (Kubla Khan) নিকট



মার্কো পোলো

(একখানি প্রাচীন চিত্র ছইতে)

নিকোলো পোলো ও তাঁহার প্রাতা মাফেও পোলোর আর একজন সঙ্গী ছিল। নিকোলোর সপ্তদশবনীয় পুত্র মার্কোপোলো। ক্রমাগত চারি বৎসব ধরিয়া আর্ক্ষেনিয়া, পারস্ত, আফগানিস্থান মধা এশিয়ার মালভূমি, তুর্কিস্থান, গোবি মরুভূমি ইত্যাদি পার ছইয়া, পোলোত্রয় কিংহান (Kinghan) পর্বতে অবস্থিত কুব্লা খার গ্রীম্মাপনের প্রাসাদে উপস্থিত হইলেন। কুব্লা খা বছদিন

# শিশু-ভারতী

প্রে প্রিচিত্তাদক লেখিয়। খুব খুড়ী ছইলেন ও পুর সন্ধানের স্থিত গ্রহণ কবিলেন। মার্কো পোলো সহজেই সন্নাটের প্রিয়পাত্র হইয়া উঠিলেন। কুবলা ঝঁ: মার্কোকে তাঁহার সম্প্রাক্তা পবিশ্রমণ করিয়া গাহা কিছু নতন জিনিব দেখিবেন তাহার তথ্য সংগ্রহ কবিতে অঞ্চনতি দিলেন। প্রে
মার্কোর কালো সন্ধ্র হইয়া তাহাকে কোচিন ও
ভাবতব্যেও তথ্য সংগ্রহ ব্রিতে প্রেবণ করেন।

প্রাসাদ, আন্তর্গ্য শীতপ্রাসাদ ইত্যাদিও চীনেব সহরসমূহেব কথা তিনি প্রে তাঁহার পুস্তকে লিপিবদ্ধ কবিয়া গিয়াতেন।

এতদিন দূর প্রবাসে কটিছিয়া পোলোত্তর অবশেষে গুছে প্রভাবিত্তন করিবার জন্ম উতলা ছুইয়া উঠিলেন। ঠাঁছাবা স্মাটেব ,নিকট নিজ দেশে ফিবিবার অনুমতি চাছিলেন। স্মাট প্রথমে জী ছিলেন না। কিছ এয়ময়ে পার্ভরাজেব

স্থিতি বিবাহের জন্ম একজন রাজকন্সাকে প্রেরণ
করাব প্রায়েজন হয়।
পারস্তে ঘাইতে হইবে।
আব পোলোব। নৌবিজ্ঞার
বিশেষ পাবদশী: কাজেই
পোলোতায়েব সঙ্গে রাজকন্যকে ভাঙাব ভাবীপতিব নিকট পাঠান
হটল।

দানী উপদেবিন, নান বিধ উপহাব ওরাজ-কন্যাকে সঙ্গে লইয়া, অল কুমেক বুৎসরের মধ্যে তাছাব। পুনবায় ফিরিয়া আসিলেন, সমাটকে এই আখাস দিয়া, পোলে। জিন জন চীনদেশ ছইতে যাত্র। কবিলেন । পাবশ্রে পৌছিয়া দেখেন বাজা মৃত। নৃতন রাজা রাজ-কন্যাকে বিধাই কবিলেন। রাজকনা।, ও উপঢৌকন ইত্যাদি নতন বাজাকে দিয়া-পোলোরা পুনরায় দেশের দিকে যাত্রা করি-লেন। পারশ্র, আর্মেনিয়া পার হইয়া তাঁহারা ভেনিস অভিমুখে চলিলেন।



কুৰ্ল। খাৰ দৰবাৰে মাৰ্কো পোলে।

সতেবো বৎসব ধবিষ। মার্কো এই স্ব কার্য্য করিতে করিতে বছবিধ জ্ঞান লাভ করেন। চীন-দেশের বিবিধ পশুপন্দী, খনিদ্ধ পদার্থ, গ্রীদ্ধ- পালে। ... মার্কো ... পোলোর ভ্রমণকাহিনী অমূলা । ইহার কারণ, বর্ণনা অতাস্ত সহজ, সবল পুঝামূপুঝরপে সতা । কয়লার যে বর্ণনা তিনি দিয়াছেন, তাহা অতাস্ত ঠিক। আমা-

#### জয়ণ ও আবিদ্ধার

দের নিকট কয়ল। নিত।কাব প্রয়োজনীয় জিনিশ কিন্তু পোলোর কাছে ইছা সম্পূর্ণ অন্তত্ত, নতন जिनिष छिल। कशनांत गन्नत्व मार्का लगांता निश्वािष्ट्न, "काश्विट्य श्राट्य (Cathway) এক রক্ষ কালো পাপব পাওয়া যায়—যাহাকে জালানী কাঠের স্থায় আওনে পোডান হয়। প্রথম বারে আগুন দেওয়া মাত্র এই পাথব জলে না কিন্তু জলিলে ইহাব তাপ অতি ভীষণ।"

মার্কে। পোলোর লিখিত অনেক গল অনিশ্বাস্ত বলিয়া বোধ হয়। ইছার কারণ, নাকো পোলে। इश्रञ निरक्षत (b) (খ । छ। (पर्यम नाई- यग्रापत মথে শুনিয়াছেন।

মার্কো পোলে। কারাগার হটতে সব্রু হট্য। যথন ভেনিসে আমেন, তখন তাঁহাৰ ভাক-নাম ষ্টায়াড়িল The man of million's, কাৰণ, তিনি কোন কিছু বলিতে হইলেই খিলিয়ন কথাটি ব্যবহার কবিতেন ।

অনেক লোক বছদিন পর্য স্ত মার্কোকে বিশ্বাস করেন নাই। তাঁহাব মৃত্যু -শুযায় অনেকে তাঁহাকে পুস্তকে লিপিবদ্ধ বিষয়ের অনেকাংশ মিখা স্বীকার কলিতে অমুরোগ কবিলে মুমুর্ মার্কো দুচকুঠে প্ৰতিবাদ কবিয়া किश्लिने ३ मा. ক খনই না—আমি যাহা দেখিয়াছি, ভাহাৰ অর্দ্ধেকই বৰং লিখিতে পারি নাই।

মার্কো পোলোকে বিশ্বাস কবিবাব কারণ

অক্তান্স ভাষায় অনুদিত হয়।

# মার্কো পোলোর নিজমুথে বণিত ভ্ৰমণ-কাহিনী

আমি যে ভ্রমণকাধী হইয়াছি, সে কেবল আমার বাৰা শিকোলো পোলো ও কাকা মাফেও (পारलाव कुना। >> ৫৪ भः भागान करमन नदमन আমার বাবা ও কাকা গুজব শুনিতে পান যে, ক্যাথে প্রদেশের ধন-সমৃদ্ধির তুলন। নাই। এই থবর শুনিমাই আমাৰ বাৰা ও কাকা ৰুচন দেশ দেখিবাৰ জনাও ধনলাভেৰ আশায় উংশ্ল হট্যা উঠেন ও শীঘ্ট যাত্র। করেন। তাঁহারা সেখান হুইতে নানা দ্ৰা লইয়া কনষ্টাণ্টিনোপলে যান ও পরে বোখাবা যান। এখানে একজন সম্রাস্ত বাজি তাহাদেব চীন-সমাট কুব্লা খাবে দব-বাবে লইয়া প্রিচয় ক্রাইয়া দেন। টান-ম্মাটের সহিত সাক্ষাৎ করিবাব জনা পেকিং যাইতে তাঁহাদেব পূৰ্ণ এক বংসৰ লাগিয়াছিল। সমাট তাঁহাদিগকে সাদৰে গ্ৰহণ কৰেন। কুব্লা 🎳 মাফেও পোলে। ও নিকোলে৷ পেলোব নিকট উহিচিদ্র দেশের কথা, ধর্মের কণা খুব আগ্রহের স্থিত জানিতে চান। ইহার করেক বংসর পরে সমাট আমাৰ বাৰা ও কাকাকে পোপেৰ নিকট



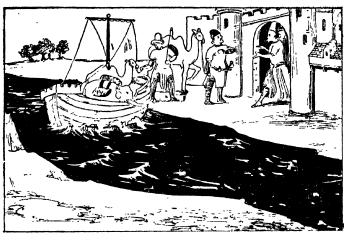
মার্কো পোলো ভাঁহাব ভ্রমণ-কাহিনী বলিভেছেন

আছে। বন্দী অবস্থায় তিনি যে লমণ-কাহিনী: ভাষায় লিখিত হয়, পরে কয়েক বৎসরের মধ্যেই 🖟

হটতে একশত জন বিজ্ঞ প্রচারক আমিবার জনা মুখে আর্ত্তি করিতেন, তাই। প্রথমে কবাগী ্দেশে পাঠাইয়া দেন। তাঁহাব। যথন ভেনিদে,আ্দেন ্তখন খামাৰ বয়স পনেরো বৎস্ব মাত্র। এই

# → শিশু-ভারতী

সময় পোপ হঠাৎ মারা যান। কাজেই, চীন-: সমাটেব নিকট যাত্র। করিতে দেরী হইয়া গেল। ঠাহাদের দ্বিতীয় যাত্রায় সামাকে সঙ্গে লওয়। আমার মনে হয়, পৃথিবীর মধ্যে এমন ত্ম্মর সহর আর নাই। তেনিসের মত সহরটির চারিদিকে জল। কাজেই, ইছাতে প্রায় বারো হাজার



ওমজি নগরে মার্কো পোলোর অবতরণ

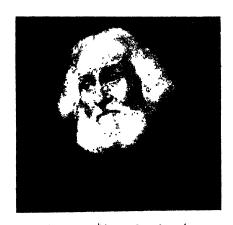
ল। আমার আনদের আর সীমা রহিল না।
আমাদিগকে আর্মেনিয়া ও পারস্তের মধ্য
দিয়া থাইতে হইয়াছিল। নানা কারণে চীনসমাটেব দরবাবে পৌছিতে আমাদের প্রায় পাডে
তিন বৎসব দেরা হইয়া গেল। কির্মানের
পার্থরের খনি, অভান্ত ক্রতগামী ঘোডা, প্রকাণ্ড
বড হ্ধের মত সাদা যাঁচ, আন্চর্যা ন্তন পাখী,
দামী পাথর, লোকজনেব অত্ত আচার-বংবহাব,
আরও অনেক আন্চর্যা ন্তন জিনিষ আমবা পথে
দেখিয়াছিলাম।

চীন-স্মাট কুব্লা খাঁকে আমনা পুব ভালবাসিতাম। তাঁহার সভার আমনা প্রায় সতেরো
বংসর কাল কাটাইয়া আসিয়াছি। আমাদের
পুবই সৌভাগা যে, সমাট আমাদের অভান্ত স্থেক করিতেন। সমাট দেগিতে স্পুক্ষ ছিলেন।
দৈখা মাঝারী, গায়ের বর্ণ উজ্জল ও চক্ষ রুক্ষ ছিল।
তিনি আমাকে অনেক জায়গায় পাঠাইতেন।
রাজধানী পেকিং আশ্চর্গা স্থলর নগর ছিল।
রাজাগুলি চমংকার চওড়া ও সোজা ছিল।
স্থলর স্থলর বাড়ী, বাগান ইত্যাদি থাকাতে
সহরটিকে আশও স্থলর দেগাইত।

পেকিংএর অপেক। ও স্থন্দর ছিল হাং-চু নগরী।

পাপরের সেতু' ছিল। আর সেতুগুলি এত বড় যে, তাহাদের নীচ দিয়া অনায়াসে একটি জাহাজ যাতা-য়াত করিতে পারিও। বণিকেরা এত ধনী থে, তাহা বোঝান যায় এদেশের ञ्चनित्रो∖। লোকের কাগজেব নৈকাৰ প্ৰচলন দেশেও আছে ৷ এ-লে!কেবা কুকুব ઉક વાગાના

অনেক জানোয়াবের মাংস খাষ। সহবটিতে সাধারণের জন্য চারি হাজার স্বান্যার আছে। এমন আব কোনও সহরেই দেখি নাই।



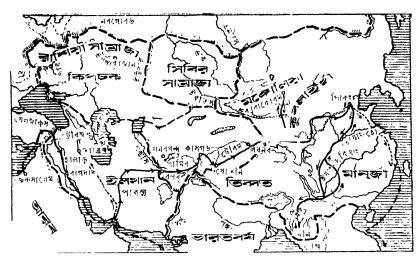
মার্কো পোলো (টিটান অঙ্কিত চিত্র হইতে) ি সমাট কুব্লা থাঁর সভায় আমরা বড়ই স্থথে ছিলাম। কুব্লা থাঁ প্রায়ই বিরাট ভোজ দিতেন। তাহাতে

#### + ভ্ৰমণ ও আবিষ্কাৰ

প্রায় চল্লিশ হাজাব লোক নিমন্ত্রিত ছইত। স্মাট্রের তাঁহার আমীন-ওমরাছরা নিজেব। প্রিবেশন করিতেন। প্রিবেশন করিবার সময় পাছে নিঃশাস্থ্য প্রার্থিক সংজ্ঞান তাঁহার। ভোয়ালে ধারা মুখ্টাকিয়া লইতেন। স্মাট্রের গে বিরাই প্রিমাণ উপনেকন আসিত, তাহা বলিতেছি শোন। পাচহাজার উই, এক লক্ষ্ণ স্থাকর গোড়া, সোনারপ্রি বাপ্তে মোচা পাচ হাজার হাতী, হয়ত তিনি এক এক বার পাইতেন। আব্র একটা মন্ত্রাপোর ব্লিতেছি, শোন। একটা প্রকার সিশ্চ স্থাট্র স্থাকে এমন বিনীচ্ছারে ব্যিয়া

জ্ঞাপান দেশেও আমি গিয়াছি। এদেশে এক রক্ষ লোক আছে—মাহাদের গামের রং পীত, বাবহার এডান্ত ভদ্ধ। এদের একজন রাজা আছেন ও এদেশবাসীর। পুতুর পূজা করে। সমাট কুর্ল। গাঁ একবার ইছাদের রাজা আক্রমণ করেন ও এদেশের অনেক সোন। নিজের প্রায়াদে লইম। মান। সমাটের আদেশে আমি তিবহুত ও সমস্ত দক্ষিণ-পশ্চিম এশিমা—কাণ্টন হইতে বাংলাদেশ প্যাপ্ত ন্মণ ক্রিমাছি। কিন্তু চীনদেশই আমার স্ব-চাইতে হাল লাগিয়াতে।

হত্যাল টীনে থাকিয়া, আমাৰ ও আমাৰ বাৰা, বাকা স্ক্ৰেবই বাড়ী ফিৰিবাৰ্জজুমন উত্লাভইয়া উঠিলা কুবলা খাঁব আমাদেৰ অভ



মার্কে। পোলোৰ ভ্রমণ-পথ এই মান্চিত্রে চিহ্নিত কবিয়া দেওয়া ১ইয়াছে

চান-স্মাটের বাজোব সংখ্যা ছিল চৌতিশ।
সমাটের দুতেব: বাজোব স্ব থবর আনিয়া দিও।
সমাট্রাজোব সমস্ত থবরাগ্রর বাজিতেন। যদি
কোন শাজো ছাজিক হছত, তাছ। ইইলে সে বংশ্র
প্রভাবেন কোন রাজকর দিতে ইইত না।

চীনে আমি এক বক্ষ আশ্চৰ্যা কালে। পাপব দেখিয়াছি – যাহ। জালানী কাচের মত্ব্যক্ষত হয়। মৃত গাছেব উপৰ অনেক গুটি পোক। দেখি-য়াছি। এই জন্মই চীনদেশ বেশমেৰ জন্ম বিধাতি। শীঘ ভাড়িয়া দিবাৰ ইচ্ছা ছিল না। কিন্তু এসময় একটা স্থানাগ জুটিয়া পেল। এসময় পারস্থোব এক বাজা কুবলা গাঁব পরিবাবের এক বাজাকভাকে বিবাহ কবিতে চাহিলে। ঠিক ছইল, আমরা বাজকভাকে পোঁছাইয়া দিব। কাৰণ আর কেছই প্র জানিত না। অনেক দিন যায়োয় কাটিয়া পেল। পাবস্থোপৌছিয়া জানিলাম, বাজা মৃত। বাজকভাকে বর্তুমান বাজাব সঙ্গে বিবাহের জন্তু

# শিশু-ভারতী

৯২৫ খৃষ্টান্দে আমর। বদেশ তেনিসে ফিরিয়া আসিলাম। কিন্তু কেহই থামাদের চিনিতে পারিল না। চালিকা বংসর আগে যে পোলোরা দেশ ছাডিয়া কোন্ অজ্ঞান। বিদেশে চলিয়া গিয়াছিল, আমরা যে তাহাবাই—একণা কেহই বিশ্বাস করিতে চাহিল না। অবশেষে আমি একটা ফলী করিলাম।

দিয়া থানিকটা কাটিয়া ফেলিতেই বৃষ্টির মত দামী হীরা, চুণি, পায়া ইতাাদি পড়িতে লাগিল তথন হাহাদের আশ্চর্যোর আব সীমা রহিল না। আমা-দেব গল্প ক্রিয়া তাহারা ত আরও অবাক্। তথন আমার থুব আনন্দ হইতেছিল।

আমাৰ কাহিনী হযত কোনদিন লেপাই হইও না। কিন্তু এক আক্ৰয়া কাৰণে তাহা ঘটিয়া গেল।



পুৰানে। পোষাৰ কাটিতেই ব. ১০০ ১ ২০ বি গাঁলত হ'ত

স্কলকে এক বিবাই ভোজে নিমন্ধণ ববিলাম।
আচিংবের স্ময় আমব, তিনজন গোল বক্তবর্গ
সাটিনের জামা প্রিয়া আমিলাম। কিছুক্ষণ পরে
সেই দামী জামা চাকবদেব বিলাহয়া দিলাম ও
অক্স রক্ম দামী ভেলভেটের পোলাক প্রিয়া
আমিলাম। চীন্দেশের দ্বনাবের দামী পোলাক
দেখিয়া আমানের অভ্যাগতের। বেশ গানিক
আশুন্ম হইমা গোল। স্থন আমি ভিন্টি প্রানে
পোলাক লহয়া আমিলাম ও হেই পোলাক ভ্রি

আমি মধন নদী অবস্থাৰ কাৰোগাৰে ছিলাম, তথন আমাৰ একজন স্কী বন্দী ছিল - এছাৰ নাম প্ৰিসান বাষ্টিসিধানে (Pisan Rusticiano)। আমি হাছাকে বাছা বলিওম, মে তাছা লিখিয়া লাখিত। এখন আমি এই বথা বলিয়া শেষ কৰিছেছি বে, আমি মহি বল্লিত কৰিয়া কৈছু বলি নাই। প্ৰবণ্ডী কাজেৰ বিখ্যাত অবিদ্যাৰক কল্পাস্থাকে প্ৰোল্যৰ দ্যাক প্ৰাভিত্যৰ দুপ্ৰাণিত ছইয়াছিলেন।



# পুরানো বাড়ী বা প্রাচীন মন্দিরের পাথবের দেওয়াল জার্ণ হয়ে যায় কেন

তোমৰা আনেৰ দেশৰ প্ৰানে প্ৰানে ৰাজী বা প্ৰাচীন মন্দিৰ দেখতে গিয়ে



कौतापुरः शासारभण्डः देपव श्राम[र्शः,क्रश्च (organic substances) गिर्कः, मन विध्वप-

নিশ্চমত এটা লক্ষা ক্ষেত্ৰ যে, তানেৰ দেওমাল সাধ্বিদ্যঃ এক পাথব নিমে তৈলী পালে । পাথব ত আৰ নাটিৰ নাল নাম জিনিম নাম যে, নাড, জল বা বেদে এটা সাব সাজ লক্ষ্য বাবে পাথবেৰ পাছাত্ৰিয়া মান যে, লক্ষ্য লক্ষ্য বাবে পাথবেৰ পাছাত্ৰিয়া মান যে, লক্ষ্য লক্ষ্য বাবে পাথবেৰ পাছাত্ৰিয়া মান যে, লক্ষ্য লক্ষ্য বাবে পাবেল বাহা এই সাব লক্ষ্য পাবে বাজালো পাছাত্ৰ বাটি দাথব এনে বাজালা কাৰে ভাবাল, ন্বাৰ ভাবেও আবাস ই পাছাত্ৰেয়া মহাই ক্ষাল হবে নি হাবেও আবাস ই পাছাত্ৰেয়া পাছাত্ৰ মহাই ক্ষাল বিল গোল কাৰে হবে মানাৰ উপজ্জন ছ'ল --তেত নছাৰ যেতে না যেতে মানিব কোনো চিজ্ঞী বহঁল না।

প্রকৃতি যে সব সেতাসান স্থানের কারণ অগ্রসব হন, তাদের মধ্যে প্রধান ধারা, তাদের মধ্যে প্রধান ধারা, তাদের আকার এত ক্ষুদ্র যে, চোরে দেখা অসন্তর । তাদের দেখা প্রধান করিছে যে দেখা আন আকার সকলকে অনুসীক্ষণ দিয়েও যে দেখা যায় তা ন্য। এদের নাম microbes বা জীবাণ। উদ্বিদ বা প্রাণীদের প্রায় সব বোজের মূলে আছে এই বক্ষ ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র স্থান প্রধান হয়। বাবে বদি আমি বলি যে, পাপস্প্রানে। হ'লে তাথেকে ভাল ভেডে আসা বা ভাগে। হ'লে তাথেকে ভাল ভেডে আসা বা

ভারে তেওঁ প্রথা—এনে বর্ত্ত বিধ্যাল কর্ম এক লাভীয় জীবাণ্ট স্ক্রমান। কেমন ক'রে ভারা এই পাধ্বকেও ধ্বংস ক'বে কেলে সেই কথাই বলছি।

ভূমি বলে গ্ৰহণ ক'বে থাকে, অজৈব (inorganic) किनित्यत पिरक शता तक एकका प्रष्टि (प्रथाना । কিন্তু কৰেকটা এমন খন্তত জীবাণ আছে যাবা অজৈৰ (inorganic) পদাৰ্থৰই প্ৰচল কৰে र्शाप्तर गारा (कर्षे (कर्षे ammonia)क তেত্ত নাইট্রাস্ এক্সাইড গ্রাস তৈতী করে। কেউ ব: ধ্বোৰ গন্ধকেৰ যেগিক (sulphur compounds) থেকে গন্ধক বাব ক'ব নেয়াও शक्तकत्व देशकी करता। जाई बर्जन गाम (५८म) হারতে nitritying bacteria, sulphur bacteria, iron bacteria Fiffe ! কথাৰ এলেব বলা হয় হেট্টোফিক (hietrotrophic bacteria) জীবাণ। এই সৰ জাৰাণু আকাশে, মাটিতে জলেব মধেতে নালাৰকমে প্ৰিবৃত্ত্ৰ ক'ৰে পাকে। মাটিতে যে গোৱা (nitre) দেখতে পাওয়া যাম তারও মুলে এদেবই জাতভাই বৰ্ত্তমান। পাথববেও প্ৰণ্য কৰতে <u> १८, ५ वर्ष व्या १५ वर्ष वर्ष १५ १ वर्ष १</u>

পাণরের উপকরণের মধ্যে নানান্ রক্ষের ভিনিম্ব গাকে। তার মধ্যে শিলাকণ (silicon) মূলক পদার্থই প্রধান। মধ্যে মধ্যে সামান্ত জৈব পদার্থ (organic substances), নেজজান (nitrogen) ও গন্ধক মূলক পদার্থও বর্তমান থাকে। জীবাণ্ডলি এই সব পদার্থের মধ্যে প্রবেশ ক'রে কার্বনিক য়াগিড, নাইটি,ক য়াগিড, গন্ধকজাবক ইত্যাদি তৈবী করে। এতে পাণরের শ্রীবও থে স্থানে স্থানে হুর্বল হ'লে পড়বে তাতে আব সন্দেহ কি ? তাছাড়া এই জাবকগুলি পাধরের মূল অংশে লেগে নানারক্ষের সালফেট (sulphate), নাইটেট (nitrate) ইত্যাদি তৈরীক্ষে। পুরানো পাধরের গায়ে সাদা সাদা চুণের মত দাগ লেগে থাকতে দেখতে পাওয়া যায় বা চটা উঠে পেলে ভেতবে সাদা ভালের মত দেখা যায়, তা এই সব নাইটেট বা সালফেট ছাডা আব কিছুই নয়। পাধরের শ্রীবের মধ্যে এই এত্যাচার হ'লে সে আব ক হদিন টিকে থাকরে, হারতে।। দিনে দিনে হার চটা উঠে পিয়ে ক্ষমে ক্ষে পো শিক্তি হবার প্রে আগ্রামর হয়। এই হ'ল ভার ক্ষণে-প্রথমর ইবিহাসে।

# नमी अँ तक (वँ तक हतन (कन ?

পৃথিনীৰ একটি গুণ খাছে--সে এৰ পিঠেব উপর যা-কিছু আছে স্কলকে নিজেব কেলেব मितक स्वतिमा **आकर्ष**ण क<sup>र</sup>त्त तार्थ। यमि अत উপবেদ কোনো বস্ত অঞ্চ কাক্ত্র সাহায্য নিয়ে পালিষে যেতে চায়, যে মহতে স্থানিধা পায় পুথিনী থাবার ভাকে টেনে নিজেব কাছে ক'রে নেয়। মনে কর, সমুদ্রে জল আছে। এই জল যদি আকাশের ফর্যোর কাত থেকে উত্তাপের সাহায্য নিয়ে ৰাপা হ'য়ে ছষ্ট ছেলেৰ মত ৰাড়ী থেকে পালিমে যাবার চেষ্টা করে, পৃথিনা কি সভি। সভিয় তাকে পালাতে দেয় নাকি ৮ ছেলেব পতি তাৰ মায়েৰ আকৰ্ষণেৰ দৃষ্টি যেমন প্ৰতিনিয়ত সচেতন থাকে. পৃথিবীৰ আকর্ষণও জলকণাগুলিৰ উপৰ সদা-স্কাদাই তেমনি বর্ত্তমান থাকে। ভাই সে নানান উপায়ে ভুলিয়ে ভুলিয়ে বর্ষার বৃষ্টির আকাবে, পাছাডেব উপৰ নৰণ আকাৰে নিজেব মত কাছে সক্তৰ টেলে নেয়। নদীয়ে চলে ভাৰ মলে পৃথিনীৰ এই আকৰ্ষণ ৰয়েছে। নদীৰ প্ৰত্যেক জলকণাকে পথিনী টানছে, আৰু ভাৰাও গড়িয়ে গড়িয়ে চলে আসছে ।

এখন কথা ওঠে সোজা গভালেই পাবে— এঁকে বিকে যায় কেন ? এটা অবগু নির্জ্ঞন করে মেখান দিয়ে নদী করে যায় সেই জায়গাব স্মতার উপব। যদি দেশকে-দেশ শুধু একদিকেই গভানে হয়, কোথাও একটুও উঁচু-নীচু না থাকে, তবে নদীও সোজাই যেতে পাবে। কিছু একেবাবে সমতল জায়গা ত আর কোথাও নেই। উঁচু নীচু ভ স্ক্তিই আছে—কোথায়ও বা বেশী।

ভাই নদী তার চলাব জল্ঞে সেই পণই বেছে নেয়.
যে-পথে সে পৃথিবীর কেন্দ্রের দিকে সব থেকে
ভাডাভাডি যেতে পারবে। অর্থাৎ সে মে জ্বমিট।
সব থেকে চালু সেই দিকেই অনবরত নিজেব
গতিব মোড ফেরাতে থাকে। কান্ডে কাজেই.
ভাব চলাব প্রতাও আঁক। বাকা হয়ে ওঠে।

তোমৰা কগনও যদি উড়ে। জাহাজে চড়ে পুৰ উচুতে উঠে পুথিবীৰ দিকে চাইছে চেই। কৰো, ভবে তোমাদেৰ নীচে খুব বিস্তীণ জান চোগে পড়বে—অৰ্থাৎ পুথিবীৰ পিঠেব এনেক্ষা ভোমাদেৰ দৃষ্টিপোচৰ হবে। মাটিতে দাছিয়ে কিংবা খুব উঁচু বাড়ী বা মিনাদেৰ পুপৰে উঠুলে যতটা জায়ণা চড়ুৰ্দিকে দেখা যায় তাব চেয়ে বতগুণ বেশী প্ৰিমূৱ জান ভোমৰা দেখতে প্ৰান্ধি। নদী যে কি বক্ম একে বেকে চলে এই এবজাৰেই খব ভাল ক'বে বোকা যায়। এ এমনই একটা নড়ন ও অভিনৰ দশ্য যে, একবাৰ দেখালৈ বা ভোম হুম স্বাজীবন মন্ন পাকবে।

# পাথরে পাথরে ঠোকাঠুকি হ'লে আগুন দেখা যায় কেন ?

জড় জগতে কোনো নিগণের ব্যংশ হয় ।

মা হয় তার নাম কগান্তব। তুমি মারে ব্যংশ লক্তি ।

হা শুধু তোমার কাছ পেকে তার অধ্যান ভাচা
আব কিছুই নম। প্রষ্টিও সেই ভাষর তোমার কাচে
তার আবিহার। একটি গানে ত্রির হানিবাই, জল
বেখে দিলে কয়েক দিন গারে তার এব নিশ্প
অবশিষ্ট থাকে না। তারলে কি বলাত হরে যে,
জলটার ক্ষাপ হয়েছে। জলটা মতিসের মধ্যে
মিশে আমাদের কাছ থেকে অস্কুলন কবল মাজ—
তার প্রতি কণাটি কিছু যেমন ছিল তেমনই বইল।
স্কুটির জল্য উপক্ষণ দ্বকার। যে প্রিমাণের
উপক্ষণ, স্কুটিও কিক মেই প্রিমাণের—একট্রুও
ক্ষার বেশী হয় না।

্রকটা পাপন মন্ত একটা পাপনের প্রতি বেপে বালিত হয়ে তার পায়ে আঘাত করল, আর হঠাৎ বাধা পেয়ে পেযে পেল। ফলে হ'ল এই যে, যে এনাজ্জী (energy) পাপরটার গতিবেগের মধ্যে নিহিত ছিল, গতিটা হঠাৎ থেমে যাওয়াতে, ধ্বংস হতে পাবে না বলে, তা পাপর ছটিব মিলিত স্থানের কণাগুলির (molecules) মধ্যে সংক্রামিত হ'য়ে সেগুলিকে ভবক্বব

# কি ও কেন !

উত্তেজিত ক'বে দিল। কোনো কোনোটি কণঃ
(molecule) আঘাতটাকে সক্ষপ্রথম মাণা পেতে
নিষেতিল সেই কণাওলো যেওলো ২২০ জাবাব
উত্তেজনার আধিকো জনে উঠে ভিট্কে নেবিয়ে পেল। এই প্রজলিত কণাওলিব ভিট্কে বেবিয়ে
যাওবাটাই পাণবে পাণবে আঘাত লাগলে বব আগত সৃষ্টি হতে দেখাম। ওটো পাণবের পরক্ষর আঘাত লাগবাব জানটা যদি আগাতের ঘনাবহিত প্রেই ক্ষাক্র করে সেখানকার কণাওলি যে উত্তেজিত হয়েছে তা তাদের উত্তপ্ত ঘরস্থা পেকে

# নদীর উপর অনেক দূর পর্যান্ত শব্দ শোনা যায় কেমন ক'রে ?

প্ৰদানে বিভালের ভবজ মারে, ভা এখন আব एकार्मित को "५ महम कथा गया (भिन्छ-छात्ही ১২ শতু, ১০১ প্রি:) ৷ শক্ত তাল্ট ব্রিসের ক্র:-ব'লা লাচ'ত পাকে, থাক এই লাচন বাভাগেক স্ব সংক্রে ছিলে গছে। কিছ দৰ্ম মণ ाली कर र था। त. नाराध्य (नवंध र कहें) करम খাত . ৭ % সেই জন্মেই দৰে গৈলে শ্লেৰ জোৰও কমাত পাৰে। বকালো কৌশলে যদি এমন কৰ। বাব বে, শ্ৰুটা ছডিয়েল। প্ৰে, শুধু এব দিকেই भाग, (तुम्राज (5) ११६ महारा कुली स्वार्त अस अस কি৷, ৩৯০ হে দিবৈৰ বা গ্ৰেষ ৰণা গুলোৰ নাচনও অত হাছা হাছি আৰু কমে না, আৰু শক্ষ অনেক प्य भागा कु 5 जि. (पर कु क्यारिय । । । कर्नाय अक्षय क्रिय কৰলে জলেন বিশ্বত সমতল শক্ষ্টাকে কেবল প্রিফালত সংপ্রিকানিত ক'বে চোগ্রে উপায়ে सक्तात आनक प्रत कारा छ नावित्य तात्वा. (११३) উপ্রেষ্ট তাকে খনেক দুধে নিষে চলে থায়।

এখনে আৰু একটা কথা গছে। সেখানে থনেক শব্দ গোলমাল, সেখানেও, এই পোল-মালের জন্ম, দাবের শব্দ কারে স্পষ্ট হবে পৌডায না। বিনের বেলা গোলমালের মরে যে ডোই

# দিনের বেলায় নক্ষত্র কোথায় গায় গ

शिर्वत र त्यार् १४ वक्तव चात्र रम्ह शाहक -(काशांक 54व गांध नः । अभिका केंद्र कार्रक ক্ষেত্ৰতে প্ৰতি আ--- এই সাম নিৰ্বে সংস্থাৰ সংখ্যাৰ ८०७ ६० (तनी वहमान पार्य ५०,०४०,०८५४ সংখ্যা নক্ষ্য নিজেকে প্রকৃত্তি করতে পারে ।। किन मिक कर्मन ए यमा थात्र होता नात हेक्स वात ভাস ভগ অপ্ৰভাগি কৰা প্ৰভাগৰ সমৰ স্বা ভৰ নৰে আবে। প্রথিত ক্যাগ্র্পের স্থান থাকবেশ অনেক সক্ষা (৮খা । গাওসা সাব। কিন্তু প্রধান সম্মতাভাও লক্ষ্য দেখা সভ্যা মলি বোলো খাগভীৰ কংগ্ৰমন্তে কোৰে যাও, কেব প্ৰীৰ श्ला हल्या नः अक्ट- १००/४०० कृते श्रीता ভ্ৰুষ্, চাৰ্ভ) আৰু ভুষ্ণ যদি আকাংশত দিকে চাও, ৬খন আকালে নজন কেল্ডের গণলে সংগ্রাব আংলোকে এত নীচতে বেতৈ হ'লে ভাবে উদ্ধান। अर्बक कर्रम गाम--कार्डक, माधान देशनकार আবালে ভ্ৰন নক্ষ্য ন্ধ্ৰিৰে আছে। আগণ কণা, ক্যাকে স্বাও—এঞ্জের আবিভারের জারে 한 학자 회(주 회(\*\*\*\*) 추가 \* 한 주 하( )



#### গান

छन्टक नौ-नवभक्ष्ठान

জননি, তোমার করুণ চরণ খানি হেরিমু আজি এ অরুণ-কিবণরূপে। জননি, তোমার মবণ-হরণ বাণী নীরব গগনে ভরি উঠে চুপে চুপে॥ ভোমারে নমি হে সকল ভূবন মাঝে, ভোমারে নমি হে সকল জীবন-কাজে; ভক্ষমনধন করি নিবেদন আজি ভক্তিপাবন ভোমার পূজার ধুপে॥

# স্বরলিপি

| ll সাম্না        | সান সনাদা   | -ণদা দপা পমা মগা       | গাঝাগামা          |
|------------------|-------------|------------------------|-------------------|
| জ ন৹             | নি ৽ তো৹ মা | ০ ০ বৃত ক্র            | - ণ, চ <b>র</b> ণ |
| a I              | >           | <b>ર</b>               | •                 |
| মা-া-ঋাসাI       | সাঝা 🕽      | মামামামা               | মাপাণদাদপা        |
| <b>খা • •</b> নি | <b>ভেরি</b> | <del>হু,</del> আম জি এ | জ্ম রুণ কি ০      |
| 8                |             |                        |                   |
| ∤ পা পা -পা -জা  | -भा भा -1   | সা II                  |                   |
| র ণ • •          | • র ০       | পে                     |                   |

>' II {मा भा | पन नामां | नामां मां भा | प्रतामानामां নি- ভোমা क न ণ হ র ণ ০ র, ম র b' | क्षा -1 मा -1} I ঝাগাঝাসা ৰ্মা গা সানা-দা-না বা ৽ ণী • ની વ ব, গ গ নে ভ রি ৽ ৽ -জা-পাঝাস৷ II । भा भा भा भा । डे छ ह भ • " b (4 >' भा वभा पभा वभा II {r|r|| वमा भा भा भा भा भा भा -भा রে, ন^ মি০ (২০ ভো মা স্ত ক কা, সু ব ল মা ০ œ > • সানা দানাদাপা 1-171-11 માં બાગાબા · (4) · · তো মা রে, ন মি ১ে भ क न, जो >' 8 æ {মা পা মাগাগা-- খাসা-া-1} I पमा पर्भा ना मा। ৰ ন. কা ০ " (\$7 ° ° ত শ্ব মং লং ধ ল -1 거 -1 -1} স্বিৰ্মানা সাস্থি স্থ sit -1 1

• f@r • •

র, পূজা - র, গৃ - পে

সানা-দানা দাপাপা-জা পাঝা-াIII

· + + + 927

দ ন, আং ∽

তো মা ৽ ৽

ক রি নি বে

–ঝাগাঝাসা

কি পা∢ ন

\$



# উদ্ভিদের শরীর

কোষ

ব জ' ান-নানা সংগ্ৰা ক'ৰ ক'ৰে বত কথাই জানিক ব্যাবিনাছ। এই বে চুফুজিব আজ্ঞান কবিষ, কত তথ্য ভাষা, বাং স্কাৰ্ডই বুক্ষ

53149 ওলা, ব - স্থবহং বৃক্ষ ভাষাদের জামাল (मा = । अति व ता इति - - इंकारमत सकरलत्ई त्य भागारकत गण शाम आरफ, कार्ना-नकि आरफ, ৩ছে। (এমিব) জান। ইছাব। আমাদেব প্রত্ত ৮প্ছাব দেশ কত **সুমিষ্ট** ফল্, কত ক্**দীন ফু**ল্, আমাদেশ নিত। প্রয়েজনীয় আলও বত কি। হ'হাব। আমাদেব মৌন মুক্যকু—গুড়েব ব্ছিবে থাকিষা ইভাব: আমাদেব কভক্ষণে সাহায্য কবিং • ছে। ইহাদের সম্বন্ধে জানিতে কাহার ন। ইন্ডা হয় প্রহাব, কেমন ক্রিমা দেছ গঠন করে. বেমন কবিষা অম্বত হুইতে ব্যক্তিয়া উঠে, কেমন ক্ৰিম, ফল, ফল ছত্যাদি টুৎপ্ল কৰে-এই সৰ পশ स्थान गृहे (अभारति भरते हेनस इस । । । । । । ইহংনেল দেহগঠন সম্বন্ধ এবাব ভোমাদিগকে জই वकति कथा र लिए।

তেমবা পতি দেখিয়, আক্রা হও, ইপ্পিন দেখিয়া চম্প্র ইও। পতি বেমন ক্রিয়া সম্ম বলিয়া দেখ, ইপ্লিন বেমন ক্রিয়া বেলগাড়ী টাবেন, ইছা তারিয়া তেমবা বিক্ষিত ছও। কিন্ত প্রাণীব জীবন-বীলা, জীবদেখের ক্ষোকারিত। ইভাবের চেয়েও অবিক আক্রান্তনক। পতি ওইজিন চালিত হয় মাজ্যবের গ্রেছায়ো বাতীত ইছাব। কাষাক্ষম ছই, ত বা\্ব না। কিন্তু যে পৃষ্টি-, কৌশল মায়ে-যেব এবং সমগ্র জাব-জগতেব জাবন-ক্ষিঃ নিম্প্রিত ববে,

গ্রাক সভাই অপুর এবং অংশশুনা নতে ?

টুডিদ-দেতের গঠন মন্বলে তেনিবলৈর সকলেবই একটা সাধাৰণ জ্ঞান আছে। এটা এই যে, প্রত্যুক বক্ষেরই প্রতি আছে, দাল-পালা আছে, স্বজ পাতা আছে ত্রবং মাটাব নাঁচে শিক্ড আছে । ১য় ৩ সম্মবিশেষে ফল এবং ফলও দেখা যাইতে পাবে। কিন্তু এই সকল বিভিন্ন অঙ্গ কিলেৰ দ্বাৰ। এবং কেমন কৰিয়া গভিষা উঠিবাছে, ন্তাকি তোমৰাজ্ঞান ও এইকপ প্ৰশ্ন যদি কেছ জিজ্ঞাস। কৰে তাহ। হইলে তোমৰ। এহাকে কি উত্তৰ দিবে ভাছাই বলিতেছি। তোমবাথে গুছে বাষ করিতেছ, ভাষা ধৈয়াণী করিছে হয়ও দেখিয়াছ এবং জান যে, ইছাব প্রত্যেক দেওয়াল ইটেব উপৰ ইট সাজাইয়। নিশ্বাণ কৰা হইয়াছে। জীন এবং উদ্বিদেব দেহও এইরূপ ভোট ভোট অংশ দ্বার। গঠিত। এই অংশের নাম কোর। আমাদের শ্রীর, জীব-জন্ম শ্রীস, গাছ-পালার শ্বীৰ এইরূপ বহু কোষ দ্বাৰা নিশ্মিত। তোমবা প্রভাহ কর প্রাণী, কর উদ্বিদ দেখিতে পাও অর্পাৎ প্রভাত বছ লক্ষ্যের বিচিত্র সমাবেশ বিচিত্রত্ব রূপ লইয়। তোমাদের দৃষ্টিপথে পতিও ছইতেছে কিন্তু কোশই হইতেতে জীবদেহের পুনর্গঠনের মল।

# উভিদের শরীক

পুর্বে পূথিবী ভোষাদের মতই वयस्य इहा हिन। पृथिवीत त्महे देनमवावस्त्राग्न यथन প্রথম জীবনের সম্ভাবনা হইয়াছিল, তখন প্রথমে এক-কোষ প্রাণীরই আবিভাব হয় : ইহারাই জীব-জগতের আদিম অধিবাসী। ভাহার পর বহুকাল ধরিয়া বছ কোৰ মিলিয়ামিশিয়াসমবেত চইয়া নব নব জীব ও উদ্ভিদ-দেহ সৃষ্টি করিল। এই দিক দিয়া সমগ্র জীব-জগৎকে এককোষ ও বহুকোষ (multicellular) এই ছই শ্রেণীতে ভাগ করা যায়। এই দিক দিয়া প্রত্যেক বভকোষ ভীবের দেহকে লক শক্ষ এককোষ জীবের উপনিবেশ বলা যাইতে পারে। কিন্তু একটি উপনিবেশ বা সমাজের প্রভাক নর নারীরই যেমন অবাধ মাণীনভাপাকে না, সমষ্টির মঙ্গলের জন্ত সকলকে যেমন কতক গুলি সাধারণ নিয়ম मानिया नहेट इय. (उमनि वहरकाय-(पहक्री উপনিবেশে সমবেত চুট্যা সমস্ত কোষ্ট ভাগাদের স্বাধীনতা হারাইয়া ফেলিয়াছে এবং যেমন একটি উপনিবেশ বা সমাজের সকলেই এক কাছ করে না---(कह कृषिकार्ग) करत. (कह वावनाय, (कह वा अपना (कानकार कोविका व्यक्तन काद्र-(उम्मिन (माइन्र প্রত্যেক কোষ-সমষ্টির জন্ত পুথক পুথক কার্য্য নির্ক্ত-পিত আছে--যেমন পাক্তনীর কোষ্ণুলি থাত পরিপাক করে, ফুসফুসের কোষগুলি নি:খাস-প্রখাদের সময় কাজে লাগে। এইভাবে প্রভাক काष्ट्र कीवानशक मधीव कत्रिया वाश्वितात क्रम. কার্যাক্ষম করিয়া রাখিবার জন্ত ভিন্ন ভাল করে। তাই দেহের আভাত্তরিক কোষগুলির জাবনী-শক্তিই প্রত্যেক বহুকোষ জীবের জীবনী-मक्ति। (मधन धतः (प अश्राम--- (य ইটগুলি এক ख কবিষা দেওয়ালটিকে ভৈয়ার করা হইয়াছে সেই ইট n'লর গুণের উপরেই দেওয়ালটির স্থায়িত নিভার করে। ইটগুলি ভাল হইলে দেওয়ান্টিও শক্ত क्टेटर এवः वरुपिन पाँछाहेशा शिक्टर: टेंडेखिन ধারাপ চইলে দেওয়ালটিও শীঘ্রই ভাঙ্গিয়া পভিবে। এইরূপ দেহ যে কোষগুলির বারা তৈয়ারী হইয়াছে দেই কোষগুলির একত্রীভূত জীবনীশক্তিই প্রভাক বলকোষ জীবের জীবনীপক্তি। তাই জীবসম্বন্ধে যত প্রশ্ন যত জিল্লাসা, সেগুলি সমস্তই প্রকারাস্থরে কোষ-স্থন্ধী জিজ্ঞাদায় পরিণত হয়। জাববিভায় ইহাই হইল কোষের প্রাধান্তের কারণ। এখন কেবে সম্বন্ধে বিস্তাৱিত ভাবে বলিতেছি।

কোষের আয়তন অভিশয় ক্র। অণুবীক্ষণের

নাহাযে পরীক্ষা করিলে দেখা যায় যে, কোষ নানা আকারের হইয়া থাকে। যথা লখা, গোল চডুছোল এইরূপ। প্রভ্যেক কোষ জীব-পছের এক একটি কুম্ম কুম্ম অংশ। উদ্ভিদ কোনের একটি বহিরাবরণ বা কোষাবরণ থাকে, কিন্তু প্রাণীর কোষে (animal cell) ইহা সচরাচর থাকে না। এই আবরণের ভিতর যে জীব-পছ (Protoplasm) আছে, তাহাকে কোয-পছও বলা হয়। জীব-পছ কোষের ভিতর কার সমন্ত স্থান ভূড়িয়া থাকে কিংবা তাহার মধ্যে ফাঁক বা রক্ষ্যু দেখা যাইতে পারে। কোয-পছে কোমের একটি প্রধান অংশ নাভি থাকে এবং ইহার মধ্যে জালের আকারে একে পদার্থ থাকে, যাহা অভি সহজে রঙীন হইয়া যায় বলিরা উহাকে কোমাটিন (Chromatin) বলে।

ইতিমধ্যে হয়ত নানা প্রাণ্গ তোমাদের মনে উপস্থিত হইয়াছে। কোষ-পাঞ্চর সহিত নাভির সম্প্রুকি প্রকারের ? উহারা পরস্পর কিরপে সংযুক্ত ? উহানের মধ্যে প্রকৃতিগত পার্থ কাছে বলিয়াই কোষ-পাঞ্চর সহিত নাভির ব্যবধানের স্পৃষ্টি হইয়াছে। নাভিই কোষের প্রধান অক্ষ। ইহাই কোষের সকল রকম কাগ্য নিয়্রিপ্ত করে। নাভি বাভিরেকে কোষ ধেশীক্ষণ বাচিয়া থাকিতে পারে না। একটি এককোষ জীবাণুকে যদি কাটিয়া থত থও করা হয়, তাহা হইলে সেই অংশগুলিই বাচিয়া উঠিবে এবং যে ২ওগুলিতে নাভির অংশ আছে সেইগুলিই পূর্ণ-আয়তন লাভ করিতে পারিবে, আহারে বিহারে, চলা-ফেরায় সর্করেই কোষকে নাভির শাসন মানিয়া চলিতে হয়। যেমন গৃহের প্রত্যেকই গৃহস্থামার কর্ত্ত্বমানিয়া চলিয়া থাকে।

এইবার কোষের মূল কথা বোধ হয় বুঝিতে পারিয়াছ। এগন নিশ্চয়ই ভোমাদের জানিতে ইচ্ছা হইতেছে যে, এই যে কোষ – যাহাকে লইয়া সমস্ত জীবজগতের স্পষ্ট হইমাছে, ইহার উৎপত্তি হইল কেমন করিয়া গ এইখানে ভোমাদিগকে জীবজগতের একটি গভীর রহস্তের কথা বলিতেছি। ভাহা এই যে, একটি জীবিত কোষ হইতে জার একটি কোষের আবিভাব হয়, ইহা ছাড়া আর অস্ত্র কোন উপায়েই ভাহা হয় না। জীববিজ্ঞানের এই স্থির নিছাম্বটীকে কোনরপেই অস্বীকার করা যায় না। কোষ হইতেই যেমন কোষের উৎপত্তি, জীব হইতেই তেমনি জীবের জন্ম। প্রশুহ্ কত প্রাণী কত উদ্ভিদ

জনিতেছে তাহার সীমা-সংখ্যা নাই। প্রাণী এবং উদ্ভিদ্ পৃথিবীতে বর্ত্তমান আছে বলিয়াই প্রত্যাহ নব নব প্রাণী এবং উদ্ভিদের জন্ম সম্ভব হইতেছে।

তোমনা বলিবে, না হয় মানিয়া কইলাম যে কোষ হইতেই কোষের জন্ম হয়। কিন্তু তাহা হয় কেমন করিয়া ? ইহার উত্তর শোন। একটি পুরানোকোষ হইতে একটি নৃতন কোষের জন্ম হয়। একটি কোষ হই ভাগে বিভক্ত হইলেই যে-ছানে পূর্ব্বে একটি কোম-বিভাগ (Cell-division) সাধারণতঃ গুই প্রকারে হইয়া থাকে। তাহার মধ্যে একটিকে সরল (direct) এবং অক্টাকে অসরল (indirect) বিভাগ বলা যাইতে পারে।

প্রথম সরশ বিভাগের কথা বলি। ভোমরা আনেকেই রবারের বল লইয়া থেল। কর। বেশ, এইরূপ একটি বল লও এবং উহাকে ছইটি আঙ্গুলের মধ্যে রাখা। এইবার আঙ্গুল ছইটিকে মিলাইবার চেষ্টা কর। দেখিবে যে, বলাচ আঙ্গুলের ছইদিকে গোল হইয়া দুলিয়া উঠিতেছে। এখন যদি কোন উপায়ে এই ছইটি গোলাকারকে পুথক্ করিতে পার, ভাগা হইলে পুরের একটি বল ছইটিবলে পরিণ্ড হইবে। সরল বিভাগের সময় কোষও এইরূপে মারখান হইতে চিরিয়া ছইটিতে পরিণ্ড হয়। কোষের জীবনে নাভির প্রাধান্তের কথা পূর্বেই বলিয়াছি। স্ভরাং কোষ-বিভাগের সময় কোষগ্রছি হইতে নবজাভ ছইটি কোবে সমানভাবে বিভাজিত কইয়া পডে।

এইবার অসরল বিভাগের কথা বলা যাক। কোষের জীবনে নাভির প্রাধান্তের কথা ভোষাদিগকে সর্বলাই মনে রাখিতে হইবে। এই প্রাধান্তের জন্ত কোষ-বিভাগের সমস্ত জটিল সমস্তাই নাভি এবং কোষগ্রন্থিকাত পদার্থ লইয়া। অসরল কোষ-বিভাগের প্রধান সমস্থা হইতেছে-নাভির বিভাগ এবং নাভিই ইহার কেন্দ্রভান। মনে কর, একটি কোষের অসরল বিভাগ আরম্ভ হইয়াছে এবং ভোমরা ভাষা দেখিতেছ। তোমরা যাহা দেখিতে পাইবে, তাহা এইরপ:—প্রথমেই নাভিত্র আয়তন কিঞ্চিৎ বাডিয়া উঠিল। নাভির মধ্যে জালের স্থায় যে পদার্থ আছে. উহা ওটাইয়াক্রমে সূতার মতন হইয়া গেল। এই স্তা পরে কতকগুলি ছোট ছোট টুকরায় পরিণত হইল। এই টুকরাগুলির নাম কি জান > ইহাদের জোমোজোম (chromosome) মনে কর এইরূপ আটটি টুকরা বা ক্রোমোজোম তুমি দেখিতে পাইলে।

নাভির মধ্যে এইরূপ পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গেই উহার আবরণ হন্তরিত হটল। নাভির প্রসঙ্গ এইথানে কিছক্ষণের জন্ত বন্ধ করিয়া কোষ-পঞ্চের কিরূপ অবস্থা ঘটিবে, ভাহাই বলি। নাভি আবর্ণহীন হইলে উহার পার্যস্তিত কোষ-পক্ষে কতকগুলি অতি মিহি এবং হালুকা জন্তুর আবিভাব হয়। কিন্তু এই ভক্তপ্ৰলিকোষ-পক্ষেকেমন ভাবে থাকে ৷ লাটিম তোমরা নিশ্চয় দেথিয়াছ—উহা উপরের দিকে প্রশস্ত এবংনীচের দিকে স্কুহ্য। আন্হা, ছইটি লাটিম লইয়া এমনভাবে রাখ যে, প্রাশস্ত ভাগ চুইটি মিলিয়া থাকে. দক ভাগ ছুইটি বিপন্নীত দিকে থাকে। ইহা করিলে এমন একটি আকারের সৃষ্টি হইল, যাহা ছই বিশরীত দিকে সক এবং মধ্যস্থানে প্রশান্ত---অনেকটা পিপার আকার ধেমন হয়। ভদ্নগুলিও কোম-পক্ষে এইকাপ একটি পিপার মত আহাবৈর সৃষ্টি করে। তোমাদের মনে আছে যে, ইতিপুর্বে আটটিক্রেমেজেম দেখিয়ছিলে। এখন সেওলি পিপার মারভানে আসিয়া জড ১ইল। ইহার পর দেখিতে পাইবে যে, প্রত্যেক ক্রোমোজোম এখান্থি-ভাবে গুইভাগে বিভক্ত হইয়াছে অর্থাৎ আটটি ক্রোমোক্ষোমধোলটি ক্রোমোক্রোমে পরিণত হইয়াছে। প্রত্যেক ক্রোমোজোমের চইটি ভাগ পিপার ছই প্রান্তে গিয়া উপস্থিত হটল এবং তথায় ভাহারা কুণ্ডলীকুত হইয়া মিলিয়া মিশিয়া চুইটি ন্তন নাভির সৃষ্টি করিল। ইতিমধ্যে পিপার মাঝ্যানে নৃতন আবরণে আবিভূতি হইয়া কোষবিভাগ সমাপ্ত ক বিজ্ঞা

এগন তোমাদের কাছে তাগাদের পরিবর্তনের কথা বলিতেছি। মনে কর, এই কোষ চইতে যত কোষের উৎপত্তি হইল, উহাদের সকলের বিভাগ তুমি ক্রমান্বয়ে দেখিরে হৈ, বিভাগের সময় কোন কোমেই আটটার বেশী কোমোজোম দৃই হইতেছে না। এইরূপে নানা জীব-দেহের কোম-বিভাগ পরীক্ষা করিলে দেখিতে পাইবে যে, বিভিন্ন জীবের কোষে ক্রোমোজোমের একটি নির্দিষ্ট সংখ্যা থাকে—বেমন মামুনের কোমে আট-চিল্লিটি কোমোজোম আছে। ক্রোমোজোমের সংখ্যা জীবজ্পতের প্রত্যেক জাতির পক্ষে অপরিবর্তনীয় (constant for every species)। ক্রোমোজামের কাজ কি, জান ? প্রক্পরুষ্বের ভাগতে আমরা এই ক্রোমোজোম হইতে উত্তরাধিকার সত্তে পাইয়া থাকি।

# উদ্ভিদের শরীর

পৃথিবীতে কাষ্য অহুসারে, কৃষ্টি অহুসারে স্থান ও কাল অহুসারে মাহুষে মাহুষে দারীরিক ও প্রাকৃতিগত বেমন পার্থক্য দেখা যায় তেমনি কোষও বিশেষ কার্য্যের জম্ভ বিশেষভাবে রূপান্তরিত হুইয়া থাকে। এই রূপান্তর বাহ্নিক কিংবা আভান্তরিক কিংবা ছুই প্রকারেরই হুইতে পারে— বাহ্নিক রূপান্তরে কোষের আয়তন সৃদ্ধি এবং উহার বহিরাবরণের কোনে বিশেষ পরিবর্তন হয় এবং আভান্তরিক রূপান্তরে জ্বীব-পজ্রের পরিবর্তন ঘটে।

কোষের আয়তন যদি চারিদিকে সমানভাবে হয় তাহা হটলে উহার আকৃতি পূর্ব্বেকার মতই থাকে কিন্তু উহা নদি কোন নিশেষ বিশেষ ঘটে তাহা হটলে উহার আকৃতি পরিবর্তন হয়। যেমন ছই বিপরীত দিকে বাড়িয়া উঠিলে কোষের আকার লম্বা হইবে কিংবা অনেক দিকে বাড়িতে থাকিলে উহা ক্রমে ভারার আকার ধারণ করিবে।

কোষাবরণ নানা প্রকারে পরিবন্তিত হয়, যথাউহা সর্বস্থানে সমভাবে পুরু কিংবা মাত্র কয়েক
স্থানে পুরু হইতে পারে। অনেক বাহ্যিক পদার্থ—
যেমন বালি, পাধর ইত্যাদি—কোসাবরণের সহিত
সংযুক্ত হইয়া উহাকে নানা প্রকারে পরিবন্তিত করে।
এইরপ রূপান্তর বন্ধ রাসায়নিক পদার্থ দারাও ঘটে।
এখানে সে সকলের কথা আর উল্লেখ করিলাম না
কোন কোন কোষের আবরণে পাথরের দানা বড়
হইয়া ক্রমে কোষের ভিতর পর্যান্ত চলিয়া বায়।

শৈশবাবস্থায় কোষ জীবন-পঞ্চ ছারা পরিপূর্ণ থাকে। কিন্তু কোনপঙ্কে ফাঁক বা রক্ত আবিভূতি হয়। বিলক এক প্রকাব তরল পদার্থে পূর্ণ **ধাকে** --- ইঠাকে বিলক রস নাম দেওয়া হইয়াছে। প্লাসটিড ( Plastid ) নামক আর এক পদার্থ কোষপঞ্চে পাওয়া যায়। গাছের যে সব স্থানে স্থালোক পঁভঙিতে পাল্পেনা তথাকার কোষের প্লাসটিড বৰ্ণহীন হয়। কিন্তু যে সব অংশ আলোকে উন্মুক্ত, তথায় প্রায় সমস্ত কোষের প্রাসটীডই বিভিন্ন রঙে রঞ্জিত চইয়া উঠে--বিশেষত: সবল রঙে। গাছ-পালার সবন্ধ রং বা পত্রহরিৎ ( chlorophyll ) আলোকিত কোষের প্রাস্টিডে সঞ্চিত থাকে ৷ উদ্ভিদের খালাহরণের সহিত পত্রহরিৎ ৰনিষ্ঠভাবে সংযুক্ত। উদ্ভিদের থাক্সম্বন্ধে আলোচনার সময় ভোমতা ইহা জানিতে পারিবে। সময় সময় পত্রহরিতের সবজ রং অস্তান্ত রং দ্বারা ঢাকিয়া যায়-

বেমন অনেক রঙীন পাতায়। তোমরা বরা পাতায় হল্দে রং দেখিয়া থাকিবে। ইহারা কেন এমন ধারা হয় জান? ইহাদের পত্তহরিং অবস্থান্তর প্রাপ্ত ইয়া হল্দ বর্ণ হইয়া গিয়াছে। প্রাসটিভে অক্তান্ত রংও—বিশেষতঃ লাল এবং হল্দে রং ও বর্জমান থাকে— গেমন তোমরা দেখিতে পাও অনেক কলের অপুর্ব্ধ বর্ণ সমাবেশ।

কোষের মধ্যে প্রায় খান্তদ্র কমিয়া থাকিতে দেখা যায়--- যেমন প্লাচ বা খেতসার। ইহা কোয পঙ্কে সাধারণত: জুড়া অবস্থায় থাকে কিন্তু প্লাসটিডে ইহাদানা বাঁধিয়াজ্মাহয়। খেলিতে গিয়াবা অক্ত প্রকারে তোমাদের সামার আঘাত লাগিলে ভোমরা সে স্থানে টিনচার আইওডিন লাগাইয়া থাক। আলও তোমরা নিতা খাম্বরূপে বাবহার করিয়। থাক। স্থতরাং ও চুইটা জিনিসের সঙ্গে তোমাদের ঘনিষ্ঠ পরিচয় আছে। বেশ, এক কাজ কর। একটা আলু তুই খণ্ড করিয়া কাট এবং কাটা জায়গায় অল পরিমাণে একট আইওডিন লাগাইয়া দাও—দেখিবে त्य त्य शास्त्र आहे अफिन लागा है या छ छ । गांक नील বর্ণ হইয়া গিয়াছে। খেত্সার আছে কি না, তাহা এইরপে আইওড়িনের সাহায়ে পরীকা করা হয়। অক্সাক্ত থাতা দ্রবাও কোষপত্তে বর্ত্তমান থাকে। যথা তেল চর্কি (Oils, fats ) ইত্যাদি। অক্সান্ত নানা পদার্থের দানাও (crystals)কোষের ভিতর দেখিতে পাএয়া যায়।

ভোমরা হয়ত ভাবিতেছ যে জীবপন্ধ জিনিষটা কি? ইহার প্রকৃতি কি গুণ্ড গু ভোমরাই নও, পৃথিবীর বহু পণ্ডিত, বহু জ্ঞানী এ-বিষয়ে চিস্তা করিয়াছেন । কত বৈজ্ঞানিক এ বিষয়ে গবেষণা করিয়াছেন তাহার সংখ্যা নির্দেশ করাও কঠিন। কিন্তু ইহা যে কি, ইহার গঠন কিরুপ, তাহা এখনও জ্ঞাতই রহিয়া গিয়াছে। গুণ্ণু ইহাই মাত্র জানা গিয়াছে যে, ইহা কারবন (Carbon) বা অঙ্গারক, নেত্রজন (Nitrogen) জ্বাজন (Oxygen) জ্বাজন (Hydrogen ভাত্ররস (Phos-Phorus) ইত্যাদি পদার্থে অতি জাটিল ভাবে রচিত। সে বাহাই হউক জীবনের সহিত জীবপন্ধ এতই ঘনিষ্ঠভাবে সংখুক্ত যে, ইহাদের মধ্যে কোন সীমারেখা টানা ঘার না।

এইবার তোমাদের কাছে উত্তিদ শ্রীরের কোষের কথা বলিলাম, পরে উত্তিদ দেহের বিভিন্ন অংশের গঠন ও আফুতি ইত্যাদির বিষয় বলিব।



# যন্ত্র-বিজ্ঞান

পৃথিবার বুকে যে শিক্ষা ও সভাতা আজকাল আমরা দেখিতে পাইতেছি, তাহা একদিনে গড়িয়া উঠে নাই। মামুষ দিন দিন যতই উন্নতির পথে অগ্রসর হইতে লাগিল, ততই সে বিজ্ঞানের সাগায়ে ফ্রপাতি আবিষ্কার করিয়া নানা দিক দিয়া আপনার স্থাও সৌভাগ্যের পথ খুঁজিয়া পাইল। এই ভাবেই জাগুনীকণ দ্রবীক্ষণ, এই ভাবেই বেলগড়ী, স্থামার, জাহাজ, এই ভাবেই বোমিয়ান ও হাওয়াই জাহাজ,তারবার্তা, তার বিহীন বার্তা—এ সকল সে আবিদ্ধাব করিয়া একদিন যাহা অসম্ভব ছিল, তাহাকে সন্ভব করিয়া ভূলিয়াছে। তোমরা হয়ত থবরের কাগজে পড়িয়াছ যে, হিমালয়ের সর্ব্বোচ্চ শৃল গৌরীশঙ্কর বা Everest-এর উচ্চত। ২০০২ ফুট। কিন্তু এখনও কেচ গৌরীশঙ্করের চূড়ায় চড়িতে পারে নাই এবং যথন উহার উচ্চতা মাপা হয়, তখন কেচ উহার ১০০ মাইলের মধ্যেও যাইতে পারে নাই। কি করিয়া নিশুত-ভাবে এত দ্বে থাকিয়াও উক্ত শৃল্পের উচ্চতা মাপা যায়, সে সম্বন্ধে সাধারণ লোকে খুবই অক্ত। এই প্রবন্ধে দূরত জিনিয়ের উচ্চতা মাপিবাব কৌশল কি করিয়া ক্রমে ক্রমে মানুষ উত্তাবন করিল, গল্পছলে তাহা বলা হইয়াছে।

# উচ্চতা-মাপক যন্ত্র

কোনও দেশে অতি বিচক্ষণ ও সর্বকার্যোদক একজন রাজা ছিলেন। অস্থাস্থ রাজা-দের মত ভিনি অসার আমোদ-প্রমোদে র্থাসময় নই করিতেন না। তাঁহার মন্ত্রীও তাঁহারই মত অতি বৃদ্ধিমান্লোক ছিলেন। ক্ষবিধা পাইলেই রাজা ও মন্ত্রী উভয়ে ঘুরিয়া ফিরিয়া সমস্ত কাজ নিজেদের চক্ষেপ্যাবেক্ষণ করিতেন। মাঝে মাঝে গুপুচর নিমুক্ত করিয়া প্রজারা ভাঁহার শাসন সম্ক্রেকিরপ আলোচনা করে, তাহার খোঁজ-খবর লাইতেন।

অস্থান্থ রাজাদের যেমন হইয়া থাকে, এই রাজারও নানাভোণীর ভৃত্য ছিল এবং তাহারা নিজ নিজ কাজের অনুযায়ী নানারপ বেতন পাইত। প্রধান মন্ত্রী সকলের চেয়ে বেশী বেতন পাইতেন। তাঁহার নীচে বড় বড় কর্ম্মচারীরা ৫০০ হইতে এক হাজার টাকা পর্যাস্ত বেতন পাইতেন। সাধারণ কর্ম্মচারীরা ৫০ হইতে ১০০ টাকা পর্যাস্ত পাইত এবং সাধারণ ভৃত্যেরা—যাহারা ঘর পরিকার, বাসন মাজা, জল তোলা এবং ফরমাইস খাটা ইত্যাদি কাজ করিত, তাহারা দশ হইতে বিশ টাকা পর্যাস্ত মাসে বেতন পাইত।

একদিন রাহ্বা মন্ত্রীর সহিত ছল্মবেশে চাকরদের ঘরের নিকট দিয়া যাইতেছেন,

# উত্ততা-মাপক যতা ++++

এমন সমর শুনিতে পাইলেন, তাহারা পুর জটলা করিয়া রাজার কাজের আলোচনা করিতেছে। একজন বলিভেছে—দেখ ভাই-সকল, মহারাজের কি ঘোর অবিচার!



মহাবাজের কি খোর অবিচাব
আমাদিগকে সমস্ত দিন মাথার ঘাম পায়ে
ফেলিয়া থাটিতে হয়, আর মহারাজা আমাদিগকে বেতন দেন মাত্র দশ হইতে পনের।
আর কেরাণীবাবুরা শুধু চেয়ারে বিসিয়া
কলম চালান, তাঁহোরা আমাদের পাঁচ ছয়গুণ বেতন পান, আর বড় বড় কল্ম চারীরা
ত কিছুই করেন না। মন্ত্রী মহাশয় শুধু
মহারাজের সাথে গল্প করেন এবং শুকুম
জারী করেন; আর তিনি যে কত হাজার
টাকা বেতন পান, তাহা কেহ গণিয়া বলিতে
পারে না।

রাজা এবং মন্ত্রী উভয়েই এই সমস্ত কথা শুনিলেন। কিন্তু তথন চাকরদের কিছু না বলিয়া পর দিন দরবারে তাহাদের

কয়েকজনকে ডাকিয়া পাঠাইলেন ৷ তাহার৷ সকলে আসিলে পর মন্ত্রী বলিলেন—তোমরা



ক গাছটি কত উচু তাহ। বাহিব কর
কাল রাত্রে সকলে মিলিয়া আলোচনা
করিতেছিলে যে, তোমরা সারাদিন প্রাণপাত
পরিশ্রম কর ও মহারাজ তোমাদের তেমন
বেতন দেন না। সেইজন্ম মহারাজ তোমাদের
ছঃখ দূর করিতে কৃতসকল্প হই মাছেন। এইহেতু তোমাদের যোগ্যতা পরীক্ষা করিবার
জন্ম তিনি একটি সমস্যা উত্থাপন করিয়া
তোমাদের প্রত্যেককে তাহা সমাধান করিতে
দিয়াছেন। তাহা এই—রাজবাটীর সম্মুখে
অতিশায় পুরাতন এবং উচ্চ তালগাছটি
কত উঁচু, তাহা বাহির করিতে হইবে। ইহার
জন্ম তোমাদিগকে তিন দিন সময় দেওয়া
হইল।

# শিশু-ভারতী

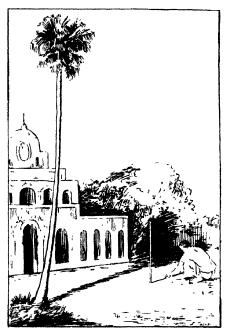
ইহা শুনিয়া চাকরদের মধ্যে মহা ভয় তাহারা সকলে মিলিয়া উপস্থিত হইল। পরামর্শ করিতে লাগিল, কি করিয়া তাল গাছের উচ্চতা মাপা যাইতে পারে। একজন বলিল-একটি খুব বড মই তৈয়ারী করিয়া গাছের মাথায় চডি। তারপর সেই-খান হইতে সূতা ফেলিয়া তালগাছ কত উচু, তাহা বাহির করিতে পারিব। কিন্তু রাজবাড়ীর সূত্রধর বলিল যে, অতবড মই ভৈয়ারী কর। সম্ভবপর নয়। তথন অভ্য একজন ভূতা বলিল—আচ্ছা, এস আমরা ঐ তালগাছের সনান উচু একটি মাটির দেওয়াল তৈয়ারী করি। কিন্তু হিসাব করিয়া দেখা গেল যে, এই রকম দেওয়াল প্রস্তুত করিতে অনেক বংসর লাগিবে এবং অনেক হাজার টাকা লাগিবে। আর একজন বলিল —অামাদের মধ্যে কেহ কোমরে সভা বাঁধিয়া তালগাছের উপরে উঠক এবং সূতা কত লম্বা, তাহা মাপিয়া দেখিলেই তাল-গাছের উচ্চতা বাহির করা যাইবে। কিন্ত এমন উচু তালগাছে চড়িতে পারে এমন কোন লোক পাওয়া গেল না। স্বুতরাং তাল গাছ না কাটিয়া কিরূপে তাহার উচ্চতা বাহির করিতে পারা যাইবে, চাকরেরা তাহা কিছুতেই ঠিক করিতে পারিল না। তখন তাহারা রাজদণ্ডের ভয়ে অহ্যন্ত ভীত হইয়া নিদির সময়ের প্রতীক্ষা করিতে লাগিল।

তিন দিন কাটিয়। গেলে মহারাজ তাহাদিগকে ডাকিয়া পাঠাইলেন। ভয়ে ভয়ে
তাহারা দরবারে উপস্থিত হইল। তথন প্রধান
মন্ত্রী বলিলেন—তোমরা কি তালগাছের
উচ্চতা নিরূপণ করিতে পারিলে? চাকরের।
ভয়ে ভয়ে বলিল—না মহাশয়, অনেক চেষ্টা
ক্রিয়াও তালগাছের উচ্চতা বাহির করিতে
পারিলাম না। এতখন মন্ত্রী মহাশয় একজন
সাধারণ কর্মাচারীকে ডাকিয়া বলিলেন—তুমি
এই তালগাছটি কত উচু, না কাটিয়া তাহা

বলিয়া দিতে পার ? সে খানিকক্ষণ ভাবিয়া বলিল—এই কাজ চুই রকমে হইতে পারে যদি একজন খুব ভাল তীরন্দাজ পাওয়া যায়,তাহা হইলে তাহাকে ঐ তালগাছের মাথা লক্ষা করিয়া একটি তীর ছড়িতে হইবে। তীরের নীচের দিকে একটি শক্ত ভীরন্দাজ যদি ঠিক সূতা বাঁধা ধাকিবে। গাছের মাথায় তীর বিদ্ধ করিতে পারে. তাহা হইলে সূতা লম্বভাবে মাটি প্যান্ত পৌছিবে, এবং তখন ঐ সূতা মাপিলেই গাছ কত উঁচু, ভাহা বাহির করা ঘাইবে। কিন্তু সকলে বলিল, তালগাছের মাথায় তীর বিশ্ব করিতে পারে, এমন স্থদক √তীরন্দাজ পাওয়া মুক্ষিল। তখন কর্মচারী বলিল-যদি শক্ত সূতা দিয়া একটি ঘুড়া উড়ান যায়, এবং চেষ্টা করিয়া উক্ত ঘুড়ীকে গাছের মাথায় আট্কান যায়, তালা হটলে সূতার দৈর্ঘ্য হইতে তালগাছের উচ্চতা বাহির করা পারে। মন্ত্ৰী বলিলেন, ঘুড়ী গাছের মাথায আট্কাইতে পার? কর্মচারী বলিল, না হুজুর, কিন্তু যাহারা খুব ভাল ঘুড়ী উডায়, বোধ হয় তাহারা পারিবে। মন্ত্রী বলিলেন, আচ্ছা দেখা যাউক, ইহা অপেক। সহজ উপায় আছে কি না। তিনি তখন একজন বড বিশিষ্ট ডাকিলেন, এবং বলিলেন; আপনি কোন সহজ উপায়ে এই তালগাছ কত উঁচু, তাহা বাহির করিতে পারেন কি? কর্মচারী বলিলেন নিশ্চয়ই পারি, আমি অতি অল্প সময়ের মধ্যেই গাছ কত উঁচু, তাহা মাপিয়া দিতেছি। তিনি তখন বাহিরে যাইয়া একটি প্ৰায় আট হাত লম্বা কাটি সোজাভাবে (লম্ব-ভাবে ) মাটিভে পুভিলেন এবং একটি মাপ-কাটি লইয়া কাটির ছায়ার দৈর্ঘ্য মাপিলেন। দেখা গেল, ছায়া দৈর্ঘ্যে ছয় হাত এবং ত্থনই তালগাছের গোড়া হইতে ধরিয়া উহার ছায়া কত বড়, তাহা মাপিলেন।

# 

উহার দৈর্ঘ্য হইল ১২০ হাত। তথন তিনি হিসাব কথিলেন—ছয় হাত ছায়া যার, তার দৈর্ঘ্য যদি হয় আট হাত, তবে ১২০ হাত ছায়া যার, তার দৈর্ঘ্য কত হইবে—৬:৮::১২০:ক, ক= ১৯৫ = ১৬০ হাত। এই সমস্ত করিতে প্রায় প্রদের মিনিট সময় লাগিল। তথন তিনি আসিয়া বলিলেন, গাছের উচ্চত। ১৬০ হাত এবং যে প্রণালীতে

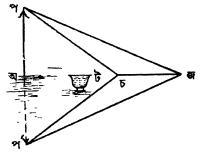


ছায়া মাপিতে লাগিল উহা বাহির করিয়াছেন তাহাও সকলকে বুঝাইয়া দিলেন। রাজা ও মন্ত্রী ব্যতীত আর সকলেই তাঁহার ভীক্ষবুদ্ধির পরিচয় পাইয়া চমৎকত হইল। #

তথন রাজা মন্ত্রীকে জিজ্ঞাসা করিলেন—
মন্ত্রী, আপনি ইহা অপেক্ষা সহজে তালগাছ
কত উঁচু, তাহা বাহির করিয়া দিতে পারেন
কি ? মন্ত্রী বলিলেন, Sextant (কোণমান)
যন্ত্রের সাহায্যে ক্ষণিকের মধ্যেই গাছের
বা বে-কেনে জিনিবের উচ্চতা বাহির করা
ঘাইতে পারে। আমি এই যন্ত্রের কথা
অবগত আছি কিন্তু ব্যবহারে অভ্যন্ত নই;
আপনার জরাপ বিভাগের কম্মচারীরা অতি
সহজেই এই কাগ্য করিতে পারে।

রাজা তথন জরীপ বিভাগের প্রধান কম্ম চারীকে ডাকাইলেন, এবং তিনি পাঁচ মিনিটের মধোই Sextant দিয়া গাছের উচ্চতা ঠিক মাপিয়া বাচির করিলেন।

সেই দিন ২ইতে, রাজবাড়ীর ভূতাদের মধো আর কাহারও কোন অসস্ভোষের ভাব রহিল না। তাহারা নিজেদের অজ্ঞতা ব্যাতে পারিল।



Sextant বা কোণমাপক যন্ত্র জ্বরীপের কাজে ও সমুদ্রে সূর্য্য বা নক্ষত্রের অবস্থান নিরূপণ করিতে খুবই ব্যবহার হয়। এই যন্ত্র জিনিষের উচ্চতা মাপা যায়; তাহা উপরের চিত্রে বোঝান যাইতেছে। মনে কর 'অপ' একটি উচ্চ

\* কণিত আছে যে, একবাব মিশরেব এক বাজা তাঁহার সভার জ্ঞানী লোকদিগকে বিখ্যাত পিরামিডেব উচ্চতা মাপিতে দেন। তখন গ্রীদের সপ্তজ্ঞানীর প্রধান জ্ঞানী মিলেটাস নগরবাসী পেলস্ (Thales of Miletus) এই উপায়ে পিরামিডের ছায়ার দৈর্ঘ্য মাপিয়া উহার উচ্চতা নিরূপণ করেন।

গদ্ধ, এবং 'অপ' জলপাতে পতিত উহার ছায়া। দর্শক 'চ' বিন্দুতে আছে। তাহার সামনে একটি জলপূর্ণ পাত্র আছে। তাহাতে সে গদ্ধুলের ছায়া দেখিতে পাইতেছে। 'চ' বিন্দুতে দে কোণমান যন্ত্র দিয়া 'পচপ' কোণ এবং পরে খানিকদূর পশ্চাতে যাইয়া 'জ' বিন্দুতে দাঁড়াইয়া 'পজপ' কোণ নিরূপণ করিল। এখন 'চঙ্গ'র দৈর্ঘ্য এবং পচন্ধ ও পজচ কোণ জানা আছে। সহজেই ত্রিকোণামিতির সাহায্যে 'অপ' রেখার দৈর্ঘ্য নিরূপণ করা যায়।

Sextant যন্ত্রের বর্ণনা শে কোন প্রাকৃতিক দর্শনের পুস্তকে পাওয়া যাইতে পারে। কিন্তু Sextant সাধারণতঃ স্থানে ব্যবহার হয় না, সমুদ্রে সূর্য্য বা তালার উচ্চতা মাপিবার জাতা ব্যবহার হয় তালার নাম Thedolite।

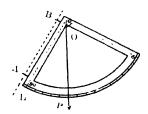
Sextant বা Thedolite যন্ত্ৰ একদিনে আবিষ্কৃত হয় নাই। উচা আবিষ্কৃত ১ইতে সূর্যার উন্ধতি মাপিতে হইবে। জন্টা সামনে একটি জলপূর্ণ পাত্র রাখিয়া ক্রমান্বরে সরাইতে থাকে এবং দেখিতে থাকে কখন্ AG রেশার অভিমুখে চাহিলে সূর্য্য ও চক্ষু ঠিক এক লাইনে পড়ে। যদি যন্ত্র, ঠিক ভাবে ধরা হয় ভাহা হইলে এই অবস্থানে সূর্য্যের জলমধ্যম্থ চাছা ও দ্রষ্টার চক্ষু AD রেখার সহিত এক লাইনে থাকিবে। তখন কোণ মাপিয়া তাহার অর্জে ক করিলেই সূর্য্যের দ্রম্থ নিরূপিত হইল। প্রথমে যথন পর্তুগাল দেশের নাবিকেরা আটলান্টিক মহাসাগ্রের নৌচালনা করেন তখন তাঁহারা সূর্য্য ও তারকার উচ্চতা মাপিবার জন্ম এইরূপ যন্ত্র বহল পরিমাণে বাবহার করিতেন।

উচ্চতা মাপিতে আর একপ্রকার যন্ত্রও পটুণাজগণ ব্যবহার করেন। উহা নিম্নের চিত্রে দেখান গেল। এই যন্ত্রই পরে Sextant-এ পরিণত হইযাতে।



কোণমাপক (Balestilha) যন্ত্ৰ—( আরবদেশীয় পণ্ডিভগণ কর্তৃ কাবিষ্কৃত)

বহুশত বংসর লাগিয়াছে। প্রথমকার কোণ
মাপার যন্ত্র আরবদেশীয় পশুতেরা আবিদ্ধার
করেন। তাহার ছবি উপরে দেওয়া গেল।
এ ছবি বুঝিতে বোধ হয় বিশেষ গোল
হইবে না, কারণ ইহা ঠিক উপরের চিত্রের
প্রণালী অবলম্বনে নির্মিত। ক্ষিভিজ্ঞ রেখাটি
একটি কান্ঠ বা পিন্তলনিন্মিত দশু এবং
আর একটি দশুকে লম্বভাবে
সরান যাইতে পারে। মনে



এই যন্ত্র রুত্তর এক চতুর্থাংশ, এবং ইহার পরিধি ডিগ্রি ও মিনিটে বিভক্ত। দ্রস্টা AB রেখাতে সূর্য্যের (S) দিকে দৃষ্টি করে। একটি ওলনদড়া OP লম্বভাবে ঝোলান দড়ি। স্পাইই প্রভীয়মান হইবে যে LOP কোণ সূর্য্যের উন্নতির সমান।